मुरली (कटिंग) - खंड 2

(झेरॉक्स प्रमाण सहित)

सृष्टि–चक्र

(स्वदर्शन चक्र सन् 2000 में फिर से घूमा...)

1. सतयुगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

सतोप्रधान	(4 साल)	1960-61 से 64 तक
सतोसामान्य	(4 साल)	65 से 68 तक
रजोप्रधान	(4 साल)	69 से 72 तक
तमोप्रधान	(4 साल)	73 से 76 तक
	(+1 साल रूंग = 1977)	

2. त्रेतायुगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

सतोप्रधान	(3 साल)	78 से 80 तक
सतोसामान्य	(3 साल)	81 से 83 तक
रजोप्रधान	(3 साल)	84 से 86 तक
तमोप्रधान	(3 साल)	87 से 89 तक
	(+1 साल रूंग = 1990)	

3. द्वापरयुगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

सतोप्रधान	(2 साल)	91 से 92 तक
सतोसामान्य	(2 साल)	93 से 94 तक
रजोप्रधान	(2 साल)	95 से 96 तक
तमोप्रधान	(2 साल)	97 से 98 तक
	(+1 साल रूंग = 1999)	

4. कलियुगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

सतोप्रधान	(1 साल)	2000
सतोसामान्य	(1 साल)	2001
रजोप्रधान	(1 साल)	2002
तमोप्रधान	(1 साल)	2003
	(+1 साल रूंग = 2004)	

☆ मुरली लिखना बहुत अच्छी सर्विस है। सभी खुश होंगे, आशीर्वाद करेंगे। बाबा अक्षर बहुत अच्छे हैं। नहीं तो लिखते हैं अक्षर अच्छे नहीं। बाबा हमको वाणी कट करके भेज देते हैं, हमारी रत्नों की चोरी हो जाती है। बाबा हम अधिकारी हैं जो आपके मुख से रत्न निकलते हैं वह सब हमारे पास आने चाहिए। यह कहेंगे भी वही जो अनन्य होंगे। मुरली की सेवा बहुत अच्छी रीति करनी चाहिए।

-(मुरली नम्बर 2, ता. 29.3.02, पृ.नं. 13 से उद्धृत)

मूल्य - रु. 40/- (मात्र चालीस रुपये)
पहला संस्करण (हिन्दी) - नवंबर 2006

Price : Rs. 40/- (Forty only)
I[st] Edition (Hindi) : Nov 2006

Compressed with PDFCompressor

कटिंग प्वाइन्ट्स

1. मुरली नम्बर 1 (मुरली रिवाइज्ड तारीख 8.1.95)

a) ब्राह्मण जीवन के जी–दान का आधार कौन–सा है? मुरली। पढ़ाई का भी आधार है मुरली। (पृ.नं. 10)

2. मु.नं. 2 (मु.रि.ता. 29.3.02)

a) बाबा हमको वाणी कट करके भेज देते हैं। हमारी रत्नों की चोरी हो जाती है। (पृ.नं. 13)

3. मु.नं. 3 (जुना मु.ता. 16.5.83/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 13.6.01)

a) पतित पावन कृष्ण को अथवा राम को नहीं कहेंगे। (पृ.नं. 15,17)

b) इस साकार (ब्रह्मा) से भी जो कुछ करायेंगे वह भी राइट ही होगा; क्योंकि करनकरावनहार हैं। (पृ.नं. 15,17)

c) तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो। नहीं तो यह वर्शन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए। (पृ.नं. 15,18)

d) तुम बच्चे बाप की जीवन कहानी को जानते हो। (पृ.नं. 15,18)

e) यह सब झूठे शास्त्र आदि पढ़ना– इससे वेस्ट आफ टाइम, वेस्ट आफ एनर्जी होती है। (पृ.नं. 16,19)

4. मु.नं. 4 (जुना मु.ता. 28.1.90/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 21.1.00)

a) शिव भगवानुवाच– मनुष्य समझते हैं कृष्ण भगवानुवाच अर्थात् कृष्ण ने बैठ राजयोग सिखाया है। अब कृष्ण को बाप तो कोई नहीं कहेंगे। ...वह है बेहद का बाप। (पृ.नं. 21, 24)

b) बाप की बड़ी दिल रहती है ना; परन्तु ऐसे भी (यह चैतन्य बैज को) कोई को नहीं देना है जो फालतू फेंक दें। (पृ.नं. 22, 25)

c) इतने बी.के. कुमारियाँ हैं तो जरूर अण्डरस्टुड प्रजापिता भी है। (पृ.नं. 23, 27)

5. मु.नं. 5 (जुना मु.ता. 14.4.71/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 2.4.01)

a) उनका नाम क्या है? शिवबाबा। ...अब रुद्रमाला जो पूजते हैं। (पृ.नं. 28, 30)

b) ब्र.वि.शं. को भी अपना शरीर है। ...भरतवासी तो यह भी नहीं जानते हैं कि शिव–शंकर निराकार अलग हैं...। (पृ.नं. 28, 30)

c) निराकार बाबा अभी रूप बदलकर साकार में आये हैं। बाप जब तक निराकार से आकार में न आये तो राजयोग, ज्ञान कैसे सिखावें? (पृ.नं. 28, 30)

d) नहीं, यह सिर्फ साक्षात्कार है। (पृ.नं. 28, 31)

e) वेद, शास्त्र पढ़ना, जप तप आदि करना सब भक्ति हैं। इससे उतरती कला ही होती है। (पृ.नं. 29, 31)

f) श्रीमत शिवबाबा की ही है, न कि श्री कृष्ण की। ...उनको तो बाप की श्रीमत चाहिए। (पृ.नं. 29, 31)

g) कृष्ण भगवानुवाच तो रॉंग है। कृष्ण को पतित पावन नहीं कह सकते। (पृ.नं. 29, 31)

h) शास्त्रों में सब झूठ लिख दिया है। ...भक्तिमार्ग में कृष्ण का सिर्फ सा. होता है। (पृ.नं. 29, 32)

i) गाँधी (ब्रह्मा बाबा) तो रामराज्य कर न सका। ...वह कोई मनुष्य स्थापन कर न सके। (पृ.नं. 29, 32)

6. मु.नं. 6 (जुना मु.ता. 15.11.87/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 17.11.97)

a) हर एक को हक है डायरेक्ट पत्र भेजने का। भल कोई कारण से सेन्टर से दिल हट जाती है; परन्तु पढ़ाई जरूर पढनी है। (पृ.नं. 34, 37)

b) बाबा को हमेशा कहना है कि कोई भी तकलीफ है, ब्राह्मणी की खिटपिट है तो बाबा को पत्र लिख सकते हो। बाबा भी डायरेक्ट पत्र भेज सकते हैं। (पृ.नं. 34, 37)

c) कोई भी बाबा को डायरेक्ट पत्र लिख सकते हैं। ...अगर कोई ब्राह्मणी ऐसे कहती है तो बाबा को डायरेक्ट लिखीं तो तुमको बाबा याद पड़ेगा। (पृ.नं. 35, 38)

d) कोई–2 में भूत आ जाती है, चरीखरी बालकी में भी कहते हैं शिवबाबा आया, मुरली चलाते हैं। (पृ.नं. 35, 39)

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

7. अ.वा. नं. 7, ता.22.1.69 (पुराना एडिशन– जनवरी 69 से दिसंबर 72 तक की वाणियों का संग्रह)/रिवाइज्ड कटिंग अ.वा.ता. 22.1.69 (नया एडिशन– 18.1.69 से 31.12.69 तक की वाणियों का संग्रह)

a) शिवबाबा, ब्रह्मा बाबा दोनों इकट्ठे बैठे थे। ...फिर तो दोनों ने इकट्ठा एक दो के मुख में दिया। (पृ.नं. 42, 43)

8. मु.नं. 8 (जुना मु.ता. 14.6.89/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 1.7.94)

a) सारी दुनियाँ की जो भी आत्मायें हैं सबसे मिलते हैं। सब बच्चों की जो आशा है वह पूर्ण करते हैं। (पृ.नं. 45, 46)

9. मु.नं. 9 (जुना मु.ता. 6.2.91/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 11.8.01)

a) लव–कुश की कहानी भी है ना। राम के दो बच्चे दिखाये हैं। (पृ.नं. 50, 53)

b) शंकर तो सू.वतन में है। (पृ.नं. 50, 54)

c) ...लेकिन शंकर को तो शिव के साथ मिला दिया है। ...यह ब्र. भी प्रजापिता ठहरा। (पृ.नं. 51, 54)

d) वि. के दो रूप ल.ना. हैं। (पृ.नं. 51, 54)

e) बाप कहते हैं मैं एक ही बार आकर तुम बच्चों को भी सारी नालेज समझाता हूँ, फिर आता ही नहीं हूँ। (पृ.नं. 51, 54)

f) बाबा बार–2 समझाते हैं कहाँ भी पहले–2 यह समझाओ कि गीता का भगवान कौन है– श्री कृष्ण या निराकार शिव? (पृ.नं. 51, 55)

g) सीढ़ी में बड़ा क्लीयर दिखाया हुआ है– नीचे हैं पतित, ऊपर में हैं पावन। (पृ.नं. 52, 55)

10. मु.नं. 10 (जुना मु.ता. 8.2.89/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 20.2.04)

a) इसलिए बाप कहते हैं बाबा का फोटो आदि भी नहीं निकालो। ...कोई भी चित्र नहीं रखना चाहिए। नहीं तो तुम फँस पड़ेंगे। (पृ.नं. 57, 61)

b) इनकी (ब्रह्मा की) याद से एक भी पाप नहीं कटेगा। (पृ.नं. 57, 61)

11. मु.नं. 11 (जुना मु.ता. 19.9.89/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 22.9.04)

a) बाकी सूक्ष्मवतन क्या है? कुछ भी नहीं। (पृ.नं. 64, 68)

b) ब्र.वि.शं का मंदिर है। (पृ.नं. 64, 68)

12. मु.नं. 12 (जुना मु.ता. 10.3.92/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 10.3.97)

a) ...और न कोई जरूरी है कि सफेद ड्रेस ही पहननी है। ...उन्हों का (ब्र.कु. का) तो सन्यास किया हुआ है। हम तो गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं। (पृ.नं. 71, 74)

13. मु.नं. 13 (जुना मु.ता. 8.9.68/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 29.8.84)

a) यह ल.ना. है तम्हारी एम आब्जेक्ट। (पृ.नं. 76, 79)

b) बाप ने समझाया है जो अपन को परमात्मा कहलाए अपन को पुजा कराते हैं वह हिरण्यकशियपु जैसे दैत्य हैं। (पृ.नं. 76, 79)

c) उनकी शिवजयन्ति शिवरात्रि भी मनाते हैं। तो जरूर आते हैं ना। (पृ.नं. 76, 80)

d) ब्रह्मा वल्द? क्योकि ब्र. भी कियेशन है ना। कियेटर तो एक ही है। (पृ.नं. 77, 80)

e) सतोप्रधान बनने की युक्ति पतित पावन बाप ही आकर बताते हैं। (पृ.नं. 78, 81)

f) 50–60 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। (पृ.नं. 78, 81)

14. मु.नं. 14 (जुना मु.ता. 15.10.69/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 13.11.95)

a) ब्र. और वि. इनका आपस में क्या सम्बन्ध है? ...दिखाते हैं कि वि. की नाभी से ब्र. निकला...। (पृ.नं. 82, 84)

b) ब्र. तो है। पतित पावन बाप का तो जरूर रथ पतित ही होगा। (पृ.नं. 82, 84)

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

c) ...परन्तु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे? (पृ.नं. 83, 85)

15. **मु.नं. 15 (जुना मु.ता. 1.2.90/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता, 17.1.00)**

a) त्रिमूर्ति ब्र.वि.शं. का एक्यूरेट क्यों न निकालें? (पृ.नं. 90, 93)

16. **मु.नं. 16 (जुना मु.ता. 26.6.76/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 18.7.96)**

a) **जैसे** मनुष्य के सिर काटे जाते हैं वैसे त्रिमूर्ति **से** शिव का सिर भी काट दिया है। (पृ.नं. 96, 100)

17. **मु.नं. 17 (जुना मु.ता. 20.4.89/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 8.4.04)**

a) यह त्रिमूर्ति जो दिखाया गया है उसमें होना चाहिए ब्र.वि. और शिव, न कि **शंकर**। (पृ.नं. 102, 105)

18. **मु.नं. 18 (जुना मु.ता. 14.10.84/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 6.10.04)**

a) ...और जिसमें भी ब्र. 92 वर्ष का भी बैठ पढ़ता हो। (पृ.नं. 111, 115)

19. **मु.नं. 19 (जुना मु.ता. 13.8.66/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 11.8.01)**

a) आज से यानी 1966 से 10 वर्ष के अन्दर हम अपनी इस भारतभूमी को स्वर्ग बनाकर छोड़ेंगे। (पृ.नं. 116, 118)

b) शंकर द्वारा विनाश। शंकर को ऐसे रखा है जैसे रावण को रखा है। (पृ.नं. 116, 119)

c) शंकर को तो शिव के साथ मिला दिया है– यह राँग है। ...शंकर का तो इतना पार्ट नहीं है। (पृ.नं. 117, 119)

20. **अ.वा. नं. 20, ता.25.10.69 (पुराना एडिशन– जनवरी 69 से दिसंबर 72 तक की वाणियों का संग्रह)/रिवाइज्ड कटिंग अ.वा.ता. 25.10.69 (नया एडिशन–18.1.69 से 31.12.69 तक की वाणियों का संग्रह)**

a) विनाश कब होना है? ...कब भी यह न सोचना है कि सात वर्ष में बदलेंगे। (पृ.नं. 125, 129)

21. **मु.नं. 21 (जुना मु.ता. 2.5.89/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 8.5.04)**

a) मम्मा–बाबा को भी ड्रिल सिखलाते थे, डायरेक्शन देते थे– ऐसे–2 करो। (पृ.नं. 133, 137)

22. **मु.नं. 22 (जुना मु.ता. 21.4.89/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 7.4.04)**

a) तुम वहाँ (नई दुनियाँ में) शूबीरस पीते हो। (पृ.नं. 140, 143)

b) बहुत तो 10–10 वर्ष रहकर भी चले जाते हैं। (पृ.नं. 140, 144)

23. **मु.नं. 23 (जुना मु.ता. 22.1.87/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 1.1.02)**

a) जैसे फर्रूखाबाद के रहवासी मालिक को मानते हैं। अनेक मत तो हैं ना। (पृ.नं. 146, 149)

b) साधु लोग भी गाते हैं पतित पावन सीता–राम। (पृ.नं. 147, 150)

c) हैं सब मेरे बच्चे; परन्तु अभी भक्तिमार्ग का पार्ट बजा रहे हैं। (पृ.नं. 147, 150)

d) शंकर को विनाश के निमित्त दिखाया है। (पृ.नं. 147, 151)

e) फर्रूखाबाद में बच्चियाँ तो हैं, वहाँ जो मालिक को माननेवाले हैं उनको समझाना है। (पृ.नं. 147, 151)

24. **मु.नं. 19 (जुना मु.ता. 19.6.97/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 28.6.02)**

a) उनको अनेक नाम से बुलाते हैं। फर्रूखाबाद में एक पंथ है जो एक मालिक कहते हैं। (पृ.नं. 154, 156)

25. **मु.नं. 25 (जुना मु.ता. 11.1.93/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 28.1.98)**

a) जैसे फर्रूखाबाद वाले कहते हैं हम उस मालिक को याद करते हैं। (पृ.नं. 160, 164)

26. **मु.नं. 26 (जुना मु.ता. 20.11.88/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 4.11.03)**

a) तब बाबा कहते हैं 7–8 की पार्टी आती हैं तो हर एक से फार्म भराना है। (पृ.नं. 166, 168)

b) आजकल तो गाँवडों में भी ध्यान में जाते हैं फिर उल्टा–सुल्टा सन्देश ले आते हैं। (पृ.नं. 166, 169)

c) फर्रूखाबाद में मालिक को मानते हैं ना। तुमने मालिक का अर्थ भी समझा है। (पृ.नं. 167, 169)

27. **मु.नं. 27 (जुना मु.ता. 9.2.76/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 6.2.01)**

a) कपड़े आदि सब वही हैं। तुम बुद्धि से समझते हो इनमें बाबा ने प्रवेश किया है हमको यह राज्यभाग देने। (पृ.नं. 172, 175)

PDF compressed ... using a watermarked evaluation ...

b) पहले शिव की ही पूजा करते हैं। ...फिर कलियुग में तो देखो गणेश, हनुमान, चण्डिका देवी आदि–2 अनेकानेक देवियों आदि के चित्र बनाते रहते हैं। (पृ.नं. 173, 176)
c) यह सिर्फ महिमा गाई जाती है– परमपिता परमात्मा शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। (पृ.नं. 173, 177)

28. **मु.नं. 28 (जुना मु.ता. 4.11.73/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 30.10.03)**
a) शंकर भी मेरी प्रेरणा से सर्विस पर हाजिर है। ...ब्रह्मा का बाप कौन है? (पृ.नं. 180, 184)
b) वेद अध्ययन, जप, तप आदि करना, चित्र बनाना यह कुछ भी नहीं है। (पृ.नं. 181, 185)
c) शिव पर झूठे कलंक लगाये हैं– धतूरा खाता था। (पृ.नं. 182, 186)
d) यह सब यज्ञ, जप तप आदि करते–2 तुम रसातल पहुँचे हो, पूरे पतित बने हो। (पृ.नं. 182, 186)

29. **मु.नं. 29 (जुना मु.ता. 20.5.98/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 14.6.01)**
a) (बाप) स्वयं बैठ बतलाते हैं मैं साधारण तन में प्रवेश कर फिर तुम बच्चों को सारे सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का राज बताता हूँ। (पृ.नं. 187, 191)
b) बाप परमधाम से हमको पढ़ाने, राजयोग सिखाने आया हुआ है। (पृ.नं. 187, 191)
c) आरगन्स द्वारा शिक्षा धारण करो। ...ब्रह्मा है ही नहीं। (पृ.नं. 187, 191)
d) पत्थर से फिर पारस बनाने के लिए मुझे आना पड़ता है। (पृ.नं. 188, 192)
e) बाप पहले–2 सूक्ष्म शरीर रचते हैं। यह ब्र.वि.शं. भी अपना पार्ट बजाए फिर वापस जाएंगे। (पृ. नं. 188, 192)
f) राजे लोग भी इन ल.ना. को पूजते हैं। (पृ.नं. 189, 193)
g) खुद बैठ समझाते हैं– ब्रह्माण्ड में ऊपर बैठ मैं कितना काम करता हूँ। (पृ.नं. 189, 193)
h) शिवबाबा हमको इस ब्र. तन द्वारा शिक्षा दे रहे हैं। (पृ.नं. 190, 194)

30. **मु.नं. 30 (जुना मु.ता. 9.5.92/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 21.5.02)**
a) परन्तु राइटियस बच्चे दो हुए। ...ब्रह्मा और शंकर। (पृ.नं. 195, 198)
b) ईश्वरीय पढ़ाई का एडवान्स लें या उस पढ़ाई का। (पृ.नं. 195, 198)
c) अब बच्चे तो यहाँ सम्मुख आते हैं। सुनते हो तो नशा चढ़ जाता है। (पृ.नं. 195, 198)

31. **मु.नं. 31 (जुना मु.ता. 2.9.86/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 25.9.01)**
a) अभी फिर हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बनेंगे भी वही जिन्होंने 84 जन्म लिए हैं। (पृ.नं. 200, 204)
b) वही सर्व का सद्गतिदाता, पतित पावन है। उनके बिगर कब कोई वापिस जा नहीं सकते। (पृ.नं. 200, 204)
c) कहते हैं ना– राम ने रामराज्य स्थापन करने के लिए, रावण पर जीत पाने बन्दरों का लश्कर लिया। ...बाबा कहते हैं इन वेदों शास्त्रों से कोई भी हमारे साथ मिल नहीं सकता है। (पृ.नं. 200, 204)
d) जहाँ रोटी भी नहीं मिलती बच्चों को, उन्हों को आकर गोद लेकर, बच्चा बनाकर गोद में लेता हूँ। (पृ.नं. 201, 204)

32 **मु.नं. 32 (जुना मु.ता. 21.8.84/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 17.8.04)**
a) रामचन्द्र भी राजयोग सीखता था। (पृ.नं. 208, 212)
b) यह नं.वन दुर्गति में था। ...लास्ट सो नं.वन। (पृ.नं. 208, 212)

33. **मु.नं. 33 (जुना मु.ता. 15.8.84/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 28.8.04)**
a) उनके लिए कहते हैं आकर यज्ञ रचते हैं। रुद्र शिव की पूजा करते हैं। (पृ.नं. 214, 217)
b) राम–सीता की डिनाइस्टी तो फेल हुई है। ...तुम क्षत्रिय बच्चे तो हो ना माया–रावण पर जीत पाते हो। (पृ.नं. 214, 217)

PDF compression, OCR

c) जब तक पुरुषोत्तम संगमयुग नहीं आता है तो गीता ज्ञान हो कैसे सकता? (पृ.नं. 214, 218)
d) उनसे (शास्त्रों से) मेरे साथ कोई भी नहीं मिलता। ...ऊपर तो जा न सके। (पृ.नं. 214, 218)

34. **मु.नं. 34 (जुना मु.ता. 24.2.90/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 5.2.95)**

a) ऐसे नहीं राम–सीता को सामने रखा है। ...यह ल.ना. है फुल पास। (पृ.नं. 220, 224)
b) मुख्य है त्रिमूर्ति का चित्र। (पृ.नं. 222, 226)

35. **मु.नं. 35 (जुना मु.ता. 16.7.89/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 13.7.04)**

a) बाप समझाते हैं ऐसा नहीं कहेंगे रामचन्द्र फेल हुआ, नहीं। ...आगे जन्म में ऐसा पढ़कर यह पद पाया है। (पृ.नं. 227, 228)

36. **मु.नं. 36 (जुना मु.ता. 1.7.94/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 22.7.04)**

a) भारत में वा इस दुनियाँ में कितने शास्त्र, कितनी पढ़ाई की पुस्तकें हैं। (पृ.नं. 233, 237)
b) वह मेले–मलाखड़े की बात अलग है। ...शिवजयन्ती फिर राम जयन्ती, कृष्ण जयन्ती, और किसकी जयन्ती? (पृ.नं. 235, 239)

37. **अ.वा.नं. 37, ता. 9.11.69 (पुराना एडिशन– जनवरी 69 से दिसंबर 72 तक की वाणियों का संग्रह)/रिवाइज्ड कटिंग अ.वा.ता. 9.11.69 (नया एडिशन–18.1.69 से 31.12.69 तक की वाणियों का संग्रह)**

a) कमला (कमला देवी दीक्षित– जगदम्बा) तुम किस लिस्ट में हो? (पृ.नं. 241, 246)

38. **मु.नं. 38 (जुना मु.ता. 29.8.84/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 25.8.04)**

a) उनको कहा ही जाता है हद के सन्यासी महान आत्मा, न कि परमात्मा। (पृ.नं. 247, 250)
b) ब्र. बेटा किसका? क्योंकि ब्र. भी कियेशन (इधर कियेटर लिखा है) है ना। (पृ.नं. 248, 251)
c) तेरे भाने सर्व का भला। (पृ.नं. 248, 252)
d) 40–50 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। (पृ.नं. 249, 252)

39. **मु.नं. 39 (जुना मु.ता. 31.5.84/रिवाइज्ड कटिंग मु.ता. 1.5.04)**

a) बाप आकर 50 वर्ष में पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनाते हैं। (पृ.नं. 255, 258)
b) जो ऊँच ते ऊँच था, फिर 84 जन्म पूरे किए हैं, उनमें ही आता हूँ। (पृ.नं. 256, 260)

40. **अव्यक्त संदेश नं. 40, ता. 23.6.92/कैसेट नं. 133**

a) तो मैं ने कहा– मम्मा, सभी का एक प्रश्न जो है उसका हल अब तक नहीं हुआ है कि आखिर भी एडवान्स पार्टि में इतने अच्छे से महारथी चले गये, वो क्या कर रहे हैं? ...मम्मा का मतलब यही था कि वहाँ एडवान्स पार्टि में जाते हुए भले सेवा कर रहे हैं; लेकिन हमारी जैसे ही उन्हों की भी गुप्त रीति की साधना है, ...जो हमारा जैसे लक्ष्य है वैसे उन्हों का भी लक्ष्य है और उन्हों को भी वो उसी रीति फरमान जैसे अपने में एक कर्मातीत बनने का विशेष जैसे अभ्यास है। (गुल्जार दादी के माध्यम से प्राप्त वतन का ट्रांस संदेश का कैसेट; जो कि उनकी आवाज़ में ही है; लेकिन इस कैसेट में अंतर्विष्ट सेदेश को जब ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा अव्यक्त संदेशों के एक संकलन के रूप में प्रकाशित किया गया तो इस संदेश में एडवान्स पार्टी के बारे में दिये गये इशारों [जो कि कैसेट में लगभग 25 मिनट तक सुनाया गया था] को मुद्रित प्रति से निकाल दिया गया है। उक्त कैसेट आ.ई.वि.वि. में उपलब्ध है। -पृ.नं. 263)

41. **चित्र नं. 41 (जुना त्रिमूर्ति चित्र/नया बी.के. त्रिमूर्ति चित्र)** -पृ.नं. 265
42. **चित्र नं. 42 (जुना ल.ना. चित्र/नया बी.के. ल.ना. चित्र)** -पृ.नं. 266
43. **चित्र नं. 43 (जुना कल्पवृक्ष चित्र/नया बी.के. कल्पवृक्ष चित्र)** -पृ.नं. 267
44. **चित्र नं. 44 (जुना सीढ़ी चित्र/नया बी.के. सीढ़ी चित्र)** -पृ.नं. 268
45. **चित्र नं. 45 (प्रुफ फोटो और बी.के. बैज)** -पृ.नं. 269

PDF compressed with CVISION PdfCompressor using a watermarked evaluation copy of CVISION PdfCompressor

8.1.95 प्रातःमुरली ओम शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम एक बाप के डायरेक्शन पर चलते चलो तो बाप तुम्हारा रेस्पॉन्सिबुल है, बाप का डायरेक्शन है चलते-फिरते मुझे याद करो"

प्रश्नः- किन बच्चों की अवस्था सदा अडोल रहती है ?

उत्तरः- जो निश्चयबुद्धि हैं, ईश्वरीय डायरेक्शन पर चलते हैं, ज्ञान का उल्टा नशा नहीं है, देह अभिमान नहीं है, उनकी अवस्था अडोल रहती है । उनसे कभी कोई उल्टा काम नहीं होगा ।

गीतः- यह वक्त जा रहा है........ओम् शान्ति ।

मीठे-मीठे सिकीलधे रुहानी बच्चों ने नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार इस गीत का अर्थ समझा । नम्बरवार इसलिए कहते हैं क्योंकि कोई तो फर्स्ट ग्रेड में समझते हैं, कोई सेकण्ड ग्रेड में, कोई-कोई थर्ड ग्रेड में । समझ भी हर एक की अपनी-अपनी है । निश्चयबुद्धि भी हर एक की अपनी है । बाप तो समझाते रहते हैं, ऐसा ही हमेशा समझो कि शिवबाबा इन द्वारा डायरेक्शन देते हैं । तुम आधाकल्प आसुरी डायरेक्शन पर चलते आये हो, अब ऐसे निश्चय करो हम ईश्वरीय डायरेक्शन पर चलते हैं तो बेड़ा पार हो सकता हैं । अगर ईश्वरीय डायरेक्शन न समझ मनुष्य का डायरेक्शन समझा तो मूंझ पड़ेंगे । बाप कहते हैं—मेरे डायरेक्शन पर चलने से फिर मैं रेसपॉन्सिबुल हूँ ना । इन द्वारा जो कुछ होता है, उनकी एक्टिविटी का मैं ही रेसपॉन्सिबुल हूँ, उसको हम राइट करेंगे । तुम सिर्फ हमारे डायरेक्शन पर चलो । जो अच्छी रीति याद करेंगे वही डायरेक्शन पर चलेंगे । कदम-कदम ईश्वरीय डायरेक्शन समझ चलेंगे तो कभी घाटा नहीं होगा । निश्चय में ही विजय है । बहुत बच्चे इन बातों को समझते नहीं हैं । थोड़ा ज्ञान आने से देह अभिमान आ जाता है । योग बहुत ही कम है । ज्ञान तो है हिस्ट्री-जाग्राफी को जानना, यह तो सहज है । यहाँ भी मनुष्य कितनी साइंस आदि पढ़ते हैं । यह पढ़ाई तो इज़ी है, बाकी मेहनत है योग की ।

कोई कहे बाबा हम योग में बहुत मस्त रहते हैं, बाबा मानेगा नहीं । बाबा हर एक की एक्ट को देखते हैं । बाप को याद करने वाला तो मोस्ट लवली होगा । याद नहीं करते इसलिए ही उल्टा-सुल्टा काम होता है । बहुत रात-दिन का फ़र्क है । अभी तुम इस सीढ़ी के चित्र पर भी अच्छी रीतिं समझा सकते हो । इस समय है कांटों का जंगल । यह बग़ीचा नहीं है । यह तो क्लीयर समझाना चाहिए कि भारत फूलों का बगीचा था । बगीचे में कभी जंगली जानवर रहते हैं क्या ? वहाँ तो देवी-देवता रहते हैं । बाप तो है ही हाइएस्ट अथॉरिटी और फिर वह प्रजापिता ब्रह्मा भी हाइएस्ट अथॉरिटी ठहरे । यह दादा है सबसे बड़ी अथॉरिटी । शिव और प्रजापिता ब्रह्मा । आत्मायें हैं शिव बाबा के बच्चे और फिर साकार में हम भाई-बहन सब हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे । यह है सबका ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर । ऐसे हाइएस्ट अथॉरिटी के लिए हमको मकान चाहिए । ऐसे तुम लिखो फिर देखो बुद्धि में कुछ आता है ।

शिवबाबा और प्रजापिता ब्रह्मा, आत्माओं का बाप और सब मनुष्य मात्र का बाप । यह पॉइंट बहुत अच्छी है समझाने की । परन्तु बच्चे पूरी रीति समझाते नहीं है । भूल जाते हैं, ज्ञान मगरूरी चढ़ जाती है । जैसे कि बापदादा पर भी जीत पा लेते हैं । यह दादा कहते हैं, मेरी भल न सुनो । हमेशा समझो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शिवबाबा समझाते हैं, उनकी मत पर चलो । डायरेक्ट ईश्वर मत देते हैं कि यह-यह करो, रेसपॉन्सिबुल हम हैं । ईश्वरीय बुद्धि पर चलो । यह ईश्वर थोड़ेही है, तुमको ईश्वर से पढ़ना है ना । हमेशा समझो यह डायरेक्शन ईश्वर देते हैं । यह लक्ष्मी-नारायण भी भारत के ही मनुष्य थे । यह भी सब मनुष्य हैं । परन्तु यह शिवालय के रहने वाले हैं इसलिए सब नमस्ते करते हैं । परन्तु बच्चे पूरा समझाते नहीं हैं, अपना नशा चढ़ जाता है । डिफेक्ट तो बहुतों में है ना । जब पूरा योग हो तब विकर्म विनाश हों । विश्व का मालिक बनना कोई मासी का घर थोड़ेही है । बाबा देखते हैं, माया एकदम नाक से पकड़कर गटर में गिरा देती है । बाप की याद में तो बड़ी खुशी में प्रफुल्लित रहना चाहिए । सामने एम ऑब्जेक्ट खड़ी है, हम यह लक्ष्मी-नारायण बन रहे हैं । भूल जाने से खुशी का पारा नहीं चढ़ता है । कहते हैं हमको नेष्ठा में बिठाओ, बाहर में हम याद नहीं कर सकते हैं । याद में नहीं रहते हैं इसलिए कभी-कभी बाबा भी प्रोगाम भेज देते हैं परन्तु याद में बैठते थोड़ेही हैं, बुद्धि इधर-उधर भटकती रहती है । बाबा अपना मिसाल बताते ─नारायण का कितना पक्का भक्त था, जहाँ-तहाँ साथ में नारायण का चित्र रहता था । फिर भी पूजा के समय बुद्धि इधर-उधर भागती थी । इसमें भी ऐसा होता है । बाप कहते हैं चलते-फिरते बाप को याद करो परन्तु कई कहते हैं बहन नेष्ठा करावे । नेष्ठा का तो कोई अर्थ ही नहीं है । बाबा हमेशा कहते हैं याद में रहो, कई बच्चे नेष्ठा में बैठते-बैठते ध्यान में चले जाते हैं । न ज्ञान, न याद रहती । या तो फिर झुटके खाने लग पड़ते हैं, बहुतों को आदत पड़ गई है । यह तो अल्पकाल की शान्ति हो गई । गोया बाकी सारा दिन अशान्ति रहती है । चलते-फिरते बाप को याद नहीं करेंगे तो पापों का बोझा कैसे उतरेगा ? आधाकल्प का बोझा है । इसमें ही बड़ी मेहनत है । अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो । भल बाबा को बहुत बच्चे लिख भेजते हैं--इतना समय याद में रहा परन्तु याद रहती नहीं है । चार्ट को समझते ही नहीं हैं । बाबा बेहद का बाप है । पतित पावन है तो खुशी में रहना चाहिए । ऐसे नहीं, हम तो शिवबाबा के हैं ना । ऐसे भी बहुत हैं । समझते हैं हम तो बाबा के हैं । लेकिन याद बिल्कुल करते नहीं । अगर याद करते होते तो फिर पहले नम्बरवन में जाना चाहिए । किसको समझाने की भी बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए । हम तो भारत की महिमा करते हैं । नई दुनिया में आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था । अभी है पुरानी दुनिया, आइरन एज । वह सुखधाम, यह दुःखधाम । भारत गोल्डन एज था तो इन देवताओं का राज्य था । कहते हैं हम कैसे समझें कि इनका राज्य था ? यह नॉलेज बड़ी वन्डरफुल है । जिसकी तकदीर में जो है, जो जितना पुरूषार्थ करते हैं वह देखने में तो आता है । तुम एक्टिविटी से जानते हो, हैं तो कलियुगी भी मनुष्य, तो सतयुगी भी मनुष्य । फिर उन्हों के आगे माथा जाकर क्यों टेकते हो ? इन्हों को स्वर्ग का मालिक कहते हैं ना । कोई मरता है तो कहते हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ, यह भी नहीं समझते । इस समय तो नर्कवासी सब हैं । जरूर पुनर्जन्म भी यहाँ ही लेंगे । बड़े-बड़े विद्वान, आचार्य भी कुछ नहीं जानते । तुम्हारे में भी जो बहुत तीखे हैं, वह समझ सकते हैं । बाबा हर एक को चलन से देखते रहते हैं । बाबा को कितना साधारण रीति से किस-किस से बात करनी पड़ती है । सम्भालना पड़ता है । बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं । समझते भी हैं तो बात बड़ी ठीक है । फिर भी क्यों बड़े-बड़े काँटे बन जाते हैं । एक-दो को दुःख देने से काँटे बन जाते हैं । आदत छोड़ते ही नहीं । अभी बागवान बाप फूल लगाते हैं । काँटों को फूल बनाते रहते हैं । उनका धन्धा ही यह है । जो खुद ही

काँटा होगा तो फूल कैसे बनायेगा ? प्रदर्शनी में भी बड़ी खबरदारी से किसको भेजना होता है ।

अच्छे गुणवान बच्चे वह जो कांटों को फूल बनाने की अच्छी सेवा करते हैं । किसी को भी कांटा नहीं लगाते हैं अर्थात् किसी को दुःख नहीं देते हैं । कभी भी आपस में लड़ते नहीं हैं । तुम बच्चे बहुत एक्यूरेट समझाते हो । इसमें किसी की इनसल्ट की तो बात ही नहीं । अभी शिव जयन्ती भी आती है । तुम प्रदर्शनी जास्ती करते रहो । छोटी-छोटी प्रदर्शनी पर भी समझा सकते हो । एक सेकेण्ड में स्वर्गवासी बनो अथवा पतित भ्रष्टाचारी से पावन श्रेष्ठाचारी बनो । एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति प्राप्त करो । जीवनमुक्ति का भी अर्थ समझते नहीं हैं । तुम भी अभी समझते हो । बाप द्वारा सबको जीवनमुक्ति मिलती है । परन्तु ड्रामा को भी जानना है । सब धर्म स्वर्ग में नहीं आयेंगे । वह फिर अपने-अपने सेक्शन में चले जायेंगे । फिर अपने-अपने समय पर आकर स्थापना करेंगे । झाड़ में कितना क्लीयर है । एक सद्गुरु के सिवाए सद्गति दाता और कोई हो नहीं सकता । बाकी भक्ति सिखलाने वाले तो ढेर गुरु हैं । सद्गति के लिए मनुष्य गुरु हो नहीं सकता । तुम बच्चे समझा सकते हो कि यह रामायण की कथा आदि सारे भारत पर है । सिर्फ समझाने की अक्ल चाहिए । इसमें बुद्धि से काम लेना होता है । ड्रामा का कैसा वन्डरफुल खेल है । तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं जो इस नशे में रहते हैं । अच्छा !

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1. एक बाप की याद से मोस्ट लवली बनना है । याद की प्रैक्टिस चलते फिरते कर्म में करनी है । कोई भी उल्टा-सुल्टा काम नहीं करना है ।

2. हर कार्य बाप के डायरेक्शन पर करना है । अपनी मगरूरी (देह अभिमान) नहीं दिखाना है । कांटों से फूल बनाने की सेवा करनी है । सबको सुख देना है । दुःख नहीं देना है ।

वरदान:- निश्चय के आधार पर विजयी रत्न बन सर्व के प्रति मास्टर सहारे दाता भव

निश्चय बुद्धि बच्चे विजयी होने के कारण सदा खुशी में नाचते हैं । वे अपने विजय का वर्णन नहीं करते लेकिन विजयी होने के कारण वे दूसरों की भी हिम्मत बढ़ाते हैं । किसी को नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करते । लेकिन बाप समान मास्टर सहारे दाता बनते हैं अर्थात् नीचे से ऊंचा उठाते हैं । व्यर्थ से सदा दूर रहते हैं । व्यर्थ से किनारा होना ही विजयी बनना है । ऐसे विजयी बच्चे सर्व के लिए मास्टर सहारे दाता बन जाते हैं ।

स्लोगन:-

निःस्वार्थ और निर्विकल्प स्थिति से सेवा करने वाले ही सफलता मूर्त हैं ।

अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात:-

आगे चल कर जितने सर्विस के साधनों द्वारा सर्विस को बढ़ायेंगे व मैदान में प्रसिद्ध होते जायेंगे, वैसे हर प्रकार के लोग आपकी हर बात को मन्त्रों द्वारा व अपनी सिद्धियों द्वारा चैक करने की चैलेन्ज करेंगे। संकल्पों को व कर्मों को भी करने के लिए आपके पीछे सी.आई.डी. (गुप्तचर) होंगे। ऐसे सहज नहीं मानेंगे। बिना प्रूफ और प्रमाण के बुद्धिमान लोग मानने के लिये तैयार नहीं होते। चैलेन्ज करने के साथ-साथ व सर्विस के स्थूल साधनों के साथ-साथ क्या ऐसी तैयारी कर रहे हो? माइण्ड-कन्ट्रोल का एग्जामिनेशन लेंगे। ऐसे नहीं, योग में बैठते समय चेक करेंगे, विशेष परिस्थिति के समय माइण्ड-कन्ट्रोल व स्थिति की चेकिंग करेंगे। माया के सी.आई.डी. ऑफिसर कम नहीं होते। तो ऐसी तैयारी करने की जिम्मेदारी व स्वरूप बन सैम्पल रूप में आगे आने की जिम्मेदारी इस ग्रुप की है। तब तो पाण्डवों की यादगार ऊंची दिखाई है। ऊंची स्थिति का प्रमाण—यादगार है। दूसरी बार, जब आओ तो इस बात में पास विद् ऑनर बनकर आओ, तब कहेंगे—पाण्डव सेना। अच्छा!

कितने समय से मेहनत कर रहे हो? जन्म से? जो जन्म से ही प्रयत्न में लाने वाली बात है, क्या वह मुश्किल लगती है? औरों को कहते हो अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करना क्या मुश्किल है? ऐसे ही ब्राह्मणों का पहला धर्म और कर्म जो है वह करना क्या ब्राह्मणों के लिये मुश्किल है? मरजीवा बन गए हो न, या कि मर कर जिन्दा हो जाते हो? मरना शूद्रपन से है, जीना ब्राह्मणपन में है। यह ब्राह्मणों
a) का अलौकिक जीवन है। ब्राह्मणों को कुछ मुश्किल होता है क्या? ब्राह्मण जीवन के जी-दान का आधार कौन-सा है? मुरली। पढ़ाई का भी आधार है मुरली। तो जी-दान का आधार अच्छी तरह से स्नेह से प्रयत्न में लाते हो? नियम प्रमाण नहीं, लेकिन जी-दान का आधार समझ स्नेह रूप में स्वीकार करते हो। जितना स्नेह जी-दान से होगा उतना ही स्नेह जीवनदाता से होगा। ऐसा स्नेही, अन्य आत्माओं को भी सदा स्नेही व निर्विघ्न बना सकेंगे। अब ऐसे आधार रूप समझ सबके आगे उदाहरण रूप बनो। यह भी जिम्मेदारी है। पाण्डवों के मुख से चलते-फिरते मुरली की रुह-रुहान व चर्चा कम सुनाई पड़ती है। गोपियों के मुख से मुरली की चर्चा अधिक सुनने में आती है। क्यों? आपस में ज्ञान की चर्चा करना, यह तो ब्राह्मणों का कर्तव्य है। जिस बात में जिसकी जो लगन होती है, उसके लिए समय की कमी कभी नहीं हो सकती।

तो इन दो बातों पर ध्यान रखो एक तो है प्योरिटी, दूसरा जी-दान का महत्व। सूक्ष्म साधन के लिए अलग समय की आवश्यकता नहीं है। जैसे दुनिया के लोगों ने गृहस्थ और आश्रम को अलग कर दिया है और आप लोग दोनों को मिला कर एक करते हो, वैसे स्थूल और सूक्ष्म साधनों को अलग करते हो, इसलिये प्रत्यक्षफल नहीं मिलता। दोनों ही साथ-साथ होने से प्रत्यक्षफल देखेंगे। वाणी के साथ-साथ मन्सा चाहिए और कर्म के साथ-साथ भी मन्सा चाहिए क्योंकि अभी लास्ट टाइम है ना? लास्ट टाइम में जो भी श्रेष्ठ अस्त्र-शस्त्र होते हैं, वे सब यूज़ किये जाते हैं। अगर यह सब पीछे करेंगे तो टाइम बीत जायेगा। जब अष्ट शक्तियों को साथ-साथ सर्विस में लायेंगे, तब ही अष्ट-देवता प्रसिद्ध होंगे अर्थात् स्थापना का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देगा। ऐसे नहीं कि पहले स्थूल करके फिर पीछे सूक्ष्म करेंगे। नहीं, साथ-साथ के सिवाय सफलता नहीं। अच्छा। ओम् शान्ति।

PDF compressed with PDFCompressor

29-3-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम ब्राह्मण हो यज्ञ रक्षक, यह यज्ञ ही तुम्हें मन-इच्छित फल देने वाला है"

प्रश्नः- किन दो बातों के आधार से 21 जन्मों के लिए सब दु:खों से छूट सकते हो?

उत्तरः- प्यार से यज्ञ की सेवा करो और बाप को याद करो तो 21 जन्म कभी दु:खी नहीं होंगे। दु:ख के आंसू नहीं बहायेंगे। तुम बच्चों को बाप की श्रीमत है - बच्चे बाप के सिवाए कोई भी मित्र सम्बन्धी, दोस्त आदि को याद न करो। बन्धनमुक्त बन प्यार से यज्ञ की सम्भाल करो तो मन-इच्छित फल मिलेगा।

गीतः- बचपन के दिन भुला न देना...

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे बच्चों ने गीत सुना और इसका अर्थ भी समझा कि यह हमारा ईश्वरीय जन्म है, इस जन्म में हम जिसे मम्मा बाबा कहते हैं उनकी मत पर चलने से ही हम विश्व के मालिक बनेंगे क्योंकि वह है नये विश्व का रचयिता। इस निश्चय से ही तुम यहाँ बैठे हो और विश्व के मालिकपने का वर्सा ले रहे हो। यह जो पुरानी विश्व है वह तो विनाश होने वाली है, इनमें कोई सुख नहीं। सब विषय सागर में गोते खा रहे हैं। रावण की जंजीरों में दु:खी होकर सबको मरना है। अब बाप बच्चों को वर्सा देने आये हैं। बच्चे जानते हैं हम जिनके बने हैं उससे वर्सा पाना है। वह हमको राजयोग सिखलाते हैं। जैसे बैरिस्टर कहेंगे हम बैरिस्टर बनायेंगे। बाप कहते हैं तुमको स्वर्ग का डबल सिरताज बनाऊंगा। श्री लक्ष्मी-नारायण अथवा उसकी डिनायस्टी का वर्सा देने आया हूँ। उसके लिए तुम राजयोग सीख रहे हो। यह बातें भूलो मत। माया भुलायेगी, परमपिता परमात्मा से बेमुख करेगी। उनका धन्धा ही यह है। जब से उसका राज्य हुआ है, तुम बेमुख बनते आये हो। अब कोई काम के नहीं रहे। शक्ल भल मनुष्य की है परन्तु सीरत बिल्कुल बन्दर की है। अब तुम्हारी सूरत मनुष्य की, सीरत देवताओं की बना रहे हैं। इसलिए बाबा कहते हैं बचपन भूल न जाओ। इसमें तकलीफ कोई भी नहीं है। जो निर्बन्धन हैं उनके तो अहो भाग्य कहेंगे। वह लौकिक मात-पिता तो हैं विकारों में डालने वाले और यह मात-पिता है स्वर्ग में ले जाने वाले। ज्ञान स्नान करा रहे हैं। आराम से बैठे हैं। हाँ, शरीर से काम भी लेना है। बेहद के बाप से वर्सा मिल रहा है और कोई की याद नहीं सताती। अगर कोई बन्धन है तो फिर याद सताती है। कोई सम्बन्धी याद आया, मित्र-दोस्त याद आया, बाइसकोप याद आया.. तुमको तो बाप कहते हैं और कोई को याद नहीं करो। यज्ञ की सेवा करो और बाप को याद करो तो 21 जन्म तुम कभी दु:ख नहीं पायेंगे। दु:ख के आंसू नहीं बहेंगे। ऐसे बेहद के माँ बाप को कभी छोड़ना नहीं चाहिए। यज्ञ की सेवा करनी चाहिए। तुम हो यज्ञ के रक्षक। यज्ञ की हर प्रकार की सेवा करनी

PDFCompressor

है। यह यज्ञ मन-इच्छित फल देता है अर्थात् जीवनमुक्ति, स्वर्ग की राजाई देता है। तो ऐसे यज्ञ की कितनी सम्भाल करनी चाहिए। कितनी शान्ति रहनी चाहिए। जो कोई भी आवे तो समझे यहाँ तो सुख-शान्ति लगी हुई है। यहाँ कुछ भी आवाज करना बिल्कुल पसन्द नहीं आता। रावण के राज्य से छूटकर आये हैं। अभी हम रामराज्य में जाते हैं। जो बन्धनमुक्त हैं उनके लिए तो अहो सौभाग्य। लखपति, करोड़पति से भी वह महान सौभाग्यशाली हैं जो बेहद के बाप से वर्सा लेते हैं, जिसका बंधन टूट गया उनका भी कहेंगे अहो सौभाग्य। जो बन्धनमुक्त बन बाबा से वर्सा लेते हैं, उनकी कितनी तकदीर खुल जाती है। बाहर तो रौरव नर्क है, जिसमें दु:ख के बिगर कोई सुख नहीं है। अब बाप कहते हैं और सब चिंताओं को छोड़, यज्ञ की सर्विस प्यार से करो। धारणा करो। पहले-पहले अपना जीवन हीरे जैसा बनाना है। वह बनेगा श्रीमत पर। यहाँ तो सब बच्चे बन्धन से छूटे हुए हैं। अपना स्वभाव भी बहुत अच्छा रखना है, सतोप्रधान बनना है। नहीं तो सतोप्रधान राज्य में ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। यज्ञ से जो कुछ मिले वह स्वीकार करना है। बाबा अनुभवी है। भल कितना भी बड़ा जौहरी था, कहाँ आश्रम में जायेंगे तो आश्रम के नियमों पर पूरा चलेंगे। वहाँ ऐसे नहीं मांगा जाता कि हमको फलानी चीज़ दो। बड़ा रॉयल्टी से जो भोजन सबको मिलता है वही खाया जाता है। इस ईश्वरीय आश्रम में बड़ी शान्ति चाहिए।

जो पिया के साथ है.... सो भी दोनों बापदादा बैठे हैं। सम्मुख बैठ सुनते हैं। अगर अभी सर्विस लायक न बने तो फिर कल्प-कल्पान्तर पद भ्रष्ट हो जायेंगे। अन्धों की लाठी बन, यह महामन्त्र सबको देना है। यही संजीवनी बूटी है। कोई-कोई को माया बिल्कुल ही बेहोश कर देती है। इस युद्ध के मैदान में तो कहा जाता है बाप और वर्से को याद करो। यह है संजीवनी बूटी। हनूमान तो तुम ही हो, नम्बरवार महावीर बनते हो। बहुत हैं जो बेहोश हो पड़े हैं। उनको होश में लाना है तो कुछ जीवन बना लें। देह में भी मोह नहीं रखना है। मोह रखना चाहिए बाप और अविनाशी ज्ञान रत्नों में। जितनी धारणा होगी उतना औरों को भी करायेंगे। बाप कहते हैं हमको ज्ञानी तू आत्मा प्रिय लगते हैं। प्रदर्शनी की सर्विस के लिए बाबा ज्ञानी बच्चों को ही ढूँढते हैं। समझाना बड़ा सहज है। बड़े बड़े आदमी सुनकर खुश होते हैं। समझते हैं जीवन इस संस्था द्वारा बनती है। परन्तु यह भी कोटों में कोई समझते हैं। यह है बेहद का सन्यास। जो कुछ इस पुरानी दुनिया में देखते हैं, यह सब खत्म हो जायेगा। अभी तो बाप से वर्सा लेना हैं, वापिस जाना है। फिर से हम सूर्यवंशी कुल में आकर राज्य करेंगे। राज्य किया था फिर माया ने छीन लिया। कितनी सहज बात है। मीठे-मीठे बाप को याद करना है। दिल बाप के पास लगी हुई हो। बाकी कर्मेन्द्रियों से कर्म तो करना है। श्रीमत पर चलना है। लाडले मीठे-मीठे बच्चे बाप कहते हैं मुख से सदैव ज्ञान रत्न निकालो, पत्थर नहीं निकालो। कोई भी संसार समाचार की बातें नहीं निकालो। नहीं तो मुख कड़ुवा हो जायेगा। एक दो को रत्न देते रहो। तुम्हारे पांस रत्नों की झोली

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है, विनाशी धन दान करते हैं। भारत को महादानी कहा जाता है। इस समय बाप बच्चों को दान करते हैं। बच्चे बाप को दान करते हैं। बाबा शरीर सहित यह सब कुछ आपका है। बाप फिर कहते हैं यह विश्व की बादशाही तुम्हारी है। इस पुरानी दुनिया का सब कुछ खत्म होना है, क्यों न हम बाबा से सौदा कर लें। बाबा यह सब कुछ आपका है, भविष्य में हमको राजाई देना। हम यही चाहते हैं कोई और चीज़ की हमको दरकार नहीं। ऐसे कोई न समझे कि हम तन-मन-धन देते हैं तो हम कोई भूख मरेंगे। नहीं, यह शिवबाबा का भण्डारा है, जिससे सबका शरीर निर्वाह होता रहता है और होता रहेगा। द्रोपदी का मिसाल। अब प्रैक्टिकल में पार्ट चल रहा है। शिवबाबा का भण्डारा सदैव भरपूर है। यह भी एक परीक्षा थी, जिनको डर लगा वह सब चले गये। बाकी साथ देने वाले चले आये। भूख मरने की बात नहीं। अब तो बच्चों के लिए महल बन रहे हैं। अच्छा रहना है तो मेहनत कर अपना ऊंच पद बनाना है। यह कल्प-कल्प की बाजी है। इस बारी इम्तहान में फेल हुए तो कल्प-कल्पान्तर होते रहेंगे। पास भी ऐसा होना है जो मम्मा बाबा के तख्त पर बैठें। 21 जन्म तख्त पिछाड़ी तख्त पर बैठेंगे।

a) एक बाप के सिवाए कोई को भी याद नहीं करना है। मुरली लिखना बहुत अच्छी सर्विस है, सभी खुश होंगे, आशीर्वाद करेंगे। बाबा अक्षर बहुत अच्छे हैं। नहीं तो लिखते हैं अक्षर अच्छे नहीं। बाबा हमको वाणी कट करके भेज देते हैं। हमारे रत्नों की चोरी हो जाती है। बाबा हम अधिकारी हैं - जो आपके मुख से रत्न निकलते हैं वह सब हमारे पास आने चाहिए। यह कहेंगे भी वही जो अनन्य होंगे। मुरली की सेवा बहुत अच्छी रीति करनी चाहिए। सभी भाषायें सीखनी चाहिए। मराठी, गुजराती आदि.. जैसे बाबा रहमदिल है बच्चों को भी रहमदिल बनना है। पुरुषार्थ कर जीवन बनाने के लिए मददगार बनना है। बाकी उस दुनिया का जीवन तो बिल्कुल ही फीका है। एक दो को काटते रहते हैं। कितने पतित हैं। अब क्यों न हम बाबा की श्रीमत पर चलें। बाबा मैं आपका हूँ, आप जिस सर्विस में चाहें लगा दें। फिर रेसपान्सिबुल बाबा होगा। एशलम में आने वाले को बाबा सब बन्धनों से मुक्त कर देगा। बाकी इस दुनिया में तो गन्द लगा पड़ा है। ईश्वर सर्वव्यापी कह बेमुख कर देते हैं। अगर सर्वव्यापी है, नजदीक बैठे हैं फिर हे प्रभू कह पुकारने की क्या दरकार है। समझाओ तो गुर्र गुर्र करते हैं। अरे भगवान खुद कहते हैं मैंने तो कभी ऐसे कहा नहीं कि मैं सर्वव्यापी हूं। यह तो भक्ति मार्ग वालों ने लिख दिया है। हम भी खुद पढ़ते थे। परन्तु उस समय ऐसे नहीं समझते थे कि यह कोई ग्लानी है। भक्तों को कुछ भी मालूम नहीं पड़ता है, जो कुछ कहो वह सत्य मान लेते हैं। बाबा कितना अच्छी रीति समझाते हैं फिर बाहर जाकर हंगामा करते हैं। तो फिर वहाँ चलकर दास दासियां नौकर चाकर बनेंगे। बाबा ने कह दिया है पिछाडी का जब समय होगा उस समय तुमको पूरा पता पड़ेगा। साक्षात्कार करते रहेंगे और बताते रहेंगे कि फलाने-फलाने यह बनेंगे। फिर उस समय

सिर नीचे करना पड़ेगा, फिर वह खुशी नहीं रहेगी, जो राज़ाई वालो को रहेगी। दिल अन्दर जैसे कांटा लगता रहेगा यह क्या हुआ! परन्तु टू लेट, बहुत पछतायेंगे। होगा तो कुछ भी नहीं। बाप कहेंगे - तुमको इतना समझाते थे फिर भी तुम यह करते थे, अब अपना हाल देखो। कल्प-कल्पान्तर पछतायेंगे। सजनियों को नम्बरवार ले जायेंगे ना। नम्बरवन से लास्ट तक समझेंगे। पढ़ाई अच्छी नहीं पढ़ी है तो लास्ट में बैठे हैं। इम्तहान के दिनों में मालूम पड़ जाता है कि हम कितनी मार्क्स से पास होंगे। तुम समझेंगे कि हम क्या पद पायेंगे। सर्विस नहीं करेंगे तो धूल मिलेगा। पढ़ाई और सर्विस पर ध्यान देना है। मीठे ते मीठे बाबा के बच्चे हो तो बहुत मीठा बनना है। शिवबाबा कितना मीठा, कितना प्यारा है। हमको फिर से ऐसा बनाते हैं। कितनी बड़ी युनिवर्सिटी है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- देह सहित सबसे मोह निकाल, बाप और अविनाशी ज्ञान रत्नों से मोह रखना है। ज्ञान रत्न दान करते रहना हैं।

२- पढ़ाई और सर्विस पर पूरा ध्यान देना है, बाप समान मीठा बनना है। संसार समाचार न सुनना है, न दूसरों को सुनाकर मुख कडुवा करना है।

वरदान:- अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाने वाले क्यूं, क्या की हलचल से मुक्त अचल-अडोल भव

बापदादा सदा कहते हैं कि रोज़ अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और जो हो गया, जो हो रहा है नथिंगन्यु, तो फुलस्टॉप भी बिन्दी। यह तीन बिन्दी का तिलक लगाना अर्थात् स्मृति में रहना। फिर सारा दिन अचल-अडोल रहेंगे। क्यूं, क्या की हलचल समाप्त हो जायेगी। जिस समय कोई बात होती है उसी समय फुलस्टॉप लगाओ। नथिंगन्यु, होना था, हो रहा है... साक्षी बन देखो और आगे बढ़ते चलो।

स्लोगन:-

परिवर्तन शक्ति द्वारा व्यर्थ संकल्पों के बहाव का फोर्स समाप्त कर दो तो समर्थ बन जायेंगे।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

16-5-83 प्रात: क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे अपना पुराना बेग बेगेज ट्रान्सफर कर दो तो सतयुग में सब [illegible] नया मिल जायेगा, शिवबाबा है निष्कामी नम्बरवन ट्रस्टी"

प्रश्न:- बाप को किन बच्चों की हर प्रकार से सम्भाल करनी पड़ती है? उत्तर:- जो निश्चयबुद्धि बन अपनी पूरा2 समाचार बाप को देते हैं। बाप से हर कदम पर डायरेक्शन लेते हैं, ऐसे बच्चों का बाप को बहुत ख्याल रहता है। बाबा कहे मीठे बच्चे, कभी भी श्रीमत में संशय नहीं आना चाहिए। संशय आया तो माया बहुत नुकसान कर देती। तुम्हें लायक बनने नहीं देगी।

गीत:- दूर पे आये हैं... ओमशान्ति। मीठे2 सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। बच्चे उनको कहा जाता है जो बाप के बनते हैं। बाप ने समझाया है यह अन्तिम मरजीवा जन्म, जीते जी बाप का बनना है। यह तो बच्चे जानते हैं श्रीमत गाई हुई है। श्री मद भगवानुवाच। उस गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है परन्तु पहले शिवबाबा फिर ब्रह्मा फिर कृष्ण। तो श्रीमत कृष्ण

a) की नहीं कहेंगे। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हमारा बाबा है। पतित पावन कृष्ण को अथवा राम को नहीं कहेंगे। वह देवी गुणों वाले मनुष्य हैं। मनुष्य को पतित पावन नहीं कहा जाता। पतितों को पावन बनाने वाला एक ही बाप है। जिसकी श्रीमत पर तुम चल रहे हो। प्रजापिता ब्रह्मा की मत मशहूर है। श्रीमत भी मशहूर है लेकिन उनमें भूल कर दी है जो बाप के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। निराकार परमात्मा सभी धर्म वालों का पिता है। कृष्ण को सभी नहीं मानेंगे। क्रिश्चियन क्राइस्ट को फादर मानते हैं न कि कृष्ण को क्योंकि क्रिश्चियन हैं क्राइस्ट की मुख वंशावली। शिवबाबा आकर तुमको अपना बनाते हैं। कहते हैं सिर हथेली पर रखकर बाप का बने हैं। उनके डायरेक्शन पर चलने के लिए। बच्चों को उनको मत देने की दरकार नहीं है। वह यह मत देने वाला है। ऐसे नहीं यह क्यों कहते नहीं। यह तो सब बच्चे हैं। शिवबाबा

b) अन्तर्यामी है। वह जो मत देंगे जो कुछ करेंगे राइट करेंगे। इस प्रकार ब्रह्मा से भी जो कुछ करायेंगे वह राइट ही होगा। क्योंकि करनकरावनहार है। [illegible] भी यह मत देनी है कि यह करो। तुम्हारा कनवर्शन है। शिवबाबा से कोई को भी [illegible] नहीं देखना है। श्रीमत पर चलना है। शिवबाबा तो है निराकार साक्षी। उनका यह [illegible] है नहीं। तुम यहाँ पर घर में रहते हो फिर स्वर्ग में जाकर अपने घर में रहेंगे। शिवबाबा कहता है मैं तो नहीं रहूँगा। मैं तो सगम पर थोड़े टाइम के लिए आता हूँ। तुम हो सच्चे2 रूहानी सेलवेशन आर्मी। सुप्रीम बाप डायरेक्शन दे रहे हैं। हूबहू कल्प पहले मुआफिक। कल्प पहले जो डायरेक्शन दिये होंगे वही देंगे। दिनरात [illegible] सुनाते रहते हैं। [illegible] समझ न सके। करांची से लेकर मुरली चलती आई है। [illegible] मुरली नहीं चलाते थे। रात को दो बजे उठकर 10-15 पेज लिखते थे। शिवबाबा लिखवाते थे। फिर उसकी कापियाँ निकालते थे। भक्तिमार्ग के तो बड़े2 किताब

कट

c) बनाते जाते हैं वह फिर रखते हैं। तुम कितना [illegible] रखेंगे। क्योंकि जानते हैं यह सब विनाश होना है। चित्र आदि भी थोड़े समय के लिए हैं फिर यह दब जायेंगे। वहाँ न शास्त्र न चित्र रहेंगे। फिर यह जो कुछ चल रहा है कल्प के बाद फिर होगा। शास्त्र आदि छपने से शुरू होंगे। जिनके लिए बाप समझाते हैं यह सब झूठे हैं। इनसे परमधाम का रास्ता नहीं मिलता है। ग्रंथ पहले बहुत छोटा था दिनप्रतिदिन बड़ा बनाते जाते हैं। वास्तव में शिवबाबा की

d) जीवन कहानी बड़ी बनानी चाहिए। तुम बच्चे बाप की जीवन कहानी जानते हो। बाप [illegible] समझाते हैं मैं भक्ति मार्ग में क्या2 करता हूँ। भक्त [illegible] भी इनश्योर करता हूँ। ईश्वर अर्थ मनुष्य दान करते हैं। कहते हैं ना इसने ईश्वर अर्थ किया है तब साहूकार के घर में जन्म मिला है। भक्ति में धर्मात्मा बहुत होते हैं। बाप कहते हैं मैं बच्चों को दूसरे जन्म में [illegible] अल्पकाल के लिए फल देता आया हूँ। अच्छा वा बुरा फल मिलता है ना। कितना बड़ा [illegible] पोस्ट हुआ। जो जैसे कर्म करते हैं उस अनुसार फल मिलता है। माया उल्टा कर्म कराती है जिससे तुम दुख पाते हो। अब मैं तुमको ऐसा कर्म सिखलाता हूँ जो कभी दुख नहीं होगा और वहाँ माया भी नहीं होती है। तो जो जितना अपने को इनश्योर करें शिवबाबा भी नम्बरवन ट्रस्टी है। दूसरे की आसक्ति जाती है। कोई ट्रस्टी किसका खाना खराब भी कर देते हैं। बाबा [illegible]

compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कैसा ट्रस्टी है। कहते हैं यह सब कुछ बच्चों के लिए है। तुम्हारा सारा कनेक्शन शिवबाबा से है। बाप कहते हैं मैं सच्चा ट्रस्टी हूँ। मैं खुद सुख नहीं लेता हूँ। बच्चों को सारी राजधानी दे देता हूँ। यह बाबा भी कहते हैं मैंने फुल इन्श्योरेन्स कर दिया है। तन-मन-धन सब बाबा की सर्विस में है। सिन्धी में एक कहावत है- हथा जिसका पहला पर सो पहुँचे ... दो मुट्ठी देते हैं तो महल मिलते हैं। देखो अभी मकान बना है, कोई ने एक रुपया भेजा, हमारी ईंट लगा दो ... अरे तुमको सबसे अच्छा महल मिलेगा। क्योंकि तुम गरीब हो। मैं हूँ ही गरीब निवाज। गरीब का एक रुपया साहूकार का 10हजार। दोनों को ही एक मर्तबा मिल जाता है। साहूकार बहुत मुश्किल आते हैं। सबसे कन्यायें फ्री हैं। नम्बरवन देखो मम्मा गई। बाबा ने सब कुछ दिया फिर भी पहले लक्ष्मी फिर नारायण। कितना वन्डरफुल खेल है। कब भी किस बात में संशय नहीं होना चाहिए। बापदादा कोई कम थोड़ेही हैं। जरा भी संशय नहीं लाना चाहिए। बहुत मीठा बनना है। कदम2पर श्रीमत लेनी है। नहीं तो माया नुकसान करा देती है। कितने बच्चों को डायरेक्शन देने पड़ते हैं। बाबा कहते हैं पूरा समाचार लिखो, बाबा हर प्रकार की सम्भाल करेंगे। बाबा को बहुत ख्याल रहता है। कहाँ भी बच्चा छूट जाए। पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना चाहिए ... तुम मोस्ट बिलवेड गॉड फादरली स्टूडेन्ट हो। भगवानुवाच भी गाया हुआ है परन्तु कृष्ण का नाम डाल दिया है। कृष्ण भी सब मनुष्यों से ऊँचा ठहरा। फर्स्ट नम्बर श्रीकृष्ण का नाम देते हैं। नारायण का क्यों नहीं। कृष्ण है छोटा सतोप्रधान फिर युवा वृद्ध अवस्था होती है। बालक ब्रह्म ज्ञानी समान कहते हैं। बच्चे से पाप नहीं होता। कृष्ण का भी जन्म दिन मनाते हैं। कृष्ण को ढकेल दिया है द्वापर में। यह सब बाप ही समझाते हैं। इससमय ... तुम ब्राह्मण हो उत्तम। तुम हो ईश्वरीय सन्तान। सतयुग में ईश्वरीय सन्तान नहीं कहलायेंगे। ईश्वर से जरूर स्वर्ग की प्राप्ति होगी। यह हैं तुम्हारे बन्ति अमूल्य दुर्लभ जीवन सभी का तो हो नहीं सकता। यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। जो कल्प पहले पढ़े थे वही पढ़ रहे हैं। भगवान ने जरूर भगवान भगवती रचे हैं। परन्तु उन्हों को हम भगवान भगवती कह नहीं सकते। क्योंकि गॉड इज वन। उस निराकार की सारी महिमा है। साकार की थोड़ेही महिमा होती है। ल०ना०को निराकार ने ऐसा बनाया। तुम भी बाप द्वारा स्वर्ग के मालिक बन रहे हैं। राजयोग सीख रहे हैं। बरोबर गीता में राजयोग है। जब राजाई स्थापन हुई थी तो उस समय विनाश भी हुआ था। अभी है संगम। शिवबाबा आते हैं तो खेल पूरा करते हैं। फिर कृष्ण का जन्म ... होता है। मनुष्य मूँझगये हैं। परमपिता परमात्मा सभी

e) शास्त्रों का सार आकर समझाते हैं। यह सब झूठे शास्त्र आदि पढ़ना। इससे वेस्ट आफ टाइम वेस्ट आफ एनर्जी होती है। भक्ति मार्ग में बहुत बड़े मन्दिर बनाते हैं। उन मन्दिरों में पदमों की मिलकियत थी। अब तो सब लोप हो गये हैं। भक्ति मार्ग के शास्त्र पढ़ते2 यात्रा करते2 मन्दिर बनाते2 सेवा करते2 भारत कंगाल बन पड़ा है। अभी तुम जैसे मास्टर नॉलेजफुल हो गये हो। बाप ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, ब्लिसफुल है। यह बाप की ही महिमा है। बाप कहते हैं भारत सबसे अच्छा तीर्थ स्थान है। परन्तु कृष्ण का नाम डालने से सारा मान खत्म कर दिया है। नहीं तो सब शिव के मन्दिर में फूल चढ़ाते। सबका सद्गति दाता एक है। आधाकल्प तुम प्रालब्ध भोग नीचे आते जाते हो। सबको तमोप्रधान बनना ही है। अब बाप कहते हैं जो बैग बैगेज है सब दे दो तो तुमको ट्रान्सफर कर सतयुग में दे देंगे। हम खुद तो नहीं लेते हैं। साफ बात है। मनुष्य तो अपने लिए करते हैं फिर कहते हैं हम निष्काम करते हैं। परन्तु निष्काम तो कोई कर नहीं सकता। हर चीज का फल जरूर मिलता है। मैं तो तुम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्न देता हूँ। तुम्हारे लिए ही वैकुण्ठ लाता हूँ। बच्चों को सावरन्टी की सौगात देता हूँ। तो वह लेने लिए लायक बनना चाहिए। स्वर्ग का मालिक बनना है। हथेली पर बहिश्त मिलता है। सेकण्ड में जीवनमुक्ति अथवा सेकण्ड में बादशाही। दिव्य दृष्टि दाता शिवबाबा है। सेकण्ड में वैकुण्ठ में ले जाते हैं। इस साकार बाबा के हाथ में चाबी नहीं है। बाप कहते हैं -मैं तुम बच्चों को राजाई देता हूँ। मैं राजाई नहीं करता हूँ। फिर तुम जब भक्ति मार्ग में जायेंगे

PDF compressor ... PDFCompressor

"मीठे बच्चे – शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों की मत मशहूर है, तुम्हें दोनों की मत पर चलकर अपना कल्याण करना है" 3

प्रश्नः- नम्बरवन ट्रस्टी कौन है और कैसे?

उत्तरः- शिवबाबा है नम्बरवन ट्रस्टी, उसमें बिल्कुल आसक्ति नहीं। भक्ति मार्ग में भी तुम उनके अर्थ जो भी दान-पुण्य आदि करते हो, वह सब इनश्योर हो जाता है, जिसका फल दूसरे जन्म में मिलता है। अभी भी जो बाप के अर्थ अपना सब कुछ इनश्योर करते उनका पूरा रिटर्न बाप देता है क्योंकि बाबा कहते– मैं खुद तो सुख भोगता नहीं। मैं तुम्हारा लेकर क्या करूँगा।

गीतः- दर पर आये हैं कसम लेके....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। बच्चे उनको कहा जाता है जो बाप के बनते हैं। बाप ने समझाया है यह है अन्तिम मरजीवा जन्म। जीते जी बाप का बनना है। यह तो बच्चे जानते हैं, श्रीमत गाई हुई है। श्रीमत भगवानुवाच। गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है परन्तु है शिवबाबा। उनके बाद ब्रह्मा फिर कृष्ण। श्रीमत कृष्ण की कट a) नहीं कहेंगे। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हमारा बाप है। पतित-पावन कृष्ण अथवा राधे आदि को नहीं कहेंगे। वह दैवीगुण वाले मनुष्य हैं। मनुष्य को पतित-पावन नहीं कहा जाता। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे पतित-पावन आओ। पतितों को पावन बनाने वाला एक ही बाप है, जिसकी श्रीमत पर तुम चल रहे हो। प्रजापिता ब्रह्मा की मत मशहूर है। श्रीमत भी मशहूर है। परन्तु उनमें भूल कर देते हैं जो बाप के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। सब धर्म वालों का तो एक ही बाप है। कृष्ण को तो सब नहीं मानेंगे। क्रिश्चियन लोग क्राइस्ट को फादर मानते हैं, न कि कृष्ण को क्योंकि क्रिश्चियन हैं क्राइस्ट की मुखवंशावली। शिवबाबा आकर तुमको अपना बनाते हैं। कहते हैं, सिर हथेली पर रख बाप के बने हैं। उनके डायरेक्शन पर चलना पड़े। तुम्हें बाप को अपनी मत देने की दरकार नहीं रहती। वह खुद मत देने वाला है। यह तो सब बच्चे हैं। शिवबाबा नामीग्रामी है। वह जो मत देंगे, कट b) जो कुछ करेंगे राइट। इस ब्रह्मा को भी मत देते हैं कि यह करो। तुम्हारा कनेक्शन ही शिवबाबा से है। कोई का भी अवगुण नहीं देखना है, श्रीमत पर चलना है। शिवबाबा तो है निराकार। उनका यह घर तो है नहीं। तुम यहाँ पुराने घर में रहते हो फिर स्वर्ग में जाकर अपने घर में रहेंगे। शिवबाबा कहते हैं मैं तो नहीं रहूँगा। मैं तो इस समय थोड़े टाइम के लिए आता हूँ।

तुम हो सच्चे-सच्चे रूहानी सैलवेशन आर्मी। सुप्रीम रूह (बाप) डायरेक्शन दे रहे हैं, हूबहू ड्रामा प्लैन अनुसार कल्प पहले मुआफ़िक। कल्प-कल्प जो डायरेक्शन देते होंगे वही देते हैं। रात-दिन गुह्य सुनाते रहते हैं। नया कोई यह समझ न सके। भल कोई 35-40 वर्ष से रहते हैं परन्तु बहुत हैं जो इन गम्भीर बातों को समझते नहीं हैं। बाबा तो रोज़ नया सुनाते रहते हैं। कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। पहले बाबा मुरली चलाते

नहीं थे। रात को 2 बजे उठकर 10-15 पेज लिखते थे। बाबा लिखवाते थे फिर उनकी कापियाँ निकलती थी। भक्तिमार्ग में तो शास्त्र आदि के कागज सम्भालते हैं। दिन-प्रतिदिन बड़ी-बड़ी किताबें बनाते आते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं। वह फिर पढ़कर रखते c) हैं। तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो। नहीं तो यह वर्शन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए। परन्तु नहीं, जानते हैं कि यह सब विनाश हो जायेगा। चित्र आदि जो भी तुम बनाते हो थोड़े समय के लिए हैं। फिर यह दब जायेंगे फिर वहाँ न शास्त्र, न चित्र आदि कुछ भी नहीं रहते हैं फिर यह जो कुछ चल रहा है, कल्प बाद भी होगा। शास्त्र आदि फिर द्वापर से शुरू होंगे। ग्रंथ भी आगे तो हाथ से लिखा हुआ बहुत छोटा था। अब बड़ा बनाया है। दिन-प्रतिदिन बड़ा बनाते जायेंगे। नहीं तो शिवबाबा की जीवन कहानी कितनी कट d) लिखनी चाहिए। अभी तुम बच्चे कहते हो— परमपिता परमात्मा की जीवन कहानी हम जानते हैं। बाप बैठ समझाते हैं— मैं भक्तिमार्ग में क्या करता हूँ। भक्ति मार्ग में भी इन्श्योरेन्स करता हूँ। ईश्वर अर्थ मनुष्य दान-पुण्य करते हैं ना। कहते हैं इसने दान पुण्य किया है ईश्वर अर्थ। ईश्वर ने बड़े घर में जन्म दिया है। भक्तिमार्ग में धर्मात्मा बहुत होते हैं। ईश्वर अर्थ, श्रीकृष्ण अर्थ दान पुण्य करते हैं। तो फिर बाप समझाते हैं— मैं बच्चों को दूसरे जन्म में अल्पकाल के लिए फल देता आया हूँ। अच्छा वा बुरा फल मिलता तो है ना। कितना इन्श्योरेन्स हुआ। जो जैसे कर्म करते हैं, उस अनुसार फल मिलता है। माया उल्टा काम कराती है, जिससे तुम दुःख को पाते हो। अब मैं तुमको ऐसे कर्म सिखाता हूँ जो कभी दुःख नहीं होगा और माया भी वहाँ नहीं होती। बाकी है मर्तबा। जो जितना इन्श्योर करे। शिवबाबा भी ट्रस्टी है ना। नम्बरवन ट्रस्टी है। दूसरे की आसक्ति जायेगी, कोई ट्रस्टी तो किसका खाना ही खराब कर देते हैं। बाप तो देखो कैसा ट्रस्टी है, कहते हैं यह सब कुछ बच्चों के लिए है। तुम्हारा सारा कनेक्शन शिवबाबा से है। बाप कहते हैं मैं सच्चा ट्रस्टी हूँ। मैं खुद सुख नहीं लेता हूँ, बच्चों को सारी राजधानी देता हूँ। लौकिक बाप भी बच्चों को सब कुछ वर्से में दे जाते हैं। मैं तो स्वर्ग में कुछ भी लेता नहीं हूँ। तुमको ही सब देता हूँ। तो तुम्हारा कनेक्शन सारा शिवबाबा से है। यह बाबा कहते हैं मैंने भी फुल इनश्योर कर लिया। तन-मन-धन सब बाप की सर्विस में है। सिन्धी में एक कहावत है— हाथ जिसका ऐसे (दाता रूप में) पहला पूर वह पहुँचेंगे। बाप को सब इनश्योर करना है। दो मुट्ठी चावल दिये तो महल मिल गये। अभी देखो मकान बना है, कोई ने एक रूपया भेजा, हमारी ईंट भी लग जाए। बाप ने लिखा तुमको तो सबसे अच्छे महल मिलेंगे क्योंकि तुम गरीब हो। मैं हूँ ही गरीब निवाज। गरीब का एक रूपया तो साहूकार का 10 हजार। दोनों को एक ही मर्तबा मिल जाता है। साहूकार बहुत मुश्किल आते हैं। सबसे कन्यायें तो बिल्कुल फ्री हैं। नम्बरवन देखो मम्मा गई। उनके पास तो कुछ भी नहीं था। गरीब के घर की थी फिर भी नम्बरवन चली गई। इसने सब कुछ दिया फिर भी पहले लक्ष्मी फिर नारायण। कितना वन्डरफुल खेल है। तो कभी किसी बात में संशय नहीं होना चाहिए। बापदादा कोई कम थोड़ेही है। जरा भी संशय इसमें नहीं लाना चाहिए। बहुत मीठा भी बनना है। कदम-कदम पर श्रीमत लेनी है। नहीं तो गाया

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बहुत नुकसान करा देती है। बच्चों को कितने डायरेक्शन देने पडते हैं। बाबा कहते हैं– पूरा समाचार लिखो। बाबा हर प्रकार को सम्भाल करेंगे। बाबा को बहत ख्याल रहता है। कहाँ यह बच्चा चढ़ जाए। पढ़ाई पर पूरा अटेन्शन चाहिए। हम हैं मोस्ट बिलवेड गॉड फादरली स्टूडेन्ट। भगवानुवाच भी लिखा हुआ है परन्तु कृष्ण का नाम डाल दिया है। कृष्ण भी सभी मनुष्यों से ऊंच ते ऊंच ठहरा ना। फर्स्ट प्रिन्स है। कृष्ण का नाम देते हैं, नारायण का क्यों नहीं! कृष्ण है बालक। छोटेपन से बालक सतोप्रधान होता है। फिर बचपन से युवा, फिर वृद्ध अवस्था आती है। बच्चों की ही महिमा करते हैं क्योंकि पवित्र हैं ना। बालक ब्रह्मज्ञानी समान कहते हैं। बच्चे से कोई पाप नहीं होता है। तो कृष्ण भी छोटा बच्चा होने के कारण उनका बर्थ डे मनाते हैं। फिर भी कृष्ण को द्वापर में दिखा दिया है। यह सब बाप बैठ समझाते हैं। सिवाए तुम ब्राह्मणों के दुनिया में ऐसा कोई नहीं होगा जिसे यह सब बातें पता हों। ब्राह्मण हैं उत्तम। तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय सन्तान। सतयुग में ईश्वरीय सन्तान नहीं कहेंगे। ईश्वर से जरूर स्वर्ग की प्राप्ति होगी। यह है तुम्हारा अति दुर्लभ अमूल्य जीवन। सबका तो हो नहीं सकता। यह ड्रामा ऐसा बना हुआ है। कल्प पहले जिन्होंने पढ़ा, वह पढ़ रहे हैं। भगवान ने जरूर भगवान-भगवती पैदा किये। परन्तु भगवान-भगवती कह नहीं सकते। गॉड इज वन। निराकार की महिमा है। साकार की थोडेही महिमा होती है। इन लक्ष्मी-नारायण को निराकार ने ऐसा बनाया। अब राजयोग सीख रहे हैं। राजाई स्थापन हुई, तो उस समय विनाश भी हुआ। बाप जरूर स्वर्ग का वर्सा देंगे। अब तो है संगम की बात। शिवबाबा आते हैं, तब खेल पूरा होता है, फिर कृष्ण का जन्म होता है। मनुष्य तो बिचारे मूँझ गये हैं, तब तो बाप आकर समझाते हैं। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सब शास्त्रों का सार बताते हैं। अभी तुम जैसे मास्टर नॉलेजफुल हो गये हो। आत्मा की ही महिमा है। ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, ब्लिसफुल, यह बाप की महिमा है। बाप कहते हैं– यह भारत तो सबसे बड़ा तीर्थ स्थान है। परन्तु कृष्ण का नाम डालने से सारी महिमा गुम कर दी है। नहीं तो सभी शिव के मन्दिर में फूल चढ़ाते, सबका सद्गति दाता वह एक है। आधाकल्प तुम प्रालब्ध भोग फिर नीचे आते हो। सबको तमोप्रधान बनना ही है। अब बाप कहते हैं– तुम बच्चों के लिए नई दुनिया स्थापन कर रहा हूँ। उसमें खुद नहीं आता, सब कुछ तुम बच्चों के लिए है। साफ बात है। मनुष्य तो अपने लिए करते हैं फिर कहते हैं कि हम निष्काम करते हैं। परन्तु निष्काम तो कोई कर न सके। हर चीज़ का फल जरूर मिलता है। मैं तो तुम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्न देता हूँ। तुम्हारे लिए ही वैकुण्ठ लाया हूँ। बच्चों को सावरन्टी का सोवीनियर देते हैं। तो वह लेने लिए ऐसा लायक बनना चाहिए। स्वर्ग का मालिक बनना है। हथेली पर बहिश्त मिलता है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति अथवा सेकेण्ड में बादशाही। दिव्य दृष्टि दाता शिवबाबा है। सेकेण्ड में बैकुण्ठ में ले जाते हैं, इसमें बाबा के हाथ में कुछ भी चाबी नहीं है। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को राजाई देता हूँ। मैं नहीं करता हूँ। फिर जब तुम भक्ति मार्ग में जायेंगे तब तुमको दिव्य दृष्टि से बहलाना पड़ेगा। कितना अच्छी रीति समझाते हैं। ऐसा बाबा कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे एक ही बार आते हैं। बनी बनाई

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बन रही अब कुछ बननी नाहि... जो कुछ होता है ड्रामा में नूँध है। उसको साक्षी हो देखो। बाबा बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। बच्चे मैं तुम्हारा इन्श्योरेन्श मैगनेट हूं। तुम्हारी एक पाई भी नहीं गँवाता हूँ। कौड़ी से तुमको हीरे तुल्य बनाता हूँ। यह सब शिवबाबा करते हैं इनके द्वारा, करनकरावनहार हैं। निराकार, निरहंकारी वह है। गॉड फादर कैसे बैठ पढ़ाते हैं। ऐसे नहीं कहते चरणों में पड़ो। बाप ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है। बाप कहते हैं– जिनको मालिक बनाया, वह सुख भोग-भोग कर अभी दुःखी हुए हैं। सुख भी बहुत मिलता है। इतना सुख कोई धर्म को नहीं मिलता है। ऐसे नहीं कह सकते कि भारतवासियों को क्यों, औरों ने क्या किया? अरे इतने ढेर मनुष्य हैं, सब तो नहीं आ सकते हैं। यह ड्रामा बना हुआ है। भारत में ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। भगवान ने आकर सहज राजयोग सिखाया था। बाप कहते हैं– मैं फिर से आया हुआ हूँ। तुम भी जानते हो 84 जन्मों का पार्ट बजाया अब फिर से हम घर जाते हैं। यह बहुत पुराना चोला हो गया है (सर्प का मिसाल)। सन्यासी लोग फिर कहते हैं आत्मा सो परमात्मा में लीन हो जाती है। ऐसी अवस्था में रहते-रहते फिर शरीर छोड़ देते हैं। परन्तु ब्रह्म में लीन तो कोई होता नही है। उनमें भी कोई-कोई बहुत तीखे होते हैं। शान्ति में बैठकर शरीर छोड़ चले जाते हैं। तो उनका वायुमण्डल में 2-3 दिन तक सन्नाटा हो जाता है। तो तुम जानते हो कि यह पुराना शरीर छोड़ बाबा के पास जाते हैं। ब्रह्म तो बाबा नहीं, यह उन बिचारों का भ्रम है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- इस ड्रामा की हर सीन साक्षी होकर देखना है क्योंकि बनी बनाई बन रही। कभी किसी बात में संशय नहीं उठाना है।

२- बाप इन्श्योरेन्स मैगनेट है, इसलिए तन-मन-धन बाप की सर्विस में सफल कर अपना भविष्य बनाना है। बाप से पूरा-पूरा कनेक्शन रखना है। पूरा समाचार देना है।

वरदान:- अपने अनादि आदि स्वरूप की स्मृति से निर्बन्धन बनने और बनाने वाले मरजीवा भव

जैसे बाप लोन लेता है, बंधन में नहीं आता, ऐसे आप मरजीवा जन्म वाले बच्चे शरीर के, संस्कारों के, स्वभाव के बंधनों से मुक्त बनो, जब चाहें जैसे चाहें वैसे संस्कार अपने बना लो। जैसे बाप निर्बन्धन है ऐसे निर्बन्धन बनो। मूलवतन की स्थिति में स्थित होकर फिर नीचे आओ। अपने अनादि आदि स्वरूप की स्मृति में रहो, अवतरित हुई आत्मा समझकर कर्म करो तो और भी आपको फालो करेंगे।

स्लोगन:-

याद की वृत्ति से वायुमण्डल को पावरफुल बनाना–यही मन्सा सेवा है।

PDFcompressor

28.1.90 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-पुण्य आत्मा बनना है तो अपना पोतामेल देखो कि कोई पाप तो नहीं होता है, सच का खाता जमा है"

प्रश्न :-सबसे बड़ा पाप कौन सा है?

उत्तर:-किसी पर भी बुरी दृष्टि रखना- यह सबसे बड़ा पाप है। तुम पुण्य आत्मा बनने वाले बच्चे किसी पर भी बुरी दृष्टि ।विकारी दृष्टि। नहीं रख सकते। जांच करनी है हम कहाँ तक योग में रहते हैं, कोई पाप तो नहीं करते हैं। ऊँच पद पाना है तो खबरदारी रखो कि जरा भी कुदृष्टि न हो। बाप जो श्रीमत देते हैं उस पर पूरा चलते रहो।

---

a) गीत:-मुखड़ा देख ले प्राणी... ओमशान्ति। शिव भगवानुवाच- मनुष्य समझते हैं कृष्ण भगवानुवाच अर्थात् कृष्ण ने बैठ राजयोग सिखाया है। अब कृष्ण को बाप तो कोई नहीं कहेंगे। भगवान को बाप कहेंगे। तो इससे सिद्ध होता है कृष्ण भगवान है नहीं। बाप सबका एक होता है। वह है बेहद का बाप। तो बाप बच्चों को कहते हैं अपने भीतर जरा जांच करो- यह तो मनुष्यों को मालूम रहता है कि हमने सारी जीवन में कितने पाप कितने पुण्य किये हैं। तो रोजाना अपना पोतामेल देखो- कितना पाप किया, कितना पुण्य किया। किसको रंज तो नहीं किया। हर एक मनुष्य समझ सकते हैं हमने लाइफ में क्या2 किया है? कितना पाप किया है, कितना दान-पुण्य आदि किया है। मनुष्य यात्रा पर जाते हैं तो दान-पुण्य करते हैं। कोशिश करके पाप नहीं करते हैं। तो बाप बच्चों से ही पूछते हैं- कितने पाप, कितने पुण्य किये हैं। अभी तो तुम बच्चों को पुण्य आत्मा बनना है। कोई भी पाप नहीं करना है। पाप भी अनेक प्रकार के होते हैं। कोई पर बुरी दृष्टि जाती है- वह भी पाप है। बुरी दृष्टि होती ही है विकार की। वह है सबसे खराब। कभी भी विकार की दृष्टि नहीं जानी चाहिए। अक्सर करके स्त्री पुरूष की जो विकार की ही दृष्टि होती है। कुमार कुमारी की भी कहाँ न कहाँ विकार की दृष्टि उठती है। अब बाप कहते हैं यह विकार की दृष्टि नहीं होनी चाहिए। नहीं तो तुमको बन्दर कहना पड़े। नारद का मिसाल है ना। बोला हम लक्ष्मी को वर सकते हैं, तुम भी कहते हो ना- हम तो लक्ष्मी को वरेंगे। नारी से लक्ष्मी नर से नारायण बनेंगे। बाप कहते हैं अपने दिल से पूछो- कितने तक हम पुण्य आत्मा बने हैं। कोई पाप तो नहीं करते हैं। कहाँ तक योग में रहते हैं। तुम तो बाप को पहचानते हो। तब तो यहाँ बैठे हो ना; दुनिया के मनुष्य थोड़ेही बाबा को पहचानेंगे कि यह बापदादा है। तुम ब्राह्मण बच्चे जानते हो- परमपिता परमात्मा ब्रह्मा में प्रवेश होकर हमको अविनाशी ज्ञान रतनों का खजाना देते हैं। मनुष्यों के पास होता है विनाशी धन। वही दान करते हैं, वह तो हैं पत्थर। यह ज्ञान के हैं रतन। ज्ञान सागर बाप के पास ही ज्ञान रतन हैं। यह एक2 रतन लाखों रूपयों का है। रतनागर बाप से ज्ञान रतन धारण कर और फिर इन रतनों का दान करना है। जितना जो लेवे और देवे, इतना ऊँच पद पाये। तो बाप समझाते हैं अपने अन्दर देखो कितने हमने पाप किये हैं। अभी कोई पाप तो नहीं होता है। जरा भी कुदृष्टि न हो। बाप जो श्रीमत देते हैं उस पर पूरा चलते रहें, यह खबरदारी चाहिए। माया के तूफान तो भल आयें परन्तु कर्मइन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना है। कोई तरफ कुदृष्टि जाये तो उसके आगे खड़ा भी नहीं होना चाहिए। एकदम चला जाना चाहिए। मालूम पड़ जाता है- इनकी कुदृष्टि है। अगर ऊँच पद पाना है तो बहुत खबरदार रहना है। कुदृष्टि होगी तो फिर लूले लंगड़े बन पड़ेंगे। बाप जो श्रीमत देते हैं, उस पर चलना है। बाप को बच्चे ही पहचान सकते हैं। समझो बाबा कहाँ जाता है, बच्चे ही समझेंगे कि बापदादा आया है और मनुष्य देखते तो बहुत हैं परन्तु उनको थोड़ेही पता है कोई पूछे भी यह कौन है? बोलो बापदादा है। बैज तो सबके पास होने ही चाहिए। बोलो शिवबाबा हमको इस दादा द्वारा अविनाशी ज्ञान रतनों का दान देते हैं। यह है स्प्रीचुअल नालेज। स्प्रीचुअल फादर सभी रुहों का बाप बैठ यह नालेज देते हैं। शिव भगवानुवाच- गीता में कृष्ण भगवानुवाच रांग है। ज्ञान सागर पतित पावन शिव को ही कहा जाता है। ज्ञान से ही सद्गति होती है। यह है अविनाशी ज्ञान रतन। सद्गति दाता एक ही बाप है। यह सब अक्षर पूरी रीति याद रखने चाहिए। अभी बच्चे समझते हैं कि हम बाप को जानते हैं और बाप भी समझते हैं कि हम बच्चों को जानते हैं। बाप तो कहेगा ना- यह हमारे सब बच्चे हैं, परन्तु जान नहीं सकते हैं। तकदीर में होगा तो आगे चलकर जानेंगे। समझो यह बाबा कहाँ जाता है कोई पूछे हैं कि यह कौन है [illegible]

से ही पूछेंगे। अक्षर ही यह बोलो कि बापदादा है। बेहद का बाप है निराकार। वह जब तक साकार में न आये तब तक बाप का वर्सा कैसे मिले। तो शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करते, वर्सा देते हैं। यह प्रजापिता ब्रह्मा और यह बी0के0 हैं। पढ़ाने वाला ज्ञान का सागर है। उनसे ही वर्सा मिलता है। यह ब्रह्मा भी पढ़ता है। यह ब्राह्मण से फिर देवता बनने वाला है। कितना सहज है समझाना। कोई को भी बैज पर समझाकर यह देना चाहिए। बाप की तो बड़ी दिल रहती है ना। परन्तु ऐसे भी कोई को नहीं देना है जो फालतू फेंक दें। बोलो, यह बड़ा भारी खजाना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। पावन बन और पावन दुनिया में चले जायेंगे। यह पतित पावन बाप है ना। हम कोई भी विकार में नहीं जाते हैं- पुरूषार्थ कर रहे हैं पावन बनने का। जब विनाश का समय होगा तो फिर हमारी पढ़ाई पूरी हो जायेगी। कितना सहज है समझाना। कोई भी ट्रेवलिंग करते हैं तो भी बैजेज साथ में होने चाहिए। इन बैजेज के साथ फिर एक छोटा पर्चा भी होना चाहिए। उसमें लिखा हो कि भारत में बाप आकरके फिर से आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापन करते हैं और सभी अनेक धर्म इस महाभारत लड़ाई द्वारा कल्प पहले मिसल ड्रामा प्लेन अनुसार खलास हो जायेंगे। ऐसे पर्चे 2-4 लाख छपे हुए हों जो कोई को भी पर्चा दे सकते हैं। ऊपर में त्रिमूर्ति भी होगा, दूसरे तरफ सेन्टर्स की एड्रेस होगी। बैजेज के साथ छोटा पर्चा भी हो। बच्चों को सारे दिन सर्विस का ख्याल रखना चाहिए। बच्चों ने गीत भी सुना। रोज अपना पोतामेल बैठ निकालना चाहिए कि आज के सारे दिन में हमारी अवस्था कैसी रही। बाबा ने ऐसे बहुत मनुष्य देखें हैं जो रोज़ रात को सारे दिन का पोतामेल बैठ लिखते हैं। जांच करते हैं। कोई खराब काम तो नहीं किया। सारा लिखते हैं। समझते हैं अच्छी जीवन कहानी लिखी हुई होगी तो पिछाड़ी वाले भी पढ़कर ऐसा सीखेंगे। ऐसा लिखने वाले अच्छे आदमी ही होते हैं। विकारी तो सब होते ही हैं। यहाँ तो वह बात नहीं है। तुम अपना पोतामेल रोज देखो। फिर बाबा के पास भेज देना चाहिए। तो उन्नति अच्छी होगी और डर भी रहेगा। सब क्लीयर लिखना चाहिए। आज हमारी बुरी दृष्टि गई। यह हुआ। किसका माथा खराब होता है तो एक दो को मारने लग पड़ते हैं ना।

जो एक दो को दुख देते हैं बाबा उन्हें गाज़ी कहते हैं। जन्म जन्मान्तर के पाप तुम्हारे सिर पर हैं। अभी तुमको याद के बल से पापों का बोझा उतारना है। इसलिए रोज देखना चाहिए- हम सारे दिन में कितना गाजी बने हैं। किसको दुख देना गोया गाजी बनना है। पाप बन जाता है। बाप कहते हैं गाजी बन किसको दुख मत दो। अपनी पूरी जांच करो। हमने कितना पाप कितना पुण्य किया। जो भी मिले सबको यह रास्ता ही बताना है। और बहुत प्यार से बोलो- बाप को याद करना है और पवित्र बनना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। भूल तुम संगम पर हो। परन्तु यह है तो रावण राज्य ना। इस मायावी विषय वैतरणी नदी में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। कमल फूल बहुत बाल बच्चों वाला होता है। फिर भी पानी से ऊपर रहता है। वह गृहस्थी है। बहुत बीजें पैदा करते हैं। यह दृष्टान्त तुम्हारे लिए भी है। विकारों से न्यारे होकर रहो। यह एक जन्म पवित्र रहो, तो फिर यह अविनाशी हो जायेगा। तुमको बाप अविनाशी ज्ञान रतन देते हैं। बाकी तो सब हैं पत्थर। वो लोग तो भक्ति की ही बातें सुनाते। ज्ञान सागर पतित पावन तो एक ही है तो ऐसे बाप से बच्चों का कितना लव होना चाहिए। बाप का बच्चों से, बच्चों का बाप से लव रहता है। बाकी और कोई से कनेक्शन नहीं। सौतेले वह हैं जो बाप की मत पर पूरा नहीं चलते हैं। रावण की मत पर चलते हैं तो रांग की मत थोड़ेही ठहरी। आधा कल्प हैं रावण सम्प्रदाय। इसलिए इनको भ्रष्टाचारी दुनिया कहा जाता है। अब तुमको और सबको छोड़ एक बाप की मत पर चलना है। बी0के0 की मत मिलती है सो भी जांच करनी होती है कि यह मत राइट है वा रांग है। तुम बच्चों को राइट और रांग की समझ भी अभी मिली है। जब राइटियस आये तब ही राइट और रांग बताये। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प यह भक्ति मार्ग के शास्त्र सुने हैं। अब मैं तुमको जो सुनाता हूँ यह राइट है या वह राइट है। वह कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। मैं कहता हूँ मैं तो तुम्हारा बाप हूँ। अब जज करो कौन राइट है? यह भी बच्चों को ही समझाया जाता है ना.. जब ब्राह्मण बनें, तब समझें। रावण सम्प्रदाय तो बहुत हैं, तुम तो बहुत थोड़े हो। उनमें भी नम्बरवार हैं। अगर कोई कुदृष्टि है, तो भी उनको रावण सम्प्रदाय कहा जायेगा। राम सम्प्रदाय का तब

समझा जाये जब सारी दृष्टि बदल कर दैवी बन जाये। अपनी अवस्था से हरएक समझ तो सकते हैं ना। पहले तो ज्ञान था नहीं। जानवरों से भी बदतर थे। अभी बाप ने रास्ता बताया है तो देखना है- हम अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करता रहता हूँ। भक्त लोग दान करते हैं विनाशी धन का। अभी तुमको दान करना है अविनाशी धन का, न कि विनाशी। अगर विनाशी धन है तो अलौकिक सेवा में लगाते जाओ। पतित को दान करने से पतित ही बन जाते हो। तो अपना धन दान करते हो तो इसका स्वजा फिर 21 जन्मों के लिए नई दुनिया में मिलता है। यह सब बातें समझने की हैं। बाबा सर्विस की युक्तियां भी बतलाते रहते हैं। सब पर रहम करो। गाया हुआ भी है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते। परमात्मा को ही सर्वव्यापी कह दिया है। तो बच्चों को सर्विस का शौक बहुत अच्छा रखना है औरों का कल्याण करेंगे तो अपना भी कल्याण होगा। दिन प्रतिदिन बाबा बहुत सहज करते जाते हैं। यह त्रिमूर्ति के चित्र तो बहुत अच्छी चीज है। सेन्सीबुल जो होंगे वह झट समझ जायेंगे। शिवबाबा भी है। इतने c) ब्रा0के0कुमारियां हैं तो जरूर अण्डरस्टुड प्रजापिता भी है। प्रजापिता ब्रह्मा कुमार कुमारियों द्वारा फिर से भारत में 100% पवित्रता सुख शान्ति का दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। बाकी अनेक धर्म इस महाभारत लड़ाई से कल्प पहले माफिक विनाश हो जायेंगे। ऐसे2 पर्चे छपवाकर बांटने चाहिए। बाबा कितना सहज रास्ता बताते हैं। प्रदर्शनी में भी पर्चे दो। पर्चे द्वारा समझाना सहज है। पुरानी दुनिया का विनाश तो होना ही है। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। एक आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। बाकी यह सब विनाश हो जायेंगे, कल्प पहले माफिक। कहाँ भी जाओ यह तो पाकेट में भी पर्चे और बैजेज सदैव पड़े रहें। सेकेण्ड में जीवन मुक्ति गाई हुई है। बोलो- यह है बाप, यह है दादा। उस बाप को याद करने से यह सतयुगी देवता पद पायेंगे। पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना, विष्णुपुरी नईदुनिया में फिर इन्हों का राज्य होगा। कितना सहज है। तीर्थों आदि पर मनुष्य जाते हैं। कितने धक्के खाते हैं। आर्य समाजी आदि भी ट्रेन भरकर कितना धक्के खाने जाते हैं। इसको कहा जाता है धर्म के धक्के। वास्तव में हैं अधर्म के धक्के। धर्म में तो धक्के खाने की दरकार नहीं है। तुम तो अभी पढ़ाई पढ़ रहे हो। भक्ति मार्ग में मनुष्य क्या2 करते रहते हैं।

बच्चों ने गीत में भी सुना कि मुखड़ा देख ले.. यह मुखड़ा तुम्हारे सिवाए तो कोई देख नहीं सकते। भगवान को भी तुम दिखला सकते हो यह है ज्ञान की बातें। तुम मनुष्य से देवता पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बनते हो। दुनिया इन बातों को बिल्कुल नहीं जानती। यह ल0ना0 स्वर्ग के मालिक कैसे बनें- यह किसी को पता नहीं है। तुम बच्चे तो सब जानते हो- किसको बुद्धि में तीर लग जाये तो बेड़ा पार हो जाये। अच्छा। मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- 1- अगर विनाशी धन है तो उसको सफल करने के लिए अलौकिक सेवा में लगाना है। अविनाशी धन का दान भी जरूर करना है।

2-अपने पोतामेल में देखना है कि हमारी अवस्था कैसी है? सारे दिन में कोई खराब काम तो नहीं होते हैं। एक दो को दुख तो नहीं देते हैं। किसी पर कुदृष्टि तो नहीं जाती है।

21-1-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – पुण्य आत्मा बनना है तो अपना पोतामेल देखो कि कोई पाप तो नहीं होता है, सच का खाता जमा है?"

प्रश्नः- सबसे बड़ा पाप कौन-सा है?

उत्तरः- किसी पर भी बुरी दृष्टि रखना—यह सबसे बड़ा पाप है। तुम पुण्य आत्मा बनने वाले बच्चे किसी पर भी बुरी दृष्टि (विकारी दृष्टि) नहीं रख सकते। जाँच करनी है हम कहाँ तक योग में रहते हैं? कोई पाप तो नहीं करते हैं? ऊंच पद पाना है तो खबरदारी रखो कि ज़रा भी कुदृष्टि न हो। बाप जो श्रीमत देते हैं उस पर पूरा चलते रहो।

गीतः- मुखड़ा देख ले प्राणी.....

कट a) ओम् शान्ति। बेहद का बाप अपने बच्चों को कहते हैं बच्चे, अपने भीतर ज़रा जाँच करो। यह तो मनुष्यों को मालूम रहता है कि हमने सारे जीवन में कितने पाप, कितने पुण्य किये हैं? रोज़ाना अपना पोतामेल देखो—कितने पाप और कितने पुण्य किये हैं? किसको रंज (नाराज़) तो नहीं किया? हर एक मनुष्य समझ सकते हैं--हमने लाइफ में क्या-क्या किया है? कितना पाप किया है, कितना दान-पुण्य आदि किया है? मनुष्य यात्रा पर जाते हैं तो दान-पुण्य करते हैं। कोशिश करके पाप नहीं करते हैं। तो बाप बच्चों से ही पूछते हैं--कितने पाप, कितने पुण्य किये हैं? अभी तुम बच्चों को पुण्य आत्मा बनना है। कोई भी पाप नहीं करना है। पाप भी अनेक प्रकार के होते हैं। कोई पर बुरी दृष्टि जाती है तो यह भी पाप है। बुरी दृष्टि होती ही है विकार की। वह है सबसे खराब। कभी भी विकार की दृष्टि नहीं जानी चाहिए। अक्सर करके स्त्री-पुरूष की तो विकार की ही दृष्टि होती है। कुमार-कुमारी की भी कहाँ न कहाँ विकार की दृष्टि उठती है। अब बाप कहते हैं यह विकार की दृष्टि नहीं होनी चाहिए। नहीं तो तुमको बन्दर कहना पड़े। नारद का मिसाल है ना। बोला हम लक्ष्मी को वर सकते हैं। तुम भी कहते हो ना हम तो लक्ष्मी को वरेंगे। नारी से लक्ष्मी, नर से नारायण बनेंगे। बाप कहते हैं अपने दिल से पूछो—कितने तक हम पुण्य आत्मा बने हैं? कोई पाप तो नहीं करते हैं? कहाँ तक योग में रहते हैं?

तुम बच्चे तो बाप को पहचानते हो तब तो यहाँ बैठे हो ना। दुनिया के मनुष्य थोड़ेही बाबा को पहचानेंगे कि यह बापदादा है। तुम ब्राह्मण बच्चे तो जानते हो परमपिता परमात्मा ब्रह्मा में प्रवेश होकर हमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना देते हैं। मनुष्यों के पास होता है विनाशी धन। वही दान करते हैं, वह तो हैं पत्थर। यह हैं ज्ञान के रत्न। ज्ञान सागर बाप के पास ही रत्न हैं। यह एक-एक रत्न लाखों रूपयों का है। रत्नागर बाप से ज्ञान रत्न धारण कर और फिर इन रत्नों का दान करना है। जितना जो लेवे और देवे, उतना ऊंच पद पाये। तो बाप समझाते हैं अपने अन्दर देखो कितने हमने पाप किये हैं? अभी कोई पाप तो नहीं होता है? ज़रा भी कुदृष्टि न हो। बाप जो श्रीमत देते हैं उस पर पूरा चलते रहें यह खबरदारी चाहिए। माया के तूफान तो भल आयें परन्तु कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कुदृष्टि जाये तो उसके आगे खड़ा भी नहीं होना चाहिए। एकदम चला जाना चाहिए। मालूम पड़ जाता है–इनकी कुदृष्टि है। अगर ऊंच पद पाना है तो बहुत खबरदार रहना है। कुदृष्टि होगी तो फिर लूले-लंगड़े बन पड़ेंगे। बाप जो श्रीमत देते हैं, उस पर चलना है। बाप को बच्चे ही पहचान सकते हैं। समझो बाबा कहाँ जाता है, बच्चे ही समझेंगे कि बापदादा आया है। और मनुष्य देखते तो बहुत हैं परन्तु उनको थोड़ेही पता है। कोई पूछे भी यह कौन है? बोलो बापदादा है। बैज तो सबके पास होने ही चाहिए। बोलो शिवबाबा हमको इस दादा द्वारा अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं। यह है स्प्रीचुअल नॉलेज। स्प्रीचुअल फादर सभी रूहों का बाप बैठ यह नॉलेज देते हैं। शिव भगवानुवाच, गीता में कृष्ण भगवानुवाच रांग है। ज्ञान सागर पतित-पावन शिव को ही कहा जाता है। ज्ञान से ही सद्‌गति होती है। यह है अविनाशी ज्ञान रत्न। सद्‌गति दाता एक ही बाप है। यह सब अक्षर पूरी रीति याद रखने चाहिए। अभी बच्चे समझते हैं कि हम बाप को जानते हैं और बाप भी समझते हैं कि हम बच्चों को जानते हैं। बाप तो कहेगा ना–यह सब हमारे बच्चे हैं, परन्तु जान नहीं सकते हैं। तकदीर में होगा तो आगे चलकर जानेंगे। समझो यह बाबा कहाँ जाता है, कोई पूछते हैं कि यह कौन है? जरूर शुद्ध भाव से ही पूछेंगे। अक्षर ही यह बोलो कि बापदादा है। बेहद का बाप है निराकार। वह जब तक साकार में न आये तब तक बाप से वर्सा कैसे मिले? तो शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट कर वर्सा देते हैं। यह प्रजापिता ब्रह्मा और यह बी.के. हैं। पढ़ाने वाला ज्ञान का सागर है। उनसे ही वर्सा मिलता है। यह ब्रह्मा भी पढ़ता है। यह ब्राह्मण से फिर देवता बनने
कट
b) वाला है। कितना सहज है समझाना। कोई को भी बैज पर समझाना अच्छा है। बोलो बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। पावन बन और पावन दुनिया में चले जायेंगे। यह पतित-पावन बाप है ना। हम पुरूषार्थ कर रहे हैं पावन बनने का। जब विनाश का समय होगा तो फिर हमारी पढ़ाई पूरी हो जायेगी। कितना सहज है समझाना। कोई भी कहाँ आते-जाते हैं तो भी बैज साथ में होना चाहिए। इस बैज के साथ फिर एक छोटा पर्चा भी होना चाहिए। उसमें लिखा हो कि भारत में बाप आकरके फिर से आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करते हैं। और सभी अनेक धर्म इस महाभारत लडाई द्वारा कल्प पहले मिसल ड्रामा प्लैन अनुसार खलास हो जायेंगे। ऐसे पर्चे 2-4 लाख छपे हों, जो कोई को भी पर्चा दे सकते हैं। ऊपर में त्रिमूर्ति हो, दूसरे तरफ सेन्टर्स की एड्रेस हो। बच्चों को सारा दिन सर्विस का ख्याल चलना चाहिए।

बच्चों ने गीत सुना – रोज़ अपना पोतामेल बैठ निकालना चाहिए कि आज सारे दिन में हमारी अवस्था कैसी रही? बाबा ने ऐसे बहुत मनुष्य देखे हैं जो रोज़ रात को सारे दिन का पोतामेल बैठ लिखते हैं। जाँच करते हैं–कोई खराब काम तो नहीं किया? सारा लिखते हैं। समझते हैं अच्छी जीवन कहानी लिखी हुई होगी तो पिछाड़ी वाले भी पढ़कर ऐसे सीखेंगे। ऐसा लिखने वाले अच्छे आदमी ही होते हैं। विकारी तो सब होते ही हैं। यहाँ तो वह बात नहीं है। तुम अपना पोतामेल रोज़ देखो। फिर बाबा के पास भेज देना चाहिए तो उन्नति अच्छी होगी और डर भी रहेगा। सब क्लीयर लिखना चाहिए–आज हमारी बुरी दृष्टि गई, यह

हुआ.....। जो एक-दो को दु:ख देते हैं बाबा उन्हें गाज़ी कहते हैं। जन्म-जन्मान्तर के पाप तुम्हारे सिर पर हैं। अभी तुमको याद के बल से पापों का बोझ उतारना है। इसलिए रोज़ देखना चाहिए हम सारे दिन में कितना गाजी बने हैं? किसको दु:ख देना गोया गाज़ी बनना है। पाप बन जाता है। बाप कहते हैं गाज़ी बन किसको दु:ख मत दो। अपनी पूरी जॉच करो—हमने कितना पाप, कितना पुण्य किया है? जो भी मिले सबको यह रास्ता बताना ही है। सबको बहुत प्यार से बोलो बाप को याद करना है और पवित्र बनना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। भल तुम संगम पर हो परन्तु यह तो रावण राज्य है ना। इस मायावी विषय वैतरणी नदी में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। कमल फूल बहुत बाल बच्चों वाला होता है। फिर भी पानी से ऊपर रहता है। गृहस्थी है, बहुत चीजें पैदा करता है। यह दृष्टान्त तुम्हारे लिए भी है विकारों से न्यारा होकर रहो। यह एक जन्म पवित्र रहो तो फिर यह अविनाशी हो जायेगा। तुमको बाप अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं। बाकी तो सब हैं पत्थर। वो लोग तो भक्ति की ही बातें सुनाते हैं। ज्ञान सागर पतित-पावन तो एक ही है तो ऐसे बाप से बच्चों का कितना लव रहना चाहिए। बाप का बच्चों से, बच्चों का बाप से लव रहता है। बाकी और कोई से कनेक्शन नहीं। सौतेले वह हैं जो बाप की मत पर पूरा नहीं चलते हैं। रावण की मत पर चलते हैं तो राम की मत थोडेही ठहरी। आधाकल्प है रावण सम्प्रदाय इसलिए इनको भ्रष्टाचारी दुनिया कहा जाता है। अब तुम्हें और सबको छोड़ एक बाप की मत पर चलना है। बी.के. की मत मिलती है सो भी जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा रांग है? तुम बच्चों को राइट और रांग समझ भी अभी मिली है। जब राइटियस आये तब ही राइट और रांग बताये। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प यह भक्ति मार्ग के शास्त्र सुने हैं, अब मैं तुमको जो सुनाता हूँ—यह राइट है या वह राइट है? वह कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है, मैं कहता हूँ मैं तो तुम्हारा बाप हूँ। अब जज करो कौन राइट है? यह भी बच्चों को ही समझाया जाता है ना, जब ब्राह्मण बनें तब समझें। रावण सम्प्रदाय तो बहुत हैं, तुम तो बहुत थोड़े हो। उनमें भी नम्बरवार हैं। अगर कोई कुदृष्टि है, तो भी उनको रावण सम्प्रदाय कहा जायेगा। राम सम्प्रदाय का तब समझा जाए जब सारी दृष्टि बदल कर दैवी बन जाए। अपनी अवस्था से हर एक समझ तो सकते है ना। पहले तो ज्ञान था नहीं, अभी बाप ने रास्ता बताया है। तो देखना है हम अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करता रहता हूँ? भक्त लोग दान करते हैं विनाशी धन का। अभी तुमको दान करना है अविनाशी धन का, न कि विनाशी। अगर विनाशी धन है तो अलौकिक सेवा में लगाते जाओ। पतित को दान करने से पतित ही बन जाते हो। अभी तुम अपना धन दान करते हो तो इसका एवजा फिर 21 जन्मों के लिए नई दुनिया में मिलता है। यह सब बातें समझने की हैं। बाबा सर्विस की युक्तियाँ भी बतालते रहते हैं। सब पर रहम करो। गाया हुआ भी है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। परन्तु अर्थ नहीं समझते। परमात्मा को ही सर्वव्यापी कह दिया है। तो बच्चों को सर्विस का शौक बहुत अच्छा रखना है। औरों का कल्याण करेंगे तो अपना भी कल्याण होगा। दिन-प्रतिदिन बाबा बहुत सहज करते जाते हैं। यह त्रिमूर्ति का चित्र तो बहुत अच्छी चीज़ है। इसमें

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation

c) शिवबाबा भी है, फिर प्रजापिता ब्रह्मा भी है। प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा फिर से भारत में 100 परसेन्ट पवित्रता-सुख-शान्ति का दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। बाकी अनेक धर्म इस महाभारत लड़ाई से कल्प पहले मुआफ़िक विनाश हो जायेंगे। ऐसे-ऐसे पर्चे छपवाकर बांटने चाहिए। बाबा कितना सहज रास्ता बताते हैं। प्रदर्शनी में भी पर्चे दो। पर्चे द्वारा समझाना सहज है। पुरानी दुनिया का विनाश तो होना ही है। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। बाकी यह सब विनाश हो जायेंगे कल्प पहले मुआफ़िक। कहाँ भी जाओ, पॉकेट में भी पर्चे और बैजेस सदैव पड़े रहें। सेकण्ड में जीवनमुक्ति गाई हुई है। बोलो, यह है बाप, यह दादा। उस बाप को याद करने से यह सतयुगी देवता पद पायेंगे। पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना, विष्णुपुरी नई दुनिया में फिर इन्हों का राज्य होगा। कितना सहज है। तीर्थों आदि पर मनुष्य जाते हैं, कितने धक्के खाते हैं। आर्य समाजी आदि भी ट्रेन भरकर धक्के खाने जाते हैं। इसको कहा जाता है धर्म के धक्के। वास्तव में हैं अधर्म के धक्के। धर्म में तो धक्के खाने की दरकार नहीं है। तुम तो पढ़ाई पढ़ रहे हो। भक्ति मार्ग में मनुष्य क्या-क्या करते रहते हैं!

बच्चों ने गीत में भी सुना कि मुखड़ा देख..... . यह मुखड़ा तुम्हारे सिवाए तो कोई देख नहीं सकते हैं। भगवान को भी तुम दिखला सकते हो। यह हैं ज्ञान की बातें। तुम मनुष्य से देवता, पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बनते हो। दुनिया इन बातों को बिल्कुल नहीं जानती। यह लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक कैसे बनें—यह किसी को पता नहीं है। तुम बच्चे तो सब जानते हो। किसको बुद्धि में तीर लग जाए तो बेड़ा पार हो जाए। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अगर विनाशी धन है तो उसको सफल करने के लिए अलौकिक सेवा में लगाना है। अविनाशी धन का दान भी जरूर करना है।

२. अपने पोतामेल में देखना है कि हमारी अवस्था कैसी है? सारे दिन में कोई खराब काम तो नहीं होते हैं? एक-दो को दुःख तो नहीं देते हैं? किसी पर कुदृष्टि तो नहीं जाती है?

वरदान:- शक्तिशाली सेवा द्वारा निर्बल में बल भरने वाले सच्चे सेवाधारी भव

सच्चे सेवाधारी की वास्तविक विशेषता है—निर्बल में बल भरने के निमित्त बनना। सेवा तो सभी करते हैं लेकिन सफलता में जो अन्तर दिखाई देता है उसका कारण है सेवा के साधनों में शक्ति की कमी। जैसे तलवार में अगर जौहर नहीं तो वह तलवार का काम नहीं करती, ऐसे सेवा के साधनों में यदि याद की शक्ति का जौहर नहीं तो सफलता नहीं। इसलिए शक्तिशाली सेवाधारी बनो, निर्बल में बल भरकर क्वालिटी वाली आत्मायें निकालो तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी।

स्लोगन:-

भाव और भावना की पवित्रता ही सेवा का फाउण्डेशन है।

Compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDF

प्रातः सभा (4-4:7) ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा पार्ट है।

सिकीलधे छोड़ मीठे बच्चे ! ओमशान्ति। यह किसने पुकारा बच्चों ने पुकारा, बाबा अभी यह तो मनुष्य का शिवबाबा है नहीं आत्मा और परमात्मा कहते हैं, बाप और बच्चे दोनों शान्तिधाम के निवासी हैं। पुकारते हैं बाप को। भगवान को तो बाप कहा जाता है उनका नाम क्या है? शिव बाबा। दूसरे अनेक नाम रखने से मनुष्य मुंझ पड़े हैं। अब रुद्र माला जो पूजते हैं बाप ने समझाया है 108 की माला बनती है। यह किसकी माला है पूजने वाले यह नहीं जानते। ऊपर में है शिवबाबा। निराकार। उनके अपना शरीर नहीं है। उनकी भी महिमा गाते हैं वे पतित-पावन, ओ गॉड फादर ज्ञान के सागर, शान्ति के सागर..., यह सच्चे बाप की महिमा कहते आये हैं। परन्तु बाप को जानते नहीं हैं। यह भी दादा में नंबर है। सुख और दुःख का खेल है। शान्तिधाम से यहां आते हैं पार्ट बजाने। वास्तव में आत्मा शान्तिधाम के वासी है। फिर पार्ट बजाने फरिश्ता में आना पड़ता है। ऊंच ते ऊंच सर्व का सद्गति दाता ज्ञान सागर पतित को पावन बनाने वाला बाप है। लक्ष्मी नारायण विश्व के मालिक थे। जिनकी मंदिर बनाकर पूजा करते हैं। जहां-तहां मंदिर हैं। परन्तु यह कोई जानते नहीं कि लक्ष्मी नारायण ने यह राज्यभाग्य प्राप्त किया। सतयुग आदि में यह विश्व के मालिक थे। और कोई भी धर्म नहीं था। उसको कहा जाता है आदि सनातन देवी देवता धर्म। यह बाप सच्चों को समझाते हैं। कहते भी हैं हम बच्चे कुछ भी जानते नहीं। और जो भी आत्मायें पार्ट बजाने आती हैं वह माता के गर्भ में प्रवेश करती है। सब को अपना अपना पार्ट मिला हुआ है। ब्रह्मा विष्णु शंकर को भी अपना शरीर है। उनको भगवान नहीं कहेंगे। कहते भी हैं ब्रह्मा देवता नमः, विष्णु देवताय नमः। शिव परमात्मायनमः। कहा जाता है। भक्तमाली तो यह भी नहीं जानते कि प्रेम-भक्ति निराकार अलग है, शंकर आकारी अलग है। यह देवता उनको शिव परमात्मायनमः कहा जाता है। शिव और शंकर इकट्ठा हो न सके। इतनी भी बुद्धि नहीं है। यह है ऊंच ते ऊंच रचयिता शिवबाबा। रचना विष्णु-शंकर सूक्ष्म वतन की रचना। रचयिता एक ही है सभी का सद्गति दाता बाप। तुम मात पिता... यह महिमा भी उनको गाते हैं। पुकारते हैं बाबा आओ। क्योंकि माया का परछाया पड़ गया है। तमोप्रधान है ना। तुम बच्चे सब जानते हो निराकार सभी रूप धारकर सजाकर आये हैं। बाप जब निराकार के आकार में न आये तो सुना न सके, ज्ञान कैसे सिखाते। इसलिये बाप कहते हैं मैं साधारण तन में बैठकर आता हूं। ब्राह्मण पिलाते हैं ना। कहेंगे हमारे ब्रह्मा की सौगन्ध है। अथवा बाप की सौगन्ध है। अर्थात उनकी आत्मा का आवाहन करते हैं। उनके लिये सब कुछ तैयार रखते हैं। अब शरीर तो वहां हो गया। यह तो आ न सके। पार्टी उनकी आत्मा का आवाहन करेंगे। आत्मा को बुलाया जाता है। फिर उनसे पूछते हैं तुम सुखी हो। क्या खाते हो। आगे यह बहुत कम थे। अभी तो तमोप्रधान होने कारण बताना चलता नहीं है। अब यह क्या होता है? आत्मा ने जोर गर्भ में प्रवेश किया। उनको बुलाते हैं क्या वह आ सकती है? नहीं। याद करते हैं। भावना से बुलाते हैं। हम अपने बाप की आत्मा को बुलाते हैं। तो गोया आत्मा प्रवेश कर सकती है ना। बाप समझाते हैं जब यह आत्मा ब्राह्मण के शरीर में आ सकती है तो क्या मैं नहीं आ सकता हूं। मैं भी आता हूं यदा यदा हि... जब भारतवासी अपने धर्म और कर्म को भूल धर्म और कर्म भ्रष्ट बन पड़ते हैं तब फिर मैं आता हूं। देवी देवता सर्व गुण संपन्न 16 कला सम्पूर्ण सम्पूर्ण निर्विकारी थे। मेरा योगबल से बच्चे होते हैं। जैसे अभी तुम योग बल सिखाया जाता है जिससे तुम विश्व के मालिक बनते हो। यहां आते ही हो नर से नारायण बनने के लिये राजयोग सीखने। यह छिनाबटी खापन होती है। सूर्यवंशी छिनाबटी थी। फिर पुनर्जन्म लेते लेते चन्द्रवंशी में आये। वृद्धि भी होती गई। तो ऊंच ते ऊंच है परम पिता परमात्मा और आत्मा निन्दी है, जिसे परमात्मा भी कहते हैं मैं निन्दी हूं। मैं आकर सारायण तन में प्रवेश करता हूं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तुमको फिर से देवता बनाता हूँ। तुम सूर्यवंशी, फिर चन्द्रवंशी, वैश्यवंशी, शूद्रवंशी में आये। इन बातों का वृतान्त कोई नहीं जानते। 84 जन्म तो हैं नहीं। फिर तो आयु बहुत बड़ी हो जाती। यह जो कहते हैं सतयुग लाखों वर्षों का है। बाप कहते हैं यह सब मिथ्या ज्ञान है। शास्त्रों का ज्ञान

e) सब भक्तिमार्ग का है। उनको ज्ञान नहीं कहा जाता। वेद शास्त्र पढ़ना जप तप आदि करना सब भक्ति है। इससे उतरती कला ही होती है। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। श्री कृष्ण की महिमा ही अलग है। सर्वगुण सम्पन्न ... अहिंसा परमो देवी देवता धर्म। कहते भी हैं हिंसा है काम कटारी चलाना। वह वहाँ होती नहीं। बाप कहते हैं काम पर जीत पहनो तो फिर तुम पवित्र बन [illegible] दुनिया के मालिक [illegible]। [illegible] अभी कलियुग अन्त में तुम बहुत ही अपवित्र बन गये हो। मैं आता ही हूँ संगम पर जबकि पतित दुनिया से पावन दुनिया बनती है। यह कलियुग है दुःखधाम। अंधियारी रात। सतयुग है दिन। वहाँ लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। यह कैसे बने सो बाप समझाते हैं।

f) गीता है ही श्रीमद्भगवत गीता। श्रीमत शिव बाबा की ही है, न कि श्रीकृष्ण की। श्री कृष्ण किसको मत देंगे? वह तो छोटा बच्चा है। उनको तो बाप की श्रीमत चाहिए। कृष्ण को या लक्ष्मी-नारायण को ज्ञान का सागर नहीं कहेंगे। उनमें ज्ञान है नहीं। ज्ञान सुनाने [illegible] मिला था है। लायक जिससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो। ज्ञान से ही तुम स्वर्ग मालिक बनते हो। बाकी तो सब है भक्ति-मार्ग की झूठी दन्त कथाएं। भारत सचखण्ड था। फिर द्वापर से झूठ खण्ड बना है। पहले पहले हमेशा याद करो सुप्रीम गॉड एक शिवबाबा है सभी आत्माओं का बाप। फिर लौकिक बाप तो हद का अपना है जिससे हद का वर्सा मिलता है। वह भी हद के क्रियेटर ठहरे। और यह है बेहद का क्रियेटर, बेहद का वर्सा देने वाला। आते भी भारत में ही हैं। शिव बाबा आया है, जरूर सौगात लाये होंगे। [illegible] स्वर्ग की बादशाही ले आते हैं। बच्चों को भी बाप की प्रापर्टी मिलती है। तुम अभी कहते हो हमारा शिवबाबा है। शिव बाबा से स्वर्ग का वर्सा मिलता है, जो साधारण तन में

g) बैठ राजयोग सिखाते हैं। कृष्ण भगवानुवाच तो है ही नहीं। कृष्ण को पतित-पावन नहीं कह सकते। वह पतित दुनिया में आ न सके। देवताएं पतित दुनिया में पैर धर न सकें। तो कृष्ण कैसे आयेंगे। एकदम भूल से ही भारत कितना कंगाल बन पड़ा है। अब बाप आकर तुमको अभूल बनाते हैं। जो फिर आधा कल्प कोई भूल न हो। (जब से रावण राज्य होता है तब से यह भूलें होती हैं। भूलें करते करते मनुष्य पाप आत्मा बन जाते हैं।) काम कटारी चलाना, क्रोध करना यह भूलें रावण कराती है। सतयुग में यह 5 विकार होते ही नहीं। वहाँ तो सम्पूर्ण निर्विकारी हैं। शास्त्रों में यह लिख दिया है कि असुरों और देवताओं की लड़ाई लगी। देवताएं

h) सतयुग में, असुर कलियुग में दोनों की लड़ाई हो कैसे सकती? शास्त्रों में सब झूठ लिख दिया है। कृष्ण द्वापर में आया यह भी झूठ। कृष्ण तो था ही सतयुग में। कृष्ण शरीर छोड़ेगा तो वह नाम रूप ही बदल जायेगा। बाकी भक्तिमार्ग में कृष्ण का सिर्फ नाम होता है। [illegible] मन्दिर में कृष्ण को याद करते हैं, [illegible] जीत लिये। वह तो है सतयुग। यह है आसुरी रावण पुरी। [illegible] विष्णुपुरी, जहाँ आत्माएं रहती हैं। शिवबाबा भी रहते हैं, आत्माएं भी रहती हैं। फिर आत्माएं यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। बाप को भी आना पड़ता है। पराये देश पराये शरीर में। यह रावण का पतित देश है ना। सब बुलाते हैं हे पतित-पावन आओ।

i) गांधी तो रामराज्य कर न सका। उसने तो पंचायती राज्य स्थापन किया। उनको कुराज्य कहा जाता है। सतयुग में देवी देवताओं का राज्य था। जिनको भगवान भगवती कहते हैं। वह कोई मनुष्य स्थापन कर न सके। यह कोई भारतवासी नहीं जानते हैं। कृष्ण को कहते हैं श्याम सुन्दर। इनका भी अर्थ होगा ना। सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग में सीढ़ी उतरते उतरते काम चिता पर बैठने से गोरे सुन्दर से श्याम बन

PDF compression, OCR, web optimization

2-4-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - अब यह कलियुग खत्म होने वाला है इसलिए तुम्हें इसे लात लगानी है, अपना मुँह स्वर्ग की तरफ रखना है"

प्रश्न:- बाप अपने बच्चों को पुण्य आत्मा बनने की कौन-सी विधि बताते हैं?

उत्तर:- बच्चे पुण्य आत्मा बनना है तो अभुल बनो। रावण ने तुमसे बहुत भूलें कराई, भूलें करते-करते तुम पाप आत्मा बन गये। क्रोध अथवा काम की भूल रावण कराता है। बाबा आया है तुम्हें इन विकारों पर विजयी बनाने। अभी तुम अभुल बनें निर्विकारी बनो।

गीत:- छोड़ भी दे आकाश सिंहासन......

ओम् शान्ति। यह किसने पुकारा बाप को? बच्चों ने पुकारा बाबा, अभी यह जो महतत्व सिंहासन हैं, जहाँ आत्मायें और परमात्मा रहते हैं। बाप और बच्चे दोनों शान्तिधाम के

कट a) निवासी हैं। पुकारते हैं बाप को। भगवान को ही बाप कहा जाता है। बाप ने समझाया है - 108 की माला बनती है। यह किसकी माला है? पूजने वाले नहीं जानते। ऊपर में शिवबाबा है निराकार। उनको शरीर है नहीं। उनको ही पुकारते हैं - हे पतित-पावन, ओ गॉड फादर, ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर .... यह बच्चे बाप की महिमा करते आते हैं, परन्तु बाप को जानते नहीं, यह भी ड्रामा में नूँध है। सुख और दु:ख का खेल है। शान्तिधाम से यहाँ आते हैं पार्ट बजाने। वास्तव में आत्मा शान्तिधाम की वासी है फिर पार्ट बजाने कर्मणा में आना पड़ता है। ऊंच ते ऊंच सर्व का सद्गति दाता वा भारतवासियों को विश्व का मालिक बनाने वाला बाप है। लक्ष्मी-नारायण सारे विश्व के मालिक थे ना, जिनका मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं। जहाँ-तहाँ मन्दिर हैं। परन्तु वह कोई जानते नहीं कि लक्ष्मी-नारायण ने यह राज्य कैसे प्राप्त किया। सतयुग आदि में विश्व के मालिक थे और कोई भी धर्म नहीं था। उनको कहा जाता है आदि सनातन देवी देवता धर्म। यह बाप बच्चों को समझाते हैं। कहते भी हैं रूप बदलकर आओ। और जो भी आत्मायें पार्ट बजाने आती हैं वे तो माँ के गर्भ में प्रवेश करती हैं। सबको अपना-अपना पार्ट मिला

कट b) हुआ है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भी अपना सूक्ष्म शरीर है। उनको भगवान नहीं कहेंगे। ब्रह्मा देवता नम:, विष्णु देवता नम:, शिव परमात्मा नम: कहा जाता है। भारतवासी तो यह भी नहीं जानते कि शिव निराकार अलग है, शंकर आकारी अलग है। वह शंकर देवता उनको शिव परमात्मा कहा जाता है। शिव और शंकर इकट्ठे हो न सकें, इतनी भी बुद्धि नहीं है। वह है ऊंच ते ऊंच हमारा बाबा। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर सूक्ष्मवतन की रचना हैं। रचता बाप ही सबका मोस्ट बिलवेड बाप है। तुम मात-पिता हम बालक तेरे। यह महिमा भी उनकी गाते हैं। पुकारते हैं बाबा आओ क्योंकि माया का परछाया पड़ गया है। रावण

कट c) राज्य है ना। तुम बच्चे अब जानते हो - निराकार बाप अभी रूप बदलकर साकार में आये हैं। बाप जब तक निराकार से साकार में न आये तो राजयोग का ज्ञान कैसे सिखाये। इसलिए बाप कहते हैं - मैं साधारण तन में टैम्प्रेरी आता हूँ। ब्राह्मणों को खिलाते हैं ना। कहेंगे, हमारे स्त्री का श्राध है अथवा बाप का श्राध है अर्थात् उनकी आत्मा का आह्वान

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

करते हैं। उनके लिए सब कुछ तैयार रखते हैं। अब शरीर तो खत्म हो गया, वह तो आ न सके। बाकी उनकी आत्मा का आह्वान करेंगे। आत्मा को बुलाया जाता है फिर उनसे पूछते हैं कि तुम सुखी हो? कहाँ रहती हो? आगे यह बहुत रसम थी। होता तो सब ड्रामा-अनुसार है। अभी तो तमोप्रधान होने के कारण इतना चलता नहीं है। बाप समझाते हैं - जब वह आत्मा ब्राह्मण के शरीर में आ सकती है तो क्या मैं नहीं आ सकता हूँ? मैं भी आता हूँ। यदा यदाहि....जब भारतवासी अपने धर्म और कर्म को भूल धर्म-भ्रष्ट बन पड़ते हैं तब फिर मैं आता हूँ। देवी देवताएं सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी थे, वहाँ योगबल से बच्चे पैदा होते हैं। जैसे अभी तुमको योगबल सिखाया जाता है, जिससे तुम विश्व के मालिक बनते हो। यहाँ आये ही हैं नर से नारायण बनने, राजयोग सीखने। यह डिनॉयस्टी स्थापन होती है। सूर्यवंशी डिनायस्टी थी, फिर पुनर्जन्म लेते-लेते चन्द्रवंशी में आये, वृद्धि होती गई। ऊंचे ते ऊंच है पिता परमात्मा। जैसे आत्मा बिन्दी है वैसे परमात्मा भी कहते हैं – मैं भी बिन्दी हूँ। मैं आकर साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। तुमको फिर से सो देवता बनाता हूँ। तुम वास्तव में सूर्यवंशी थे फिर चन्द्रवंशी में फिर वैश्य शूद्र वंशी में आये। 84 जन्मों का वृतान्त कोई नहीं जानते। 84 लाख जन्म तो हैं नहीं फिर तो चक्र की आयु बहुत बड़ी हो जाए। यह जो कहते हैं सतयुग लाखों वर्ष का है। बाप कहते हैं यह सब मिथ्या ज्ञान है। शास्त्रों का ज्ञान सब भक्ति का ज्ञान है, जिससे उतरती कला ही होती है। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। श्रीकृष्ण की महिमा ही अलग है, सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण..... अहिंसा परमो देवी देवता धर्म। बड़े से बड़ी हिंसा है काम-कटारी चलाना, वह वहाँ होती नहीं। बाप कहते हैं इस काम पर जीत पहनो तो फिर तुम पवित्र बन, पवित्र दुनिया के मालिक बन जायेंगे। कामकटारी से तुम बहुत ही अपवित्र पाप आत्मा बने हो। 21 जन्म सतयुग त्रेता में बहुत सुखी थे। अब कलियुग अन्त में तुम बहुत ही अपवित्र बन गये हो। मैं आता ही हूँ संगम पर। जबकि पतित दुनिया से पावन दुनिया बनती है। यह कलियुग है दुःखधाम, अन्धियारी रात। सतयुग है दिन जहाँ इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। वह कैसे बनें? यह बाप समझाते हैं। गाना है ही श्रीमत एक शिवबाबा की। श्रीकृष्ण को वा लक्ष्मी-नारायण को ज्ञान का सागर नहीं कहेंगे। ज्ञान तुमको अभी मिल रहा है, जिससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो। ज्ञान से ही तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। बाकी तो सब हैं भक्तिमार्ग की कथायें। भारत सचखण्ड था फिर द्वापर से झूठ खण्ड बना है। पहले-पहले हमेशा याद करो कि बिलवेड मोस्ट एक शिवबाबा है – सभी आत्माओं का बाप। फिर लौकिक बाप तो हर एक का अपना-अपना है जिससे हद का वर्सा मिलता है। वह भी हद के ब्रह्मा, हद के क्रियेटर ठहरे और यह है बेहद का क्रियेटर। बेहद का वर्सा देने वाला। आते भी हैं भारत में। शिवबाबा आये हैं जरूर सौगात लाये होंगे। हथेली पर बहिश्त, स्वर्ग की बादशाही ले आते हैं। बच्चों को भी बाप की प्रॉपर्टी मिलती है ना। तुम अभी कहते हो - हमारा शिवबाबा है। शिवबाबा से स्वर्ग का वर्सा मिलता है, जो साधारण तन में बैठ राजयोग सिखाते हैं। देवतायें तो पतित दुनिया में पैर धर न सकें। तो कृष्ण कैसे आयेंगे। एकज़ भूल से भारत

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION

कितना कंगाल बन पड़ा है। अब बाप आकर तुम बच्चों को अभुल बनाते हैं। जो कोई आधाकल्प भूल न हो। अभुल बनने से तुम पुण्य आत्मा बन जाते हो। रावणराज्य में तुम भूलें करते-करते पाप आत्मा बन जाते हो। काम-कटारी चलाना, क्रोध करना, यह भी रावण कराता है। सतयुग में 5 विकार होते ही नहीं। वहाँ तो सम्पूर्ण निर्विकारी हैं। मनुष्य तो कह देते कि असुरों और देवताओं की लड़ाई लगी। अब देवतायें सतयुग के, असुर कलियुग के — दोनों की लड़ाई हो कैसे सकती! मनुष्य कृष्ण को याद करते हैं - कृष्णपुरी में जाने के लिए। वह तो है सतयुग। यह है आसुरी रावणपुरी। फिर मूलवतन है ईश्वरीय पुरी, जहाँ आत्मायें रहती हैं। शिवबाबा भी रहते हैं, आत्मायें भी रहती हैं। फिर आत्मायें यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। बाप को भी आना पड़ता है, पराये देश में, परायें शरीर में। यह रावण का पतित देश है ना। सब बुलाते हैं - हे पतित-पावन आओ। सतयुग में देवी-देवताओं का राज्य था, जिनको भगवान-भगवती कहते हैं।

कृष्ण को कहते हैं श्याम सुन्दर, इसका भी अर्थ होगा ना। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग में सीढ़ी उतरते, काम-चिता पर बैठने से गोरे सुन्दर से श्याम बन जाते हैं। अब फिर ज्ञान चिता पर बैठ सुन्दर बन जायेंगे। कृष्ण के चित्र में भी नर्क और स्वर्ग दिखाया है। बाप कहते हैं अब इस कलियुग को लात लगाओ, सतयुग तरफ मुँह करो। मनमनाभव। अब मुझ बाप को याद करो और संग बुद्धि का योग तोड़ मेरे साथ जोड़ो। गृहस्थ व्यवहार में भल रहो। तुम कर्मयोगी हो ना। याद शिवबाबा को करो, दूसरा न कोई। यह पुरानी दुनिया, पुराना शरीर सब खत्म हो जाता है इसलिए बाप कहते हैं - देह सहित देह के सम्बन्ध छोड़ मुझे याद करो। अपने को आत्मा निश्चय करो। यह आत्माओं के बाप ने समझाया है तुम 84 जन्म कैसे लेते हो। मनुष्य, मनुष्य ही बनते हैं। कोई गधा आदि नहीं बनते। गरूड़ पुराण में तो सैनक बातें लिख दी हैं। इस समय है विषय वैतरणी नदी। भारत सतयुग में क्षीरसागर था, अब विषय सागर है। इस भारत को शिवालय भी कहा जाता है, वहाँ सब पवित्र देवता थे। अभी तो देवता धर्म है नहीं, इसलिए अपने को हिन्दू कह देते हैं। क्रिश्चियन माना क्रिश्चियन होगा ना। ऐसे नहीं कि वह यूरोप में रहने के कारण यूरोपियन धर्म कहेंगे। हिन्दू तो हिन्दुस्तान में रहने के कारण ठहरे। हिन्दू धर्म थोड़ेही कहेंगे। पहले तो भारत खण्ड ही नाम था। परमपिता परमात्मा ने तो देवी-देवता धर्म रचा। गाया भी जाता है परमपिता परमात्मा आकर ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय धर्म रचते हैं। अभी तुम ब्राह्मण धर्म से ट्रांसफर हो फिर सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी बनेंगे। शिवबाबा आकर शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। फिर पढ़ाई से तुम सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी बनते हो। बेहद का बाप 21 जन्मों का वर्सा देते हैं। हद के बाप से हद का वर्सा मिलता है। भारत सुखधाम था ना। रामराज्य की महिमा गाते हैं। वहाँ फिर अधर्म की बात कहाँ से आई, उनको कहा जाता है दन्त कथायें, स्टोरीज़, जिन्हें पढ़ने से नीचे ही उतरते आये। इसलिए बाप को कहा जाता है आकर स्वर्ग की सद्गति करो। सभी धर्म वाले कहते हैं ओ गॉड फादर, वह आते ही हैं संगम पर। वह कुम्भ का मेला तो पानी का है। सब जाकर पतित शरीर को धोते हैं। लाखों जाते हैं। कहते हैं गंगा पतित-पावनी। अब पतित-पावन तो एक बाप है ना।

PDF compression, optimization using a watermarked evaluation copy of PDF Compressor

गंगा कैसे हो सकती? बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ संगम पर। बच्चों को कहता हूँ इस मृत्युलोक में अब तुम्हारा अन्तिम जन्म है। अब अमरलोक चलना है तो पावन बनो। बाप ही पेठ नर से नारायण बनने की सच्ची अमरकथा सुनाते हैं अथवा तीसरा नेत्र देने की तीजरी की कथा सुनाते हैं। आत्मा को तीसरा नेत्र मिलता है। देवताओं का तीसरा नेत्र दिखाते हैं ना। परन्तु देवताओं को ज्ञान है नहीं। उन्होंने प्रालब्ध अर्थात् सद्गति को पा लिया, वहाँ ज्ञान की दरकार ही नहीं। वहाँ गुरू होते नहीं। अब तुम देखते हो विनाश सामने खड़ा है। होली पर स्वांग बनाते हैं ना। पेट से मूसल नहीं, यह बुद्धि से बाम्ब्स निकालते हैं, जिससे अपना ही विनाश करेंगे। कौरवों और पाण्डवों की लड़ाई है नहीं। तुम तो हो सच्चे वैष्णव। लड़ाई होती है यवनों और कौरवों की, जिससे रक्त की नदियाँ बहती हैं। पाण्डव हिंसक लड़ाई कर न सकें। अभी तो नेचुरल कैलेमिटीज भी बहुत आनी हैं।

अच्छा - मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- विलवेड मोस्ट एक शिवबाबा है, उसे प्यार से याद करना है। सच्चा-सच्चा वैष्णव बनना है। कोई भी भूल नहीं करनी है।

२- इस मृत्युलोक में अब यह अन्तिम जन्म है। विनाश सामने खड़ा है इसलिए बाप से पूरा वर्सा लेना है। पावन बनना है।

वरदान:- चेकिंग करने की विशेषता को अपना निजी संस्कार बनाने वाले महान आत्मा भव

जो भी संकल्प करो, बोल बोलो, कर्म करो, सम्बन्ध वा सम्पर्क में आओ सिर्फ यह चेकिंग करो कि यह बाप समान है! पहले मिलाओ फिर प्रैक्टिकल में लाओ। जैसे स्थूल में भी कई आत्माओं के संस्कार होते हैं, पहले चेक करेंगे फिर स्वीकार करेंगे। ऐसे आप महान पवित्र आत्मायें हो, तो चेकिंग की मशीनरी तेज करो। इसे अपना निजी संस्कार बना दो--यही सबसे बड़ी महानता है।

स्लोगन:-

सम्पूर्ण पवित्र और योगी बनना ही स्नेह का रिटर्न देना है।

compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

15.11.87 प्रात: क्लास ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है।

मीठे बच्चे- आपस में रूठ कर पढ़ाई को मत छोड़ना, पढ़ाई छोड़ना माना ज्ञान को छोड़ देना

सतो- तमो की वृद्धि न होने कारण क्या है? [illegible] में मतभेद होने से तमो वृद्धि को नहीं पाती। कोई2 बच्चे मतभेद में आकर पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। बाबा कहते हैं- बच्चे आपस में कोई खिटपिट होती है तो बाबा को पत्र लिखो। बाबा तुमको 16 कला सम्पूर्ण बनने की मत देंगे।

प्रश्न:- पढ़ाई छोड़ने का पहला मुख्य कारण कौन सा बनता है? उत्तर:- नाम रूप की बीमारी। किसी देहधारी के नाम रूप में फँसते हैं तो पढ़ाई में दिल नहीं लगती। माया इसी बात से देती है यही बहुत बड़ा विघ्न है।

बच्चे बैठे हैं दिल में निश्चय है कि बेहद का बाप आया हुआ है। बेहद का बाप तुम सम्मुख बैठे हो। जानते हो वह सब आत्माओं का बाप है। इस शरीर द्वारा समझा रहे हैं। कल्प कल्प ऐसे ही समझाते हैं और वर्सा देते हैं, और कोई यह ज्ञान दे नहीं सकते। बाबा कहते हैं- कभी भी किसी देहधारी को याद नहीं करना है। 5तत्वों को भूत कहा जाता है। पाँच तत्वों के शरीर को याद नहीं करना है। भल माया बहुत विघ्न डालेगी परन्तु हराना है। सिवाए एक दूसरा न कोई। इस बाबा के शरीर साथी तुम्हारा लव नहीं होना चाहिए। कोई भी शरीर के साथ लव रखा तो अटक पड़ेंगे। बाबा जानते हैं बहुत फीमेल्स की आपस में ऐसी दोस्ती हो जाती है जो एक दो के नाम रूप में फँस मरती हैं। इतनी प्रीत लग जाती है जो शिवबाबा को भूल जाते हैं। दो कन्याओं का भी आपस में इतना लव हो जाता है जो आत्मिक माशूक होते हैं। उनको कितनी भी ज्ञान की समझानी दो परन्तु माया छोड़ती नहीं, क्योंकि डेरपरीक मत से विरुद्ध चलते हैं। भल ज्ञान भी उठा लेवें परन्तु अवस्था डगमग होती रहती है। योग से विकर्म विनाश हो वह होते नहीं। ऐसे2 बहुत हैं। बाबा नाम नहीं लेते। कमजोरी कोई भी पकड़ी नहीं छोड़नी। (भल डाटमणी से न बने तो भी

a) बाबा को डायरेक्ट मनमनाभव लिख सकते हो और डायरेक्ट पत्र भेज भी सकते हो। हर एक को डायरेक्ट पत्र भेजने का। भल कोई कारण से तन-मन से दिल हट जाती है परन्तु पढ़ाई जरूर करनी है। बाबा को समाचार देते रहना है, आखिर बाबा मतभेद मिटा देंगे। मतभेद के कारण बच्चे बाजी खराब कर देते हैं। पढ़ाई छोड़ देते हैं। पढ़ाई कोई भी हालत में नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसे बहुत गिर पड़ते हैं। बाबा का इशारा कहना है कि कोई को कोई भी तकलीफ है तो बाबा को पत्र लिखो। बाबा भी पत्र लिखेंगे। तीसरी बात- तुमको कोई से भी झगड़े झगमगे की नहीं सुननी है। एक बाप की ही सुननी है। बाप फिर भी बच्चों को सावधान करते हैं

b) कि देह अभिमान की बीमारी में रोगी हो मर पड़ते हैं। बच्चों को फरमान है हमेशा याद करो और ही महिमा करते रहो। शिवबाबा ही कलियुगी पतित दुनिया को [illegible] है। यह भी तुम ही जानते हो। कई बच्चे हैं जो [illegible] को अगर बच्चा चिट्ठी न लिखे तो बाप को फिक्र हो जाता है कि बाप को भी बच्चे रहता है क्योंकि बाबा जानते हैं माया कहीं [illegible] मार न डाले या बीमार न कर दे। अगर पत्र नहीं लिखते हैं तो [illegible] के मायों का जोर से वर्षाड़ लगा है। इसलिए मुरली में समझाया जाता है- [illegible] तो अपने ही धन्धे में लग जाते हैं। कोई2 तो एक दो के नाम रूप में ऐसे [illegible] बने हैं। फिर मम्मा बाबा को भी याद नहीं करते हैं। एक दो को [illegible] सब विघ्न माया डालती है। कोई की तकदीर में नहीं है तो कितना [illegible] बात बातें नहीं करो फिर भी करते रहते हैं। कोई2 अज्ञान में जीवन है [illegible] थोड़ही जीवन कहानी आदि बनानी है। इनको बाबा के सिवाए [illegible] याद नहीं करना है। नेहरू मरा तो उनको कितना याद करते हैं। तुम भी ऐसे ही [illegible] और उनमें फँसे ही क्या रहा। ज्ञान मार्ग में बड़ी तख्त चाहिए- [illegible] नहीं तो बुद्धि का ताला नहीं खुलता है। तर्वित नहीं कर सकते, पट [illegible] बाबा सावधान कर देते हैं कि कोई भी मतभेद हो तो बाबा को

PDF compressed using a watermarked evaluation copy of PDF Compressor

c) लिखो। कोई भी बाबा को डायरेक्ट पत्र लिख सकते हैं। अभी 16 कला सम्पूर्ण तो नहीं बने हैं।
कोई बच्चे भी हैं, भले करके ऐसे सेन्सीबुल बच्चे जो हैं फट से समाचार लिखेंगे। फलानी
ब्राह्मणी में अवगुण हैं, जिस कारण सर्विस वृद्धि को नहीं पाती तो बाबा थैंक्स देंगे कि इस
बच्चे को सर्विस की शौक है। कोई देखते हैं ब्राह्मणी में क्रोध है तो दिल हट जाता है। फिर
घर बैठ जाते हैं। कोई ब्राह्मणी भी कह देती है कि तुम इस सेन्टर पर मत आओ। अगर कोई
ब्राह्मणी ऐसे करती है तो बाबा को डायरेक्ट लिखो तो तुमको बाबा याद पड़ेगा और बाबा
खुश भी होगा कि बच्चा सर्विस समाचार देते रहते हैं। बाबा आज फलाने को समझाया कि
परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है। बाबा स्वर्ग का वर्सा देता है। 5हजार वर्ष
पहले भी दिया था। यह लक्ष्मी नारायण ने लिया बड़े हैं। बाबा समझाते रहते हैं कभी भी
कोई देखे कि इस कारण [illegible] है तो फौरन समाचार देना है। सब सम्पूर्ण तो
बने नहीं हैं। बच्चों को सब कुछ समझाना होता है। बाप कहते हैं मैं बच्चों के आगे प्रत्यक्ष
होता हूँ। बहुत बच्चे हैं जो मुझे जानते ही नहीं हैं। उनके सम्मुख कैसे हूँगा। बच्चों को कहता
हूँ।-मीठे बच्चे श्रीमत पर चलकर अपना पुरुषार्थ कर जीवन [illegible] बनाओ। तुम सारे विश्व के
मालिक बनने वाले हो। जितना जास्ती मुझे याद करेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे। इसमें खर्चे की
कोई बात नहीं है। (फ्री एज्युकेशन है।) जिसकी तकदीर में है वह पक्के हो जाते हैं। माया ऐसी
है जो 6-8 वर्ष वाले भी देखो आज हैं नहीं। बाप से नहीं रूठते हैं परन्तु ब्राह्मणियों से रूठ
जाते हैं। बाबा तो यहाँ बैठा है। शिवबाबा से रूठा तो खत्म हो जायेगा। बाबा के गीतकाए
मुरली [illegible] सुन सकेंगे।

दूसरी बात जो ध्यान का पार्ट चलता है फलाने में सम्भाआई बाबा आया, यह भी एक
[illegible] है। बहुत खबरदारी से चलना है। बात कैसे करते हैं, उससे समझ जाना है। कोई2 में भूत
d) [illegible] आता है चरी बरी बालकी में भी कहते हैं शिवबाबा आया, मुरली चलाते हैं। यह सब
माया विघ्न डालती है। बहुत ट्रेटर निकल जाते हैं। बहुत धोखा देते हैं। इन सब बातों से
बहुत सम्भाल करनी है। पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना है। नहीं तो माया बहुत हैरान करेगी।
तूफान बहुत आयेंगे। जैसे वैद्य लोग कहते हैं कि बीमारी बाहर निकलेगी, डरना नहीं। बाबा
समझाते हैं माया चूहते2 ऐसी अंगूरी लगायेगी जो बाबा को भुला देगी। हराने की बहुत
कोशिश करेगी। युद्ध है ही 5 विकार रूपी रावण से। जितना बाबा को याद करेंगे तो तुम्हारे
विकर्म विनाश होंगे। मायाजीत जगत जीत भी बनेंगे। बाकी स्थूल लड़ाई की कोई बात नहीं है।
योगबल से ही विश्व की राजाई मिल सकती है। इस समय योगबल भी है तो बाहुबल भी है।
यह क्रिश्चियन दोनो मिल जाएं तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। इतनी ताकत इन्हों में है।
परन्तु [illegible] नहीं है। एक कहानी भी है। दो बिल्लो की। कृष्ण को भी देखो कैसे हाथ में
गोला दिखाया है। तो तुम्हारी याद कायम रहनी चाहिए। कोई भी कारण से पढ़ाई नहीं
छोड़नी चाहिए। विघ्न तो जरूर पड़ेंगे। माया ऐसी है जो माया मँड लेती है। हार्ट फेल कर
देती है इसलिए बाप कहते हैं और सब बातों को छोड़ो मामेकम् याद करो। बीज को याद
करने से झाड भी याद आ जायेगा। गृहस्थ व्यवहार में रहते भी कोर्स उठाओ। भक्त लोग
सवेरे उठकर भक्ति करते हैं। काशी में कोठियां बनी हुई हैं। हर एक कोठी में बैठ विश्वनाथ
गंगा कहते हैं। जानते कुछ नहीं। ईश्वर सर्वव्यापी कह देते हैं। [illegible] सत्य योगी ब्रह्म योगी
कहलाते हैं। यह बाबा सब बातों का अनुभवी है। इनके रथ में बैठ कहते हैं, इन सबको छोड़ो।
बाकी तो सब खिलौने बना दिये हैं। विष्णु का शंकर का, कृष्ण का खिलौना बनाए बैठ पूजा
करते हैं। जानते किसको नहीं। पूजा में बहुत खर्चा करते हैं। पत्थर की मूर्ति बनाकर उनको
श्रृंगारते हैं। साहूकार तो जेवर भी पहनाते हैं। जेवर तो ब्राह्मण ही लेते हैं। काम की चीज उठा
कर झट्ट मूर्ति को हरीबोल हरीबोल कर देते हैं। यह तो तुम जानते हो भक्ति में जो भावना
से करते हैं उनको उसका फल कुछ न कुछ बाप दे ही देते हैं। दूसरे जन्म में अच्छा भक्त बन जाते
हैं। कोई धन दान करते हैं तो धनवान के घर में, राजाई घर में जन्म मिल जाता है। फिर
भी इस दुनिया में सदा के लिए सुख तो है नहीं। इसलिए सन्यासी इस सुख को मानते
नहीं, काग विष्टा के समान समझते हैं। तो वह राजयोग कैसे सिखलायेंगे। सारे विश्व का
मालिक तो बेहद के बाप सिवाए कोई बना न सके। अब बाप तुम बच्चों को सम्मुख समझा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रहे हैं मैं फिर से आया हूँ। तुमको राजयोग सिखलाने। कृष्ण के 84 जन्म के अन्त में मैंने प्रवेश किया है। इनका नाम ब्रह्मा रखा है। मुझे ब्रह्मा जरूर चाहिए। तो प्रजापिता ब्रह्मा भी चाहिए। जिसमें प्रवेश करके आऊँ नहीं तो कैसे आऊँ? यह मेरा रथ मुकर्रर है। कल्प2 इसमें ही आता हूँ। लिखा भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। किसकी? विष्णुपुरी की। अभी तुम भारत को विष्णुपुरी का मालिक बना रहे हो। दूसरे कोई इस बात को समझते नहीं कि परमपिता परमात्मा का क्या पार्ट है। कृष्ण जयन्ती मनाते हैं परन्तु कृष्ण को जन्म देने वाले राजाई देने वाले शिवबाबा की मनाते नहीं। नर्क को स्वर्ग बनाने वाला बाप है ना। जो ब्राह्मण बन पूरा पुरुषार्थ करेंगे, सो ही ब्राह्मण से देवता बनेंगे। गायन है कि परमपिता परमात्मा 3 धर्म ब्राह्मण धर्म, सूर्यवंशी चन्द्रवंशी धर्म स्थापन करते हैं। वहाँ दो युगों में एक ही धर्म है और कोई धर्म है नहीं। बाकी दो युगों में देखो कितने धर्म हैं। बच्चों को पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना चाहिए। नहीं तो बहुत रोना पड़ेगा। सबके फिर दिव्यदर्शन होंगी, बतायेंगे कि तुमने यह यह पाप किया। हम तुमको बहुत समझाता हूँ कि पाप नहीं करना। पुण्य आत्मा बनना। पाप करेंगे तो सौगुणी सजा के निमित्त बनेंगे। मेरे बन कर विकार में गये तो तुम्हारे पर बहुत सजा आयेगी। वह सजायें भी बहुत कड़ी होती हैं। जो बाप की अवज्ञा करते हैं। बाप कहते हैं मैं परमधाम का रहने वाला हूँ। यहाँ पुरानी दुनिया में आकर तुमको वर्सा देता हूँ फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो। तब तो कहा हुआ है सतगुरू का निन्दक सूर्यवंशी घराने में ठौर नहीं पा सकता। वह गिर पड़ता है। बहुत कसम उठाते हैं हम आपके सपूत बच्चे होकर रहेंगे। ब्लड से भी लिखते हैं परमपिता परमात्मा से प्रतिज्ञा भी करते हैं कि बच्चा बनके आपसे पूरा वर्सा लूँगा। परन्तु माया ऐसी है वह आज हैं नहीं। प्रतिज्ञा कर फिर अपवित्र बना तो बहुत धोखा खायेगा। ईश्वर की अवज्ञा हुई ना। भक्ति में तो अवज्ञा करते रहते हैं। गाली देते रहते हैं परमात्मा कुत्ते बिल्ली कण2 में हैं। माया बुद्धिहीन बना देती है। कच्छ मच्छ अवतार सबसे जास्ती परमात्मा की ग्लानी की है। बाबा इशारे से सब समझाते रहते हैं। माया बहुत हैरान करेगी। नहीं तो युद्ध ही काहे की। विश्व का मालिक बनना, कम बात है। गफलत नहीं करनी है, पढ़ाई बिल्कुल नहीं छोड़नी है। बाबा से राय लो फिर जवाबदार बाबा हो जायेगा। पढ़ाई में मनुष्य कितनी मेहनत करते हैं। इम्तहान के टाइम बहुत मेहनत करते हैं। तुम भी आगे चल जब समय नजदीक देखेंगे तो रात दिन पढ़ाई को लग जायेंगे। अब वह समय जल्दी आने वाला है। अच्छा-

मात पिता बापदादा का मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दृढ़ संकल्प :- ।1। आपस में वाहयात ।व्यर्थ। बातें नहीं करनी है। कभी भी मतभेद में नहीं आना है। पढ़ाई किसी भी हालत में नहीं छोड़नी है।-

।2। बाप की अवज्ञा कभी नहीं करनी है। प्रतिज्ञा कर उस पर कायम रहना है। सर्विस का बहुत शौक रखना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

17-11-97 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे बच्चे - आपस में रूठकर कभी पढ़ाई को मत छोड़ना, पढ़ाई छोड़ना माना बाप को छोड़ देना

प्रश्न:- सर्विस की वृद्धि न होने का कारण क्या है?
उत्तर:- जब आपस में मतभेद होता है तब सर्विस वृद्धि को नहीं पाती। कोई-कोई बच्चे मतभेद में आकर पढ़ाई छोड़ देते हैं। बाबा राय देते है बच्चे आपस में कोई खिट-खिट होती है तो बाप को पत्र लिखो। बाबा तुमको 16 कला सम्पूर्ण बनने की मत देंगे।

प्रश्न:- पढ़ाई छोड़ने का पहला मुख्य कारण कौन सा बनता है?
उत्तर:- नाम-रूप की बीमारी। जब किसी देहधारी के नाम रूप में फँसते हैं तो पढ़ाई में दिल नहीं लगती। माया इसी बात से हरा देती है — यही बहुत बड़ा विघ्न है।

ओम् शान्ति। बच्चे बैठे हैं दिल में निश्चय है कि बेहद का बाप आया हुआ है, बेहद का वर्सा देते हैं। तुम सम्मुख बैठे हो। जानते हो वह सब आत्माओं का बाप है। इस शरीर द्वारा समझा रहे हैं। कल्प-कल्प ऐसे ही समझाते हैं और वर्सा देते हैं, और कोई यह ज्ञान दे नहीं सकते। बाबा समझाते हैं कभी भी किसी देहधारी को याद नहीं करना है। 5 तत्वों को भूत कहा जाता है। तो 5 तत्वों के शरीर को याद नहीं करना है। भल माया बहुत विघ्न डालती है परन्तु डरना नहीं है। सिवाए एक बाबा दूसरा न कोई। इस बाबा के शरीर साथ भी तुम्हारा लव नहीं होना चाहिए। कोई भी शरीर के साथ लव रखा तो अटक पड़ेंगे। बाबा जानते हैं बहुत फीमेल्स की भी आपस में ऐसी दोस्ती हो जाती है, जो एक दो के नाम रूप में फँस मरते हैं। इतनी प्रीत लग जाती है जो शिवबाबा को भूल जाते हैं। दो कन्याओं का भी आपस में इतना लव हो जाता है जैसे आशिक होते हैं। उनको कितना भी ज्ञान का समझानी दो परन्तु माया छोड़ती नहीं है क्योंकि ईश्वरीय मत से विरुद्ध चलते हैं। भल ज्ञान भी उठा लेवे परन्तु अवस्था डगमग रहती है। योग से जो विकर्म विनाश हों, वह होते नहीं। ऐसे-ऐसे बहुत हैं बाबा नाम नहीं लेते।

दूसरी बात - बाबा समझाते हैं कभी भी पढ़ाई नहीं छोड़ना। भल ब्राह्मणी से न बने
a) तो भी बाबा को डायरेक्ट पत्र लिख सकते हो। भल कोई कारण से दिल हट जाती है। परन्तु पढ़ाई जरूर पढ़नी है। बाबा को समाचार देते रहना है। आखिर बाबा मतभेद मिटा देंगे। मतभेद के कारण बहुत बच्चे खाना खराब कर देते हैं, पढ़ाई छोड़ देते हैं। पढ़ाई कोई भी हालत में छोड़नी नहीं चाहिए। ऐसे बहुत गिर पड़ते हैं। बाबा का हमेशा कहना
b) है कि कोई भी तकलीफ है ब्राह्मणी की खिटपिट है तो बाबा को पत्र लिख सकते हो। बाबा भी डायरेक्ट पत्र भेज सकते हैं।

तीसरी बात - तुमको कोई से भी झरमुई-झगमुई की बातें सुननी नहीं है। एक बाप की ही सुननी है। बाप फिर भी बच्चों को सावधान करते है। बहुत हैं जो देह-अभिमान की बीमारी में रोगी हो पड़ते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

उनकी ही महिमा करते रहो। शिवबाबा ही कलियुगी पतित दुनिया को पावन श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। यह भी तुम ही जानते हो। कई बच्चे हैं जो 6-8 मास पत्र नहीं लिखते। लौकिक बाप को अगर बच्चा चिट्ठी न लिखे तो बाप को फिकर हो जाता है पता नहीं क्या बात है। इस बाप को भी ख्याल रहता है क्योंकि बाबा जानते हैं माया बड़ी दुस्तर है। कहाँ बच्चों को मार न डाले वा बीमार न कर दे। अगर पत्र नहीं लिखते हैं तो समझ जाता हूँ कि माया का जोर से थप्पड़ लगा है, इसलिए मुरली में समझाया जाता है। तकदीर में नहीं है तो अपने ही धन्धे में लग जाते हैं। कोई तो एक दो के नाम रूप में ऐसे फँसते हैं जैसे आशिक माशुक बने हैं। फिर मम्मा बाबा को भी याद नहीं करते। एक दो को याद करते रहते हैं। यह सब विघ्न माया डालती है। (कोई की तकदीर में नहीं है तो कितना भी बाबा समझाये, वाहियात बातें न करो फिर भी करते रहते हैं। कोई अज्ञान में जीवन कहानी लिखते हैं। हमको थोड़ेही जीवन कहानी आदि बनानी है। हमको बाबा के सिवाए किसको याद नहीं करना है।) नेहरू मरा तो उनको कितना याद करते हैं। तुम भी ऐसे याद करो तो बाकी तुम्हारे और उनमें फर्क क्या रहा। ज्ञान मार्ग में बड़ी समझ चाहिए। जब तक शिवबाबा से योग नहीं तो बुद्धि का ताला नहीं खुलता। सर्विस नहीं कर सकते, पद भ्रष्ट कर लेते हैं। इसलिए बाबा सावधान कर देते हैं कि कोई भी मतभेद

c) हो तो बाबा को लिखो। सभी 16 कला सम्पूर्ण तो नहीं बने हैं। कोई कच्चे भी हैं, भूलें करते होंगे। सेन्सीबुल बच्चे जो हैं, फट से समाचार लिखेंगे। कोई देखते हैं कि फलाने में अभी तक क्रोध है तो उनसे दिल हट जाती है फिर घर बैठ जाते हैं। (कोई ब्राह्मणी भी कह देती है कि तुम इस सेन्टर पर मत आओ।)

बाबा को सर्विस समाचार देना चाहिए। बाबा खुश होगा कि बच्चों सर्विस समाचार देता है। बाबा आज फलाने को समझाया कि परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? बाबा स्वर्ग का वर्सा देते हैं। 5 हजार वर्ष पहले भी दिया था। यह लक्ष्मी-नारायण के चित्र खड़े हैं। बाबा समझाते रहते हैं कभी कोई देखे कि इस कारण डिससर्विस होता है तो फौरन समाचार देना है। सब सम्पूर्ण तो नहीं बने हैं। बच्चों को सब कुछ समझाना होता है।

(बाप कहते हैं मैं बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हूँ। बहुत बच्चे जो मुझे जानते ही नहीं, उनके सम्मुख कैसे हूँगा।) बच्चों को कहता हूँ–मीठे बच्चे श्रीमत पर चल अपना पुरुषार्थ कर जीवन ऊंच बनाओ। तुम सारे विश्व के मालिक बनने वाले हो। जितना जास्ती मुझे याद करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे, इसमें खर्चे की कोई बात नहीं, सिर्फ एज्यूकेशन है। जिसकी तकदीर में है वह पक्के हो जाते हैं। (माया ऐसी है जो 6-8 वर्ष वाले भी देखो आज हैं नहीं। बाप से नहीं रुसते हैं परन्तु ब्राह्मणियों से रूसते हैं। बाबा तो यहाँ बैठा है। शिवबाबा से रूठा तो खत्म हो जायेंगे। बाबा के सिवाए मुरली कैसे सुन सकेंगे। दूसरा बात जो कभी ध्यान का पार्ट चलता है फलानी में मम्मा आई, बाबा आया यह भी माया है। बहुत खबरदारी से चलना है। बात कैसे करते हैं, उससे समझ

d) जाना है। कोई-कोई में भूत आ जाता है फिर कहते हैं शिवबाबा आया, मुरली चलाते हैं – यह सब माया विघ्न डालती है। बहुत दूर निकल जाते हैं। बहुत धोखा देते हैं। इन सब बातों से बहुत सम्भाल करना है। पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना है। नहीं तो माया बहुत हैरान करेगी। तूफान बहुत आयेंगे। जैसे वैद्य लोग कहते हैं कि बीमारी बाहर निकलेगी, डरना नहीं। बाबा समझाते हैं माया चलते-चलते ऐसी अंगूरी लगायेगी जो बाबा को भुला देगी। हराने की बहुत कोशिश करेगी। युद्ध है ही 5 विकारों रूपी रावण से। जितना बाबा को याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। माया जीते जगत जीत भी बनेंगे। बाकी स्थूल लड़ाई की कोई बात नहीं। योगबल से ही विश्व की राजाई मिल सकती है। इस समय योगबल भी है, बाहुबल भी है। यह क्रिश्चियन दोनों मिल जावें, तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। इतनी ताकत इन्हों में है। परन्तु लॉ नहीं है। एक कहानी भी है दो बिल्लों की। कृष्ण को भी देखो कैसे हाथ में गोला दिखाया है। तो तुम्हारी याद कायम रहनी चाहिए। कोई भी कारण से पढ़ाई नहीं छोड़नी चाहिए। विघ्न तो जरूर पड़ेंगे। माया ऐसी है जो माथा मूड लेती है, हार्टफेल कर देती है। इसलिए बाप कहते हैं और सब बातों को छोड़ मामेकम् याद करो। बीज को याद करने से झाड़ भी याद आ जायेगा। गृहस्थ व्यवहार में रहते यह कोर्स उठाओ। भगत लोग सवेरे उठकर भक्ति करते हैं। काशी में कोठियां बनी हुई हैं। हर एक कोठी में बैठ विश्वनाथ गंगा कहते हैं, जानते कुछ नहीं। ईश्वर सर्वव्यापी कह देते हैं। अपने को तत्व योगी, ब्रह्म योगी कहलाते हैं। यह बाबा सब बातों का अनुभवी है। इनके रथ में बैठ कहते हैं इन सबको छोड़ो, बाकी तो सब खिलौने बना दिये हैं। विष्णु का, शंकर का, कृष्ण का खिलौना बनाए बैठ पूजा करते हैं। जानते किसको नहीं। पूजा में बहुत खर्चा करते हैं। पत्थर की मूर्ति बनाए उसको श्रृंगारते हैं। साहूकार तो जेवर भी पहनाते हैं। यह तो तुम जानते हो भक्ति में जो कुछ भावना से करते हैं, उसका फल कुछ न कुछ हम दे देते हैं। दूसरे जन्म में अच्छा भगत बन जाते हैं। कोई धन दान करते हैं तो धनवान के घर में, बहुत दान करते हैं तो राजाई घर में जन्म मिलता है। फिर भी इस दुनिया में सदा के लिए सुख तो है नहीं। इसलिए सन्यासी इस सुख को मानते नहीं। काग विष्टा के समान समझते हैं। तो वह राजयोग कैसे सिखलायेंगे। सारे विश्व का मालिक तो बेहद के बाप सिवाए कोई बना न सके। अब बाप तुम बच्चों को सम्मुख समझा रहे हैं, मैं फिर से आया हूँ तुमको राजयोग सिखलाने। कृष्ण के 84 जन्मों के अन्त में मैंने प्रवेश किया है, इनका नाम ब्रह्मा रखा है। मुझे ब्रह्मा जरूर चाहिए तो प्रजापिता ब्रह्मा भी चाहिए। जिसमें प्रवेश करके आऊं, नहीं तो कैसे आऊं? यह मेरा रथ मुकर्रर है। कल्प-कल्प इसमें ही आता हूँ। लिखा भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। किसकी? विष्णुपुरी की। अभी तुम भारत को विष्णुपुरी बना रहे हो। दूसरे कोई इस बात को समझते नहीं कि परमपिता परमात्मा का पार्ट है, कृष्ण जयन्ती मनाते हैं, नर्क को स्वर्ग बनाने वाला बाप है ना। जो ब्राह्मण बन पूरा पुरुषार्थ करेंगे वो ब्राह्मण से देवता बनेंगे। गायन है कि परमपिता परमात्मा 3 धर्म ब्राह्मण धर्म, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी

...web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDF...

धर्म स्थापन करते हैं। वहाँ दो युगों में एक ही धर्म है और कोई धर्म है नहीं। बाकी दो युगों में देखो कितने धर्म हैं।

बच्चों को पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना चाहिए। नहीं तो बहुत रोना पड़ेगा। सबके लिए ट्रिब्युनल बैठेगी। बतायेंगे कि तुमने यह-यह पाप किया। इसलिए हम तुमको बहुत समझाता हूँ कि पाप नहीं करना, पुण्य आत्मा बनना। पाप करेंगे तो सौगुणा सज़ा के निमित्त बनेंगे। नर बनकर विकार में गये तो तुम्हारे पर बहुत सजा आयेगी। वह सजायें भी बहुत कड़ी होती हैं। जो बाप की अवज्ञा करते हैं। बाप कहते हैं मैं परमधाम का रहने वाला हूँ। यहाँ पुरानी दुनिया में आकर तुमको वर्सा देता हूँ। फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो, तब तो कहा हुआ है सतगुरु का निंदक सुर्ख़दरी पाने में ठौर न पाये। गिर पड़ते हैं, बहुत कसम उठाते हैं। हम आपके सपूत बच्चे होकर रहेंगे। लिख से भी लिखते हैं। परमपिता परमात्मा से प्रतिज्ञा भी करते हैं कि बच्चा बन आपसे पूरा वर्सा लूँगा। परन्तु माया ऐसी है—वह आज है नहीं। प्रतिज्ञा कर फिर अपवित्र बना तो बहुत धोखा खायेगा। ईश्वर की अवज्ञा हुई ना। बाबा इशारे में सब समझाते रहते हैं, माया बहुत हैरान करेगी। नहीं तो युद्ध काहे की। विश्व का मालिक बनना, कम बात नहीं है। गफ़लत नहीं करनी है। पढ़ाई बिल्कुल नहीं छोड़नी है। बाबा से राय लो फिर जवाबदार बाबा हो जायेगा। पढ़ाई में मनुष्य कितनी मेहनत करते हैं। इन्तहान के टाइम बहुत मेहनत करते हैं। तुम भी आगे चल जब समय नजदीक देखेंगे तो रात दिन पढ़ाई में लग जायेंगे। अब वह समय जल्दी आने वाला है।

अच्छा- मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. आपस में व्यर्थ बातें नहीं करनी हैं। कभी भी मतभेद में नहीं आना है, पढ़ाई किसी भी हालत में नहीं छोड़नी है।

२. बाबा की अवज्ञा कभी नहीं करनी है। प्रतिज्ञा कर उस पर कायम रहना है। सर्विस का सदा शौक रखना है।

वरदान:- परखने की शक्ति द्वारा कुसंग व व्यर्थ संग से बचने वाले शक्तिशाली आत्मा भव

कई बच्चे कुसंग अर्थात् बुरे संग से तो बच जाते हैं लेकिन व्यर्थ संग से प्रभावित हो जाते हैं, क्योंकि व्यर्थ बातें रमणीक और बाहर से आकर्षित करने वाली होती हैं। इसलिए बापदादा की शिक्षा है—न व्यर्थ सुनो, न व्यर्थ बोलो, न व्यर्थ करो, न व्यर्थ देखो, न व्यर्थ सोचो। ऐसे शक्तिशाली बनो जो बाप के सिवाए और कोई भी संग का रंग प्रभावित न करे। परखने की शक्ति द्वारा खराब वा व्यर्थ संग को पहले से ही परखकर परिवर्तन कर दो-तब कहेंगे शक्तिशाली आत्मा।

स्लोगन:-

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"आपको आकारी बनाने बापदादा अभी भी कायम है और कायम रहेगा। अभी बापदादा आप रूहानी रत्नों से मिल, विदाई लेते हैं फिर मिलेंगे। जो होता है इसमें कल्याण हैं। बापदादा और कल्याण। और कोई शब्द नहीं।"

(सन्देशी के वापस आने पर वतन का सन्देश)

बाबा ने कहा—प्यार और याद। जैसे इस समय हर एक के अन्दर बाबा देखकर आये हैं। ऐसे ही याद और प्यार हमेशा कायम रखेंगे। वह याद और प्यार जैसे कि एक रस्सी है। उस रस्सी को कायम रखना है। इस रस्सी के जरिये बीच में मिलते रहेंगे। बाबा ने कहा स्थापना का कार्य जो और जैसे आदि से चला है अन्त तक ऐसे ही चलेगा। अन्तर नहीं। जिन बच्चों को बाबा निमित्त रखते हैं उन्हों द्वारा बापदादा सभी बच्चों को डायरेक्शन देते रहेंगे। और बच्चे अनुभव करते रहेंगे कि कैसे बापदादा की इक्ट्ठी डायरेक्शन होगी। संगमयुग पर बापदादा दोनों को अलग नहीं होना है। बाबा ने कहा सभी को दो शब्द कहना—अटल और अखण्ड। यह बापदादा दोनों की सौगात है। जैसे कोई बड़े लोग कहां जाते हैं तो सौगात देते हैं। ऐसे बापदादा दोनों ही दो शब्दों की सौगात देते हैं अटल और अखण्ड। इस बुद्धि रूपी तिजोरी में ऐसा रखें जो कितना भी कोई चुराने की कोशिश करे तो भी सौगात साथ रहे। फिर बाबा ने कहा, अब थोड़े समय के लिए विदाई लेता हूं। फिर जैसे-जैसे कार्य होगा डायरेक्शन देता रहूंगा।

22.1.69

दोपहर भोग के समय वतन का समाचार

आज वतन में गई तो ब्रह्मा बाबा जैसे यहां मुलाकात करते थे वैसे वहां ब्रह्मा बाबा ने मुलाकात की। बाबा ने कहा बच्चों के भोजन के समय के अनुसार लेट आई हो। मैंने कहा—बाबा आपका तो एक डेढ बजे भोजन पान करने का समय था। बाबा ने कहा बाबा जब बच्चों के साथ भोजन खाता था तो बच्चों के टाइम भोजन खाता था। उस टाइम से लेट आई

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हो। फिर बाबा ने ब्रह्मा बाबा को कहा कि ले जाओ... क्या जाकर देखा कि जैसे यहां आफिस में कुर्सी पर बाबा आकर बैठता था, पत्र लिखता था तो वही कुर्सी, वही पैड, वही पेंसिल रखी थी। मैं तो हैरान हुई कि यह सभी चीजें वतन में कैसे आ गई। फिर बाबा ने हस्त लिखित पत्र मेरे को दिया। मैंने पढ़ा–जिसमें लिखा हुआ था :–

"स्वदर्शन चक्रधारी नूरे रत्नो याद प्यार के बाद, आज अव्यक्त रूप से आप अव्यक्त स्थिति में स्थित हुए बच्चों से मिल रहे हैं।" दूसरे पेज में लिखा था–"बच्चे,जो बापदादा के साकार रूप से शिक्षायें मिली है उसका विस्तार करते रहना। अब न बिसरो न याद रहो। विदाई के बाद बाबा जैसे सही डालते हैं वैसे डाली हुई थी। बाबा ने कहा हमने अपने समय पर पत्र भी लिखा फिर भोजन के लिए इंतजार कर रहे थे। फिर तो भोजन खिलाया। कहा–भल वतन में चीजें खाते हैं लेकिन यज्ञ के भोजन की रसना बहुत अच्छी है। शिवबाबा ब्रहमाबाबा दोनों इक्टठे बैठे थे। शिवबाबा ने कहा पहले बच्चा फिर बाप। फिर तो दोनों ने इक्टठा एक दो के मुख में दिया। जब हम आ रही थी–तो बाबा ने एक दृश्य दिखाया– एक सागर था जिसमें बहुत तेज लहरें चल रही थी। बाबा ने कहा आप इस सागर के बीच में जाओ। मैं घबराने लगी कि इतनी तेज लहरों में कैसे जाऊंगी। फिर बाबा की आज्ञा फरमान पांव डाला। जहां पांव रखा वहां की लहर शान्त होती गई। फिर देखा कि बापदादा दोनों ने उसमें छोटी-छोटी नावें उस सागर के बीच में डाली लेकिन सागर की लहर आने से गायब हो गई। कोई तो लहर से इधर-उधर होती रही। कोई तो जैसी थी वैसे रही हम यह देखने में ही बिजी हो गई। फिर वह सीन खत्म हो गई। बापदादा ने कहा कि यह खेल बाप ने प्रैक्टिकल में रचा है। जिन बच्चों की जीवन रूपी नईया बाप के साथ में होगी वह हिलेगी नहीं। अभी तुम परीक्षाओं रूपी सागर के बीच में चल रहे हो। तो जिनका कनेक्शन अर्थात् जिनका हाथ बापदादा के हाथ में होगा उनकी यह जीवन रूपी नैया न हिलेगी न डूबेगी। तुम बच्चे इसको ड्रामा का खेल समझकर चलेंगे तो डगमग नहीं होंगे। और जिनका बुद्धि रूपी हाथ साथ ढीला होगा वह डोलते रहेंगे। इसलिए बच्चों को बुद्धि रूपी हाथ मजबूत रखने का खास ध्यान रखना है।

PDFcompressor, OCR, web optimization using a trial version of PDFCompressor

बापदादा के हाथ में बुद्धि रूपी हाथ हो तो परीक्षाओं रूपी सागर में हिलेंगे नहीं

दोपहर भोग के समय वतन का समाचार

आज वतन में गई तो ब्रह्मा बाबा जैसे यहाँ मुलाकात करते थे वैसे वहाँ ब्रह्मा बाबा ने मुलाकात की। बाबा ने कहा – बच्चों के भोजन के समय के अनुसार लेट आई हो। मैंने कहा – बाबा, आपका तो एक-डेढ़ बजे भोजन पान करने का समैय था। बाबा ने कहा – बाबा जब बच्चों के साथ भोजन खाता था तो बच्चों के टाइम भोजन खाता था, उस टाइम से लेट आई हो। फिर बाबा ने ब्रह्मा बाबा को कहा कि – ले जाओ क्या जाकर देखा कि जैसे यहाँ आफिस में कुर्सी पर बाबा आकर बैठता था, पत्र लिखता था तो वही कुर्सी, वही पैड, वही पेंसिल रखी थी। मैं तो हैरान हुई कि यह सभी चीजें वतन में कैसे आ गई। फिर बाबा ने हस्त-लिखित पत्र मेरे को दिया। मैंने पढ़ा। उसमें लिखा हुआ था –

"स्वदर्शन चक्रधारी नूरे रत्नो, याद-प्यार के बाद, आज अव्यक्त रूप से आप अव्यक्त स्थिति में स्थित हुए बच्चों से मिल रहे हैं।" दूसरे पेज में लिखा था – "बच्चे, जो बापदादा के साकार रूप से शिक्षायें मिली हैं उसका विस्तार करते रहना। अब न बिसरो, न याद रहो।

विदाई के बाद बाबा जैसे सही (signature) डालते हैं वैसे डाली हुई थी। बाबा ने कहा हमने अपने समय पर पत्र भी लिखा फिर भोजन के लिए इंतजार कर रहे थे। फिर तो भोजन खिलाया। बाबा ने कहा – भल वतन में चीजें a) खाते हैं लेकिन यज्ञ के भोजन की रसना बहुत अच्छी है।

फिर बाबा ने भोजन स्वीकार किया। जब हम आ रही थी तो बाबा ने एक दृश्य दिखाया – एक सागर था जिसमें बहुत तेज लहरें चल रही थी। बाबा ने कहा – आप इस सागर के बीच में जाओ। मैं घबराने लगी कि इतनी तेज लहरों में कैसे जाऊंगी। फिर बाबा की आज्ञा प्रमाण पांव डाला। जहाँ पाँव

रखा वहाँ की लहर शान्त होती गई। फिर देखा कि बापदादा दोनों ने छोटी-छोटी नावें उस सागर के बीच में डाली। लेकिन कोई नाव तो सागर की लहर आने से गायब हो गई। कोई तो लहर से इधर-उधर होती रही और कोई तो जैसी थी वैसे ही रही। हम यह देखने में ही बिजी हो गई। फिर वह सीन खत्म हो गई।

बापदादा ने कहा कि यह खेल बाप ने प्रैक्टिकल में रचा है। जिन बच्चों की जीवन रूपी नैया बाप के साथ में होगी वह हिलेगी नहीं। अभी तुम परीक्षाओं रूपी सागर के बीच में चल रहे हो। तो जिनका कनेक्शन अर्थात् जिनका हाथ बापदादा के हाथ में होगा उनकी यह जीवन रूपी नैया न हिलेगी, न डूबेगी। तुम बच्चे इसको ड्रामा का खेल समझकर चलेंगे तो डगमग नहीं होंगे। और जिनका बुद्धि रूपी हाथ-साथ ढीला होगा वह डोलते रहेंगे। इसलिए बच्चों को बुद्धि रूपी हाथ मजबूत रखने का खास ध्यान रखना है।

२३.१.६९

अस्थियां हैं स्थिति की स्मृति दिलाने वाली

आज मैं आप सभी बच्चों से अव्यक्त रूप में मिलने आया हूँ। जो मेरे बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित होंगे वही इसको समझ सकेंगे। आप सभी बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित हो किसको देख रहे हो? व्यक्त रूप में या अव्यक्त रूप में? आप व्यक्त हो या अव्यक्त? अगर व्यक्त में देखेंगे तो बाप को नहीं देख सकेंगे। आज अव्यक्त वतन से मुलाकात करने आया हूँ। अव्यक्त वतन में आवाज नहीं परन्तु यहाँ आवाज में आया हूँ। आप सभी बच्चों के अन्दर में कौनसा संकल्प चल रहा है? अभी यह अव्यक्त मुलाकात है। जैसे कल्प पहले मिसल बच्चों से रूहरूहान चल रही है। रूह-रूहान करने मीठे-मीठे बाबा ने आप सभी बच्चों से मिलने भेजा है। जो थे वही अब भी हैं। दो तीन दिन पहले मीठे-मीठे बाबा से रूह-रूहान चल रही थी। रूह-रूहान क्या है, मालूम है? बाबा ने बोला – वतन का अनुभव करने के लिए तैयार

"मीठे बच्चे-बाबा आया है तुम्हें ज्ञान रत्न देने, मुरली सुनाने, इसलिए तुम्हें कभी भी मुरली मिस नहीं करनी है, मुरली से प्यार नहीं तो बाप से प्यार नहीं"

प्रश्न :-सबसे अच्छा कैरेक्टर कौन सा है जो तुम इस नालेज से धारण करते हो?

उत्तर:-वाइसलेस बनना यह है सबसे अच्छा कैरेक्टर। तुम्हें नालेज मिली है कि यह सारी दुनिया विशश है, विशश माना ही कैरेक्टरलेस। बाप आया है वाइसलेस वर्ल्ड स्थापन करने। वाइसलेस देवतायें कैरेक्टर वाले हैं। कैरेक्टर सुधरते हैं बाप की याद से।

ओमशान्ति। बच्चे तुमको पढ़ाई को कभी भी मिस नहीं करना है। अगर पढ़ाई मिस की तो पद से भी मिस हो जायेंगे। मीठे2 रूहानी बच्चे कहाँ बैठे हैं? गॉडली स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी में। बच्चों को यह भी पता है फिर 5 हजार वर्ष बाद इस युनिवर्सिटी में दाखिल होते हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो बाप भी है टीचर भी है, गुरू भी है। वैसे गुरू की मूर्ति अलग, बाप की अलग, टीचर की अलग होती है। यह मूर्ति एक ही है। परन्तु है तीनो ही अर्थात बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरू भी बनते हैं। मनुष्य की लाइफ में यह 3 मुख्य हैं। बाप टीचर गुरू- यही है। तीनो पार्ट युद बजाते हैं। एक2 बात समझने से तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए और ऐसी रूहानी युनिवर्सिटी में बहुतों को ले आकर दाखिल करना चाहिए। जिस युनिवर्सिटी में पढ़ाई अच्छी मिलती है तो पढ़ने वाले दूसरों को कहते हैं इस युनिवर्सिटी में पढ़ो। यहाँ नालेज अच्छी मिलती है और कैरेक्टर्स भी सुधरते हैं। तुम बच्चों को भी दूसरों को ले आना है। अपनी माताओं को, पुरूषों को समझायें। देखो यह बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है। ऐसे समझाते हैं वा नहीं। यह तो हर एक अपनी दिल से पूछे। कब अपने मित्र सम्बन्धियों साथियों को समझाते हैं कि यह सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम गुरू भी है। सुप्रीम देवी देवता बनाने वाला है। बाप आपसमान बाप नहीं बनाते। बाकी उनकी जो महिमा है उसमें आपसमान बनाते हैं। बाप का काम है परवरिश करना और प्यार करना। ऐसे बाप को याद करना है जरूर। उनसे भेंट और कोई से हो न सके। भल कहते हैं गुरू से शान्ति मिलती है परन्तु वह तो विश्व का मालिक बनाते हैं। ऐसे भी कोई नहीं कहेगा कि हम सब आत्माओं का बाप हूँ। मुसलमान को कोई कह न सके। यह किसको पता नहीं है कि सभी आत्माओं का बाप कौन हो सकता है। एक है बेहद का बाप, जिसे हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चियन आदि सब गॉड फादर जरूर कहते हैं। बुद्धि जरूर निराकार तरफ जाती है। यह किसने कहा? आत्मा ने कहा गॉड फादर। तो जरूर मिलना चाहिए। फादर सिर्फ कहे और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता।

a) सारी दुनिया की जो भी आत्मायें हैं सबसे मिलते हैं। सब बच्चों की जो आश है वह पूर्ण करते हैं। सबकी कामना रहती है कि हम शान्तिधाम जायें। शान्ति चाहिए। आत्मा को पर पार्ट पड़ता है। रावण राज्य में थक गई है। अंग्रेजी में भी कहते ओ गॉड फादर, लिब्रेट करो। तमोप्रधान बनते2 पार्ट बजाते2 शान्तिधाम चले जायेंगे। फिर पहले सुखधाम में आते हैं, ऐसे नहीं पहले2 आकर विशश बनते हैं। नहीं। बाप समझाते हैं यह है वैश्यालयें। रावण राज्य। इसे रौरव नर्क कहा जाता है। तुमने गरूड़ पुराण देखा नहीं है। बिगर शास्त्र पढ़े, बिगर देखे भी तुम समझ सकते हो। भारत में वा इस दुनिया में कितने शास्त्र, कितने नॉविल्स हो गये हैं। जानी पढ़ाई की पुस्तकें हैं। शास्त्र आदि सब खत्म हो जायेंगे। बाप तुमको यह ज्ञान सौगात देते हैं यह कभी जलने के नहीं। यह है धारण करने की। जो काम की चीज नहीं होती उसको जलाया जाता है। ज्ञान कोई शास्त्र नहीं जो जलाया जाए। नालेज तुमको मिलती है, जिससे तुम 21 जन्म पद पाते हो। ऐसे नहीं कि इनके कोई शास्त्र है जो जला देंगे। नहीं। यह ज्ञान आपेही प्राय:लोप हो जाता है। यह कोई पढ़ने की किताब आदि नहीं है। ज्ञान विज्ञान भवन नाम भी है, परन्तु उनको पता नहीं कि यह नाम क्यों पड़ा है। इनका अर्थ क्या है? ज्ञान विज्ञान की महिमा कितनी भारी है। वास्तव में ज्ञान विज्ञान भवन नाम मकान पर रखा डाला जाता। यह नालेज तुम धारण करते हो। ज्ञान अर्थात सृष्टि चक्र। विज्ञान माना शान्तिधाम। ज्ञान से भी तुम परे जाते हो, विज्ञान में। ज्ञान पढ़ाई के आधार से फिर तुम राज्य करते हो। तुम समझते हो- हम आत्माओं को बाप आकर पढ़ाते हैं। नहीं तो भगवानुवाच गुम हो जाए। भगवान कोई शास्त्र

1.7.94 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाबा आया है तुम्हें ज्ञान रत्न देने, मुरली सुनाने, इसलिए तुम्हें कभी भी मुरली मिस नहीं करनी है, मुरली से प्यार नहीं तो बाप से प्यार नहीं"

प्रश्नः- सबसे अच्छा कैरेक्टर कौन-सा है, जो तुम इस नॉलेज से धारण करते हो ?

उत्तरः- वाइसलेस बनना यह सबसे अच्छा कैरेक्टर है । तुम्हें नॉलेज मिलती है कि यह सारी दुनिया विशश है, विशश माना ही कैरेक्टरलेस । बाप आया है वाइसलेस वर्ल्ड स्थापन करने । वाइसलेस देवतायें कैरेक्टर वाले हैं । कैरेक्टर सुधरते हैं बाप की याद से ।

ओम् शान्ति । बच्चे तुम्हें पढ़ाई कभी मिस नहीं करना है । अगर पढ़ाई मिस की तो पद से भी मिस हो जायेंगे । मीठे-मीठे रूहानी बच्चे कहाँ बैठे हैं ? गॉडली स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी में । बच्चों को यह भी पता है कि हर 5 हज़ार वर्ष बाद हम इस युनिवर्सिटी में दाखिल होते हैं । यह भी तुम बच्चे जानते हो – बाप, बा॰ भी है, टीचर भी है, गुरु भी है । वैसे गुरु की मूर्ति अलग, बाप की अलग, टीचर की अलग होती है । यह मूर्ति एक ही है । परन्तु हैं तीनों ही अर्थात् बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरु भी बनते हैं । मुनष्य की लाइफ में यह 3 मुख्य हैं । बाप, टीचर, गुरु वही है । तीनों पार्ट खुद बजाते हैं । एक-एक बात समझने से तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए और ऐसी त्रिमूर्ति युनिवर्सिटी में बहुतों को ले आकर दाखिल करना चाहिए । जिस-जिस युनिवर्सिटी में पढ़ाई अच्छी होती है तो वहाँ पढ़ने वाले दूसरों को कहते हैं – इस युनिवर्सिटी में पढ़ो, यहाँ नॉलेज अच्छी मिलती है और कैरेक्टर्स भी सुधरते हैं । तुम बच्चों को भी दूसरों को ले आना है । मातायें माताओं को, पुरूष पुरूषों का समझायें । देखो यह बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है । ऐसे समझाते हैं वा नहीं, वह तो हर एक अपनी दिल से पूछे । कभी अपने मित्र सम्बन्धियों, सखियों को समझाते हैं कि यह सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम गुरु भी है ? बाप सुप्रीम देवी-देवता बनाने वाला है, बाप आप समान बाप नहीं बनाते । बाकी उनकी जो महिमा है, उसमें आपसमान बनाते हैं । बाप का काम है परवरिश करना और प्यार करना । ऐसे बाप को जरूर याद करना है । उनकी भेंट और कोई से हो न सके । भल कहते हैं गुरु से शान्ति मिलती है । परन्तु यह तो विश्व का मालिक बनाते हैं । ऐसे भी कोई नहीं कहेंगे कि हम सब आत्माओं का बाप हूँ । यह किसको पता नहीं है कि सभी आत्माओं का बाप कौन हो सकता है । एक बेहद का बाप, जिसे हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चियन आदि सब गॉड फादर जरूर कहते है । बुद्धि जरूर निराकार तरफ जाती है । यह किसने कहा ? आत्मा ने कहा गॉड फादर । तो जरूर मिलना चाहिए । फादर सिर्फ कहे और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता ? सारी दुनिया के बच्चे की जो आश है वह पूर्ण करते हैं । सबकी कामना रहती है कि हम शान्तिधाम जायें । आत्मा को घर याद पड़ता है । आत्मा रावण राज्य में थक गई है । अंग्रेजी में भी कहते हैं ओ गॉड फादर, लिबरेट करो । तमोप्रधान बनते-बनते पार्ट बजाते-बजाते शान्तिधाम चले जायेंगे । फिर पहले सुखधाम में आते हैं । ऐसे नहीं, पहले-पहले आकर विशश बनते हैं । नहीं । बाप

PDF Compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

समझाते हैं यह है वेश्यालय, रावण राज्य । इसे रौरव नर्क कहा जाता है ।

तुमने गरूड़ पुराण देखा नहीं है । बिगर शास्त्र पढ़े, बिगर देखे भी तुम समझ सकते हो । भारत में वा इस दुनिया में कितने शास्त्र, कितनी पढ़ाई की पुस्तकें हैं । शास्त्रि आदि सब खत्म हो जायेंगे । बाप तुमको यह जो सौगात देते हैं, वह कभी जलने वाली नहीं है । यह है धारण करने की । जो काम की चीज़ नहीं होती उसको जलाया जाता है । ज्ञान कोई शास्त्र नहीं जो जलाया जाए । तुमको नॉलेज मिलती है, जिससे तुम 21 जन्म पद पाते हो । ऐसे नहीं कि इनके शास्त्र हैं जो जला देंगे । नहीं, यह ज्ञान आपेही प्रायः लोप हो जाता है । कोई पढ़ने की किताब आदि नहीं है । ज्ञान-विज्ञान भवन नाम भी है । परन्तु उनको पता नहीं कि यह नाम क्यों पड़ा है, इसका अर्थ क्या है ? ज्ञान-विज्ञान की महिमा कितनी भारी है ! ज्ञान अर्थात् सृष्टि चक्र की नॉलेज जो अभी तुम धारण करते हो । विज्ञान माना शान्तिधाम । ज्ञान से भी तुम परे जाते हो । ज्ञान में पढ़ाई के आधार से फिर तुम राज्य करते हो । तुम समझते हो हम आत्माओं को बाप आकर पढ़ाते हैं । नहीं तो भगवानुवाच गुम हो जाए । भगवान् कोई शास्त्र थोड़ेही पढ़कर आते हैं । भगवान् में तो ज्ञान-विज्ञान दोनों हैं । जो जैसा होता है, वैसा बनाते हैं । यह हैं बहुत सूक्ष्म बातें । ज्ञान से विज्ञान बहुत सूक्ष्म है । ज्ञान से भी परे जाना है । ज्ञान स्थूल है, हम पढ़ाते हैं, आवाज़ होता है ना । विज्ञान सूक्ष्म है इसमें आवाज़ से परे शान्ति में जाना होता है । जिस शान्ति के लिए ही भटकते हैं । सन्यासियों के पास जाते हैं । परन्तु जो चीज़ बाप के पास है वह दूसरे कोई से मिल नहीं सकती है । हठयोग करते, खड्डे में बैठ जाते परन्तु इसमें शान्ति मिल न सके । इसमें तकलीफ़ की कोई बात नहीं । पढ़ाई भी बहुत सहज है । 7 रोज़ का कोर्स उठाया जाता है । 7 रोज़ का कोर्स करके फिर भल कहाँ भी बाहर चला जाए, ऐसे और कोई जिस्मानी कालेज में कर न सके । तुम्हारे लिए कोर्स ही यह 7 रोज़ का है । सब समझाया जाता है । परन्तु 7 रोज़ कोई दे न सके । बुद्धियोग कहाँ न कहाँ चला जाता है । तुम तो भट्ठी में पड़े, कोई कां शक्ल नही देखते थे । कोई से बात नहीं करते थे । बाहर भी नहीं निकलते थे । तपस्या के लिए सागर के कण्ठे पर जाकर बैठते थे याद में । उस समय यह चक्र नहीं समझा था । यह पढ़ाई नहीं समझते थे । पहले-पहले तो बाबा से योग चाहिए । बाप का परिचय चाहिए । फिर पीछे टीचर चाहिए । पहले बाप के साथ योग सीखना पड़े । क्योंकि यह बाप तो है अशरीरी, दूसरा तो कोई मानते ही नहीं । कहते हैं गॉड फादर ओमनी प्रेजन्ट है । बस सर्वव्यापी का ज्ञान ही चला आता है । अभी तुम्हारी बुद्धि में वह बात नहीं है । तुम तो स्टूडेन्ट हो । बाप कहते हैं अपना धन्धा आदि भी भल करो परन्तु क्लास जरूर पढ़ो । गृहस्थ व्यवहार में भल रहो । अगर कहते स्कूल में नहीं जाना है तो फिर बाप भी क्या करे । अरे, भगवान् पढ़ाते हैं, भगवान् भगवती बनाने ! भगवानुवाच — मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ । तो क्या भगवान् से राजयोग नहीं सीखेंगे ? ऐसे कौन ठहर सकेंगे ! इसलिए ही तुम्हारा भागना हुआ । विष से बचने के लिए भागे । तुम आकर भट्ठी में पड़े, जो कोई देख न सके, मिल न सके । कोई को देखते ही नहीं थे । तो फिर दिल किससे लगायें । यह बच्चों को निश्चय भी है कि भगवान् पढ़ाते हैं । फिर भी बहाना करते हैं, बीमारी है, यह काम है । बाप तो बहुत शिफ्ट दे सकते हैं । आजकल स्कूल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

में शिफ्ट बहुत देते हैं। यहाँ कोई जास्ती पढ़ाई तो है नहीं। सिर्फ अल्फ और बे को समझने लिए बुद्धि अच्छी चाहिए। अल्फ और बे – यह याद करो, सभी को बताओ। त्रिमूर्ति तो बहुत बनाते हैं परन्तु ऊपर में शिवबाबा दिखलाते नहीं। यह थोड़ेही समझते हैं गीता का भगवान् शिव है, जिस द्वारा यह नालेज लेकर विष्णु बनते हैं। राजयोग है ना। अभी यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म, कितनी सहज समझानी है। किताब आदि तो कुछ भी हाथ में नहीं है। सिर्फ एक बैज हो, उसमें भी सिर्फ त्रिमूर्ति का चित्र हो। जिस पर समझाना है कि बाप कैसे ब्रह्मा द्वारा पढ़ाई पढ़ाकर विष्णु समान बनाते हैं।

कई समझते हैं हम राधे जैसा बनें। कलष तो माताओं को मिलता है। गोया राधे के बहुत जन्मों के अन्त में उनको कलष मिलता है। यह राज़ भी बाप ही समझा सकते हैं। और कोई मनुष्य मात्र जानते नहीं। तुम्हारे पास सेन्टर पर कितने आते हैं। कोई तो एक रोज़ आते फिर 4 रोज नहीं। तो पूछना चाहिए इतने रोज़ तुम क्या करते थे? बाप को याद करते थे? स्वदर्शन चक्र फिराते थे? जो बहुत देरी से आते हैं उनसे लिखकर भी पूछना चाहिए। कई बदली होकर जाते है फिर भी कोई सेन्टर का तो जरूर है, उनको मन्त्र मिला हुआ है – बाप को याद करना है और चक्र को फिराना है। बाप ने तो बहुत सहज बात बताई है। अक्षर तो दो हैं – मनमनाभव, मुझे याद करो और वर्से को याद करो। इसमें सारा चक्र आ जाता है। जब कोई शरीर छोड़ते हैं तो कहते हैं फलाना स्वर्ग गया। परन्तु स्वर्ग क्या है, किसको पता नहीं है। तुम अभी समझते हो वहाँ तो राजाई है। ऊंच से लेकर नींच तक, साहूकार से लेकर गरीब तक सब सुखी होते हैं। यहाँ है दुःखी दुनिया। वह है सुखी दुनिया। बाप समझाते तो बहुत अच्छा हैं। भल कोई दुकानदार हो वा क्या भी हो, पढ़ाई के लिए बहाना देना अच्छा नहीं लगता है। नहीं आते हैं तो उनसे पूछना है, तुम कितना बाप को याद करते हो? स्वदर्शन चक्र फिराते हो? खाओ पियो, घूमो फिरो – उसकी कोई मना नहीं है। इसके लिए भी टाइम निकालो। औरों का भी कल्याण करना है। समझो कोई का कपड़े साफ करने का काम है, बहुत लोग आते हैं। भल मुसलमान है वा पारसी है, हिन्दू है, बोलो तुम स्थूल कपड़े धुलाते हो परन्तु यह जो तुम्हारा शरीर है, यह तो पुराना मैला वस्त्र है, आत्मा भी तमोप्रधान है, उनको सतोप्रधान, स्वच्छ बनाना है। यह सारी दुनिया तमोप्रधान, पतित कलियुगी पुरानी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए लक्ष्य है ना। अब करो न करो, समझो न समझो, तुम्हारी मर्जी। तुम आत्मा हो ना। आत्मा जरूर पवित्र होनी चाहिए। अभी तो तुम्हारी आत्मा इमप्योर हो गई है। आत्मा और शरीर दोनों मैले हैं। उनको साफ करने के लिए तुम बाप को याद करो तो गैरन्टी है तुम्हारी सोल एकदम 100% पवित्र सोना बन जायेगी। फिर जेवर भी अच्छा बनेगा। मानो न मानो, तुम्हारी मर्जी। यह भी कितनी सर्विस हुई। डॉक्टर्स पास जाओ, कालेजों में जाओ, बड़ों-बड़ों को जाकर समझाओ कि कैरेक्टर बहुत अच्छा होना चाहिए। यहाँ तो सब हैं कैरेक्टरलेस। बाप कहते हैं वाइसलेस बनना है। वाइसलेस दुनिया थी ना। अभी विशश है अर्थात् कैरेक्टरलेस है। कैरेक्टर बहुत खराब हो गये हैं। वाइसलेस बनने के बिना सुधरेंगे नहीं। यहाँ मनुष्य हैं ही कामी। अभी विशश दुनिया से वाइसलेस वर्ल्ड एक बाप ही स्थापन करते हैं। बाकी पुरानी दुनिया विनाश हो जायेगी। यह चक्र है ना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इस गोले में समझानी बहुत अच्छी है। यह वाइसलेस वर्ल्ड थी, जहाँ देवी-देवता राज्य करते थे। अभी वो कहाँ गया? आत्मा तो विनाश होती नहीं, एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। देवी-देवताओं ने भी 84 जन्म लिये हैं। अभी तुम सयाने बने हो। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। अभी यह पुरानी दुनिया कितनी गन्दी है, तुम फील करते हो बाबा जो कहते हैं वह तो बरोबर ठीक है। वहाँ तो है ही पवित्र दुनिया। यह पवित्र दुनिया न होने कारण अपने पर देवता के बदले हिन्दू नाम रख दिया है। हिन्दूस्तान में रहने वाले हिन्दू, देवता हैं स्वर्ग में। अभी तुम इस चक्र को समझ गये हो। जो जो सेन्सीबुल हैं वह अच्छी रीति समझते हैं तो जैसे बाप समझाते हैं ऐसे फिर बैठ रिपीट करना चाहिए। मुख्य-मुख्य अक्षर नोट करते जाओ। फिर सुनाओ, बाप ने यह-यह पॉइंट सुनाई है। बोलो, मैं तो गीता का ज्ञान सुनाता हूँ। यह गीता का ही युग है। 4 युग हैं, यह तो सब जानते हैं। यह है लीप युग। इस संगम युग का किसको भी पता नहीं, समझते हैं पुरूषोत्तम युग। परन्तु कैसे, कब, क्यों पुरूषोत्तम युग है, यह किसको भी पता नहीं। शिव जयन्ती भी है। उनके बाद चाहिए कृष्ण जयन्ती। वह मेले-मलाखड़े की बात अलग है, जयन्ती सिर्फ उन्हों की मनाई जाती है। शिवजयन्ती फिर राम जयन्ती, कृष्ण जयन्ती और किसकी जयन्ती? जगत अम्बा, जगत पिता की थोड़ेही जयन्ती मनाते हैं। नम्बरवार आते हैं ना। अभी तुमको यह सारी नॉलेज मिलती है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1. *हमारा बाप, सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सतगुरु है -- यह बात सबको सुनानी है। अल्फ और बे की पढ़ाई पढ़ानी है।*

2. *ज्ञान अर्थात् सृष्टि चक्र की नॉलेज को धारण कर स्वदर्शन चक्रधारी बनना है और विज्ञान अर्थात् आवाज़ से परे शान्ति में जाना है। 7 रोज का कोर्स लेकर फिर कहां भी रहते पढ़ाई करनी है।*

वरदान:- सर्व सम्बन्धों का रस एक बाप से लेने वाले नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप भव

रोज़ अमृतवेले यह स्मृति में लाओ कि सर्व सम्बन्धों का सुख बापदादा से लेकर औरों को भी दान देना है। हर संबंध का सुख लो, सर्व सुखों के अधिकारी बन औरों को भी बनाओ। जो भी काम हो तो पहले साकार साथी याद न आये, बाप याद आयें, ऐसे सच्चे साथी का सदा साथ लो, एक बाप दूसरा न कोई -- इस स्थिति का अनुभव करो तो सहज ही नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बन जायेंगे।

स्लोगन -

स्मृति को श्रेष्ठ बनाओ तो स्थिति स्वतः श्रेष्ठ हो जायेगी।

6.2.91 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय हो, तुमें ज्ञान सूर्य बाप मिला है, अभी तुम जागे हो तो दूसरों को भी जगाओ"

प्रश्न :- इस प्रकार के टकराव का कारण तथा उसका निवारण क्या है?

उत्तर :- जब देह अभिमान में आते तो अनेक प्रकार के टकराव होते। माया की गद्दारी बैठती है। बाबा कहते देही अभिमानी बनो। सर्विस में लग जाओ। याद की यात्रा में रहो तो गद्दारी मिट जायेगी।

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों को बाप आत्मा है श्रीमत देते वा समझाते। यह तो बच्चे समझ गये हैं कि ड्रामा प्लैन अनुसार सारा कार्य होना है। बाकी समय थोड़ा रहा है। इस भारत को रावणपुरी से फिर विष्णुपुरी बनाना है। बाप भी है गुप्त। पढ़ाई भी गुप्त है। सेन्टर्स तो बहुत हैं। छोटे बड़े गाँव में छोटे बड़े सेन्टर्स हैं और बच्चे भी बहुत हैं। अब बच्चों ने प्लेन्ट तो दी है और लिखते भी हैं, अब कोई लिटरेचर बनाना है तो उसमें लिखना है- हम इस अपनी भारत भूमि का स्वर्ग बना कर छोड़ेंगे, तुमको भी अपनी भारत भूमि बहुत प्रिय है। क्योंकि तुम जानते हो, यह भारत ही स्वर्ग था, इनको 5 हजार वर्ष हुए हैं। भारत बहुत शानदार था, इनको स्वर्ग कहा जाता है। तुम ब्रह्मा मुख वंशावली को ही यह नालेज है। इस भारत को श्रीमत पर हमको स्वर्ग जरूर बनाना है। सबको रास्ता बताना है। और कोई खिट पिट की बात ही नहीं। आपस में बैठ राय करनी चाहिए कि इन प्रदर्शनी के चित्रों द्वारा हम ऐसी क्या एडवरटाइजमेंट करें, जो अखबार में भी चित्र दें। आपस में इस पर सेमीनार करना चाहिए। जैसे क्रिश्चियन लोग आपस में मिलते हैं, राय करते हैं कि भारत को हम कैसे सुधारें? यह जो इतने क्रिश्चियन आदि हो गये हैं, उनको आपस में मिलकर ठीक करें और भारत में शान्ति सुख कैसे स्थापन करें। उस गवर्मेन्ट का भी पुरुषार्थ चलता है। तुम भी पाण्डव गवर्मेन्ट गाई हुई हो। यह बड़ी ईश्वरीय गवर्मेन्ट है। इनको वास्तव में कहा ही जाता है पावन ईश्वरीय गवर्मेन्ट। पतित पावन बाप ही पतित बच्चों को बैठ पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं। यह बच्चे ही जानते हैं। मुख्य है ही भारत का आदि सनातन देवी देवता धर्म। यह भी बच्चे जानते हैं यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। रूद्र कहा जाता है ईश्वर बाप को, शिव को। गायन हुआ है बरोबर रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा था। वो लोग नहीं जानते हैं- बाप ने आकर रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा था। उन्हों ने तो टाइम लम्बा चौड़ा दे दिया है। अज्ञान नींद में सोये हुए हैं। अभी तुमको बाप ने जगाया है। तुमको फिर औरों को जगाना है। ड्रामा प्लैन अनुसार तुम जगाते रहते हो। इस समय तक जितने जैसे2 जितना जितना पुरुषार्थ किया है, उतना ही कल्प पहले भी किया था। हाँ, युद्ध के मैदान में उतराव चढ़ाव तो होता ही है। कभी माया का जोर हो जाता है, कभी ईश्वरीय सन्तान का जोर हो जाता है। कभी2 सर्विस बड़ी अच्छी तेजी से चलती है। कभी कहाँ2 बच्चों में माया के विघ्न पड़ जाते हैं। माया एकदम बेहोश कर देती है। लड़ाई का मैदान तो है ना। रावण माया राम की सन्तान को बेहोश कर देती है। लक्ष्मण के लिए भी कहानी है ना। तुम कहते हो सब मनुष्य इस्मरण की नींद में सोये हुए हैं। तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय ही ऐसे कहते हो, जिनको ज्ञान सूर्य मिला है और जाग उठे हैं, वही समझेंगे। इसमें एक दो को कहने की भी कोई बात नहीं है। तुम जानते हो बरोबर हम ईश्वरीय सम्प्रदाय जागे हैं। बाकी दूसरे सब सोये हुए हैं। वह यह नहीं जानते कि परमपिता परमात्मा आ गया है। बच्चों को वर्सा देने। यह बिल्कुल भूल गये हैं। बाप भारत में ही आते हैं। आकर भारत को स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। भारत स्वर्ग का मालिक था। इसमें कोई संशय नहीं। परमपिता परमात्मा का जन्म भी यहाँ ही होता है। शिवजयन्ती मनाते हैं ना। जरूर उसने आकर कुछ तो किया होगा ना। बुद्धि कहती है जरूर आकर स्वर्ग की स्थापना की होगी। प्रेरणा से थोड़ेही स्थापना होगी। यहाँ तो तुम बच्चों को राजयोग सिखाया जाता है। याद की यात्रा समझाई जाती है। प्रेरणा से कोई आवाज होता ही नहीं। समझते हैं शंकर की भी प्रेरणा होती है। वह यादव मुसल आदि बनाते हैं। परन्तु इसमें प्रेरणा की तो कोई बात ही नहीं है। तुम समझ गये हो उन्हों का पार्ट है ड्रामा में यह मुसल आदि बनाने का। प्रेरणा की बात नहीं है। ड्रामा अनुसार विनाश तो होना जरूर

a)

b)

ही है। गाया हुआ है- महाभारत लड़ाई में मूसल काम आये। जो पास्ट हो गया है वह फिर रिपीट होगा। तुम गैरन्टी करते हो हम भारत में स्वर्ग स्थापन करेंगे। जहाँ एक धर्म होगा। तुम ऐसे नहीं लिखते कि अनेक धर्म विनाश होंगे। यह तो चित्र में लिखा हुआ है- स्वर्ग की स्थापना
c) होती है तो दूसरा कोई धर्म नहीं होता। अभी तुमको समझ में आता है। सबसे बड़ा पार्ट है- शिव का, ब्रह्मा का और विष्णु का। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। यह तो बड़ी गुह्य बातें हैं। विष्णु से ब्रह्मा कैसे बनते हैं, ब्रह्मा से फिर विष्णु कैसे बनते हैं, यह सेन्सीबुल बच्चों की बुद्धि में झट आ जाता है। दैवी सम्प्रदाय तो बनते ही हैं। एक की बात नहीं है। इन बातों को तुम बच्चे समझते हो। दुनिया में एक भी मनुष्य नहीं समझते हैं। भल लक्ष्मी नारायण वा विष्णु की पूजा भी करते हैं परन्तु उनको भी पता नहीं है कि विष्णु ही फिर लक्ष्मी नारायण
d) बनते हैं। विष्णु के दो रूप ल0ना0 हैं, जो नई दुनिया में राज्य करते हैं बाकी 4 भुजा वाला कोई मनुष्य नहीं होता। यह सूक्ष्मवतन में एम आब्जेक्ट दिखलाते हैं प्रवृत्ति मार्ग की। यह सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी कैसे चक्र लगाती है, यह कोई नहीं जानते। बाप को ही नहीं जानते तो बाप की रचना को कैसे जान सकते। बाप ही रचना के आदि मध्य अन्त का नालेज बताते हैं। ऋषि मुनि भी कहते थे हम नहीं जानते हैं। बाप को जान जायें तो रचना के आदि मध्य
e) अन्त को भी जान जायें। बाप कहते हैं मैं एक ही बार आकर तुम बच्चों को भी सारी नालेज समझाता हूँ फिर आना ही नहीं होता। रचता और रचना के आदि मध्य अन्त को जानें ही कैसे? बाप स्वयं कहते हैं- मैं सिवाए संगमयुग के कभी आता ही नहीं हूँ। मुझे बुलाते भी संगम पर हैं। पावन सतयुग को कहा जाता है। पतित कलियुग को कहा जाता है, तो जरूर मैं आऊंगा- पतित दुनिया की अन्त में ना। बुलाते भी हैं आकर हमको पावन बनाओ तो अन्त में ही आकर पावन बनायेंगे ना। कलियुग के अन्त में आकर पतित से पावन बनाते हैं। सतयुग आदि में पावन हैं, यह तो सहज बातें हैं ना। मनुष्य कुछ भी समझ नहीं सकते कि पतित पावन बाप कब आयेंगे। अभी तो कलियुग का अन्त कहेंगे। अगर कहते हैं कलियुग में अजुन 40हजार वर्ष पड़े हैं तो और कितना पतित बनोगे। कितना दुख होगा। सुख तो होगा ही नहीं। कुछ भी मालूम न होने के कारण बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में हैं। तुम समझ सकते हो। तो बच्चों को आपस में मिलना है। चित्रों पर अच्छी रीति समझाना होता है। यह भी ड्रामा अनुसार चित्र आदि सब निकले हैं। बच्चे समझते हैं- जो2 समय पास होता है, हूबहू ड्रामा चलता रहता है। बच्चों की अवस्थायें भी कभी नीचे, कभी ऊपर होती रहेंगी। बड़ी समझने की बातें हैं। कभी2 ग्रहचारी आकर बैठती है तो उनको मिटाने के लिए कितने प्रयत्न करते हैं। बाबा घड़ी2 कहते हैं- बच्चे तुम देह अभिमान में आते हो इसलिए टक्कर होता है। इसमें देही अभिमानी बनना पड़े। बच्चों में देह अभिमान बहुत है। तुम देही अभिमानी बनो तो बाप की याद रहेगी और सर्विस में उन्नति करते रहेंगे। ऊंच पद जिनको पाना है वह सदैव सर्विस में लगे रहेंगे। तकदीर में नहीं है- तो फिर तदबीर भी नहीं होगी। खुद कहते हैं बाबा हमको धारणा नहीं होती। बुद्धि में नहीं बैठता, जिनको धारणा होती है तो खुशी भी बहुत होती है। समझते हैं शिवबाबा आया हुआ है, अब बाप कहते हैं बच्चे तुम अच्छी रीति समझकर फिर औरों को समझाओ। कोई तो सर्विस में ही लगे रहते हैं। पुरूषार्थ करते रहते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं जो सेकेण्ड गुजरता है, वह ड्रामा में नूंध है फिर ऐसे ही रिपीट होगा। बच्चों को ही समझाया जाता है, बाहर भाषण आदि पर तो अनेक प्रकार के नये आते हैं सुनने के लिए। तुम समझते हो गीता वेद शास्त्र आदि पर कितने मनुष्य भाषण करते हैं, उनको कोई यह थोड़ेही पता है कि यहाँ ईश्वर अपना
f) और अपनी रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ समझाते हैं। रचयिता ही आकर सारा ज्ञान सुनाते हैं। त्रिकालदर्शी बनाना यह बाप का ही काम है। शास्त्रों में यह बातें हैं नहीं। यह नई बातें हैं। बाबा बार2 समझाते हैं कहाँ भी पहले2 यह समझाओ कि गीता का भगवान कौन है। श्रीकृष्ण या निराकार शिव? चित्रों में कितना अच्छी रीति दिखाया गया है। यह या वह? यह बात प्रोजेक्टर पर तुम समझा नहीं सकेंगे। प्रदर्शनी में चित्र सामने रखा है, उस पर समझाकर तुम पूछ सकते हो। अब बताओ गीता का भगवान कौन? ज्ञान का सागर कौन है? कृष्ण को तो कह नहीं सकेंगे। सर्वशक्तिवान सुख-शान्ति का सागर, लिबरेटर गाइड कौन है? पहले2 तो लिखाना

PDF compression, OCR, web optimization

6.2.91 -5-

बाहिर प्रोव लेना चाहिए। सबसे नहीं लेनी चाहिए। चिड़ियाओं का आवाज हुआ। देखो- कितना झगड़ती हैं। इस समय सारी दुनिया में लड़ाई झगड़ा ही है। मनुष्य भी आपस में लड़ते रहते हैं। मनुष्य में ही समझने की बुद्धि है। देवतायें भी मनुष्य में गाये जाते हैं। जानवरों की तो बात ही नहीं। यह है विषय वैतरणी। पैरेडाइज मनुष्यों के लिए ही कहा जाता है। कलियुग में है आसुरी सम्प्रदाय, सतयुग में है दैवी सम्प्रदाय। अभी तुमको इस सारे कान्ट्रास्ट का पता है। तुम सिद्ध कर बता सकते हो। सीढ़ी में भी बड़ा क्लीयर दिखाया हुआ है नीचे हैं पतित और ऊपर हैं पावन। इनमें बड़ा क्लीयर है। सीढ़ी ही मुख्य है- उतरती कला और चढ़ती कला। सीढ़ी का चित्र जब बनाते हैं तो मनन्म बच्चों को रात-दिन विचार सागर मंथन करना चाहिए क्या2 इनमें कर्तव्य खड़ा कर सकें। यह है सबसे अच्छी चीज। क्या2 इनमें खड़ा करें। सीढ़ी बड़ी भी बन सकती है। यह सीढ़ी बड़ी अच्छी है, इनमें ऐसा क्या डालें जो मनुष्य बिल्कुल अच्छी रीति समझ जायें। ड्रामा में यह पतित दुनिया है। पावन दुनिया स्वर्ग था। यह सब पतित हैं। पावन एक भी हो नहीं सकता। सीढ़ी बड़ी अच्छी है। रात-दिन यही ख्यालात चलना चाहिए- आत्म अभिमानी बच्चा लिखा है यह चित्र बनाओ। बाबा कहते हैं भल विचार सागर मंथन कर कोई भी चित्र बनाओ परन्तु सीढ़ी बड़ी अच्छी बननी चाहिए। इस पर बहुत अच्छा समझा सकते हैं। 84 जन्म पूरे कर फिर पहला नम्बर जन्म लिया है फिर उतरती कला से चढ़ती कला में जाना पड़े। इसमें हर एक का विचार चलना चाहिए। नहीं तो सर्विस कैसे कर सकेंगे। चित्रों से समझाना बहुत सहज होता है। सतयुग के बाद सीढ़ी उतरनी होती है। यह भी बच्चे जानते हैं- हम पार्टधारी एक्टर्स हैं। यहाँ से ट्रांसफर हो सीधा सतयुग में नहीं जाते, शान्तिधाम में जाना है। डॉ तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो अपने को पार्टधारी समझते हैं इस ड्रामा में। दुनिया में ऐसा कोई कह न सके कि हम पार्टधारी हैं। हम लिखते भी हैं कि पार्टधारी एक्टर्स होते हुए भी ड्रामा के क्रियेटर, ड्रामा डायरेक्टर आदि मध्य अन्त को नहीं जानते तो यह फर्स्टक्लास ब्रेकमड़ हैं लिखने में हर्जा कोई नहीं है। यह तो भगवानुवाच है। शिव भगवानुवाच ब्रह्मा तन द्वारा। ज्ञान सागर वह निराकार है, उनको अपना शरीर है नहीं। बड़ी समझने और समझाने की युक्तियाँ हैं। तुम बच्चों को बड़ा नशा रहना चाहिए, हम किसकी गलानी थोड़ेही करते हैं। यह तो राइट बात है ना। तुमको बड़ा नशा चढ़ना चाहिए। जो भी बड़े2 हैं उन सबके चित्र तुम डाल सकते हो। सीढ़ी कोई को भी दिखला सकते हो। अच्छा- मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- 1। भारत में सच्चे सुख-शान्ति की स्थापना करने के वा भारत का स्वर्ग बनाने के लिए आपस में सेमीनार करना है, श्रीमत पर भारत की ऐसी सेवा करनी है। 2। सर्विस में उन्नति करने वा सर्विस से ऊँच पद पाने के लिए देही अभिमानी रहने की मेहनत करनी है। ज्ञान का विचार सागर मंथन करना है।

सिकीलधी को शुभ बधाइयां 31.1.91

आज त्रिमूर्ति शिवजयन्ती सो सर्वोत्तम संगमयुग की शुभ घड़ियों में सर्व ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकारी बच्चों को बहुत2 अपार खुशियों भरी अविनाशी बधाइयां 2। जन्मों के लिए भी बाबा देता है, जिन बधाइयों में ही सर्व वरदाता बाप के वरदान समाये हुए हैं और हम सब बच्चे फिर बहुत2 प्यार से प्राणों से प्यारे बापदादा की बधाइयां व ग्रीटिंग्स देते हैं। जो इनबॉक्स सभी के लिए आज यह बधाइयां भेज रहे हैं। साथ में सर्व दादियां, बड़े भाई, मधुबन निवासी बहू, परिवार की भी याद स्वीकार हो।

देखो आज प्यारे बाबा के रूद्र यज्ञ में बहुत2 ईश्वरीय शक्ति के वायुमण्डल के अन्दर सारे विश्व को परिवर्तन करने का यह कार्य (कान्फ्रेन्स का) शुरू हो रहा है। यह भी आवाज में आये, आपस के फेर चक्र के कनेक्शन से शान्ति की किरणें सारे विश्व में फैलती रहेंगी। अच्छा- कान्फ्रेन्स का समाचार तो फिर मिलता ही रहेगा। सभी को बहुत2 याद...

ओमशान्ति

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

11-8-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम गैरन्टी करते हो कि हम अपने ही योगबल से इस भारत को स्वर्ग बनायेंगे, वहाँ एक धर्म, एक राज्य होगा"

प्रश्न:- माया के किस विघ्न से सेफ रहने वाले बहुत अच्छी कमाल कर सकते हैं?

उत्तर:- माया का सबसे बड़ा विघ्न है – देह-अभिमान में लाकर एक-दो के नाम रूप में फँसाना। जो बच्चे इस विघ्न से सेफ रहते, माया के धोखे से बचे रहते, वे बहुत कमाल कर दिखाते हैं। उनकी बुद्धि में सर्विस के नये-नये ख्यालात चलते रहते हैं। सर्विस में उन्नति तब होगी जब देही-अभिमानी होंगे।

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों को बाप आये हैं श्रीमत देने। यह तो बच्चे जानते हैं कि थोड़े समय के अन्दर ड्रामा प्लैन अनुसार सारा कार्य होना है। हम रावणपुरी को विष्णुपुरी बनाते हैं। अब बाप भी गुप्त तो पढ़ाई भी गुप्त है। सेन्टर्स तो बहुत हैं। छोटे बड़े गांव में सेन्टर्स हैं और बच्चे भी बहुत हैं। और भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जायेंगे। लिटरेचर में भी लिखते हैं कि हम इस भारत भूमि को स्वर्ग बनाकर छोड़ेंगे। तुमको यह भारत भूमि बहुत प्यारी है क्योंकि तुम जानते हो कि यह भारत ही स्वर्ग था। उनको 5 हजार वर्ष हुए। भारत बहुत शानदार था। तुम ब्रह्मा मुख वंशावली बच्चों को ही यह नॉलेज है। इस भारत को श्रीमत पर स्वर्ग बनाना पड़े। सबको रास्ता बताना है और कोई खिटखिट की यहाँ बात नहीं है। आपस में बैठ राय करनी चाहिए कि इन चित्रों द्वारा ऐसी क्या एडवरटाइज़ करें जो अखबार में भी यह चित्र डालें। आपस में इस पर सेमीनार करना चाहिए। जैसे उस गवर्मेन्ट के लोग आपस में मिलते हैं, राय करते हैं तो भारत को हम कैसे सुधारें। यह जो इतने मतभेद हो गये हैं, उनको आपस में मिलकर ठीक करें और भारत में सुख-शान्ति कैसे स्थापन हो। ऐसे तुम भी रूहानी पाण्डव गवर्मेन्ट हो, यह बड़ी ईश्वरीय गवर्मेन्ट है। पतित-पावन बाप ही पतित बच्चों को पावन बनाकर पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं। यह राज़ तुम बच्चे जानते हो। मुख्य है ही भारत का आदि सनातन देवी-देवता धर्म। यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। रूद्र कहा जाता है शिवबाबा को। अब तुमको बाप ने आकर जगाया है, तुमको फिर औरों को जगाना है। ड्रामा प्लैन अनुसार तुम जागते रहते हो। अब तक जिस-जिस ने जैसा-जैसा पुरुषार्थ किया है, उतना ही कल्प पहले भी किया था। तुम्हारी रूहानी युद्ध है। कभी माया का जोर हो जाता है, कभी ईश्वर का। कभी-कभी तो सर्विस अच्छी तेजी से चलती है। कभी कई बच्चों में माया के विघ्न पड़ जाते हैं। माया एकदम बेहोश कर देती है। लड़ाई का मैदान तो है ना। माया, राम की सन्तान को बेहोश कर देती है। लव-कुश की कहानी भी है ना। राम के दो बच्चे दिखाये हैं। यहाँ तो बाबा के ढेर बच्चे हैं। इस समय सब मनुष्य कुम्भकरण की नींद में सोये हुए हैं। वे यह भी नहीं जानते कि परमपिता परमात्मा आया है – बच्चों को वर्सा देने। बाप भारत में ही आते हैं। यह बात बिल्कुल ही भूल गये हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CV

भारतवासी ही स्वर्ग के मालिक थे, इसमें कोई शक नहीं। परमपिता परमात्मा का जन्म भी यहाँ होता है तब तो शिव जयन्ती भारत में मनाते हैं। तो जरुर उसने कुछ आकर किया होगा। बुद्धि कहती है कि जरुर बाप ने आकर स्वर्ग की स्थापना की होगी। प्रेरणा से थोड़ेही स्थापना करेंगे। यहाँ तो तुम बच्चों को राजयोग सिखाया जाता है, याद की यात्रा सिखाई जाती है। प्रेरणा में कोई आवाज नहीं होता। समझते हैं शंकर प्रेरणा से विनाश करता, परन्तु इसमें प्रेरणा की बात नहीं है। तुम समझ गये हो कि ड्रामा में उन्हों का पार्ट ही है – मूसल बनाना। वे विनाश अर्थ निमित्त बने हुए हैं। प्रेरणा शास्त्रों का अक्षर है, इसमें प्रेरणा की तो b) बात नहीं है। शंकर तो सूक्ष्मवतन में है। ड्रामा अनुसार तो विनाश होना ही है। गाया हुआ है महाभारत लड़ाई में यह मूसल आदि काम में आये थे। जो पास्ट हो गया है वह फिर रिपीट होना है। तुम गैरन्टी करते हो कि हम योगबल से स्वर्ग की स्थापना करेंगे, वहाँ एक धर्म c) होगा। तो दूसरे सब धर्म कहाँ होंगे? जरुर विनाश हो जायेंगे। यह समझने की बात है। गाया हुआ है – ब्रह्मा द्वारा स्थापना विष्णु द्वारा पालना ना ठीक है। लेकिन शंकर का तो शिव के साथ मिला दिया है, यह रांग है। शिव-शंकर कह देते हैं क्योंकि शंकर तो कोई काम नहीं करते तो शिव में मिला दिया है। परन्तु शिवबाबा कहते हैं मुझे तो बहुत काम करना पड़ता है। सबका पावन बनाना पड़ता है। मैं इस ब्रह्मा तन में प्रवेश कर इस साकार द्वारा स्थापना का कार्य कराता हूँ। शंकर का तो कोई पार्ट है नहीं। शिव की पूजा होती है। शिव ही कल्याणकारी झोली भरने वाला है। शिव परमात्माए नमः कहते हैं ना। यह ब्रह्मा भी प्रजापिता ठहरा। ब्रह्मा से विष्णु, विष्णु से ब्रह्मा यह तो बड़ा गुह्य बातें है। यह सिर्फ तुम d) बच्चे ही जानते हो। सेन्सीबुल बच्चों की बुद्धि में ज्ञान झट समझ में आ जाता है। मनुष्य को e) कुछ भी समझ नहीं है कि पतित-पावन बाप कब आयेंगे! अब तो कलियुग का अन्त है। अगर कहते कि कलियुग के अन्त में 40 हजार वर्ष पड़े हैं, तो अभी कितना और पतित बनेंगे? कितना दुःख सहन करेंगे? कलियुग में सुख तो होगा नहीं। कुछ भी न जानने के कारण बिचारे घोर अन्धियारे में पड़े हैं।

तुम बच्चों को आपस में मिलकर राय करनी चाहिए कि कैसे सर्विस को बढ़ायें। बाप प्लैन तो बताते रहते हैं फिर बच्चों को आपस में मिलना है। चित्रों पर अच्छी रीति समझाना है। यह भी ड्रामा अनुसार चित्र बनते जा रहे हैं। बच्चे जानते हैं कि जो-जो समय पास होता जाता है, हूबहू ड्रामा चलता रहता है। बच्चों की अवस्थायें तो कब ऊपर, कब नीचे, यह चलता रहेगा। बाबा भी साक्षी होकर देखता है। कभी-कभी बच्चों पर ग्रहचारी बैठती है तो उनको मिटाने के लिए प्रयत्न कराते हैं। बाबा घड़ी-घड़ी कहते हैं कि बाप को याद करो। लेकिन देह-अभिमान में आ जाते हैं इसलिए ठोकरें खाते हैं, इसमें देही-अभिमानी बनना पड़े। परन्तु बच्चों में देह-अभिमान बहुत है। तुम देही-अभिमानी बनो तो बाप की याद रहे फिर सर्विस की उन्नति भी होती रहेगी। जिनको ऊंच पद पाना है, वह सदैव सर्विस में लगे रहेंगे। तकदीर में अगर नहीं है तो तदबीर भी नहीं करेंगे। खुद कहते हैं कि बाबा हमको

Compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

धारणा नहीं होती है। बुद्धि में नहीं बैठता। धारणा अगर नहीं होती तो खुशी भी नहीं रहती है। जिनको धारणा होती है तो खुशी भी रहती है। समझते हैं कि शिवबाबा आया हुआ है। बाप कहते हैं– बच्चे तुम अच्छी रीति समझकर फिर औरों को भी समझाओ। कोई तो सर्विस में लग जाते हैं। पुरुषार्थ करते रहते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि जो-जो सेकेण्ड बीतता है वह ड्रामा में नूँध है फिर ऐसे ही रिपीट होता है। बच्चों को ही समझाया जाता है कि बाहर भाषण करते समय तो अनेक प्रकार के मनुष्य आते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि सभी वेद, शास्त्र, गीता आदि पर ही भाषण करते हैं, उनको यह पता थोड़ेही है कि यहाँ ईश्वर अपना और इस रचना के आदि-मध्य-अन्त का रहस्य समझाते हैं। चित्रों में कितना अच्छी तरह दिखाया है कि परमात्मा कौन है! यह बातें प्रोजेक्टर पर तो समझा नहीं सकते। प्रदर्शनी में चित्र भी सामने खड़े हैं और फिर तुम समझाकर पूछ भी सकते हो कि अब बताओ कि गीता का भगवान कौन है? ज्ञान का सागर कौन है? पवित्रता सुख-शान्ति का सागर, लिबरेटर गाइड कौन है? कृष्ण के लिए तो कह नहीं सकेंगे। परमात्मा की महिमा अलग है। पहले लिखाना भी चाहिए, प्रोब लेना चाहिए। सबसे सही भी लेनी है।

(हाल में चिड़िया लड़ रही हैं) इस समय सारी दुनिया में लड़ाई-झगड़ा ही है। सब आपस में लड़ते रहते हैं। 5 विकार भी मनुष्य में गाये जाते हैं। जानवरों की तो बात नहीं है। विशश वर्ल्ड और वाइसलेस वर्ल्ड मनुष्यों के लिए गाया हुआ है। कलियुग में है आसुरी सम्प्रदाय, सतयुग में है दैवी सम्प्रदाय। मनुष्य इतने तमोप्रधान बुद्धि हैं जो बिल्कुल समझते नहीं कि हम ही आसुरी सम्प्रदाय हैं। देवताओं के आगे जाकर गाते भी हैं हम ही नीच पापी हैं, हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। तुम तो उन्हों को सिद्ध कर बता सकते हो। सीढ़ी के चित्र में बड़ा क्लीयर है। दिखाया हुआ है कि कैसे चढ़ती कला है फिर उतरती कला है। भारतवासियों के लिए मुख्य है सीढ़ी का चित्र। यह है सबसे अच्छी चीज़। इस चित्र पर बहुत अच्छा समझा सकते हो। 84 जन्म पूरे कर फिर पहला नम्बर जन्म लेना है फिर उतरती कला फिर चढ़ती कला में जाना पड़े। हर एक का विचार चलना चाहिए कि सबको रास्ता कैसे बतायें। ख्यालात नहीं चलेंगे तो सर्विस कैसे करेंगे। चित्रों पर समझाना बहुत सहज होता है। सतयुग के बाद सीढ़ी उतरनी ही है। बच्चे जानते हैं कि अब हम ट्रांसफर हो रहे हैं। लेकिन सीधा सतयुग में नहीं जाते। पहले शान्तिधाम में जाना है। तुम जानते हो हम पार्टधारी हैं। बाकी तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो अपने को पार्टधारी समझते हैं – इस ड्रामा के। दुनिया में ऐसा कोई नहीं कह सकते कि हम पार्टधारी हैं। हम लिखते भी हैं कि हर एक मनुष्य मात्र इस बेहद ड्रामा के एक्टर्स होते हुए भी ड्रामा के मुख्य एक्टर्स, डायरेक्टर और ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं तो वह बेसमझ है। इस लिखने में कोई हर्जा नहीं है। एक कान से सुन दूसरे से निकाल नहीं देना चाहिए। सर्विस, सर्विस और सर्विस। बाबा जानते हैं कि बच्चों पर कभी ग्रहचारी भी बैठती है। जब ग्रहचारी बैठती तो कितना नुकसान हो जाता है, वह बाप जानते हैं। साहूकार गरीब बन पड़ते हैं। कारण तो होता है ना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION

बहुतों को बाबा समझाते भी रहते हैं – बच्चे नाम-रूप में कभी नहीं फँसना। नहीं तो माया ऐसी है जो नाक से पकड़ खड्डे में डाल देगी। माया बड़ा धोखा दे देगी। आशिक माशूक यहाँ नहीं बनना है। आशिक माशूक कोई विकार के लिए बनते हैं, दूसरे सिर्फ रूप पर फिदा होते हैं। तुम जानते हो सेन्टर्स पर भी ऐसे माया के विघ्न बहुत पड़ते हैं, एक-दो के नाम-रूप में फंस जाते हैं। माया ऐसी प्रबल है जो माता, माता के नाम-रूप में, कन्या, कन्या के नाम-रूप में भी फँस पड़ती है। पुरूषार्थ करते हुए भी माया एकदम पकड़ लेती है। इसलिए बाबा सावधानी देते हैं कि बच्चे माया बहुत फँसाने की कोशिश करेगी, लेकिन तुमको फँसना नहीं है। देह-अभिमान में नहीं आना चाहिए। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। माया के धोखे से बचते रहना है। तुम बच्चों को बाप गुल-गुल (फूल) बनाने आये हैं, तुम्हें किसी बात में संशय नहीं आना चाहिए। अगर दिल में संशय आया तो सर्विस अच्छी तरह कर नहीं सकेंगे। अन्दर घुटका खाते रहेंगे। हिम्मत रखनी चाहिए। टाईम बहुत थोड़ा है। बाबा की मुरली सुनेंगे तो उत्साह में आयेंगे। आत्मप्रकाश बच्चा ठीक रीति चित्रों तरफ अटेन्शन दे रहा है। बाम्बे वालों के भी दिमाग में आना चाहिए। मुख्य चित्र को पहले बनाना पड़े। जांच करनी चाहिए, बाबा डायरेक्शन देते रहते हैं कि कैसे चित्रों में उन्नति होनी चाहिए। ऐसी कोई युक्ति रचो जो सीढ़ी का चित्र एवेड्रन पर रखा जाए। यह चित्र देखकर सब खुश होंगे। आखिर समझेंगे कि इनको मत देने वाला कौन है। तो बच्चों को बहुत नशा चढ़ना चाहिए। अच्छा–मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडनाईट। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- तुम बच्चे लड़ाई के मैदान में हो, माया रावण से तुम्हारी युद्ध है। माया बहुत विघ्न डालती है। बच्चों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

२- हर एक को अपनी उन्नति के लिए विचार करना है। चित्रों पर कैसे समझायें, सर्विस को कैसे बढ़ायें। चित्रों में ऐसा क्या डालें जो मनुष्य सहज समझ जाएं।

वरदान:- सदा अपने पवित्र स्वरूप में स्थित रह गुण रूपी मोती चुगने वाले होलीहंस भव

आप होली हंसों का स्वरूप है पवित्र और कर्तव्य है सदैव गुणों रूपी मोती चुगना। अवगुण रूपी कंकड कभी भी बुद्धि में स्वीकार न हो। लेकिन इस कर्तव्य को पालन करने के लिए सदैव एक आज्ञा याद रहे कि न बुरा सोचना है, न बुरा सुनना है, न बुरा देखना है, न बुरा बोलना है.... जो इस आज्ञा को सदा स्मृति में रखते हैं वह सदा सागर के किनारे पर रहते हैं। हंसों का ठिकाना है ही सागर।

स्लोगन:-

चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप में रहना–यही बड़ा बाप की दिल-पसन्द गिफ्ट है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नहा फँसना। मैं आत्मा हूँ और एक बाप जो विदेही है, उनसे ही प्यार रखना है। यहाँ फँसना है। कोई भी देह में ममत्व न हो। ऐसे नहीं घर में बैठे भी वह ज्ञान देने वाली याद आती रहे। बड़ी मीठी है, बहुत अच्छा समझाती है। अरे मीठा तो ज्ञान है। मीठी आत्मा है। शरीर थोड़ेही मीठा है। बात करने वाली भी आत्मा है। (कभी भी शरीर पर आशिक नहीं होना है। इसलिए
a) बाप कहते हैं बाबा का फोटो आदि भी नहीं निकालो। बाबा को तो बहुत ख्याल होता है- फोटो न रखो। चित्रों में तो समझाने लिए फोटो देना पड़ता है, वही काफी है। बाकी किसको नहीं रखना चाहिए। अगर इनको।ब्रह्मा को।याद करेंगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। भल समझते हो- यह रथ है। परन्तु शिवबाबा को छोड़ रथ को ही याद करते रहेंगे तो कुछ नहीं मिलेगा। और ही पाप आत्मा बन पड़ेंगे। शिवबाबा को छोड़ फोटो को याद किया तो मर पड़ेंगे। कोई भी चित्र नहीं रखना चाहिए। नहीं तो उसमें फँस पड़ेंगे।) आजकल तो भक्ति मार्ग बहुत है। आनन्दमई मॉ को भी मॉ मॉ करते याद करते रहते हैं। अच्छा बाप कहाँ है? मॉ बाप बिगर बच्चा कहाँ से आये। वर्सा बाप से मिलना है या मॉ से? मॉ को भी पैसा कहाँ से मिलेगा? सिर्फ मॉ2 कहने से जरा भी पाप नहीं कटेंगे। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। नाम रूप में नहीं फँसना है और ही पाप हो जायेगा। क्योंकि बाप का नाफरमानबरदार बनते हो। बहुत बच्चे भूले हुए हैं। बाप समझाते हैं मैं तुम बच्चों को लेने आया हूँ सो जरूर ले जाऊँगा। इसलिए मेरे को याद करो। तुम्हारे पाप कटेंगे। भक्ति मार्ग में बहुतों को याद करते आये हो। परन्तु बाप बिगर कोई काम कैसे होगा। बाप थोड़ेही कहते हैं मॉ को याद करो। बाप तो कहते हैं मुझे याद करो। पतित पावन मैं हूँ। बाप के डायरेक्शन पर चलो। तुम भी बाप के डायरेक्शन पर औरों को समझाते रहो। तुम थोड़ेही पतित पावन ठहरे। याद एक को ही करना है। हमारा तो एक बाप दूसरा न कोई। बाप आप पर ही वारी जायेंगे। वारी जाना तो शिवबाबा पर ही है। और सबकी याद छूट जानी चाहिए। भक्ति मार्ग में तो बहुतों को याद करते रहते हैं। यहाँ तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। फिर भी कोई अपनी चलाते हैं तो क्या गति सद्गति होगी। मूँझ पड़ते हैं। बिन्दी को कैसे याद करें। अरे तुमको अपनी आत्मा याद है ना कि मैं आत्मा हूँ। वह भी बिन्दी रूप ही है। तो तुम्हारा बाप भी बिन्दी है। बाप से वर्सा मिलता है। मॉ तो फिर भी देहधारी हो जाती है। तुमको विदेही से ही वर्सा मिलना है इसलिए और सब बातें छोड़ एक से बुद्धियोग लगाना है। इनको
b) ।ब्रह्मा को। याद से एक भी पाप नहीं कटेगा। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

श्रीमत:- ।1। शरीर का भान खत्म करने के लिए चलते फिरते अभ्यास करो-जैसे कि इस शरीर से मरे हुए हैं, न्यारे हैं। शरीर में है ही नहीं। बिगर शरीर आत्मा को देखो।
।2। कभी भी किसी के शरीर पर तुम्हें आशिक नहीं होना है। एक विदेही बाप से ही प्यार रखना है। एक से ही बुद्धियोग लगाना है।

फरिश्ता :- 74. अन्तिम विकराल दृश्य के समय उस घड़ी के पेपर में पास होने के लिए फरिश्ता बनो, उड़ता पंछी बनो। अभ्यास करो-साकार शरीर में रहते आकारी रूप फरिश्ता हूँ। स्थूल शरीर का भान बिल्कुल निकाल दो।

75. बापदादा से स्नेह है तो स्नेह का सबूत है समान बनो। बाप से स्नेह रखना माना आत्मा स्वरूप में लाइट रूप में स्थित होना और दादा से स्नेह रखना माना फरिश्ता बनना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION

20-2-04 प्रात:मुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

"मीठे बच्चे – इस शरीर से जीते जी मरने के लिए अभ्यास करो–'मैं भी आत्मा, तुम भी आत्मा'–इस अभ्यास से ममत्व निकल जायेगा"

प्रश्न:- सबसे ऊंची मंज़िल कौन-सी है? उस मंज़िल को प्राप्त करने वालों की निशानी क्या होगी?

उत्तर:- सभी देहधारियों से ममत्व टूट जाए, सदा भाई-भाई की स्मृति रहे—यही है ऊंची मंज़िल। इस मंज़िल पर वही पहुँच सकते हैं जो निरन्तर देही-अभिमानी बनने का अभ्यास करते हैं। अगर देही-अभिमानी नहीं तो कहीं न कहीं फँसते रहेंगे या अपने शरीर में या किसी न किसी मित्र सम्बन्धी के शरीर में। उन्हें कोई की बात अच्छी लगेगी या कोई का शरीर अच्छा लगेगा। ऊंची मंज़िल पर पहुँचने वाले जिस्म (देह) से प्यार कर नहीं सकते। उनका शरीर का भान टूटा हुआ होगा।

ओम् शान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को कहते हैं–देखो, मैं तुम सभी बच्चों को आपसमान बनाने आया हूँ। अब बाप आप समान बनाने कैसे आयेंगे? वह है निराकार, कहते हैं मैं निराकार हूँ तुम बच्चों को आपसमान अर्थात् निराकारी बनाने, जीते जी मरना सिखलाने आया हूँ। बाप अपने को भी आत्मा समझते हैं ना। इस शरीर का भान नहीं है। शरीर में रहते हुए भी शरीर का भान नहीं है। यह शरीर उनका तो नहीं है ना। तुम बच्चे भी इस शरीर का भान निकाल दो। तुम आत्माओं को ही मेरे साथ चलना है। यह शरीर जैसे मैंने लोन लिया है, वैसे आत्मायें भी लोन लेती हैं पार्ट बजाने लिए। तुम जन्म-जन्मान्तर शरीर लेते आये हो। अब जैसे मैं जीते जी इस शरीर में हूँ परन्तु हूँ तो न्यारा अर्थात् मरा हुआ। मरना शरीर छोड़ने को कहा जाता है। तुमको भी जीते जी इस शरीर से मरना है। मैं भी आत्मा, तुम भी आत्मा। तुमको भी मेरे साथ चलना है या यहाँ ही बैठना है? तुम्हारा इस शरीर में जन्म-जन्मान्तर का मोह है। जैसे मैं अशरीरी हूँ, तुम भी जीते जी अपने को अशरीरी समझो। हमको अब बाबा के साथ जाना है। जैसे बाबा का यह पुराना शरीर है, तुम आत्माओं का भी यह पुराना शरीर है। पुरानी जुत्ती को छोड़ना है। जैसे मेरा इसमें ममत्व नहीं है, तुम भी इस पुरानी जुत्ती से ममत्व निकालो। तुमको ममत्व रखने की आदत पड़ी हुई है। हमको आदत नहीं है। मैं जीते जी मरा हुआ हूँ। तुमको भी जीते जी मरना है। मेरे साथ चलना है तो अब यह प्रैक्टिस करो। शरीर का कितना भान रहता है, बात मत पूछो! शरीर रोगी हो जाता है तो भी आत्मा उसको छोड़ती नहीं है, इससे ममत्व निकालना पड़े। हमको तो बाबा के साथ जाना जरूर है। अपने को शरीर से न्यारा समझना है। इसको ही जीते जी मरना कहा जाता है। अपना घर ही याद रहता है। तुम जन्म-जन्मान्तर से इस शरीर में रहते आये हो इसलिए तुमको मेहनत करनी पड़ती है। जीते जी मरना पड़ता है। मैं तो इसमें आता ही टैम्प्रेरी हूँ। तो मरकर चलने से अर्थात् अपने को आत्मा समझकर चलने से कोई भी देहधारी में ममत्व

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नहीं रहेगा। अक्सर करके किसी न किसी का किसी में मोह हो जाता है। बस, उनको देखने बिगर रह नहीं सकते। यह देहधारी की याद एकदम उड़ा देनी चाहिए क्योंकि बहुत बड़ी मंज़िल है। खाते-पीते जैसेकि इस शरीर में हूँ ही नहीं। यह अवस्था पक्की करनी है तब 8 रत्नों की माला में आ सकते हैं। मेहनत बिगर थोड़ेही ऊंच पद मिल सकता है। जीते जी देखते हुए समझें कि मैं तो वहाँ का रहने वाला हूँ। जैसे बाबा इसमें टैम्प्रेरी बैठा है, ऐसे अब हमको भी घर जाना है। जैसे बाबा का ममत्व नहीं है, वैसे हमको भी इसमें ममत्व नहीं रखना है। बाप को तो इस शरीर में बैठना पड़ता है तुम बच्चों को समझाने लिए।

तुमको अब वापिस चलना है इसलिए कोई देहधारी में ममत्व न रहे। यह फलानी बहुत अच्छी है, मीठी है—आत्मा की बुद्धि जाती है ना। बाप कहते हैं शरीर को नहीं, आत्मा को देखना है। शरीर को देखने से तुम फँस मरेंगे। बड़ी मंज़िल है। तुम्हारा भी जन्म-जन्मान्तर का पुराना ममत्व है। बाबा का ममत्व नहीं है तब तो तुम बच्चों को सिखलाने आया हूँ। बाप खुद कहते हैं मैं तो इस शरीर में नहीं फँसता हूँ, तुम फँसे हुए हो। मैं तुमको छुड़ाने आया हूँ। तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुए, अब शरीर से भान निकालो। देही-अभिमानी होकर न रहने से तुम कहीं न कहीं फँसते रहेंगे। कोई की बात अच्छी लगेगी, कोई का शरीर अच्छा लगेगा, तो घर में भी उनकी याद आती रहेगी। जिस्म पर प्यार होगा तो हार खा लेंगे। ऐसे बहुत खराब हो जाते हैं। बाप कहते हैं स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझो। यह भी आत्मा, हम भी आत्मा। आत्मा समझते-समझते शरीर का भान निकलता जायेगा। बाप की याद से ही विकर्म भी विनाश होंगे। इस बात पर तुम अच्छी तरह से विचार सागर मंथन कर सकते हो। विचार सागर मंथन करने बिगर तुम उछल नहीं सकेंगे। यह पक्का होना चाहिए कि हमको बाप के पास जाना है जरूर। मूल बात है याद की। 84 का चक्र पूरा हुआ फिर शुरू होना है। इस पुरानी देह से ममत्व नहीं हटाया तो फँस पड़ेंगे या अपने शरीर में या कोई मित्र-सम्बन्धी के शरीर में। तुमको तो किससे भी दिल नहीं लगानी है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। हम आत्मा भी निराकार, बाप भी निराकार, आधाकल्प तुम भक्ति मार्ग में बाप को याद करते आये हो ना। 'हे प्रभू' कहने से शिवलिंग ही सामने आयेगा। कोई देहधारी को 'हे प्रभू' कह न सके। सभी शिव के मन्दिर में जाते हैं, उनको ही परमात्मा समझ पूजते हैं। ऊंचे से ऊंचा भगवान् एक ही है। ऊंचे से ऊंचा अर्थात् परमधाम में रहने वाला। भक्ति भी पहले अव्यभिचारी होती है एक की। फिर व्यभिचारी बन जाती है। तो बाप बार-बार बच्चों को समझाते हैं कि तुमको ऊंच पद पाना है तो यह प्रैक्टिस करो। देह का भान छोड़ो। सन्यासी भी विकारों को छोड़ते हैं ना। आगे तो सतोप्रधान थे अभी तो वह भी तमोप्रधान बन पड़े हैं। सतोप्रधान आत्मा कशिश करती है, अपवित्र आत्माओं को खींचती है क्योंकि आत्मा पवित्र है। भल पुनर्जन्म में आते हैं तो भी पवित्र होने के कारण खींचते हैं। कितने उन्हों के फालोअर्स बनते हैं। जितनी पवित्रता की जास्ती ताकत,

PDF compression, OCR, web optimization using a trial version of CVISION PDFCompressor

उतने ज्यादा फालोअर्स। यह बाप तो है ही एवरप्योर और है भी गुप्त। डबल है ना, ताक़त सारी उनकी है। इनकी (ब्रह्मा की) नहीं। शुरू में भी तुमको उसने कशिश की। इस ब्रह्मा ने नहीं क्योंकि वह तो एवरप्योर है। तुम कोई इनके पिछाड़ी नहीं भागे। यह कहते हैं मैं तो सबसे जास्ती पूरे 84 जन्म प्रवृत्ति मार्ग में रहा। यह तो तुमको खींच न सके। बाप कहते हैं मैंने तुमको खींचा। भल सन्यासी पवित्र रहते हैं। परन्तु मेरे जैसा पवित्र तो कोई भी होगा नहीं। वह तो सब भक्ति मार्ग के शास्त्र आदि सुनाते हैं। मैं आकर तुमको सब वेदों शास्त्रों का सार सुनाता हूँ। चित्र में भी दिखाया है विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला फिर ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दिखाये हैं। अब विष्णु तो ब्रह्मा द्वारा शास्त्रों का राज़ सुनाते नहीं हैं। वो तो विष्णु को भी भगवान् समझ लेते हैं। बाप समझाते हैं मैं इन ब्रह्मा द्वारा सुनाता हूँ। मैं विष्णु द्वारा थोड़ेही समझाता हूँ! कहाँ ब्रह्मा, कहाँ विष्णु। ब्रह्मा सो विष्णु बनते हैं फिर 84 जन्म के बाद यह संगम होगा। यह तो नई बातें हैं ना। कितनी वन्डरफुल बातें हैं समझाने की।

अब तो बाप कहते हैं—बच्चे, जीते जी मरना है। तुम शरीर में जीते हो ना। समझते हो हम आत्मा हैं, हम बाबा के साथ चले जायेंगे। यह शरीर आदि कुछ भी ले नहीं जाना है। अब बाबा आया है, कुछ तो नई दुनिया में ट्रांसफर कर दें। मनुष्य दान-पुण्य आदि करते हैं दूसरे जन्म में पाने के लिए। तुमको भी नई दुनिया में मिलना है। यह भी करेंगे वही जिन्होंने कल्प पहले किया होगा। कम जास्ती कुछ भी होगा नहीं। तुम साक्षी होकर देखते रहेंगे। कुछ कहने की भी दरकार नहीं रहती। फिर भी बाप समझाते हैं जो कुछ करते हैं तो उसका भी अहंकार नहीं आना चाहिए। हम आत्मा यह शरीर छोड़कर जायेंगे। वहाँ नई दुनिया में जाकर नया शरीर लेंगे। गाया भी जाता है राम गयो रावण गयो..... रावण का परिवार कितना बड़ा है। तुम तो मुट्ठी भर हो। यह सारा रावण सम्प्रदाय है। तुम्हारा राम सम्प्रदाय कितना थोड़ा होगा—9 लाख। तुम धरनी के सितारे हो ना। माँ-बाप और तुम बच्चे। तो बाप बार-बार बच्चों को समझाते हैं कि मरजीवा बनने की कोशिश करो। अगर किसको देखकर बुद्धि में आता है - यह बहुत अच्छी है, बहुत मीठा समझाती है, यह भी माया का वार होता है, माया ललचा देती है। उनकी तकदीर में नहीं है तो माया सामने आ जाती है। कितना भी समझाओ तो गुस्सा लगेगा। यह नहीं समझते हैं कि यह देह-अभिमान ही काम करा रहा है। अगर ज्यादा समझाते हैं तो टूट पड़ते हैं। इसलिए प्यार से चलाना पड़ता है। किससे दिल लग जाता है तो बात मत पूछो, पागल हो जाते हैं। माया एकदम बेसमझ बना देती है। इसलिए बाप कहते हैं कभी कोई के नाम-रूप में नहीं फँसना। मैं आत्मा हूँ और एक बाप जो विदेही है, उनसे ही प्यार रखना है। यही मेहनत है। कोई भी देह में ममत्व न हो। ऐसे नहीं, घर में बैठे भी वह ज्ञान देने वाली याद आती रहे—बड़ी मीठी है, बहुत अच्छा समझाती है। अरे, मीठा तो ज्ञान है। मीठी आत्मा है। शरीर थोड़ेही मीठा है। बात करने वाली भी आत्मा है। कभी भी शरीर पर आशिक नहीं होना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

a) आजकल तो भक्ति मार्ग बहुत है। आनन्दमई माँ को भी माँ-माँ करते याद करते रहते हैं। अच्छा, बाप कहाँ है? वर्सा बाप से मिलना है या माँ से? माँ को भी पैसा कहाँ से मिलेगा? सिर्फ माँ-माँ कहने से जरा भी पाप नहीं कटेंगे। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। नाम रूप में नहीं फँसना है, और ही पाप हो जायेगा क्योंकि बाप का नाफ़रमानबरदार बनते हो। बहुत बच्चे भूले हुए हैं। बाप समझाते हैं मैं तुम बच्चों को लेने आया हूँ सो जरूर ले जाऊंगा, इसलिए मेरे को याद करो। एक मुझे याद करने से ही तुम्हारे पाप कटेंगे। भक्ति मार्ग में बहुतों को याद करते आये हो। परन्तु बाप बिगर कोई काम कैसे होगा। बाप थोड़ेही कहते हैं माँ को याद करो। बाप तो कहते हैं मुझे याद करो। पतित-पावन मैं हूँ। बाप के डायरेक्शन पर चलो। तुम भी बाप के डायरेक्शन पर औरों को समझाते रहो। तुम थोड़ेही पतित-पावन ठहरे। याद एक को ही करना है। हमारा तो एक बाप, दूसरा न कोई। बाबा हम आप पर ही वारी जायेंगे। वारी जाना तो शिवबाबा पर ही है और सबकी याद छूट जानी चाहिए। भक्ति मार्ग में तो बहुतों को याद करते रहते हैं। यहां तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। फिर भी कोई अपनी चलाते हैं तो क्या गति-सद्गति होगी! मूँझ पड़ते हैं—बिन्दी को कैसे याद करें? अरे, तुमको अपनी आत्मा याद है ना कि मैं आत्मा हूँ। वह भी बिन्दी रूप ही है। तो तुम्हारा बाप भी बिन्दी है। बाप से वर्सा मिलता है। माँ तो फिर भी देहधारी हो जाती है। तुमको विदेही से ही वर्सा मिलना है इसलिए और सब बातें छोड़ एक से बुद्धियोग लगाना है। अच्छा!

b) मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. शरीर का भान खत्म करने के लिए चलते-फिरते अभ्यास करना है—जैसे कि इस शरीर से मरे हुए हैं, न्यारे हैं। शरीर में है ही नहीं। बिगर शरीर आत्मा को देखो।

२. कभी भी किसी के शरीर पर तुम्हें आशिक नहीं होना है। एक विदेही बाप से ही प्यार रखना है। एक से ही बुद्धियोग लगाना है।

वरदान:- पुरानी देह वा दुनिया की सर्व आकर्षणों से सहज और सदा दूर रहने वाले राजऋषि भव

राजऋषि अर्थात् एक तरफ सर्व प्राप्ति के अधिकार का नशा और दूसरे तरफ बेहद के वैराग्य का अलौकिक नशा। वर्तमान समय इन दोनों अभ्यास को बढ़ाते चलो। वैराग्य माना किनारा नहीं लेकिन सर्व प्राप्ति होते भी हद की आकर्षण मन बुद्धि को आकर्षण में नहीं लाये। संकल्प मात्र भी अधीनता न हो इसको कहते हैं राजऋषि अर्थात् बेहद के वैरागी। यह पुरानी देह वा देह की पुरानी दुनिया, व्यक्त भाव, वैभवों का भाव इन सब आकर्षणों से सदा और सहज दूर रहने वाले।

स्लोगन:-

साइंस के साधनों को यूज़ करो लेकिन अपने जीवन का आधार नहीं बनाओ।

19.9.89 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे- अपनी बैटरी चार्ज करने का ख्याल करो, अपना टाइम परचिंतन में वैस्ट मत करो, अपनी घोट तो नशा चढ़े"

प्रश्न:-ज्ञान एक सेकेण्ड का होते हुए भी बाप को इतना डिटेल में समझाने वा इतना समय देने की आवश्यकता क्यों? उत्तर:-क्योंकि ज्ञान देने के बाद बच्चों में सुधार हुआ है या नहीं, यह भी बाप देखते है।और फिर सुधारने के लिए ज्ञान देते ही रहते हैं। सारे बीज और झाड का ज्ञान देते-जिस कारण उन्हें ज्ञान सागर कहा जाता।अगर एक सेकेण्ड का मंत्र देकर चले जाएं तो ज्ञान सागर का टाइटिल भी न मिले।

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते है।भक्ति मार्ग में परमपिता परमात्मा शिव को यहाँ ही पूजते है। भल बुद्धि में है कि यह होकर गये है।जहाँ पर लिंग देखते है तो उनकी पूजा करते है।यह तो समझते है शिव परमधाम में रहने वाला है। होकर गये है; इसलिए उनका यादगार बनाकर पूजते हैं। जिस समय याद किया जाता है तो बुद्धि में जरूर आता है कि निराकार है, जो परमधाम में रहने वाला है।उनको शिव कह पूजते है क्योंकि परमात्मा है। अभी तुम्हारे आगे तो परमात्मा है नहीं। भक्ति मार्ग वालों के आगे परमात्मा है, मन्दिर में जाकर माथा टेकते है, शिव कहकर पूजा करते है और उन पर दूध फल, जल आदि चढ़ाते है।परन्तु वह तो जड़ है।जड़ की भक्ति ही करते हैं। अभी तुम जानते हो-वह है चैतन्य। उनका निवास स्थान परमधाम है।वह लोग जब पूजा करते है तो बुद्धि में रहता है कि परमधाम निवासी है-होकर गये है तब यह चित्र बनाये गये है, जिसकी पूजा की जाती है, वह चित्र कोई शिव नहीं है, उनकी प्रतिमा है।वैसे ही देवताओं को भी पूजते है, जड़ चित्र हैं, चैतन्य नहीं हैं। परन्तु वह चैतन्य जो थे वह कहाँ गये, यह नहीं समझते। जरूर पुनर्जन्म ले नीचे आये होंगे। अभी तुम बच्चों को ज्ञान मिल रहा है। समझते हो जो भी पूज्य देवता थे वह पुनर्जन्म लेते आये है।आत्मा वही है, आत्मा का नाम नहीं बदलता।बाकी शरीर का नाम बदलता है।वह आत्मा कोई न कोई शरीर में है। पुनर्जन्म तो लेना ही है।तुम पूजते हो जो पहले2शरीर वाले थे।सतयुगी लक्ष्मी [illegible]
समझते हो जिस चित्र की पूजा करते है वह पहले नम्बर वाला है।यह लक्ष्मी नारायण चैतन्य थे। यहाँ ही भारत में थे, अभी नहीं हैं। मनुष्य यह नहीं समझते कि वह पुनर्जन्म लेते2 भिन्न नाम रूप लेते 84जन्मों का पार्ट बजाते रहते है। यह किसके ख्याल में भी नहीं आता। सतयुग में थे तो जरूर परन्तु अब नहीं है। यह भी किसको समझ नहीं आती। अभी तुम जानते हो-ड्रामा के प्लैन अनुसार फिर चैतन्य में आयेंगे जरूर। मनुष्यों की बुद्धि में यह ख्याल ही नहीं आता। बाकी इतना जरूर समझते है कि यह थे।अब इनका जड़ चित्र है, परन्तु वह चैतन्य चित्र कहाँ चले गये। यह किसकी बुद्धि में नहीं आता है। मनुष्य जो 84लाख पुनर्जन्म कह देते है, यह भी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है कि 84जन्म ही लेते है न कि 84 लाख। अब रामचन्द्र की पूजा करते है, उनको यह भी पता नहीं है कि राम कहाँ गया। तुम जानते हो कि राम की आत्मा तो जरूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी।यहाँ इम्तहान में नापास होती है ।परन्तु कोई न कोई रूप में होगी तो जरूर ना। यहाँ ही पुरूषार्थ करते रहते है। इतना नाम बाला है राम का, तो जरूर आयेंगे, उनको नालेज लेनी पड़ेगी। अभी कुछ मालूम नहीं पड़ता है तो उस बात को छोड़ देना पड़ता है। इन बातों में जाने से भी टाइम वेस्ट होता है। इससे तो क्यों न अपना टाइम सफल करें। अपनी उन्नति के लिए बैटरी चार्ज करें। वह फिर हो गया परचिंतन।अभी तो अपना चिंतन करना है। हम बाप को याद करें।वह तो जरूर पढ़ते होंगे। अपनी बैटरी चार्ज करते होंगे। परन्तु तुमको अपनी करनी है। कहा जाता-अपनी घोट तो नशा चढ़े।बाप ने कहा है-जब तुम सतोप्रधान थे तो तुम्हारा बहुत ऊँच पद था। अब फिर पुरूषार्थ करो, मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो, मंजिल है ना। यह चिंतन करते2 सतोप्रधान बनेंगे। नारायण का ही सिमरण करने से हम नारायण बनेंगे। अन्तकाल में जो नारायण सिमरे... तुमको बाप को याद करना है, जिससे पाप कटें। फिर नारायण बनें।यह नर से नारायण बनने की हाइएस्ट युक्ति है।एक नारायण तो नहीं बनेंगे ना। यह तो सारी डिनायस्टी बनती है।बाप हाइएस्ट पुरूषार्थ करायेंगे।यह है ही राजयोग की नालेज, तो भी पूरे विश्व का मालिक बनना है।जितना पुरूषार्थ

करेंगे, उतना जरूर फायदा है।एक तो अपने को आत्मा जरूर निश्चय करो।कोई2 लिखते भी ऐसे हैं, फलानी आत्मा आपको याद करती है।आत्मा शरीर के द्वारा लिखती है। आत्मा का कनेक्शन है शिवबाबा साथ।मैं आत्मा फलाने शरीर के नाम रूप वाली हूँ।यह तो जरूर बताना पड़े ना। क्योंकि आत्मा के शरीर पर ही भिन्न2 नाम पड़ते हैं। मैं आत्मा आपका बच्चा हूँ। मुझ आत्मा के शरीर का नाम फलाना है। आत्मा का नाम तो कभी बदलता नहीं। मैं आत्मा फलाने शरीर वाली। शरीर का नाम तो जरूर बाहिर।नहीं तो कारोबार चल न सके। (यहाँ बाप कहते हैं मैं भी इस ब्रह्मा के तन में आता हूँ। टैम्पेरी इनकी आत्मा को भी समझाते हैं। मैं इस शरीर से तुमको पढ़ाने आया हूँ। यह मेरा शरीर नहीं है। मैंने इनमें प्रवेश किया है। फिर चले जायेंगे अपने धाम। मैं आया ही हूँ तुम बच्चों को यह मन्त्र देने। ऐसे नहीं कि मन्त्र देकर चला जाता हूँ। नहीं। बच्चों को देखना भी पड़ता है कि कहाँ तक सुधार हुआ है। फिर सुधारने की शिक्षा देते रहते हैं। सेकेण्ड का ज्ञान देकर चले जायें तो फिर ज्ञान का सागर भी न कहा जाए। कितना समय हुआ है, तुमको समझाते ही रहते हैं। झाड़ की, भक्ति मार्ग की सब बातें समझने की डिटेल है। डिटेल में समझाते हैं। होलसेल माना मनमनाभव। परन्तु ऐसे कह, चलें तो नहीं जायेंगे। ताइना (देख-रेख) भी करनी पड़े। कई बच्चे बाप को याद करते2 फिर गुम हो जाते हैं।फलानी आत्मा जिसका नाम फलाना था, बहुत अच्छा पढ़ता था।स्मृति तो आयेगी ना।पुराने2 बच्चे कितने अच्छे थे, उनको माया ने हप कर लिया।शुरू में कितने आये।फट से आकर बाप की गोद ली।भट्ठी बनी। इसमें सबने अपना तक अजमाया फिर तक अजमाते2 माया ने एकदम उड़ा दिया। ठहर न सके। फिर 5 हजार वर्ष के बाद भी ऐसे ही होगा। कितने चले गये- आधा झाड़ तो जरूर गया। अब झाड़ वृद्धि को पाया है परन्तु पुराने चले गये, समझ सकते हैं- इनसे कुछ फिर आयेंगे जरूर पढ़ने। स्मृति आयेगी कि हम बाप से पढ़ते थे। और सब अभी तक पढ़ते रहते हैं। हमने हार खा ली। फिर मैदान में आयेंगे। बाबा आने देंगे फिर भी भल आकर पुरूषार्थ करें। कुछ न कुछ अच्छा पद मिल जायेगा।

बाप स्मृति दिलाते हैं- मीठे2 बच्चे मामेकम् याद करो तो पाप कट जायेंगे। अब कैसे याद करते हो, क्या यह समझते हो कि बाबा परमधाम में है? नहीं। बाबा तो यहाँ रथ में बैठे हैं। इस रथ का सबको मालूम पड़ता जाता है।यह है भाग्यशाली रथ। इनमें आया हुआ है।भक्ति- मार्ग में थे तो उनको परमधाम में याद करते थे परन्तु यह नहीं जानते थे कि याद से क्या होगा। अभी तुम बच्चों को बाप खुद इस रथ में बैठ श्रीमत देते हैं, इसलिए तुम बच्चे समझते हो बाबा यहाँ इस मृत्युलोक में पुरूषोत्तम संगमयुग पर है। तुम जानते हो हमको ब्रह्मा को याद नहीं करना है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। मैं इस रथ में रहकर तुमको यह नालेज दे रहा हूँ। अपनी भी पहचान देता हूँ, मैं यहाँ हूँ। आगे तो तुम समझते थे परमधाम में रहने वाला है। होकर गया है परन्तु कब, यह पता नहीं था। होकर तो सब गये हैं ना। जिनके भी चित्र हैं, अभी वह कहाँ हैं, यह किसको पता नहीं है। जो जाते हैं वह फिर अपने समय पर आते हैं। भिन्न2 पार्ट बजाते रहते हैं। स्वर्ग में तो कोई जाते नहीं। बाप ने समझाया है स्वर्ग में जाने के लिए तो पुरूषार्थ करना होता है और पुरानी दुनिया का अन्त, नई दुनिया की आदि चाहिए। जिनको पुरूषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। यह ज्ञान अभी तुमको है। मनुष्य कुछ नहीं जानते। समझते भी हैं शरीर जल जाता है। बाकी आत्मा चली जाती है। अब कलियुग है तो जरूर जन्म कलियुग में ही लेंगे। सतयुग में थे तो जन्म भी सतयुग में लेते थे।यह भी जानते हो आत्माओं का सारा स्टॉक निराकारी दुनिया में होता है।यह तो बुद्धि में बैठा है ना। फिर यहाँ से आते हैं यहाँ शरीर धारण कर जीव आत्मा बन जाते हैं। सबको यहाँ आकर जीव आत्मा बनना है। फिर नम्बरवार वापिस जाना है। सबको तो नहीं ले जायेंगे फिर तो प्रलय हो जाए। दिखाते हैं कि प्रलय हो गई, रिजल्ट कुछ नहीं दिखाते। (तुम तो जानते हो यह दुनिया कभी खाली नहीं हो सकती है। गायन है राम गयो रावण गयो, जिनके बहुत परिवार है।सारी दुनिया में रावण सम्प्रदाय हैं ना। राम सम्प्रदाय तो बहुत थोड़ी है। राम की सम्प्रदाय है ही सतयुग त्रेता में। बहुत फर्क रहता है। बाद में फिर और टाल टालियां निकलती है। अभी तुमने बीज और झाड़ को भी जाना है। बाप सब कुछ जानते हैं, तब तो सुनाते रहते हैं इसलिए उनको ज्ञान

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION

सागर कहा जाता है, एक ही बात अगर होती तो फिर कुछ शास्त्र आदि भी बन न सके। झाड़ की डिटेल भी समझाते रहते हैं। मूल बात नम्बरवन सब्जेक्ट है बाप को याद करना। इसमें ही मेहनत है। इस पर ही सारा मदार है। बाकी झाड़ को तो तुम जान गये हो। दुनिया में इन बातों को कोई भी नहीं जानते हैं। तुम सब धर्म वालों की तिथि तारीख आदि सब बताते हो। आधाकल्प में यह सब आ जाते हैं। बाकी हैं सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी। इनके लिए बहुत युग तो नहीं होंगे ना। हैं ही दो युग। वहाँ मनुष्य भी थोड़े होते हैं। 84 लाख जन्म तो हो भी न सकें। मनुष्य समझ से बाहर हो जाते हैं इसलिए फिर बाप आकर समझ देते हैं। समझ से जो बाहर जाता है उनको बेसमझ कहा जाता है। नम्बरवन गपोड़ा लगाया है-ईश्वर सर्वव्यापी का और 84 लाख जन्मों का। बाप कहते हैं यह सब हैं अज्ञान। अज्ञान की एक्टिविटी को भक्ति कहा जाता है। ज्ञान की एक्टिविटी को ज्ञान कहा जाता है। वह दिन, वह रात। बाप जो रचता है, वही रचता और रचना के आदि मध्य अन्त की नालेज बैठ देते हैं। भारतवासी तो बिल्कुल कुछ नहीं जानते। सबको पूजते रहते हैं, मुसलमानों को, पारसी आदि को जो आया उनको पूजने लग पड़ेंगे। क्योंकि अपने धर्म और धर्म स्थापक को भूल गये हैं और तो सब अपने2 धर्म को जानते हैं और सबको मालूम है फलाना धर्म कब, किसने स्थापन किया। बाकी सतयुग त्रेता की हिस्ट्री जाग्राफी का किसको भी पता नहीं है। चित्र भी देखते हैं शिवबाबा का यह रूप है। वही ऊँच ते ऊँच बाप है। तो याद भी उनको करना है। यहाँ फिर सबसे जास्ती पूजा करते हैं कृष्ण की। क्योंकि नेक्स्ट में है ना। प्यार भी उनको करते हैं, तो गीता का भगवान भी उनको समझ लिया है। सुनाने वाला चाहिए तब तो उनसे वर्सा मिले। बाप ही सुनाते हैं, नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कराने वाला और कोई हो न सके सिवाए एक बाप के। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना यह भी लिखते हैं। यहाँ के लिए ही है। परन्तु समझ कुछ भी नहीं। तुम जानते हो वह है निराकारी सृष्टि। यह है साकारी सृष्टि। सृष्टि तो यही है, यहाँ ही रामराज्य और रावणराज्य होता है। महिमा
a) सारी यहाँ की है। बाकी सूक्ष्मवतन क्या है, कुछ भी नहीं। यह सिर्फ सा0 होता है। मूलवतन में तो आत्मायें रहती हैं फिर यहाँ आकर पार्ट बजाती हैं। बाकी सूक्ष्मवतन में क्या है, यह चित्र बना दिया है। जिस पर बाप बैठ समझाते हैं। यह है फर्स्ट। तुम बच्चों को यह फरिश्ता बनना है। फरिश्ते हड्डी मास बिगर होते हैं। कहते हैं ना- दधीचि ऋषि ने हड्डियां भी दे दी। बाकी
b) शंकर का गायन तो कहाँ है नहीं। ब्रह्मा विष्णु शंकर का मन्दिर हैं। शंकर का कुछ है नहीं। तो उनको लगा दिया है विनाश के लिए। बाकी ऐसे कोई आँख खोलने से विनाश करता नहीं है। देवतायें फिर हिंसा का काम कैसे करेंगे। न वह करते हैं न शिवबाबा ऐसा डायरेक्शन देते हैं। डायरेक्शन देने वाले पर भी आ जाता है ना। कहने वाला ही फँस जाता है। वह तो शिव शंकर को ही इकट्ठा कह देते हैं। अब बाप भी कहते हैं मुझे याद करो। मामेकम् याद करो। ऐसा तो नहीं कहते शिव शंकर को याद करो। पतित पावन एक ही कहते हैं। भगवान अर्थ सहित बैठ समझाते हैं, यह कोई जानते नहीं हैं, तो यह चित्र देख मूँझ पड़ते हैं। अर्थ तो जरूर दिखाना पड़े ना।

समझने में टाइम लगता है। कोटों में कोई विरला निकलता है। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, कोटों में कोई ही मुझे पहचान सकते हैं। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- ।1। किसी भी बात के चिंतन में अपना समय नहीं गँवाना है। अपनी मस्ती में रहना है। स्वयं के प्रति चिंतन कर आत्मा को सतोप्रधान बनाना है।

।2। नर से नारायण बनने के लिए अन्तकाल में एक बाप की ही याद रहे। इस हाइएस्ट युक्ति को सामने रखते हुए पुरूषार्थ करना है- मैं आत्मा हूँ..। इस शरीर को भूल जाना है।

web optimization using a watermarked evaluation copy of ... compressor

''मीठे बच्चे – अपनी बैटरी चार्ज करने का ख्याल करो, अपना टाइम परचिंतन में वेस्ट मत करो, अपनी घोट तो नशा चढ़े''

प्रश्नः- ज्ञान एक सेकेण्ड का होते हुए भी बाप को इतना डिटेल से समझाने वा इतना समय देने की आवश्यकता क्यों?

उत्तरः- क्योंकि ज्ञान देने के बाद बच्चों में सुधार हुआ है या नहीं, यह भी बाप देखते हैं और फिर सुधारने के लिए ज्ञान देते ही रहते हैं। सारे बीज और झाड़ का ज्ञान देते हैं, जिस कारण उन्हें ज्ञान सागर कहा जाता। अगर एक सेकण्ड का मंत्र देकर चले जाएं तो ज्ञान सागर का टाइटिल भी न मिले।

ओम् शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। भक्ति मार्ग में परमपिता परमात्मा शिव को यहाँ ही पूजते हैं। भल बुद्धि में है कि यह होकर गये हैं। जहाँ पर लिंग देखते हैं तो उनकी पूजा करते हैं। यह तो समझते हैं शिव परमधाम में रहने वाला है, होकर गये हैं, इसलिए उनका यादगार बनाकर पूजते हैं। जिस समय याद किया जाता है तो बुद्धि में जरूर आता है कि निराकार है, जो परमधाम में रहने वाला है, उनको शिव कह पूजते हैं। मन्दिर में जाकर माथा टेकते हैं, उन पर दूध, फल, जल आदि चढ़ाते हैं। परन्तु वह तो जड़ है। जड़ की भक्ति ही करते हैं अभी तुम जानते हो—वह है चैतन्य, उनका निवास स्थान परमधाम है। वह लोग जब पूजा करते हैं तो बुद्धि में रहता है कि परमधाम निवासी है, होकर गये हैं तब यह चित्र बनाये गये हैं, जिसकी पूजा की जाती है। वह चित्र कोई शिव नहीं है, उनकी प्रतिमा है। वैसे ही देवताओं को भी पूजते हैं, जड़ चित्र है, चैतन्य नहीं हैं। परन्तु वह चैतन्य जो थे वह कहाँ गये, यह नहीं समझते। जरूर पुनर्जन्म ले नीचे आये होंगे। अभी तुम बच्चों को ज्ञान मिल रहा है। समझते हो जो भी पूज्य देवता थे वह पुनर्जन्म लेते आये हैं। आत्मा वही है, आत्मा का नाम नहीं बदलता। बाकी शरीर का नाम बदलता है। वह आत्मा कोई न कोई शरीर में है। पुनर्जन्म तो लेना ही है। तुम पूजते हो उनको, जो पहले-पहले शरीर वाले थे (सतयुगी लक्ष्मी-नारायण को पूजते हो) इस समय तुम्हारा ख्याल चलता है, जो नॉलेज बाप देते हैं। तुम समझते हो जिस चित्र की पूजा करते हैं वह पहले नम्बर वाला है। वह लक्ष्मी-नारायण चैतन्य थे। यहाँ ही भारत में थे, अभी नहीं हैं। मनुष्य यह नहीं समझते कि वह पुनर्जन्म लेते-लेते भिन्न नाम-रूप लेते 84 जन्मों का पार्ट बजाते रहते हैं। यह किसके ख्याल में भी नहीं आता। सतयुग में थे तो जरूर परन्तु अब नहीं हैं। यह भी किसको समझ नहीं आती। अभी तुम जानते हो—ड्रामा के प्लैन अनुसार फिर चैतन्य में आयेंगे जरूर। मनुष्यों की बुद्धि में यह ख्याल ही नहीं आता। बाकी इतना जरूर समझते हैं कि यह थे। अब इनके जड़ चित्र हैं, परन्तु वह चैतन्य कहाँ चले गये – यह किसकी बुद्धि में नहीं आता है। मनुष्य तो 84 लाख पुनर्जन्म कह देते हैं, यह भी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है कि 84 जन्म ही लेते हैं, न कि 84 लाख। अब रामचन्द्र की पूजा करते हैं, उनको यह भी पता नहीं है कि राम कहाँ गया। तुम जानते हो कि श्रीराम की आत्मा तो जरूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी। यहाँ इम्तहान में नापास होती है। परन्तु कोई न कोई रूप में होगी तो जरूर ना। यहा ही पुरूषार्थ करते रहते हैं। इतना नाम बाला है राम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION

का, तो जरूर आयेंगे, उनको नॉलेज लेनी पड़ेगी। अभी कुछ मालूम नहीं पड़ता है तो उस बात को छोड़ देना पड़ता है। इन बातों में जाने से भी टाइम वेस्ट होता है। इससे तो क्यों न अपना टाइम सफल करें। अपनी उन्नति के लिए बैटरी चार्ज करें। दूसरी बातों का चिंतन तो परचिंतन हो गया। अभी तो अपना चिंतन करना है। हम बाप को याद करें। वह भी जरूर पढ़ते होंगे। अपनी बैटरी चार्ज करते होंगे। परन्तु तुमको अपनी करनी है। कहा जाता—अपनी घोट तो नशा चढ़े।

बाप ने कहा है – जब तुम सतोप्रधान थे तो तुम्हारा बहुत ऊंच पद था। अब फिर पुरूषार्थ करो, मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हों। मंजिल है ना। यह चिंतन करते-करते सतोप्रधान बनेंगे। नारायण का ही सिमरण करने से हम नारायण बनेंगे। अन्तकाल में जो नारायण सिमरे.......। तुमको बाप को याद करना है, जिससे पाप कटें। फिर नारायण बनें। यह नर से नारायण बनने की हाइएस्ट युक्ति है। एक नारायण तो नहीं बनेंगे ना। यह तो सारी डिनायस्टी बनती है। बाप हाइएस्ट पुरूषार्थ करायेंगे। यह है ही राजयोग की नॉलेज, सो भी पूरे विश्व का मालिक बनना है। जितना पुरूषार्थ करेंगे, उतना जरूर फायदा है। एक तो अपने को आत्मा जरूर निश्चय करो। कोई-कोई लिखते भी ऐसे हैं, फलानी आत्मा आपको याद करती है। आत्मा शरीर के द्वारा लिखती है। आत्मा का कनेक्शन है शिवबाबा के साथ। मैं आत्मा फलाने शरीर के नाम-रूप वाली हूँ। यह तो जरूर बताना पड़े ना क्योंकि आत्मा के शरीर पर ही भिन्न-भिन्न नाम पड़ते हैं। मैं आत्मा आपका बच्चा हूँ, मुझ आत्मा के शरीर का नाम फलाना है। आत्मा का नाम तो कभी बदलता नहीं। मैं आत्मा फलाने शरीर वाली हूँ। शरीर का नाम तो जरूर चाहिए। नहीं तो कारोबार चल न सके। यहाँ बाप कहते हैं मैं भी इस ब्रह्मा के तन में आता हूँ टैम्प्रेरी, इनकी आत्मा को भी समझाते हैं। मैं इस शरीर से तुमको पढ़ाने आया हूँ। यह मेरा शरीर नहीं है। मैंने इनमें प्रवेश किया है। फिर चले जायेंगे अपने धाम। मैं आया ही हूँ तुम बच्चों को यह मन्त्र देने। ऐसे नहीं कि मन्त्र देकर चला जाता हूँ। नहीं, बच्चों को देखना भी पड़ता है कि कहाँ तक सुधार हुआ है। फिर सुधारने की शिक्षा देते रहते हैं। सेकण्ड का ज्ञान देकर चले जाएं तो फिर ज्ञान का सागर भी न कहा जाए। कितना समय हुआ है, तुमको समझाते ही रहते हैं। झाड़ की, भक्ति मार्ग की सब बातें समझने की डिटेल है। डिटेल में समझाते हैं। होलसेल माना मनमनाभव। परन्तु ऐसा कहकर चले तो नहीं जायेंगे। पालना (देख-रेख) भी करनी पड़े। कई बच्चे बाप को याद करते-करते फिर गुम हो जाते हैं। फलानी आत्मा जिसका नाम फलाना था, बहुत अच्छा पढ़ता था—स्मृति तो आयेगी ना। पुराने-पुराने बच्चे कितने अच्छे थे, उनको माया ने हप कर लिया। शुरू ⁚ कितने आये। फट से आकर बाप की गोद ली। भट्ठी बनी। इसमें सबने अपना लक (भाग्य) अजमाया फिर लक अजमाते-अजमाते माया ने एकदम उड़ा दिया। ठहर न सके। फिर 5 हज़ार वर्ष के बाद भी ऐसे ही होगा। कितने चले गये, आधा झाड़ तो जरूर गया। भल झाड़ वृद्धि को पाया है परन्तु पुराने चले गये, समझ सकते हैं—उनसे कुछ फिर आयेंगे जरूर पढ़ने। स्मृति आयेगी कि हम बाप से पढ़ते थे और सब अभी तक पढ़ते रहते हैं। हमने हार खा ली। फिर मैदान में आयेंगे। बाबा आने देंगे, फिर भी भल आकर पुरूषार्थ करें। कुछ न कुछ अच्छा पद मिल जायेगा।

बाप स्मृति दिलाते हैं—मीठे-मीठे बच्चे, मामेकम् याद करो तो पाप कट जायेंगे। अब कैसे याद करते हो, क्या यह समझते हो कि बाबा परमधाम में है? नहीं, बाबा तो यहाँ रथ में बैठे हैं। इस

compression OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रथ का सबको मालूम पड़ता जाता है। यह है भाग्यशाली रथ। इनमें आया हुआ है। भक्तिमार्ग में थे तो उनको परमधाम में याद करते थे परन्तु यह नहीं जानते थे कि याद से क्या होगा। अभी तुम बच्चों को बाप खुद इस रथ में बैठ श्रीमत देते हैं, इसलिए तुम बच्चे समझते हो बाबा यहाँ इस मृत्युलोक में पुरूषोत्तम संगमयुग पर है। तुम जानते हो हमको ब्रह्मा को याद नहीं करना है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो, मैं इस रथ में रहकर तुमको यह नॉलेज दे रहा हूँ। अपनी भी पहचान देता हूँ, मैं यहाँ हूँ। आगे तो तुम समझते थे परमधाम में रहने वाला है। होकर गया है परन्तु कब, यह पता नहीं था। होकर तो सब गये हैं ना। जिनके भी चित्र हैं, अभी वह कहाँ हैं, यह किसको पता नहीं है। जो जाते हैं वह फिर अपने समय पर आते हैं। भिन्न-भिन्न पार्ट बजाते रहते हैं। स्वर्ग में तो कोई जाते नहीं। बाप ने समझाया है स्वर्ग में जाने के लिए तो पुरूषार्थ करना होता है और पुरानी दुनिया का अन्त, नई दुनिया की आदि चाहिए, जिनको पुरूषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। यह ज्ञान अभी तुमको है। मनुष्य कुछ नहीं जानते। समझते भी हैं शरीर जल जाता है, बाकी आत्मा चली जाती है। अब कलियुग है तो जरूर जन्म कलियुग में ही लेंगे। सतयुग में थे तो जन्म भी सतयुग में लेते थे। यह भी जानते हो आत्माओं का सारा स्टॉक निराकारी दुनिया में होता है। यह तो बुद्धि में बैठा है ना। फिर वहाँ से आते हैं, यहाँ शरीर धारण कर जीव आत्मा बन जाते हैं। सबको यहाँ आकर जीव आत्मा बनना है। फिर नम्बरवार वापिस जाना है। सबको तो नहीं ले जायेंगे, नहीं तो प्रलय हो जाए। दिखाते हैं कि प्रलय हो गई, रिज़ल्ट कुछ नहीं दिखाते। तुम तो जानते हो यह दुनिया कभी खाली नहीं हो सकती है। गायन है राम गयो रावण गयो, जिनका बहुत परिवार है। सारी दुनिया में रावण सम्प्रदाय है ना। राम सम्प्रदाय तो बहुत थोड़ी है। राम की सम्प्रदाय है ही सतयुग-त्रेता में। बहुत फर्क रहता है। बाद में फिर और टाल-टालियां निकलती हैं। अभी तुमने बीज और झाड़ को भी जाना है। बाप सब कुछ जानते हैं, तब तो सुनाते रहते हैं इसलिए उनको ज्ञान सागर कहा जाता है, एक ही बात अगर होती तो फिर कुछ शास्त्र आदि भी बन न सके। झाड़ की डिटेल भी समझाते रहते हैं। मूल बात नम्बरवन सब्जेक्ट है बाप को याद करना। इसमें ही मेहनत है। इस पर ही सारा मदार है। बाकी झाड़ को तो तुम जान गये हो। दुनिया में इन बातों को कोई भी नहीं जानते हैं। तुम सब धर्म वालों की तिथि-तारीख आदि सब बताते हो। आधाकल्प में यह सब आ जाते हैं। बाकी हैं सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी। इनके लिए बहुत युग तो नहीं होंगे ना। हैं ही दो युग। वहाँ मनुष्य भी थोड़े हैं। 84 लाख जन्म तो हो भी न सकें। मनुष्य समझ से बाहर हो जाते हैं इसलिए फिर बाप आकर समझ देते हैं। बाप जो रचयिता है, वही रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज बैठ देते हैं। भारतवासी तो बिल्कुल कुछ नहीं जानते। सबको पूजते रहते हैं, मुसलमानों को, पारसी आदि को, जो आया उनको पूजने लग पड़ेंगे क्योंकि अपने धर्म और धर्म-स्थापक को भूल गये हैं। और तो सब अपने-अपने धर्म को जानते हैं, सबको मालूम है फलाना धर्म कब, किसने स्थापन किया। बाकी सतयुग-त्रेता की हिस्ट्री-जॉग्राफी का किसको भी पता नहीं है। चित्र भी देखते हैं शिवबाबा का यह रूप है। वही ऊंच ते ऊंच बाप है। तो याद भी उनको करना है। यहाँ फिर सबसे जास्ती पूजा करते हैं कृष्ण की क्योंकि नेक्स्ट में है ना। प्यार भी उनको करते हैं, तो गीता का भगवान भी उनको समझ लिया है। सुनाने वाला चाहिए तब तो उनसे वर्सा मिले। बाप ही सुनाते हैं, नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कराने

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

वाला और कोई हो न सके सिवाए एक बाप के। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना--यह भी लिखते हैं। यहाँ के लिए ही है। परन्तु समझ कुछ भी नहीं।

तुम जानते हो वह है निराकारी सृष्टि। यह है साकारी सृष्टि। सृष्टि तो यही है, यहाँ ही रामराज्य और रावणराज्य होता है। महिमा सारी यहाँ की है। बाकी सूक्ष्मवतन का सिर्फ साक्षात्कार होता है। मूलवतन में तो आत्मायें रहती हैं फिर यहाँ आकर पार्ट बजाती हैं। बाकी सूक्ष्मवतन में क्या है, यह चित्र बना दिया है। जिस पर बाप समझाते हैं। तुम बच्चों को ऐसा सूक्ष्मवतन वासी फरिश्ता बनना है। फरिश्ते हड्डी-मास बिगर होते हैं। कहते हैं ना--दधीचि ऋषि ने हड्डियाँ भी दे दी। बाकी शंकर का गायन तो कहाँ है नहीं। ब्रह्मा-विष्णु का मन्दिर है। शंकर का कुछ है नहीं। तो उनको लगा दिया है विनाश के लिए। बाकी ऐसे कोई आंख खोलने से विनाश करता नहीं है। देवतायें फिर हिंसा का काम कैसे करेंगे। न वह करते हैं, न शिवबाबा ऐसा डायरेक्शन देते हैं। डायरेक्शन देने वाले पर भी आ जाता है ना। कहने वाला ही फँस जाता है। वह तो शिव-शंकर को ही इकट्ठा कह देते हैं। अब बाप भी कहते हैं मुझे याद करो, मामेकम् याद करो। ऐसा तो नहीं कहते शिव-शंकर को याद करो। पतित-पावन एक को ही कहते हैं। भगवान अर्थ सहित बैठ समझाते हैं, यह कोई जानते नहीं हैं तो यह चित्र देख मूँझ पड़ते हैं। अर्थ तो जरूर बताना पड़े ना। समझने में टाइम लगता है। कोटों में कोई विरला निकलता है। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, कोटों में कोई ही मुझे पहचान सकते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. किसी भी बात के चिंतन में अपना समय नहीं गँवाना है। अपनी मस्ती में रहना है। स्वयं के प्रति चिंतन कर आत्मा को सतोप्रधान बनाना है।

२. नर से नारायण बनने के लिए अन्तकाल में एक बाप की ही याद रहे। इस हाइएस्ट युक्ति को सामने रखते हुए पुरूषार्थ करना है--मैं आत्मा हूँ। इस शरीर को भूल जाना है।

वरदान:- अपने मस्तक पर सदा बाप की दुआओं का हाथ अनुभव करने वाले मास्टर विघ्न-विनाशक भव

गणेश को विघ्न-विनाशक कहते हैं। विघ्न-विनाशक वही बनते जिनमें सर्व शक्तियां हैं। सर्वशक्तियों को समय प्रमाण कार्य में लगाओ तो विघ्न ठहर नहीं सकते। कितने भी रूप से माया आये लेकिन आप नॉलेजफुल बनो। नॉलेजफुल आत्मा कभी माया से हार खा नहीं सकती। जब मस्तक पर बापदादा की दुआओं का हाथ है तो विजय का तिलक लगा हुआ है। परमात्म हाथ और साथ विघ्न-विनाशक बना देता है।

स्लोगन:-

स्वयं में गुणों को धारण कर दूसरों को गुणदान करने वाले ही गुणमूर्त हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

10.3.92 [illegible] ओमशान्ति "गीताश्री" [illegible]

"[illegible] भक्ति की रोचक बातों के बजाय रूहानी बातें सबको सुनानी हैं. रावण राज्य से मुक्त करने की सेवा करनी है"

प्रश्न:-सेवा में सफलता प्राप्त करने के लिए मुख्य कौन सा गुण चाहिए?

उत्तर:-निर-अहंकारिता का गुण। महावीर के लिए भी दिखाते हैं जहाँ भी सतसंग होता था-वहाँ जुत्तियों में जाकर बैठता था। क्योंकि उसमें देह अभिमान नहीं था। परन्तु इसमें बहादुरी चाहिए। तुम कोई भी ड्रेस पहनकर उन सतसंगों में जाकर सुन सकते हो। गुप्त वेष में जाकर सबकी सेवा करनी चाहिए।

गीत:-ओम् नमो शिवाए.. ओमशान्ति। यह हुई महिमा ऊँचे ते ऊँचे भगवान की। ईश्वर कहो, परमपिता परमात्मा कहो, सिर्फ ईश्वर या भगवान कहने से पिता नहीं समझा जाता है। इसलिए परमपिता परमात्मा कहना चाहिए। वह रचयिता है इस मनुष्य सृष्टि का। अब ऊँचे ते ऊँचा बाप क्या आकर कहते हैं? कहते हैं कि पतित मनुष्य मुझे बुलाते हैं कि आकर हमको पावन बनाओ। पावन माना पवित्र। पतित पावन भगवान को ही कहा जाता है। क्योंकि वह आता है जरूर। भक्ति मार्ग में भगवान को याद करते हैं तो वह आता भी जरूर है। परन्तु वह आयेगा तब जब भक्तों को भक्ति का फल देना होगा। फल देना अर्थात सद्गति देना। उनके लिए [illegible] सेकेण्ड में जीवनमुक्ति दे सकते हैं। कहते भी हैं कि जनक को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिली। नाम एक का ही गाया हुआ है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति अर्थात् सुख शान्ति मिली। मनुष्य चाहते भी हैं शान्ति सुख और बड़ी आयु चाहिए। छोटेपन में कोई मरते हैं तो कहते हैं अकाले मृत्यु आ गया। पूरी आयु नहीं बिताई। अब बाप जो कुछ करते हैं, उनका ही [illegible] है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति तो जरूर पहले जीवनबन्ध में होगा। जीवनबंध कलियुग की अन्त और जीवनमुक्ति सतयुग की आदि को कहा जाता है। कहते हैं जनक मिसल [illegible]। बाप समझाते हैं अक्षर हो दो हैं- राजयोग और [illegible]

भारत का प्राचीन राजयोग तो मशहूर है। प्राचीन माना पहले2, लेकिन कब? यह मनुष्य नहीं जानते। क्योंकि कल्प की आयु लाखों वर्ष कह देते हैं। भारत का प्राचीन ज्ञान और योग [illegible] अभी तो भारत बहुत दुखी है। पहले सूर्यवंशी राज्य [illegible] राजयोग और ज्ञान किसने दिया था। यह [illegible] लाखों वर्ष हो गये।

[illegible] प्राय लोप हो गये हैं। [illegible] तो बाप से वर्सा लेने में बच्चों को कोई भी तकलीफ नहीं। बाप के बने तो वर्से के लायक बने। फिर भी मात पिता टीचर की शिक्षा मिलती होती है। मुक्ति को भी वर्सा चाहिए इसलिए गुरु करते हैं। परन्तु जीवनमुक्ति तो कभी कोई दे नहीं सकता। जब जीवनबन्ध का अन्त हो, जीवनमुक्ति की आदि हो तब ही फिर जीवनमुक्ति [illegible] अथवा सेकेण्ड में जीवनमुक्ति अथवा सेकेण्ड में रावण [illegible] बाप तुम आत्माओं से राज्य से रामराज्य, पतित से पावन। परन्तु [illegible] बाप तुम आत्माओं से [illegible] मनुष्य ही शास्त्र आदि [illegible] करते हैं। [illegible] प्राचीन राजयोग और ज्ञान [illegible] कहते हैं [illegible] महात्मा ने यह ज्ञान दिया। यहाँ से प्राचीन राजयोग और ज्ञान [illegible] बने थे। [illegible] परमात्मा ने [illegible] पढ़ेगे। [illegible] पतित न बनें तो पतित [illegible] प्राय:लोप हो गया है। अगर लोप न हो तो सुनाये कैसे? मनुष्य पतित न बनें तो पतित पावन बाप आये कैसे? [illegible] में 84जन्म लेने पड़ते हैं। इसका भी सारा विस्तार [illegible] समझाते हैं। वह भी समझाते हैं (ब्रह्मा चाहिए तो ब्रह्मा का [illegible] चाहिए। ब्रह्मा विष्णु शंकर [illegible] ब्रह्मा द्वारा बैठ प्राचीन ज्ञान देते हैं जिससे विष्णुपुरी के [illegible] ब्राह्मण वर्ण वाले मनुष्य से तुम तो दैवी मालिक बनेंगे और ब्राह्मण तो देवता बन जाते हैं। [illegible] प्रजापिता [illegible] (तो [illegible] प्रजापिता ब्रह्मा चाहिए।) कृष्ण [illegible] कृष्ण को इतनी रानियां, बच्चे आदि [illegible] ब्रह्मा को न कि कृष्ण को। ब्रह्मा ही कृष्ण बनते हैं। [illegible] मनुष्यों को मूँझा दिया है। गीता का भगवान [illegible] एक ही जन्म की [illegible] में मनुष्यों को मूँझा दिया है। गीता का भगवान

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

[illegible] को कह शिव को उड़ा दिया है। साथ कहते हैं ब्रह्मा को 3 मुख थे। किनारे गुम गये हैं। शिव रचयिता को तो एकदम गुम कर दिया है। रचता ही आकर बताते हैं कि मैं कैसे देवी देवता धर्म की रचना करता हूँ। ऐसे नहीं परमात्मा सृष्टि कैसे रचते हैं। परमपिता परमात्मा को बुलाते ही हैं कि हे पतित पावन आकर हम पतितों को पावन बनाओ। दुनिया को यह मालूम ही नहीं कि इस समय रावण का राज्य चल रहा है। रावण की बड़ी2 कथायें बैठ सुनाते हैं। इनको कहा जाता है रोचक बातें और यह हैं रूहानी बातें। इस समय सब सीतायें अथवा भक्तियां रावण की कैद में हैं। और रावणराज्य में बहुत दुखी हैं। अब सबको रावणराज्य से मुक्त कराना है। अब बाप आया है कहते हैं बच्चे तुम्हारे 84 जन्म अब पूरे हुए। [illegible] जन्म है। मुझे ही बुलाते थे कि दुख हर्ता सुख कर्ता आओ। यह मेरा ही नाम है। कलियुग में है अपार दुख। सतयुग में है अपार सुख। फिर मैं तुमको सुख का मार्ग दिखाने आते फिर से तुम्हें राजयोग और ज्ञान सिखला रहा हूँ। यह पुरानी दुनिया विनाश हो जायेगी। मनुष्य तो विनाश से बहुत डरते हैं। समझते हैं यह आपस में लड़ें ही नहीं तो शान्ति हो जाए। फिर इतने अनेक धर्मों में शान्ति कैसे होगी? बाप समझाते हैं यह इतने सब धर्म जो अब हैं - यह पहले नहीं थे, जब एक ही धर्म था तब बरोबर सुख शान्ति का राज्य था। अब सब मांगते हैं मन को शान्ति कैसे मिले। अरे मन क्या चीज़ है। पहले इनको तो समझो। आत्मा में ही मन-बुद्धि है। तो आत्मा के आरगन्स के लिए कहते हो? मनुष्य कहते हैं हम बहुत दुखी हैं। यह आत्मा कहती है। मनुष्य की जबान बोलती है। आंख देखती है। टोटल मिलाकर कहते हैं मनुष्य दुखी है। किसको भी समझाना बड़ा सहज है कि बाप को याद करो और वर्से को याद करो। फिर झाड और ड्रामा की समझानी भी देनी पड़े। जिसके लिए यह चित्र बने हुए हैं। सिर्फ मनमनाभव कहने के लिए तो चित्र की दरकार नहीं। चित्रों पर समझाने में [illegible] [illegible] जाता है। प्राचीन राजयोग भगवान ने सिखलाया और राजाई मिल गई। फिर कोई मनुष्य [illegible] राजयोग सिखलायेंगे। बाप और वर्से को याद करो तो ठीक है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इसलिए बीज और झाड, ड्रामा की शिक्षा जरूर बुद्धि में रहती है। जैसे कहते हैं आज हम [illegible] ड्रामा देखकर आये हैं। बुद्धि में यह ड्रामा आदि से अन्त तक [illegible] तो सिर्फ [illegible] कि हम ड्रामा को देखकर आये हैं। तुम भी कहते हो हम इस ड्रामा को जानते हैं। परन्तु डिटेल तो बहुत है। यह भी ऐसे है। बाप ने सुख शान्ति का मार्ग दिखाया है फिर बुद्धि में [illegible] याद करना है। [illegible] आत्माओं को ही [illegible] है। फिर जो देवता बनते हैं। ब्रह्मा सो विष्णु फिर विष्णु सो ब्रह्मा। तुम जो देवी देवता थे, पुनर्जन्म लेते2 फिर आकर ब्राह्मण बने। हद का बाप तो सिर्फ उत्पत्ति, पालना करते हैं। विनाश तो नहीं करेंगे। विनाश अर्थात् सारी पतित दुनिया ही न रहे। सारे रावण राज्य का ही विनाश होना है। नहीं तो रामराज्य कैसे हो। वहाँ कभी रावण को जलाते नहीं। भक्ति मार्ग की कोई भी बात ज्ञान मार्ग में होती नहीं। तुम सतयुग त्रेता में [illegible] [illegible] हो। यह है ज्ञान की प्रालब्ध। इनको कहेंगे भक्ति की प्रालब्ध। अल्पकाल क्षण [illegible] सुख। [illegible] [illegible] [illegible] फिर [illegible] बिल्कुल ही दुखी बन जाते हैं। सद्गति दाता एक बाप है, यह तो समझाना है कि बाप और वर्से को याद करो। [illegible] शिव और स्वर्ग की बादशाही मिली फिर नर्क में कैसे आये यह सब बातें बैठ समझाई जाती हैं। अब तुमको सारे सृष्टि चक्र के आदि मध्य अन्त का पता पड़ गया है। तो इस समय तुम त्रिकालदर्शी बन रहे हो। उनको तुम कहेंगे कि देवतायें भी त्रिकालदर्शी नहीं थे। तो कहेंगे तब कौन थे? क्योंकि [illegible] ब्राह्मणों को तो कोई जानते ही नहीं। दिखाते हैं जहाँ भी सत्संग होता था तो [illegible] जाकर [illegible] में बैठ जाता था। अब यह बात महावीर के लिए क्यों कही है, क्योंकि तुम बच्चों में कोई देह अभिमान तो है नहीं। समझो सत्संग में कोई ऐसी बात [illegible] तो तुम कह सकते हो प्राचीन सहज राजयोग और [illegible] में जीवनमुक्ति [illegible] है तो [illegible] के पास जाओ। समझाने वाला तो बहादुर चाहिए। देह अभिमान न हो। कहाँ भी जाकर बैठे, चांस मिल जाए तो बोलना चाहिए। [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तो भाषण आदि करेगा कि गृहस्थ व्यवहार में रहते कैसे सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिल सकती है। परमपिता परमात्मा के सिवाए तो कोई दे न सके। यह महावीर ही समझा सकते हैं। सुनने लिए मना नहीं है और न कोई जरूरी है कि सफेद ड्रेस ही पहननी है। कोई भी ड्रेस पहन गुप्त रूप में बैठकर सुनो। बहुरूपी बनकर कोई भी कपड़े पहनकर आओ बाकी ब्रह्मा कुमारी तो सफेद वस्त्रधारी होती है। उन्हों का तो सन्यास किया हुआ है हम तो गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं। ऐसे भी तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। बाकी राजाई सीखना हो तो बी0के0 के पास जाओ। आगे जरूर तुम्हारा नाम बाला हो जायेगा। मैजारिटी हो जायेगी। अभी तो थोड़े हैं। भगाने का नाम भी बहुत है। कृष्ण ने भगाया अरे भगाने की तो कोई बात नहीं। टीचर कब पढ़ाने के लिए भगाते हैं क्या। सर्विस करने वालों को तो बहुत विचार सागर मंथन करना है और बहुत बहादुर बनना है। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

रात्रि क्लास:- मुरली है यह ज्ञान की, सो बिचारा श्रीकृष्ण क्या जानें। तुमको बिचारा नहीं कहेंगे। परमपिता परमात्मा ही त्रिकालदर्शी है और तुम बच्चे भी हो। [illegible] ही तो [illegible] है ना। [illegible] तुम बच्चों के हाथ में है। त्रिमूर्ति की महिमा को कोई जान नहीं सकते हैं। अब तुम्हारी अर्थ सहित मनोकामना पूर्ण हो रही है। जो अनन्य बच्चे हैं वे समझते हैं हमारी सब मनोकामना पूरी हो रही है। यह पढ़ाई है सर्व मनोकामनाओं को पूरी करने वाली। सिवाए एक के दूसरा कोई कर न सके। और सब मनोकामनायें पूर्ण [illegible] होंगी। सतयुग में कितने वैभव तुमको मिलते हैं उतने भारती वैभव और कोई को नहीं [illegible] जो सतयुग में वैभव होते हैं वह कलियुग में हो न सकें। यहां नई दुनिया के वैभव [illegible] दुनिया से। वैभव भी सब धर्मों से न्यारे हैं। किस्म2 के वैभव होते हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में जो यह ज्ञान की बातें हैं यह सारी दुनिया से न्यारी हैं।

यह हैं दुनियावी बातें। यह हैं ईश्वरीय बातें, जो सबसे न्यारी हैं। [illegible] के लिए यह बातें ही [illegible] न्यारी हैं। रहते भी यहाँ ही हो। मनुष्यों के [illegible] हो, कोई फर्क नहीं। फिर भी तुम्हारी एक्टिविटी सबसे न्यारी है। देवताओं से भी [illegible] दूसरों से भी न्यारी। तुम्हारी है ईश्वरीय एक्ट। उन्हों की है आसुरी एक्ट। फिर तुम्हारी नई दैवी एक्ट होगी जो सतयुग आदि की थी वही फिर करेंगे। अच्छा- गुडनाईट।

धारणा के लिए मुख्य सार:- §1§ सभी भक्ति रूपी सीताओं को रावण की जेल से छुड़ाना है। सेकेण्ड में मुक्ति जीवनमुक्ति की राह दिखानी है।

§2§ बाप और घर को याद करना है। देह अभिमान को छोड़ महावीर बन सेवा करनी है। विचार सागर मंथन कर सेवा की नई2 युक्तियां निकालनी है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

10-3-97 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम्हें भक्ति की रोचक बातों के बजाए रूहानी बातें सबको सुनानी है, रावण राज्य से मुक्त करने की सेवा करनी है"

प्रश्नः- सेवा में सफलता प्राप्त करने के लिए मुख्य कौन सा गुण चाहिए?

उत्तरः- निरहंकारिता का गुण। महावीर के लिए भी दिखाते हैं जहाँ भी सतसंग होता था, वहाँ जुत्तियों में जाकर बैठता था क्योंकि उसमें देह-अभिमान नहीं था, परन्तु इसमें बहादुरी चाहिए। तुम कोई भी ड्रेस पहनकर उन सतसंगों में जाकर सुन सकते हो। गुप्त वेष में जाकर उनकी सेवा करनी चाहिए।

गीतः - ओम् नमो शिवाए .... ओम् शान्ति।

यह हुई महिमा ऊंचे ते ऊंचे भगवान की। ईश्वर कहो, परमपिता परमात्मा कहो, सिर्फ ईश्वर वा भगवान कहने से पिता नहीं समझा जाता है, इसलिए परमपिता परमात्मा कहना चाहिए। वह रचयिता है इस मनुष्य सृष्टि का। अब ऊंचे ते ऊंचा बाप क्या आकर कहते हैं? कहते हैं कि पतित मनुष्य मुझे बुलाते हैं कि आकर हमको पावन बनाओ। पावन माना पवित्र। पतित-पावन भगवान को ही कहा जाता है। बरोबर वह आता है जरूर। भक्ति मार्ग में भगवान को याद करते हैं तो वह आता भी जरूर है। परन्तु वह आयेगा तब जब भक्तों को भक्ति का फल देना होगा। फल देना अर्थात् वर्सा देना, उनके लिए बहुत सहज है। एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति दे सकते हैं। कहते भी हैं कि जनक को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिली। नाम एक का ही गाया हुआ है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति अर्थात् सुख-शान्ति मिली। मनुष्य कहते भी हैं कि शान्ति सुख और बड़ी आयु चाहिए। छोटेपन में कोई मरता है तो कहते हैं अकाले मृत्यु आ गया, पूरी आयु नहीं बिताई। अब बाप जो कुछ करके गये हैं, उनका ही गायन है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति, तो जरूर पहले जीवनबन्ध में होगा। जीवनबंध कलियुग के अन्त और जीवनमुक्त सतयुग के आदि को कहा जाता है। कहते हैं जनक मिसल घर गृहस्थ में रहकर जीवनमुक्ति को पाये।

बाप समझाते हैं अक्षर ही दो हैं - राजयोग और ज्ञान। भारत का प्राचीन राजयोग तो मशहूर है। प्राचीन माना पहले-पहले, लेकिन कब? यह मनुष्य नहीं जानते क्योंकि कल्प की आयु लाखों वर्ष कह देते हैं। भारत का प्राचीन ज्ञान और योग तो सब चाहते हैं जिससे भारत स्वर्ग बनता है। अब तो भारत बहुत दुःखी है, पहले सूर्यवंशी राज्य था। अब नहीं है फिर उनको याद करते हैं कि वह राजयोग और ज्ञान किसने दिया था! यह नहीं जानते। नहीं तो बाप से वर्सा लेने में बच्चों को कोई भी तकलीफ नहीं। बाप का बने तो वर्से के लायक बनें। फिर भी मात-पिता, टीचर की शिक्षा मिलनी होती है। मुक्ति का भी वर्सा चाहिए, इसलिए गुरू करते हैं। परन्तु जीवनमुक्ति तो कभी कोई दे नहीं सकता। जब जीवनबन्ध का अन्त हो, जीवनमुक्ति की आदि हो तब ही फिर जीवनमुक्ति देने वाला आये। मनुष्यों ने सिर्फ सुना है कि सेकेण्ड में जीवनमुक्ति अथवा सेकेण्ड में रावण राज्य से रामराज्य, पतित से पावन। परन्तु कैसे; सो नहीं जानते। बाप तुम आत्माओं से बात करते हैं। यह है रूहानी शिक्षा जो सुप्रीम रूह देते हैं। वहाँ तो सब मनुष्य ही शास्त्र आदि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पढ़ते हैं। कहते हैं फलाने महात्मा ने यह ज्ञान दिया। यहाँ है प्राचीन राजयोग और ज्ञान जो परमपिता परमात्मा ने दिया था। 5 हजार वर्ष पहले। जिससे तुम सो देवी देवता बने थे। अब प्राय:लोप हो गया है। अगर लोप न हो तो सुनावे कैसे? मनुष्य पतित न बनें तो पतित पावन बाप कैसे आये? पतित बनने में 84 जन्म लेने पड़ते हैं। इसका भी सारा विस्तार बाप समझाते हैं। वर्ण भी समझाते हैं। ब्रह्मा चाहिए तो ब्रह्मा का बाप भी चाहिए। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर इन तीनों का बाप शिव है। अब ब्रह्मा द्वारा बैठ प्राचीन ज्ञान देते हैं जिससे विष्णुपुरी के मालिक बनेंगे और ब्राह्मण सो देवता बन जाते हैं। ब्राह्मण धर्म वाले मनुष्य से तुम सो देवी-देवता धर्म वाले बन रहे हो। तो पहले प्रजापिता ब्रह्मा चाहिए। कृष्ण को तो प्रजापिता नहीं कह सकते हैं। यह तो सब उल्टी बातें बना दी हैं। कृष्ण को इतनी रानियां, बच्चे आदि थे, यह है भूल। वास्तव में बच्चे हैं ब्रह्मा को, न कि कृष्ण को। ब्रह्मा ही कृष्ण बनते हैं। बस इस एक जन्म की उथल पाथल ने मनुष्यों को मुँझा दिया है। गीता का भगवान कृष्ण को कह शिव को उड़ा दिया है। सब कहते हैं ब्रह्मा को 3 मुख थे, कितने मूँझ गये हैं। शिव रचयिता को तो एकदम गुम कर दिया है। रचता ही आकर बताते हैं कि हम कैसे देवी देवता धर्म की रचना करते हैं। ऐसे नहीं परमात्मा सृष्टि कैसे रचते हैं। परमपिता परमात्मा को बुलाते ही हैं कि हे पतित-पावन आकर हम पतितों को पावन बनाओ। दुनिया को यह मालूम ही नहीं कि इस समय रावण का राज्य चल रहा है। रावण की बड़ी-बड़ी कथायें बैठ सुनाते हैं। इसको कहा जाता है रोचक बातें और यह हैं रूहानी बातें। इस समय सब सीतायें अथवा भक्तियां रावण की कैद में हैं और रावणराज्य में बहुत दु:खी हैं। अब सबको रावण राज्य से मुक्त कराना है। अब बाप आया है कहते हैं बच्चे, तुम्हारे 84 जन्म अब पूरे हुए। अब वापिस चलना है। मुझे ही बुलाते थे कि दु:ख हर्ता सुख कर्ता आओ। यह मेरा ही नाम है। कलियुग में हैं अपार दु:ख। सतयुग में हैं अपार सुख। फिर से तुमको सुख का वर्सा दिलाने अर्थ फिर से तुम्हें राजयोग और ज्ञान सिखला रहा हूँ। यह पुरानी दुनिया विनाश हो जायेगी। मनुष्य तो विनाश से बहुत डरते हैं। समझते हैं यह आपस में लड़ें ही नहीं तो शान्ति हो जाए। फिर इतने अनेक धर्मों में शान्ति कैसे होगी? बाप समझाते हैं यह इतने सब धर्म जो अब हैं - वह पहले नहीं थे, जब एक ही धर्म था तब बरोबर सुख-शान्ति का राज्य था। अब सब मांगते हैं मन को शान्ति कैसे मिले! और मन क्या चीज़ है — पहले इनको तो समझो। आत्मा में ही मन-बुद्धि है। मनुष्य की जबान बोलती है। आंख देखती है। टोटल मिलाकर कहते हैं, मनुष्य दु:खी हैं। किसको भी समझाना बड़ा सहज है कि बाप को याद करो और वर्से को याद करो। फिर झाड़ और ड्रामा की समझानी भी देनी पड़े, जिसके लिए यह चित्र बने हुए हैं। सिर्फ मनमनाभव कहने के लिए तो चित्र की दरकार नहीं। चित्रों पर समझाने में घण्टा लग जाता है। प्राचीन राजयोग भगवान ने सिखलाया और राजाई मिल गई। फिर कोई मनुष्य थोड़ेही राजयोग सिखलायेंगे। बाप और वर्से को याद करो तो ठीक है। परन्तु यह डिटेल जब तक किसको समझायें नहीं तब तक बुद्धि नहीं खुलेगी। सृष्टि चक्र को समझ नहीं सकेंगे। इसलिए बीज और झाड़, ड्रामा देखकर आये हैं। बुद्धि में यह ड्रामा आदि से अन्त तक घूमता होगा। कहने में तो सिर्फ इतना ही आयेगा कि हम ड्रामा को देखकर आये हैं। तुम भी कहते हो हम इस ड्रामा को जानते हैं। परन्तु डिटेल तो बहुत है। यह

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भी ऐसे है। बाप से सुख-शान्ति का वर्सा मिलता है फिर बुद्धि में चक्र भी है। 84 का चक्र जरूर घड़ी-घड़ी याद करना है। यह ज्ञान ब्राह्मणों को ही मिलता है जो फिर देवता बनते हैं। ब्रह्मा सो विष्णु फिर विष्णु सो ब्रह्मा। तुम जो देवी देवता थे, पुनर्जन्म लेते-लेते फिर आकर ब्राह्मण बने। हद का बाप तो सिर्फ उत्पत्ति, पालना करते हैं। विनाश तो नहीं करेंगे। विनाश अर्थात् सारी पतित दुनिया ही न रहे। सारे रावण राज्य का ही विनाश होना है। नहीं तो रामराज्य कैसे हो! वहाँ कभी रावण को जलाते नहीं। भक्ति मार्ग की कोई भी बात ज्ञान मार्ग में होती नहीं। तुम सतयुग त्रेता में प्रालब्ध भोगते हो। वह है ज्ञान की प्रालब्ध, इनको कहेंगे भक्ति की प्रालब्ध। अल्पकाल क्षण भंगुर सुख। पहले भक्ति अव्यभिचारी थी फिर व्यभिचारी होते-होते बिल्कुल ही दुःखी बन जाते हैं। सद्गति दाता एक बाप है, यह तो समझाना है कि बाप और वर्से को याद करो। याद किया और स्वर्ग की बादशाही मिली फिर नर्क में कैसे आये, यह सब बातें बैठ समझाई जाती हैं। अब तुमको सारे सृष्टि चक्र के आदि मध्य अन्त का पता पड़ गया है। तो इस समय तुम त्रिकालदर्शी बन रहे हो। उनको तुम कहेंगे कि देवतायें भी त्रिकालदर्शी नहीं थे। तो कहेंगे तब कौन थे? क्योंकि संगमयुगी ब्राह्मणों को तो कोई जानते ही नहीं। दिखाते हैं जहाँ भी सतसंग होता था तो हनूमान जाकर जुत्तियों में बैठ जाता था। अब यह बात महावीर के लिए क्यों कही है? क्योंकि तुम बच्चों में कोई देह-अभिमान तो है नहीं। समझो सतसंग में कोई ऐसी बात निकल पड़े तो तुम कह सकते हो प्राचीन सहज राजयोग और ज्ञान से सेकेण्ड में जीवनमुक्ति लेना है तो फलाने के पास जाओ। समझाने वाला तो बहादुर चाहिए। देह-अभिमान न हो। कहाँ भी जाकर बैठे, टाइम मिल जाए तो बोलना चाहिए। मजबूत होगा तो भाषण आदि करेगा कि गृहस्थ व्यवहार में रहते कैसे सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिल सकती है। परमपिता परमात्मा के सिवाए तो कोई दे न सके। कट a) यह महावीर ही समझा सकते हैं। सुनने लिए मना नहीं है। गृहस्थ व्यवहार में रहते तुम बच्चे बहुत सर्विस कर सकते हो। बोलो राजयोग सीखना हो तो ब्रह्माकुमारियों के पास जाओ। आगे चलकर तुम्हारा नाम बाला हो जायेगा, मैजॉरिटी हो जायेगी। अभी तो थोड़े हैं। भगाने का नाम भी बहुत है। कृष्ण ने भगाया, अरे! भगाने की तो कोई बात नहीं। टीचर कब पढ़ाने के लिए भगाते हैं क्या! सर्विस करने वालों को तो बहुत विचार सागर मंथन करना है और बहुत बहादुर बनना है। अच्छा -

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- सभी भक्ति रूपी सीताओं को रावण की कैद से छुड़ाना है। सेकेण्ड में मुक्ति जीवनमुक्ति की राह दिखानी है।

२- बाप और वर्से को याद करना है। देह-अभिमान को छोड़ महावीर बन सेवा करनी है। विचार सागर मंथन कर सेवा की नई नई युक्तियां निकालनी हैं।

वरदान:- रंग और रूप के साथ-साथ सम्पूर्ण पवित्रता की खुशबू को धारण करने वाले आकर्षणमूर्त भव

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ब्राह्मण बनने से सभी में रंग भी आ गया है और रूप भी परिवर्तन हो गया है लेकिन खुशबू नम्बरवार है। आकर्षण मूर्त बनने के लिए रंग और रूप के साथ सम्पूर्ण पवित्रता की खुशबू चाहिए। पवित्रता अर्थात् सिर्फ ब्रह्मचारी नहीं लेकिन देह के लगाव से भी न्यारा। मन बाप के सिवाए और किसी भी प्रकार के लगाव में नहीं जाये। तन से भी ब्रह्मचारी, सम्बन्ध में भी ब्रह्मचारी और संस्कारों में भी ब्रह्मचारी–ऐसी खुशबू वाले रूहानी गुलाब ही आकर्षणमूर्त बनते हैं।

स्लोगन:-

यथार्थ सत्य को परख लो तो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना सहज हो जायेगा।

सूचना - 1

निम्नलिखित सेवा केन्द्रों के फोन नम्बर परिवर्तित हुए हैं सो इस प्रकार हैं।

1. अवन्तिका रोहिणी (Avantika Rohini, Delhi), देहली का परिवर्तित फोन नम्बर - 011-7171371.
2. कोटा (Kota), राजस्थान का परिवर्तित फोन नम्बर - 324876.
3. सादाबाद (Sadabad), उतरप्रदेश का नया फोन नम्बर — 05661 - 80149.
4. तिपतूर (Tiptur), कर्नाटक का नया फोन नम्बर - —— 08134 - 52313.
5. तिरूअन्नतपुरम (Thiruvananthapuram), केरल का परिवर्तित फोन नम्बर - 320257.

सूचना - 2

निम्नलिखित सेवाकेन्द्रों के मकान बदली हुए हैं, अत: नया पता लिख रहे हैं।

1. BRAHMA KUMARIS
Tali Gali,
P.O.- HALKARNI - 416506.
Taluk - GADHINGLAZ
DIST.- KOLHAPUR (MAH).

2. BRAHMA KUMARIS
Ward No.- 20,
Near Govt. Hospital,
LAXMANGARH - 332311.
DIST.- SIKAR (RAJ).

3. BRAHMA KUMARIS
Near Banas Ice Factory,
Akesan Road, Highway,
PALANPUR - 385001(GUJ.)

4. BRAHMA KUMARIS
28, Alkapuri Society,
Gayatri Road,
PATAN - 384265 (GUJ.)

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

प्रातः क्लास 8-9-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे बैठे हुये है। इसको कहा जाता है याद की यात्रा। बाप कहते हैं योग अक्षर काम में लाओ नहीं। बाप को याद करो। यह है आत्माओं का बाप, पतित पावन परमपिता। उस पतित पावन बाप को ही याद करना है। बाप कहते हैं देह के सभी धर्म छोड़ एक बाप को याद करो। कहते हैं ना आप मुये तो मर गई दुनिया। देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध है, जो भी देखने में आते हैं उनको याद न करो। एक बाप को ही याद करो तो तुम्हारे पाप जल जायेंगे। तुम जन्म-जन्मान्तर के पापात्मायें हो ना। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। सतयुग है पुण्यात्माओं की दुनिया। अभी पाप सभी कट कर सच कैसे जमा हो। बाप की याद से ही जमा होगा। आत्मा में मन बुधि है ना। तो आत्मा को बुधि से याद करना है। बाप कहते हैं तुम्हारे जो भी मित्र-सम्बन्धी आदि हैं उन सब को भूलो। वह सब एक दो को दुःख देने वाले हैं। एक तो विकारी कांटा बनते हैं जो काम कटारी चलाते हैं। दूसरा फिर पाप क्या करते हैं, बाप को कुत्ते बिल्ले ठिक्कर भित्तर में कह देते। जो बाप सर्व की सदगति दाता है, बच्चों को बेहद का सुख देते हैं अर्थात स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। यह

कट

a) पाठशाला है ना। तुम आते हो हो पढ़ने। यह है तुम्हारी एमआबजेक्ट। और कोई ऐसे कह न सके। तुम जानते हो अभी हमको पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनना है। हम ही विश्व के मालिक थे। पूरे 5,000 वर्ष हुये। देवी-देवतायें विश्व के मालिक थे ना। कितना ऊंच पद है। जरूर यह बाप ही बनायेंगे। बाप को ही परमात्मा भी कहते हैं। उनका असली नाम है शिव। फिर बहुत नाम रख दिये हैं जैसे बम्बई में बबुल नाथ कहते हैं। अर्थात कांटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाने वाला। नहीं तो असली नाम उनका है ही 'शिव'। इनमें प्रवेश करते हैं तब भी नाम शिव ही है। तुमको इनको याद नहीं करना है। यह तो देहधारी है। तुमको याद करना है विदेही को। तुम्हारी आत्मा जो पतित बनी है उनको पावन बनाना है। कहते भी हैं महानात्मा, पापात्मा। महान परमात्मा नहीं कहते हैं। अपन को परमात्मा या ईश्वर कोई कह न सके। कहते ही हैं महात्मा। अर्थात महान आत्मा। सन्यासी सन्यास करते हैं इसलिए पवित्र आत्मा है। बाप ने समझाया है वह भी पुनर्जन्म सब लेते हैं। देहधारियों को पुनर्जन्म जरूर लेना ही है। विकार से जन्म ले फिर जब बड़े बालिग बन जाते हैं तो सन्यास कर लेते हैं। देवतायें तो ऐसे नहीं करते हैं। वह तो स्वर पवित्र हैं। उनको तो गृहस्थ घर में जन्म लेना पड़े। उनको

b) फिर भी आना है हद के सन्यासी। महान-आत्मा। न कि महान परमात्मा। बाप ने समझाया है जो अपन को परमात्मा कहलाए अपने को पूजा कराते हैं वह हिरण्यकश्यपु जैसे दैत्य है। यह है आसुरी सम्प्रदाय। अभी तुमको आसुरी से दैवी सम्प्रदाय बनाते हैं। दैवीगुण धारण करने से ही दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। आसुरी गुणों वाला है आसुरी सम्प्रदाय। दैवी सम्प्रदाय रहते हैं सतयुग में। आसुरी सम्प्रदाय रहते हैं कलियुग में। अभी है संगम युग। अभी तुमको दाखिला है, कहते हैं अब फिर तुमको दैवी सम्प्रदाय बनना है जरूर। तुम यहां आये ही हो दैवी सम्प्रदाय बनने लिये। दैवी सम्प्रदाय में अथाह सुख है। वह है सुख की दुनिया, कलियुग है दुःख की दुनिया। पहला नम्बर दुःख है एक दो को काम कटारी चलाना। काम कटारी से क्रोस करना। इस आसुरी दुनिया को कहा ही जाता है क्रोस-धार। हिंसक कहते हैं ना। देवतायें तो हैं अहिंसक। हिंसक बनते हैं तो बाप को भूल जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे-मीठे रूहानी बच्चों बाप को याद करो। तुम्हारे जो भी गुरुलोग हैं वह सभी देहधारी है। अभी तुम आत्माओं को बाप परमात्मा को याद करना है। वह बाप है परम सुख देने वाला, दुःख हर्ता सुखकर्ता। सुख तब मिलेगा जब तुम पुण्यात्मा बनेंगे। 84 जन्मों के बाद ही तुम पापात्मा बन जाते हो। अभी तुम जमा करते हो, घाटे को खत्म करते हो योगबल से। इस याद की यात्रा से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम विश्व के मालिक तो थे ना। फिर वह कहां गये। यह भी बाप ही बताते हैं तुमने 84 जन्म लिये हैं सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, वैश्यवंशी, शूद्रवंशी। अभी हो ब्राह्मण। भारत का रूप भगवान देते हैं। भगवान कोई देहधारी को नहीं कहा जाता। भगवान् तो है ही

c) निराकार शिव। उनकी शिवजयन्ति शिवरात्रि भी मनाते हैं तो जरूर आते हैं ना। परन्तु कहते हैं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जन्म नहीं लेता हूं। मुझे शरीर का लोन लेना पड़ता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। अगर होता तो उनका होता। ब्रह्मा नाम तो इनका अपना है ना। इसने सन्यास किया है तब इनका नाम ब्रह्मा रखा है। तुम हो

d) ब्रह्माकुमार-कुमारियां। नहीं तो ब्रह्मा कहां से आया। ब्रह्मा वल्द? क्योंकि ब्रह्मा भी क्रियेशन है ना। क्रियेटर तो एक ही है। ब्रह्मा वल्द शिव। शिव बाबा अपने बच्चे में प्रवेश कर इन द्वारा तुमको ज्ञान देते ब्र०कु० ब्र०कु० भी इनके बच्चे हैं। निराकार बाप के सभी बच्चे निराकार आत्मायें। जो फिर यहां शरीर धारण कर बजाते हैं। बाप कहते हैं मैं आता हूं पतितों को पावन बनाने। मैं इस शरीर का लोन लेता हूं। शिवभगवान है ना। कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। भगवान तो एक ही है। कृष्ण की महिमा ही अलग है। उनको कहा जाता है सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण मर्यादा पुरुषोत्तम अहिंसा परमोधर्म वाला पहला नम्बर का देवता। राधे कृष्ण है जो स्वयंवर बाद ल०ना० बनते हैं। परन्तु यह कोई भी नहीं जानते हैं। राधे कृष्ण का किसको पता नहीं है। वह फिर कहां चले गये। राधे कृष्ण ही स्वयंवर बाद फिर ल०ना० बनते हैं। दोनो अलग अलग राजाओं के हैं। वहां अपवित्रता का नाम नहीं। क्योंकि 5 विकारों रूपी रावण ही नहीं है ही रामराज्य। द्वापर कहा जाता है रावण राज्य।

अभी बाप आत्माओं को कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कटजावेंगे। तुम सतोप्रधान थे, अभी तमोप्रधान हो। घाटा पड़ा है। फिर जमा करना है। भगवान को भी व्यापारी कहा जाता है। कोई बिरला करे व्यापार और जादूगर भी उनको कहते हैं, कमाल करते हैं जो सारी दुनिया की सदगति कर देते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। जादू का खेल है ना। मनुष्य मनुष्य को दे न सके। तुम 63 जन्म भक्ति करते आ. कोई ने सदगति को पाया है? कोई है जो सदगति दे? हां नहीं सकता। एक भी वापिस जा नहीं सकता। सबका बाप ही आकर सभी को वापस ले जाते हैं। कलियुग में अनेक राजायें हैं। सतयुग में तो तुम थोड़े ही राज्य करते हो। बाकी सभी आत्मायें मुक्तिधाम में चली जाती हैं। तुम जाते हो जीवन मुक्ति वाया मुक्तिधाम। बाकी सभी मुक्ति में। यह चक्र फिरता रहता है। अभी तुम आत्माओं को दर्शन हुआ है इस सृष्टि चक्र का रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का। और कोई भी इस ज्ञान को नहीं जानते हैं। तुम ही इस ज्ञान से नर से ना० बनते हो। देवताओं की राजधानी स्थापन हो गई फिर तुमको ज्ञान की दरकार नहीं रहती। आधा कल्प यानि आधा कल्प है भक्ति। भक्तों को भगवान ने फल दिया है आधा कल्प सुख का फिर रावण-राज्य में दुःख शुरु होता है। आस्ते2 सीढ़ी उतरते हैं। तुम सतयुग में हो तो भी एक दिन जो बीता सीढ़ी नीचे उतरना ही होता है। तुम 16कला सम्पूर्ण बनते हो। फिर त्रेता में दो कला कम हो जाती है। सीढ़ी उतरते ही रहते सेकण्ड व सेकण्ड टिक2 होतीजाती है। सेकण्ड, मिनट, घंटे, दिन, वर्ष बीतते2 इस जगह आकर पहुंचे हो। वहां भी ऐसे ही घड़ियां बीतती जावेंगी। हम सीढ़ी चढ़ते हैं फ्टसेतैर भाणे सर्व का भला। फिर सीढ़ी उतरते हैं। बाप कहते हैं मैं सभी को सदगति करने वाला हूं। मनुष्य मनुष्य कर गति-सदगति कर न सके। क्योंकि वह विष से पैदा होते हैं। पतित हैं। वहां तो पतित कोई होता ही नहीं। वास्तव में कृष्ण को ही सच्चा महात्मा कहेंगे। यह महात्मा लोग फिर भी विष से जन्म लेते हैं पीछे सन्यास करते हैं। वह तो है देवता। देवतायें पवित्र हैं। उनमें कोई विकार नहीं होता। उनको ही कहा जाता है निर्विकारी दुनिया। इनको कहा जाता विकारी दुनिया। नो प्युरिटी। चलन कितनी खराब है। देवताओं के चलन तो बड़े ही अच्छे होते हैं। सभी उन्हें नमस्ते करते हैं। कैरेक्टर्स उन्हों की अच्छी है तब तो अपवित्र मनुष्य उन पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। भारत में सभी कैरेक्टर्स खराब हैं। लड़ना-झगड़ना क्या2 लगा पड़ा है। बड़ा हंगामा है। अभी तो जगह भी नहीं। चाहते हैं मनुष्य कम हो। परन्तु यह तो बाप का काम है। सतयुग में बहुत ही थोड़े मनुष्य। इतने सभी शरीरों की होलिका हो जाती। बाकी सभी आत्मायें चली जाती हैं। अपने स्वीट होम। जो नम्बरवार भोगते हैं। जो पूरा पुरुषार्थ कर विजय माला का दाना बनते हैं वह सजाएं से छूट जाते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

माला एक की तो नहीं होता है ना। जिसने उन्हों को ऐसा बनाया है वह फूल है। फिर है यह प्रवृत्ति मार्ग है ना। तो जोड़ियों की माला है। सिंगल की माला नहीं होती। सन्यासियों की माला होती नहीं। यह है ही निवृत्ति मार्ग वाले। वह प्रवृत्ति मार्ग वालों को ज्ञान दे न सके पवित्र बनने लिये। उनका है ही हद का सन्यास। वह है ही हठयोग। यह है राजयोग। राजाई प्राप्त करने लिये तुमको बाप सिखलाते हैं। हर 5000 वर्ष बाद बाप आते हैं। आधा कल्प तुम राज्य करते हो सुख में। फिर रावण-राज्य होता है तो तुम आस्ते2 दुःखी होते जाते हो। इनको कहा ही जाता है सुख दुःख का खेल। बाप आकर पाण्डवों को जीत पहनाते हैं। अभी तुम हो पण्डे घर जाने की यात्रा कराते हो। वह यात्रा तो मनुष्य जन्म-जन्मान्तर करते आये हैं। अभी तुम्हारी यात्रा है घर जाने की। बाप आकर सभी को मुक्ति जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं। तुम जीवनमुक्ति में आते हो बाकी सभी मुक्ति में चले जाते हैं। हाहाकार के बाद फिर जयजयकार होगी। रक्त की नदियां के बदले फिर घी की नदियां बहती हैं। अभी है ही कलियुग का अन्त। आफ्तें तो बहुत ही आनी हैं। तुम फिर उस समय बाप की याद की यात्रा में रह नहीं सकेंगे। क्योंकि हंगामा बहुत हो जावेगा। इसलिए बाप कहते हैं अभी याद की यात्रा को बढ़ाते रहो तो पाप भस्म हो जावे। और फिर जमा भी करो। सतोप्रधान तो बनो। सतोप्रधान बनने की युक्ति पतितपावन परमपिता

e) परमात्मा ही आकर बताते हैं। बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरुषोत्तम संगम युग पर आता हूं। यह तो बहुत छोटा युग ब्राह्मणों का युग है। ब्राह्मणों की निशानी चोटी होती है। ब्राह्मण देवता... यह चक्र फिरता ही रहता है। ब्राह्मणों का बहुत छोटा युग होता है। 50-60 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। तुम बच्चे भी हो

f) स्टूडेन्ट भी हो, फालोअर्स भी हो। एक के ही। ऐसा कोई मनुष्य होता नहीं जो बाप भी हो शिक्षा देने वाला टीचर भी हो। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान देता हो फिर साथ भी ले जाये। ऐसा कोई मनुष्य हो न सके। यह बातें अभी तुम समझते हो। सतयुग में भी पहले2 तो बहुत छोटा झाड़ होता है। बाकी सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। बाप को ही कहा जाता है सर्व की सदगति दाता। बाप को बुलाते भी हैं कि हे पतितपावन आओ। और दूसरे तरफ फिर कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। ठिक्कर भित्तर में है। बेहद के बाप का अपकार करते हैं ना। उनको सर्वव्यापी कहना, कच्छ अवतार-मच्छ अवतार कह देते। 84 लाख जन्म तो छोड़ो। परन्तु उन से भी जास्ती कण2 भित्तर2 में कह देते। उनको तो कोई हिसाब ही न हो सके। यह तो पाप करते हैं ना। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनकी ग्लानी करते हैं। उनको पत्थर भित्तर में कह देते। तब बाप कहते हैं यदा यदा हि... भारत में ही धर्म की ग्लानी होती है। बाप को भित्तर ठिक्कर में डाल दिया है तो तुम्हारी भी बुद्धि पत्थर हो गई है। मुझे सभी गाली देते हैं। यह है रावण का संगदोष। सत का संग तारे, कुसंग बोरे। रावण राज्य शुरू होता है तो गिरने लग पड़ते हो। बाप आकर तुम्हारी चढ़ती कला करते हैं। बाप आकर मनुष्यों को देवता बनाते हैं। तो सर्व का भला हो जाता है। अभी तो सभी यहां हैं। बाकी भी जो रहे हुये हैं वह आते रहते हैं। जब तक निराकारी दुनिया से सब आत्मायें आ जावेंगी, तब तक तुम इम्तहान में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पास हो जावेंगे। इनको कहा ही जाता है रूहानी कालेज। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को पढ़ाने आते हैं। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। रावण राज्य आया तो फिर शरीर छोड़ कोई अपवित्र राजा बने। और पवित्र देवताओं के माथा झुकाने लगे। आत्मा ही पतित अथवा पावन बनती है। आत्मा पतित है तो शरीर भी पतित मिलता है। सच्चा सोना है खाद पड़ती है तो खाद का जेवर हो जाता है। अभी आत्मा से खाद निकले कैसे। योगाग्नि चाहिए ना। उन से ही तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। चांदी तांबा लोहा पड़ गई है यह है खाद। गोल्डेन एज से आयरन एज में आ गये। वह खाद निकले कैसे। यह है योगाग्नि। काम चिता पर बैठते हो। आगे थे काम चिता पर। बाप ज्ञान चिता पर बिठाते हैं। सिवाय ज्ञान सागर बाप के और कोई ज्ञान चिता पर बिठा न सके। मनुष्य भक्ति में ... परिक्रमा आदि करते हैं। किसको भी जानते नहीं। अभी तुम सभी ... आत्म ... हो। ... प्रोग्राम ... खलास हो जाती है। ...

compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2-6-84 प्रातः क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-याद की यात्रा से ही तुम्हारी कमाई जमा होती है, तुम घाटे से फायदे में आते हो, विश्व के मालिक बनते हो"

प्रश्न:-सत का संग तारे कुसंग बोरे, इसका अर्थ क्या है?
उत्तर:-जब तुम बच्चों को सत का संग अर्थात् बाप का संग मिलता है जिससे तुम्हारी चढ़ती कला हो जाती है। रावण का संग कुसंग है, उसके संग से तुम नीचे गिरते हो। अर्थात् रावण तुम्हें डुबोता है। बाप पार ले जाता है। बाप की भी कमाल है जो सेकण्ड में ऐसा संग देते जिससे तुम्हारी गति सद्गति हो जाती है। इसलिए उसे जादूगर भी कहा जाता है।

ओमशान्ति। बच्चे बैठे थे इसको कहा जाता है याद की यात्रा। बाप कहते हैं योग अक्षर काम में न लाओ। बाप को याद करो। वह है आत्माओं का बाप। परमपिता परमात्मा, पतित पावन। तुम पतित पावन बाप को ही याद करना है। बाप कहते हैं देह के सब सम्बन्ध छोड़ एक बाप को याद करो। कहते हैं मा आप मुये मर गई दुनिया। देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध आदि देखने में आते हैं उनको याद न करो। एक बाप को ही याद करने। तो तुम्हारे पाप जल जायेंगे। तुम जन्म जन्मान्तर की पाप आत्मायें हो ना। यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया। सतयुग है पुण्य आत्माओं की दुनिया। अब पाप सब कटकर पुण्य कैसे जमा हो। बाप की याद से ही जमा होगा। आत्मा में मन बुद्धि है ना। तो आत्मा को बुद्धि से याद करना है। बाप कहते हैं तुम्हारे जो मित्र सम्बन्धी आदि हैं उन सबको भूलो। वह सब एक दो को दुख देते हैं। एक तो विकारी काटे बनाते हैं। जो काम कटारी चलाते हैं। दूसरा फिर पाप क्या करते हैं जो बाप को कुत्ते बिल्ली ठिक्कर भित्तर में कह देते हैं। वह बाप तो सर्व का सद्गति दाता है, बच्चों को बेहद का सुख देते हैं अर्थात् स्वर्ग का
a) मालिक बनाते हैं। यह पाठशाला है। तुम आये हो पढ़ने। यह मोना0 है तुम्हारी एम आबजेक्ट और कोई ऐसे कह न सके। तुम जानते हो अभी हमको पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनना है। हम विश्व के मालिक थे। पूरे 5 हजार वर्ष हुए। दैवी देवतायें विश्व के मालिक हैं ना। कितना ऊँच पद है। जरूर यह बाप ही बनायेंगे। बाप को ही परमात्मा कहते हैं। उनका असुल नाम है शिव। फिर बहुत नाम रख दिये हैं। जैसे बाम्बे में बाबुरी नाथ का मन्दिर है अर्थात् काँटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाने वाला है। नहीं तो उनका असली नाम एक ही शिव है। इनमें प्रवेश करते हैं तो भी नाम शिव ही है। तुमको इन (ब्रह्मा) को याद नहीं करना है। यह तो देहधारी है। तुमको याद करना है विदेही को। तुम्हारी आत्मा पतित बनी है। उनको पावन बनाना है। कहते भी हैं महान आत्मा, पाप आत्मा। महान परमात्मा नहीं कहते हैं। अपने को परमात्मा वा ईश्वर भी कोई कह न सके। कहते ही हैं महात्मा पवित्र आत्मा। सन्यासी सन्यास करते हैं इसलिए पवित्र आत्मा हैं। बाप ने समझाया है वह भी सब पुनर्जन्म लेते हैं। देहधारियों को पुनर्जन्म जरूर लेना पड़ता है। विष से जन्म ले फिर जब बड़े बालिग हो जाते हैं तो सन्यास कर लेते हैं। देवतायें तो ऐसे नहीं करते हैं। वह तो एवर पवित्र हैं। उन्हों को गृहस्थी घर में जन्म लेना
b) पड़े। उनको कहा ही जाता है हद के सन्यासी महान आत्मा न कि परमात्मा। बाप अब तुमको आसुरी से दैवी बनाते हैं। दैवी गुण धारण करने से ही दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। दैवी सम्प्रदाय रहते हैं सतयुग में। आसुरी सम्प्रदाय रहते हैं कलियुग में। अभी है संगम युग। अब तुमको बाप मिला है। कहते हैं अब तुमको फिर दैवी सम्प्रदाय बनना है जरूर। तुम यहाँ आये ही हो दैवी सम्प्रदाय बनने। दैवी सम्प्रदाय में अथाह सुख है। इस दुनिया को कहा जाता है-पतित दुनिया। विशश दुनिया। देवतायें तो हैं वाइसलेस। विशश बनते हैं तो बाप को ही भूल जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 रूहानी बच्चों बाप को याद करो। तुम्हारे जो गुरु लोग हैं वह भी सब देह धारी हैं। अभी तुम आत्माओं को परमात्मा बाप को याद करना है। सुख तब मिलेगा जब तुम पुण्य आत्मा बनेंगे। 84 जन्मों के बाद ही तुम पाप आत्मा बन जाते हो। अभी तुम जमा करते हो। घाटे को खत्म करते हो योगबल से। इस याद की यात्रा से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम विश्व के मालिक थे सही ना। वह फिर कहाँ गये? यह भी बाप ही बताते हैं। तुमको 84 जन्म लिए सूर्यवंशी ... चन्द्रवंशी,

बने। कहते भी हैं भक्ति का फल भगवान देते हैं। भगवान कोई देहधारी को नहीं कहा जाता वह तो है ही निराकार शिव। उनकी शिव रात्रि मनाते हैं तो जरूर आते हैं ना। परन्तु c) कहते हैं मैं तुम्हारे सदृश्य जन्म नहीं लेता हूं। मुझे शरीर का लोन लेना पड़ता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। अगर होता तो उनका नाम होता। ब्रह्मा नाम तो इनका अपना है इसने सन्यास किया है तब नाम ब्रह्मा रखा है। तुम को ब्र०कु०कुमारियां। नहीं तो ब्रह्मा कहां से आया। ब्रह्मा बेटा शिव2 क्योंकि ब्रह्मा भी क्रियेटर है ना। क्रियेटर तो एक है। ब्रह्मा बेटा शिव का रचना। अपने बच्चे में प्रवेश कर इन द्वारा तुमको ज्ञान देते हैं। d) ब्र०कु०कु० गए सब उनके बच्चे हैं। निराकार बाप के सब हैं निराकार बच्चे। आत्मायें। जो फिर यहां आकर शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। बाप कहते हैं मैं आता ही हूं पतितों को पावन बनाने। मैं इस शरीर का लोन लेता हूं। शिव भगवानुवाच है ना। कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। भगवान तो एक ही है। कृष्ण की महिमा ही अलग है। पहला नम्बर देवता राधे कृष्ण जो स्वयंवर बाद फिर लक्ष्मी० बनते हैं। परन्तु यह कोई जानते नहीं। राधे कृष्ण का किसको पता नहीं वह फिर कहां चले जाते हैं। राधे कृष्ण ही स्वयंवर बाद फिर लक्ष्मी०बनते हैं। दोनों अलग2महाराजाओं के हैं। वहां अपवित्रता का नाम नहीं। क्योंकि 5 विकारों रूपी रावण ही नहीं है। है ही रामराज्य। इनको कहा जाता है रावणराज्य। अब बाप आत्मा को कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। तुम सतोप्रधान थे। अब तमोप्रधान बने हो। घाटा पड़ा है फिर जमा करना है। भगवान को व्यापारी भी कहा जाता है। कोई बिरला उनसे व्यापार करे। जादूगर भी उनको कहते हैं। कमाल करते हैं जो सारी दुनिया की सद्गति कर देते हैं। सबको मुक्ति जीवनमुक्ति देते हैं। जादू का खेल है ना। मनुष्य2 को दे नहीं सकते। तुम 63जन्म भक्ति करते आये हो। कोई ने सद्गति को पाया है? कोई है जो सद्गति दे? हो नहीं सकता। एक भी वापस जा नहीं सकता। बेहद का बाप ही आकर सबको वापस ले जाते हैं। कलियुग में अनेक राजायें हैं। वहां तुम थोड़े ही राज्य करते हो। बाकी सब आत्मायें मुक्तिधाम में चली जाती हैं। तुम जाते ही जीवनमुक्ति में वाया मुक्तिधाम। यह चक्र फिरता रहता है। अभी तुम आत्माओं को दर्शन हुआ है इस सृष्टि चक्र का। रचता और रचना के आदि मध्य अन्त का। तुम ही इस ज्ञान से नर से नारायण बनते हो। देवताओं की राजधानी स्थापन हो गई फिर तुमको ज्ञान की दरकार नहीं रहेगी। आधाकल्प ज्ञान आधाकल्प भक्ति। भक्तों को भगवान ने फल दिया। आधाकल्प सुख का। फिर रावण राज्य में दुख शुरू होता है। आहिस्ते2 सीढ़ी उतरते हैं। तुम सतयुग में हो तो भी एक दिन जो बोला सीढ़ी उतरनी ही होती है। तुम 16कला सम्पूर्ण बनते हो। फिर त्रेता में दो कला कम हो जाती है। सीढ़ी उतरते ही रहते हैं। सेकण्ड ब सेकण्ड टिक2होती है। उतरते ही रहते हैं। उतरते2 इस जगह पर आकरके पहुंचे हो। वहां भी तो ऐसे ही घड़ियां बीतती जायेंगी। हम सीढ़ी चढ़ते हैं एकदम फट से तेरे भाने सर्व का भला फिर सीढ़ी उतरनी है जो मिसल। बाप कहते हैं मैं सर्व की सद्गति करने वाला हूं। मनुष्य2 की सद्गति कर न सकें। क्योंकि वह विष से पैदा होते हैं। पतित हैं। वहां तो पतित कोई होता ही नहीं। वास्तव में कृष्ण को ही सच्चा महात्मा कह सकते हैं। यह महात्मा लोग तो फिर भी विष से जन्म ले फिर सन्यास करते हैं। वह तो है देवता। देवतायें तो सदैव पवित्र हैं। उनमें कोई विकार होता नहीं। इनको ही कहा जाता है निर्विकारी दुनिया। इनको कहा जाता है निर्विकारी दुनिया। नो प्यूरिटी। चलन कितनी खराब है। देवताओं की चलन तो बड़ी अच्छी होती है। सब उनको नमन करते हैं। कैरेक्टर्स उनके अच्छे हैं तब तो अपवित्र मनुष्य उन पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। अभी तो लड़ना झगड़ना क्या लगा पड़ा है। बड़ा हंगामा है। अभी तो रहने की भी जगह नहीं है। चाहते हैं मनुष्य कम हों। परन्तु यह तो बाप का ही काम है। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। इतने सब शरीरों की वृद्धि का हो जाती है। बाकी सब आत्मायें चली जाती हैं। अपने स्वीट होम में। माला में सम्बन्धित गूंथी है जरूर। जो पूरा पुरुषार्थ कर निजम गाला का दाना बनते हैं वह माला में टूट जाते हैं। माला एक की तो नहीं है। जिसने उनको ऐसा बनाया वह है एक। फिर है मेल प्रवृत्ति मार्ग है ना। तो जोड़ी की माला है। सिंगल की माला नहीं हो सकती। ब्रह्म मणियों की माला होती नहीं। वह है निवृत्ति मार्ग वाले। वह

PDF compressor ... VISION PDFCompressor

प्रवृत्ति मार्ग वालों को ज्ञान दे न सकें। पवित्र बनने के लिए। उनका है हद का सन्यास। वह है ही हठयोगी। यह है राजयोग। राजाई प्राप्त करने के लिए बाप तुमको सिखलाते हैं। हर 5 हजार वर्ष बाद आते हैं। आधाकल्प तुम राजाई करते हो सुख में। फिर रावण राज्य होता है। आहिस्ते2 तुम दुःखी होते जाते हो। इसको कहा ही जाता है सुख दुःख का खेल। तुम पाण्डवों को जीत पहनाते हैं। अब तुम हो पण्डे। घर जाने की यात्रा कराते हो। वह यात्रायें तो मनुष्य जन्म जन्मान्तर करते आये हैं। अब तुम्हारी यात्रा है घर जाने की। बाप आकर सबको मुक्ति जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं। तुम जीवनमुक्ति में बाकी सब मुक्ति में चले जायेंगे। हाहाकार के बाद फिर जयजयकार हो जाती है। रक्त की नदियाँ बहती हैं फिर घी की नदियाँ बहेंगी। अभी है कलियुग का अन्त। आफतें तो बहुत आने की हैं। फिर उस समय तुम याद की यात्रा में रह नहीं सकेंगे। क्योंकि हंगामा बहुत हो जायेगा। इसलिए बाप कहते हैं अब याद की यात्रा को बढ़ाते जाओ तो पाप भस्म हो जाएं। और फिर जमा भी करो। सतोप्रधान तो बनो। बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरूषोत्तम संगमयुग

e) पर आता हूँ। यह तो बहुत छोटा सा ब्राह्मणों का युग है। ब्राह्मणों की निशानी चोटी होती है। ब्राह्मण देवता... यह चक्र फिरता ही रहता है। ब्राह्मणों का बहुत छोटा कुल

f) होता है। 40-50 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। तुम बच्चे हो स्टूडेन्ट भी हो। फालोअर्स भी हो। एक के हो। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो बाप भी हो, शिक्षा देने वाला टीचर भी हो, सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान देता हो। फिर साथ भी ले जाए। ऐसा कोई मनुष्य न हो सके। यह बातें अभी तुम समझते हो। सतयुग में भी पहले2 बहुत छोटा झाड़ होता है। बाकी सब शान्तिधाम में चले जायेंगे। बाप को ही कहा जाता है सर्व का सद्गति दाता। बाप को बुलाते भी हैं कि हे पतित पावन बाबा आओ और दूसरे तरफ फिर कहते हैं परमात्मा कुत्ते बिल्ली में है। बेहद के बाप का अपकार करते हैं। कण2 में कहना उनका तो कोई हिसाब ही नहीं हो सकता। यह तो पाप करते हैं ना। बाप जो विश्व का मालिक बनाते उनको डिफेम करते हैं। उनको पत्थर भित्तर में कह देते हैं। तब बाप कहते हैं यदा यदाहि... भारत में ही धर्म की ग्लानि होती है। बाप को पत्थर ठिक्कर में डाल दिया है। तो तुम्हारी पत्थर बुद्धि हो गई है। मुझे सब गाली देते हैं। यह है रावण का संगदोष। सत का संग तारे कुसंग बोरे... रावण राज्य शुरू होता है तो तुम गिरने लग पड़ते हो बाप आके तुम्हारी चढ़ती कला करते हैं। बाप आकर मनुष्यों को देवता बनाते हैं तो सर्व का भला हो जाता है। अभी तो सब यहाँ हैं। बाकी भी जो रहे हुए हैं वह आते रहते हैं। जब तक निराकारी दुनिया से सब आत्मायें आ जायेंगी तब तक तुम इम्तहान में भी नम्बरवार पास होते जायेंगे। इनको कहा जाता है रूहानी कालेज। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को पढ़ाने आते हैं। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। रावण राज्य आया तो फिर शरीर छोड़ कोई अपवित्र राजा बनें। और पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकने लगे। आत्मा ही पतित अथवा पावन बनती है। आत्मा पतित तो शरीर भी पतित मिलता है। सच्चा सोना में खाद पड़ती है तो खाद का जेवर हो जाता है। अब आत्मा से खाद निकले कैसे? उसके लिए योग अग्नि चाहिए। उनसे ही तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। चाँदी ताँबा लोहा पड़ गये हैं। यह है खाद। गोल्डन एज से आइरन एज में आ गये। आत्मा सच्चा सोना थी अब झूठी बन गई है। अब खाद निकले कैसे। यह है योग अग्नि। ज्ञान चिता पर बैठे हो। आगे थे काम चिता पर। बाप ज्ञान चिता पर बिठाते हैं। सिवाए ज्ञान सागर बाप के और कोई ज्ञान चिता पर बिठा न सके। मनुष्य भक्ति मार्ग में अन्धश्रद्धा से कितनी पूजा करते रहते हैं। किसको भी जानते नहीं। अभी तुम सबको जान गये हो। तुम सो देवता बनते हो तो फिर पूजा की बात ही खत्म हो जाती है। जब रावण राज्य शुरू होता है तब भक्ति शुरू होती है। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

PDF compressor ... copy of CVISION PDFCompressor

15-10-1969 [illegible] मिलती है? [illegible] [illegible] मिलती है? [illegible]

दो अक्षर गाये जाते हैं निमंत्रण और [illegible]। [illegible] चला जाता है तो निमंत्रण [illegible] जाता है। [illegible] जाते हैं तो दो भी निमंत्रण हो जाता है। [illegible] हो जाता है। अभी तुम समझते हो कि [illegible] को [illegible] एक है। वहाँ दुःख की बात नहीं। मृत्यु का नाम नहीं होता है। [illegible] ही नहीं पड़ता है। [illegible] दुःख होता है ना। ऐसे कहते हैं। साधु सन्त हैं ऐसे नहीं कि उनको दुःख नहीं होता है। [illegible] बन [illegible] है। बिमार रोगी भी होते हैं। यह है ही रोगी दुनिया [illegible] [illegible]। [illegible] भारत को फिर से [illegible] पर [illegible] बनाते हैं। भारत के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की भी जरूर डिपार्टमेन्ट होगी। [illegible] [illegible] [illegible] रखा जाता है उनसे भी [illegible] का पता पड़ता है। इसलिये ही बाबा ने भी [illegible] [illegible] देखो। [illegible] [illegible] हैं। [illegible] कोई भूल तो नहीं करते हैं? यह तो [illegible] बात तो बाप को याद [illegible] [illegible] [illegible] सुधरता है। [illegible] वही होती है एक की ही याद हो। यह तो है ज्ञान [illegible] नहीं [illegible] जाता [illegible] है तो तुम्हारा [illegible] सुधरता है। यह 84 जन्मों का चक्र तुम्हारे सिवाय और कोई [illegible] नहीं [illegible] [illegible] ही समझाना है। विष्णु और ब्रह्मा। शंकर का तो [illegible] नहीं करेंगे। तुम जानते हो ब्रह्मा और विष्णु

a) इनका आपस में क्या सम्बन्ध है कोई भी नहीं जानते हैं। दिखाते हैं कि विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला [illegible] ब्रह्मा तो विष्णु से निकला। फिर विष्णु कहाँ से निकला? यह कोई बता नहीं सकते हैं। यह तो तुम [illegible] समझानी है कि दोनों का आपस में क्या कनेक्शन है। तुम जानते हो कि विष्णु के दो रूप हैं [illegible] हो फिर भी 84 जन्म लेते हैं। 84 जन्मों में आपेही [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। प्रजापिता ब्र.

b) [illegible] जरूर यहाँ ही होगा ना। बहुत करके तो इस पर ही मूँझते हैं। ब्रह्मा तो है पतित-पावन बाप का तो जरूर रथ पतित ही होगा [illegible] भी है ना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] दुनिया में आया। यह सिद्ध हो जाता है कि जरूर पतित [illegible] दुनिया में [illegible] भी पावन नहीं हो सकता है। अभी तुम बच्चों को समझाया है कि 84 जन्म [illegible] लेते हैं। कोई तो होंगे ना। [illegible] [illegible] उनके ही 84 जन्म होंगे। सतयुग आदि [illegible] [illegible] देवी देवता [illegible] [illegible] मनुष्यों का [illegible] भी ख्यालात नहीं [illegible] कि [illegible] [illegible] लेते। [illegible] की बात है पुनर्जन्म तो सभी मानते हैं। 84 पुनर्जन्म [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 84 जन्म सभी तो नहीं [illegible] बार थोड़े ही [illegible] आवेंगे। और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं। बाप ही बैठ समझाते हैं कि तुम [illegible] 84 जन्म लेते हो। [illegible] 84 जन्म लेते हैं। [illegible] पर [illegible] बजाते हैं। [illegible] 84 की कहानी बाप तुम [illegible] बैठ [illegible] हैं। [illegible] [illegible] पढ़ाई है 84 का चक्र जानना तो बिल्कुल ही [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। तुम्हारे में कोई नये थोड़े ही 84 जन्म लेते हैं [illegible] 84 जन्म [illegible] [illegible] [illegible] नहीं होता है। [illegible] ही तुम्हारी पढ़ाई और याद पर है। उसमें भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पर नाम मिलते हैं। उनका प्रभाव भी होता है। उत्तम मध्यम कनिष्ट [illegible] होते हैं ना। [illegible] मुझे याद करो तो सम्पूर्ण निर्विकारी बन जायेंगे। और फिर [illegible] [illegible] [illegible] जायेंगे। [illegible] [illegible] [illegible] खुद को देखना चाहिए कि मैं कहाँ तक धारणा करता हूँ [illegible] [illegible] [illegible]। ऐसा [illegible] [illegible] अगर [illegible] [illegible] ही [illegible] की आदत है तो [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देते हैं [illegible] हैं [illegible] [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बाप को याद करो। [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] होती है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] निकलता है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] याद को [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2

[illegible] को भी देखकर नहीं सकेंगे। शास्त्र में उनकी किताब (शास्त्र) की भी दरकार नहीं है। कहते बाईबल
[illegible] में यह लिखा हुआ है। वेदशास्त्र आदि में क्या है? गीता की कोई भाग भी नहीं है। [illegible] भाग के [illegible]
टाल्स-टॉवर है। टूटते-फूटते रहते हैं। तुम भी टूटते फूटते हो। इस दुनिया [illegible]
[illegible] है। अभी तुमको वहाँ ले जाते हैं। जहाँ टूट-फूट नहीं होती है। वहाँ तो चीजें भी ऐसी अच्छी बनेंगी
कि टूटने का नाम ही नहीं होगा। यहाँ साईंस से कितनी चीजें बन जाती हैं। वहाँ भी साईंस तो जरूर
होगी। तो कि तुम्हारे लिये बहुत सुख चाहिये। बाप कहते हैं कि तुम बच्चों को कुछ भी पता नहीं है। कलि
[illegible] जब शुरू हुआ अभी तक तुमने दुःख देखा है। यह बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि दुःख-सुख क्या है।
[illegible] देवताओं को कहा जाता है सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण। फिर दो कलायें कैसे कम हुईं? अभी तो कोई
[illegible] नहीं रही है। चन्द्रमा की भी आहिस्ते-2 कलायें कम होती है ना। तुम समझते हो कि इस दुनियां की
[illegible] नई। तो वहाँ पर हर चीज फर्स्ट क्लास होती है। कलायें कम होती जाती है। सर्वगुण सम्पन्न यह (लक्ष्मी-नारायण)
थे। अभी बाप तुमको सच्चा-2 सत्यनारायण बनने की कथा सुनाते हैं। अभी है रात फिर दिन होना है। तुम
पूर्ण बनते हो तो तुम्हारे लिये सृष्टि भी तो फिर वैसी ही चाहिये। पाँच तत्व भी 16 कला सम्पूर्ण बन जाते
इसलिये ही तुम्हारे शरीर भी नेचुरल ब्यूटीफुल होते हैं। यह सारी दुनियां 16 कला सम्पूर्ण बन जाते हैं।
[illegible] तो कोई भी कला नहीं है। उनकी कुछ भी [illegible] थोड़े ही है। मनुष्य थोड़े ही यह जानते हैं। जो भी
[illegible] बड़े हैं अथवा महात्मा आदि हैं कोई भी तकदीर में नहीं है। बहुत करके तो है ही गरीबों की
तकदीर में। इतना ऊँच बाप है तो उनको तो राजा अथवा पवित्र किसी के तन में आना चाहिये। पवित्र होते
c) ही है सन्यासी। पवित्र कन्या के तन में आवें परन्तु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी
करेंगे? बाप बैठ समझाते हैं कि मैं किस में आता हूँ। मैं तो आता ही उसमें हूँ जो कि पूरे 84 जन्म लेते
[illegible] दिन भी कम नहीं। कृष्ण पैदा हुआ उस समय तो वह 16 कला सम्पूर्ण ठहरा। फिर सतो-रजो-तमो में आते
हर चीज पहले सतोप्रधान होती है फिर सतो-रजो-तमो में आती है। सतयुग में भी ऐसे ही होता है। बच्चा
सतोप्रधान है। फिर [illegible] फिर कहेगा कि हम यह शरीर छोड़ कर फिर सतोप्रधान बनूंगा।
[illegible] बच्चों को इतना नशा नहीं है। खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। जो अच्छी मेहनत करते हैं खुशी का पारा
[illegible] रहता है। दिल भी [illegible] रहती है। आगे चलकर तुमको सब साक्षात्कार होते रहेंगे। जैसे घर के पास आ
पहुँचते हैं तो पश्चात मकान आदि याद आता है ना। यह भी ऐसे ही है। पुरुषार्थ करते-2 तुम्हारी प्रालब्ध जब
नजदीक होगी तो फिर बहुत साक्षात्कार होते रहेंगे। खुशी में रहेंगे। जो नापास होते हैं तो शर्म के मारे डूब मरते
। तुम बच्चों को भी बाबा बता देते हैं। फिर बहुत पछताना पड़ेगा। अपने भविष्य का साक्षात्कार करते रहेंगे। [illegible]
[illegible] बनेंगे। बाबा [illegible] कि यह भी चोरी चकारी शैतानी आदि की है। [illegible] पढ़े नहीं हो। ट्रेटर बने हो।
[illegible] की सजायें मिलती है। सब साक्षात्कार होगा। फिर सजा भी देंगे। गीता में भी बताते हैं कि
[illegible] तो यह-2 किया है। उनकी सजा यह है। जब तक कर्मातीत अवस्था हो जावे तब तक कुछ ना कुछ
[illegible] होगी। अथवा कमजोर हो जाती है तो फिर शरीर छोड़ना पड़े। यहाँ रह नहीं सकती हैं। [illegible] अवस्था
[illegible] धारण करनी है। अभी तुम वापस जाकर फिर नई दुनियां में आने लिए तैयारी करते हो। तुम्हारा पुरुषार्थ
यह है कि हम जल्दी-2 जावें फिर जल्दी आवें। जैसे बच्चों को खेल में दौड़ाते हैं ना। निशान तक जाकर
[illegible] लौट आना होता है। तुमको भी जल्दी-2 जाना है फिर जल्दी आ नई दुनियां में नम्बरवार आना
होगा। यही है। जल्दी जावें फिर आवें। [illegible] आत्मा से जल्दी मिलायेंगे तो रुण्ड माला में जल्दी आवेंगे। तुम
[illegible] दौड़ करनी है। यह समझ की बात है ना। कौन समझाते हैं? आत्माओं को बैठ समझाते
[illegible] तो आत्मायें भी रहती है। परन्तु इस समय परमात्मा मिलते भी नहीं रहते हैं। जब [illegible]
[illegible] परमात्मा फिर परमधाम में रहते आवेंगे। तो तुम्हारी [illegible] में भी रेस करते हैं ना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

13-11-95 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अपने कैरेक्टर्स सुधारने के लिए याद की यात्रा में रहना है, बाप की याद ही तुम्हें सदा सौभाग्यशाली बनायेगी"

प्रश्न:- अवस्था की परख किस समय होती है? अच्छी अवस्था किसकी कहेंगे?
उत्तर:- अवस्था की परख बीमारी के समय होती है। बीमारी में भी खुशी बनी रहे और खुशमिज़ाज चेहरे से सबको बाप की याद दिलाते रहें, यही है अच्छी अवस्था। अगर खुद रोयेंगे, उदास होंगे तो दूसरों को खुशमिज़ाज कैसे बनायेंगे? कुछ भी हो जाए – रोना नहीं है।

ओम् शान्ति। दो अक्षर गाये जाते हैं – दुर्भाग्यशाली और सौभाग्यशाली। सौभाग्य चला जाता है तो दुर्भाग्य कहा जाता है। स्त्री का पति मर जाता है तो वह भी दुर्भाग्य कहा जाता है। अकेली हो जाती है। अभी तुम जानते हो हम सदा के लिए सौभाग्यशाली बनते हैं। वहाँ दुख की बात नहीं। मृत्यु का नाम नहीं होता है। विधवा नाम ही नहीं होता। विधवा को दुख होता है, रोती रहती है। भल साधू-सन्त हैं, ऐसा नहीं कि उन्हें कोई दुख नहीं होता है। कोई पागल बन पड़ते हैं, बीमार रोगी भी होते हैं। यह है ही रोगी दुनिया। सतयुग है निरोगी दुनिया। तुम बच्चे समझते हो हम भारत को फिर से श्रीमत पर निरोगी बनाते हैं। भारत की बदचलन अर्थात् मनुष्यों के कैरेक्टर्स बहुत खराब हैं। अब कैरेक्टर्स भी सुधारने की जरूर डिपार्टमेंट होगी। स्कूलों में तो स्टूडेन्ट्स का रजिस्टर रखा जाता है। उनके कैरेक्टर्स का पता चलता है। इसलिए बाबा ने भी रजिस्टर रखवाया था। हर एक अपना रजिस्टर रखो। कैरेक्टर देखना है कि हम कोई भूल तो नहीं करते हैं। पहली बात तो बाप को याद करना है। उनसे ही तुम्हारा कैरेक्टर्स सुधरता है। आयु भी बड़ी होती है एक की याद से। यह तो है ज्ञान रत्न। याद को रत्न नहीं कहा जाता। याद से ही तुम्हारे कैरेक्टर सुधरते हैं। यह 84 जन्मों का चक्र तुम्हारे सिवाए और कोई समझा न सके। इस पर ही समझाना है – विष्णु और ब्रह्मा। शंकर के तो कैरेक्टर नहीं कहेंगे। तुम बच्चे जानते हो ब्रह्मा और विष्णु का आपस में क्या कनेक्शन है। विष्णु के दो रूप हैं यह लक्ष्मी-नारायण। वही फिर 84 जन्म लेते हैं। 84 जन्मों में ही आपेही पूज्य और आपेही पुजारी बनते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ ही चाहिए ना। साधारण तन चाहिए। बहुत करके इसमें ही मूँझते हैं। ब्रह्मा तो है ही पतित पावन बाप का रथ। कहते भी हैं – दूरदेश का रहने वाला आया देश परिये..... पावन दुनिया बनाने वाला पतित पावन बाप पतित दुनिया में आया। पतित दुनिया में एक भी पावन नहीं हो सकता। अभी तुम बच्चों ने समझा है कि 84 जन्म हम कैसे लेते हैं। कोई तो लेते होंगे ना। जो पहले-पहले आते होंगे उनके ही 84 जन्म होंगे। सतयुग में देवी-देवता ही आते हैं। मनुष्यों को ज़रा भी ख्याल नहीं चलता, 84 जन्म कौन लेंगे। समझ की बात है। पुनर्जन्म तो सब मानते हैं। 84 पुनर्जन्म हुए यह बड़ी युक्ति से समझाना है। 84 जन्म तो सभी नहीं लेंगे ना। एक साथ सब थोड़ेही आयेंगे और शरीर छोड़ेंगे। भगवानुवाच भी है कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, भगवान ही बैठ समझाते हैं। तुम आत्मायें 84 जन्म लेती हो

a)
b)

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

यह 84 की कहानी बाप तुम बच्चों को बैठ सुनाते हैं। यह भी एक पढ़ाई है। 84 का चक्र तो जानना बहुत सहज है। दूसरे धर्म वाले इन बातों को समझेंगे नहीं। तुम्हारे में भी कोई सभी 84 जन्म नहीं लेते हैं। सभी के 84 जन्म हों तो सब इकट्ठे आ जाएं। यह भी नहीं होता है। सारा मदार पढ़ाई और याद पर है। उसमें भी नम्बरवन है याद। डिफीकल्ट सब्जेक्ट पर मार्क्स जास्ती मिलती हैं। उनका प्रभाव भी होता है। उत्तम, मध्यम, कनिष्ट सब्जेक्ट होती हैं ना। इनमें हैं दो मुख्य। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सम्पूर्ण निर्विकारी बन जायेंगे और फिर विजय माला में पिरो जायेंगे। यह है रेस। पहले तो खुद को देखना है कि मैं कहाँ तक धारणा करता हूँ? कितना याद करता हूँ? मेरे कैरेक्टर्स कैसे हैं? अगर मेरे में ही रोने की आदत है तो दूसरे को खुशमिज़ाज़ कैसे बना सकता हूँ? बाबा कहते हैं जो रोते हैं सो खोते हैं। कुछ भी हो जाए लेकिन रोने की दरकार नहीं है। बीमारी में भी खुशी से इतना तो कह सकते हो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बीमारी में ही अवस्था की परख होती है। तकलीफ में थोड़ा कुड़कने की आवाज़ भल निकलती है परन्तु अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बाप ने पैगाम दिया है। पैगम्बर-मैसेन्जर एक शिवबाबा है, दूसरा कोई है नहीं। बाकी जो भी सुनाते हैं, सारी भक्ति मार्ग की बातें। इस दुनिया की जो भी चीजें हैं सब विनाशी हैं, अभी तुमको वहाँ ले जाते हैं जहाँ टूट-फूट नहीं। वहाँ तो चीजें ही ऐसी अच्छी बनेंगी जो टूटने का नाम ही नहीं होगा। यहाँ साइन्स से कितनी चीजें बनती हैं, वहाँ भी तो साइंस जरूर होगी। क्योंकि तुम्हारे लिए बहुत सुख चाहिए। बाप कहते हैं तुम बच्चों को कुछ भी पता नहीं था। भक्ति मार्ग कब शुरू हुआ, कितना तुमने दुख देखा — यह सब बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं। देवताओं को कहा ही जाता है — सर्वगुण सम्पन्न..... फिर वह कलायें कैसे कम हुई? अभी तो कोई कला नहीं रही है। चन्द्रमा की भी धीरे-धीरे कला कम होती है ना।

तुम जानते हो कि यह दुनिया भी पहले नई है तो वहाँ हर चीज़ सतोप्रधान फर्स्टक्लास होती है। फिर पुरानी होते कलायें कम होती जाती हैं। सर्वगुण सम्पन्न यह लक्ष्मी-नारायण हैं ना। अभी बाप तुमको सच्ची-सच्ची सत्य नारायण की कथा सुना रहे हैं। अभी है रात फिर दिन होता है। तुम सम्पूर्ण बनते हो तो तुम्हारे लिए फिर सृष्टि भी ऐसी ही चाहिए। 5 तत्व भी 16 कला सम्पूर्ण बन जाते हैं। इसलिए शरीर भी तुम्हारे नेचुरल ब्युटीफुल होते हैं। सतोप्रधान होते हैं। यह सारी दुनिया 16 कला सम्पूर्ण बन जाती है। अभी तो कोई कला नहीं है, जो भी बड़े से बड़े लोग हैं अथवा महात्मा आदि हैं, यह बाप की नॉलेज उनकी तकदीर में ही नहीं है। उन्हों को अपना ही घमण्ड है। बहत करके है ही गरीबों की तकदीर में। कोई कहते हैं इतना ऊंच बाप है, उनको तो कोई बड़े राजा अथवा पवित्र ऋषि आदि के तन में आना चाहिए। पवित्र होते ही हैं सन्यासी। पवित्र कन्या के तन में आये। बाप बैठ समझाते हैं मैं किसमें आता हूँ। मे आता हो उसमें हूँ जो पूरे 84 जन्म लेते हैं। एक दिन भी कम नहीं। कृष्ण पैदा हुआ उस समय से 16 कला सम्पूर्ण ठहरा। फिर सतो, रजो, तमो में आते हैं। हर चीज़ पहले सतोप्रधान फिर सतो, रजो, तमो में आती है। सतयुग में भी ऐसा होता है। बच्चा सतोप्रधान है फिर बड़ा होगा तो कहेगा:

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अब हम यह शरीर छोड़ सतोप्रधान बच्चा बनता हूँ। तुम बच्चों को इतना नशा नहीं है। खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। जो अच्छी मेहनत करते हैं, खुशी का पारा चढ़ता रहता है। शक्ल भी खुशनुमा रहती है। आगे चल तुमको साक्षात्कार होते रहेंगे। जैसे घर के नज़दीक आकर पहुँचते हैं तो फिर वह द्वार मकान आदि याद आता है ना यहाँ भी ऐसे है। पुरूषार्थ करते-करते तुम्हारा प्रालब्ध नज़दीक होगी तो फिर बहुत साक्षात्कार होते रहेंगे खुशी में रहेंगे। जो नापास होते हैं तो शर्म के मारे डूब मरते हैं। तुमको भी बाबा बता देते हैं फिर बहुत पछताना पड़ेगा। अपने भविष्य का साक्षात्कार करेंगे, हम क्या बनेंगे? बाबा दिखलायेंगे यह-यह विकर्म आदि किये हैं। पूरा पढ़े नहीं, टेटर बने, इसलिए यह सज़ा मिलती है। सब साक्षात्कार होगा। बिगर साक्षात्कार सज़ा कैसे देंगे? कोर्ट में भी बताते हैं — तुमने यह-यह किया है, उसकी सज़ा है। जब तक कर्मातीत अवस्था हो जाए तब तक कुछ न कुछ निशानी रहेगी। आत्मा पवित्र हो जाती है फिर तो शरीर छोड़ना पड़े। यहाँ रह न सके। वह अवस्था तुमको धारण करनी है। अभी तुम वापिस जाए फिर नई दुनिया में आने के लिए तैयारी करते हो। तुम्हारा पुरूषार्थ ही यह है कि हम जल्दी-जल्दी जायें, फिर जल्दी-जल्दी आयें। जैसे बच्चों को खेल में दौड़ाते हैं ना। निशान तक जाकर फिर लौट आना है। तुमको भी जल्दी-जल्दी जाना है, फिर पहले नम्बर में नई दुनिया में आना है। तो तुम्हारी रेस है यह। स्कूल में भी रेस कराते हैं ना। तुम्हारा है यह प्रवृत्ति मार्ग। तुम्हारा पहले-पहले पवित्र गृहस्थ धर्म था। अभी है विशश फिर वाइसलस वर्ल्ड बनेगा। इन बातों को तुम सिमरण करते रहो तो भी बहुत खुशी रहेगी। हम ही राज्य लेते हैं फिर गँवाते हैं। हीरो-हीरोइन कहते हैं ना। हीरे जैसा जन्म लेकर फिर कौड़ी जैसे जन्म में आते हैं।

अभी बाप कहते हैं — तुम कौड़ियों पिछाड़ी टाइम वेस्ट मत करो। यह कहते हैं हम भी टाइम वेस्ट करते थे। तो हमको भी कहा अब तो तुम मेरा बनकर यह रूहानी धंधा करो। तो झट सब कुछ छोड़ दिया। पैसे कोई फेंक तो नहीं देंगे। पैसे तो काम में आते हैं। पैसे बिना कोई मकान आदि थोड़ेही मिल सकता। आगे चल बड़े-बड़े धनवान आयेंगे। तुमको मदद देते रहेंगे। एक दिन तुमको बड़े-बड़े कॉलेज, युनिवर्सिटी में भी जाकर भाषण करना होगा कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। हिस्ट्री रिपीट होती है आदि से अन्त तक। गोल्डन एज से आइरन एज तक सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी हम बता सकते हैं। कैरेक्टर्स के ऊपर तो तुम बहुत समझा सकते हो। इन लक्ष्मी-नारायण की महिमा करो। भारत कितना पावन था, दैवी कैरेक्टर्स थे। अब तो विशश कैरेक्टर्स हैं। जरूर फिर चक्र रिपीट होगा। हम वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुना सकते हैं। वहाँ जाना भी अच्छे-अच्छे को चाहिए। जैसे थियोसोफिकल सोसायटी है, वहाँ तुम भाषण करो। कृष्ण तो देवता था, सतयुग में था। पहले-पहले है श्रीकृष्ण जो फिर नारायण बनते हैं। हम आपको श्रीकृष्ण के 84 जन्मों की कहानी सुनायें, जो और कोई सुना न सके। यह टॉपिक कितनी बड़ी है। होशियार को भाषण करना चाहिए।

तुम्हारे दिल में आता है, हम विश्व के मालिक बनेंगे, कितनी खुशी होनी चाहिए। फिर तुमको इस दुनिया में कुछ भासेगा नहीं। यहाँ तुम आते

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हो हो — विश्व का मालिक बनने — परमपिता परमात्मा बाप। विश्व तो इस दुनिया को ही कहा जाता है। ब्रह्मलोक वा सूक्ष्मवतन को विश्व नहीं कहेंगे। बाप कहते हैं मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूँ। इस विश्व का मालिक तुम बच्चों को बनाता हूँ। कितनी गुह्य बातें हैं। तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ। फिर तुम माया के दास बन जाते हो। यहाँ जब सामने योग में बिठाते हो तो भी याद दिलानी है — आत्म अभिमानी हो बैठो, बाप को याद करो। 5 मिनट बाद फिर बोलो। तुम्हारे योग के प्रोग्राम चलते हैं ना। बहुतों की बुद्धि बाहर चली जाती है इसलिए 5-10 मिनट बाद फिर सावधान करना चाहिए। अपने को आत्मा समझ बैठे हो? बाप को याद करते हो? तो खुद का भी अटेन्शन रहेगा। बाबा यह सब युक्तियां बतलाते हैं। घड़ी-घड़ी सावधान करो। अपने को आत्मा समझ शिवाबाबा की याद में बैठे हो? तो जिनका बुद्धियोग भटकता होगा वह खड़े हो जायेंगे। घड़ी-घड़ी यह याद दिलाना चाहिए। बाबा की याद से ही तुम उस पार चले जायेंगे। गाते भी हैं खिवैया नईया मेरी पार लगाओ। परन्तु अर्थ को नहीं जानते। मुक्तिधाम में जाने के लिए आधाकल्प भक्ति की है। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो मुक्तिधाम में चले जायेंगे। तुम बैठते ही हो पाप कटने लिए तो फिर पाप करने थोड़ेही चाहिए। नहीं तो फिर पाप रह जायेंगे। नम्बरवन यह पुरूषार्थ है — अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। ऐसे सावधान करते रहने से अपना भी अटेन्शन रहेगा। खुद को भी सावधान करना है। खुद भी याद में बैठे तब औरों को बिठायें। हम आत्मा हैं, जाते हैं अपने घर। फिर आकर पार्ट बजायेंगे। अपने को शरीर समझना यह भी एक कड़ी बीमारी है इसीकर ही सब रसातल चले गये हैं। उनको फिर सैलवेज करना है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1. अपना टाइम रूहानी धन्धे में सफल करना है। हीरे जैसा जीवन बनाना है। अपने को सावधान करते रहना है। शरीर समझने की कड़ी बीमारी से बचने का पुरुषार्थ करना है।

2. कभी भी माया का दास नहीं बनना है, अन्दर में बैठ जाप जपना है कि हम आत्मा हैं। खुशी रहे हम बेगर से प्रिन्स बन रहे हैं।

वरदान:- सम्पूर्ण आहुति द्वारा परिवर्तन समारोह मनाने वाले दृढ़ संकल्पधारी भव

जैसे कहावत है, "अस्त परिये धर्म न छोड़िये", तो कोई भी सरकमस्टांश आ जाए, या के महावीर रूप सामने आ जाएं लेकिन धारणायें न छूटे। संकल्प द्वारा त्याग की बेकार वस्तुयें संकल्प में भी स्वीकार न हों। सदा अपने श्रेष्ठ स्वमान, श्रेष्ठ स्मृति श्रेष्ठ जीवन के समर्थी स्वरूप द्वारा श्रेष्ठ पार्टधारी बन श्रेष्ठता का खेल करते रहो। कमजोरियों के सब खेल समाप्त हो जाएं। जब ऐसी सम्पूर्ण आहुति का संकल्प दृढ़ होगा परिवर्तन समारोह होगा। इस समारोह की डेट अब संगठित रूप में निश्चित करो।

स्लोगन:-

रीयल डायमण्ड बनकर अपने वायब्रेशन की चमक विश्व में फैलाओ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

1.2.90 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-ज्ञान की धारणा के साथ2 सतयुगी राजाई के लिए याद और पवित्रता का बल भी जमा करो"

प्रश्न :-अभी तुम बच्चों के पुरूषार्थ का लक्ष्य क्या होना चाहिए? उत्तर:-सदा खुशी में रहना, बहुत2 मीठा बनना, सबको प्रेम से चलाना.. यही तुम्हारे पुरूषार्थ का लक्ष्य हो। इसी से तुम सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे।

प्रश्न:-जिनके कर्म श्रेष्ठ हैं उनकी निशानी क्या है? उत्तर:-उनके द्वारा किसी को भी दुख नहीं पहुंचेगा। जैसे बाप दुख हर्ता सुख कर्ता है, ऐसे श्रेष्ठ कर्म करने वाले भी दुख हर्ता सुख कर्ता होंगे।

गीत:-छोड़ भी दे आकाश सिंहासन.. ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों ने गीत सुना। यह मीठे2 रूहानी बच्चे कितने कहा? दोनो बाप ने कहा। निराकार ने भी कहा तो साकार ने भी कहा। इसलिए इनको कहा जाता है बाप वा दादा। दादा है साकारी। अभी यह गीत तो भक्तिमार्ग के हैं। बच्चे जानते हैं बाप आया हुआ है और बाप ने सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान बुद्धि में बिठाया। तुम बच्चों की भी बुद्धि में यह है- हमने 84जन्म पूरे किये, अब नाटक पूरा होता है। अब हमको पावन बनना है योग वा याद से। याद और नालेज यह तो हर बात में चलता है। बैरिस्टर को जरूर याद करेंगे और उनसे नालेज लेंगे। इसको भी योग और नालेज का बल कहा जाता है। यहाँ तो यह है नई बात। उस योग और ज्ञान से बल मिलता है हद का। यहाँ इस योग और ज्ञान से बल मिलता है बेहद का। क्योंकि सर्वशक्तिवान अथॉरिटी है। बाप कहते हैं मैं ज्ञान का सागर भी हूँ। तुम बच्चे अब सृष्टि चक्र को जान गये हो। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, सब याद है। जो नालेज बाप में है, वह भी मिली है। तो नालेज को भी धारण करना है और राजाई के लिए बाप बच्चों को योग और पवित्रता भी सिखलाते हैं। तुम पवित्र भी बनते हो। बाप से राजाई भी लेते हो। बाप अपने से भी ज्यादा मर्तबा देते हैं। तुम 84जन्म लेते2 मर्तबा गँवा देते हो। यह नालेज तुम बच्चों को अभी मिली है। ऊँच ते ऊँच बनने की नालेज ऊँच ते ऊँच बाप द्वारा मिलती है। बच्चे जानते हैं अभी हम जैसे कि बापदादा के घर बैठे हैं। यह दादा मॉ भी है, वह बाप तो अलग है, बाकी दादा मॉ भी है। परन्तु यह मेल का चोला होने कारण फिर माता मुकरर की जाती है। इनको भी एडाप्ट किया जाता है। उनसे फिर यह रचना हुई है। रचना भी है सब एडाप्टेड बच्चे। एडाप्ट करते हैं, वर्सा उनसे मिलता है। ब्रह्मा को भी एडाप्ट किया है। प्रवेश करना वा एडाप्ट करना बात एक ही है। एडाप्ट किया है बाप से वर्सा लेने। बच्चे समझते हैं और समझाते भी हैं- नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार सबको यही समझाना है कि हम अपने परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर इस भारत को फिर से श्रेष्ठ से श्रेष्ठ बनाते हैं तो खुद को भी बनना पड़े। अपने को देखना है कि हम श्रेष्ठ बने हैं? कोई भ्रष्टाचार का काम कर किसको दुख तो नहीं देते हैं। बाप कहते हैं मैं तो आया हूँ बच्चों को सुखी बनाने तो तुमको भी सबको सुख देना है। बाप कभी किसको दुख नहीं दे सकता। उनका नाम ही है दुख हर्ता सुख कर्ता। बच्चों को अपनी जांच करनी है- मन्सा, वाचा, कर्मणा हम किसको दुख तो नहीं देते हैं। शिवबाबा कभी किसको दुख नहीं देते। फिर भी बच्चे हैं। बाप कहते हैं- मैं कल्प2 तुम बच्चों को यह बेहद की कहानी सुनाता हूँ। अब तुम्हारी बुद्धि में है कि हम अपने घर जायेंगे फिर नई दुनिया में आयेंगे। अब की पढ़ाई अनुसार अन्त में तुम ट्रांसफर हो जायेंगे। वापिस घर जाकर फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आयेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है। बच्चे जानते हैं अभी जो पुरूषार्थ करेंगे वही पुरूषार्थ तुम्हारा कल्प2 का सिद्ध होगा। पहले2 तो सभी को बुद्धि में बिठाना चाहिए कि रचता और रचना के आदि मध्य अन्त की नालेज को बाप के सिवाए कोई नहीं जानते हैं। ऊँच ते ऊँच बाप का नाम ही गुम कर दिया है। त्रिमूर्ति नाम तो है। त्रिमूर्ति रास्ता भी है, त्रिमूर्ति हाउस भी है प्राइममिनिस्टर का। त्रिमूर्ति कहा जाता है ब्रह्मा विष्णु शंकर को। इन तीनों का रचयिता जो शिवबाबा है उस मूल का नाम ही गुम कर दिया है। अभी तुम बच्चे जानते हो ऊँच ते ऊँच है शिवबाबा, फिर त्रिमूर्ति फिर बाप से हम बच्चे यह वर्सा लेते हैं। बाप की नालेज और वर्सा यह दोनो स्मृति में रहें तो सदैव हर्षित रहेंगे। बाप को याद में रह फिर तुम किसको भी ज्ञान का तीर लगायेंगे तो अच्छा असर होगा। उसमें शक्ति आती जायेगी। याद की यात्रा से ही शक्ति मिलती है। अभी शक्ति गुम हो गई है- क्योंकि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आत्मा पतित तमोप्रधान हो गई है। अब मूल फिकरात यह रहनी है कि हम तमोप्रधान से सतोप्रधान पावन बनें। मनमनाभव का अर्थ भी यह है। गीता जो पढ़ते हैं उनसे पूछना चाहिए- मनमनाभव का अर्थ क्या है? यह किसने कहा मुझे याद करो तो वर्सा मिलेगा? नई दुनिया स्थापन करने वाला कोई कृष्ण तो नहीं है। वह प्रिन्स है। यह तो गाया हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। अब करनकरावनहार कौन है? भूल गये हैं। उनके लिए सर्वव्यापी कह देते हैं। ब्र०चि०शं०आदि सबमें वही है। अब इसको कहा जाता है अज्ञान। बाप कहते हैं तुमको 5 विकारों रूपी रावण ने कितना बेसमझ बनाया है। तुम जानते हो बरोबर हम भी पहले ऐसे थे। हाँ पहले उत्तम से उत्तम भी हम ही थे फिर नीचे गिरते महान पतित बनें। शास्त्रों में दिखाया है- राम भगवान ने बन्दर सेना ली; यह भी ठीक है। तुम जानते हो हम बरोबर बन्दर मिसल थे। अभी महसूसता आती है- यह है ही भ्रष्टाचारी दुनिया। एक दो को गाली देते काँटा लगाते रहते हैं। यह है काँटों का जंगल। वह है फूलों का बगीचा। जंगल बहुत बड़ा होता है। गार्डन बहुत छोटा होता है। गार्डन बड़ा नहीं होता हैं। बच्चे समझते हैं बरोबर इस समय यह बड़ा भारी काँटों का जंगल है। सतयुग में फूलों का बगीचा कितना छोटा होगा। यह बातें तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं, जिनमें ज्ञान और योग नहीं है, सर्विस में तत्पर नहीं हैं तो फिर अन्दर में इतनी खुशी भी नहीं रहती। दान करने से मनुष्य को खुशी होती है। समझते हैं इसने आगे जन्म में दान-पुण्य किया है सब अच्छा जन्म मिला है। कोई भक्त होते हैं, समझेंगे हम भक्त अच्छे भक्त के घर में जाकर जन्म लेंगे। अच्छे कर्मों का फल भी अच्छा मिलता है। बाप बैठ कर्म-अकर्म-विकर्म की गति बच्चों को समझाते हैं। दुनिया इन बातों को नहीं जानती। तुम जानते हो अभी रावण राज्य होने कारण मनुष्यों के कर्म सब विकर्म बन जाते हैं। पतित तो बनना ही है। 5 विकारों की सबमें प्रवेशता है। भल दान पुण्य आदि करते हैं- अल्पकाल के लिए उसका फल मिल जाता है। फिर भी पाप तो करते ही हैं। रावण राज्य में जो भी लेन-देन होती है वह है ही पाप की। देवताओं के आगे कितना स्वच्छता से भोग लगाते हैं। स्वच्छ बनकर आते हैं। परन्तु जानते कुछ भी नहीं। देहद के बाप की भी कितनी ग्लानी कर दी है। वह समझते हैं कि यह हम महिमा करते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिवान है परन्तु बाप कहते हैं यह इन्हों की उल्टी मत है।

तुम पहले2 बाप की महिमा सुनाते हो कि ऊँच ते ऊँच भगवान एक है, हम उनको ही याद करते हैं। राजयोग की एम आब्जेक्ट भी सामने खड़ी है। यह राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। कृष्ण को बाप नहीं कहेंगे वह तो बच्चा है, शिव को ही बाबा कहेंगे। उनको अपनी देह नहीं। यह मैं लोन पर लेता हूँ इसलिए इनको बापदादा कहते हैं। वह है ऊँच ते ऊँच निराकार बाप। रचना को रचना से वर्सा मिल न सके। लौकिक सम्बन्ध में बच्चे को बाप से वर्सा मिलता है। बच्ची को तो मिल न सके। अब बाप ने समझाया है तुम आत्मायें हमारे बच्चे हो। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे (1) बच्चियां हो। ब्रह्मा से वर्सा नहीं मिलता है। बाप का बनने से ही वर्सा मिल सकता है। यह बाप (2) तुम बच्चों को सम्मुख बैठ समझाते हैं। इनके कोई शास्त्र तो बन नहीं सकते। भल तुम लिखते हो, लिटरेचर छपाते हो फिर भी टीचर के सिवाए तो कोई समझ न सके। टीचर बिगर किताब से कोई समझ न सके। अब तुम हो रूहानी टीचर्स। बाप है बीजरूप, उनके पास सारे झाड़ के आदि (3) मध्य अन्त की नालेज है। टीचर के रूप में बैठ तुमको समझाते हैं। तुम बच्चों को तो सदैव खुशी रहनी चाहिए कि हमको सुप्रीम बाप ने अपना बच्चा बनाया है, वही हमको टीचर बनकर पढ़ाते हैं। (4) सच्चा सतगुरू भी है, साथ में ले जाते हैं। सर्व का सद्गति दाता एक है। ऊँच ते ऊँच बाप ही है जो भारत को हर 5 हजार वर्ष बाद वर्सा देते हैं। उनकी शिव जयन्ती मनाते हैं। वास्तव में शिव के (5) साथ त्रिमूर्ति भी होना चाहिए। तुम त्रिमूर्ति शिव जयन्ती मनाते हो। सिर्फ शिवजयन्ती मनाने से कोई बात सिद्ध नहीं होगी। बाप आते हैं और ब्रह्मा का जन्म होता है। बच्चे बने ब्राह्मण बने और एम आब्जेक्ट सामने खड़ी है। बाप खुद आकर स्थापना करते हैं। एम आब्जेक्ट भी बिल्कुल क्लीयर है सिर्फ कृष्ण का नाम डालने से सारा गीता का महत्व चला गया है। यह भी ड्रामा में नूँध है। यह भूल फिर भी होने वाली ही है। खेल ही सारा ज्ञान और भक्ति का है।

बाप कहते हैं लाडले बच्चे सुखधाम, शान्तिधाम को याद करो। अलफ और बे, कितना सहज है। (6) भल कितने भी बड़े विद्वान पण्डित हों- पूछो मनमनाभव का अर्थ क्या है? मनमनाभव अक्षर संस्कृत

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

का है।तुम पूछो मनमनाभव का अर्थ क्या है? देखो क्या कहते हैं। बोलो भगवान किसको कहा जाए? ऊँच ते ऊँच भगवान है ना।उनको सर्वव्यापी थोड़ेही कहेंगे।वह तो सबका बाप है। अभी त्रिमूर्ति शिवजयन्ती आती है।तुमको त्रिमूर्ति शिव का चित्र निकालना चाहिए(त्रिमूर्ति ब्रह्मा विष्णु शंकर का एक्यूरेट क्यों न निकालें)ऊँच ते ऊँच है शिव, फिर सूक्ष्म वतनवासी ब्र0वि0श0। ऊँच ते ऊँच है शिवबाबा। वह भारत को स्वर्ग बनाते हैं।उनकी जयन्ती तुम क्यों नहीं मनाते। हो? जरूर भारत को वर्सा दिया था। उनका राज्य था। इसमें तो तुमको आर्यसमाजी भी मदद देंगे क्योंकि वह भी शिव को मानते हैं। तुम अपना झण्डा चढ़ाओ।एक तरफ त्रिमूर्ति गोला, दूसरे तरफ झाड़।तुम्हारा झण्डा वास्तव में यह होना चाहिए। बन तो सकता है ना।झण्डा चढ़ा दो जो सब देखें।सारी समझानी इसमें है।कल्प वृक्ष और ड्रामा इनमें तो बिल्कुल क्लीयर है। सबको मालूम पड़ जायेगा कि हमारा धर्म फिर कब होगा।आपेही अपना2 हिसाब निकालेंगे।सबको इस चक्र और झाड़ पर समझाना है। क्राइस्ट कब आया।इतना समय वह आत्मायें कहाँ रहती हैं। जरूर कहेंगे निराकारी दुनिया में हैं।हम आत्मायें रूप बदल यहाँ आकर साकार बनते हैं।बाप को भी कहते हैं ना- आप भी रूप बदल साकार में आओ।आयेंगे तो यहाँ ना।सूक्ष्मवतन में तो नहीं आयेंगे। जैसे हम रूप बदलकर पार्ट बजाते हैं,आप भी आओ फिर से आकर राजयोग सिखलाओ। राजयोग है ही भारत को स्वर्ग बनाने का।यह तो बड़ी सहज बातें हैं।बच्चों को शौक चाहिए। धारणा कर और करानी चाहिए।उसके लिए लिखापढ़ी करनी चाहिए।बाप भारत को आकर हेविन बनाते हैं। कहते भी हैं बरोबर क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत पैराडाइज था इसलिए त्रिमूर्ति शिव का चित्र सबको भेज देना चाहिए। त्रिमूर्ति शिव की स्टैम्प बनानी चाहिए। इन स्टैम्प बनाने वालों की भी डिपार्टमेंट होगी। देहली में तो बहुत पढ़े लिखे हैं। यह काम कर सकते हैं। तुम्हारी कैपीटल भी देहली होनी है।पहले देहली को परिस्तान कहते थे। अब तो क्रिस्तान है। तो यह सब बातें बच्चों की बुद्धि में आनी चाहिए।

अभी तुम्हें सदा खुशी में रहना है, बहुत2 मीठा बनना है।सबको प्रेम से चलाना है।सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण बनने का पुरूषार्थ करना है। अभी तक कोई बना नहीं है।बहुत2 मीठा बनना है।अभी चढ़ती कला होती जाती है। धीरे2 चढ़ते हैं ना।तो बाबा शिव जयन्ती के लिए ईशारा देते रहते हैं। हर प्रकार से समझ तो जायेंगे ना कि इन्हों की नालेज तो बड़ी है।मनुष्यों को समझाने में कितनी मेहनत लगती है। मेहनत बिगर थोड़ेही राजधानी स्थापन होगी। चढ़ते हैं गिरते हैं फिर चढ़ते हैं। बच्चों को भी कोई न कोई तूफान आता है।मूल बात है ही याद की।याद से ही सतोप्रधान बनना है। नालेज तो सहज है।बच्चों को बहुत मीठे ते मीठा बनना है। एम आब्जेक्ट तो सामने खड़ी है। यह कितने मीठे हैं। इन्हों को देख कितनी खुशी होती है। हम स्टूडेन्ट की यह एम आब्जेक्ट है। पढ़ाने वाला है भगवान। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता दादादादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- ।।। बाप द्वारा मिली हुई नालेज और वर्से को स्मृति में रख सदैव हर्षित रहना है। ज्ञान और योग है तो सर्विस में तत्पर रहना है।

।2। सुखधाम और शान्तिधाम को याद करना है। एम आब्जेक्ट को सामने रख इन जैसा मीठा बनना है। अपार खुशी में रहना है। रूहानी टीचर बन ज्ञान का दान करना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

17-1-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुवन

"मीठे बच्चे -- ज्ञान की धारणा के साथ-साथ सतयुगी राजाई के लिए याद और पवित्रता का बल भी जमा करो"

प्रश्न :- अभी तुम बच्चों के पुरूषार्थ का क्या लक्ष्य होना चाहिए?

उत्तर:- सदा खुशी में रहना, बहुत-बहुत मीठा बनना, सबको प्रेम से चलाना.... यही तुम्हारे पुरूषार्थ का लक्ष्य हो। इसी से तुम सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे।

प्रश्न :- जिनके कर्म श्रेष्ठ हैं, उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- उनके द्वारा किसी को भी दुःख नहीं पहुँचेगा। जैसे बाप दुःख हर्ता सुख कर्ता है, ऐसे श्रेष्ठ कर्म करने वाले भी दुःख हर्ता सुख कर्ता होंगे।

गीत:- छोड़ भी दें आकाश सिंहासन. . . . . .

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने गीत सुना। यह मीठे-मीठे रूहानी बच्चे किसने कहा? दोनों बाप ने कहा। निराकार ने भी कहा तो साकार ने भी कहा। इसलिए इनको कहा जाता है बाप व दादा। दादा है साकारी। अभी यह गीत तो भक्तिमार्ग के हैं। बच्चे जानते हैं बाप आया हुआ है और बाप ने सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान बुद्धि में बिठाया। तुम बच्चों की भी बुद्धि में है--कि हमने 84 जन्म पूरे किये, अब नाटक पूरा होता है। अब हमको पावन बनना है, योग वा याद से। याद और नॉलेज यह तो हर दम में चलता है। बैरिस्टर को जरूर याद करेंगे और उनसे नॉलेज लेंगे। इसको भी योग और नॉलेज का बल कहा जाता है। यहाँ तो यह है नई बात। उस योग और ज्ञान से बल मिलता है हद का। यहाँ इस योग और ज्ञान से बल मिलता है बेहद का क्योंकि सर्वशक्तिमान् अथॉरिटी हैं। बाप कहते हैं मैं ज्ञान का सागर भी हूँ। तुम बच्चे अब सृष्टि चक्र को जान गये हो। मूल-वतन, सूक्ष्मवतन... सब याद है। जो नॉलेज बाप में है, वह भी मिली है। तो नॉलेज को भी धारण करना है और राजाई के लिए बाप बच्चों को योग और पवित्रता भी सिखलाते हैं। तुम पवित्र भी बनते हो। बाप से राजाई भी लेते हो। बाप अपने से भी ज्यादा मर्तबा देते हैं। तुम 84 जन्म लेते-लेते मर्तबा गँवा देते हो। यह नॉलेज तुम बच्चों को अभी मिली है। ऊंच ते ऊंच बनने की नॉलेज ऊंच ते ऊंच बाप द्वारा मिलती है। बच्चे जानते हैं अभी हम जैसेकि बापदादा के घर में बैठे हैं। यह दादा - माँ भी है। वह बाप तो अलग है, बाकी दादा - माँ भी है। परन्तु यह मेल का चोला होने कारण फिर माता मुकरर की जाती है, इनको भी एडाप्ट किया जाता है। उनसे फिर रचना हुई है। रचना भी है एडाप्टेड। बाप बच्चों को एडाप्ट करते हैं, वर्सा देने के लिए। ब्रह्मा को भी एडाप्ट किया है। प्रवेश करना वा एडाप्ट करना बात एक ही है। बच्चे समझते हैं और समझाते भी हैं -- नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार सबको यही समझाना है कि हम अपने परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर इस भारत को फिर से श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनाते हैं, तो खुद को भी बनना पड़े। अपने को देखना है कि हम श्रेष्ठ बने हैं? कोई भ्रष्टाचार का काम कर किसको दुःख तो नहीं देते हैं? बाप कहते हैं मैं तो आया हूँ बच्चों को सुखी बनाने तो तुमको भी सबको सुख देना है। बाप कभी किसको दुःख नहीं दे सकता। उनका नाम ही है दुःख हर्ता सुख कर्ता। बच्चों को अपनी जांच करनी है--मन्सा, वाचा, कर्मणा हम किसको दुःख

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तो नहीं देते है? शिवबाबा कभी किसको दुःख नहीं देते। बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प तुम बच्चों को यह बेहद की कहानी सुनाता हूँ। अब तुम्हारी बुद्धि में है कि हम अपने घर जायेंगे फिर नई दुनिया में आयेंगे। अब की पढ़ाई अनुसार अन्त में तुम ट्रांसफर हो जायेंगे। वापिस घर जाकर फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आयेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है।

बच्चे जानते हैं अभी जो पुरूषार्थ करेंगे वही पुरूषार्थ तुम्हारा कल्प-कल्प का सिद्ध होगा। पहले-पहले तो सभी को बुद्धि में बिठाना चाहिए कि रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज को बाप के सिवाए कोई नहीं जानते हैं। ऊंच ते ऊंच बाप का नाम ही गुम कर दिया है। त्रिमूर्ति नाम तो है, त्रिमूर्ति रास्ता भी है, त्रिमूर्ति हाउस भी है। त्रिमूर्ति कहा जाता है ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को। इन तीनों का रचयिता जो शिवबाबा है उस मूल का नाम ही गुम कर दिया है। अभी तुम बच्चे जानते हो ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा, फिर है त्रिमूर्ति। बाप से हम बच्चे यह वर्सा लेते हैं। बाप की नॉलेज और वर्सा यह दोनों स्मृति में रहें तो सदैव हर्षित रहेंगे। बाप की याद में रह फिर तुम किसको भी ज्ञान का तीर लगायेंगे तो अच्छा असर होगा। उसमें शक्ति आती जायेगी। याद की यात्रा से ही शक्ति मिलती है। अभी शक्ति गुम हो गई है क्योंकि आत्मा पतित तमोप्रधान हो गई है। अब मूल फिकरात यह रखनी है कि हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनें। मन्मनाभव का अर्थ भी यह है। गीता जो पढ़ते हैं उनसे पूछना चाहिए - मन्मनाभव का अर्थ क्या है? यह किसने कहा मुझे याद करो तो वर्सा मिलेगा? नई दुनिया स्थापन करने वाला कोई कृष्ण तो नहीं है। वह प्रिन्स है। यह तो गाया हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। अब करनकरावनहार कौन? भूल गये हैं। उनके लिए सर्वव्यापी कह देते हैं। कह देते हैं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि सबमें वही है। अब इसको कहा जाता है अज्ञान। बाप कहते हैं तुमको 5 विकारों रूपी रावण ने कितना बेसमझ बनाया है। तुम जानते हो बरोबर हम भी पहले ऐसे थे। हाँ, पहले उत्तम से उत्तम भी हम ही थे फिर नीचे गिरते महान् पतित बनें। शास्त्रों में दिखाया है राम भगवान ने बन्दर सेना ली, यह भी ठीक है। तुम जानते हो हम बरोबर बन्दर मिसल थे। अभी महसूसता आती है यह है ही भ्रष्टाचारी दुनिया। एक-दो को गाली देते कांटा लगाते रहते हैं। यह है कांटों का जंगल। वह है फूलों का बगीचा। जंगल बहुत बड़ा होता है। गार्डन बहुत छोटा होता है। गार्डन बड़ा नहीं होता है। बच्चे समझते हैं बरोबर इस समय यह बड़ा भारी कांटों का जंगल है। सतयुग में फूलों का बगीचा कितना छोटा होगा। यह बातें तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार समझते हैं। जिनमें ज्ञान और योग नहीं है, सर्विस में तत्पर नहीं हैं तो फिर अन्दर में इतनी खुशी भी नहीं रहती। दान करने से मनुष्य को खुशी होती है। समझते हैं इसने आगे जन्म में दान-पुण्य किया है तब अच्छा जन्म मिला है। कोई भक्त होते हैं, समझेंगे हम भक्त अच्छे भक्त के घर में जाकर जन्म लेंगे। अच्छे कर्मों का फल भी अच्छा मिलता है। बाप बैठ कर्म-अकर्म-विकर्म की गति बच्चों को समझाते हैं। दुनिया इन बातों को नहीं जानती। तुम जानते हो अभी रावण राज्य होने कारण मनुष्यों के कर्म सब विकर्म बन जाते है। पतित तो बनना ही है। 5 विकारों की सबमें प्रवेशता है। भल दान-पुण्य आदि करते हैं, अल्पकाल के लिए उसका फल मिल जाता है। फिर भी पाप तो करते ही हैं। रावण राज्य में जो भी लेन-देन होती है वह है ही पाप की। देवताओं के आगे कितना स्वच्छता से भोग लगाते हैं। स्वच्छ बनकर आते हैं परन्तु जानते कुछ भी नहीं। बेहद के बाप की भी कितनी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ग्लानि कर दी है। वह समझते हैं कि यह हम महिमा करते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है.. परन्तु बाप कहते हैं यह इन्हों की उल्टी मत है।

तुम पहले-पहले बाप की महिमा सुनाते हो कि ऊंच ते ऊंच भगवान एक है, हम उनको ही याद करते हैं। राजयोग की एम ऑब्जेक्ट भी सामने खड़ी है। यह राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। कृष्ण को बाप नहीं कहेंगे; वह तो बच्चा है, शिव को बाबा कहेंगे। उनको अपनी देह नहीं। यह मैं लोन पर लेता हूँ इसलिए इनको बापदादा कहते हैं। वह है ऊंच ते ऊंच निराकार बाप। रचना को रचना से वर्सा मिल न सके। लौकिक सम्बन्ध में बच्चे को बाप से वर्सा मिलता है। बच्ची को तो मिल न सके।

अब बाप ने समझाया है तुम आत्मायें हमारे बच्चे हो। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे-बच्चियाँ हो। ब्रह्मा से वर्सा नहीं मिलना है। बाप का बनने से ही वर्सा मिल सकता है। यह बाप तुम बच्चों को सम्मुख बैठ समझाते हैं। इनके कोई शास्त्र तो बन नहीं सकते। भल तुम लिखते हो, लिटरेचर छपाते हो फिर भी टीचर के सिवाए तो कोई समझा न सके। बिना टीचर किताब से कोई समझ न सके। अब तुम हो रूहानी टीचर्स। बाप है बीजरूप, उनके पास सारे झाड के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है। टीचर के रूप में बैठ तुमको समझाते हैं। तुम बच्चों को तो सदैव खुशी रहनी चाहिए कि हमको सुप्रीम बाप ने अपना बच्चा बनाया है, वही हमको टीचर बनकर पढ़ाते हैं। सुन्चा सतगुरु भी है, साथ में ले जाते हैं। सर्व का सद्गति दाता एक है। ऊंच ते ऊंच बाप ही है जो भारत को हर 5 हजार वर्ष बाद वर्सा देते हैं। उनकी शिव जयन्ती मनाते हैं। वास्तव में शिव के साथ त्रिमूर्ति भी होना चाहिए। तुम त्रिमूर्ति शिव जयन्ती मनाते हो। सिर्फ शिवजयन्ती मनाने से कोई बात सिद्ध नहीं होगी। बाप आते हैं और ब्रह्मा का जन्म होता है। बच्चे बने, ब्राह्मण बने और एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। बाप खुद आकर स्थापना करते हैं। एम आब्जेक्ट भी बिल्कुल क्लीयर है सिर्फ कृष्ण का नाम डालने से सारी गीता का महत्व चला गया है। यह भी ड्रामा में नूँध है। यह भूल फिर भी होने वाली ही है। खेल ही सारा ज्ञान और भक्ति का है। बाप कहते हैं लाडले बच्चे, सुखधाम, शान्तिधाम को याद करो। अलफ और बे, कितना सहज है! तुम कर्मा से भी पूछो मन्मनाभव का अर्थ क्या है? देखो क्या कहते हैं? बोलो भगवान किसको कहा जाए? ऊंच ते ऊंच भगवान है ना। उनको सर्वव्यापी थोड़ेही कहेंगे। वह तो सबका बाप है। अभी त्रिमूर्ति शिवजयन्ती आती है। तुमको त्रिमूर्ति शिव का चित्र निकालना चाहिए। ऊंच ते ऊंच है शिव, फिर सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा। वह भारत को स्वर्ग बनाते हैं। उनकी जयन्ती तुम क्यों नहीं मनाते हो? जरूर भारत को वर्सा दिया था। उनका राज्य था। इसमें तो तुमको आर्य समाजी भी मदद देंगे क्योंकि वह भी शिव को मानते हैं। तुम अपना झण्डा चढ़ाओ। एक तरफ त्रिमूर्ति गोला, दूसरे तरफ झाड़। तुम्हारा झण्डा वास्तव में यह होना चाहिए। बन तो सकता है ना। झण्डा चढ़ा दो जो सब देखें। सारी समझानी इसमें है। कल्प वृक्ष और ड्रामा इनमें तो बिल्कुल क्लीयर है। सबको मालूम पड़ जायेगा कि हमारा धर्म फिर कब होगा। आपेही अपना-अपना हिसाब निकालेंगे। सबको इस चक्र और झाड़ पर समझाना है। क्राइस्ट कब आया? इतना समय वह आत्मायें कहाँ रहती हैं? जरूर कहेंगे निराकारी दुनिया में। हम आत्मायें रूप बदलकर यहाँ आकर साकार बनते हैं। बाप को भी कहते है ना—आप

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भी रूप बदल साकार में आओ। आयेंगे तो यहाँ ना। सूक्ष्मवतन में तो नहीं आयेंगे। जैसे रूप बदलकर पार्ट बजाते हैं, आप भी आओ फिर से आकर राजयोग सिखलाओ। राजयोग ही भारत को स्वर्ग बनाने का। यह तो बड़ी सहज बातें हैं। बच्चों को शौक नाहिए। धारणा व औरों को करानी चाहिए। उसके लिए लिखापढ़ी करनी चाहिए। बाप भारत को आकर हेविन बना हैं। कहते भी हैं बरोबर क्राइस्ट से 3 हज़ार वर्ष पहले भारत पैराडाइज़ था इसलिए त्रिमूर्ति शि का चित्र सबको भेज देना चाहिए। त्रिमूर्ति शिव की स्टैम्प बनानी चाहिए। इन स्टैम्प बनाने वाल की भी डिपार्टमेंट होगी। देहली में तो बहुत पढ़े लिखे हैं, यह काम कर सकते हैं। तुम्हारी कैपीटल भी देहली होनी है। पहले देहली को परिस्तान कहते थे। अब तो कब्रिस्तान है। तो यह सब बात बच्चों की बुद्धि में आनी चाहिए।

अभी तुम्हें सदा खुशी में रहना है, बहुत-बहुत मीठा बनना है। सबको प्रेम से चलाना है। सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनने का पुरूषार्थ करना है। तुम्हारे पुरुषार्थ का यही लक्ष्य है परन्तु अभी तक कोई बना नहीं है। अभी तुम्हारी चढ़ती कला होती जाती है। धीरे-धीरे चढ़ते हो ना। तो बाबा हर प्रकार से शिव जयन्ती पर सेवा करने का इशारा देते रहते हैं। जिससे मनुष्य समझेंगे कि बरोबर इन्हों की नॉलेज तो बड़ी है। मनुष्यों को समझाने में कितनी मेहनत लगती है। मेहनत बिगर राजधानी थोड़ेही स्थापन होगी। चढ़ते हैं, गिरते हैं फिर चढ़ते हैं। बच्चों को भी कोई न कोई तूफान आता है। मूल बात है ही याद की। याद से ही सतोप्रधान बनना है। नॉलेज तो सहज है। बच्चों को बहुत मीठे ते मीठा बनना है। एम आब्जेक्ट तो सामने खड़ी है। यह (लक्ष्मी-नारायण) कितने मीठे हैं। इन्हों को देख कितनी खुशी होती है। हम स्टूडेन्ट की यह एम ऑब्जेक्ट है। चढ़ाने वाला है भगवान। अच्छा!

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप द्वारा मिली हुई नॉलेज और वर्से को स्मृति में रख सदैव हर्षित रहना है। ज्ञान और योग है तो सर्विस में तत्पर रहना है।

२. सुखधाम और शान्तिधाम को याद करना है। इन देवताओं जैसा मीठा बनना है। अपार खुशी में रहना है। रूहानी टीचर बन ज्ञान का दान करना है।

वरदान:- संगमयुग पर प्रत्यक्षफल द्वारा शक्तिशाली बनने वाली सदा समर्थ आत्मा भव

संगमयुग पर जो आत्मायें बेहद सेवा के निमित्त बनती हैं - उन्हें निमित्त बनने का प्रत्यक्ष फल शक्ति की प्राप्ति होती है। यह प्रत्यक्षफल ही श्रेष्ठ युग का फल है। ऐसा फल खाने वाली शक्तिशाली आत्मा किसी भी परिस्थिति के ऊपर सहज ही विजय पा लेती है। वह समर्थ बाप के साथ होने के कारण व्यर्थ से सहज मुक्त हो जाती है। जहरीले सांप समान परिस्थिति पर भी उनकी विजय हो जाती है इसलिए यादगार में दिखाते हैं कि श्रीकृष्ण ने सर्प के सिर पर डांस किया।

स्लोगन:-

आप सम्पन्न बनो तो समय का पर्दा हट जायेगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

26-6-76 प्रात:क्लास ओमशान्ति ''पिताश्री'' शिवबाबा याद है?

आज इस पाप की दुनिया से• ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों ने गीत की लाइन सुनी। यह है पाप की दुनिया, बच्चे जानते भी हैं यह पापआत्माओं की दुनिया है। कितना बड़ा अक्षर है। परन्तु पत्थरबुद्धि वा बन्दरबुद्धि यह समझ नहीं सकते हैं कि सचमुच यह पापआत्माओं की दुनिया है, जरूर कोई पुण्यआत्माओं की दुनिया भी थी। उसको कहा जाता है स्वर्ग, पापआत्माओं की दुनिया को कहा जाता है नर्क। भारत में भी स्वर्ग और नर्क का प्रचार बहुत है। मनुष्य मरते हैं तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। तो इससे सिद्ध होता है नर्कवासी थे। पतित दुनिया से पावन दुनिया में गया। परन्तु मनुष्यों को कुछ पता नहीं है। जो आता है सो बोल देते हैं। यथार्थ अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। बाप आकर बच्चों को तसल्ली देते हैं कि अब थोड़ा धीर्य धरो। तुम पापों के बोझ से बहुत ही भारी हो पड़े हो। अब तुमको पुण्य आत्मा बनाए नई दुनिया में ले जाते हैं। जिसको स्वर्ग कहा जाता है। वहाँ कोई न पाप होगा न दुख होगा। बच्चों को धीर्य मिला हुआ है। आना यहाँ है। फिर हम अपने शान्तिधाम सुखधाम में जावेंगे। जैसे बीमार मनुष्य थोड़ा ठीक होने पर होता है तो डाक्टर धीर्य देते हैं अभी से तुम बहुत अच्छा हो जावेंगे। अब यह तो है बेहद का धीर्य। बेहद का बाप कहते हैं तुम तो बहुत दुखी पतित हो गये हो। अब हम तुम बच्चों को आस्तिक बनाते हैं। फिर रचना का भी परिचय देते हैं। ऋषि आदि तो कहते आये हैं कि हम रचता और रचना को नहीं जानते हैं। अब उनको कौन जानते हैं? अब और किस द्वारा जान सकते हैं यह किसको पता नहीं है। ड्रामा के आदि मध्य अन्त को कोई जानते ही नहीं हैं। बाप कहते हैं मैं कल्पयुगे2 आकर ड्रामा अनुसार तुम बच्चों को पहले2 आस्तिक बनाता हूँ। फिर तुमको रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ सुनाता हूँ। अर्थात् तुम्हारा ज्ञान का तीसरा नेत्र खोलता हूँ। तुमको रोशनी मिल गई है। आँखों की रोशनी चली जाती है तो मनुष्य अन्धे हो जाते हैं। मनुष्यों को ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं ~~है तो उनको कहा जाता है अन्धे की औलाद अन्धे। मनुष्य रचता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं~~ जानते हैं तो उनको बुद्धिहीन अन्धे कहा जाता है। गीता में भी है - एक हैं अन्धे की औलाद अन्धे दूसरे हैं सज्जे। दिखाते हैं महाभारत लड़ाई लगी थी और एक आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हुई थी। बाप ने आत्माओं को राजयोग सिखाया था- सतयुगी स्वराज्य देने के लिए। आत्मायें कहती हैं मैं राजा हूँ। मैं बैरिस्टर हूँ। तुम्हारी आत्मा अब जानती है। हम बाप से विश्व का स्वराज्य पा रहे हैं। शिव के रचता द्वारा। वह किसका रचता है? नई दुनिया का। बाप नई सृष्टि रचते हैं। क्रियेटर भी है तो उनको सारा ज्ञान भी है+सारी रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी को कोई एक भी नहीं जानते हैं। जिनको ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है। सिवाए बाप के कोई तीसरा नेत्र दे नहीं सकता। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन। बाप सब कुछ जानते हैं। स्थूलवतन है मनुष्यों की सृष्टि। उनको कहा जाता है कारपोरियल वर्ल्ड। सन्यासी कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। वह ज्योति ज्योत समावेंगे। ऐसा है नहीं। तुम जानते हो ब्रह्म तत्व में जाकर निवास करेंगे। वह शान्तिधाम घर है। वह तो कह देते हैं ब्रह्म ही भगवान है। कितना फर्क है। ब्रह्म तो तत्व है। जैसे आकाश तत्व है वैसे ब्रह्म महत् तत्व है। जहाँ हम आत्मायें और परमपिता परमात्मा निवास करते हैं। उनको स्वीट होम कहा जाता है। वह है आत्माओं का घर। बच्चों को मालूम पड़ा है ब्रह्म महतत्व में कोई आत्मा लीन नहीं होती और आत्मा एक बिन्दी को प्राप्त नहीं होती। आत्मा अविनाशी है। यह ड्रामा भी बना बनाया अविनाशी है। इस ड्रामा के जितने एक्टर्स हैं। अभी है संगमयुग। सब ही अभी एक्टर्स हाजिर हैं। थोड़े समय के बाद सब आ जाते हैं। नाटक पूरा होता है तो धनी एक्टर्स, क्रियेटर डायरेक्टर आदि सब जरूर हाजिर होते हैं। इस समय यह बेहद का ड्रामा पूरा होता है, फिर रिपीट होता है। उन हद के नाटकों में चेन्ज भी कर सकते हैं। ड्रामा पुराना भी हो जाता है। यह तो बेहद का ड्रामा अनादि अविनाशी है। वह फिल्म स्टोरियाँ, [illegible] बनाते हैं। देवतायें कोई त्रिकालदर्शी नहीं होते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नु एक धर्म वाले त्रिकालदर्शी हैं। त्रिकालदर्शी तो सिर्फ तुम ब्राह्मण धर्म वाले हो। जब तक ब्राह्मण न बने तब तक तीसरा नेत्र ज्ञान का मिल न सके। ड्रामा के आदि मध्य अन्त को, सभी धर्मों को भी जानते हो। तुम भी मास्टर नालेजफुल हो जाते हैं। बाप बच्चों को आपसमान बनावेंगे न। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। यह सभी आत्माओं का बाप है। बाप बच्चों को आस्तिक बनाए त्रिकालदर्शी बनाते हैं। अब तुम बच्चे हो, सबको यह कहना है कि शिवबाबा आया है। उनको याद करो। आस्तिक बनते हैं वह बाप को अच्छी रीति प्यार करते हैं। तुम्हारे ऊपर बाप का भी प्यार है। तुमको स्वर्ग का वर्सा देते हैं। गाया हुआ है कि विनाश काले विपरीत बुद्धि विनशन्ती और विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ती। गीता में कोई 2अक्षर सच्चे हैं। बाकी है सब झूठ। श्रीमत भगवत गीता है सर्वोत्तम शास्त्र आदि सनातन देवी देवता धर्म का शास्त्र। यह भी समझाया है मुख्य धर्म शास्त्र हैं ही चार। और जो धर्म वाले हैं वह आते भी हैं सिर्फ अपने धर्म की स्थापना करने। सद्गति आदि की बात नहीं। उनको गुरु भी नहीं कह सकते हैं। गुरु का तो काम ही है वापिस ले जाना। इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट आदि तो आते हैं फिर उनके पिछाड़ी उनकी वंशावली भी आती रहती है। गुरु वह जो दुःख से छुड़ावे। और सुख में ले जावे। वह तो सिर्फ धर्म स्थापन करने आते हैं। गुरु नानक आया सिक्ख धर्म की स्थापना करने, कि सद्गति करने? कोई भी धर्म स्थापक को गुरु नहीं कह सकते हैं। यहाँ तो बहुतों को गुरु कह देते हैं, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी गुरु नहीं कह सकते हैं। एक शिवबाबा ही सर्व का सद्गति दाता है। यहाँ तो ढेर के ढेर गुरु हैं। भारत में स्त्री का पति भी गुरु ईश्वर है। सर्व का सद्गति दाता तो एक ही बाप है। गाते भी हैं एक राम। शिवबाबा को भी राम कहते हैं। बहुत मनुष्य बहुत भाषायें हैं। तो नाम भी बहुत रख दिये हैं। असुल नाम है शिव। उनको सोमनाथ भी कहते हैं। सोमरस पिलाया अर्थात ज्ञान धन दिया। बाकी पानी आदि की तो बात ही नहीं। तुमको इतना साहूकार बनाते हैं तो तुम उनका यादगार मन्दिर तो बनावेंगे ना। अभी बाप सम्मुख तुम बच्चों को नालेजफुल विलिसफुल बना रहे हैं। बाप तो ज्ञान का सागर है। तुमको ज्ञान नदियाँ बनाते हैं। सागर एक होता है। एक सागर से अनेक नदियाँ निकलती हैं। अभी तुम हो संगम पर। इस समय यह सारी धरती रावण का स्थान है। सिर्फ एक लंका नहीं थी। सारी धरती पर रावण का राज्य है। रामराज्य में बहुत थोड़े मनुष्य होंगे। यह सिर्फ अभी तुम्हारी बुद्धि में है। बाप ने समझाया है मैं 3धर्म की स्थापना करता हूँ। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय। फिर वैश्य शूद्र धर्म में और सभी आकर अपना2धर्म स्थापन करते हैं। बाप तो 3धर्म स्थापन करते हैं। और सभी धर्मों का विनाश करा देते हैं। और सभी धर्म स्थापक सिर्फ अपने 2 धर्म की स्थापना और पालना करते हैं। विनाश नहीं करते। बाप स्थापना करते हैं अनेक धर्मों का विनाश भी

a) कर देते हैं। भारत में त्रिमूर्ति का चित्र भी बनाते हैं। परन्तु उसमें शिव का चित्र गुम कर दिया है। जैसे मनुष्य के सिर काटे जाते हैं। वैसे त्रिमूर्ति से शिव का सिर काट दिया है। शिव से ही सिद्ध होता है कि [illegible] परमात्मा शिव ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना कर देते हैं। उनको करन करावनहार कहा जाता है। खुद भी कर्म करते हैं तुम बच्चों को भी सिखलाते हैं। कर्म, अकर्म, विकर्म की गति समझाते हैं। रावणराज्य में तुम जो कर्म करते हो वह विकर्म बन जाता है। सतयुग में तुम जो कर्म करते हो वह कर्म अकर्म हो जाता है। यहाँ विकर्म ही होता है। क्योंकि रावण का राज्य है। सतयुग में 5विकार होते ही नहीं। एक2 बात समझने की है। और डिटेल में समझाई जाती है। ओम का अर्थ वह लोग तो बहुत विस्तार से समझाते हैं। बाप कहते हैं ओम माना अहम् आत्मा और मेरा शरीर। कितना सहज है। और तुम समझते हो हम सुखधाम में जा रहे हैं। कृष्ण के मन्दिर को सुखधाम कहते हैं। है भी कृष्णपुरी। माताएं कृष्णपुरी में जाने लिए बहुत मेहनत करती हैं। तुम अभी भक्ति नहीं करते हो। तुमको ज्ञान मिला है। और कोई मनुष्यमात्र में यह ज्ञान नहीं है। गुरु लोग भी जो कर्म कराते हैं वह विकर्म बनजाते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शास्त्रों आदि में तो कितनी झूठ लिख दी है। सबसे जास्ती झूठ बताया है ईश्वर सर्वव्यापी है। बाप कहते हैं भारत को झूठ खण्ड बनाने वाले यह तुम्हारे शास्त्र हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है इस जैसी झूठ और कोई है नहीं। झूठ में पाप होता है। सबसे जास्ती पाप है बाप को ठिक्कर पत्थर भित्तर में ठोक दिया है। बाप कहते हैं ऐसे समझाने वाले गुरु लोगों को छोड़ो। जब तुमको ज्ञान सागर सतगुरु मिला है तो फिर भक्ति मार्ग वाले गुरुओं के पास जाते हो क्या? कम्बख्त होगा। गुरु अभी किसी को भी गुरु बाप नहीं जाते हो। यह लोग गुरुओं के पिछाड़ी धक्के खाते रहते हैं दुर्गति के लिए। बाप कहते हैं मैं तुमको पावन बनाकर जाता हूँ। फिर पतित कौन बनाते हैं? यह कोई बतला न सके। सब मेल अथवा फीमेल भक्त हैं, सीतायें हैं। सबकी सद्गति करने वाला राम एक है। सब रावण की जेल में हैं। यह है ही दुःखधाम। गुरुओं की जंजीरें भी बहुत कड़ी हैं। सबको भगवान समझते रहते हैं। जिधर देखता हूँ तू ही तू। भगवान फिर क्या दुखी होता है क्या? यह सब झूठ है। एक बाप ही आकर सच सुनाते हैं। बाप ही राइटियस है। बाकी सब आत्मायें अनराइटियस हैं। परमपिता परमात्मा तुमको राइटियस बनाते हैं। बाप कहते हैं तुम ही राइटियस थे तो पूज्य थे। तुम ही अब अनराइटियस पुजारी बने हो। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। बातें हैं आपेही पूज्य आपेही पुजारी यह तुम्हारा गायन है। बाप तो न पूज्य न पुजारी बनते हैं। वह तो है ही निराकार उनकी सदैव पूजा नहीं होती है। सतयुग में पूजा होती नहीं। बाप तुमको स्वर्ग का मालिक बना देते हैं। ऐसे बाप को 5 हजार वर्ष बाद सिर्फ हम देखते हैं। तुम्हारी आत्मा को अब नालेज मिली है। हम छोटे बच्चे थे फिर बड़े बनेंगे। ऐसे शरीर छोड़ेंगे। फिर दूसरा लेंगे। और कोई को भी यह नालेज है नहीं। बाप के साथ कितना विपरीत बुद्धि हैं। बाप कहते हैं एक तो मेरी ग्लानी करते हैं और फिर ब्रह्मा के लिए कहते हैं सरस्वती के ऊपर फिदा हुआ। ब्रह्मा एक है। बाप कहते हैं तुम सब पार्वतियां हो। शिवबाबा तुमको अमर कथा सुना रहे हैं अमर बनाने के लिए अमरलोक में ले जाने लिए। यह मृत्युलोक है। तुम सब पार्वतियां हो। अमरनाथ द्वारा अमरकथा सुन रहे हो। तुम बच्चे अमर बनते हो। सिर्फ बाप को याद करने से तुम्हारी आत्मा अमर बनती है। वहाँ दुःख की बात नहीं होती है। जैसे सर्प एक खल छोड़ दूसरी लेते हैं। यह सब मिसाल यहाँ के हैं। भ्रमरी का भी मिसाल यहाँ का है। भ्रमरी कीड़े को भूँ-भूँ कर आप समान बनाती है। तुम ब्राह्मण क्या करते हो। विष्टा के कीड़ों को बदल देवता बनाते हो। मनुष्य की ही बात है। भ्रमरी का तो यह एक दृष्टान्त है। तुम ब्राह्मण बच्चे अभी बाप द्वारा अमरकथा सुन रहे हो। विष्टा के कीड़ों को ज्ञान की भूँ-भूँ करते हो। जिससे मनुष्य से देवता बन जाते हैं। स्वर्ग की परी बन जावेंगे। बाकी ऐसे नहीं कि मानसरोवर में डुबकी लगाने से कोई परी बन जावेंगे? यह सब है झूठ। तुम झूठ ही सुनते आये हो। अब बाप सच सुनाते हैं। अब बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। तुम जानते हो निराकार परमपिता परमात्मा इस मुख द्वारा सुना रहे हैं। हम इन कानों द्वारा सुन रहे हैं। आत्म-अभिमानी बनना है। आत्मा को भी तुम अभी जानते हो। फिर परमात्मा का साक्षात्कार करते हो। मैं कौन हूँ? सिवाए बाप के कोई आत्म-अभिमानी बना न सके। कोई भी साधु सन्त आदि नहीं कहेंगे कि तुम आत्म-अभिमानी बनो। सिवाए बाप के और कोई कह न सके। शिव जयन्ती भी मनाते हैं। परन्तु उनकी जयन्ती कैसे है यह नहीं जानते। तब ही खुद आकर समझाते हैं मैं साधारण बूढ़े तन में प्रवेश करता हूँ। नहीं तो ब्रह्मा आवेगा कहाँ से? पतित तन भी चाहिए। अव्यक्त तनधारी ब्रह्मा में विराजमान होकर तो ब्राह्मण नहीं रचेंगे। कहते हैं मैं पतित शरीर, पतित दुनिया में आता हूँ। गाया भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना, फिर [illegible] करते हैं, जो यह ज्ञान पाते हैं वह देवता बन जाते हैं। मनुष्य ब्रह्मा का चित्र देखकर पूछते हैं। कहते हैं यह तो दादा का चित्र है। और प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ होगा। सूक्ष्मवतन में कैसे प्रजा रचेंगे? प्रजापिता ब्रह्मा के इतने हजारों कुमार कुमारियाँ हैं। कुछ तो समझेंगे होगा। हम शिवबाबा द्वारा वर्सा पा रहे हैं। तुम बच्चों को समझाना है वह है अव्यक्त ब्रह्मा, प्रजापिता तो जरूर यहाँ चाहिए। यह पतित ही फिर पावन बनते हैं। तत्त्वम्। अच्छा! ओम् शान्ति।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"मीठे बच्चे - तुम इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो, तुम्हें बाप द्वारा ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है इसलिए तुम हो आस्तिक"

प्रश्नः- बाप का कौन सा टाइटिल धर्म स्थापकों को नहीं दे सकते हैं?
उत्तरः- बाबा है सतगुरू। किसी भी धर्म स्थापक को गुरू नहीं कह सकते क्योंकि गुरू वह जो दुःख से छुड़ाये, सुख में ले जाये। धर्म स्थापन करने वालों के पीछे तो उनके धर्म की आत्मायें ऊपर से नीचे आती हैं, वह किसी को ले नहीं जाते। बाप जब आते हैं तो सभी आत्माओं को घर ले जाते हैं इसलिए वह सभी के सतगुरू हैं।

गीतः- इस पाप की दुनिया से... ओम् शान्ति।

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने गीत की लाइन सुनी। यह है पाप की दुनिया। बच्चे जानते भी हैं, यह पाप आत्माओं की दुनिया है। कितना बुरा अक्षर है। परन्तु मनुष्य यह समझ नहीं सकते कि सचमुच यह पाप आत्माओं की दुनिया है। जरूर कोई पुण्य आत्माओं की दुनिया भी थी, उसको कहा जाता है स्वर्ग। पाप आत्माओं की दुनिया को कहा जाता है नर्क। भारत में ही स्वर्ग और नर्क की चर्चा बहुत है। मनुष्य मरते हैं तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। तो इससे सिद्ध होता है नर्कवासी थे। पतित दुनिया से पावन दुनिया में गया। परन्तु मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है, जो आता है सो बोल देते हैं। यथार्थ अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं।

बाप आकर तुम बच्चों को तसल्ली देते हैं कि अब थोड़ा धीरज धरो। तुम पापों के बोझ से बहुत भारी हो पड़े हो। अब तुमको पुण्य आत्मा बनाए ऐसी दुनियां में ले जाते हैं, जिसको स्वर्ग कहा जाता है। वहाँ न कोई पाप होगा न कोई दुःख होगा। बच्चों को धीरज मिला हुआ है। आज यहाँ हैं कल अपने शान्तिधाम सुखधाम में जायेंगे। जैसे बीमार मनुष्य थोड़ा ठीक होने पर होता है तो डॉक्टर धीरज देते हैं — जल्दी से तुम बहुत अच्छा हो जायेंगे। अब यह तो है बेहद का धीरज़। बेहद का बाप कहते हैं— तुम तो बहुत दुःखी पतित हो गये हो। अब हम तुम बच्चों को आस्तिक बनाते हैं। फिर रचना का भी परिचय देते हैं। ऋषि आदि तो कहते आये हैं कि हम रचयिता और रचना को नहीं जानते हैं। अब उसको कौन जानते हैं। कब और किस द्वारा जान सकते हैं, यह किसको पता नहीं है। ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को कोई जानते ही नहीं। बाप कहते हैं— मैं संगमयुग पर आकर ड्रामा अनुसार तुम बच्चों को पहले-पहले आस्तिक बनाता हूँ फिर तुमको रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ सुनाता हूँ अर्थात् तुम्हारा ज्ञान का तीसरा नेत्र खोलता हूँ। तुमको रोशनी मिल गई है। आंखों की रोशनी चली जाती है तो मनुष्य अन्धे हो जाते हैं। इस समय मनुष्यों को ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है। मनुष्य होकर उस बाप और रचना के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते तो उनको बुद्धिहीन कहा जाता है। गीत में भी है— एक हैं अन्धे की औलाद अन्धे। दूसरे हैं सज्जे। दिखाते हैं — महाभारत लड़ाई लगी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

थी और एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हुई थी। बाप ने आत्माओं को आकर राजयोग सिखाया था — सतयुगी स्वराज्य देने के लिए। आत्मायें कहती हैं मैं राजा हूँ, मैं बैरिस्टर हूँ। तुम्हारी आत्मा अब जानती है — हम विश्व का स्वराज्य पा रहे हैं — विश्व के रचयिता बाप द्वारा। वह किसका रचयिता है? नई दुनिया का। बाप नई सृष्टि रचते हैं। क्रियेटर भी है तो उनमें सारा ज्ञान भी है। सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री कोई एक भी नहीं जानते हैं। किसको ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है। सिवाए बाप के कोई तीसरा नेत्र दे नहीं सकता। वर्ल्ड की हिस्ट्री, जॉग्राफी, मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन... यह सब तुम जानते हो। मूलवतन है आत्माओं की सृष्टि। सन्यासी कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जायेंगे वा ज्योति ज्योत समायेंगे। ऐसा है नहीं। तुम जानते हो ब्रह्म तत्व में जाकर निवास करेंगे। वह शान्तिधाम घर है। वह कह देते हैं ब्रह्म ही भगवान है, कितना फर्क है। ब्रह्म तो तत्व है। जैसे आकाश तत्व है, वैसे ब्रह्म भी तत्व है। जहाँ हम आत्मायें और परमपिता परमात्मा निवास करते हैं, उनको स्वीट होम कहा जाता है। वह है आत्माओं का घर। बच्चों को मालूम पड़ा है, ब्रह्म महतत्व में कोई आत्मायें लीन नहीं होती हैं और आत्मा कभी विनाश को प्राप्त नहीं होती। आत्मा अविनाशी है। यह ड्रामा भी बना बनाया अविनाशी है। इस ड्रामा के कितने एक्टर्स हैं। अभी है संगमयुग। जबकि सभी एक्टर्स हाजिर हैं। नाटक पूरा होता है तो सब एक्टर्स, क्रियेटर आदि सब आकर हाजिर होते हैं। इस समय यह बेहद का ड्रामा भी पूरा होता है फिर रिपीट होना है। उन हद के नाटकों में चेन्ज हो सकती है। ड्रामा पुराना हो जाता है। यह तो बेहद का ड्रामा अनादि अविनाशी है। बाप त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री बनाते हैं। देवतायें कोई त्रिकालदर्शी नहीं होते हैं। न शूद्र वर्ण वाले त्रिकालदर्शी होते हैं। त्रिकालदर्शी तो सिर्फ तुम ब्राह्मण वर्ण वाले हो। जब तक ब्राह्मण न बनें तब तक तीसरा नेत्र ज्ञान का मिल न सके। तुम झाड़ के आदि-मध्य-अन्त को, सभी धर्मों को भी जानते हो। तुम भी मास्टर नॉलेजफुल हो जाते हो। बाप बच्चों को आपसमान बनायेंगे ना। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। जो सभी आत्माओं का बाप है। सभी बच्चों को आस्तिक बनाए त्रिकालदर्शी बनाते हैं। अब तुम बच्चों को सबको यह कहना है कि शिवबाबा आया है, उनको याद करो। जो आस्तिक बनते हैं वह बाप को अच्छी रीति प्यार करते हैं। तुम्हारे ऊपर बाप का भी प्यार है। तुमको स्वर्ग का वर्सा देते हैं। गाया हुआ है कि विनाश काले विप्रीत बुद्धि विनशन्ती और विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ती। गीता में कोई-कोई अक्षर सच्चे हैं। श्रीमत भगवत गीता है सर्वोत्तम शास्त्र। आदि सनातन देवी-देवता धर्म का शास्त्र। यह भी समझाया है मुख्य धर्म शास्त्र हैं ही 4 और जो धर्म वाले हैं, वह आते ही हैं सिर्फ अपने धर्म की स्थापना करने। राजाई आदि की बात नहीं। उनको गुरू भी नहीं कह सकते। गुरू का तो काम ही है—वापस ले जाना। इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट आदि तो आते हैं फिर उनके पिछाड़ी उनकी वंशावली भी आती है। गुरू वह जो दुःख से छुड़ाये और सुख में ले जाये। वह तो सिर्फ धर्म स्थापन करने आते हैं। यहाँ तो बहुतों को गुरू कह देते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी गुरू नहीं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कह सकते। एक शिवबाबा ही सर्व का सद्गति दाता है। पुकारते भी एक राम को हैं। शिवबाबा को भी राम कहते हैं। बहुत भाषायें हैं, तो नाम भी बहुत रख दिये हैं। असुल नाम है शिव। उनको सोमनाथ भी कहते हैं। सोमरस पिलाया अर्थात् ज्ञान धन दिया। बाकी पानी आदि की तो बात ही नहीं। तुमको सम्मुख नॉलेजफुल, ब्लिसफुल बना रहे हैं। बाप तो ज्ञान का सागर है। तुम बच्चों को ज्ञान नदियाँ बनाते हैं। सागर एक होता है। एक सागर से अनेक नदियाँ निकलती हैं। अभी तुम हो संगम पर। इस समय यह सारी धरती रावण का स्थान है। सिर्फ एक लंका नहीं थी। सारी धरती पर रावण का राज्य है। रामराज्य में बहुत थोड़े मनुष्य होंगे। यह सिर्फ अभी तुम्हारी बुद्धि में है। बाबा ने समझाया है — मैं 3 धर्मों की स्थापना करता हूँ — ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय। फिर वैश्य, शूद्र वर्ण में और सभी आकर अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं। अनेक धर्मों का विनाश भी कराते हैं। भारत में त्रिमूर्ति का चित्र भी बनाते हैं। परन्तु उसमें शिव का चित्र गुम कर दिया है। शिव से
a) ही सिद्ध होता है कि परमपिता परमात्मा शिव ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना कराते हैं, उनको करनकरावनहार कहा जाता है। खुद भी कर्म करते हैं तुम बच्चों को भी सिखलाते हैं। कर्म-अकर्म-विकर्म की गति भी समझाते हैं। रावण राज्य में तुम जो कर्म करते हो वह विकर्म बन जाता है। सतयुग में जो कर्म करते हो वह अकर्म हो जाता है। यहाँ विकर्म ही होता है क्योंकि रावण का राज्य है। सतयुग में 5 विकार होते ही नहीं। एक-एक बात समझने की है और सेकेण्ड में समझाई जाती है। ओम् का अर्थ वो लोग तो बहुत विस्तार से समझाते हैं। बाप कहते हैं— ओम् माना अहम् आत्मा और यह मेरा शरीर। कितना सहज है। और तुम समझते हो हम सुखधाम में जा रहे हैं। कृष्ण के मन्दिर को सुखधाम कहते हैं। है भी कृष्णपुरी। मातायें, कृष्णपुरी में जाने के लिए बहुत मेहनत करती हैं। तुम अभी भक्ति नहीं करते हो। तुमको ज्ञान मिला है और कोई मनुष्य मात्र में यह ज्ञान नहीं है। मैं तुमको पावन बनाकर जाता हूँ फिर पतित कौन बनाते हैं? यह कोई बता न सके। सब मेल अथवा फीमेल भक्तियाँ हैं, सीतायें हैं। सबकी सद्गति करने वाला बाप है। सब रावण की जेल में हैं। यह है ही दु:खधाम। बाप तुमको सुखधाम का मालिक बनाते हैं। ऐसे बाप को 5 हजार वर्ष बाद सिर्फ तुम देखते हो। लक्ष्मी-नारायण की आत्मा को अब नॉलेज है। हम छोटेपन में यह (कृष्ण) हैं फिर बड़े बनेंगे ऐसे शरीर छोड़ेंगे। फिर दूसरा लेंगे और कोई को यह नॉलेज नहीं है।

बाप कहते हैं— तुम सब पार्वतियाँ हो, शिवबाबा तुमको अमरकथा सुना रहे हैं — अमर बनाने के लिए, अमरलोक में ले जाने के लिए। यह मृत्युलोक है। तुम सब पार्वतियाँ अमरनाथ द्वारा अमरकथा सुन रही हो। तुम सच-सच बनते हो सिर्फ बाप को याद करने से तुम्हारी आत्मा अमर बनती है। जहाँ दु:ख की बात नहीं होती। जैसे सर्प एक खाल छोड़ दूसरी लेते हैं। यह सब मिसाल यहाँ के हैं। भ्रमरी का मिसाल भी यहाँ का है। तुम ब्राह्मण क्या करते हो— विकारी कीड़ों को बदल देवता बनाते हो। मनुष्य की ही बात है। भ्रमरी का तो यह एक दृष्टानत हैं। तुम ब्राह्मण बच्चे अभी बाप द्वारा अमर कथा सुन

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रहे हो, औरों को बैठ ज्ञान की भूँ-भूँ करते हो, जिससे मनुष्य से देवता, स्वर्ग की परी बन जायेंगे। बाकी ऐसे नहीं कि मानसरोवर में डुबकी लगाने से कोई परी बन जायेंगे। यह सब है झूठ। तुम झूठ ही सुनते आये हो अब बाप टुथ सुनाते हैं। अब बाप कहते हैं— अपने को आत्मा समझो। तुम समझते हो निराकार परमपिता परमात्मा इस मुख द्वारा सुना रहे हैं। हम इन कानों द्वारा सुन रहे हैं। आत्म-अभिमानी बनना है, फिर परमात्मा भी रियलाइज कराते हैं। मैं कौन हूँ? दूसरा कोई आत्म-अभिमानी बना न सके। सिवाए बाप के और कोई कह न सके कि तुम आत्म-अभिमानी बनो। शिव जयन्ति भी मनाते हैं परन्तु उनकी जयन्ति कैसे है, यह नहीं जानते। बाप ही खुद आकर समझाते हैं — मैं साधारण बूढ़े तन में प्रवेश करता हूँ। नहीं तो ब्रह्मा आयेगा कहाँ से? पतित तन ही चाहिए। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा में विराजमान होकर तो ब्राह्मण नहीं रचेंगे। कहते हैं मैं पतित शरीर, पतित दुनिया में आता हूँ। गाया हुआ है — ब्रह्मा द्वारा स्थापना। फिर जिसकी स्थापना करते हैं, जो यह ज्ञान पाते हैं वह देवता बन जाते हैं। मनुष्य ब्रह्मा का चित्र देखकर मूँझ जाते हैं। कहते हैं यह तो दादा का चित्र है। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ होगा। सूक्ष्मवतन में कैसे प्रजा रचेंगे। प्रजापिता के बच्चे हजारों ब्रह्माकुमार कुमारियाँ हैं। झूठ थोड़ेही होगा। हम शिवबाबा द्वारा वर्सा पा रहे हैं। तुम बच्चों को समझाया है वह अव्यक्त ब्रह्मा है। प्रजापिता तो साकार में चाहिए। यह पतित ही तो पावन बनते हैं। तत्त्वम्।

अच्छा—

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

(१) आत्म-अभिमानी बनकर इन कानों द्वारा अमरकथा सुननी है। ज्ञान की भूँ-भूँ कर आप समान बनाने की सेवा में रहना है।

(२) एक बाप ही राइटियस है, उनसे ही सुनना है। अनराइटियस बातें जो सुनी—उसे भूल जाना है।

वरदान:- पास विद आनर बनने के लिए सर्व द्वारा सन्तुष्टता का पासपोर्ट प्राप्त करने वाले सन्तुष्टमणि भव

जो बच्चे अपने आपसे, अपने पुरुषार्थ वा सर्विस से, ब्राह्मण परिवार के सम्पर्क से सदा सन्तुष्ट रहते हैं उन्हें ही सन्तुष्टमणि कहा जाता है। सर्व आत्माओं के सम्पर्क में अपने को सन्तुष्ट रखना वा सर्व को सन्तुष्ट करना—इसमें जो विजयी बनते हैं वही विजयमाला में आते हैं। पास विद् आनर बनने के लिए सर्व द्वारा सन्तुष्टता का पासपोर्ट मिलना चाहिए। यह पासपोर्ट लेने लिए सिर्फ सहन करने वा समाने की शक्ति धारण करो।

स्लोगन:-

दिल में परमात्म प्यार वा शक्तियां समाई हुई हों तो मन में उलझन आ नहीं सकती।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

23-4-83 प्रातःमुरली ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे- अपना पोतामेल चेक करो कि सारे दिन में बाप को कितना समय याद किया, कोई भूल तो नहीं की.. क्योंकि तुम हर एक व्यापारी हो"

प्रश्नः-कौन सी एक मेहनत अन्तर्मुखी बन करते रहो तो अपार खुशी रहेगी?

उत्तरः-जन्म जन्मान्तर जो कुछ किया है, जो सामने आता रहता है, उन सबसे बुद्धियोग निकाल सतोप्रधान बनने के लिए बाप को याद करने की मेहनत करते रहो। चारों तरफ से बुद्धि हटाए अन्तर्मुखी बन बाप को याद करो। सर्विस का सबूत दो तो अपार खुशी रहेगी।

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, यह तो बच्चे जानते हैं कि रूहानी बाप रूहानी बच्चों को बैठ समझाते हैं। रूहानी बाप हुआ बेहद का बाप। रूहानी बच्चे भी हुए बेहद के बच्चे। बाप को तो सब बच्चों की सद्गति करनी है। किस द्वारा? इन बच्चों द्वारा। विश्व की सद्गति करनी है। सारे विश्व के बच्चे तो यहाँ आकर नहीं पढ़ते हैं। नाम ही है ईश्वरीय विश्व विद्यालय। मुक्ति तो सबकी होती ही है। मुक्ति कहो जीवनमुक्ति कहो। मुक्ति में जाकर फिर भी सबको जीवनमुक्ति में आना ही है। तो ऐसे कहेंगे सभी जीवनमुक्ति में आते वाया मुक्तिधाम। एक दो के पीछे आना ही है पार्ट बजाने। तब तक मुक्तिधाम में ठहरना पड़ता है। बच्चों को अब रचयिता और रचना का मालूम पड़ गया है। यह सारी रचना अनादि है। रचयिता तो एक ही बाप है। यह जो भी सभी आत्मायें हैं, सब बेहद के बाप के बच्चे हैं। जब बच्चों को मालूम पड़ता है- तो वही आकर योग सीखते हैं। यह भारत के लिए ही योग है। बाप आते भी भारत में हैं, भारतवासियों को ही याद की यात्रा सिखलाकर पावन बनाते हैं। और नालेज भी देते हैं कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। यह भी बच्चे जानते हैं रूद्र माला भी है जो गाई और पूजी जाती है। सिमरण की जाती है। भक्त माला भी है। ऊँचे ते ऊँचे भक्तों की माला है। है तो सारी भक्त माला, रावण माला। इस कल्प के संगमयुग के पहले जो भी है सब है रावण माला। उसमें फिर भक्त माला भी है। भक्त माला के बाद होनी चाहिए ज्ञान माला। भक्ति और ज्ञान है ना। भक्त माला भी है तो रूद्र माला भी है। पीछे फिर रूण्ड माला कहा जाता है। क्योंकि ऊँचे ते ऊँच मनुष्य सृष्टि में है विष्णु। जिसको सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं। लक्ष्मी नारायण राज्य तो यहाँ करते हैं तो कहेंगे विष्णु की रूण्ड माला भी है। प्रजापिता ब्रह्मा तो यह है। उनकी माला जरूर है। आखरीन यह माला बन जायेगी तब ही वह रूद्र माला और विष्णु की रूण्ड माला बनेगी। ऊँचे ते ऊँचा है शिवबाबा फिर ऊँचे ते ऊँच है विष्णु का राज्य। यह त्रिमूर्ति जो दिखाया है-

a) उसमें होना चाहिए ब्रह्मा विष्णु और शिव न कि शंकर। परन्तु बाजू में शिव को कैसे रखें। तो फिर शंकर को रख दिया है और शिव को ऊपर में रखा है। उसमें शोभा अच्छी होती है। सिर्फ दो शोभा नहीं देते। शंकर की माला नहीं कहेंगे। ब्रह्मा विष्णु और रूद्र माला बस। शोभा के लिए भक्ति में कितने चित्र बनाये हैं। परन्तु ज्ञान कुछ भी नहीं है। तुम जो चित्र बनाते हो उनकी पहचान देनी है तो मनुष्य समझ जाएं। नहीं तो शिव शंकर को मिला देते हैं। बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन में भी सारी सा0की बात है। हड्डी मास वहाँ होता नहीं। सा0 करते हैं। सम्पूर्ण ब्रह्मा भी है परन्तु वह है सम्पूर्ण अव्यक्त। अभी व्यक्त ब्रह्मा जो है, उनको अव्यक्त बनना है। व्यक्त ही अव्यक्त होता है। जिसको फरिश्ता भी कहते हैं। उनका सूक्ष्म वतन में चित्र रख दिया है। सूक्ष्मवतन में जाते हैं, कहते हैं बाबा ने शूबीरस पिलाया। अब वहाँ झाड आदि तो होता नहीं। वैकुण्ठ में है, लेकिन ऐसे नहीं कि वैकुण्ठ से ले आकर पिलाते होंगे। यह सब सूक्ष्मवतन में सा0की बात है। अब बच्चे जानते हैं अब वापिस घर जाना है। और आत्म-अभिमानी बनना है। मैं आत्मा-अविनाशी हूँ यह शरीर विनाशी है। आत्मा का ज्ञान भी तुम बच्चों में है। वे तो आत्मा क्या है, यह भी नहीं जानते। उन लोगों को यह भी मालूम नहीं कि कैसे उनमें 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। यह नालेज सिर्फ बाप ही देते हैं। अपनी भी नालेज देते हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान भी बनाते हैं। बस यही पुरूषार्थ करते रहो- हम आत्मा हैं अब परमात्मा के साथ योग लगाना है। सर्वशक्तिवान पतित पावन एक बाप को ही कहते हैं। सन्यासी कहते हैं पतित पावन आओ। कोई तो ब्रह्म को पतित पावन कह देते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अब तुम बच्चों को भक्ति का भी ज्ञान मिलता है कि भक्ति कितना समय चलती है। ज्ञान कितना समय चलता है। यह बाप बैठ समझाते है। पहले कुछ नहीं जानते थे। गोया तुच्छ बुद्धि थे। जानवरों में भी कुछ बुद्धि है, परन्तु मनुष्य होकर तुच्छ बुद्धि बन पड़े है। सतयुग में बिल्कुल स्वच्छ बुद्धि थे। कितने उन्हों में दैवीगुण थे। तुम बच्चों को दैवी गुण भी जरूर धारण करने है। कहते है ना यह तो जैसे देवता है। भल साधु सन्त महात्मा को लोग मानते है परन्तु वह दैवी बुद्धि तो नहीं है। रजोगुणी बुद्धि हो जाते है। राजा रानी प्रजा है तो राजधानी कब और कैसे स्थापन होती है यह दुनिया नहीं जानती। यहाँ तुम सब नई बातें सुनते हो। तो माला का भी राज़ समझाया। ऊँचे ते ऊँच है बाप। उनकी माला ऊपर में है, रूद्र यह है निराकार फिर साकार लक्ष्मी नारायण उनकी भी माला है। ब्राह्मणों की माला अभी नहीं बनती। अन्त में तुम ब्राह्मणों की माला भी बन जाती है। जो ही रूद्र माला और रूण्ड माला बनती है। इन बातों में जास्ती प्रश्न-उत्तर करने की जरूरत नहीं। मूल बात है-अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करो। यह निश्चय पक्का चाहिए। मूल बात है-पतितों को पावन बनाना। सारी दुनिया पतित है फिर पावन बनना है। मूलवतन में भी अभी पावन है तो सुखधाम में भी सब पावन है। तुम पावन बनकर पावन दुनिया में जाते हो। गोया अब पावन दुनिया स्थापन हो रही है। यह सब ड्रामा में नूंध है। तुम बच्चों को क्रिश्चियन वा बौद्धियों की नालेज नहीं चाहिए। उनकी नालेज से कोई इतना सुख वा ऊँच पद तो नहीं मिलता है। इसलिए बाप कहते है और सब धर्मों की बातों को छोड़ दो। मुख्य बात है यह, जिससे फायदा होता है। जो जितना पढ़ते है उतना ऊँच पद पाते है। बाप कहते है, सारे दिन का पोतामेल देखो - कोई भूल तो नहीं हुई। व्यापारी लोग मुरादी सम्भालते है। यह भी कमाई है। तुम हर एक व्यापारी हो। बाबा से व्यापार करते हो। अपनी जाँच करनी है। हमारे में कितने दैवीगुण है। कितना बाप को याद करते है। कितना हम औरों को आप समान बनाते जाते है। ... अभी तक सब आते ही रहते है। बीच में जाना तो किसको भी नहीं है। जाना तो इकट्ठा है। भल दृष्टि खाली नहीं रहती गायन है राम गयो रावण गयो.. परन्तु रहते दोनो है। रावण सम्प्रदाय जाती है तो फिर लौटकर नहीं आती है। बाकी यह बच जाते है। यह भी आगे चलकर सब सा० होना है। यह जानना है कि नई दुनिया की कैसे स्थापना हो रही है। पिछाड़ी में क्या होगा। फिर सिर्फ हमारा ही धर्म रह जायेगा। सतयुग में तुम राज्य करेंगे। कलियुग खत्म हो जायेगा। फिर सतयुग को आना है। अभी रावण सम्प्रदाय और राम सम्प्रदाय दोनो है। संगमयुग पर ही यह सब होता है। अभी तुम यह सब कुछ जानते हो। बाप कहते है बाकी जो कुछ राज है-वह आगे चलकर धीरे2 समझाते रहेंगे। जो रिकार्ड में नूंध है, वह खुलते जायेंगे। तुम समझाते जायेंगे। हम एडवान्स कुछ भी नहीं बतायेंगे। यह भी ड्रामा का प्लैन है। रिकार्ड खुलता जाता है। बाबा बोलता जाता है। तुम्हारी बुद्धि में यह सब बातों की समझ बढ़ती जाती है। जैसे2 रिकार्ड बजता जायेगा वैसे2 बाबा की मुरली चलती जायेगी। ड्रामा का राज़ सारा भरा पड़ा है। ऐसे नहीं रिकार्ड से सुई उठाकर बीच में रख सकते है तो वह रिपीट हो। नहीं। वह भी फिर वही रिपीट होगा। नई बात नहीं। बाप के पास जो नई बात होगी वह रिपीट होगी। तुम सुनते और सुनाते जायेंगे। बाकी सब गुप्त है। यह राजधानी स्थापन हो रही है। ... तुम जन्म लेंगे। राजा रानी प्रजा सब चाहिए। यह सब बुद्धि से काम लेना पड़ता है। प्रैक्टिकल में जो होगा सो देखा जायेगा। जो यहाँ से जाते है वह अच्छे साहूकार के घर में जाकर जन्म लेते है। अभी भी तुम्हारी वहाँ बहुत खातिरी होती है। इस समय भी रतनजड़ित चीजें सबके पास होती है। परन्तु उन्हों में इतनी पावर नहीं है। पावर तुम्हारे में है। तुम जहाँ जायेंगे वहाँ अपना शो करेंगे। तुम तो ऊँच बनते हो तो तुम जाकर वहाँ दैवी चरित्र दिखायेंगे। आसुरी बच्चे जन्मते ही रोते रहेंगे। गन्दे भी होते है। तुम तो बड़े कायदेसिर पलेंगे। गंद आदि की बात नहीं। आजकल के बच्चे तो गन्दे हो पड़ते है। सतयुग में ऐसी बात हो न सके। फिर भी है तन है ना। वहाँ बांस आती नहीं जो कहना पड़े अगरबत्ती जलाओ। बगीचों में बहुत खुशबूदार फूल होंगे। यहाँ के

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

फूलों में इतनी खुशबू नहीं। वहाँ तो हर एक चीज़ में 100% खुशबू रहती है। यहाँ तो 1% भी नहीं है। वहाँ तो फूल भी फर्स्टक्लास होंगे। यहाँ भल कोई कितना भी साहूकार हो तो भी इतना नहीं। वहाँ तो किसम2 की चीजें होंगी। बर्तन आदि सब सोने के होंगे। जैसे यहाँ के पत्थर, वहाँ फिर सोना ही सोना। रेती में भी सोना होता है। विचार करो कितना सोना होगा। जिससे मकान आदि बनेंगे। ऐसी मौसम होगी-वहाँ न सर्दी न गर्मी। वहाँ गर्मी का दुख नहीं जो पंखे चलाने पड़ें। उसका नाम ही है स्वर्ग। वहाँ अपार सुख होता है। तुम्हारे जैसा पदमापदम भाग्यशाली कोई बनते ही नहीं। लक्ष्मी-नारायण की कितनी महिमा गाते हैं। उनको जो ऐसा बनाते हैं, उनकी कितनी महिमा चाहिए। पहले होती है अव्यभिचारी भक्ति, फिर देवताओं की भक्ति शुरू होती है। वह भी भूत पूजा कहेंगे। शरीर तो वह है नहीं। 5तत्वों की पूजा होती है। शिवबाबा के लिए तो ऐसे नहीं कहेंगे। पूजा करने के लिए कोई चीज़ का या सोने आदि का बनाते हैं। आत्मा को थोड़ेही सोना कहेंगे। आत्मा किस चीज़ की बनी हुई है। शिव का चित्र किस चीज़ का बनाया हुआ है, वह झट बतायेंगे। परन्तु आत्मा परमात्मा किस चीज़ का बना हुआ है वह कोई बता न सके। सतयुग में 5तत्व भी शुद्ध होते हैं। यहाँ हैं अशुद्ध। तो पुरूषार्थी बच्चे ऐसे2 ख्यालात करते रहेंगे। बाप कहते हैं इन सब बातों को भी छोड़ दो। जो होना है वह होगा। पहले बाप को याद करो। चारों तरफ से बुद्धि हटाकर मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। जो कुछ सुनते हो उन सबको छोड़ एक बात पक्की करो-कि हमको सतोप्रधान बनना है। फिर सतयुग में जो कल्प2 हुआ होगा, वही होगा। उसमें फर्क नहीं पड़ सकता। मूल बात है, बाप को याद करो। यह है मेहनत। यह पूरी करो। तूफान तो बहुत आते हैं। जन्म जन्मान्तर जो कुछ किया है वह सब सामने आता है। तो सब तरफ से बुद्धि को हटाकर मेरे को याद करने का पुरूषार्थ करो। अन्तर्मुखी होकर। स्मृति तो आई, तुम बच्चों को सो भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। सर्विस से भी मालूम पड़ जाता है। सर्विस करने वालों को सर्विस की खुशी रहती है। जो अच्छी सर्विस करते हैं, उनकी सर्विस का सबूत भी मिलता है। पण्डे बनकर आते हैं। कौन महारथी घोड़ेसवार प्यादे हैं वह झट पता पड़ जाता है। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- (1) दूसरी सब बातों को छोड़, बुद्धि को चारों तरफ से हटाकर सतोप्रधान बनने के लिए अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। दैवीगुण धारण करने हैं।

(2) बुद्धि में अच्छे2 ख्यालात लाने हैं, हमारे राज्य (स्वर्ग) में क्या2 होगा, उस पर विचार कर अपने को उन जैसा लायक चरित्रवान बनाना है। यहाँ से बुद्धि निकाल देनी है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"मीठे बच्चे – अपना पोतामेल चेक करो कि सारे दिन में बाप को कितना समय याद किया, कोई भूल तो नहीं की? क्योंकि तुम हर एक व्यापारी हो"

प्रश्नः- कौन-सी एक मेहनत अन्तर्मुखी बन करते रहो तो अपार खुशी रहेगी?
उत्तरः- जन्म-जन्मान्तर जो कुछ किया है, जो सामने आता रहता है, उन सबसे बुद्धियोग निकाल सतोप्रधान बनने के लिए बाप को याद करने की मेहनत करते रहो। चारों तरफ से बुद्धि हटाए अन्तर्मुखी बन बाप को याद करो। सर्विस का सबूत दो तो अपार खुशी रहेगी।

ओम् शान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, यह तो बच्चे जानते हैं कि रूहानी बाप रूहानी बच्चों को बैठ समझाते हैं। रूहानी बाप हुआ बेहद का बाप। रूहानी बच्चे भी हुए बेहद के बच्चे। बाप को तो सब बच्चों की सद्गति करनी है। किस द्वारा? इन बच्चों द्वारा विश्व की सद्गति करनी है। सारे विश्व के बच्चे तो यहाँ आकर नहीं पढ़ते हैं। नाम ही है ईश्वरीय विश्व-विद्यालय। मुक्ति तो सबकी होती ही है। मुक्ति कहो, जीवनमुक्ति कहो। मुक्ति में जाकर फिर भी सबको जीवनमुक्ति में आना ही है। तो ऐसे कहेंगे सभी जीवनमुक्ति में आते हैं वाया मुक्तिधाम। एक-दो के पीछे आना ही है पार्ट बजाने। तब तक मुक्तिधाम में ठहरना पड़ता है। बच्चों को अब रचयिता और रचना का मालूम पड़ गया है। यह सारी रचना अनादि है। रचयिता तो एक ही बाप है। यह जो भी सभी आत्मायें हैं, सब बेहद के बाप के बच्चे हैं। जब बच्चों को मालूम पड़ता है तो वही आकर योग सीखते हैं। यह भारत के लिए ही योग है। बाप आते भी भारत में हैं। भारतवासियों को ही याद की यात्रा सिखलाकर पावन बनाते हैं और नॉलेज भी देते हैं कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। यह भी बच्चे जानते हैं। रुद्र माला भी है जो गाई और पूजी जाती है। सिमरण की जाती है। भक्त माला भी है। ऊंचे ते ऊंचे भक्तों की माला है। भक्त माला के बाद होनी चाहिए ज्ञान माला। भक्ति और ज्ञान है ना। भक्त माला भी है तो रुद्र माला भी है। पीछे फिर रुण्ड माला कहा जाता है क्योंकि ऊंच ते ऊंच मनुष्य सृष्टि में है विष्णु, जिसको सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा तो यह है, इनकी माला भी है। आखरीन यह माला बन जायेगी तब ही वह रुद्र माला और विष्णु की वैजयन्ती माला बनेगी। ऊंचे ते ऊंचा है शिवबाबा फिर ऊंचे ते ऊंच है विष्णु का राज्य। शोभा के लिए भक्ति में कितने चित्र बनाये हैं। परन्तु ज्ञान कुछ भी नहीं है। तुम जो चित्र बनाते हो उनकी पहचान देनी है तो मनुष्य समझ जाएं। नहीं तो शिव और शंकर को मिला देते हैं।

बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन में भी सारी साक्षात्कार की बात है। हड्डी मांस वहाँ होता नहीं। साक्षात्कार करते हैं। सम्पूर्ण ब्रह्मा भी है परन्तु वह है सम्पूर्ण, अव्यक्त। अभी व्यक्त ब्रह्मा जो है उनको अव्यक्त बनना है। व्यक्त ही अव्यक्त होता है जिसको फ़रिश्ता

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भी कहते हैं। उनका सूक्ष्मवतन में चित्र रख दिया है। सूक्ष्मवतन में जाते हैं, कहते हैं बाबा ने शूबीरस पिलाया। अब वहाँ झाड़ आदि तो होता नहीं। बैकुण्ठ में हैं, लेकिन ऐसे नहीं कि बैकुण्ठ से ले आकर पिलाते होंगे। यह सब सूक्ष्मवतन में साक्षात्कार की बातें हैं। अब तुम बच्चे जानते हो कि वापिस घर जाना है और आत्म-अभिमानी बनना है। मैं आत्मा अविनाशी हूँ, यह शरीर विनाशी है। आत्मा का ज्ञान भी तुम बच्चों में है। वे तो आत्मा क्या है, यह भी नहीं जानते। उन लोगों को यह भी मालूम नहीं कि कैसे उनमें 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। यह नॉलेज सिर्फ बाप ही देते हैं। अपनी भी नॉलेज देते हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान भी बनाते हैं। बस, यही पुरुषार्थ करते रहो—हम आत्मा हैं, अब परमात्मा के साथ योग लगाना है। सर्वशक्तिमान् पतित-पावन एक बाप को ही कहते हैं। सन्यासी कहते हैं पतित-पावन आओ। कोई तो ब्रह्म को भी पतित-पावन कह देते हैं। अब तुम बच्चों को भक्ति का भी ज्ञान मिलता है कि भक्ति कितना समय चलती है, ज्ञान कितना समय चलता है? यह बाप बैठ समझाते हैं। पहले कुछ नहीं जानते थे। मनुष्य होकर तुच्छ बुद्धि बन पड़े हैं। सतयुग में बिल्कुल स्वच्छ बुद्धि थे। कितने उन्हों में दैवीगुण थे। तुम बच्चों को दैवी गुण भी जरूर धारण करने हैं। कहते हैं ना यह तो जैसे देवता है। भल साधू, सन्त, महात्मा को लोग मानते हैं परन्तु वह दैवी बुद्धि तो नहीं हैं। रजोगुणी बुद्धि हो जाते हैं। राजा, रानी, प्रजा है ना। राजधानी कब और कैसे स्थापन होती है—यह दुनिया नहीं जानती। यहाँ तुम सब नई बातें सुनते हो। तो माला का भी राज़ समझाया है। ऊंचे ते ऊंच है बाप। उनकी माला ऊपर में है, रुद्र वह है निराकार फिर साकार लक्ष्मी-नारायण उनकी भी माला है। ब्राह्मणों की माला अभी नहीं बनती। अन्त में तुम ब्राह्मणों की माला भी बन जाती है। इन बातों में जास्ती प्रश्न-उत्तर करने की जरूरत नहीं। मूल बात है अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करो। यह निश्चय पक्का चाहिए। मूल बात है पतितों को पावन बनाना। सारी दुनिया पतित है फिर पावन बनना है। मूलवतन में भी सभी पावन हैं तो सुखधाम में भी सब पावन हैं। तुम पावन बनकर पावन दुनिया में जाते हो। गोया अब पावन दुनिया स्थापन हो रही है। यह सब ड्रामा में नूँध है।

बाप कहते हैं, सारे दिन का पोतामेल देखो—कोई भूल तो नहीं हुई? व्यापारी लोग पगड़ी सम्भालते हैं, यह भी कमाई है। तुम हर एक व्यापारी हो। बाबा से व्यापार करते हो। अपनी जांच करनी है—हमारे में कितने दैवीगुण हैं। कितना बाप को याद करते हैं? कितना हम अशरीरी बनते जाते हैं? हम अशरीरी आये थे फिर अशरीरी बनकर जाना है। अभी तक सब आते ही रहते हैं। बीच में जाना तो एक को भी नहीं है। जाना तो सबको इकट्ठा है। भल सृष्टि खाली नहीं रहती, गायन है राम गयो, रावण गयो.. परन्तु रहते दोनों हैं। रावण सम्प्रदाय जाता है तो फिर लौटकर नहीं आता। बाकी यह बच जाते हैं। यह भी आगे चलकर सब साक्षात्कार होना है। यह जानना है कि नई दुनिया की कैसे स्थापना हो रही है, पिछाड़ी में क्या होगा? फिर सिर्फ हमारा

ही धर्म रह जायेगा। सतयुग में तुम राज्य करेंगे। कलियुग खत्म हो जायेगा, फिर सतयुग को आना है। अभी रावण सम्प्रदाय और राम सम्प्रदाय दोनों हैं। संगमयुग पर ही यह सब होता है। अभी तुम यह सब कुछ जानते हो। बाप कहते हैं बाकी जो कुछ राज़ है, वह आगे चलकर धीरे-धीरे समझाते रहेंगे। जो रिकॉर्ड में नूँध है, वह खुलते जायेंगे। तुम समझते जायेंगे। इनएडवान्स कुछ भी नहीं बतायेंगे। यह भी ड्रामा का प्लैन है। रिकॉर्ड खुलता जाता है। बाबा बोलता जाता है। तुम्हारी बुद्धि में यह सब बातों की समझ बढ़ती जाती है। जैसे-जैसे रिकॉर्ड बजता जायेगा वैसे-वैसे बाबा की मुरली चलती जायेगी। ड्रामा का राज़ सारा भरा पड़ा है। ऐसे नहीं, रिकार्ड से सुई उठाकर बीच में रख सकते हैं तो वह रिपीट हो। नहीं, वह भी फिर वही रिपीट होगा। नई बात नहीं। बाप के पास जो नई बात होगी वह रिपीट होगी। तुम सुनते और सुनाते जायेंगे। बाकी सब गुप्त है। यह राजधानी स्थापन हो रही है। सारी माला बन रही है। अलग-अलग जाकर राजाई में तुम जन्म लेंगे। राजा, रानी, प्रजा सब चाहिए। यह सब बुद्धि से काम लेना पड़ता है। प्रैक्टिकल में जो होगा सो देखा जायेगा। जो यहाँ से जाते हैं वह अच्छे साहूकार के घर में जाकर जन्म लेते हैं। अभी भी तुम्हारी वहाँ बहुत खातिरी होती है। इस समय भी रत्न जड़ित चीज़ें सबके पास होती हैं। परन्तु उन्हों में इतनी पॉवर नहीं है। पॉवर तुम्हारे में है। तुम जहाँ जायेंगे वहाँ अपना शो करेंगे। तुम तो ऊंच बनते हो तो तुम जाकर वहाँ दैवी चरित्र दिखायेंगे। आसुरी बच्चे जन्मते ही रोते रहेंगे। गन्दे भी होते हैं। तुम तो बड़े कायदेसिर पलेंगे। गंद आदि की बात नहीं। आजकल के बच्चे तो गन्दे हो पड़ते हैं। सतयुग में ऐसी बात हो न सके। फिर भी हेविन है ना। वहाँ बांस आती नहीं जो कहना पड़े अगरबत्ती जलाओ। बगीचों में बहुत खुशबूदार फूल होंगे। यहाँ के फूलों में इतनी खुशबू नहीं। वहाँ तो हर एक चीज में 100 परसेन्ट खुशबू रहती है। यहाँ तो 1 परसेन्ट भी नहीं है। वहाँ तो फूल भी फर्स्टक्लास होंगे। यहाँ भल कोई कितना भी साहूकार हो तो भी इतना नहीं। वहाँ तो किस्म-किस्म की चीज़ें होंगी। बर्तन आदि सब सोने के होंगे। जैसे यहाँ के पत्थर, वहाँ फिर सोना ही सोना। रेती में भी सोना होता है। विचार करो—कितना सोना होगा! जिससे मकान आदि बनेंगे। वहाँ ऐसी मौसम होगी—न सर्दी, न गर्मी। वहाँ गर्मी का दुःख नहीं जो पंखे चलाने पड़े। उसका नाम ही है स्वर्ग। वहाँ अपार सुख होता है। तुम्हारे जैसा पद्मापद्म भाग्यशाली कोई बनते ही नहीं। लक्ष्मी-नारायण की कितनी महिमा गाते हैं। उनको जो ऐसा बनाते हैं, उनकी कितनी महिमा चाहिए। पहले होती है अव्यभिचारी भक्ति, फिर देवताओं की भक्ति शुरु होती है। वह भी भूत पूजा कहेंगे। शरीर तो वह है नहीं। 5 तत्वों की पूजा होती है। शिवबाबा के लिए तो ऐसे नहीं कहेंगे। पूजा करने के लिए कोई चीज़ का वा सोने आदि का बनाते हैं। आत्मा को थोड़ेही सोना कहेंगे। आत्मा किस चीज़ की बनी हुई है? शिव का चित्र किस चीज़ का बनाया हुआ है, वह झट बतायेंगे। परन्तु आत्मा-परमात्मा किस चीज़ का बना हुआ है, यह कोई

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बता न सके। सतयुग में 5 तत्व भी शुद्ध होते हैं। यहाँ हैं अशुद्ध। तो पुरुषार्थी बच्चे ऐसी-ऐसी ख्यालात करते रहेंगे। बाप कहते हैं इन सब बातों को भी छोड़ दो। जो होना है वह होगा। पहले बाप को याद करो। चारों तरफ से बुद्धि हटाकर मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। जो कुछ सुनते हो उन सबको छोड़ एक बात पक्की करो कि हमको सतोप्रधान बनना है। फिर सतयुग में जो कल्प-कल्प हुआ होगा, वही होगा। उसमें फ़र्क नहीं पड़ सकता। मूल बात है, बाप को याद करो। यह है मेहनत। वह पूरी करो। तूफ़ान तो बहुत आते हैं। जन्म-जन्मान्तर जो कुछ किया है वह सब सामने आता है। तो सब तरफ से बुद्धि को हटाकर मेरे को याद करने का पुरुषार्थ करो, अन्तर्मुखी होकर। तुम बच्चों को स्मृति तो आई, सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सर्विस से भी मालूम पड़ जाता है। सर्विस करने वालों को सर्विस की खुशी रहती है। जो अच्छी सर्विस करते हैं, उनकी सर्विस का सबूत भी मिलता है। पण्डे बनकर आते हैं। कौन महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे हैं, वह झट पता पड़ जाता है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. दूसरी सब बातों को छोड़, बुद्धि को चारों तरफ से हटाकर सतोप्रधान बनने के लिए अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। दैवीगुण धारण करने हैं।

२. बुद्धि में अच्छे-अच्छे ख्यालात लाने हैं, हमारे राज्य (स्वर्ग) में क्या-क्या होगा, उस पर विचार कर अपने को उस जैसे लायक चरित्रवान बनाना है। यहाँ से बुद्धि निकाल देनी है।

वरदान:- ब्राह्मण जीवन में एक बाप को अपना संसार बनाने वाले स्वतः और सहजयोगी भव

ब्राह्मण जीवन में सभी बच्चों का वायदा है - "एक बाप दूसरा न कोई"। जब संसार ही बाप है, दूसरा कोई है ही नहीं तो स्वतः और सहजयोगी स्थिति सदा रहेगी। अगर दूसरा कोई है तो मेहनत करनी पड़ती है। यहाँ बुद्धि न जाए, वहाँ जाए। लेकिन एक बाप ही सब कुछ है तो बुद्धि कहाँ जा नहीं सकती। ऐसे सहजयोगी, सहज स्वराज्य अधिकारी बन जाते हैं। उनके चेहरे पर रूहानियत की चमक एकरस एक जैसी रहती है।

स्लोगन:-

बाप समान अव्यक्त वा विदेही बनना - यही अव्यक्त पालना का प्रत्यक्ष सबूत है।

PDF ... OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy ... PDF Compressor

14·10·84 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद...

"मीठे बच्चे- अपने को आत्मा के बजाए शरीर समझना यह उल्टा लटकना है, तुम अभी सुल्टा बने हो, तुम्हारी बुद्धि को ... है, जिसे रूहानी यात्रा कहा जाता..."

प्रश्न:- माया के राज्य में मनुष्यों को कौन सी इज्जत मिली है? उत्तर:- आसुरी ... मनुष्य किसी को भी आज थोड़ी इज्जत देते हैं, कल उसकी बेइज्जती करते हैं। गालियां ... रहते हैं। माया ने सबकी बेइज्जती की है, पतित बना दिया है। बाप आये हैं तुम्हें ... इज्जत वाला बनाने। 18

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहों से पूछते हैं- कहाँ बैठे हो? तुम कहेंगे विश्व की रूहानी युनिवर्सिटी में। रूहानी अक्षर तो वह लोग जानते नहीं। विश्व विद्यालय तो दुनिया में ... हैं। यह है सारे विश्व में एक रूहानी विद्यालय। एक ही पढ़ाने वाला। क्या पढ़ाते हैं? ... नालेज। तो यह है विश्व स्प्रीचुअल अर्थात रूहानी पाठशाला। स्प्रीचुअल अर्थात रूहानी ... पढ़ाने वाला कौन है। यह भी तुम बच्चे ही अभी जानते हो। रूहानी बाप ही रूहानी ... पढ़ाते हैं। इसलिए उनको टीचर भी कहते हैं। स्प्रीचुअल फादर पढ़ाते हैं। अच्छा फिर क्या होगा? तुम बच्चे जानते हो इस रूहानी नालेज से हम अपना आदि सनातन देवी देवता ... स्थापन करते हैं। एक धर्म की स्थापना। बाकी जो इतने सब धर्म हैं, उनका विनाश हो ... इस स्प्रीचुअल नालेज का सब धर्मों से क्या तैलुक है। यह भी अब तुम जानते हो। एक धर्म ... स्थापना इस रूहानी नालेज से होती है। यह ल०ना० विश्व के मालिक थे ना। उनको कहेंगे रूहानी दुनिया (स्प्रीचुअल वर्ल्ड) इस स्प्रीचुअल नालेज से तुम राजयोग सीखते हो, राजाई स्थापन होती है। अच्छा फिर और धर्मों से क्या तैलुक है? और सभी धर्म विनाश को पाते। क्योंकि तुम पावन बनते हो तो तुमको नई दुनिया चाहिए। इतने सब अनेक धर्म खत्म हो जाते हैं, एक धर्म रहेगा। उसको कहा जाता है विश्व में शान्ति का राज्य। ... है पतित अशान्ति का राज्य फिर होगा पावन शान्ति का राज्य। अभी तो अनेक धर्म ... कितनी अशान्ति है। सब पतित ही पतित हैं। रावण का राज्य है ना। अब बच्चे जानते ... 5 विकारों को जरूर छोड़ना है। यह साथ में नहीं ले जाने हैं। आत्मा अच्छे वा बुरे संस्कार ले जाती है ना। अब बाप तुम बच्चों को पवित्र बनने की बात बैठ बताते हैं। उस पावन ... में कोई भी दुख होता नहीं। यह स्प्रीचुअल नालेज पढ़ाने वाला कौन है? स्प्रीचुअल फादर सभी आत्माओं का बाप। स्प्रीचुअल फादर क्या पढ़ायेंगे? स्प्रीचुअल नालेज। इसमें कोई भी किताब आदि की दरकार नहीं। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है ... कितना है। बाप को याद करते2 अन्त मती सो गति हो जायेगी। यह है याद की यात्रा। मुसाफिरी कामन अक्षर है। यात्रा अक्षर अच्छा है। वह जिस्मानी यात्रायें यह है रूहानी ... तो पैदल जाना पड़ता है। हाथ पाँव चलाते हैं। इसमें कुछ नहीं। सिर्फ याद करना है। ... कहाँ भी घूमो फिरो उठो बैठो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। डिफीकल्ट बात नहीं है। सिर्फ याद करना है। यह तो रॉयल्टी है ना। आगे तुम उल्टे चल रहे थे। अपने को आत्मा के बदले शरीर समझना इसको कहा जाता है उल्टा लटकना। अपने को आत्मा समझना यह है सुल्टा। मनुष्य कहते हैं ना अल्लाह हूँ। वास्तव में कहना चाहिए उल्लू हूँ। ... अल्लाह हूँ यानी अल्ला। वह एक बाप है। हम उल्लू हैं। अर्थ समझना है ना। ऐसे ... नहीं कि अल्लाह हूँ। फिर तो सर्वव्यापी की बात हो जाती है। अल्लाह का बच्चा हूँ। अल्लाह आते हैं तब आकर पावन बनाते हैं। अल्लाह की पावन दुनिया है। रावण की पतित दुनिया है। देह अभिमान में उल्टे हो गये हैं सभी। अब एक ही बार देही अभिमानी बनना है। ... तुम अल्लाह के बच्चे हो। अल्लाह हूँ नहीं कहेंगे। अंगुली से हमेशा ऊपर तरफ ईशारा करते तो सिद्ध होता है अल्लाह वह है। तो यहाँ जरूर दूसरी चीज है। वह चीज जरूर है। ... अल्लाह बाप का बच्चा हूँ। हम भाई2 हैं। अल्लाह हूँ कहने से फिर उल्टा हो जायेगा। ... सब बाप हैं। परन्तु नहीं बाप एक है। उनको याद करना है। अल्लाह एवर प्युअर है। अल्लाह खुद बैठ पढ़ाते हैं। थोड़ी सी बात में मनुष्य कितना मूंझते हैं। शिव जयन्ती भी मनाते ...

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

...ो। ऐसा पद किसने दिया? शिवबाबा ने। श्रीकृष्ण है स्वर्ग का पहला राजकुमार। यह ...का बाप इनको राज्यभाग्य देते हैं। बाप जो नई दुनिया स्वर्ग स्थापन करते हैं। उसमें ...नम्बरवन प्रिन्स है। बाप बच्चों को पावन बनने की युक्ति बैठ बताते हैं। बच्चे जानते ...कि जिसको वैकुण्ठ विष्णुपुरी कहते हैं वह पास्ट हो गया है। फिर फ्युचर होगा। चक्र ...रहता है ना। यह ज्ञान अभी तुम बच्चों को मिलता है। यह धारण कर और फिर ...है। हरेक को टीचर बनना है। ऐसे भी नहीं कि टीचर बनने से ल0ना0 बनेंगे। नहीं। ...बनने से तुम प्रजा बनायेंगे। जितना बहुतों का कल्याण करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। ...रहेगी। घड़ी2 बाप कहते हैं ट्रेन में आते हो तो भी बैज पर समझाओ। बाप पतित ...लिब्रेटर है। पावन बनाने वाला है। बहुतों को याद करने से वर्सा नहीं मिलेगा। वर्सा ...वाला है ही एक बाप। भक्ति मार्ग में अनेकों को याद करना पड़ता है। जानवर हाथी ...आदि कच्छ मच्छ को भी अवतार कह देते हैं। उनको भी पूजते रहते हैं। समझते हैं भगवान ...भी अर्थात् सबमें है। सबको खिलाओ। अच्छा कण2 में भगवान कहते हैं फिर उनको क्या ...देंगे। बिल्कुल ही समझ से जैसे बाहर हैं। बिल्कुल बेसमझ कहा जाता है। ल0ना0 आदि देवी ...थोड़े ही यह काम करेंगे। चीटियों को अन्न देंगे, पलाने को देंगे। तो बाप समझाते हैं- ...रिलीजो पोलीटिकल। तुम जानते हो हम धर्म स्थापन कर रहे हैं। इनका गनीट ...टिकल है। राज्य स्थापन करने के लिए मिलेट्री रहती है। परन्तु तुम हो गुप्त। तुम्हारी ...चुअल युनिवर्सिटी। सारी दुनिया के जो भी मनुष्य मात्र हैं सब इन सब धर्मों ...ले जायेंगे अपने घर। आत्मायें चली जायेंगी। वह है आत्माओं के रहने का घर अभी ...संगमयुग पर पढ़ रहे हो। फिर सतयुग में आकर राज्य करेंगे। और कोई धर्म नहीं होगा। ...भी है ना। बाबा आप जो देते हो वह और कोई दे न सके। सारा आसमान सारी ...धरती तुम्हारी ही रहती है। सारे विश्व के मालिक तुम बन जाते हो। यह भी अभी ...जानते हो नई दुनिया में यह सभी बातें भूल जायेंगी। इसको कहा जाता है रूहानी ...बुद्ध नालेज। तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम हर 5 हजार वर्ष बाद राज्य लेते हैं फिर ...हैं। यह 84 का चक्र फिरता ही रहता है। तो पढ़ाई पढ़नी पड़े। तब ही जा सकेंगे ना। ...सभी तो नई दुनिया में जा नहीं सकेंगे। वहां का तो लिमिटेड नम्बर है। नम्बरवार ...के अनुसार वहाँ जाकर पद पायेंगे। इतने 500 करोड़ तो पढ़ेंगे नहीं। अगर सभी पढ़ें तो ...दूसरे जन्म में राज्य भी पावें। पढ़ने वालों की लिमिट है। सतयुग त्रेता में आने वाले जो ...तुम्हारी प्रजा बहुत बनती रहती है। देरी से आने वाले पाप तो भस्म कर न सकें। ...आत्मायें होंगी तो फिर सजायें खाकर बहुत थोड़ा पद पा लेंगी। बेइज्जती होगी। ...भी माया की बहुत इज्जत वाले हैं वह बेइज्जत बन जायेंगे। यह है ईश्वरीय इज्जत ...आसुरी इज्जत। ईश्वरीय अथवा दैवी इज्जत और आसुरी इज्जत में रात दिन का ...तुम आसुरी इज्जत वाले थे अब फिर दैवी इज्जत वाले बनते हैं। आसुरी इज्जत से ...कार बन जाते हो। यह है कांटों की दुनिया तो बेइज्जती हुई ना। फिर कितनी ...वाले बनते हो। यथा राजा रानी तथा प्रजा। बेहद का बाप तुम्हारी इज्जत बहुत ...बनाते हैं तो इतना पुरुषार्थ भी करना है। सब कहते हैं हम अपनी इज्जत ऐसी बनावें ...नर से नारायण नारी से लक्ष्मी बन जावें। इनसे ऊंच इज्जत कोई की है नहीं। कथा भी ...नारायण बनने की ही सुनते हैं। अमर कथा, तीजरी की कथा यह एक ही है। यह कथा ...जो तुम सुनते हो। तुम ही विश्व के मालिक थे फिर 84 जन्म लेते नीचे उतरते आये हो ...पहला नम्बर का जन्म होगा। पहले नम्बर जन्म में तुम बहुत ऊंच पद पाते हो। राम ...इज्जत वाला बनाते हैं; रावण बेइज्जतवान बना देते हैं। इस नालेज से ही तुम मुक्ति जीवन ...मुक्ति को पाते हो। आधाकल्प रावण का नाम नहीं रहता है। यह बातें अभी तुम बच्चों ...बुद्धि में आती हैं। सो भी नम्बरवार। कल्प2 ऐसे ही तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ...बनते हो। माया गफलत कराती है। बेहद के बाप को याद करना ही भूल जाते हैं। ...पढ़ाते हैं। वह हमारा टीचर बना है। फिर भी अबसेन्ट रहते हैं। पढ़ते नहीं हैं। दर2 धक्के ...की टेव पड़ी हुई है। पढ़ाई पर जिनका ध्यान नहीं रहता है तो उनको फिर नौकरी

...ना होता है।धाबो आदि का काम करते है।उसमें पढ़ाई की क्या दरकार
व्यापार में मनुष्य मल्टोमिलयुनर बन जाते है।नोकरी में इतना नहीं बनेंगे।उसमें तो
पगार मिलेगी।अब तुम्हारी पढ़ाई है विश्व की बादशाही के लिए।यथा करते है ना
भारतवासी है।पीछे फिर तुमको कहेंगे विश्व के मालिक।यहां देवी देवता धर्म के सिवाए
दूसरा कोई धर्म होता नहीं।बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते है तो उनकी मत पर
चलना चाहिए।कोई भी विकार का भूत नहीं होना चाहिए।काम के भूत वाले कोई
है यह तो जैसे कामी कुत्ता है।यह भूत बहुत खराब है।कामी की हेल्थ बिगड़ती रहती
ताकत कम हो जाती है।इस काम विकार ने तुम्हारी ताकत बिल्कुल खत्म कर दी है।
नतीजा यह हुआ है आयु कम होती गई है।भोगी बन पड़े हो।कामी भोगी रोगी
जाते है।वहां विकार होता नहीं।तो योगी होते है।सदैव तन्दरूस्त और आयु भी
बड़ी होती है।वहां काल खाता नहीं।वह है सुखधाम।इस पर एक कथा भी बताते है क
पूछा गया पहले सुख चाहिए या पहले दुख चाहिए।तो उनको कोई ने इशारा दिया
पहले सुख चाहिए क्योंकि सुख में चले जायेंगे तो वहां कोई काल आयेगा नहीं।अन्दर
सके।एक कथा बना दी है।बाप समझाते है तुम सुखधाम में रहते हो तो वहां कोई काल
होता नहीं।रावणराज्य ही नहीं।फिर जब विकारी बनते हैं तो काल आता है।कथायें
कितनी बना दी है।काल ले गया फिर यह हुआ।न काल देखने में आता है न आत्मा
दिखाई पड़ती है।इनको कहा जाता है दन्त कथायें।कनरस की बहुत कहानियां है।अब
बाप समझाते हैं वहां अकाले मृत्यु कब होता नहीं।आयु बड़ी होती है और पवित्र रहते
16कला 14कला फिर कला कम होते2एकदम नो कला हो जाते है।मैं निर्गुण हारे में कोई
गुण नाही।निर्गुण संस्था भी है बच्चों की।कहते हैं हमारे मे कोई गुण नहीं।हमको गुणवान
बनाओ।सर्वगुण... बनाओ।अब बाप कहते है पवित्र बनना है।मरना भी जरूर है सबको।
ढेर मनुष्य सतयुग में नहीं होते।अभी तो कितने ढेर है।वहां बच्चा भी योगबल से होते
यहां तो देखो कितने बच्चे पैदा करते रहते है।बाप फिर भी कहते है - बाप को याद
वह बाप ही पढ़ाते है,टीचर पढ़ाने वाला याद पड़ता है।तुम जानते हो शिवबाबा
पढ़ा रहे है।क्या पढ़ाते है।वह भी तुमको मालूम है।तो बाप अथवा टीचर से योग लगाना
है।नालेज बहुत ऊंची है।अभी तुम सबकी स्टूडेन्ट लाइफ है।ऐसी युनिवर्सिटी कब देखी।
बच्चे बूढ़े जवान सब इक्ट्ठे पढ़ते हो।एक ही स्कूल एक ही पढ़ाने वाला टीचर हो।और
a) जिसमें भी ब्रह्मा 82 वर्ष का भी बैठ पढ़ता होगे।वन्डर है ना। शिवबाबा तुमको पढ़ाते
यह ब्रह्मा भी सुनते है।बच्चा चाहे बुढ़ा कोई भी पढ़ सकते है।तुम भी पढ़ते थे ना।यह
जब छोटे2बच्चे थे।अब पढ़कर फिर पढ़ाना शुरू कर दिया है।दिन प्रतिदिन टाइम कम
होता जाता है।अभी तुम बेहद में चले गये हो।जानते हो यह 5हजार वर्ष का चक्र कैसे पा
हुआ।पहले एक धर्म था।अभी कितने ढेर धर्म है।अभी सावरन्टी नहीं कहेंगे।इनको कहा जा
है प्रजा का प्रजा पर राज्य। पहले2बहुत पावरफुल धर्म था।सारे विश्व के मालिक थे।अभी
अधर्मी बन पड़े हो।कोई धर्म नहीं है परन्तु पत्थरबुद्धि समझ नहीं सकते।सबमें 5विकार है।
बेहद का बाप कहते है बच्चों अब धीर्य धरो।बाकी थोड़ा समय तुम इस रावण राज्य में
अच्छी रीति पढ़ेंगे तो फिर सुखधाम में चले जायेंगे।यह है दुखधाम।तुम अपने शान्तिधाम
और सुखधाम को याद करो इस दुखधाम को भूलते जाओ।आत्माओं का बाप डायरेक्शन
देते हैं हे रूहानी बच्चों।इन रूहानी बच्चों ने इन आरगन्स द्वारा सुना।तुम आत्मायें
सतयुग में सतोप्रधान थी तो तुम्हारा शरीर भी फर्स्टक्लास सतोप्रधान था।तुम बड़े धनवान
थे फिर पुनर्जन्म लेते2क्या बन गये हो।रात दिन का फर्क है।दिन में हम स्वर्ग में थे।रात
हम नर्क में।इनको कहा जाता ब्रह्मा का सो ब्राह्मणों का दिन और रात। 63जन्म धक्के
खाते रहते है,अन्धियारी रात है ना।भटकते रहते।भगवान कोई को मिलता ही नहीं।
कहा जाता है भूलभुलैया का खेल।तो बाप तुम बच्चों को सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त
का समाचार सुनाते है।अच्छा-मीठे2सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का याद
और गुडमार्निंग।रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"मीठे बच्चे – तुम्हारी यात्रा बुद्धि की है, इसे ही रूहानी यात्रा कहा जाता है, तुम अपने को आत्मा समझते हो, शरीर नहीं, शरीर समझना अर्थात् उल्टा लटकना"

प्रश्नः- माया के पाम्प में मनुष्यों को कौन-सी इज्जत मिलती है?

उत्तरः- आसुरी इज्जत। मनुष्य किसी को भी आज थोड़ी इज्जत देते, कल उसकी बेइज्जती करते हैं, गालियाँ देते हैं। माया ने सबकी बेइज्जती की है, पतित बना दिया है। बाप आये हैं तुम्हें दैवी इज्जत वाला बनाने।

ओम् शान्ति। रूहानी बाप रूहों से पूछते हैं - कहाँ बैठे हो? तुम कहेंगे विश्व की रूहानी युनिवर्सिटी में। रूहानी अक्षर तो वो लोग जानते नहीं। विश्व विद्यालय तो दुनिया में अनेक हैं। यह है सारे विश्व में एक ही रूहानी विद्यालय। एक ही पढ़ाने वाला है। क्या पढ़ाते हैं? रूहानी नॉलेज। तो यह है स्प्रीचुअल विद्यालय अर्थात् रूहानी पाठशाला। स्प्रीचुअल अर्थात् रूहानी नॉलेज पढ़ाने वाला कौन है? यह भी तुम बच्चे ही अभी जानते हो। रूहानी बाप ही रूहानी नॉलेज पढ़ाते हैं, इसलिए उनको टीचर भी कहते हैं, स्प्रीचुअल फादर पढ़ाते हैं। अच्छा, फिर क्या होगा? तुम बच्चे जानते हो इस रूहानी नॉलेज से हम अपना आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करते हैं। एक धर्म की स्थापना बाकी जो इतने सब धर्म हैं, उनका विनाश हो जायेगा। इस स्प्रीचुअल नॉलेज का सब धर्मों से क्या तैलुक है—यह भी तुम अब जानते हो। एक धर्म की स्थापना इस रूहानी नॉलेज से होती है। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे ना! उनको कहेंगे रूहानी दुनिया (स्प्रीचुअल वर्ल्ड) इस स्प्रीचुअल नॉलेज से तुम राजयोग सीखते हो। राजाई स्थापन होती है। अच्छा, फिर और धर्मों से क्या तैलुक है? और सभी धर्म विनाश को पायेंगे क्योंकि तुम पावन बनते हो तो तुमको नई दुनिया चाहिए। इतने सब अनेक धर्म खत्म हो जाते हैं, एक धर्म रहेगा। उसको कहा जाता है विश्व में शान्ति का राज्य। अभी है पतित अशान्ति का राज्य फिर होगा पावन शान्ति का राज्य। अभी तो अनेक धर्म हैं। कितनी अशान्ति है। सब पतित ही पतित हैं। रावण का राज्य है ना। अब बच्चे जानते हैं 5 विकारों को जरूर छोड़ना है। यह साथ में नहीं ले जाने हैं। आत्मा अच्छे वा बुरे संस्कार ले जाती है ना। अब बाप तुम बच्चों को पवित्र बनने की बात बताते हैं। उस पावन दुनिया में कोई भी दु:ख होता नहीं। यह स्प्रीचुअल नॉलेज पढ़ाने वाला कौन है? स्प्रीचुअल फादर। सभी आत्माओं का बाप। स्प्रीचुअल फादर क्या पढ़ायेंगे? स्प्रीचुअल नॉलेज, इसमें कोई भी किताब आदि की दरकार नहीं। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। पावन बनना है। बाप को याद करते-करते अन्त मती सो गति हो जायेगी। यह है याद की यात्रा। यात्रा अक्षर अच्छा है। वह हैं जिस्मानी यात्रायें, यह है रूहानी। उसमें तो पैदल जाना पड़ता है, हाथ-पांव चलाते हैं, इसमें कुछ नहीं। सिर्फ याद करना है। भल कहाँ भी घूमो फिरो, उठो बैठो, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। डिफीकल्ट बात नहीं है, सिर्फ याद करना है। यह तो रीयल्टी है ना। आगे तुम उल्टे चल रहे थे। अपने को आत्मा के बदले शरीर समझना, इसको कहा जाता है उल्टा लटकना। अपने को आत्मा समझना - यह है सुल्टा। अल्लाह जब आते हैं तब आकर पावन बनाते हैं। अल्लाह की पावन दुनिया

है, रावण की पतित दुनिया है। देह-अभिमान में सभी उल्टे हो गये हैं। अब एक ही बार देही-अभिमानी बनना है। तो तुम अल्लाह के बच्चे हो। अल्लाह हूँ, नहीं कहेंगे। अंगुली से हमेशा ऊपर की तरफ ईशारा करते हैं, तो सिद्ध होता है अल्लाह वह है। तो यहाँ जरूर दूसरी चीज़ है। हम उस अल्लाह बाप का बच्चा हूँ। हम भाई-भाई हैं। अल्लाह हूँ, कहने से फिर उल्टा हो जायेगा कि हम सब बाप हैं। परन्तु नहीं, बाप एक है। उनको याद करना है। अल्लाह एवर प्योर है। अल्लाह खुद बैठ पढ़ाते हैं। थोड़ी-सी बात में मनुष्य कितना मूँझते हैं। शिव जयन्ती भी मनाते हैं ना।

कृष्ण को ऐसा पद किसने दिया? शिवबाबा ने। श्रीकृष्ण है स्वर्ग का पहला राजकुमार। यह बेहद का बाप इनको राज्य-भाग्य देते हैं। बाप जो नई दुनिया स्वर्ग स्थापन करते हैं उसमें श्रीकृष्ण नम्बरवन प्रिन्स है। बाप बच्चों को पावन बनने की युक्ति बैठ बताते हैं। बच्चे जानते हैं स्वर्ग जिसको वैकुण्ठ, विष्णुपुरी कहते हैं, वह पास्ट हो गया है फिर फ्युचर होगा। चक्र फिरता रहता है ना। यह ज्ञान अभी तुम बच्चों को मिलता है। यह धारण कर और फिर कराना है। हरेक को टीचर बनना है। ऐसे भी नहीं कि टीचर बनने से लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। नहीं। टीचर बनने से तुम प्रजा बनायेंगे, जितना बहुतों का कल्याण करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। स्मृति रहेगी। बाप कहते हैं ट्रेन में आते हो तो भी बैज पर समझाओ। बाप पतित-पावन, लिबरेटर है। पावन बनाने वाला है। बहुतों को याद करना पड़ता है। जानवर, हाथी, घोड़े आदि, कच्छ, मच्छ को भी अवतार कह देते हैं। उनको भी पूजते रहते हैं। समझते हैं भगवान सर्वव्यापी अर्थात् सबमें हैं। सबको खिलाओ। अच्छा, कण-कण में भगवान कहते हैं फिर उनको कैसे खिलायेंगे। बिल्कुल ही समझ से जैसे बाहर हैं। लक्ष्मी-नारायण आदि देवी-देवतायें थोड़ेही यह काम करेंगे। चीटिंयों को अन्न देंगे, फलाने को देंगे। तो बाप समझाते हैं तुम हो रिलीजो पोलीटिकल। तुम जानते हो हम धर्म स्थापन कर रहे हैं। राज्य स्थापन करने के लिए मिलेट्री रहती है। परन्तु तुम हो गुप्त। तुम्हारी है स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी। सारी दुनिया के जो भी मनुष्य मात्र हैं सब इन धर्मों से निकल, अपने घर जायेंगे। आत्मायें चली जायेंगी। वह है आत्माओं के रहने का घर। अभी तुम संगमयुग पर पढ़ रहे हो फिर सतयुग में आकर राज्य करेंगे और कोई धर्म नहीं होगा। गीत में भी है ना - बाबा आप जो देते हो वह और कोई दे न सके। सारा आसमान, सारी ही धरनी तुम्हारी रहती है। सारे विश्व के मालिक तुम बन जाते हो। यह भी अभी तुम समझते हो, नई दुनिया में यह सभी बातें भूल जायेंगी। इसको कहा जाता है रूहानी स्प्रीचुअल नॉलेज। तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम हर 5 हजार वर्ष बाद राज्य लेते हैं फिर गँवाते हैं। यह 84 का चक्र फिरता ही रहता है। तो पढ़ाई पढ़नी पड़े तब ही जा सकेंगे ना! पढ़ेंगे नहीं तो नई दुनिया में जा नहीं सकेंगे। वहाँ का तो लिमिटेड नम्बर है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार वहाँ जाकर पद पायेंगे। इतने सब तो पढ़ेंगे नहीं। अगर सभी पढ़ें तो फिर दूसरे जन्म में राज्य भी पावें। पढ़ने वालों की लिमिट है। सतयुग-त्रेता में आने वाले ही पढ़ेंगे। तुम्हारी प्रजा बहुत बनती रहती है। देरी से आने वाले पाप तो भस्म कर न सकें। पाप आत्मायें होंगी तो फिर सजायें खाकर बहुत थोड़ा पद पा लेंगी। बेइज्जती होगी। जो अभी माया की बहुत इज्जत वाले हैं, वह बेइज्जत बन जायेंगे। यह है ईश्वरीय इज्जत। वह है आसुरी इज्जत। ईश्वरीय अथवा दैवी इज्जत और आसुरी इज्जत में रात-

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दिन का फ़र्क है। हम आसुरी इज्जत वाले थे अब फिर दैवी इज्जत वाले बनते हैं। आसुरी इज्जत से बिल्कुल बेगर बन जाते हो। यह है कांटों की दुनिया तो बेइज्जती हुई ना। फिर कितनी इज्जत वाले बनते हो। यथा राजा रानी तथा प्रजा। बेहद का बाप तुम्हारी इज्जत बहुत ऊंच बनाते हैं तो इतना पुरूषार्थ भी करना है। सब कहते हैं हम अपनी इज्जत ऐसी बनावें अर्थात् नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बन जावें। इनसे ऊंच इज्जत कोई की है नहीं। कथा भी नर से नारायण बनने की ही सुनते हैं। अमरकथा, तीजरी की कथा यह एक ही है। यह कथा अभी ही तुम सुनते हो।

तुम बच्चे विश्व के मालिक थे फिर 84 जन्म लेते नीचे उतरते आये हो। फिर पहला नम्बर का जन्म होगा। पहले नम्बर जन्म में तुम बहुत ऊंच पद पाते हो। राम इज्जत वाला बनाते हैं, रावण बेइज्जतवान बना देते हैं। इस नॉलेज से ही तुम मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाते हो। आधाकल्प रावण का नाम नहीं रहता है। यह बातें अभी तुम बच्चों की बुद्धि में आती हैं सो भी नम्बरवार। कल्प-कल्प ऐसे ही तुम नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार समझदार बनते हो। माया गफ़लत कराती है। बेहद के बाप को याद करना ही भूल जाते हैं। भगवान पढ़ाते हैं, वह हमारा टीचर बना है। फिर भी अबसेन्ट रहते हैं, पढ़ते नहीं हैं। दर-दर धक्के खाने की आदत पड़ी हुई है। पढ़ाई पर जिनका ध्यान नहीं रहता है तो उनको फिर नौकरी में लगा देना होता है। धोबी आदि का काम करते हैं। उसमें पढ़ाई की क्या दरकार है। व्यापार में मनुष्य मल्टीमिल्युनर बन जाते हैं। नौकरी में इतना नहीं बनेंगे। उसमें तो फिक्स पगार मिलेगी। अब तुम्हारी पढ़ाई है विश्व की बादशाही के लिए। यहाँ कहते हैं ना हम भारतवासी हैं। पीछे फिर तुमको कहेंगे विश्व के मालिक। वहाँ देवी-देवता धर्म के सिवाए दूसरा कोई धर्म होता नहीं। बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं तो उनकी मत पर चलना चाहिए। कोई भी विकार का भूत नहीं होना चाहिए। यह भूत बहुत खराब है। कामी की हेल्थ बिगड़ती रहती है। ताकत कम हो जाती है। इस काम विकार ने तुम्हारी ताकत बिल्कुल खत्म कर दी है। नतीजा यह हुआ है आयु कम होती गई है। भोगी बन पड़े हो। कामी, भोगी, रोगी सब बन जाते हैं। वहाँ विकार होता नहीं। तो योगी होते हैं सदैव तन्दुरूस्त और आयु भी 150 वर्ष होती है। वहाँ काल खाता नहीं। इस पर एक कथा भी बताते हैं—कोई से पूछा गया पहले सुख चाहिए या पहले दु:ख चाहिए? तो उनको कोई ने इशारा दिया बोलो पहले सुख चाहिए क्योंकि सुख में चले जायेंगे तो वहाँ कोई काल आयेगा नहीं। अन्दर घुस न सके। एक कथा बना दी है। बाप समझाते हैं तुम सुखधाम में रहते हो तो वहाँ कोई काल होता नहीं। रावणराज्य ही नहीं। फिर जब विकारी बनते हैं तो काल आता है। कथायें कितनी बना दी है, काल ले गया फिर यह हुआ। न काल देखने में आता है, न आत्मा दिखाई पड़ती है, इनको कहा जाता है दन्त कथायें। कनरस की बहुत कहानियां हैं। अब बाप समझाते हैं वहाँ अकाले मृत्यु कभी होता नहीं। आयु बड़ी होती है और पवित्र रहते हैं। 16 कला फिर कला कम होते-होते एकदम नो कला हो जाते हैं। मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। एक निर्गुण संस्था भी बच्चों की है। कहते हैं हमारे में कोई गुण नाहीं। हमको गुणवान बनाओ। सर्वगुण सम्पन्न बनाओ। अब बाप कहते हैं पवित्र बनना है। मरना भी है सबको। इतने ढेर मनुष्य सतयुग में नहीं होते। अभी तो कितने ढेर हैं। वहाँ बच्चा भी योगबल से होता है। यहाँ तो देखो कितने बच्चे पैदा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

करते रहते हैं। बाप फिर भी कहते हैं बाप को याद करो। वह बाप ही पढ़ाते हैं, टीचर पढ़ाने वाला याद पड़ता है। तुम जानते हो शिवबाबा हमको पढ़ा रहे हैं। क्या पढ़ाते हैं, वह भी तुमको मालूम है। तो बाप अथवा टीचर से योग लगाना है। नॉलेज बहुत ऊंची है। अभी तुम सबकी स्टूडन्ट लाइफ है। ऐसी युनिवार्सिटी कभी देखी, जहाँ बच्चे बूढ़े जवान सब इकट्ठे पढ़ते हो। एक ही स्कूल, एक ही पढ़ाने वाला टीचर हो और जिसमें ब्रह्मा स्वयं भी पढ़ता हो। वन्डर है ना। शिवबाबा तुमको पढ़ाते हैं। यह ब्रह्मा भी सुनते हैं। बच्चा चाहे बुढ़ा, कोई भी पढ़ सकते हैं। तुम भी पढ़ते हो ना यह नॉलेज। अब पढ़ाना शुरू कर दिया है। दिन-प्रतिदिन टाइम कम होता चला जाता है। अभी तुम बेहद में चले गये हो। जानते हो यह 5 हज़ार वर्ष का चक्र कैसे पास हुआ। पहले एक धर्म था। अभी कितने ढेर धर्म हैं। अभी सावरन्टी नहीं कहेंगे। इनको कहा जाता है प्रजा का प्रजा पर राज्य। पहले-पहले बहुत पावरफुल धर्म था। सारे विश्व के मालिक थे। अभी अधर्मी बन पड़े हैं। कोई धर्म नहीं है। सबमें 5 विकार हैं। बेहद का बाप कहते हैं—बच्चों अब धीर्य धरो, बाकी थोड़ा समय तुम इस रावणराज्य में हो। अच्छी रीति पढ़ेंगे तो फिर सुखधाम में चले जायेंगे। यह है दु:खधाम। तुम अपने शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो, इस दु:खधाम को भूलते जाओ। आत्माओं का बाप डायरेक्शन देते हैं—हे रूहानी बच्चों! रूहानी बच्चों ने इन आरगन्स द्वारा सुना। तुम आत्मायें जब सतयुग में सतोप्रधान थी तो तुम्हारा शरीर भी फर्स्टक्लास सतोप्रधान था। तुम बड़े धनवान थे फिर पुनर्जन्म लेते-लेते क्या बन गये हो! रात-दिन का फर्क है। दिन में हम स्वर्ग में थे, रात में हम नर्क में हैं। इनको कहा जाता है ब्रह्मा का सो ब्राह्मणों का दिन और रात। 63 जन्म धक्के खाते रहते हैं, अन्धियारी रात है ना। भटकते रहते हैं। भगवान् कोई को मिलता ही नहीं। इसको कहा जाता है भूलभुलैया का खेल। तो बाप तुम बच्चों को आदि सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का समाचार सुनाते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. दर-दर धक्के खाने की आदत छोड़ भगवान की पढ़ाई ध्यान से पढ़नी है। कभी अबसेन्ट नहीं होना है। बाप समान टीचर भी जरूर बनना है। पढ़कर फिर पढ़ाना है।

२. सत्य नारायण की सच्ची कथा सुन नर से नारायण बनना है, ऐसा इज्जतवान स्वयं को स्वयं ही बनाना है। कभी भूतों के वशीभूत हो इज्जत गँवानी नहीं है।

वरदान:- ब्राह्मण जन्म की विशेषता को नेचरल नेचर बनाने वाले सहज पुरुषार्थी भव

ब्राह्मण जन्म भी विशेष, ब्राह्मण धर्म और कर्म भी विशेष अर्थात् सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि ब्राह्मण कर्म में फालो साकार ब्रह्मा बाप को करते हैं। तो ब्राह्मणों की नेचर ही विशेष नेचर है, साधारण वा मायावी नेचर ब्राह्मणों की नेचर नहीं। सिर्फ यही स्मृति स्वरूप में रहे कि मैं विशेष आत्मा हूँ, यह नेचर जब नेचरल हो जायेगी तब बाप समान बनना सहज अनुभव करेंगे। स्मृति स्वरूप सो समर्थी स्वरूप बन जायेंगे - यही सहज पुरुषार्थ है।

स्लोगन:-

पवित्रता और शान्ति की लाईट चारों ओर फैलाने वाले ही लाइट हाउस हैं।

[illegible] बच्चो को बाप आए है भी [illegible] समझाने [illegible] 10 [illegible]
ड्रामा प्लेनुसार सारा कार्य होना है। बाकी 10 वर्ष रहे है। इस रावण पुरी को फिर विष्णु पुरी बनाने। अब बाप गुप्त भी है, पढ़ाई भी गुप्त [illegible] है। सेन्टर्स तो बहुत है। छोटे बड़े गावं मे छोटे बड़े सेन्टर्स है। ओर बच्चे बहुत हैं। अब बच्चो ने चैलेंज दी है। और लिखना भी है जब कोई लिटरेचर बनाना है तो उसमे तारिख [illegible]
4) है आज से यानी 1966 से 10 वर्ष के अन्दर हम अपनी इस भारतभूमी को स्वर्ग बना [illegible] भारतभूमि बहुत प्रिय है। क्योंकि तुम जानते हो यह भारत ही स्वर्ग था। उनको 5000 वर्ष हुए। भारत बहुत [illegible] [illegible] स्वर्ग कहा जाता था। तुम अभी गुरुं [illegible] को हो यह चालेंज है। इस भारत [illegible] [illegible] बनाना है। सब को रास्ता बताना है। और कोई खिट पिट की बात नही। [illegible] [illegible] प्रदर्शनी के चित्रो द्वारा। हम ऐसे क्या ऐडवरटाईजमेन्ट [illegible] जो अखबार में भी चित्र देवे। [illegible] पर सेमीनार करना चाहिए। जैसे कांग्रेसलोग आपस मे मिलते है राय करते है कि भारत को [illegible] [illegible] सुधारे। [illegible] जो इतने [illegible] हो गए है उनको आपस मे मिल कर ठीक करे और भारत मे सुख शांति [illegible] कांग्रेस गर्वमेन्ट का भी यह पुरुषार्थ चलता है। तुम भी पाण्डव गर्वमेन्ट गाई हुई हो। [illegible] यही [illegible] गर्वमेन्ट है। पतित पावन बाप ही पतित बच्चो को बैठ पावन दुनिया का मालिक बनाते है। यह बच्चे [illegible] है। [illegible] ही भारत का आदी सनातन देवी देवता धर्म। यह सभी बच्चे जानते है यह है [illegible] [illegible] कहा जाता ईश्वर [illegible] को। गाया हुआ है इसीकर ज्ञान यज्ञ रचा था। वो लोग नही जानते कि [illegible] रचा था। उन्हो ने तो टाईम लम्बा चौड़ा लगा दिया है। अज्ञान नींद घोर अन्धयारे मे सब है। अब [illegible] बाप ने जगाया है। तुम भी औरो को जगाना है। ड्रामा प्लेनुसार तुम जगाते रहते हो। इस समय तक [illegible] पुरुषार्थ किया है उतना ही कल्प पहले किया था। हाँ युध के मैदान मे गाड़ी चाली तो [illegible] [illegible] [illegible] चलती है कहीं कहीं बच्चों मे माया के विघ्न पड़ जाते है। माया एकदम बेहोश कर देती है। लड़ाई का मैदान तो है ना। रावण माया राम की सन्तान को बेहोश कर देते है। लव कुश के लिए भी कहानी है [illegible] लड़ाई के मैदान मे राम के बच्चे बेहोश हो गए। राम की [illegible] कोई भी नहीं है। यहाँ [illegible] तो ढेर बच्चे है। तुम [illegible] [illegible] रावण की नींद मे सोए हुए है। तुम ईश्वरीय सर्वेन्टर्स हो ऐसे कह सकते हो। जिनको ज्ञान [illegible] योगी बनायेंगे। इसमें एक दो को कहने की भी कोई बात नही है। तुम जानते [illegible] [illegible] जाते है। बाकी [illegible] सोए हुए है। वो जड नहीं जानते कि परम पिता परमात्मा [illegible] [illegible] को [illegible] देने। [illegible] बिल्कुल [illegible] है। [illegible] भारत मे ही [illegible] है। आगे भारत ही स्वर्ग [illegible] भारत स्वर्ग का मालिक था अब उसे [illegible] नही है। परम पिता परमात्मा [illegible] [illegible] [illegible] होगा [illegible] है [illegible] [illegible] तो तुम बच्चो को राजयोग सिखाया जाता है [illegible] की यात्रा समझाई जाती है। प्रेरणा से कोई आवाज नही होता। समझते है शंकर की भी प्रेरणा होती है तो वो यादव मूसल आदि बनाते है परंतु इसमे प्रेरणा की बात ही नहीं। तुम समझ गए हो [illegible] के [illegible]
b) ड्रामा मे यह मूसल बनाना। प्रेरणा की कोई बात नही। यह शास्त्रों मे [illegible] है। शंकर द्वारा विनाश। शंकर को ऐसे रखा है जैसे रावण को रखा है। रावण 5 विकारों को कहा जाता है। उनका कोई [illegible] तो है नही। ना कोई प्रेरणा की बात है। वैसे शंकर द्वारा विनाश रख दिया है। अब शंकर तो सूक्ष्म वतन मे है। [illegible] प्रेरणा तो [illegible] नहीं। [illegible] विनाश तो जरूर होना ही है। गाया हुआ है महाभारत लड़ाई, मूसल आदि [illegible] [illegible] तो [illegible] हो गया है जो फिर रिपीट होगा। तुम हिस्ट्री रचते हो कि हम 10 वर्ष के अन्दर स्वर्ग [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नहीं है। स्वयंभी स्थापना होती है तो दूसरा पार्ट होता ही नहीं। तो उन्हें सब चित्र कोई ऐसी बात नहीं है। परन्तु चित्र बैठाया हुआ है तो समझाया जाता है। ब्रह्मा कुबेर देवता खाता बहुत पड़ता पालना तो ठीक है शंकर को ये शिव साथ मिला दिया है। पिंड शंकर कम देते हैं क्योंकि वह कोई काम नहीं करते हैं ना। तो शिव से मिला दिया है। परन्तु शिव बाबा कहते हैं मुझे तो बहुत करना पड़ता है। शंकर की तो मेरे साथ कोई बात ही नहीं। वो तो सूक्ष्म वतन वासी आकारी है। तो ऊपर में ऊपर इन देवता स्थापना का एक अक्षर है। शंकर का तो इतना पार्ट इनकी पूजा करे मनुष्य क्या करे। शिव की पूजा होती है। शिव परमात्मा नाम कहते हैं। ब्रह्मा भी तो अपना पिता ठहरा ना। वाकी शिव कहते यह सारा रचते हैं। क्योंकि दूसरा पार्ट कोई ऐक्टर पार्ट नहीं है। दूसरा खाता मरा पीते थे। इस रास्ते की स्थापना बनाई है। अब तुमको समझ में आता है। शंकर का पार्ट नहीं है। सब से ऊपर है शिव का। ब्रह्मा का और विष्णु का। ब्रह्मा से विष्णु विष्णु से ब्रह्मा। यह तो बड़ी गुप्त बातें हैं। ब्रह्मा कैसे बनते हैं, ब्रह्मा से फिर विष्णु कैसे बनते हैं यह गुप्त बातें। सेन्टर पर बच्चों की हैड आफिस आ जाता है। देवी सम्प्रदाय तो बनती ही है। एक की बात नहीं है। उन बातों को नये बच्चे ने तो। दुनिया में एक भी मनुष्य नहीं समझते। सब सही नारायण वा विष्णु की पूजा तो करते परन्तु पता नहीं है कि विष्णु की फिर लक्ष्मी नारायण बनते हैं। विष्णु के दो रूप लक्ष्मी नारायण हैं। जो नहीं जानते वे कहेंगे दूसरा कोई मनुष्य नहीं होता। यह सब बातें में एम आब्जेक्ट विरोधी करेंगे। यह सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी कैसे चक्कर लगाती है यह कोई नहीं जानते। बाप को ही जानते हैं तो बाप की रचना को कैसे जान सकते। बाप की रचना को आदि मध्य अन्त का नालेज बताते हैं। पूरा तो कोई भी नहीं जानते। बाप को जान जाएं तो रचना के आदि मध्य अन्त को भी जान जाए। कहते हैं मैं एक ही बात आकर तुम बच्चों को यह सारा नालेज समझाता हूँ। याद आता ही नहीं है तो रचना के आदि मध्य अन्त को कैसे। बाप समझते हैं मैं सिवाए संगमयुग के कह आता नहीं हूँ। तुम्हें तो संगम पर ही पावन सतयुग के पतित कलियुग के कहा जाता है। जब तो मैं जरूर आऊँगा पतित दुनिया में तो बुलाते भी हैं आकर हमको पावन बनाओ। तो अन्त में ही आकर पावन बनाऊंगा। कलियुग अन्त को भजन बताते हैं। सतयुग आदि में पावन है। यह तो अटज बात है। मनुष्य कुछ भी समझ नहीं। पतित पावन बाप एक कहेंगे। आप तो कलियुग का अन्त कहेंगे। अगर कहें कलियुग की अन्त में कैसे तो ज्ञान जितना पवित्र बनेंगे उतना दुख होगा। सुख तो आधा ही रहा। दुख भी तो बहुत चित्रों की ओर जन्मों में है। तुम बच्चे समझ सकते हो। तो बच्चों के आगे आकर मेरी महिमा को बढ़ाओ। बाप रचयिता तो बताते रहते हैं। फिर बच्चों को आपस में भी बैठ समझाना होता है। यह भी ड्रामानुसार चित्र निकले हैं। चक्र घूमते हैं तो ड्रामा चलता रहता है। बच्चों की अवस्था एक जैसा एक नहीं होती। यह सारे हैं। एक2 आवाजाही आ बैठती है तो उनको निकालने लिए कितने प्रयत्न करते हैं। कभी तुम देह अभिमान में आ जाते हो इसलिए टपाते हैं। इसमें बड़ी जीमनाटिक चलती है। देह अभिमान बहुत है। तुम देही अभिमानी बनो तो बाप की याद रहे। और सर्विस में उतरी होगी। उस पर जिनके धंधा है वो सेक्स सर्विस में लेंगे छोड़ेंगे। तकदीर में नहीं है तो तदबीर भी नहीं होगी। बाबा कहते हैं बाबा कहते नहीं होती। बुद्धि में नहीं बैठता। जिनको बाबा कहते हैं तो खुशी बहुत होनी चाहिए। समझते हैं शिव बाबा आया हुआ है। अब बाप कहते हैं बच्चे तुम अच्छी तरह समझ कर फिर औरों को समझाओ। कोई तो सर्विस में लग जाते हैं। कोई लगते नहीं हैं। यह भी बच्चे समझते हैं जो2 सेक्शन

''मीठे बच्चे – तुम गैरन्टी करते हो कि हम अपने ही योगबल से इस भारत को स्वर्ग बनायेंगे, वहाँ एक धर्म, एक राज्य होगा''

प्रश्न:- माया के किस विघ्न से सेफ रहने वाले बहुत अच्छी कमाल कर सकते हैं?

उत्तर:- माया का सबसे बड़ा विघ्न है – देह-अभिमान में लाकर एक-दो के नाम रूप में फँसाना। जो बच्चे इस विघ्न से सेफ रहते, माया के धोखे से बचे रहते, वे बहुत कमाल कर दिखाते हैं। उनकी बुद्धि में सर्विस के नये-नये ख्यालात चलते रहते हैं। सर्विस में उन्नति तब होगी जब देही-अभिमानी होंगे।

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों को बाप आये हैं श्रीमत देने। यह तो बच्चे जानते हैं कि थोड़े समय के अन्दर ड्रामा प्लैन अनुसार सारा कार्य होना है। हम रावणपुरी को विष्णुपुरी बनाते हैं। अब बाप भी गुप्त तो पढ़ाई भी गुप्त है। सेन्टर्स तो बहुत हैं। छोटे बड़े गांव में सेन्टर्स हैं और बच्चे भी बहुत हैं। और भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जायेंगे। लिटरेचर में भी लिखते हैं कि हम इस भारत भूमि को स्वर्ग बनाकर छोड़ेंगे। तुमको यह भारत भूमि बहुत प्यारी है क्योंकि तुम जानते हो कि यह भारत ही स्वर्ग था। उनको 5 हजार वर्ष हुए। भारत बहुत शानदार था। तुम ब्रह्मा मुख वंशावली बच्चों को ही यह नॉलेज है। इस भारत को श्रीमत पर स्वर्ग बनाना पड़े। सबको रास्ता बताना है और कोई खिटखिट की यहाँ बात नहीं है। आपस में बैठ राय करनी चाहिए कि इन चित्रों द्वारा ऐसी क्या एडवरटाइज़ करें जो अखबार में भी यह चित्र डालें। आपस में इस पर सेमीनार करना चाहिए। जैसे उस गवर्मेन्ट के लोग आपस में मिलते हैं, राय करते हैं तो भारत को हम कैसे सुधारें। यह जो इतने मतभेद हो गये हैं, उनको आपस में मिलकर ठीक करें और भारत में सुख-शान्ति कैसे स्थापन हो। ऐसे तुम भी रूहानी पाण्डव गवर्मेन्ट हो, यह बड़ी ईश्वरीय गवर्मेन्ट है। पतित-पावन बाप ही पतित बच्चों को पावन बनाकर पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं। यह राज़ तुम बच्चे जानते हो। मुख्य है ही भारत का आदि सनातन देवी-देवता धर्म। यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। रूद्र कहा जाता है शिवबाबा को। अब तुमको बाप ने आकर जगाया है, तुमको फिर औरों को जगाना है। ड्रामा प्लैन अनुसार तुम जागते रहते हो। अब तक जिस-जिस ने जैसा-जैसा पुरुषार्थ किया है, उतना ही कल्प पहले भी किया था। तुम्हारी रूहानी युद्ध है। कभी माया का जोर हो जाता है, कभी ईश्वर का। कभी-कभी तो सर्विस अच्छी तेजी से चलती है। कभी कई बच्चों में माया के विघ्न पड़ जाते हैं। माया एकदम बेहोश कर देती है। लड़ाई का मैदान तो है ना। माया, राम की सन्तान को बेहोश कर देती है। लव-कुश की कहानी भी है ना। राम के दो बच्चे दिखाये हैं। यहाँ तो बाबा के ढेर बच्चे हैं। इस समय सब मनुष्य कुम्भकरण की नींद में सोये हुए हैं। वे यह भी नहीं जानते कि परमपिता परमात्मा आया है – बच्चों को वर्सा देने। बाप भारत में ही आते हैं। यह बात बिल्कुल ही भूल गये हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भारतवासी ही स्वर्ग के मालिक थे, इसमें कोई शक नहीं। परमपिता परमात्मा का जन्म भी यहाँ होता है तब तो शिव जयन्ती भारत में मनाते हैं। तो जरुर उसने कुछ आकर किया होगा। बुद्धि कहती है कि जरुर बाप ने आकर स्वर्ग की स्थापना की होगी। प्रेरणा से थोड़ेही स्थापना करेंगे। यहाँ तो तुम बच्चों को राजयोग सिखाया जाता है, याद की यात्रा सिखाई जाती है। प्रेरणा में कोई आवाज नहीं होता। समझते हैं शंकर प्रेरणा से विनाश करता, परन्तु इसमें प्रेरणा की बात नहीं है। तुम समझ गये हो कि ड्रामा में उन्हों का पार्ट ही है — मूसल बनाना व विनाश अर्थ निमित्त बने हुए हैं। प्रेरणा शास्त्रों का अक्षर है। इसमें प्रेरणा की तो बात नहीं है। शंकर तो सूक्ष्मवतन में है। ड्रामा अनुसार तो विनाश होना ही है। गाया हुआ है महाभारत लड़ाई में यह मूसल आदि काम में आये थे। जो पास्ट हो गया है वह फिर रिपीट होना है। तुम गैरन्टी करते हो कि हम योगबल से स्वर्ग की स्थापना करेंगे, वहाँ एक धर्म होगा। तो दूसरे सब धर्म कहाँ होंगे? जरुर विनाश हो जायेंगे। यह समझने की बात है। गाया हुआ है — ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना ना ठोक है। लेकिन शंकर को तो शिव के साथ मिला दिया है। यह रॉंग है। शिव-शंकर कह देते हैं क्योंकि शंकर तो कोई काम नहीं करते तो शिव से मिला दिया है। परन्तु शिवबाबा कहते हैं मुझे तो बहुत काम करना पड़ता है। सबका पावन बनाना पड़ता है। मैं इस ब्रह्मा तन में प्रवेश कर इस साकार द्वारा स्थापना का कार्य करता हूँ। शंकर का तो कोई पार्ट है नहीं। शिव की पूजा होती है। शिव ही कल्याणकारी झोली भरने वाला है। शिव परमात्माए नमः कहते हैं ना। यह ब्रह्मा भी प्रजापिता ठहरा। ब्रह्मा से विष्णु, विष्णु से ब्रह्मा यह तो बड़ी गुह्य बातें हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। सेन्सीबुल बच्चों की बुद्धि में ज्ञान झट समझ में आ जाता है। मनुष्य को कुछ भी समझ नहीं है कि पतित-पावन बाप कब आयेंगे! अब तो कलियुग का अन्त है। अगर कहते कि कलियुग के अन्त में 40 हजार वर्ष पड़े हैं, तो अभी कितना और पतित बनेंगे? कितना दुःख सहन करेंगे? कलियुग में सुख तो होगा नहीं। कुछ भी न जानने के कारण बिचारे घोर अन्धियारे में पड़े हैं।

तुम बच्चों को आपस में मिलकर राय करनी चाहिए कि कैसे सर्विस को बढ़ायें। बाप प्लैन तो बताते रहते हैं फिर बच्चों को आपस में मिलना है। चित्रों पर अच्छी रीति समझाना है। यह भी ड्रामा अनुसार चित्र बनते जा रहे हैं। बच्चे जानते हैं कि जो-जो समय पास होता जाता है, हूबहू ड्रामा चलता रहता है। बच्चों की अवस्थायें तो कब ऊपर, कब नीचे, यह चलता रहेगा। बाबा भी साक्षी होकर देखता है। कभी-कभी बच्चों पर ग्रहचारी बैठती है तो उनको मिटाने के लिए प्रयत्न कराते हैं। बाबा घड़ी-घड़ी कहते हैं कि बाप को याद करो। लेकिन देह-अभिमान में आ जाते हैं इसलिए ठोकरें खाते हैं, इसमें देही-अभिमानी बनना पड़े। परन्तु बच्चों में देह-अभिमान बहुत है। तुम देही-अभिमानी बनो तो बाप की याद रहे फिर सर्विस की उन्नति भी होती रहेगी। जिनको ऊंच पद पाना है, वह सदैव सर्विस में लगे रहेंगे। तकदीर में अगर नहीं है तो तदबीर भी नहीं करेंगे। खुद कहते हैं कि बाबा हमको

धारणा नहीं होती है। बुद्धि में नहीं बैठता। धारणा अगर नहीं होती तो खुशी भी नहीं रहती है। जिनको धारणा होती है तो खुशी भी रहती है। समझते हैं कि शिवबाबा आया हुआ है। बाप कहते हैं-- बच्चे तुम अच्छी रीति समझकर फिर औरों को भी समझाओ। कोई तो सर्विस में लग जाते हैं। पुरुषार्थ करते रहते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि जो-जो सेकेण्ड बीतता है वह ड्रामा में नूँध है फिर ऐसे ही रिपीट होता है। बच्चों को ही समझाया जाता है कि बाहर भाषण करते समय तो अनेक प्रकार के मनुष्य आते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि सभी वेद, शास्त्र, गीता आदि पर ही भाषण करते हैं, उनको यह पता थोड़ेही है कि यहाँ ईश्वर अपना और इस रचना के आदि-मध्य-अन्त का रहस्य समझाते हैं। चित्रों में कितना अच्छी तरह दिखाया है कि परमात्मा कौन है! यह बातें प्रोजेक्टर पर तो समझा नहीं सकते। प्रदर्शनी में चित्र भी सामने खड़े हैं और फिर तुम समझाकर पूछ भी सकते हो कि अब बताओ कि गीता का भगवान कौन है? ज्ञान का सागर कौन है? पवित्रता सुख-शान्ति का सागर, लिबरेटर गाइड कौन है? कृष्ण के लिए तो कह नहीं सकेंगे। परमात्मा की महिमा अलग है। पहले लिखाना भी चाहिए, प्रोब लेना चाहिए। सबसे सही भी लेनी है।)

(हाल में चिड़िया लड़ रही हैं) इस समय सारी दुनिया में लड़ाई-झगड़ा हो रहा है। आपस में लड़ते रहते हैं। 5 विकार भी मनुष्य में गाये जाते हैं। जानवरों की तो बात नहीं है। विशश वर्ल्ड और वाइसलेस वर्ल्ड मनुष्यों के लिए गाया हुआ है। कलियुग में है आसुरी सम्प्रदाय, सतयुग में हैं दैवी सम्प्रदाय। मनुष्य इतने तमोप्रधान बुद्धि हैं जो बिल्कुल समझते नहीं कि हम ही आसुरी सम्प्रदाय हैं। देवताओं के आगे जाकर गाते भी हैं हम ही नींच पापी हैं, हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। तुम तो उन्हों को सिद्ध कर बता सकते हो। सीढ़ी के चित्र में बड़ा क्लीयर है। दिखाया हुआ है कि कैसे चढ़ती कला है फिर उतरती कला है। भारतवासियों के लिए मुख्य है सीढ़ी का चित्र। यह है सबसे अच्छी चीज़। इस चित्र पर बहुत अच्छा समझा सकते हो। 84 जन्म पूरे कर फिर पहला नम्बर जन्म लेना है फिर उतरती कला फिर चढ़ती कला में जाना पड़े। हर एक का विचार चलना चाहिए कि सबको रास्ता कैसे बतायें। ख्यालात नहीं चलेंगे तो सर्विस कैसे करेंगे। चित्रों पर समझाना बहुत सहज होता है। सतयुग के बाद सीढ़ी उतरनी ही है। बच्चे जानते हैं कि अब हम ट्रांसफर हो रहे हैं। लेकिन सीधा सतयुग में नहीं जाते। पहले शान्तिधाम में जाना है। तुम जानते हो हम पार्टधारी हैं। बाकी तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो अपने को पार्टधारी समझते हैं -- इस ड्रामा के। दुनिया में ऐसा कोई नहीं कह सकते कि हम पार्टधारी हैं। हम लिखते भी हैं कि हर एक मनुष्य मात्र इस बेहद ड्रामा के एक्टर्स होते हुए भी ड्रामा के मुख्य एक्टर्स, डायरेक्टर और ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं तो वह बेसमझ हैं। इस लिखने में कोई हर्जा नहीं है। एक कान से सुन दूसरे से निकाल नहीं देना चाहिए। सर्विस, सर्विस और सर्विस। बाबा जानते हैं कि बच्चों पर कभी ग्रहचारी भी बैठती है। जब ग्रहचारी बैठती तो कितना नुकसान हो जाता है, वह बाप जानते हैं। साहूकार गरीब बन पड़ते हैं। कारण तो होता है ना।

[redacted] बाबा समझाते भी रहते हैं – बच्चे नाम-रूप में कभी नहीं फँसना। नहीं तो माया [redacted] नाक से पकड़ खड्डे में डाल देगी। माया बड़ा धोखा दे देगी। आशिक माशूक यहा नहीं बनना है। आशिक माशूक कोई विकार के लिए बनते हैं, दूसरे सिर्फ रूप पर फिदा होते हैं। तुम जानते हो सेन्टर्स पर भी ऐसे माया के विघ्न बहुत पडते हैं, एक-दो के नाम-रूप में फंस जाते हैं। माया ऐसी प्रबल है जो माता, माता के नाम-रूप में, कन्या, कन्या के नाम-रूप में भी फँस पड़ती है। पुरूषार्थ करते हुए भी माया एकदम पकड़ लेती है। इसलिए बाबा सावधानी देते हैं कि बच्चे माया बहुत फँसाने की कोशिश करेगी, लेकिन तुमको फँसना नहीं है। देह-अभिमान में नहीं आना चाहिए। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। माया के धोखे से बचते रहना है। तुम बच्चों को बाप गुल-गुल (फूल) बनाने आये हैं, तुम्हें किसी बात में संशय नहीं आना चाहिए। अगर दिल में संशय आया तो सर्विस अच्छी तरह कर नहीं सकेंगे। अन्दर घुटका खाते रहेंगे। हिम्मत रखनी चाहिए। उड़ना बहुत थोड़ा है। बाबा की मुरली सुनेंगे तो उत्साह में आयेंगे। आत्मप्रकाश बच्चा ठीक रीति चित्रों तरफ अटेन्शन दे रहा है। बाम्बे वालों के भी दिमाग में आना चाहिए। मुख्य चित्र को पहले बनाना पड़े। जांच करनी चाहिए, बाबा डायरेक्शन देते रहते हैं कि कैसे चित्रों में उन्नति होनी चाहिए। ऐसी कोई युक्ति रचो जो सीढ़ी का चित्र एरोड्रम पर रखा जाए। यह चित्र देखकर सब खुश होंगे। आखिर समझेंगे कि इनको मत देने वाला कौन है। तो बच्चों को बहुत नशा चढ़ना चाहिए। अच्छा–मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा की याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- तुम बच्चे लड़ाई के मैदान में हो, माया रावण से तुम्हारी युद्ध है। माया बहुत विघ्न डालती है। बच्चों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

२- हर एक को अपनी उन्नति के लिए विचार करना है। चित्रों पर कैसे समझायें, सर्विस को कैसे बढ़ायें। चित्रों में ऐसा क्या डालें जो मनुष्य सहज समझ जाएं।

वरदान:- सदा अपने पवित्र स्वरूप में स्थित रह गुण रूपी मोती चुगने वाले होलीहंस भव

आप होली हंसों का स्वरूप है पवित्र और कर्तव्य है सदैव गुणों रूपी मोती चुगना। अवगुण रूपी कंकड कभी भी बुद्धि में स्वीकार न हो। लेकिन इस कर्तव्य को पालन करने के लिए सदैव एक आज्ञा याद रहे कि न बुरा सोचना है, न बुरा सुनना है, न बुरा देखना है, न बुरा बोलना है.... जो इस आज्ञा को सदा स्मृति में रखते हैं वह सदा सागर के किनारे पर रहते हैं। हंसों का ठिकाना है ही सागर।

स्लोगन:-

चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप में रहना–यही ब्रह्मा बाप की दिल-पसन्द गिफ्ट है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

देखते हो तो हरेक की तस्वीर से उनकी तदबीर, उनके पुरुषार्थ का जो विशेष गुण हैं, वही देखना है। हरेक के पुरूषार्थ में विशेष गुण जरूर होता है। उन गुण को देखना है। एक होता है गुण और गुण के साथ-साथ फिर होता है गुणा। शब्द कितना नजदीक है लेकिन वह क्या, वह क्या। अगर गुण नहीं देखते हो तो गुणा लग जाता है। तो हरेक के गुण को देखना है तो गुणा जो लगता है वह खत्म हो जावेगा। पटनावासी अति स्नेही और अति प्रिय हैं जो एक दो के स्नेही होते हैं। ऐसे स्नेही बच्चों से बाप-दादा का भी अति स्नेह है, स्नेह ही समीप लाता है। जितना स्नेही उतना समीप तो पटना निवासी एक दो में स्नेही हैं ऐसे स्नेही बच्चे ही समीप भी आ सकते हैं अब भी और भविष्य में भी। विशेष स्नेही हैं इसलिये आज विशेष डबल टीका लगा रहे हैं लेकिन अनोखा, लौकिक रीति का टीका नहीं। डबल टीका कौन सा है? एक तो निराकारी दूसरा न्यारापन। यह डबल टीका हरेक के मस्तिष्क पर अविनाशी स्थित कराने के लिये अविनाशी रूप से ही लगा रहे हैं। यह अविनाशी टीका सदा कायम रहता है? तिलक को सुहाग की निशानी कहा जाता है इस तिलक को सदा कायम रखने की कोशिश करनी है। जितना-जितना परिपक्व रहेंगे उतना पद पा सकेंगे। हरेक यही सोचे कि हम ही नम्बर वन हैं। अगर हरेक नम्बर वन होंगे तो नम्बर टू कौन आवेंगे? बाप की क्लास में कब भी नम्बर नहीं निकल सकती। टीचर भी नम्बर वन स्टूडेन्ट भी नम्बर वन। तो एक-एक नम्बरवन। तो ऐसी क्लास का तो मधुवन में चित्र होना चाहिये। अच्छा-ओमशान्ति।

माला का मणका बनने के लिए विजयी बनो

25-10-69

बाप-दादा जब बच्चों को देखते हैं तो मुख्य बात क्या देखते हैं? आज यही देखने आये हैं कि हरेक रत्न अपने में क्या-क्या परिवर्तन लाया है तो आज परिवर्तन देखने लिये आये हैं। हरेक ने यथाशक्ति परिवर्तन तो लाया ही है। लेकिन बाप-दादा कौन सा परिवर्तन देखने चाहते हैं? उसका

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भी जानते हो ना। बाप-दादा परिवर्तन के साथ परिपक्वता भी देखने चाहते हैं। परिवर्तन तो देखा लेकिन परिवर्तन के साथ अपने में परिपक्वता भी लाई? बाप को अविनाशी सत्य बोलते हो ना। तो ऐसे ही बाप के साथ अविनाशी परिवर्तन लाया है? जो खजाना मिलता है वह भी अविनाशी है, जो प्रालब्ध मिलती है वह भी अविनाशी है तो परिवर्तन भी अविनाशी लाया है वा सोचते हो कि जाने बाद मालूम पड़ेगा। न मालूम कौन सी परिस्थितियां आयें, न मालूम परिपक्व रह सकें वा नहीं, वायदा तो करके जाते हैं लेकिन कहां तक निभा सकते हैं वह देखेंगे। एक तो यह सोचते हैं। फिर दूसरी है निश्चय बुद्धि जिन्हों को बाप के साथ अपने में भी पूरा निश्चय है कि जो परिवर्तन लाया है वह सदा कायम रखेंगे। और जो वायदा करके जाते हैं वह करके दिखायेंगे। वह है सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि और कोई तो विचारे हिम्मत धारण करने की कोशिश करते हैं; लेकिन अब तक अगर ऐसे ही करते चलेंगे तो अन्त तक भी क्या कोशिश करते रहेंगे? ऐसे पुरुषार्थी को झाटकू कहेंगे? देवियों पर जब बलि चढ़ते हैं तो शक्तियां वा देवियां ही बिगर झाटकू स्वीकार नहीं करती हैं तो क्या बाप-दादा ऐसे को स्वीकार करता है। अगर यहां स्वीकार न किया तो स्वर्ग में ऊंच पद की स्वीकृति नहीं मिलेगी। इसलिये सुनाया था कि जो सोचना है वही कहना है, जो कहना है वही करना है। सोचना, कहना, करना तीनों ही एक होना चाहिये। लेकिन वर्तमान समय कई ऐसे बच्चे हैं जो सोचते बहुत हैं कहते भी बहुत हैं लेकिन करने के समय कम रह जाते हैं। इसलिये कहा था इस भट्ठी में पक्का कर जाना अर्थात् पक्का वायदा करके जाना है। पहले तो वायदा करने लिये हिम्मत है कि हिम्मत धारण करेंगे? जो हिम्मतवान बच्चे हैं उनकी निशानी क्या है? वह कब हार नहीं खाते। अगर आप सभी हिम्मतवान हैं तो जरूर आज से कब हारेंगे नहीं। बहुत समय से जो विजयी बनते हैं वही विजय माला के मणके बनते हैं। अगर विजय माला में पिरोने चाहते हैं तो विजयी बनने का परिवर्तन लाना पड़ेगा। परिवर्तन में मुख्य-मुख्य बातें चेक करनी हैं। बहुत सहज है। दो शब्द याद रखना है। एक तो आकर्षक मूर्त बनना है और दूसरा हर्षित मुख। आकर्षण करने वाला है रूह। रूहानी स्थिति में ही एक दो को आकर्षण कर सकेंगे। अगर यह दोनों बातें अपने में धारण कर लीं तो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सम्पूर्ण विजयी हैं ही। मैजारटी बच्चों में मुख्य कौन-सी बात है वह भी आज सुना रहे हैं। निश्चय बुद्धि तो हो तब तो यहां आये हो। बाप में निश्चय है, ज्ञान में भी निश्चय है लेकिन अपने में निश्चय कहां-कहां डगमगा देता है। मुख्य कमी यह है जो कंट्रोलिंग पावर नहीं है। यह न होने कारण समझते हुये, सोचते हुये अपने को कोसते भी हैं लेकिन फिर भी वही बात कर लेते हैं। इसका कारण कि कंट्रोलिंग पावर की आवश्यकता है। मनसा में, वाचा में और कर्मणा में भी और साथ-साथ लौकिक सम्बन्धियों अथवा दैवी परिवार के सम्बन्ध में आने में भी। कहां तक क्या करना है, क्या कहना है। क्या नहीं कहना है। और जो न करना है उसको कंट्रोल करना यह पूरी पावर न होने कारण सफल नहीं होते हो। तो कंट्रोलिंग पावर की कमी कैसे मिटावेंगे ? कई वार आप गोपों ने देखा होगा कोई भी चीज को कहां बहुत जोर से कंट्रोल करना होता है तो कंट्रोल करने लिये भी कई चीजों को हल्का छोड़ना पड़ता है। पतंग कब उड़ाया है? पतंग को कंट्रोल करने और ऊंचा उड़ाने लिये क्या किया जाता है ? यह भी ऐसे हैं। अपनी बुद्धि को कंट्रोल करने लिये कई बातों को हल्का करना पड़ता है। सभी से हल्की क्या चीज होती है? आत्मा (विन्दी)। तो जब अपने को कंट्रोल करना हो तो अपने को बिल्कुल हल्का विन्दू रूप में स्थित करना है। कंट्रोल करने लिये फुलस्टाप करना होता है। तो आप भी विन्दी लगा दो। जो बीत चुका उसको बिल्कुल भूल जाओ। देखा, किया लेकिन फिर एकदम उसको समाप्त कर दो। समाप्त करना अर्थात् विन्दी, फुलस्टाप करना। कोमा (,) लगाने आती है, क्वेश्चन (?) करने भी आता है। अजब की निशानी ! भी लगाने आती है लेकिन फुल स्टाप लगाना नहीं आता है। कागज पर निशानियां लगाना तो सहज है लेकिन अपने कर्मों के ऊपर यह निशानियां लगाना इसमें मुश्किल क्यों? कागज पर निशानियां लगाते हो ना। और जो निशानी जहां लगानी है वहां ही लगती है इसको कहा जाता है प्रवीन। अगर कोमा के बदली कोई फुलस्टाप लिख दे तो प्रवीन नहीं कहा जाएगा। जहां क्वेश्चन करना है वहां क्वेश्चन न करें तो भी प्रवीन नहीं कहेंगे। यहां भी क्वेश्चन किस बात में, अजब किस बात में, फुलस्टाप किस बात में देना है, यह पूरी पहचान न होने कारण प्रवीन नहीं बनते हैं। अब समझा। कंट्रोल क्यों नहीं कर पाते क्योंकि उस समय ज्ञान का

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पैट्रोल कम हो जाता है। अगर ज्ञान का पैट्रोल है तो कंट्रोल है। इसलिये अपने बुद्धि रूपी टंकी में पैट्रोल को जमा रखो। माइनस और प्लस का हिसाब सीखे हो? और बैलेन्स निकालना भी सीखे हो? ऐसे तो नहीं सिर्फ जोड़ किया, कट किया लेकिन जमा करने भी सीखो। अगर जमा नहीं होगा तो न औरों को दे सकेंगे न अपने को आगे बढ़ा सकेंगे। जमा किया जाता है दूसरों को देने के लिये, अपनी आवश्यकता के समय काम में लाने के लिये। तो यह भी देखना है कितना जमा किया है। सिर्फ कमाना और खाना है वा जमा भी होता है? कब हिसाब किया है? २५ प्रतिशत जमा तो बहुत कम है। अगर २५ प्रतिशत जमा किया है तो अभी के हिसाब से बाप-दादा भी कौन सी
a) जिम्मेवारी देंगे? यहां से जास्ती याद कितने दिनों में करेंगे? विनाश कब होना है? सात वर्ष में ७५ प्रतिशत जमा करेंगे? अगर उनसे पहले ही विनाश हो जाए तो क्या करेंगे? अपना-अपना प्लैन तो सात वर्ष के हिसाब से बनाया। अगर पांच वर्ष में ही हो जाए तो क्या होगा? जब दूसरों को कहते हो कि आज का काम कल पर न रखो तो सात वर्ष का क्यों सोच लिया है। फाइनल है सृष्टि के बदलने की बात। लेकिन आप के बदलने लिये तो सात वर्ष नहीं कहा। सात वर्ष तो सृष्टि की बात है या आपके बदलने की बात है। कब भी यह न सोचना है कि सात वर्ष में बदलेंगे। तीव्र पुरुषार्थी कब ऐसे नहीं कहेंगे। बहुत समय से अगर सम्पूर्णता के संस्कार होंगे तो अन्त में भी सम्पूर्ण हो सकेंगे। अगर सात वर्ष के अंत में बनेंगे तो फिर बाप दादा भी अंत में थोड़ा दे देंगे। जो अभी करते हैं उनको बाप-दादा भी सतयुग के आरंभ में कहते—आओ। जो सात वर्ष कहते तो पद भी कम हो पड़ेगा। यह तो लक्ष्य नहीं है?

बाप-दादा तो हरेक रत्न में उम्मीद रखते हैं कि यह अनेकों को उम्मीदवार बनायेंगे। जो अनेकों के उम्मीदवार हैं वह अपने लिये फिर अंत की उम्मीद कैसे रख सकते हैं। अच्छा। इस ग्रुप की भट्ठी भी समाप्त हुई। समाप्त हुई वा आरंभ हुई? इस ग्रुप का एग्जामिन (परीक्षा) नहीं लिया है। जो एग्जम्पल देखा उसको सदा काल के लिये कायम रखते आवेंगे तो फिर इम्तिहान लेंगे। कोई भी चीज को मजबूत करना होता है तो क्या किया जाता है? फाउंडेशन मजबूत रखने के लिये घेराव की आवश्यकता होती है।

PDF compression, OCR by

जितना-जितना घेराव में जावेंगे इतना मजबूती होगी। ऊपर-ऊपर से नींव लगाने से मजबूती नहीं होती। जितना गहराई से ज्ञान को धारण किया होगा उतना ही अपनी मजबूती लाई होगी। परिवर्तन तो सभी ने कुछ न कुछ लाया ही है लेकिन कुछ न कुछ क्यों कहते हैं। क्योंकि फाइनल सर्टीफिकेट प्रैक्टिकल लाने के बाद देंगे। अभी सर्टीफिकेट नहीं देंगे अभी हर्षित होते हैं कि हरेक बच्चा उमंग उत्साह से अपने पुरुषार्थ को आगे बढ़ाने में बहुत तत्पर है। लेकिन सर्टीफिकेट तब मिलेगा जब प्रैक्टिकल में रिजल्ट आउट होगी। ऐसे नहीं समझना कि भट्ठी समाप्त हुई, लेकिन आरंभ हुई है। अभी सुनना हुआ, फिर करना है। करने के बाद सर्टीफिकेट मिलेगा।

इस ग्रुप की मुख्य खूबी यह देखी कि एकता है। लेकिन एकता के साथ-साथ अब दूसरा शब्द भी एड करना है। एकता के साथ एकांतप्रिय बनना है। जैसे एकता में नम्बरवन है वैसे एकान्त में भी नम्बर वन आना है। यह धारण कर लो तो यह ग्रुप बहुतों से आगे जा सकता है। एकता के साथ एकान्तवासी कैसे बनें यह भी अपने में भरना है। एकान्तप्रिय वह होगा जिनका अनेक तरफ से बुद्धि योग टूटा हुआ होगा और एक का ही प्रिय होगा। एक प्रिय होने कारण एक ही की याद में रह सकता। अनेक के प्रिय होने के कारण एक की याद में रह नहीं सकता अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ हो। एक तरफ जुटा हुआ हो अर्थात् एक के सिवाय दूसरा न कोई। ऐसी स्थिति वाला जो होगा वह एकान्त प्रिय हो सकता है। नहीं तो एकान्त में बैठने का प्रयत्न करते हुए भी अनेक तरफ बुद्धि भटकेगी। एकान्त का आनंद अनुभव कर न सकेंगे। सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनाएं एक से लेने वाला ही एकान्त प्रिय हो सकता है। जब एक द्वारा सर्व रसनाएं प्राप्त हो सकती हैं। तो अनेक तरफ जाने की आवश्यकता ही क्या ? लेकिन जो एक द्वारा सर्व रसनाओं को लेने के अभ्यासी नहीं होते वह अनेक तरफ रस लेने की कोशिश करते। तो फिर एक भी प्राप्ति नहीं होती। और एक बाप साथ लगाने से अनेक प्राप्तियां होती हैं। सिर्फ एक शब्द भी याद रखो तो उसमें सारा ज्ञान आ जाता। स्मृति भी आ जाती। सम्बन्ध भी आ जाता। स्थिति भी आ जाती। और साथ-साथ जो प्राप्ती होती है वह भी उस एक शब्द से स्पष्ट हो जाती। एक की याद, स्थिति एकरस और ज्ञान भी सारा एक की याद का ही मिलता है। प्राप्ति भी जो होती

माला का मणका बनने के लिए विजयी बनो

बाप-दादा जब बच्चों को देखते हैं तो मुख्य बात क्या देखते हैं? आज यही देखने आये हैं कि हरेक रत्न अपने में क्या-क्या परिवर्तन लाया है। तो आज परिवर्तन देखने लिये आये हैं। हरेक ने यथाशक्ति परिवर्तन तो लाया ही है। लेकिन बाप-दादा कौनसा परिवर्तन देखने चाहते हैं? उसको भी जानते हो ना। बाप-दादा परिवर्तन के साथ परिपक्वता भी देखने चाहते हैं। परिवर्तन तो देखा, लेकिन परिवर्तन के साथ अपने में परिपक्वता भी लाई? बाप को 'अविनाशी सत्य' बोलते हो ना। तो ऐसे ही बाप के साथ अविनाशी परिवर्तन लाया है? जो खजाना मिलता है वह भी अविनाशी है, जो प्रालब्ध मिलती है वह भी अविनाशी है। तो परिवर्तन भी अविनाशी लाया है? वा सोचते हो कि — जाने के बाद मालूम पड़ेगा, न मालूम कौनसी परिस्थितियां आयें, न मालूम परिपक्व रह सकें वा नहीं। वायदा तो करके जाते हैं लेकिन कहाँ तक निभा सकते हैं, वह देखेंगे। एक तो यह सोचते हैं। फिर दूसरे हैं निश्चयबुद्धि, जिन्हों का बाप के साथ अपने में भी पूरा निश्चय है कि जो परिवर्तन लाया है वह सदा कायम रखेंगे और जो वायदा करके जाते हैं वह करके दिखायेंगे। वह हैं सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि। और कोई तो बिचारे हिम्मत धारण करने की कोशिश करते हैं। लेकिन अब तक अगर ऐसे ही करते चलेंगे तो अन्त तक भी क्या कोशिश करते रहेंगे? ऐसे पुरुषार्थी को झाटकू कहेंगे? देवियों पर बलि चढ़ते हैं तो शक्तियां वा देवियां ही बिगर झाटकू स्वीकार नहीं करती हैं। तो क्या बाप-दादा ऐसे को स्वीकार कर सकता है? अगर यहाँ स्वीकार न किया तो स्वर्ग में ऊंच पद की स्वीकृति नहीं मिलेगी। इसलिये सुनाया था कि जो सोचना है वही कहना है, जो कहना है वही करना है। सोचना, कहना, करना — तीनों ही एक होना चाहिये। लेकिन वर्तमान समय कई ऐसे बच्चे हैं जो सोचते बहुत हैं, कहते भी बहुत हैं लेकिन करने के समय कम रह जाते हैं। इसलिये कहा था — इस भट्ठी में पका कर जाना अर्थात् पक्का वायदा करके जाना है। पहले तो, वायदा करने लिये हिम्मत है कि हिम्मत धारण करेंगे? जो हिम्मतवान बच्चे हैं उनकी निशानी क्या है? वह

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कभी हार नहीं खाते । अगर आप सभी हिम्मतवान हैं तो जरूर आज से कभी हारेंगे नहीं । बहुत समय से जो विजयी बनते हैं वही विजय-माला के मणके बनते हैं । अगर विजय माला में पिरोने चाहते हैं तो विजयी बनने का परिवर्तन लाना पड़ेगा । परिवर्तन में मुख्य-मुख्य बातें चेक करनी हैं । बहुत सहज है । दो शब्द याद रखना है । एक तो आकर्षण मूर्ति बनना है और दूसरा हर्षित मुख । आकर्षण करने वाला है रूह । रूहानी स्थिति में ही एक-दो को आकर्षण कर सकेंगे । अगर यह दोनों बातें अपने में धारण कर लीं तो सम्पूर्ण विजयी हैं ही । मैजारिटी बच्चों में मुख्य कौनसी बात है, वह भी आज सुना रहे हैं । निश्चयबुद्धि तो हो, तब तो यहाँ आये हो । बाप में निश्चय है, ज्ञान में भी निश्चय है लेकिन अपने में निश्चय कहाँ-कहाँ डगमगा देता है । मुख्य कमी यह है जो कंट्रोलिंग-पावर नहीं है । यह न होने कारण समझते हुए, सोचते हुए, अपने को महसूस करते हुए भी फिर वही बात कर लेते हैं । इसका कारण यह है । कंट्रोलिंग पावर की आवश्यकता है । मन्सा में, वाचा में और कर्मणा में भी और साथ-साथ लौकिक सम्बन्धियों अथवा दैवी परिवार के सम्बन्ध में आने में भी कहाँ तक क्या करना है, क्या कहना है, क्या नहीं कहना है और जो नहीं करना है उसको कंट्रोल करना – यह पूरी पावर न होने कारण सफल नहीं होते हो । तो कंट्रोलिंग पावर की कमी कैसे मिटावेंगे ? कई बार आप गोपों ने देखा होगा – कोई भी चीज को कहाँ बहुत जोर से कंट्रोल करना होता है तो कंट्रोल करने लिये भी कई चीजों को हल्का छोड़ना पड़ता है । पतंग कब उड़ाया है ? पतंग को कंट्रोल करने और ऊंचा उड़ाने लिये क्या किया जाता है ? यह भी ऐसे है । अपनी बुद्धि को कंट्रोल करने के लिये कई बातों को हल्का करना पड़ता है । सभी से हल्की क्या चीज होती है ? आत्मा (बिन्दी) । तो जब अपने को कंट्रोल करना हो तो अपने को बिल्कुल हल्का बिन्दु रूप में स्थित करना है । कंट्रोल करने लिये फुलस्टाप करना होता है । तो आप भी बिन्दी लगा दो । जो बीत चुका उसको बिल्कुल भूल जाओ । देखा, किया लेकिन फिर एकदम उसको समाप्त कर दो । समाप्त करना अर्थात् बिन्दी, फुलस्टाप करना । कोमा (,) लगाने आता है, या क्वेश्चन (?) करने भी आता है, अजब की निशानी (!) भी लगाने आती है, लेकिन फुलस्टाप

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

लगाना नहीं आता है । कागज पर निशानियां लगाना तो सहज है । लेकिन अपने कर्मों के ऊपर यह निशानियां लगाना – इसमें मुश्किल क्यों ? कागज पर निशानियां लगाते हो ना । और जो निशानी जहाँ लगानी है वहाँ ही लगती है, इसको कहा जाता हैं प्रवीण । अगर कोमा के बदली कोई फुलस्टाप लिख दे तो प्रवीण नहीं कहा जायेगा । जहाँ क्वेश्चन करना है वहाँ क्वेश्चन न करे तो भी प्रवीण नहीं कहेंगे । यहाँ भी क्वेश्चन किस बात में, अजब किस बात में, फुलस्टाप किस बात में देना है – यह पूरी पहचान न होने कारण प्रवीण नहीं बनते हैं । अब समझा, कंट्रोल क्यों नहीं कर पाते ? क्योंकि उस समय ज्ञान का पैट्रोल कम हो जाता है । अगर ज्ञान का पैट्रोल है तो कंट्रोल है । इसलिये अपने बुद्धि रूपी टंकी में पैट्रोल को जमा रखो । माइनस और प्लस का हिसाब सीखे हो ? और बैलेन्स निकालना भी सीखे हो ? ऐसे नहीं – सिर्फ जोड़ किया, कट किया । लेकिन जमा करना भी सीखो । अगर जमा नहीं होगा तो न औरों को दे सकेंगे, न अपने को आगे बढ़ा सकेंगे । जमा किया जाता है दूसरों को देने के लिये, अपनी आवश्यकता के समय काम में लाने के लिये । तो यह भी देखना है – कितना जमा किया है, सिर्फ कमाना और खाना है वा जमा भी होता है ? कब हिसाब किया है ? २५ प्रतिशत जमा तो बहुत कम है । (अगर २५ प्रतिशत जमा किया है तो अभी के हिसाब से बाप-दादा भी कौनसी ज़िम्मेवारी देंगे ? (यहाँ से जास्ती याद कितने दिनों में
कट a) करेंगे ? तीव्र पुरुषार्थी कभी विनाश की डेट का नहीं सोचते । बहुत समय से अगर सम्पूर्णता के संस्कार होंगे तो अन्त में भी सम्पूर्ण हो सकेंगे । अगर अंत में बनेंगे तो फिर बापदादा भी अंत में थोड़ा दे देंगे । जो अभी करते हैं उनको बापदादा भी सतयुग के आरंभ में कहते – 'आओ !' बाप-दादा तो हरेक रत्न में उम्मीद रखते हैं कि यह अनेकों को उम्मीदवार बनायेंगे । जो अनेकों के उम्मीदवार हैं वह अपने लिये फिर अंत की उम्मीद कैसे रख सकते हैं । अच्छा !

इस ग्रुप की भट्ठी भी समाप्त हुई । समाप्त हुई वा आरंभ हुई ? इस ग्रुप का इग्ज़ैमिन (परीक्षा) नहीं लिया है । जो इग्ज़ैम्पल देखा उसको सदा काल के लिये कायम रखते आयेंगे । तो फिर इम्तिहान लेंगे । कोई भी चीज़ को मज़बूत करना होता है तो क्या किया जाता है ? फाउन्डेशन मजबूत रखने के लिये

PDF Compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

गहराव की आवश्यकता होती है। जितना-जितना गहराई में जायेंगे उतना मज़बूती होगी। ऊपर-ऊपर से नींव लगाने से मजबूती नहीं होती। जितना गहराई से ज्ञान को धारण किया होगा, उतना ही अपनी मज़बूती लाई होगी। परिवर्तन तो सभी ने 'कुछ-न-कुछ' लाया ही है? लेकिन कुछ न कुछ क्यों कहते हैं। क्योंकि फाइनल सर्टिफिकेट प्रैक्टिकल लाने के बाद देंगे। अभी सर्टिफिकेट नहीं देंगे। अभी हर्षित होते हैं कि हरेक बच्चा उमंग-उत्साह से अपने पुरुषार्थ को आगे बढ़ाने में बहुत तत्पर है। लेकिन सर्टिफिकेट तब मिलेगा जब प्रैक्टिकल में रिजल्ट आउट होगी। ऐसे नहीं समझना कि भट्ठी समाप्त हुई, लेकिन आरंभ हुई है। अभी सुनना हुआ, फिर करना है। करने के बाद सर्टिफिकेट मिलेगा।

इस ग्रुप की मुख्य खूबी यह देखी कि एकता है। लेकिन एकता के साथ-साथ अब दूसरा शब्द भी एड करना है। एकता के साथ एकांतप्रिय बनना है। जैसे एकता में नम्बरवन हैं वैसे एकान्त में भी नम्बरवन आना है। यह धारण कर लो तो यह ग्रुप बहुतों से आगे जा सकता है। एकता के साथ एकान्तवासी कैसे बनें – यह भी अपने में भरना है। एकान्तप्रिय वह होगा जिसका अनेक तरफ से बुद्धि-योग टूटा हुआ होगा और एक का ही प्रिय होगा। एक-प्रिय होने कारण एक ही की याद में रह सकता। अनेक के प्रिय होने के कारण एक ही याद में रह नहीं सकता। अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ हो। एक तरफ जुटा हुआ हो अर्थात् 'एक के सिवाय दूसरा न कोई' – ऐसी स्थिति वाला जो होगा वह एकान्तप्रिय हो सकता है। नहीं तो एकान्त में बैठने का प्रयत्न करते हुए भी अनेक तरफ बुद्धि भटकेगी, एकान्त का आनंद अनुभव कर नहीं सकेंगे। सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनाएं एक से लेने वाला ही एकान्त-प्रिय हो सकता है। जब एक द्वारा सर्व रसनाएं प्राप्त हो सकती हैं। तो अनेक तरफ जाने की आवश्यकता ही क्या। लेकिन जो एक द्वारा सर्व रसनाओं को लेने के अभ्यासी नहीं होते वह अनेक तरफ रस लेने की कोशिश करते, तो फिर एक भी प्राप्ति नहीं होती। और एक बाप के साथ लगाने से अनेक प्राप्तियां होती हैं। सिर्फ 'एक' शब्द भी याद रखो तो उसमें सारा ज्ञान आ जाता, स्मृति भी आ जाती, सम्बन्ध भी आ जाता, स्थिति भी आ जाती। और साथ-साथ जो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

प्राप्ति होती है वह भी उस 'एक' शब्द से स्पष्ट हो जाती। एक की याद, स्थिति एकरस और ज्ञान भी सारा एक की याद का ही मिलता है। प्राप्ति भी जो होती है वह भी एक-रस रहती है। आज बहुत खुशी, कल गुम हो जाती – इसमें प्राप्ति नहीं होती। जो अतीन्द्रिय सुख मिलता है वह भी एकरस नहीं रहता। कभी बहुत, तो कभी कम। अब तो एकरस अवस्था में स्थित होने का पेपर देने लिये जा रहे हो। देखेंगे, पेपर में कितने मार्क्स लेते हैं। हमेशा यह कोशिश करो कि – हम औरों को करके दिखायें, हमारे कर्म और हमारी चलन औरों की पढ़ाई कराये। कोई भी बात में फेल न हों, इसके लिये सहज बात सुना रहे हैं। तो कोई भी बात में फेल न हों इसके लिये एक बात याद रखना – 'फालो फादर'। साकार रूप में जो करके दिखाया वह फालो करो तो कोई भी बात में फेल नहीं हो सकते। कहाँ भी जब फेल होने की बात सामने आये तो यही याद रखना कि फालो फादर कर रहा हूँ? जो इतने वर्ष साकार रूप में कर्म किये, वह एक एक सीन भी सामने आ जाता है। तो जब फालो फादर करेंगे तो जो भी कोई ऐसे कार्य होंगे तो वह करने में ब्रेक आ जायेगी, जज करेंगे – यह कर्म हम कर सकते हैं? फालो फादर। फादर कहने में दोनों ही आ जाते हैं। फालो फादर याद आने से फेल नहीं होंगे, फ्लालेस (दाग़ रहित) बन जायेंगे। बाप-दादा बच्चों को फ्लालेस बनाना चाहते हैं। माला में नजदीक लाने लिये यह सहज युक्ति बता रहे हैं। देखना, आप को सुनाई युक्ति आप से पहले और कोई प्रयोग न कर ले। बापदादा तो हरेक सितारे में उम्मीद रखते हैं। इसलिए कहते हैं उम्मीदवार सितारे।

विशेष स्नेह है तब तो ऐसे समय भी आये हैं। त्याग भी किया है ना। अपनी नींद का त्याग किया है, तो यह भी स्नेह दिखाया। बापदादा अभी स्नेह का रिटर्न देते हैं। अभी जाने के बाद रिजल्ट देखेंगे। जाते हो आने के लिये। जाना और आना। जाना तो है ही, लेकिन जाना है आने के लिये। जितना-जितना अव्यक्त स्थिति के अनुभवी होते जायेंगे उतना ही अव्यक्त मधुबन में आकर्षित हो आयेंगे। अब व्यक्त मधुबन नहीं है। अच्छा!

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2.5.89 ०० प्रातःक्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-बाप से करेन्ट लेनी है तो सर्विस में लगे रहो, जो बच्चे सब कुछ त्याग कर बाप की सर्विस में रहते हैं, वही प्यारे लगते हैं, दिल पर चढ़ते हैं" 2

प्रश्न :-बच्चों को स्थाई खुशी क्यों नहीं रहती, मुख्य कारण क्या है?

उत्तर:-याद के समय बुद्धि भटकती है, स्थिर बुद्धि न होने कारण खुशी नहीं रह सकती। माया के तूफान दीपकों को हैरान कर देते हैं। जब तक कर्म, अकर्म नहीं बनते हैं तब तक खुशी स्थाई नहीं रह सकती है। इसलिए बच्चों को यही मेहनत करनी है।

ओमशान्ति। जब ओमशान्ति कहते हैं तो बड़े हुल्लास से कहते हैं हम आत्मा शान्त स्वरूप है। अर्थ कितना सहज है। बाप भी कहेंगे ओमशान्ति। दादा भी कहेंगे ओमशान्ति। वह कहते हैं मैं परमात्मा हूँ। यह कहते हैं मैं आत्मा हूँ। तुम सब सितारे हो। सब सितारों का बाप भी चाहिए ना। गाया जाता है- सूर्य चांद और लकी सितारे। तुम बच्चे हो मोस्ट लकी सितारे। उनमें भी नम्बरवार है। जैसे रात को चन्द्रमा निकलता है। फिर सितारों में कोई डिम होते हैं, कोई बड़े तीखे होते हैं। कोई चन्द्रमा के आगे होते हैं। सितारे हैं ना। तुम भी ज्ञान सितारे हो। चमकता है भृकुटी के बीच में वन्डरफुल सितारा। बाप कहते हैं यह सितारे आत्मायें बड़ी वन्डरफुल है। एक तो इतनी छोटी बिन्दी है। जिसका कोई पता नहीं है। आत्मा ही शरीर से पार्ट बजाती है। यह बड़ा वन्डर है। तो तुम बच्चों में भी नम्बरवार है। कोई कैसे, कोई कैसे। बाप उनको बैठ याद करते हैं। जो सितारे अच्छे चमकते हैं, जो बहुत सर्विस करते हैं, उनको करेन्ट मिलती जाती है। तुम्हारी बैटरी भरती जाती है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए सर्च-लाइट मिलती है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप कहते हैं जो मेरे अर्थ सब कुछ त्याग सर्विस में लगे रहते हैं, वह बहुत प्यारे लगते हैं। दिल पर भी चढ़ते हैं। बाप दिल लेने वाला है ना। दिलवाला मन्दिर भी है ना। अब दिलवाला या दिल लेने वाला मन्दिर। किसकी दिल लेने वाला? तुमने देखा है ना। प्रजापिता ब्रह्मा बैठा है ना। जरूर उनमें शिवबाबा की प्रवेशता है। और फिर तुम देखते भी हो, ऊपर में स्वर्ग की स्थापना भी है। नीचे बच्चे तपस्या में बैठे हैं। यह तो छोटा माडल रूप में बनाया हुआ है। तो जो बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। बहुत मददगार हैं। महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे हैं ना। यह मन्दिर यादगार बहुत अच्छा एक्यूरेट बना हुआ है। तुम कहेंगे यह हमारा ही यादगार है। अभी तुमको रोशनी मिली है और कोई को भी ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है। भक्ति मार्ग में तो जो मनुष्यों को सुनाते हैं, सत2 करते जाते हैं। वास्तव में है झूठ, उसको सत समझते हैं। अब बाप जो सत्य है, वह बैठकर तुमको सत्य सुनाते हैं। जिससे तुम विश्व के मालिक बनते हो। बाप तो कुछ भी मेहनत नहीं करते हैं। सारे झाड़ का राज़ तुम्हारी बुद्धि में बैठ गया है। तुमको समझाते तो बहुत सहज है। परन्तु टाइम क्यों लगता है। नालेज वा दृष्टि लेने में टाइम नहीं लगता। टाइम लगता है पवित्र बनने में। मुख्य है याद की यात्रा। यहाँ तुम आते हो तो यहाँ अटेन्शन जास्ती होता है। याद की यात्रा में। घर में जाने से इतना नहीं रहता। यहाँ सब नम्बरवार है। कोई तो यहाँ बैठे होंगे बुद्धि में यही नशा होगा, हम बच्चे वह बाप है। बेहद का बाप और हम बच्चे बैठे हैं। (तुम बच्चे जानते हो बाप इस शरीर में आया हुआ है। दिव्य दृष्टि दे रहे हैं। सर्विस कर रहे हैं। तो उस एक को ही याद करना चाहिए। और कोई तरफ बुद्धि जानी नहीं चाहिए) सन्देशी पूरी रिपोर्ट दे सकती है। किसकी बुद्धि बाहर भटकती है। कोई क्या करते हैं। किसको झुटका आता है। सब बता सकती है। जो सितारे अच्छे सर्विसएबुल हैं, उन्हों को ही देखता रहता हूँ। बाप का लव है ना। स्थापना में मदद करते हैं। हूबहू कल्प पहले मिसल। यह राजधानी स्थापन हो रही है। अनेक बार हुई है। यह तो ड्रामा का चक्र चलता रहता है। इसमें फिकर की भी कोई बात नहीं रहती। बाबा के साथ है ना। तो संग का रंग लगता है। फिकर कम होता जाता है। यह तो ड्रामा बना हुआ है। बाप बच्चों के लिए स्वर्ग की राजधानी ले आये हैं। सिर्फ कहते हैं मीठे2 बच्चों पतित से पावन बनने के लिए बाप को याद करो। अब जाना है स्वीट होम। जिसके लिए ही तुम भक्ति मार्ग में माथा मारते हो। परन्तु एक भी जा नहीं सकते। अब बाप को याद करते रहो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। अल्फ और बे। बाप को याद करो और 84 का चक्र फिराओ। आत्मा को 84 के चक्र का ज्ञान हुआ है। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को कोई भी नहीं जानते हैं। तुम जानते हो तो भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। सुबह को उठकर तुम बुद्धि में यही रखो। अब हमने 84 का चक्र पूरा किया है, अब वापिस जाना है। इसलिए अब बाप को याद करना है तो तुम चक्रवर्ती बनेंगे। यह तो सहज है ना। परन्तु माया तुमको भुला देती है। माया के तूफान है ना। यह टीमकों को हैरान कर देती है। माया बड़ी दुस्तर है। इतनी शक्ति है तो बच्चों को भुला देती है। वह खुशी स्थाई नहीं रहती है। तुम बाप को याद करने बैठते हो। बैठते2 बुद्धि और तरफ चली जाती है। यह सब हैं गुप्त बातें। कितनी भी कोशिश करेंगे परन्तु याद कर नहीं सकेंगे। फिर कोई की बुद्धि भटक2 कर स्थिर हो जाती है, कोई झट से स्थिर हो जाते हैं, कोई को कितना भी माथा मारो तो भी बुद्धि में ठहरता नहीं। इसको माया की युद्ध कही जाती है। अर्म अकर्म बनाने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। वहाँ तो रावण राज्य ही नहीं। तो कर्म विकर्म भी नहीं होते। माया होती ही नहीं जो उल्टा कर्म कराये। रावण और राम का खेल है। आधाकल्प है रामराज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। दिन और रात। संगमयुग पर सिर्फ ब्राह्मण ही होते हैं। अब तुम ब्राह्मण समझते हो- रात पूरी हो दिन शुरू होता है। यह युद्ध वर्ण वाले थोड़े ही समझते हैं। मनुष्य तो बहुत आवाज से भक्ति आदि के गीत गाते हैं। तुमको तो जाना है आवाज से परे। तुम तो अपने बाप की ही याद में मस्त रहते हो। आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। आत्मा समझती है- अब बाप को याद करना है। भक्ति मार्ग में शिवबाबा, शिवबाबा तो करते आये हैं। शिव के मन्दिर में शिव को बाबा जरूर कहते हैं। ज्ञान कुछ भी नहीं। अब तुमको ज्ञान मिला है। यह शिवबाबा है, उनका यह चित्र है, यह तो लिंग ही समझते हैं। परन्तु समझते कुछ भी नहीं। अब तुमको तो ज्ञान मिला है। वह लिंग के ऊपर जाकर लोटी चढ़ाते हैं। अब बाप तो है निराकार। निराकार के ऊपर लोटी चढ़ायेंगे, वह क्या करेंगे। साकार हो तो स्वीकार भी करे। निराकार पर दूध आदि चढ़ायेंगे, वह क्या करेंगे। बाप कहते हैं दूध आदि जो चढ़ाते हो वह तुम ही पीते हो। भोग आदि भी तुम ही खाते हो। यहाँ तो मैं सम्मुख हूँ ना। आगे इनडायरेक्ट करते थे, अभी तो डायरेक्ट है। नीचे आकर पार्ट बजा रहे हैं। सर्चलाइट दे रहे हैं। बच्चे समझते हैं मधुबन में बाबा के पास जरूर आना चाहिए। वहाँ हमारी बैटरी अच्छी चार्ज होती है। घर में तो गोरखधन्धे आदि में अशान्ति ही अशान्ति लगी हुई है। इस समय सारे विश्व में अशान्ति है। तुम जानते हो अभी हम शान्ति स्थापन कर रहे हैं। योगबल से। बाकी राजाई मिलती है पढ़ाई से। कल्प पहले भी तुमने यह सुना था, अब भी सुनते हो। जो कुछ एक्ट होती है फिर भी होगी। बाप कहते हैं कितने बच्चे आश्चर्यवत भागन्ती हो गये। मुझ माशूक को इतना याद करते थे। अब मैं आया हूँ तो फिर छोड़कर चले जाते हैं। माया कैसा थप्पड़ लगा देती है। कोई बाबा को भी ड्रिल सिखलाते थे, डायरेक्शन देते थे- ऐसे2 करो। टीचर हो बैठते थे। हम समझते यह तो बहुत2 अच्छा नम्बर माला में आयेंगे। वह भी गुम हो गये। तो यह भी समझाना पड़े ना। हिस्ट्री तो बहुत बड़ी है। कृष्ण के चरित्र क्या होंगे। जन्म लिया और नर्स ले जाती है। यहाँ मा फिक शैडेड़ी कियड़ा आदि होता है। बाबा अनुभवी तो है ना। बाबा को अपनी सारी हिस्ट्री याद है। सिर पर टोपी, नंगे पांव दौड़ता था .... मुसलमान लोग भी बहुत प्यार करते थे। बहुत खातिरी करते थे। मास्टर का बच्चा आया जैसे गुरू का बच्चा आया। बाजरी का ढोढा खिलाते थे। यहाँ भी बाबा ने 15 दिन प्रोग्राम दिया था। ढोढा और छांछ खाने का। और कुछ भी नहीं बनता था। बीमार आदि सबके लिए यही बनता था। किसको कुछ भी हुआ नहीं। और ही बीमार बच्चे भी तन्दरूस्त हो गये। देखते थे- आसक्ति टूटी हुई है। यह नहीं होना चाहिए, या यह चाहिए। चाहता को चूहरा। जमादार। कहा जाता है। यहाँ तो बाप कहते हैं मांगने से मरना भला। बाप ही जानते हैं बच्चों को क्या देना है। जो कुछ देना होगा वह खुद ही देंगे। यह सब ड्रामा बना हुआ है। बाबा ने तो पूछा था ना- बाप को जो बाप भी समझते हैं और बच्चा भी समझते हैं, वह हाथ उठायें। तो सबने हाथ उठाया। हाथ तो झट उठा देते हैं। जैसे बाबा पूछते हैं- लक्ष्मीनारायण

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कौन बनेंगे। तो झट हाथ उठायेंगे। यह पाइली कि बच्चा भी जरूर ऐड करते हैं, यह तो माँ बाप की बहुत सेवा करते हैं। 21जन्म का वर्सा देते हैं। बाप जब वानप्रस्थ में जाते हैं तो फिर बच्चों का फर्ज है बाप की सम्भाल करना। देह. जैसे सन्यासी बन जाते हैं। जैसे इनका लौकिक बाप था, वानप्रस्थ अवस्था हुई तो बोला .. हम जाकर बनारस में सतसंग करेंगे, हमको वहाँ ले चलो।। हिस्ट्री सुनाता है। तुम हो ब्राह्मण प्रजापिता ब्र0कु0कुमारियां। प्रजापिता ब्रह्मा है ग्रेट2ग्रेन्ड फादर। सबसे पहला पत्ता है मनुष्य सृष्टि का। इनको ज्ञान सागर नहीं कहा जाता। न ब्रह्मा विष्णु शंकर ही ज्ञान के सागर है। शिवबाबा वह है बेहद का बाप, तो उनसे वर्सा मिलना चाहिए ना। वह निराकार परमपिता परमात्मा कब कैसे आया, उनकी जयन्ती मनाते हैं। यह कोई को पता नहीं। यह तो गर्भ में नहीं आते हैं। समझते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। बहुत जन्मों के अन्त में वानप्रस्थ अवस्था में। मनुष्य जब सन्यास करते हैं तो उनकी वानप्रस्थ अवस्था कही जाती है। तो अब बाप तुमको कहते हैं बच्चे तुमने पूरे 84जन्म लिए, यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। हिसाब तो जानते हो ना। तो मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। कहाँ आकर बैठता हूँ। इनकी आत्मा जहाँ बैठी है, उनके बाजू में आकर बैठता हूँ। जैसे गुरू लोग अपने शिष्य को बाजू में गद्दी पर बिठाते हैं। इनका भी स्थान यहाँ है, मेरा भी यहाँ है। कहता हूँ हे आत्माओं-मामेकम् याद करो तो पाप विनाश हो जायेंगे। मनुष्य से देवता बनना है ना। यह है राजयोग। नई दुनिया के लिए जरूर राजयोग चाहिए। बाप कहते हैं मैं आया हूँ आदि सनातन देवी देवता धर्म का फाउन्डेशन लगाने। गुरूलोग अनेक हैं, सतगुरू एक है। वही सत्य है। बाकी जो सब झूठ है। तुम जानते हो एक है रूद्र माला, दूसरी है रूण्ड माला विष्णु की। उसके लिए तुम पुरूषार्थ करते हो। बाप को याद करो तो माला का दाना बनेंगे। जिस माला का तुम भक्ति मार्ग में सिमरण करते हो- परन्तु जानते नहीं कि यह माला किसकी है। ऊपर में फूल कौन है, फिर मेरू क्या है। दाने कौन हैं, जिसकी माला फेरते हैं। समझते कुछ नहीं। ऐसे ही राम2 कहते माला फेरते रहते हैं। राम2 कहने से समझते हैं सब राम ही राम हैं। सर्वव्यापी की बात का अन्धियारा इससे निकला है। माला का अर्थ भी नहीं जानते। कोई कहते 100 माला फेरो... इतनी माला फेरा। बाप तो अनुभवी है ना। 12 गुरू किये, आखरीन फिर डिसमिस कर दिया। 12 का अनुभव लिया। ऐसे भी बहुत होते हैं। अपना गुरू होते भी औरों के पास जाते हैं कि कुछ अनुभव मिल जाए। माला आदि फेरते हैं। है बिल्कुल अन्धकार। माला पूरी कर फूल को नमस्कार करते हैं। शिवबाबा फूल है ना। माला के दाने तुम अनन्य बच्चे बनते हो। तुम्हारा फिर सिमरण चलता है। उनको कुछ भी पता नहीं। वह तो कोई-राम कहते, कोई कृष्ण को याद करते, अर्थ कुछ भी नहीं। श्रीकृष्ण शरणम् कह देते। अब वह तो सतयुग का प्रिन्स था। उनकी शरण कैसे लेंगे। शरण तो बाप की ली जाती है। तुम ही पूज्य फिर पुजारी बनते हो। 84जन्म ले पतित बने हो तो शिवबाबा को कहते हैं हे फूल हमको भी आपसमान बनाओ। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :- (1) चाहना चुहरी है, इसलिए किसी भी प्रकार की चाहना नहीं रखनी है। आसक्ति खत्म कर देनी है। बाबा जो खिलाये.. तुम्हें डायरेक्शन है, मांगने से मरना भला।

(2) बाप की सर्चलाइट लेने के लिए एक बाप से सच्चा लव रखना है। बुद्धि में नशा रहे कि हम बच्चे हैं, वह बाप है। उनकी सर्चलाइट से हमें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"मीठे बच्चे – बाप से करेन्ट लेनी है तो सर्विस में लगे रहो, जो बच्चे सब कुछ त्याग बाप की सर्विस में रहते हैं वही प्यारे लगते हैं, दिल पर चढ़ते हैं"

प्रश्न:- बच्चों को स्थाई खुशी क्यों नहीं रहती, मुख्य कारण क्या है?
उत्तर:- याद के समय बुद्धि भटकती है, स्थिर बुद्धि न होने कारण खुशी नहीं रह सकती। माया के तूफ़ान दीपकों को हैरान कर देते हैं। जब तक कर्म, अकर्म नहीं बनते हैं तब तक खुशी स्थाई नहीं रह सकती है। इसलिए बच्चों को यही मेहनत करनी है।

ओम् शान्ति। जब ओम् शान्ति कहते हैं तो बड़े हुल्लास से कहते हैं हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं। अर्थ कितना सहज है। बाप भी कहेंगे ओम् शान्ति। दादा भी कहेंगे ओम् शान्ति। वह कहते हैं मैं परमात्मा हूँ, यह कहते मैं आत्मा हूँ। तुम सब सितारे हो। सब सितारों का बाप भी चाहिए ना। गाया जाता है सूर्य, चांद और लकी सितारे। तुम बच्चे हो मोस्ट लकी सितारे। उनमें भी नम्बरवार हैं। जैसे रात को चन्द्रमा निकलता है फिर सितारों में कोई डिम होते हैं, कोई बड़े तीखे होते हैं। कोई चन्द्रमा के आगे होते हैं। सितारे हैं ना। तुम भी ज्ञान सितारे हो। चमकता है भ्रकुटी के बीच में वन्डरफुल सितारा। बाप कहते हैं यह सितारे (आत्मायें) बड़े वन्डरफुल हैं। एक तो इतनी छोटी बिन्दी है। जिसका कोई को पता नहीं है। आत्मा ही शरीर से पार्ट बजाती है। यह बड़ा वन्डर है। तो तुम बच्चों में भी नम्बरवार हैं। कोई कैसे, कोई कैसे। बाप उनको बैठ याद करते हैं जो सितारे अच्छे चमकते हैं, जो बहुत सर्विस करते हैं, उनको करेन्ट मिलती जाती है। तुम्हारी बैटरी भरती जाती है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए सर्च लाइट मिलती है नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। बाप कहते हैं जो मेरे अर्थ सब कुछ त्याग सर्विस में लगे रहते हैं, वह बहुत प्यारे लगते हैं। दिल पर भी चढ़ते हैं। बाप दिल लेने वाला है ना। दिलवाला मन्दिर भी है ना। अब दिलवाला या दिल लेने वाला मन्दिर। किसकी दिल लेने वाला? तुमने देखा है ना। प्रजापिता ब्रह्मा बैठा है ना। जरूर उनमें शिवबाबा की प्रवेशता है और फिर तुम देखते भी हो–ऊपर में स्वर्ग की स्थापना भी है, नीचे बच्चे तपस्या में बैठे हैं। यह तो छोटा मॉडल रूप में बनाया हुआ है। तो जो बहुत अच्छी सर्विस करते हैं, बहुत मददगार हैं। महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे हैं ना। यह मन्दिर यादगार बहुत अच्छा एक्यूरेट बना हुआ है। तुम कहेंगे यह हमारा ही यादगार है। अभी तुमको रोशनी मिली है और कोई को भी ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है। भक्ति मार्ग में तो जो मनुष्यों को सुनाते हैं, सत सत करते जाते हैं। वास्तव में है झूठ, उसको सत समझते हैं। अब बाप जो टुथ हैं, वह बैठकर तुमको टुथ सुनाते हैं, जिससे तुम विश्व के मालिक बनते हो। बाप तो कुछ भी मेहनत नहीं कराते हैं। सारे झाड़ का राज़ तुम्हारी बुद्धि में बैठ गया है। तुमको समझाते तो बहुत सहज हैं। परन्तु टाइम क्यों लगता है? नॉलेज वा वर्सा लेने में टाइम नहीं लगता। टाइम लगता है पवित्र बनने में। मुख्य है याद की यात्रा। यहाँ तुम आते हो तो यहाँ अटेन्शन जास्ती होता है याद की यात्रा में। घर में जाने से इतना नहीं रहता। यहाँ

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDF

सब नम्बरवार हैं। कोई तो यहाँ बैठे होंगे, बुद्धि में यही नशा होगा—हम बच्चे, वह बाप है। बेहद का बाप और हम बच्चे बैठे हैं। तुम बच्चे जानते हो बाप इस शरीर में आया हुआ है। दिव्य दृष्टि दे रहे हैं। सर्विस कर रहे हैं। तो उस एक को ही याद करना चाहिए। और कोई तरफ बुद्धि जानी नहीं चाहिए। सन्देशी पूरी रिपोर्ट दे सकती है—किसकी बुद्धि बाहर भटकती है, कौन क्या करते हैं, किसको झुटका आता है, सब बता सकती है।

जो सितारे अच्छे सर्विसएबुल हैं, उन्हों को ही देखता रहता हूँ। बाप का लव है ना। स्थापना में मदद करते हैं। हूबहू कल्प पहले मिसल यह राजधानी स्थापन हो रही है, अनेक बार हुई है। यह तो ड्रामा का चक्र चलता रहता है। इसमें फ़िक्र की भी कोई बात नहीं रहती। बाबा के साथ हैं ना। तो संग का रंग लगता है। फ़िक्र कम होती जाती है। यह तो ड्रामा बना हुआ है। बाप बच्चों के लिए स्वर्ग की राजधानी ले आये हैं। सिर्फ कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों, पतित से पावन बनने के लिए बाप को याद करो। अब जाना है स्वीट होम। जिसके लिए ही तुम भक्ति मार्ग में माथा मारते हो। परन्तु एक भी जा नहीं सकते। अब बाप को याद करते रहो और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। अल्फ और बे। बाप को याद करो और 84 का चक्र फिराओ। आत्मा को 84 के चक्र का ज्ञान हुआ है। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को कोई भी नहीं जानते हैं। तुम जानते हो सो भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। सुबह को उठकर तुम बुद्धि में यही रखो—अब हमने 84 का चक्र पूरा किया है, अब वापिस जाना है। इसलिए अब बाप को याद करना है तो तुम चक्रवर्ती बनेंगे। यह तो सहज है ना। परन्तु माया तुमको भुला देती है। माया के तूफ़ान हैं ना, वह दीपकों को हैरान कर देते हैं। माया बड़ी दुस्तर है। इतनी शक्ति है जो बच्चों को भुला देती है। वह खुशी स्थाई नहीं रहती है। तुम बाप को याद करने बैठते हो, बैठे-बैठे बुद्धि और तरफ चली जाती है। यह सब हैं गुप्त बातें। कितनी भी कोशिश करेंगे परन्तु याद कर नहीं सकेंगे। फिर कोई की बुद्धि भटक-भटक कर स्थिर हो जाती है, कोई फट से स्थिर हो जाते हैं, कोई से तो कितना भी माथा मारो तो भी बुद्धि में ठहरता नहीं। इसको माया की युद्ध कहा जाता है। कर्म, अकर्म बनाने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। वहाँ तो रावण राज्य ही नहीं तो कर्म-विकर्म भी नहीं होते। माया होती ही नहीं जो उल्टा कर्म कराये। रावण और राम का खेल है। आधाकल्प है राम राज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। दिन और रात। संगमयुग पर सिर्फ ब्राह्मण ही होते हैं। अब तुम ब्राह्मण समझते हो रात पूरी हो दिन शुरू होना है। वह शूद्र वर्ण वाले थोड़ेही समझते हैं।

मनुष्य तो बहुत आवाज़ से भक्ति आदि के गीत गाते हैं। तुमको तो जाना है आवाज़ से परे। तुम तो अपने बाप की ही याद में मस्त रहते हो। आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। आत्मा समझती है अब बाप को याद करना है। भक्ति मार्ग में शिवबाबा-शिवबाबा तो करते आये हैं। शिव के मन्दिर में शिव को बाबा जरूर कहते हैं। ज्ञान कुछ भी नहीं। अब तुमको ज्ञान मिला है। वह शिवबाबा है, उनका यह चित्र है, वह तो लिंग ही समझते हैं। अब तुमको तो ज्ञान मिला है। वह लिंग के ऊपर जाकर लोटी चढ़ाते हैं। अब बाप तो है

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

निराकार। निराकार के ऊपर लोटी चढ़ायेंगे, वह क्या करेंगे! साकार हो तो स्वीकार भी करे। निराकार पर दूध आदि चढ़ायेंगे, वह क्या करेंगे! बाप कहते हैं दूध आदि जो चढ़ाते हो वह तुम ही पीते हो, भोग आदि भी तुम ही खाते हो। यहाँ तो मैं सम्मुख हूँ ना। आगे इनडायरेक्ट करते थे, अभी तो डायरेक्ट है, नीचे आकर पार्ट बजा रहे हैं। सर्चलाइट दे रहे हैं। बच्चे समझते हैं मधुबन में बाबा के पास जरूर आना चाहिए। वहाँ हमारी बैटरी अच्छी चार्ज होती है। घर में तो गोरखधन्धे आदि में अशान्ति ही अशान्ति लगी हुई है। इस समय सारे विश्व में अशान्ति है। तुम जानते हो अभी हम शान्ति स्थापन कर रहे हैं योगबल से। बाकी राजाई मिलती है पढ़ाई से। कल्प पहले भी तुमने यह सुना था, अब भी सुनते हो। जो कुछ एक्ट होती है फिर भी होगी। बाप कहते हैं कितने बच्चे आश्चर्यवत् भागन्ती हो गये। मुझ माशूक को इतना याद करते थे। अब मैं आया हूँ तो फिर छोड़कर चले जाते हैं। माया
a) कैसा थप्पड़ लगा देती है। बाबा अनुभवी तो है ना! बाबा को अपनी सारी हिस्ट्री याद है। सिर पर टोपी, नंगे पांव दौड़ता था... मुसलमान लोग भी बहुत प्यार करते थे। बहुत ख़ातिरी करते थे। मास्टर का बच्चा आया जैसे गुरु का बच्चा आया। बाजरी का ढोढा खिलाते थे। यहाँ भी बाबा ने 15 दिन प्रोग्राम दिया था ढोढा और छांछ खाने का। और कुछ भी नहीं बनता था। बीमार आदि सबके लिए यही बनता था। किसको कुछ भी हुआ नहीं। और ही बीमार बच्चे भी तन्दुरूस्त हो गये। देखते थे आसक्ति टूटी हुई है! यह नहीं होना चाहिए या यह चाहिए। चाहना को चुहरा (जमादार) कहा जाता है। यहाँ तो बाप कहते हैं मांगने से मरना भला। बाप ही जानते हैं–बच्चों को क्या देना है। जो कुछ देना होगा वह खुद ही देंगे। यह सब ड्रामा बना हुआ है।

बाबा ने तो पूछा था ना बाप को जो बाप भी समझते हैं और बच्चा भी समझते हैं, वह हाथ उठायें। तो सबने हाथ उठाया। हाथ तो झट उठा देते हैं। जैसे बाबा पूछते हैं लक्ष्मी-नारायण कौन बनेंगे? तो झट हाथ उठायेंगे। यह पारलौकिक बच्चा भी जरूर एड करते हैं, यह तो माँ-बाप की बहुत सेवा करते हैं। 21 जन्म का वर्सा देते हैं। बाप जब वानप्रस्थ में जाते हैं तो फिर बच्चों का फ़र्ज है बाप की सम्भाल करना। वह जैसे सन्यासी बन जाते हैं। जैसे इनका लौकिक बाप था, वानप्रस्थ अवस्था हुई तो बोला हम जाकर बनारस में सतसंग करेंगे, हमको वहाँ ले चलो। (हिस्ट्री सुनाना) तुम हो ब्राह्मण प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियां। प्रजापिता ब्रह्मा है ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर। सबसे पहला पत्ता है मनुष्य सृष्टि का। इनको ज्ञान सागर नहीं कहा जाता। न ब्रह्मा-विष्णु-शंकर ही ज्ञान के सागर हैं। शिवबाबा वह है बेहद का बाप, तो उनसे वर्सा मिलना चाहिए ना। वह निराकार परमपिता परमात्मा कब, कैसे आया, उनकी जयन्ती मनाते हैं। यह कोई को पता नहीं। यह तो गर्भ में नहीं आते हैं। समझाते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ, बहुत जन्मों के अन्त में वानप्रस्थ अवस्था में। मनुष्य जब सन्यास करते हैं तो उनकी वानप्रस्थ अवस्था कही जाती है। तो अब बाप तुमको कहते हैं–बच्चे, तुमने पूरे 84 जन्म लिए, यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। हिसाब तो जानते हो ना। तो मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। कहाँ आकर बैठता हूँ। इनकी आत्मा जहाँ बैठी है, उनके बाजू

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

में आकर बैठता हूँ। जैसे गुरू लोग अपने शिष्य को बाजू में गद्दी पर बिठाते हैं। इनका भी स्थान यहाँ है, मेरा भी यहाँ है। कहता हूँ हे आत्माओं, मामेकम् याद करो तो पाप विनाश हो जायेंगे। मनुष्य से देवता बनना है ना। यह है राजयोग। नई दुनिया के लिए जरूर राजयोग चाहिए। बाप कहते हैं मैं आया हूँ आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन लगाने। गुरु लोग अनेक हैं, सतगुरु एक है। वही सत्य है। बाकी तो सब झूठ हैं।

तुम जानते हो एक है रूद्र माला, दूसरी है वैजयन्ती माला विष्णु की। उसके लिए तुम पुरूषार्थ करते हो। बाप को याद करो तो माला का दाना बनेंगे। जिस माला का तुम भक्ति मार्ग में सिमरण करते हो परन्तु जानते नहीं हो कि यह माला किसकी है, ऊपर में फूल कौन है, फिर मेरू क्या है, दाने कौन हैं? जिसकी माला फेरते हैं, समझते कुछ नहीं। ऐसे ही राम-राम कहते माला फेरते रहते हैं। राम-राम कहने से समझते हैं सब राम ही राम हैं। सर्वव्यापी की बात का अन्धियारा इससे निकला है। माला का अर्थ ही नहीं जानते। कोई कहते 100 माला फेरो.. इतनी माला फेरो। बाप तो अनुभवी है ना। 12 गुरू किये, 12 का अनुभव लिया। ऐसे भी बहुत होते हैं, अपना गुरू होते भी फिर औरों के पास जाते हैं कि कुछ अनुभव मिल जाए। माला आदि फेरते हैं। है बिल्कुल अन्धश्रद्धा। माला पूरी कर फूल को नमस्कार करते हैं। शिवबाबा फूल है ना। माला के दाने तुम अनन्य बच्चे बनते हो। तुम्हारा फिर सिमरण चलता है। उनको कुछ भी पता नहीं। वह तो कोई राम कहते, कोई कृष्ण को याद करते, अर्थ कुछ भी नहीं। श्रीकृष्ण शरणम् कह देते। अब वह तो सतयुग का प्रिन्स था। उनकी शरण कैसे लेंगे। शरण तो बाप की ली जाती है। तुम ही पूज्य फिर पुजारी बनते हो। 84 जन्म ले पतित बने हो तो शिवबाबा को कहते हैं हे फूल, हमको भी आपसमान बनाओ। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. किसी भी प्रकार की चाहना नहीं रखनी है। आसक्ति ख़त्म कर देनी है। बाबा जो खिलाये... तुम्हें डायरेक्शन है, मांगने से मरना भला।

२. बाप की सर्चलाइट लेने के लिए एक बाप से सच्चा लव रखना है। बुद्धि में नशा रहे कि हम बच्चे हैं, वह बाप है। उनकी सर्चलाइट से हमें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है।

वरदान:- परमात्म लव में लीन होने वा मिलन में मग्न होने वाले सच्चे स्नेही भव

स्नेह की निशानी गाई जाती है - कि दो होते भी दो न रहें लेकिन मिलकर एक हो जाएं, इसको ही समा जाना कहते हैं। भक्तों ने इसी स्नेह की स्थिति को समा जाना वा लीन होना कह दिया है। लव में लीन होना - यह स्थिति है लेकिन स्थिति के बदले उन्होंने आत्मा के अस्तित्व को सदा के लिए समाप्त होना समझ लिया है। आप बच्चे जब बाप के वा रूहानी माशूक के मिलन में मग्न हो जाते हो तो समान बन जाते हो।

स्लोगन:-

अन्तर्मुखी वह है जो व्यर्थ संकल्पों से मन का मौन रखता है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

21.4.89 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-बाप आये है सारी दुनिया का हाहाकार मिटाकर, जयजयकार करने, पुरानी दुनिया में है हाहाकार, नई दुनिया में है जयजयकार"

प्रश्न:-कौन सा ईश्वरीय नियम है जो गरीब ही बाप का पूरा वर्सा लेते, साहूकार नहीं ले पाते? उत्तर:-ईश्वरीय नियम है-पूरा बेगर बनो। जो कुछ भी है उसे भूल जाओ। जो गरीब बच्चे सहज ही भूल जाते है परन्तु साहूकार जो अपने को स्वर्ग में समझते हैं, उनकी बुद्धि से कुछ भूलता नहीं। इसलिए जिनको धन, दौलत, मित्र सम्बन्धी याद रहते वह सच्चे योगी बन ही नहीं सकते है। उन्हे स्वर्ग में ऊँच पद नहीं मिल सकता।

ओमशान्ति। मीठे2 निश्चयबुद्धि बच्चे तो अच्छी रीति जानते है-उन्हों को पक्का निश्चय है कि बाप आया है। सारी दुनिया का झगड़ा मिटाने। जो सयाने समझदार बच्चे है, वह जानते है-इस तन में बाप आये हुए है, जिसका नाम भी है शिवबाबा। क्यों आये है? हाहाकार को मिटाकर जयजयकार कराने। मृत्युलोक में कितने झगड़े आदि है। सबको हिसाब किताब चुक्तू कर जाना है। अमरलोक में झगड़े की बात नहीं। यहाँ कितना हंगामा। हाहाकार लगा हुआ है। कितनी कोर्ट, जज आदि है। मारामारी लगी हुई है। विलायत आदि में भी जहाँ देखो हाहाकार है। सारी दुनिया में खिटपिट बहुत है। इसको कहा जाता है पुरानी तमोप्रधान दुनिया। किचड़ा ही किचड़ा है। जंगल ही जंगल है। यह एक बेहद का बाप सब कुछ मिटाने के लिए आये है। अभी बच्चो को बहुत सयाना समझदार बनना है। अगर बच्चो में भी लड़ाई झगड़ा होता रहेगा-तो बाप के मददगार कैसे बनेंगे। बाबा को तो बहुत मददगार बच्चे चाहिए। सयाने समझू जिनमें कोई खिट2 न हो। यह भी बच्चे समझते है यह पुरानी दुनिया है। अनेक धर्म है। तमोप्रधान विशश वर्ल्ड है। सारी दुनिया पतित है। पतित पुरानी दुनिया में झगड़े ही झगड़े है। इन सबको मिटाने, जयजयकार कराने बाप आते है। हर एक जानते हैं-इस दुनिया में कितनी दुःख और अशान्ति है। इसलिए चाहते है विश्व में शान्ति हो। अब यह तो विकारी लोग है। वह कैसे विश्व में शान्ति करेंगे। बेहद के बाप को ठिक्कर भित्तर में लगा दिया है। यह भी खेल है। तो बाप बच्चों को समझाते है, अब खड़े हो जाओ। बाप के मददगार बनो। बाप से अपना राज्य भाग्य लेना है। कम नहीं है। अथाह सुख है। बाप कहते है मीठे बच्चे ड्रामा अनुसार तुमको बेहद का बाप पदमापदम भाग्यशाली बनाने आया है। भारत में यह लक्ष्मी नारायण राज्य करते थे। भारत स्वर्ग था। स्वर्ग को ही कहा जाता है वन्डर आफ वर्ल्ड। त्रेता को भी नहीं कहेंगे। ऐसे स्वर्ग में आने का बच्चों को पुरुषार्थ करना चाहिए। पहले2 आना है। वन्डर देखने लिए लोग बहुत खुश होते है। चाहते भी है हम स्वर्ग में आयें। लक्ष्मी या नारायण बनें। विश्व के स्वर्ग के मालिक बनें। अभी इस पुरानी दुनिया में बहुत हाहाकार होनी है। रक्त की नदियां बहनी है। रक्त की नदियां के बाद होती है घी की नदियां। उनको कहते है क्षीरसागर। यहाँ भी बड़े तलाव बनाते है, फिर कोई दिन मुकरर होता है जो आकर उसमें दूध डालते हैं। उसमें फिर स्नान करते है। शिवलिंग पर भी दूध चढ़ाते है। सतयुग की भी एक महिमा है कि वहाँ घी की नदियां है, दूध की नदियां है। यह भी कोई नई बात नहीं है। हर5हजार वर्ष के बाद तुम विश्व के मालिक बनते हो। इस समय तुम गुलाम हो, फिर तुम बादशाह बनते हो। सारी प्रकृति तुम्हारी गुलाम बन जाती है। वहाँ कभी बेकायदे बरसात नहीं पड़ती, नदियां उछल नहीं खाती। कोई उपद्रव नहीं होता। यहाँ देखो कितने उपद्रव है। वहाँ पक्के वैष्णव रहते है। विकारी वैष्णव नहीं। यहाँ कोई वेजीटेरियन बना तो उनको वैष्णव कहते है। परन्तु नहीं, विकार से एक दो को बहुत दुःख देते है। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। यह भी गायन है गांवड़े का छोरा.. कृष्ण तो गांवड़े का हो नहीं सकता है। वह तो वैकुण्ठ का मालिक है। फिर 84जन्म लेते हैं। यह भी तुम अभी जानते हो कि भक्ति में मनुष्य कितने धक्के खाते है। और पैसे बरबाद करते है। बाबा पूछते है इतने तुमको पैसे दिये, राज्यभाग्य दिया, सब कहाँ गया? तुमको विश्व का मालिक बनाया फिर तुमने क्या किया? बाप तो ड्रामा को जानते है। नई दुनिया सो पुरानी दुनिया, पुरानी दुनिया सो नई दुनिया बनती है। यह चक्र है, जो कुछ पास्ट हुआ वह फिर रिपीट

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFC

होगा।बाप कहते है अभी थोड़ा समय है, पुरुषार्थ कर भविष्य के लिए जमा करो। पुरानी दुनिया का तब कुछ मिट्टी में मिल जाना है। साहूकार इस ज्ञान को लेंगे नहीं। बाप है गरीब निवाज। गरीब वहाँ साहूकार बनते है। साहूकार वहाँ गरीब बनते है।अभी तो पदमपति बहुत है।वह आयेंगे परन्तु गरीब बनेंगे। वह अपने को स्वर्ग में समझते है, वह बुद्धि से निकल नहीं सकता।यहाँ तो बाप कहते है सब कुछ भूल जाओ। खाली बेगर बन जाओ।आजकल तो फिलोसोफी आदि क्या2 निकाला है।जो राजा बैठता है वह अपनी भाषा चलाते है। विलायत की नकल करते है। अपना अक्ल तो है नहीं। तमोप्रधान है।अमेरिका आदि में विनाश की सामग्री में देखो कितना धन लगाते है। एरोप्लेन से बाम्बस आदि गिराते है, आग लगती है। बच्चे जानते है, बाप आते ही है विनाश और स्थापना कराने। तुम्हारे में भी समझाने वाले सब नम्बरवार है।सब एक जैसे निश्चयबुद्धि नहीं है। जैसे बाबा ने किया, बाबा को काली करना चाहिए। पुरानी दुनिया में यह पाई पैसे क्या करेंगे। आजकल कागज के नोट निकाले है।वहाँ तो सिक्के होंगे। सोने के महल बनते है। उनका वहाँ क्या मूल्य है। जैसे कि सब कुछ मुफ्त में है। बिल्कुल तमोप्रधान धरनी है।अभी तो पुरानी हो गई है।वह है सतोप्रधान नई दुनिया। वहाँ कोई a) गन्दी वस्तु होती नहीं। बिल्कुल नई जमीन है। तुम वहाँ शुद्ध घी खीर पीते हो परन्तु सूक्ष्मवतन में झाड आदि तो है नहीं। न मूलवतन में है। तुम वैकुण्ठ में जाते हो। वहाँ तुमको सब कुछ मिलता है। बुद्धि से काम लो- सूक्ष्मवतन में झाड होंगे नहीं। झाड तो धरनी पर होते है न कि आकाश में। अल नाम है ब्रह्म महतत्व परन्तु है पोलार। जैसे यह स्टार ठहरे हुए है- आकाश में। वैसे तुम बहुत छोटी2 आत्मायें ठहरी हुई हो। स्टार्स देखने में बड़े आते है। ऐसे नहीं कि ब्रह्म तत्व में कोई बड़ी2 आत्मायें होगी। यह बुद्धि से काम लेना है। विचार सागर मंथन करना है। तो आत्मायें भी अन्दर में ठहरती है । छोटी बिन्दी है। यह सब बातें तुमको धारण करनी है, तब किसको धारण करा सकेंगे। टीचर जरूर खुद जानते है तब तो औरों को पढ़ाते है।नहीं तो टीचर ही काहे का। परन्तु यहाँ टीचर्स भी नम्बरवार है। तुम बच्चे वैकुण्ठ को भी समझ सकते हो। ऐसे नहीं कि तुमने वैकुण्ठ नहीं देखा है। बहुत बच्चों ने साक्षात्कार किया है। वहाँ स्वयंवर जैसे होता है, क्या भाषा है, सब कुछ देखा है। पिछाड़ी में भी तुम साक्षात्कार करेंगे परन्तु करेंगे वही जो योगयुक्त होंगे। बाकी जिनको अपने मित्र सम्बन्धी, धन-दौलत याद आते रहेंगे वह क्या देखेंगे। सच्चे योगी हो अन्त तक रहेंगे।जिन्हों को बाप b) देख क्या होंगे। फूलों का ही बगीचा बनता है। बहुत तो 10-10 वर्ष रहकर भी चले जाते है। उनको कहेंगे अध के फूल। बड़ी अच्छी2 बच्चियां जो मम्मा बाबा के लिए भी डायरेक्शन ले आती थी, दिल करती थी, सुनते जास्ती दुर्गति में चली गई है यह बच्चियां भी जानती है और बापदादा भी जानते है कि माया बड़ी जबरदस्त है। यह है माया से गुप्त लड़ाई। गुप्त तूफान। बाबा कहते है माया तुमको बहुत हैरान करेगी। यह हार जीत का बना हुआ ड्रामा है। तुम्हारी कोई हथियारों से लड़ाई नहीं है। यह तो भारत का प्राचीन योग नामी-ग्रामी है। जिस योगबल से तुम यह बनते हो। बाहुबल से कोई विश्व की बादशाही ले न सके। खेल भी वन्डरफुल है। कहानी है दो बिल्ले लड़े मक्खन.... कहा भी जाता है सेकेण्ड में विश्व की बादशाही। बच्चियां सा० करती है। कहती है कृष्ण के मुख में माखन है। वास्तव में कृष्ण के मुख में नई दुनिया देखते है। योगबल से तुम विश्व की बादशाही रूपी माखन लेते हो। राजाई के लिए कितनी लड़ाई होती है। और कितने लड़ाई में खत्म होते है। इस पुरानी दुनिया का हिसाब किताब चुक्तू होना है। इस दुनिया की कोई भी चीज रहनी नहीं है। भक्ति तो बिल्कुल नहीं रहती। अब तुम भक्ति का नाम भी नहीं सुनते। हियर नो ईविल.. यह बन्दरों का एक चित्र बनाया है। आजकल तो मनुष्यों का भी बनाते है। आगे चीन की तरफ से हाथी दांत की चीजें आती थी। चूड़ियां भी कांच की पहनते थे। सतयुग में नाक-कान छेद करने की जरूरत नहीं। यहाँ तो माया ऐसी है, सबके नाक कान काट लेती है। तुम बच्चे अब स्वच्छ बनते हो। वहाँ नैचुरल ब्युटी रहती है। कोई चीज लगाने की जरूरत नहीं। यहाँ तो शरीर ही तमोप्रधान तत्वों से बनते है, इसलिए बीमारियां आदि होती है। वहाँ यह बातें होती

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नहीं। इसलिए गायन है अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप गोपियों से पूछो। अभी तुम्हारी आत्मा को बहुत खुशी है कि हमको बेहद का बाप पढ़ाकर नर से नारायण अथवा अमरपुरी का मालिक बनाते हैं। भक्त लोग इन बातों को नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी खुशी रहे और इन बातों का सिमरण करते रहें -ऐसे बच्चे बहुत थोड़े हैं। कितना अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। जो गायन है- द्रोपदी का, वह सब प्रैक्टिकल में हो रहा है। द्रोपदी ने क्यों पुकारा। यह मनुष्य नहीं जानते। बाप ने समझाया है तुम सब द्रोपदियाँ हो। ऐसे नहीं फीमेल सदैव फीमेल ही बनती है। दो बारी फीमेल बन सकती है जास्ती नहीं। मातायें पुकारती हैं-बाबा रक्षा करो, इनको दुशासन नंगन करते हैं। इसको कहा जाता है वैश्यालय। स्वर्ग को कहा जाता है शिवालय। वैश्यालय है रावण की स्थापना, शिवालय है शिवबाबा की स्थापना। और तुमको नालेज भी देते हैं। प्रभु को नालेजफुल भी कहा जाता है। ऐसे नहीं नालेजफुल माना सबके दिलों को जानने वाला। इनसे फायदा क्या। बाप कहते हैं यह सृष्टि के आदि मध्य अन्त की नालेज मेरे सिवाए कोई दे न सके। मैं ही तुमको बैठ पढ़ाता हूँ। ज्ञान सागर एक ही बाप है। वहाँ है भक्ति की प्रालब्ध। सतयुग त्रेता में भक्ति होती नहीं। पढ़ाई से ही राजधानी स्थापन हो रही है। प्रेजीडेंट आदि के देखो कितने वजीर हैं। एडवाइज़ देने के लिए वजीर रखते हैं। सतयुग में वजीर रखने की जरूरत नहीं। अब बाप तुमको अक्लमंद बनाते हैं। यह लक्ष्मी नारायण देखो कितने अक्लमंद थे। बेहद की बादशाही बाप से मिलती है। शिवजयन्ती बाप की मनाते हैं। जरूर शिवबाबा भारत में आकर विश्व का मालिक बनाकर गये हैं। लाखों वर्ष की बात नहीं है। कल की तो बात है। अच्छा ज्यादा क्या समझाऊँ। बाप कहते हैं मनमनाभव। वास्तव में यह पढ़ाई ईश्वर की है। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता-बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- ।1। बाप का पूरा मददगार बनने के लिए सयाना, समझदार बनना है। अन्दर कोई खिटपिट न हो।

।2। स्थापना और विनाश के कर्तव्य को देखते हुए पूरा निश्चयबुद्धि बन बाप को फालो करना है। पुरानी दुनिया से पाई पैसे की बुद्धि निकाल पूरा बेगर बनना है। मित्र-सम्बन्धी, धन-दौलत आदि सब कुछ भूल जाना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

7-4-04 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप आये हैं सारी दुनिया का हाहाकार मिटाकर, जयजयकार करने - पुरानी दुनिया में है हाहाकार, नई दुनिया में है जयजयकार"

प्रश्नः- कौन-सा ईश्वरीय नियम है जो गरीब ही बाप का पूरा वर्सा लेते, साहूकार नहीं ले पाते?

उत्तरः- ईश्वरीय नियम है – पूरा बेगर बनो, जो कुछ भी है उसे भूल जाओ। तो गरीब बच्चे सहज ही भूल जाते हैं परन्तु साहूकार जो अपने को स्वर्ग में समझते हैं उनकी बुद्धि में कुछ भूलता नहीं। इसलिए जिनको धन, दौलत, मित्र, सम्बन्धी याद रहते वह सच्चे योगी बन ही नहीं सकते हैं। उन्हें स्वर्ग में ऊंच पद नहीं मिल सकता।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे निश्चयबुद्धि बच्चे तो अच्छी रीति जानते हैं, उन्हों को पक्का निश्चय है कि बाप आया है सारी दुनिया का झगड़ा मिटाने। जो सयाने समझदार बच्चे हैं, वह जानते हैं इस तन में बाप आये हुए हैं, जिसका नाम भी है शिवबाबा। क्यों आये हैं? हाहाकार को मिटाकर जयजयकार कराने। मृत्युलोक में कितने झगड़े आदि हैं। सबको हिसाब-किताब चुक्तू कर जाना है। अमरलोक में झगड़े की बात नहीं। यहाँ कितना हंगामा (हाहाकार) लगा हुआ है। कितनी कोर्ट, जज आदि हैं। मारामारी लगी हुई है। विलायत आदि में भी देखो हाहाकार है। सारी दुनिया में खिटपिट बहुत है। इसको कहा जाता है पुरानी तमोप्रधान दुनिया। किचड़ा ही किचड़ा है। जंगल ही जंगल है। बेहद का बाप यह सब-कुछ मिटाने के लिए आये हैं। अभी बच्चों को बहुत सयाना समझदार बनना है। अगर बच्चों में भी लड़ाई-झगड़ा होता रहेगा तो बाप के मददगार कैसे बनेंगे। बाबा को तो बहुत मददगार बच्चे चाहिये--सयाने, समझू, जिनमें कोई खिट-खिट न हो। यह भी बच्चे समझते हैं यह पुरानी दुनिया है। अनेक धर्म हैं। तमोप्रधान विशश वर्ल्ड है। सारी दुनिया पतित है। पतित पुरानी दुनिया में झगड़े ही झगड़े हैं। इन सबको मिटाने, जयजयकार कराने बाप आते हैं। हर एक जानते हैं इस दुनिया में कितना दु:ख और अशान्ति है। इसलिए चाहते हैं विश्व में शान्ति हो। अब सारे विश्व में शान्ति कोई मनुष्य कैसे कर सकेंगे। बेहद के बाप को ठिक्कर-भित्तर में लगा दिया है। यह भी खेल है। तो बाप बच्चों को समझाते हैं, अब खड़े हो जाओ। बाप के मददगार बनो। बाप से अपना राज्य-भाग्य लेना है। कम नहीं, अथाह सुख है। बाप कहते हैं--मीठे बच्चे, ड्रामा अनुसार तुमको बेहद का बाप पद्मापद्म भाग्यशाली बनाने आया है। भारत में यह लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे। भारत स्वर्ग था। स्वर्ग को ही कहा जाता है वन्डर ऑफ वर्ल्ड। त्रेता को भी नहीं कहेंगे। ऐसे स्वर्ग में आने का बच्चों को पुरूषार्थ करना चाहिए। पहले-पहले आना है। बच्चे चाहते भी हैं हम स्वर्ग में आयें, लक्ष्मी वा नारायण बनें। अभी इस पुरानी दुनिया में बहुत हाहाकार होनी है। रक्त की नदियां बहनी हैं, रक्त की नदियों के बाद होती हैं घी की नदियां। उनको

कहते हैं क्षीरसागर। यहाँ भी बड़े तलाव बनाते हैं, फिर कोई दिन मुकरर होता है जो आकर उसमें दूध डालते हैं। उसमें फिर स्नान करते हैं। शिवलिंग पर भी दूध चढ़ाते हैं। सतयुग की भी एक महिमा है कि वहाँ घी, दूध की नदियाँ हैं। ऐसी कोई बात नहीं है। हर 5 हज़ार वर्ष के बाद तुम विश्व के मालिक बनते हो। इस समय तुम गुलाम हो, फिर तुम बादशाह बनते हो। सारी प्रकृति तुम्हारी गुलाम बन जाती है। वहाँ कभी बेकायदे बरसात नहीं पड़ती, नदियां उछल नहीं खाती। कोई उपद्रव नहीं होता। यहाँ देखो कितने उपद्रव हैं। वहाँ पक्के वैष्णव रहते हैं। विकारी वैष्णव नहीं। यहाँ कोई वेजीटेरियन बना तो उनको वैष्णव कहते हैं। परन्तु नहीं, विकार से एक-दो को बहुत दुःख देते हैं। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। यह भी गायन है गांवड़े का छोरा... कृष्ण तो गांवड़े का हो नहीं सकता है। वह तो बैकुण्ठ का मालिक है। फिर 84 जन्म लेते हैं।

यह भी तुम अभी जानते हो कि हमने भक्ति में कितने धक्के खाये, पैसे बरबाद किये। बाबा पूछते हैं—तुमको इतने पैसे दिये, राज्य भाग्य दिया, सब कहाँ गया? तुमको विश्व का मालिक बनाया फिर तुमने क्या किया? बाप तो ड्रामा को जानते हैं। नई दुनिया सो पुरानी दुनिया, पुरानी दुनिया सो नई दुनिया बनती है। यह चक्र है, जो कुछ पास्ट हुआ वह फिर रिपीट होगा। बाप कहते हैं अभी थोड़ा समय है, पुरूषार्थ कर भविष्य के लिए जमा करो। पुरानी दुनिया का सब-कुछ मिट्टी में मिल जाना है। साहूकार इस ज्ञान को लेंगे नहीं। बाप है गरीब निवाज़। गरीब वहाँ साहूकार बनते हैं। साहूकार वहाँ गरीब बनते हैं। अभी तो पद्मपति बहुत हैं। वह आयेंगे परन्तु गरीब बनेंगे। वह अपने को स्वर्ग में समझते हैं, वह बुद्धि से निकल नहीं सकता। यहाँ तो बाप कहते हैं सब कुछ भूल जाओ। खाली बेगर बन जाओ। आजकल तो किलोग्राम, किलोमीटर आदि क्या-क्या निकाला है। जो राजा गद्दी पर बैठता है वह अपनी भाषा चलाते हैं। विलायत की नकल करते हैं। अपना अक्ल तो है नहीं। तमोप्रधान हैं। अमेरिका आदि में विनाश की सामग्री में देखो कितना धन लगाते हैं। एरोप्लेन से बाम्ब्स आदि गिराते हैं, आग लगनी है। बच्चे जानते हैं, बाप आते ही हैं विनाश और स्थापना कराने। तुम्हारे में भी समझाने वाले सब नम्बरवार हैं। सब एक जैसे निश्चयबुद्धि नहीं हैं। जैसे बाबा ने किया, बाबा को फालो करना चाहिए। पुरानी दुनिया में यह पाई पैसे क्या करेंगे। आजकल काग़ज के नोट निकाले हैं। वहाँ तो सिक्के (मुहरें) होंगे। सोने के महल बनते हैं तो सिक्कों का वहाँ क्या मूल्य है। जैसेकि सब कुछ मुफ्त में है, सतोप्रधान धरनी है ना। अभी तो पुरानी हो गई है। वह है सतोप्रधान नई दुनिया। बिल्कुल नई जमीन है।

a) तुम सूक्ष्मवतन में जाते हो तो शूबीरस आदि पीते हो। परन्तु वहाँ झाड़ आदि तो हैं नहीं। न मूलवतन में हैं। जब तुम बैकुण्ठ में जाते हो तब वहाँ तुमको सब कुछ मिलता है। बुद्धि से काम लो, सूक्ष्मवतन में झाड़ होंगे नहीं। झाड़ तो धरनी पर होते हैं, न कि आकाश में। भल नाम है ब्रह्म महतत्व परन्तु है पोलार। जैसे यह स्टॉर ठहरे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हुए हैं आकाश में, वैसे तुम बहुत छोटी-छोटी आत्मायें ठहरी हुई हो। स्टॉर्स देखने में बड़े आते हैं। ऐसे नहीं कि ब्रह्म तत्व में कोई बड़ी-बड़ी आत्मायें होंगी। यह बुद्धि से काम लेना है। विचार सागर मंथन करना है। तो आत्मायें भी ऊपर में ठहरती हैं। छोटी बिन्दी हैं। यह सब बातें तुमको धारण करनी है, तब किसको धारण करा सकेंगे। टीचर जरूर खुद जानते हैं तब तो औरों को पढ़ाते हैं। नहीं तो टीचर ही काहे का। परन्तु यहाँ टीचर्स भी नम्बरवार हैं। तुम बच्चे बैकुण्ठ को भी समझ सकते हो। ऐसे नहीं कि तुमने बैकुण्ठ नहीं देखा है। बहुत बच्चों ने साक्षात्कार किया है। वहाँ स्वयंवर कैसे होता है, क्या भाषा है, सब कुछ देखा है। पिछाड़ी में भी तुम साक्षात्कार करेंगे परन्तु करेंगे वही जो योगयुक्त होंगे। बाकी जिनको अपने मित्र-सम्बन्धी, धन-दौलत याद आते रहेंगे वह क्या देखेंगे। सच्चे योगी ही अन्त तक रहेंगे, जिन्हों को बाप देख खुश
b) होंगे। फूलों का ही बगीचा बनता है। बहुत तो 10-15 वर्ष रहकर भी चले जाते हैं। उनको कहेंगे अक के फूल। बड़ी अच्छी-अच्छी बच्चियां जो मम्मा-बाबा के लिए भी डायरेक्शन ले आती थी, ड्रिल कराती थी, वे आज हैं नहीं। यह बच्चियां भी जानती हैं और बापदादा भी जानते हैं कि माया बड़ी जबरदस्त है। यह है माया से गुप्त लड़ाई। गुप्त तूफ़ान। बाबा कहते हैं माया तुमको बहुत हैरान करेगी। यह हार-जीत का बना हुआ ड्रामा है। तुम्हारी कोई हथियारों से लड़ाई नहीं है। यह तो भारत का प्राचीन योग नामीग्रामी है। जिस योगबल से तुम यह बनते हो। बाहुबल से कोई विश्व की बादशाही ले न सके। खेल भी वन्डरफुल है। कहानी है दो बिल्ले लड़े मक्खन..... कहा भी जाता है सेकण्ड में विश्व की बादशाही। बच्चियां साक्षात्कार करती हैं। कहती हैं कृष्ण के मुख में माखन है। वास्तव में कृष्ण के मुख में नई दुनिया देखते हैं। योगबल से तुम विश्व की बादशाही रूपी माखन लेते हो। राजाई के लिए कितनी लड़ाई होती है और कितने लड़ाई से खत्म होते हैं। इस पुरानी दुनिया का हिसाब-किताब चुक्तू होना है। इस दुनिया की कोई भी चीज रहनी नहीं है। बाप की श्रीमत है - बच्चे हियर नो ईविल, सी नो ईविल.... उन्होंने बन्दरों का एक चित्र बनाया है। आजकल तो मनुष्यों का भी बनाते हैं। आगे चीन की तरफ से हाथी दांत की चीजें आती थी। चूड़ियां भी कांच की पहनते थे। यहाँ तो जेवर आदि पहनने के लिए नाक कान आदि छेदते हैं, सतयुग में नाक-कान छेद करने की जरूरत नहीं। यहाँ तो माया ऐसी है जो सबके नाक-कान काट लेती है। तुम बच्चे अब स्वच्छ बनते हो। वहाँ नैचुरल ब्युटी रहती है। कोई चीज़ लगाने की जरूरत नहीं। यहाँ तो शरीर ही तमोप्रधान तत्वों से बनते हैं, इसलिए बीमारियां आदि होती हैं। वहाँ यह बातें होती नहीं। अभी तुम्हारी आत्मा को बहुत खुशी है कि हमको बेहद का बाप पढ़ाकर नर से नारायण अथवा अमरपुरी का मालिक बनाते हैं। इसलिए गायन है अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो। भक्त लोग इन बातों को नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी खुश रहे और इन बातों का सिमरण करते रहें—ऐसे बच्चे बहुत थोड़े हैं। अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जो गायन है द्रोपदी का, वह सब प्रैक्टिकल में हो रहा है। द्रोपदी ने क्यों पुकारा? यह मनुष्य नहीं जानते। बाप ने समझाया है–तुम सब द्रोपदियां हो। ऐसे नहीं, फीमेल सदैव फीमेल ही बनती है। दो बारी फीमेल बन सकती है, जास्ती नहीं। मातायें पुकारती हैं–बाबा रक्षा करो, हमको दुशासन विकार के लिए हैरान करते हैं, इसको कहा जाता है वेश्यालय। स्वर्ग को कहा जाता है शिवालय। वेश्यालय है रावण की स्थापना, शिवालय है शिवबाबा की स्थापना। और तुमको नॉलेज भी देते हैं। बाप को नॉलेजफुल भी कहा जाता है। ऐसे नहीं नॉलेजफुल माना सबके दिलों को जानने वाला। इनसे फायदा क्या! बाप कहते हैं यह सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज मेरे बिगर कोई दे न सके। मैं ही तुमको बैठ पढ़ाता हूँ। ज्ञान सागर एक ही बाप है। वहाँ है भक्ति की प्रालब्ध। सतयुग-त्रेता में भक्ति होती नहीं। पढ़ाई से ही राजधानी स्थापन हो रही है। प्रेजीडेंट आदि के देखो कितने वजीर हैं। एडवाइज़ देने के लिए वजीर रखते हैं। सतयुग में वजीर रखने की जरूरत नहीं। अब बाप तुमको अक्लमंद बनाते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण देखो कितने अक्लमंद थे। बेहद की बादशाही बाप से मिलती है। शिव-जयन्ती बाप की मनाते हैं। जरूर शिवबाबा भारत में आकर विश्व का मालिक बनाकर गये हैं। लाखों वर्ष की बात नहीं है। कल की तो बात है। अच्छा, ज्यादा क्या समझाऊं। बाप कहते हैं मन्मनाभव। वास्तव में यह पढ़ाई इशारे की है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप का पूरा मददगार बनने के लिए सयाना, समझदार बनना है। अन्दर कोई खिटपिट न हो।

२. स्थापना और विनाश के कर्तव्य को देखते हुए पूरा निश्चयबुद्धि बन बाप को फालो करना है। पुरानी दुनिया के पाई-पैसे से, बुद्धि निकाल पूरा बेगर बनना है। मित्र-सम्बन्धी, धन-दौलत आदि सब कुछ भूल जाना है।

वरदान:- सेवा के साथ-साथ बेहद के वैराग्य वृत्ति की साधना को इमर्ज करने वाले सफलता मूर्त भव

सेवा से खुशी वा शक्ति मिलती है लेकिन सेवा में ही वैराग्य वृत्ति भी खत्म हो जाती है। इसलिए अपने अन्दर वैराग्य वृत्ति को जगाओ। जैसे सेवा के प्लैन को प्रैक्टिकल में इमर्ज करते हो तब सफलता मिलती है। ऐसे अभी बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। चाहे कितने भी साधन प्राप्त हों लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की साधना मर्ज नहीं हो। साधन और साधना का बैलेन्स हो तब सफलता मूर्त बनेंगे।

स्लोगन:-

असम्भव को सम्भव बनाना ही परमात्म प्यार की निशानी है।

PDF Compression, OCR, Web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

22.1.87 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-श्रीमत पर न चलना यह नम्बरवन खामी है, श्रेष्ठ बनना है तो श्रीमत पर चलो"

(23)

प्रश्न:-किन बच्चों की बुद्धि से ज्ञान निकल जाता, गला ही घुट जाता है?

उत्तर:-जो अपवित्र बन जाते। पढ़ाई छोड़ बाप को फारकती दे देते उनकी बुद्धि से ज्ञान निकल जाता। जब तक निर्विकारी न बनें तब तक अविनाशी ज्ञान बुद्धि में बैठ नहीं सकता। बुद्धि का ताला खुलता ही है पवित्र बनने से। अपवित्र बने तो ज्ञान बुद्धि से निकल जायेगा। वह किसको सुना भी नहीं सकेंगे। पतित बनें तो खान-पान भी गंदा, मायावी मनुष्यों से जाकर मिल जाते। फिर गला ही घुट जाता। किसको सुना नहीं सकते।

गीत:-तुम्हें पाकर... ओमशान्ति। यह गीत कौन गा रहे हैं? जिन्होंने बाप से तीनों जहान की बादशाही ली थी है। आप से जो कुछ भी मिला है, उनको कोई मिटा न सके। हमको कोई हटा न सके अर्थात् काल खा न सके और न हमारी राजाई को कोई ले सके। बच्चे जानते हैं हम उस मालिक से वर्सा ले रहे हैं। बाप को मालिक कहा जाता है जैसे फर्रुखाबाद के रहवासी मालिक को मानते हैं। अनेक मत तो हैं। अच्छा उस मालिक से क्या मिलता है, कुछ भी पता नहीं। मालिक को कैसे हम याद करें- उनका नाम रूप क्या है? कुछ पता नहीं। मालिक तो सृष्टि का मालिक ठहरा ना। वह हुआ रचयिता, हम हुए रचना। बाप रचते हैं वारिसों को अथवा बच्चों को फिर उनको अपना मालिक बना देते हैं। बच्चे फिर बाप के मालिक बन जाते हैं। बच्चे कहते हैं, मेरे बाप की जो जायदाद है उनका मैं मालिक हूँ। बाप तो ऐसे नहीं कहेगा कि बच्चे की जायदाद का मैं मालिक हूँ। यह बड़ी समझने की बातें हैं। सेन्सीबुल बच्चे ही समझ सकते हैं। बुद्धि साफ नहीं है तो उसमें रतन ठहर न सके। देही अभिमानी हो तब रतन ठहर सकें। देहीअभिमानी होकर रहना है और बाप से वर्सा लेना है। उस बाप को याद करना है। जैसे लौकिक बाप बच्चों को पैदा करते हैं तो बच्चे मालिक बन जाते हैं। बच्चे कहेंगे मेरा बाप। बाप कहेगा मेरा बच्चा। परन्तु बच्चे के पास तो कुछ है नहीं। उनको तो बाप की मिलकियत मिलती है। बाप तो ऐसे नहीं कहेंगे कि बच्चे की मिलकियत मेरी है। बाप समझते हैं मेरी मिलकियत का बच्चा वारिस है। हाँ फिर जब वह बाप बनेगा अपने बच्चों का तब कहेंगे यह बच्चे मेरे मिलकियत के मालिक हैं। यह बड़ी धारणायुक्त बातें हैं। धारणा नहीं होती क्योंकि खामियां हैं। समझना चाहिए मेरे में बहुत खामियां हैं। नम्बरवन खामी है श्रीमत पर नहीं चलते हैं जो हम श्रेष्ठ बन सकें। श्रीमत से ही श्रेष्ठ बनना है। श्रीमत राजयोग सिखलाती है। श्री माना निराकार भगवानुवाच। इसलिए हम प्रश्न पूछते हैं ज्ञान सागर पतित पावन परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है। यह बहुत बड़े बोर्ड पर लिख देना चाहिए। परमात्मा से जिसका सम्बन्ध होगा, वह है स्वर्ग का रचयिता तो वह भी जरूर स्वर्ग का मालिक बन ही जायेगा। बाप आकर बच्चों को सलाम करते हैं। सलाम मालेकम् बच्चे कहते मालेकम सलाम। हम तो सिर्फ ब्रह्माण्ड के मालिक हैं तुम ब्रह्माण्ड विश्व दोनों के मालिक बनते हो। इसलिए बाप बच्चों को डबल सलाम करते हैं। एक ही बेहद का बाप तुम्हारी कितनी निष्काम सेवा करते हैं। लौकिक बाप निष्काम नहीं होते। उनको आश रहती है हम वानप्रस्थ अवस्था में जायेंगे तो बच्चे हमारी सेवा करेंगे। आगे यह कायदा था बच्चे बाप की सेवा करते थे, आजकल तो पैसा उड़ा देते हैं तो तुम बच्चे जानते हो, हमको ऐसी बादशाही मिलती है। बाप से। ल०ना०के लिए भी लिखो कि इन्हों को जानते हो? इन्हो को यह स्वर्ग की बादशाही किसने दी? जरूर स्वर्ग स्थापन करने वाला ही देगा। पुरानी दुनिया हो तब तो नई दुनिया स्थापन करेंगे। तो ल०ना० ने यह वर्सा पाया श्रीमत पर चलने से। श्रीमत राजयोग और सहज ज्ञान सिखलाती है। जिनको समझाते हैं वह राजा बन जाते हैं। पहले नम्बर में श्री कृष्ण उसने ऐसा क्या कर्म किया जो अपने माँ बाप से भी जास्ती मर्तबा पाया। वह महाराजा महारानी कहाँ के थे जिनके पास कृष्ण का जन्म हुआ। जब तक निर्विकारी हो न रहेंगे तब तक अविनाशी ज्ञान बुद्धि में बैठ न सके। बुद्धि का ताला खुलता ही तब है जब पवित्र रहते हैं। अपवित्र बनने से सब बुद्धि से निकल जायेगा। बहुत बच्चे फारकती दे देते हैं। पढ़ाई को भी छोड़ देते हैं वह फिर भी किसको ज्ञान सुना न सकें। पतित बन जाते, खान पान भी गंदा खाते। मायावी मनुष्यों से जाकर मिलते हैं। उनका गला घुट जाता है। यह बात भी शास्त्रों में है कि वृन्दावन में रास आदि होती थी-

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मना कर देते थे किसको सुनायेंगे तो गला घुट जायेगा। है यह कम की बात। अगर कोई गाली दे जाकर निंदा करते हैं तो गला घुट जाता है। कहते हैं मात सद्गुरु का निंदक ठौर न पाये। बाप कहते हैं सृष्टि जब पुरानी पतित हो जाती है तब मैं आता हूँ। मनुष्यों को समझाना है मनुष्य ही हैं जो कर्तव्य करेंगे तो उल्टा ही करेंगे क्योंकि उल्टी मत मिल रही है। श्रीमत है नहीं। उल्टी मत से पतित भ्रष्टाचारी बन जाते हैं। आगे भ्रष्टाचारी अक्षर नहीं था। पतित पावन भी

b) गाते हैं पतित पावन सीताराम। परन्तु यह नहीं समझते कि हम भी अपने को पतित कहते हैं। उनको भी समझाना है। देखो गंगा पर जाते हैं यह गंगा तो बहती ही आई है। सतयुग में भी थी गंगा जमुना। फिर वहाँ भी सब पतित क्यों? यह गंगा सतयुग में भी थी। वहाँ तो सब पावन थे। अब पतित क्यों? नदियाँ तो वही हैं जहाँ बहती हैं तो क्या सब नदियाँ पतित पावनी हैं। यह कैसे हो सकता? संन्यासी विकारों का संन्यास करते हैं पावन बनने के लिए। बाप समझाते हैं बच्चे तुम मेरी बहुत ग्लानी करते हो, देवताओं की भी ग्लानी करते हो। पहली-2 बात यह समझानी है कि परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है। सब भगवान को याद करते हैं भगवान कहते हैं मुझे सब भक्त प्रिय हैं क्योंकि उन सबको मुझे ही गति सद्गति देनी है। यह समझते हैं भगवान आकर भक्तों को भक्ति का फल देते हैं। इसलिए भक्त भगवान को प्रिय हैं। बाबा समझाते हैं तुमने दुर्गति को पाया है। भक्ति के बाद भगवान को आना है जरूर। हे सब

c) मेरे बच्चे परन्तु अभी भक्ति मार्ग का पार्ट बजा रहे हैं। शुरू से भक्ति करने वाले हो तुम तो जरूर मुझे तुमको ही पहले भक्ति का फल देना पड़ता है। और तो शुरू से लेकर मेरे भक्त नहीं हैं। वह तो अनेकों की भक्ति करते हैं। तुम मेरे प्यारे बच्चे हो। तुम मालिक थे फिर माया रावण ने तुम पर जीत पा ली और फिर भक्ति शुरू हो गई। यह भी ड्रामा है। मैं ही सबकी सद्गति करता हूँ। अब तुम मेरी मत पर चलते हो ना। मत देने लिए जरूर मुझे आना पड़ता है। नहीं तो कैसे सद्गति का रास्ता बताऊँगा। मैं इस पहले नम्बर के भक्त के तन में आता हूँ। यह है नंदीगण। शिव के मन्दिर में सामने नंदीगण रखते हैं। अब विचार करो परमपिता परमात्मा बैल के तन में तो नहीं आयेगा। राजयोग बैल द्वारा कैसे सिखायेगा। ज्ञान सागर बैल में प्रवेश करेगा क्या। अभी तुम ब्रह्मवत्स बनते हो। शिवबाबा की मत पर हम चलकर लक्ष्मी नारायण सूर्यवंशी राजा रानी बन रहे हैं। उस राजधानी को कोई हमसे छीन न सके। न कोई तूफान लग सकता। हम अमरपुरी के मालिक बनते हैं। यह मृत्युलोक है। अमरनाथ बाबा ही काल पर

d) जीत पहनाने वाला है। उनका पार्ट अलग, शंकर को विनाश के निमित्त दिखाया है। तुम सब पार्वतियाँ हो। मैं अमरनाथ हूँ। हम कब जन्म मरण में नहीं आते। अमरपुरी स्वर्ग का मालिक तुमको बनाता हूँ। भारतवासियों को वैकुण्ठ बहुत प्यारा लगता है। कहते हैं फलाना वैकुण्ठवासी हुआ। बहुत मुख मीठा कर दिया। अब वैकुण्ठ सचमुच तो सतयुग में होगा। जब सतयुग है तो पुनर्जन्म भी सतयुग में लेते हैं। फिर त्रेता में आते हैं तो पुनर्जन्म भी त्रेता में लेते हैं। फिर द्वापर में आते हैं तो पुनर्जन्म भी द्वापर में लेते हैं। परन्तु ऐसे थोड़ेही हो सकता है जो कलियुग में मरेंगे वह पुनर्जन्म सतयुग में लेंगे। स्वर्ग में जन्म लेने का मदार है पढ़ाई पर। अनेक बार

e) सृष्टि चक्र में हमने पार्ट बजाया है। फर्रुखाबाद में बच्चियाँ तो हैं- वहाँ जो मानने वाले हैं उनको समझाना है। तुम कहते हो वह मालिक है। बाप कहते बच्चे तुम मालिक हो मैं तुमको सृष्टि का भी मालिक बनाता हूँ। मैं तो निष्कामी हूँ। हम विश्व का मालिक नहीं बनते। तुम स्वर्ग में जाते हो तो मैं विश्रामी हो जाता हूँ। मैं जन्म मरण के चक्कर में नहीं आता हूँ। इस ईश्वरीय जन्म के बाद तुम दैवी गोद में जन्म लेंगे। अब तुम जन्म जन्मान्तर आसुरी गोद में जन्म लेते हो। भ्रष्टाचारी बन पड़े हो। सतयुग में सब श्रेष्ठाचारी होते हैं। अब तुम श्रीमत से श्रेष्ठाचारी बन रहे हो। वहाँ विष होता नहीं। यहाँ भल संन्यासी हैं परन्तु जन्म तो विकार से ही लेते हैं। सतयुग में विकार से जन्म नहीं होता। नहीं तो उन्हों को सम्पूर्ण निर्विकारी कह नहीं सकते। वहाँ माया होती नहीं। परन्तु यह बातें भी जब किसकी बुद्धि में बैठे। अब बाबा कहते हैं बच्चे तुमको नंगे जाना है। फिर स्वर्ग में आकर राज्य करना है। आत्मायें परमधाम से आती हैं पार्ट बजाने। फिर जब तक पतित पावन आकर लिबरेट न करे, तब तक एक भी जा नहीं सकते। गपोड़ा मारते फलाना पार निर्वाण गया, बाप आकर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तब बात अच्छी रीति समझाते हैं। पहले2 तो समझाओ परमपिता परमात्मा से क्या संबंध है। दूसरा किसको यह प्रश्न पूछने आयेगा ही नहीं। मनुष्य तो बिल्कुल ही पत्थरबुद्धि हैं। उनको पारसबुद्धि बनाना होता है। कोई पत्थरबुद्धि बनते ही नहीं तो बुद्धि में क्या बैठेगा। तुम कल्प2 पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि, पारसबुद्धि से पत्थरबुद्धि बनते ही आये हो। यह तो अच्छी रीति समझाया जाता है। परन्तु जबकि निश्चय बैठे। बरोबर शिवबाबा के हम बच्चे हैं। बाबा कहते हैं मैं अब आया हूँ तुमको सुखधाम में ले चलने। चलेंगे? वहाँ यह विष नहीं मिलेगा। मूल बात ही पवित्रता की है। जो कल्प पहले रहे थे वही अब भी रह सकते हैं। बहुत बच्चियां लिखती हैं बाबा पता नहीं कब बन्धन टूटेगा। युक्ति बताओ। बाबा कहते हैं बच्ची बन्धन टूटेगा अपने टाइम पर, बाबा क्या करेंगे। एक बन्धन भल छूट भी जावे फिर बच्चों आदि में मोह पड़ जाता है। इन सबसे बुद्धि निकालने में बड़ी मेहनत लगती है। कई तो और ही जास्ती मोह में आ जाते हैं। बहुत मोह में लटक पड़ते हैं। बाबा कहते हैं मोह एक में रखना है। तब तो धारणा होगी। कोई ज्ञान नहीं उठा सकते हैं तो भागन्ती हो जाते हैं। फिर नाम बदनाम होता है। ड्रामा में कल्प पहले भी यह हुआ था। जो सेकेण्ड पास हुआ वह ड्रामा। अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना। बीबी मरे तो भी हलुआ खाना। कच्चे को थोड़ा लोडा।झटका। आता है। बहुत सन्यासी भी ऐसे होते हैं। नहीं ठहर सकते हैं तो गृहस्थी में चले जाते हैं। चलन ही ऐसी होती है। फिर समझते हैं यह भ्रष्ट सन्यासी हैं। यहाँ तो एक ही मुख्य बात है। हम भी उस बाप से वर्सा ले रहे हैं। तुम भी उनको पिता समझते हो तो आकर स्वर्ग का वर्सा ले लो। एक ही बात है- सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। पिछाड़ी में थोड़ा ही समझाने से मनुष्य झट समझ जायेंगे। (अनेक मत हैं जिससे भारत भ्रष्ट बन गया है। फिर एक की मत से आधाकल्प के लिए भारत श्रेष्ठाचारी बनता है। श्रेष्ठ जरूर बाप ही बनायेंगे। पार करने वाला एक बाप है। तो जरूर कोई डुबोने वाले भी होंगे। गुरू ही परमपिता परमात्मा से बेमुख करते हैं। गृहस्थियों को ऐसे नहीं कहते हैं कि तुम भी सन्यास करो। बाप तो सबको कहते हैं विकारों का सन्यास करना ही पड़ेगा।) तब ही तुम पवित्र दुनिया के मालिक बन जायेंगे। बाप वर्सा दे रहे हैं। ढेर ब्रह्माकुमार कु0 हैं। तुम भी ब्रह्माकुमार हो वर्सा रूहानी बाप से मिलता है। कितना सहज है। परन्तु कोई को सिर्फ कथनी है करनी नहीं तो कोई को तीर नहीं लगता। कथनी से भल और किसका भला हो जायेगा परन्तु खुद की करनी नहीं है तो गिर पड़ेगा। जिनको ज्ञान देंगे वह चढ़ जायेगा। खुद गिर पड़ेगा। ऐसे भी बहुत हैं। बाबा बच्चों के लिए फिल करते हैं कि तुम लायक बन स्वर्ग के मालिक बनो। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दृढ संकल्प:-

1। अपनी कथनी और करनी एक करनी है। ज्ञान की धारणा के लिए सबसे मोह निकाल एक बाप में ही मोह रखना है।

2। श्रेष्ठाचारी बनने के लिए सदा श्रीमत पर चलते रहना है। बुद्धि में ज्ञान रतनों की धारणा देही अभिमानी बन करनी है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

1-1-2002 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - श्रेष्ठ बनना है तो श्रीमत पर पूरा-पूरा चलो, श्रीमत पर न चलना ही सबसे बड़ी खामी है"

प्रश्नः- किन बच्चों का गला घुट जाता है, बुद्धि से ज्ञान निकल जाता है?

उत्तरः- जो चलते-चलते अपवित्र बन जाते हैं, पढ़ाई छोड़ बाप को फारकती दे देते हैं उनकी बुद्धि से ज्ञान निकल जाता है। जब तक निर्विकारी न बनें तब तक अविनाशी ज्ञान बुद्धि में बैठ नहीं सकता। बुद्धि का ताला खुल नहीं सकता। पतित बनने वालों का खान-पान भी गंदा हो जाता है। वह मायावी मनुष्यों से जाकर मिल जाते हैं फिर गला ही घुट जाता है। किसी को भी ज्ञान सुना नहीं सकते हैं।

गीतः- तुम्हें पाके हमने.....

ओम् शान्ति। यह गीत कौन गा रहे हैं? जिसने बाप से तीनों जहान की बादशाही ले ली है। आप से जो कुछ मिला है उनको कोई हटा न सके। हमको कोई हटा नहीं सकता अर्थात् काल खा नहीं सकता। और ना ही हमारी राजाई को कोई ले सकता है। बच्चे जानते हैं हम उस मालिक से वर्सा ले रहे हैं। बाप को मालिक भी कहते हैं लेकिन उस मालिक से क्या मिलता है, कुछ भी पता नहीं। मालिक को कैसे हम याद करें, उनका नाम रूप क्या है? कुछ भी पता नहीं। मालिक तो सृष्टि का मालिक ठहरा ना। वह हुआ रचयिता। हम हुए रचना। बाबा रचते हैं वारिसों को अथवा बच्चों को फिर उनको अपना मालिक बना देते हैं। बच्चे फिर बाप के मालिक बन जाते हैं। बच्चे कहते हैं मेरे बाप को जो जायदाद है उनका मैं मालिक हूँ। बाप तो ऐसे नहीं कहेंगे कि बच्चे की जायदाद का मैं मालिक हूँ। यह बड़ी समझने की बातें हैं। सेन्सीबुल बच्चे ही समझ सकते हैं। बुद्धि साफ नहीं है तो उसमें रत्न ठहर न सकें। जब देही-अभिमानी हो तब रत्न ठहर सकें। देही-अभिमानी होकर रहना है और बाप से वर्सा लेना है। उस बाप को याद करना है। जैसे लौकिक बाप बच्चों को पैदा करते हैं तो बच्चे मालिक बन जाते हैं। बच्चे कहेंगे मेरा बाप। बाप कहेगा मेरे बच्चे। परन्तु बच्चे के पास तो कुछ है नहीं। उनको तो बाप की मिलकियत मिलती है। बाप कभी ऐसे नहीं कहेंगे कि बच्चे की मिलकियत मेरी है। बाप समझते हैं - बच्चे मेरी मिलकियत के मालिक हैं, यह बड़ी धारणायुक्त बातें हैं। धारणा नहीं होती क्योंकि खामियां हैं। समझना चाहिए मेरे में बहुत खामियां हैं। नम्बरवन खामी है - जो श्रीमत पर नहीं चलते हैं। श्रीमत से ही श्रेष्ठ बनना है। श्रीमत राजयोग सिखलाती है। श्री माना निराकार भगवानुवाच। इसलिए हम प्रश्न पूछते हैं कि ज्ञान सागर पतित-पावन परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? यह बहुत बड़े-बड़े बोर्ड पर लिख देना चाहिए। परमात्मा है स्वर्ग का रचयिता, तो जिनका परमात्मा से सम्बन्ध होगा वह भी जरूर स्वर्ग का मालिक बन ही जायेगा।

PDF Compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बाप आकर बच्चों को सलाम करते हैं। सलाम मालेकम् बच्चे। बच्चे कहते हैं मालेकम् सलाम। हम तो सिर्फ ब्रह्माण्ड के मालिक हैं, तुम ब्रह्माण्ड और विश्व दोनों के मालिक बनते हो। इसलिए बाबा बच्चों को डबल सलाम करते हैं। एक ही बेहद का बाप तुम्हारी कितनी निष्काम सेवा करते हैं। लौकिक बाप निष्काम नहीं होते। उनको आश रहती है हम वानप्रस्थ अवस्था में जायेंगे तो बच्चे हमारी सेवा करेंगे। असुल यह कायदा था - बच्चे बाप की सेवा करते थे। आजकल तो पैसे उड़ा देते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमको ऐसी बादशाही मिलती है बाप से। लक्ष्मी-नारायण के लिए भी लिखें कि इन्हों को जानते हो, इन्हों को यह स्वर्ग की बादशाही किसने दी? जरूर स्वर्ग स्थापन करने वाला ही देगा। पुरानी दुनिया हो तब तो नई दुनिया स्थापन करेंगे। तो लक्ष्मी-नारायण ने यह वर्सा पाया श्रीमत पर चलने से। श्रीमत राजयोग और सहज ज्ञान सिखलाती है जिनको समझाते हैं - वह राजा बन जाते हैं। पहले नम्बर में श्रीकृष्ण, उसने ऐसा क्या कर्म किया जो अपने माँ बाप से भी जास्ती मर्तबा पाया। वह महाराजा महारानी कहाँ थे जिनके पास कृष्ण का जन्म हुआ। जब तक निर्विकारी होकर नहीं रहेंगे तब तक अविनाशी ज्ञान बुद्धि में बैठ नहीं सकता। बुद्धि का ताला खुलता ही तब है जब पवित्र रहते हैं। अपवित्र बनने से सब बुद्धि से निकल जायेगा। बहुत बच्चे फारकती दे देते हैं। पढ़ाई को ही छोड़ देते हैं। वह फिर कभी किसको ज्ञान सुना न सकें। पतित बन जाते, खान-पान भी गंदा खाते। मायावी मनुष्यों से जाकर मिलते हैं। उनके गले घुट जाते हैं। यह बात भी शास्त्रों में है। वृन्दावन में रास आदि होती थी, मना कर देते थे - किसको सुनायेंगे तो गला घुट जायेगा। है यह ज्ञान की बात। अगर फारकती दी जाकर निंदा करते हैं तो गला घुट जाता है। कहते हैं ना सतगुरू का निंदक ठौर न पाये। बाप कहते हैं सृष्टि जब पतित, पुरानी हो जाती है तब मैं आता हूँ। मनुष्यों को तमोप्रधान बनना ही है। जो कर्तव्य करेंगे वो उल्टा ही करेंगे क्योंकि उल्टी मत मिल रही है। श्रीमत है नहीं। उल्टी मत पतित भ्रष्टाचारी बनाती है। कट b) आगे भ्रष्टाचारी अक्षर ही नहीं था। सन्यासी विकारों का सन्यास करते हैं पावन बनने के लिए।

तो पहले-पहले यह बात समझानी है कि परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? सब भगवान को याद करते हैं। भगवान कहते हैं मुझे सब भगत प्रिय हैं क्योंकि उन सबको मुझे ही गति सद्गति देनी है। वह समझते हैं भगवान आकर भक्तों को भक्ति का फल देते हैं, इसलिए भगत भगवान को प्रिय हैं। बाबा समझाते हैं - तुमने दुर्गति को पाया है, अब मैं सद्गति देने आया हूँ। भक्ति के बाद भगवान को आना कट है जरूर। मुझे तुमको ही पहले भक्ति का फल देना पड़ता है। और तो शुरू से लेकर c) मेरे भक्त हैं नहीं। वह तो अनेकों की भक्ति करते हैं। तुम मेरे प्यारे बच्चे हो, तुम मालिक थे फिर माया रावण ने तुम पर जीत पा ली और फिर भक्ति शुरू हो गई। यह भी ड्रामा है। मैं तो सबकी सद्गति करता हूँ। अब तुम मेरी मत पर चलते हो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ना। मत देने के लिए जरूर मुझे आना पड़ता है। नहीं तो कैसे सद्गति का रास्ता बताऊं। मैं इस पहले नम्बर के भगत के तन में आता हूँ। यह है नन्दीगण। शिव के मन्दिर में सामने नंदीगण रखते हैं। अब विचार करो - परमपिता परमात्मा बैल के तन में तो नहीं आयेगा। राजयोग बैल द्वारा कैसे सिखाऊंगा। ज्ञान सागर बैल में प्रवेश करेंगे क्या! अभी तुम ज्ञानवान बनते हो। श्रीमत पर चलकर लक्ष्मी-नारायण, सूर्यवंशी राजा-रानी बन रहे हो। उस राजधानी को कोई हमसे छीन न सके, न कोई तूफान लग सके। हम अमरपुरी के मालिक बनते हैं। यह मृत्युलोक है। अमरनाथ बाबा हो काल

d) पर जीत पहनाने वाला है। उनका पार्ट अलग है। तुम सब पार्वतियां हो, मैं अमरनाथ हूँ। हम कभी जन्म-मरण में नहीं आते। अमरपुरी स्वर्ग का मालिक तुमको बनाता हूँ। भारतवासियों को वैकुण्ठ बहुत प्यारा लगता है। कहते हैं फलाना वैकुण्ठवासी हुआ। बहुत मुख मीठा कर दिया। अब वैकुण्ठ सचमुच तो सतयुग में होगा। जब सतयुग है तो पुनर्जन्म भी सतयुग में लेते हैं। फिर त्रेता में आते हैं तो पुनर्जन्म भी त्रेता में लेते हैं। फिर द्वापर में आते हैं तो पुनर्जन्म भी द्वापर में लेते हैं। परन्तु ऐसे थोड़ेही हो सकता है जो मरेंगे कलियुग में, पुनर्जन्म लेंगे सतयुग में। स्वर्ग में जन्म लेते हैं, इसका

e) मदार है पढ़ाई पर। बाप कहते हैं मैं तुमको सृष्टि का मालिक बनाता हूँ, मैं निष्कामी हूँ। हम विश्व का मालिक नहीं बनते। तुम स्वर्ग में जाते हो तो मैं विश्रामी हो जाता हूँ। मैं चक्र में नहीं आता हूँ। इस ईश्वरीय जन्म के बाद तुम दैवी गोद में जन्म लेंगे। अभी तुम जन्म-जन्मान्तर आसुरी गोद में जन्म लेते हो। भ्रष्टाचारी बन पड़े हो। सतयुग में सब श्रेष्ठाचारी होते हैं। अब तुम श्रीमत से श्रेष्ठाचारी बन रहे हो। वहाँ विष होता नहीं। यहाँ भल सन्यासी हैं परन्तु जन्म तो विष से लेते हैं ना। सतयुग में विष से जन्म नहीं होता है। नहीं तो उन्हों को सम्पूर्ण निर्विकारी कह न सकें। वहाँ माया होती नहीं। परन्तु यह बातें भी जब किसको बुद्धि में बैठें।

अब बाबा कहते हैं बच्चे तुमको घर जाना है फिर स्वर्ग में आकर राज्य करना है। आत्मायें परमधाम से आती हैं पार्ट बजाने, फिर जब तक पतित-पावन आकर लिबरेट न करे तब तक एक भी जा नहीं सकता। गपोड़ा मारते रहते हैं - फलाना पार निर्वाण गया। बाप आकर सब बातें अच्छी रीति समझाते हैं। पहले-पहले समझाओ परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है! दूसरे जिसको यह भी प्रश्न पूछने आयेगा नहीं। तुम कल्प-कल्प पत्थर बुद्धि से पारसबुद्धि और पारसबुद्धि से पत्थरबुद्धि बनते आये हो। यह तो अच्छी रीति समझाया जाता है परन्तु जबकि निश्चय बैठे। बरोबर शिवबाबा के हम बच्चे हैं। बाबा कहते हैं मैं अब आया हूँ तुमको सुखधाम ले चलने, चलेंगे? वहाँ यह विष नहीं मिलेगा। मूल बात ही पवित्रता की है। जो कल्प पहले रहे थे, वही अब भी रह सकते हैं। बहुत बच्चियां लिखती हैं बाबा पता नहीं कब बन्धन टूटेगा। युक्ति बताओ। बाबा कहते हैं बच्चे बंधन टूटेगा अपने टाइम पर। बाबा क्या करेंगे? एक बंधन भल छूट जाये फिर बच्चों आदि में मोह पड़ जाता है। इन सबसे बुद्धि निकालने में

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बड़ी मेहनत लगती है। कई तो और ही जास्ती मोह में आ जाते हैं। बहुत मोह लटक पड़ता है। बाबा कहते हैं मोह एक में रखना है तब तो धारणा होगी। कोई ज्ञान उठा नहीं सकते हैं तो भागन्ती हो जाते हैं। फिर नाम बदनाम होता है। ड्रामा में कल्प पहले भी यह हुआ था। जो सेकण्ड पास हुआ वह ड्रामा। अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना, बीबी मरे तो भी हलुआ खाना.. कच्चे को थोड़ा झटका आता है। बहुत सन्यासी भी ऐसे होते हैं, नहीं ठहर सकते हैं तो गृहस्थ में चले जाते हैं। चलन ही ऐसी होती है। यहाँ तो एक ही मुख्य बात है। हम भी उस बाप से वर्सा ले रहे हैं, तुम भी उनको पिता समझते हो, आकर स्वर्ग का वर्सा ले लो। एक ही बात है – सेकण्ड में जीवनमुक्ति, पिछाड़ी मे थोड़ा ही समझाने से मनुष्य झट समझ जायेंगे। अनेक मत हैं, जिससे भारत भ्रष्ट बन गया है। फिर एक की मत से आधाकल्प के लिए भारत श्रेष्ठाचारी बनता है। श्रेष्ठ जरूर बाप ही बनायेंगे। सबको पार ले जाने वाला एक ही बाप है तो जरूर कोई डुबोने वाले भी होंगे। बाप तो सबको कहते हैं विकारों का सन्यास करना ही पड़ेगा। तब ही तुम पवित्र दुनिया के मालिक बन सकेंगे। बाबा वर्सा दे रहे हैं। ढेर ब्रह्मकुमारियां हैं, तुम भी बी.के. हो, वर्सा रूहानी बाप से मिलता है। कितना सहज है। परन्तु कोई की सिर्फ कथनी है, करनी नहीं तो कोई को तीर नहीं लगता है। कथनी से भल और किसका भला हो जायेगा परन्तु खुद की करनी नहीं है तो गिर पड़ेगा। जिनको ज्ञान देंगे वह चढ़ जायेगा, खुद गिर पड़ेगा। ऐसे भी बहुत हैं, बाबा बच्चों को पूरा वर्सा दिल कर देते हैं, अब तुम लायक बन स्वर्ग के मालिक बनो। अच्छा

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- अपनी कथनी और करनी एक करनी है। ज्ञान की धारणा के लिए सबसे मोह निकाल एक बाप में ही मोह रखना है।

२- श्रेष्ठाचारी बनने के लिए सदा श्रीमत पर चलना है। बुद्धि में ज्ञान रत्नों की धारणा देही-अभिमानी बनकर करनी है।

वरदान:- सदा विजय की स्मृति से हर्षित रहने और सर्व को खुशी दिलाने वाले आकर्षण मूर्त भव

हम कल्प-कल्प की विजयी आत्मा हैं, विजय का तिलक मस्तक पर सदा चमकता रहे तो यह विजय का तिलक औरों को भी खुशी दिलायेगा क्योंकि विजयी आत्मा का चेहरा सदा ही हर्षित रहता है। हर्षित चेहरे को देखकर खुशी के पीछे स्वत: ही सब आकर्षित होते हैं। जब अन्त में किसी के पास सुनने का समय नहीं होगा तब आपका आकर्षण मूर्त हर्षित चेहरा ही अनेक आत्माओं की सेवा करेगा।

स्लोगन:-

अव्यक्त स्थिति की लाइट चारों ओर फैलाना ही लाइट हाउस बनना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

19-6-97 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप स्वर्ग का फाउन्डेशन लगा रहे हैं, तुम बच्चे मददगार बन अपना हिस्सा जमा कर लो, ईश्वरीय मत पर चल श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाओ"

प्रश्न:- बापदादा को किन बच्चों की सदा तलाश रहती है?

उत्तर:- जो बहुत-बहुत मीठे शीतल स्वभाव वाले सर्विसएबुल बच्चे हैं। ऐसे बच्चों की बाप को तलाश रहती है। सर्विसएबुल बच्चे ही बाप का नाम बाला करेंगे। जितना बाप का मददगार बनते हैं। आज्ञाकारी, वफादार हैं, उतना वह वर्से के हकदार बनते हैं।

प्रश्न:- बाप के चरित्र क्या हैं?

उत्तर:- पतितों को पावन, नर्क को स्वर्ग बनाना, यही बाप का चरित्र है। बाप देवता बनने की श्रेष्ठ मत देते हैं।

गीत:- ओम नमो शिवाए... ओम् शान्ति।

ओम् का अर्थ किसने बताया? बाप ने। जब बाबा कहा जाता है तो उसका नाम जरूर चाहिए। साकार हो वा निराकार हो, नाम जरूर चाहिए। और जो आत्मायें हैं उन पर कभी नाम नहीं पड़ता। आत्मा जब जीव आत्मा बनती है तब शरीर पर नाम पड़ता है। ब्रह्मा देवताए नमः कहते, विष्णु को भी देवता कहते क्योंकि आकारी हैं तो आकारी शरीर का नाम पड़ा। नाम हमेशा शरीर पर पड़ता है। सिर्फ एक निराकार परमपिता परमात्मा है, जिसका नाम शिव है। एक ही इस आत्मा का नाम है, बाकी सबका देह पर नाम पड़ता है। शरीर छोड़ा तो फिर नाम बदल जायेगा। परमात्मा का एक ही नाम चलता है, कभी बदलता नहीं। इससे सिद्ध होता है कि वह कभी जन्म-मरण में नहीं आता है। अगर खुद जन्म-मरण में आवे तो औरों को जन्म-मरण से छुड़ा न सके। अमरलोक में कभी जन्म-मरण नहीं कहा जाता। वहाँ तो बड़ी सहज रीति से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। मरना यहाँ है। सतयुग में ऐसे नहीं कहते कि फलाना मर गया। मरना शब्द दु:ख का है। वहाँ तो पुराना शरीर छोड़ दूसरा किशोर अवस्था का शरीर ले लेते हैं। खुशी मनाते हैं। पुरानी दुनिया में कितने मनुष्य हैं, यह सब खत्म होने वाले हैं। दिखाते हैं यादव और कौरव थे, लड़ाई में वह खत्म हो गये तो क्या पाण्डवों को रंज हुआ होगा? नहीं। पाण्डवों का तो राज्य स्थापन हुआ। इस समय तुम हो ब्रह्मा वंशी ब्राह्मण, ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ। ब्रह्मा को इतने बच्चे हैं तो जरूर प्रजापिता ठहरा। ब्रह्मा विष्णु शंकर का बाप है। शिव। उनको ही भगवान कहा जाता है। इस समय तुम जानते हो कि हम ईश्वरीय कुल के हैं। हम बाबा के साथ, बाबा के घर निर्वाणधाम में जाने वाले हैं। बाबा आया हुआ है, उनको साजन भी कहा जाता है। परन्तु एक्यूरेट संबंध में वह बाप है क्योंकि वर्सा संजनियों को नहीं मिलता है। वर्सा बच्चे लेते हैं तो बाप कहना [illegible] है। बाप को [illegible] कहते हैं। कृष्ण के चरित्र गाये जाते हैं। परन्तु कृष्ण का चरित्र तो कोई है नहीं। भागवत में कृष्ण के चरित्र हैं लेकिन चरित्र

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

होना चाहिए – शिवबाबा का। वह भी बाप, टीचर, सतगुरू है, इसमें चरित्र की क्या बात है। कृष्ण के भी चरित्र नहीं हैं। वह भी बच्चा है। जैसे छोटे बच्चे होते हैं। बच्चे हमेशा चंचल होते हैं, तो सभी को प्यारे लगते हैं। कृष्ण के लिए जो दिखाते है कि मटकी फोड़ी, ऐसा तो कुछ भी है नहीं। शिवबाबा का क्या चरित्र है? वह तो तुम देखते हो कि पढ़ाकर पतित से पावन बनाते हैं। कहते हैं भक्ति मार्ग में मैं तुम्हारी भावना पूरी करता हूं। बाकी यहाँ तो मैं पढ़ाता हूँ। इस समय जो मेरे बच्चे हैं, वही मुझे याद करते हैं। और सबकी याद को भूल एक बाप की याद में रहने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे नहीं कि मैं सर्वव्यापी हूं। मुझे जो याद करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूं। सो भी याद तो बच्चों को ही करेंगे। मुख्य बात तो एक है। बहादुर तो किसी को तब कहेंगे जब कोई बड़े आदमी को समझाकर दिखाओ। सारा मदार है गीता पर। गीता निराकार परमपिता परमात्मा की गाई हुई है, न कि मनुष्यों की। भगवान को रूद्र भी कहा जाता है। कृष्ण को रूद्र नहीं कहेंगे। रूद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला निकली है।

a) फरूखाबाद में एक पंथ है – जो एक मालिक कहते हैं। कहते हैं उस मालिक का नाम नहीं है। अच्छा भला वह मालिक कहाँ है? क्या वह विश्व का, सारी सृष्टि का मालिक है? परमपिता परमात्मा तो सृष्टि का मालिक नहीं बनता है, सृष्टि का मालिक तो देवी-देवता बनते हैं। परमपिता परमात्मा तो ब्रह्माण्ड का मालिक है। ब्रह्म तत्व बाप का घर तो हम बच्चों का भी घर है। ब्रह्माण्ड है बाप का घर, जहाँ आत्मायें अण्डे मिसल दिखाते हैं। ऐसे कोई हैं नहीं। हम आत्मायें ज्योतिर्बिन्दु वहाँ निवास करती हैं। ब्रह्माण्ड से हम नीचे उतरते हैं पार्ट बजाने के लिए, हम एक-दो के पिछाड़ी आते रहते हैं। झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। बाबा है बीजरूप, फाउन्डेशन देवी-देवताओं का कहें वा ब्रह्मणों का कहें। ब्राह्मण बीज डालते हैं। ब्राह्मण ही फिर देवता बन राज्य करते हैं। अब हमारे द्वारा शिवबाबा फाउन्डेशन लगा रहे हैं। डिटीज्म अर्थात् स्वर्ग का फाउन्डेशन लग रहा है। जितना जो मददगार बनेंगे उतना वह अपना हिस्सा लेंगे। नहीं तो सूर्यवंशी कैसे बनें! अभी तुम वह ऊंच प्रालब्ध बना रहे हो। हर एक मनुष्य पुरुषार्थ से प्रालब्ध बनाते रहते हैं। प्रालब्ध बनाने लिए अच्छा काम किया जाता है। दान-पुण्य करना, धर्मशाला आदि बनाना। सब ईश्वर अर्थ ही करते हैं क्योंकि उनका फल देने वाला वह है। तुम अब श्रीमत पर पुरुषार्थ कर रहे हो। बाकी सारी दुनिया मनुष्य मत पर पुरुषार्थ कर रही है। सो भी आसुरी मत है। ईश्वरीय मत के बाद है दैवी मत, फिर हो जाती है आसुरी मत। अब तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिलती है। बाबा मम्मा भी उनकी मत से श्रेष्ठ बनते हैं। कोई मनुष्य देवताओं जैसे श्रेष्ठ हो ही नहीं सकते। देवताओं को श्रेष्ठ बनाने वला कौन? यहाँ तो कोई श्रेष्ठ है नहीं। श्री श्री है ही एक वही सबसे ऊंच ते ऊंच बाप, टीचर, सतगुरू है। वही फिर श्री लक्ष्मी-नारायण बनाते हैं। भल राम को भी कहते हैं श्री सीता, श्री राम। परन्तु उनके पिछाड़ी एड हो जाता है क्षत्रिय, चन्द्रवंशी। वह लक्ष्मी-नारायण 16 कला सम्पूर्ण, सूर्यवंशी वह है दैवी कुल। राम-सीता 14 कला चन्द्रवंशी। दो कला कम हुई है ना। सो जो होना

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

28-6-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप स्वर्ग का फाउन्डेशन लगा रहे हैं, तुम बच्चे मददगार बन अपना हिस्सा जमा कर लो, ईश्वरीय मत पर चल श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाओ"

प्रश्न:- बापदादा को किन बच्चों की सदा तलाश रहती है?

उत्तर:- जो बहुत-बहुत मीठे शीतल स्वभाव वाले सर्विसएबुल बच्चे हैं। ऐसे बच्चों की बाप को तलाश रहती है। सर्विसएबुल बच्चे ही बाप का नाम बाला करेंगे। जितना बाप का मददगार बनते हैं, आज्ञाकारी, वफादार हैं, उतना वह वर्से के हकदार बनते हैं।

गीत- ओम् नमो शिवाए...

ओम् शान्ति। ओम् का अर्थ किसने बताया? बाप ने। जब बाबा कहा जाता है तो उसका नाम जरूर चाहिए। साकार हो वा निराकार हो, नाम जरूर चाहिए। और जो आत्मायें हैं उन पर कभी नाम नहीं पड़ता। आत्मा जब जीव आत्मा बनती है तब शरीर पर नाम पड़ता है। ब्रह्मा देवताए नमः कहते, विष्णु को भी देवता कहते क्योंकि आकारी हैं तो आकारी शरीर का नाम पड़ा। नाम हमेशा शरीर पर पड़ता है। सिर्फ एक निराकार परमपिता परमात्मा है, जिसका नाम शिव है। एक ही इस आत्मा का नाम है, बाकी सबका देह पर नाम पड़ता है। शरीर छोड़ा तो फिर नाम बदल जायेगा। परमात्मा का एक ही नाम चलता है, कभी बदलता नहीं। इससे सिद्ध होता है कि वह कभी जन्म-मरण में नहीं आता है। अगर खुद जन्म-मरण में आवे तो औरों को जन्म-मरण से छुड़ा न सके। अमरलोक में कभी जन्म-मरण नहीं कहा जाता। वहाँ तो बड़ी सहज रीति से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। मरना यहाँ है। सतयुग में ऐसे नहीं कहते कि फलाना मर गया। मरना शब्द दुःख का है। वहाँ तो पुराना शरीर छोड़ दूसरा किशोर अवस्था का शरीर ले लेते हैं। खुशी मनाते हैं। पुरानी दुनिया में कितने मनुष्य हैं, यह सब खत्म होने वाले हैं। दिखाते हैं यादव और कौरव थे, लड़ाई में वह खत्म हो गये तो क्या पाण्डवों को रंज हुआ होगा? नहीं। पाण्डवों का तो राज्य स्थापन हुआ। इस समय तुम हो ब्रह्मा वंशी ब्राह्मण, ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ। ब्रह्मा को इतने बच्चे हैं तो जरूर प्रजापिता ठहरा। ब्रह्मा विष्णु शंकर का बाप है शिव। उनको ही भगवान कहा जाता है। इस समय तुम जानते हो कि हम ईश्वरीय कुल के हैं। हम बाबा के साथ, बाबा के घर निर्वाणधाम में जाने वाले हैं। बाबा आया हुआ है, उनको साजन भी कहा जाता है। परन्तु एक्यूरेट सम्बन्ध में वह बाप है क्योंकि वर्सा सजनियों को नहीं मिलता है। वर्सा बच्चे लेते हैं तो बाप कहना राइट है। बाप को भूल जाने से ही मनुष्य नास्तिक बने हैं। कृष्ण के चरित्र गाये जाते हैं। परन्तु कृष्ण का चरित्र तो कोई है नहीं। भागवत में कृष्ण के चरित्र हैं लेकिन चरित्र होना चाहिए – शिवबाबा का। वह भी बाप, टीचर, सतगुरू है, इसमें चरित्र की क्या बात है। कृष्ण के भी चरित्र नहीं हैं। वह भी बच्चा है। जैसे छोटे बच्चे होते हैं। बच्चे हमेशा चंचल होते हैं, तो

compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सभी को प्यारे लगते हैं। कृष्ण के लिए जो दिखाते हैं कि मटकी फोड़ी, ऐसा तो कुछ भी है नहीं। शिवबाबा का क्या चरित्र है? वह तो तुम देखते हो कि पढ़ाकर पतित से पावन बनाते हैं। कहते हैं भक्ति मार्ग में मैं तुम्हारी भावना पूरी करता हूँ। बाकी यहाँ तो मैं पढ़ाता हूँ। इस समय जो मेरे बच्चे हैं, वही मुझे याद करते हैं। और सबकी याद को भूल एक बाप की याद में रहने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे नहीं कि मैं सर्वव्यापी हूँ। मुझे जो याद करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूँ। सो भी याद तो बच्चों को ही करेंगे। मुख्य बात तो एक है। बहादुर तो किसी को तब कहेंगे जब कोई बड़े आदमी को समझाकर दिखाओ। सारा मदार है गीता पर। गीता निराकार परमपिता परमात्मा की गाई हुई है, न कि मनुष्यों की। भगवान को रूद्र भी कहा जाता है। कृष्ण को रूद्र नहीं कहेंगे। रूद्र ज्ञान यज्ञ से हो विनाश ज्वाला निकली है।

a) कई लोग परमात्मा को मालिक कहकर याद करते हैं। कहते हैं उस मालिक का नाम नहीं है। अच्छा भला वह मालिक कहाँ है? क्या वह विश्व का, सारी सृष्टि का मालिक है? परमपिता परमात्मा तो सृष्टि का मालिक नहीं बनता है, सृष्टि का मालिक तो देवी-देवता बनते हैं। परमपिता परमात्मा तो ब्रह्माण्ड का मालिक है। ब्रह्म तत्व बाप का घर तो हम बच्चों का भी घर है। ब्रह्माण्ड है बाप का घर, जहाँ आत्मायें अण्डे मिसल दिखाते हैं। ऐसे कोई हैं नहीं। हम आत्मायें ज्योतिर्बिन्दु वहाँ निवास करती हैं। ब्रह्माण्ड से हम नीचे उतरते हैं पार्ट बजाने के लिए, हम एक-दो के पिछाड़ी आते रहते हैं। झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। बाबा है बीजरूप, फाउन्डेशन देवी-देवताओं का कहें वा ब्राह्मणों का कहें। ब्राह्मण बीज डालते हैं। ब्राह्मण ही फिर देवता बन राज्य करते हैं। अब हमारे द्वारा शिवबाबा फाउन्डेशन लगा रहे हैं। डिटीज्म अर्थात् स्वर्ग का फाउन्डेशन लग रहा है। जितना जो मददगार बनेंगे उतना वह अपना हिस्सा लेंगे। नहीं तो सूर्यवंशी कैसे बनें! अभी तुम वह ऊंच प्रालब्ध बना रहे हो। हर एक मनुष्य पुरुषार्थ से प्रालब्ध बनाते रहते हैं। प्रालब्ध बनाने लिए अच्छा काम किया जाता है। दान-पुण्य करना, धर्मशाला आदि बनाना सब ईश्वर अर्थ ही करते हैं क्योंकि उनका फल देने वाला वह है। तुम अब श्रीमत पर पुरुषार्थ कर रहे हो। बाकी सारी दुनिया मनुष्य मत पर पुरुषार्थ कर रही है। सो भी आसुरी मत है। ईश्वरीय मत के बाद है दैवी मत, फिर हो जाती है आसुरी मत। अब तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिलती है। बाबा सम्पूर्ण भी उनको मत से श्रेष्ठ बनते हैं। कोई मनुष्य देवताओं जैसे श्रेष्ठ हो ही नहीं सकते। देवताओं को श्रेष्ठ बनाने वाला कौन? यहाँ तो कोई श्रेष्ठ है नहीं। श्री श्री है ही एक वही सबसे ऊंच ते ऊंच बाप, टीचर, सतगुरू है। वही फिर श्री लक्ष्मी-नारायण बनाते हैं। भल राम को भी कहते हैं श्री सीता, श्री राम। परन्तु उनके पिछाड़ी एड हो जाता है क्षत्रिय, चन्द्रवंशी। वह लक्ष्मी-नारायण तो 16 कला सम्पूर्ण सूर्यवंशी देवता कुल हुआ और राम-सीता 14 कला चन्द्रवंशी। दो कला कम हुई है ना। सो तो होना ही है जरूर। मनुष्य यह नहीं जानते हैं कि सृष्टि की गिरती कला होती है। 16 कला से

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

14 कला हुई तो डिग्रेड हुई ना। इस समय तो बिल्कुल डिग्रेड है। यह है रावण सम्प्रदाय। रावण राज्य है ना। रावण मत को कहा जाता है आसुरी मत। सब पतित हैं। पावन कोई इस पतित दुनिया में नहीं हो सकता। भारतवासी जो पावन थे वही फिर पतित बने हैं फिर उन्हों को ही मैं आकर पावन बनाता हूँ। पतित-पावन कृष्ण नहीं गाया जाता है। न चरित्र की बात है। पतित-पावन एक परमात्मा को ही कहेंगे। पिछाड़ी में सब कहेंगे अहो प्रभु आपकी गत मत न्यारी। आपकी रचना को कोई नहीं जानते। सो तो अब तुम जान गये हो। यह ज्ञान है बिल्कुल नया। नई चीज जब निकलती है तो पहले थोड़ी होती है फिर बढ़ती जाती है। तुम भी पहले एक कोने में पड़े थे। अब देश-देशान्तर वृद्धि को पाते रहेंगे। राजधानी स्थापन जरूर होनी है। मूल बात तो यह सिद्ध करनी है कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं है। वर्सा बाप देंगे, कृष्ण नहीं। लक्ष्मी-नारायण भी अपने बच्चों को वर्सा देंगे। वह भी यहाँ के पुरूषार्थ की प्रालब्ध मिलती है। सतयुग, त्रेता में बेहद का वर्सा है। गोल्डन, सिल्वर जुबली मनाते हैं। यहाँ तो एक दिन मनाते हैं। हम तो 1250 वर्ष गोल्डन जुबली मनाते हैं। खुशियाँ मनाते हैं ना। मालामाल बन जाते हैं। तो यह अन्दर में बड़ी खुशी रहती है। ऐसे नहीं कि सिर्फ बाहर से बत्तियाँ आदि जलाते हैं। स्वर्ग में हम बिल्कुल सम्पत्तिवान, बहुत सुखी हो जाते हैं। देवता धर्म जैसा सुखी और कोई होता नहीं। फिर सिल्वर जुबिली आदि को भी पूरा समझते नहीं हैं। अभी तुम आधाकल्प की जुबिली मनाने के लिए बाप से वर्सा पा रहे हो। तो मुख्य बात यह समझने की है कि गीता का भगवान शिव है। उसने ही राजयोग सिखलाया था, सो फिर से अब सिखला रहे हैं। सिखलाते भी तब हैं जब राजाई है नहीं। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। एक दो की टोपी उतारने में देरी नहीं करते हैं। तुम बच्चे उनकी मत पर चलने से सुखधाम के मालिक बनेंगे। ऐसे बहुत हैं जो ज्ञान को पूरा धारण नहीं करते, परन्तु सेन्टर पर आते रहते हैं। अन्दर दिल बिन्न-बिन्न करती कि एक बच्चा पैदा कर दें। माया की टैम्पटेशन होती है कि शादी कर एक बच्चे का सुख ले लेवें। अरे गैरन्टी थोड़ेही है कि बच्चा सुख ही देगा। दो चार वर्ष में बच्चा मर जाये तो और ही दुःखी हो पड़ेंगे। आज शादमाना करते हैं कल चिता पर चढ़ते तो रोना पीटना पड़ता है। यह है ही दुःखधाम। देखो, खाना भी कैसा खाते हैं! तो बाप समझाते हैं कि बच्चे ऐसी आशायें नहीं रखो। माया बड़ा तूफान में ले आयेगी। झट विकार में गिरा देगी। फिर आने में भी लज्जा आयेगी। सब कहेंगे कुल को कलंकित किया है तो वर्सा क्या लेंगे। बाबा मम्मा कहते हो तो ब्रह्माकुमार कुमारियां आपस में हो गये भाई-बहन। फिर अगर विकारों में गिर पड़े तो ऐसे कुल कलंकित और ही सौ गुणा कड़ी सजा खायेंगे और पद भी भ्रष्ट होगा। कोई तो विकार में जाते फिर बतलाते नहीं तो बहुत दण्ड के भागी बनते हैं। धर्मराज बाबा तो किसी को छोड़ते नहीं हैं। वो लोग तो सजा खाते जेल भोगते हैं। लेकिन यहाँ वालों के लिए तो बड़ी कड़ी सजा है। ऐसे भी सेन्टर्स पर बहुत आते हैं। बाप समझाते हैं कि ऐसे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

काम नहीं करेगा कहते हो कि हम ईश्वरीय औलाद हैं और फिर विकार में जाना, यह तो अपनी सत्यानाश करनी है। कोई भी भूल हो तो झट बाप को बता दो। विकर्म बिगर रह नहीं सकते हो तो यहाँ नहीं आओ तो बेहतर है। नहीं तो वायुमण्डल खराब हो जाता है। तुम्हारे बीच में कोई बगुला वा अशुद्ध खाने वाला बैठे तो कितना खराब लगे। बाप कहते हैं कि ऐसे को ले आने वाले पर दोष आ जाता है। दुनिया में ऐसे सत्संग तो बहुत हैं, जाकर वहाँ भक्ति करो। भक्ति के लिए हम मना नहीं करते हैं। भगवान आते हैं पवित्र बनाने के लिए, पवित्र वैकुण्ठ का वर्सा देने के लिए। बाप कहते हैं कि सिर्फ बाप और वर्से को याद करो। बस और खान-पान के परहेज़ की युक्तियां भी बताते हैं। परहेज के लिए बहुत प्रकार की युक्तियां भी रख सकते हैं। तबियत ठीक नहीं है, डाक्टर ने मना की है। अच्छा आप कहते हो तो हम फल ले लेते हैं। अपना बचाव करने के लिए ऐसा कहना कोई झूठ नहीं है। बाबा मना नहीं करते हैं। ऐसे बच्चों की तलाश में बाबा है, जो बिल्कुल मीठे हों, कोई पुराना स्वभाव नहीं होना चाहिए। सर्विसएबुल, वफादार, फरमानवरदार हों। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. इस मायावी दुनिया में हर बात में दुःख है। इसलिए इस पुरानी दुनिया में कोई भी आश नहीं रखनी है। भल माया के तुफान आयें लेकिन कभी भी कुसंकल्पित नहीं बनना है।

२. खान-पान की बहुत परहेज रखनी है, पार्टी आदि में जाते बहुत युक्ति से चलना है।

वरदान:- परमात्म श्रीमत के आधार पर हर कदम उठाने वाले अविनाशी वर्से के अधिकारी भव

संगमयुग पर आप श्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं को जो परमात्म श्रीमत मिल रही है—यह श्रीमत ही श्रेष्ठ पालना है। बिना श्रीमत अर्थात् परमात्म पालना के एक कदम भी उठा नहीं सकते। ऐसी पालना सतयुग में भी नहीं मिलेगी। अभी प्रत्यक्ष अनुभव से कहते हो कि हमारा पालनहार स्वयं भगवान है। यह नशा सदा इमर्ज रहे तो बेहद के खजानों से भरपूर स्वयं को अविनाशी वर्से के अधिकारी अनुभव करेंगे।

स्लोगन:-

सपूत बच्चा वह है जो सम्पूर्ण पवित्र और योगी बन स्नेह का रिटर्न देता है।

PDF compressed with CVISION PDFCompressor

11.1.93. प्रातःक्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-तुम पीस स्थापन करने के निमित्त हो इसलिए तुम्हें बहुत2पीस में रहना है, बुद्धि में रहे कि हम एडाप्टेड बच्चे आपस में भाई बहन है"

प्रश्नः-पूरा सरेन्डर किसे कहेंगे?उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तरः-पूरा सरेन्डर वह जिनकी बुद्धि में रहता कि हम ईश्वरीय माँ बाप से पलते हैं। बाबा यह सब कुछ आपका है।आप हमारी पालना करते हो।भल कोई नौकरी आदि करते हैं लेकिन बुद्धि से समझते हैं यह सब बाबा के लिए है।बाबा को मदद करते रहते तो ऐसे बच्चे ही अर्पण बुद्धि हैं। वह शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते भी निरन्तर बेहद के मात पिता को याद करते हैं। ऊँच पद पाने के लिए अच्छी रीति पढ़ते और पढ़ाते हैं।

गीतः-ओम् नमो शिवाए..ओमशान्ति।यह गीत तो है गायन।वास्तव में महिमा सारी ऊँच ते ऊँच परमात्मा की है, जिसको बच्चे जानते हैं और बच्चों द्वारा सारी दुनिया भी जानती है कि मात पिता हमारा वही है।अब तुम मात पिता के साथ कुटुम्ब में बैठे हो। श्रीकृष्ण को तो मात-पिता कह नहीं सकते।भल उनके साथ राधे भी हो तो भी उनको माता पिता नहीं कहेंगे क्योंकि वह तो प्रिन्स-प्रिन्सेज हैं। शास्त्रों में यह भूल है।अब यह बेहद का बाप तुमको सभी शास्त्रों का सार बताते हैं।भल इस समय सिर्फ तुम बच्चे सम्मुख बैठे हो।कोई बच्चे भल दूर हैं।परन्तु वह भी सुन रहे हैं। वे जानते हैं कि मात-पिता हमको सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज़ समझा रहे हैं और सदा सुखी बनाने का रास्ता या युक्ति बता रहे हैं। यह हूबहू जैसा घर है।थोड़े बच्चे यहाँ हैं, बहुत तो बाहर हैं।यह है ब्रह्मा मुख वंशावली, नई रचना है।वह हो गई पुरानी रचना।बच्चे जानते हैं कि बाबा हमको सदा सुखी बनाने आये हैं।लौकिक माँ बाप भी बच्चे को बड़ाकर स्कूल में ले जाते हैं।यहाँ बेहद का बाप हमको पढ़ा भी रहे हैं।हमारी पालना भी कर रहे हैं। तुम बच्चों को अब एक के सिवाए दूसरा कोई रहा कने नहीं है। माँ बाप भी समझते हैं-यह हमारे बच्चे हैं।लौकिक कुटुम्ब होगा तो [illegible] बच्चे होंगे। 2-3शादी की होगी।यहाँ तो यह सब बाबा के बच्चे बैठे हैं।जितने भी बच्चे पैदा करने हैं सो अभी ही ब्रह्मा मुख कमल द्वारा करने हैं।पीछे तो बच्चे पैदा करने हो नहीं हैं। सभी को वापिस जाना है।यह एक ही एडाप्टेड माता निमित्त है।यह बड़ी वन्डरफुल बात है।यह तो जरूर है-गरीब का बच्चा समझेगा कि हमारा बाप गरीब है।साहूकार का बच्चा समझेगा कि हमारा बाप साहूकार है।वह तो अनेक माँ बाप हैं।यह तो सारे जगत का एक ही मात पिता है।तुम सभी जानते हो कि हम उनके मुख से एडाप्ट हुए हैं।यह हमारा पारलौकिक माँ बाप है।यह आते ही पुरानी सृष्टि में हैं। जब मनुष्य बहुत2दुखी होते हैं। बच्चे जानते हैं कि हमने इस पारलौकिक मात-पिता की गोद ली है।हम सब आपस में भाई बहन हैं।दूसरा कोई हमारा सम्बन्ध नहीं है। तो भाई बहन को आपस में बहुत मीठा, रॉयल, पीसफुल, लॉफुल, ब्लिसफुल बनना चाहिए। जबकि तुम पीस स्थापन कर रहे हो तो तुमको भी बहुत पीस में रहना चाहिए।बच्चों को यह तो बुद्धि में होना चाहिए कि हम पारलौकिक बाप के एडाप्टेड बच्चे हैं।परमधाम से बाप आये हैं। यह है ग्रेन्डफादर(दादा) और यह है दादा-बड़ा भाई। जो पूरे सरेन्डर हैं वह समझेंगे हम ईश्वरीय माँ बाप से पलते हैं।बाबा यह सब कुछ आपका है। आप हमारी पालना करते हो। जो बच्चे अर्पण होते हैं उनसे सभी की पालना हो जाती है।भल कोई नौकरी करते हैं तो भी समझते हैं यह सब कुछ बाबा के लिए है। तो बाप को भी मदद करते रहते हैं।नहीं तो यज्ञ की कारोबार कैसे चले।राजा रानी को भी मात पिता कहते हैं।परन्तु वह फिर भी जिस्मानी मात-पिता हुए।राज माता भी कहते हैं तो राज पिता भी कहते हैं।यह फिर है बेहद के।बच्चे जानते हैं कि हम मात पिता के साथ बैठे हैं। यह भी बच्चे जानते हैं कि हम जितना पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे। साथ2शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी करना है।यह दादा भी बुजुर्ग है। शिवबाबा को कभी बुढ़ा वा जवान नहीं कहेंगे।वह है ही निराकार। यह भी तुम जानते हो कि तुम आत्माओं को निराकार बाप ने एडाप्ट किया है और फिर साकार में है यह ब्रह्मा।हम आत्मा कहती है हमने बाप को अपना बनाया है। फिर नीचे आओ तो कहेंगे हम भाई बहिनों ने ब्रह्मा को अपना बनाया है।

compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शिवबाबा कहते हैं-तुम भी ब्रह्मा द्वारा हमारी ब्रह्मा मुख वंशावली बने हो।ब्रह्मा भी कहते हैं तुम हमारे बच्चे बने हो।तुम ब्राह्मणों की बुद्धि में श्वांसों श्वांस यही चलेगा-कि यह हमारा बाप है।वह हमारा दादा है।बाप से जास्ती दादे को याद करते हैं।वह मनुष्य तो बाप से झगड़ा आदि कर भी दादे से प्रापर्टी लेते हैं।तुमको भी कोशिश कर बाप से भी जास्ती दादे से वर्सा लेना है।बाबा जब पूछते हैं तो सभी कहते हैं हम नारायण को वरेंगे।कोई2नये आते थे, पवित्र नहीं रह सकते तो वह हाथ नहीं उठा सकते।कह देते माया बड़ी प्रबल है।वह तो कह भी नहीं सकते कि हम श्री नारायण को वा श्री लक्ष्मी को वरेंगे।देखो जब बाबा सम्मुख सुनाते हैं तो कितना खुशी का पारा चढ़ता है। बुद्धि को रिफ्रेश किया जाता है तो नशा चढ़ता है फिर कोई2बच्चे को वह नशा स्थाई रहता है,कोई2का कम हो जाता है।बेहद के बाप को याद करना है,84जन्मों को याद करना है और चक्रवर्ती राजाई को भी याद करना है।जो मानने वाले नहीं होंगे उनको याद नहीं रहेगी।(बापदादा समझ जाते हैं कि कोई 2 कहते तो हैं परन्तु सच्चा2याद करते नहीं हैं और न लक्ष्मी न नारायण को वरने लायक हैं।) चलन ही ऐसी है। अन्तर्यामी बाप हर एक की बुद्धि को समझते हैं।यहाँ शास्त्रों की तो कोई बात ही नहीं।बाप ने आकर राजयोग सिखाया है।जिसका नाम गीता रखा है।बाकी तो सब छोटे मोटे धर्मों वाले अपना2शास्त्र बना लेते हैं। फिर वह पढ़ते रहते हैं। बाबा कहते हैं-बच्चे मैं तुमको स्वर्ग की राह बताने आया हूँ।तुम जैसे अशरीरी आये थे वैसे ही तुमको जाना है।देह सहित सब इन दुखों के कर्मबन्धन को छोड़ देना है क्योंकि देह भी दुख देती है। बीमारी होगी तो क्लास में आ नहीं सकेंगे। तो यह भी देह का बंधन हो गया।इसलिए बुद्धि बड़ी सालिम चाहिए।पहले तो निश्चय चाहिए कि बरोबर बाबा स्वर्ग रचता है।अभी तो है नर्क।जब कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग गया,तो जरूर नर्क में था ना।परन्तु यह तुम अभी समझते हो क्योंकि तुम्हारी बुद्धि में स्वर्ग है। बाबा रोज़2 नये2रीति से समझाते हैं तो तुम्हारी बुद्धि में अच्छी रीति बैठे। हमारा बेहद का मात पिता है। तो पहले बुद्धि [illegible] ही पण्डा बनते हैं।यहाँ शिवबाबा खुद आते हैं परमधाम से।कहते हैं हे आत्मायें तुमको यह शरीर छोड़ शिव पुरी चलना है। जहाँ जाना है वह निशाना जरूर याद रहेगा।वह बद्रीनाथ चैतन्य में आकर बच्चों को साथ ले जाये,ऐसे तो हो नहीं सकता।वह तो यहाँ का रहवासी है।यह परमपिता परमात्मा कहते हैं मैं परमधाम का रहवासी हूँ।तुमको लेने लिए आया हूँ। वह रूहानी बाप कहते हैं मुझे याद करो।बाप ऐसी युक्ति से यात्रा सिखाते हैं जो जब विनाश हो तो तुम आत्मा शरीर छोड़ सीधा बाप के पास चले जायेंगे फिर तो शुद्ध आत्मा को शुद्ध शरीर चाहिए।सो तब होगा जब इस पुरानी सृष्टि का विनाश हो।मच्छरों सदृश्य सभी वापिस चले जायेंगे, बाबा के साथ। इसलिए उनको खिवैया भी कहा जाता है। इस विषय सागर से उस पार ले जाते हैं। जैसे हमारी आत्मा है वैसे बाबा की आत्मा है। सिर्फ हम पहले अज्ञानी थे वह ज्ञान का सागर है। अज्ञानी उसको कहा जाता है जो रचता और रचना को नहीं जानते हैं।रचता द्वारा जो रचता और रचना को जानते हैं उनको ज्ञानी कहा जाता है। यह ज्ञान तुमको यहाँ मिलता है।सतयुग में नहीं मिलता। वो लोग कहते हैं परमात्मा

a) विश्व का मालिक है।जैसे फर्रुखाबाद वाले कहते हैं हम उस मालिक को याद करते हैं।परन्तु वास्तव में विश्व का अथवा सृष्टि का मालिक तो ल०ना०बनते हैं। निराकार शिवबाबा तो विश्व का मालिक बनते नहीं।तो उन्हों से पूछना पड़े कि वह मालिक निराकार है या साकार। निराकार तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके। वह है ब्रह्माण्ड का मालिक।वही आकर पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। खुद पावन दुनिया का मालिक नहीं बनते।उनका मालिक तो लक्ष्मी नारायण बनते हैं और बनाने वाला है बाप। यह बड़ी गुह्य बातें हैं समझने की।हम आत्मा भी जब ब्रह्म तत्व में रहती है तो ब्रह्माण्ड के मालिक हैं। जैसे राजा रानी कहेंगे हम भारत के मालिक हैं तो प्रजा भी कहेगी हम मालिक हैं।वहाँ रहते तो हैं बच्चे जैसे बाप ब्रह्माण्ड का मालिक है। हम भी मालिक ही ठहरे। फिर बाबा आकर नई मनुष्य सृष्टि

This document is created by CVISION PDFCompressor

रचते हैं।कहते हैं मुझे इस पर राज्य नहीं करना है। मैं मनुष्य नहीं बनता हूँ। मैं तो यह शरीर भी लोन लेता हूँ। तुमको सृष्टि का मालिक बनाने के लिए राजयोग सिखलाता हूँ। तुम जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे। इसमें कभी गफलत करो। टीचर तो सभी को पढ़ाते हैं।अगर इम्तहान में बहुत पास होते हैं तो टीचर का भी शो होता है फिर उनको गवर्मेन्ट से लिफ्ट मिलती है।यह भी ऐसे है। जितना अच्छा पढ़ेंगे उतना अच्छा पद मिलेगा। माँ बाप भी खुश होंगे। इम्तहान में पास होते हैं तो मिठाई बांटते हैं।यहाँ तो तुम रोज़ मिठाई बांटते हो फिर जब इम्तहान में पास हो जाते हो तो उन पर सोने के फूलों की वर्षा होती है। परन्तु तुम्हारे ऊपर कोई आकाश से फूल नहीं गिरेंगे।यह तो कोई की महिमा करने के लिए सोने के फूल बनाकर उन पर डालते हैं।[जैसे दरभंगा का राजा बहुत साहूकार था उनका बच्चा विलायत गया तो पार्टी दी, बहुत पैसा खर्च किया। उसने सोने के फूल बना कर वर्षा की थी।उस पर बहुत खर्चा हो गया।बहुत नाम हुआ था। कहते हैं देखो भारतवासी कैसे पैसे उड़ाते हैं। तुम तो खुद ही सोने के महलों में जाकर बैठेंगे तो तुमको कितना नशा रहना चाहिए। बाप कहते हैं सिर्फ मेरे को और चक्र को याद करो तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा।] कितना सहज है।

तुम बच्चे हो चैतन्य परवाने, बाबा है चैतन्य शमा। तुम कहते हो अभी हमारा राज्य स्थापन होना है। अब सच्चा बाबा आया हुआ है भक्ति का फल देने। बाबा ने खुद बतलाया है मैं आकर कैसे नये ब्राह्मणों की सृष्टि रचता हूँ। मुझे जरूर आना पड़े। तुम बच्चे जानते हो हम ब्रह्माकुमार और कुमारियां हैं। शिवबाबा के पोत्रे हैं। यह फैमली है वन्डरफुल। कैसे देवी देवता धर्म का कलम लग रहा है। झाड़ में क्लीयर है। नीचे तुम बैठे हो। तुम बच्चे कितने सौभाग्यशाली हो मोस्ट बिलवेड बाप बैठ समझाते हैं फिर मैं आया हूँ तुम बच्चों को रावण की जंजीरों से छुड़ाने। रावण ने तुमको रोगी बना दिया है। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो अर्थात् शिवबाबा को याद करो तो तुम्हारी ज्योति जग जायेगी। फिर तुम उड़ने के लायक बन जायेंगे। माया ने सबके पंख तोड़ डाले हैं। अच्छा-

मीठे2सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- {1} बुद्धि को सालिम बनाने के लिए देह में रहते, देह के बन्धन से न्यारा रहना है। अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। बीमारी आदि के समय भी बाप की याद में रहना है।

{2} पारलौकिक मात पिता के बच्चे बने हैं इसलिए बहुत2मीठा रॉयल, पीसफुल, नालेजफुल और ब्लिसफुल रहना है। पीस में रह पीस स्थापन करनी है।

निश्चयबुद्धि और बेफिकर बादशाह बनो:-

1- निश्चय के फाउन्डेशन के 4 स्तम्भ हैं- बाप में निश्चय के साथ2 अपने श्रेष्ठ स्वमान को, ब्राह्मण परिवार को और इस पुरुषोत्तम युग के समय के महत्व को यथार्थ जानना, मानना और उसी प्रमाण चलना ही सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि बनना है। निश्चयबुद्धि अर्थात् त्रिकालदर्शी बनकर हर बात सुनो और बोलो। नालेजफुल होकर हर कर्म के परिणाम को जानकर कर्म करो तो निश्चय और विजय की समानता बेफिकर बादशाह बना देगी।

1- झांसी (मुम्बई) सेवा केन्द्र का फोन नं. बदली हुआ है, नया नं. 2745 है।
2- कन्नौज (कर्नाटक) सेवा केन्द्र का फोन नं. 3306 है।
3- [illegible] (महा.) सेवा केन्द्र का फोन नं. 42103 है।

ompression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompre

28-1-98 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम पीस स्थापन करने के निमित्त हो, इसलिए बहुत-बहुत पीस में रहना है, बुद्धि में रहे कि हम बाप के एडाप्टेड बच्चे आपस में भाई-बहन हैं"

प्रश्न:- पूरा सरेण्डर किसे कहेंगे, उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- पूरा सरेण्डर वह, जिनकी बुद्धि में रहता कि हम ईश्वरीय माँ-बाप से पलते हैं। बाबा यह सब कुछ आपका है, आप हमारी पालना करते हो। भल कोई नौकरी आदि करते हैं लेकिन बुद्धि से समझते हैं यह सब बाबा के लिए है। बाप को मदद करते रहते, उससे इतने बड़े यज्ञ की कारोबार चलती, सबकी पालना होती... ऐसे बच्चे भी अर्पण बुद्धि हुए। साथ-साथ पद ऊंचा पाने के लिए पढ़ना और पढ़ाना भी है। शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते हुए बेहद के मात-पिता को श्वांसों श्वांस याद करना है।

गीत:- ओम् नमो शिवाए...ओम् शान्ति।

यह गीत तो है गायन। वास्तव में महिमा सारी है ही ऊंचे ते ऊंचे परमात्मा की, जिसको बच्चे जानते हैं और बच्चों द्वारा सारी दुनिया भी जानती है कि मात-पिता हमारा वही है। अब तुम मात-पिता के साथ कुटुम्ब में बैठे हो। श्रीकृष्ण को तो मात-पिता कह नहीं सकते। भल उनके साथ राधे भी हो तो भी उनको माता पिता नहीं कहेंगे क्योंकि वह तो प्रिन्स-प्रिन्सेज हैं। शास्त्रों में यह भूल है। अब यह बेहद का बाप तुमको सभी शास्त्रों का सार बताते हैं। भल इस समय सिर्फ तुम बच्चे सम्मुख बैठे हो। कोई बच्चे भल दूर हैं। परन्तु वह भी सुन रहे हैं। वे जानते हैं कि मात-पिता हमको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझा रहे हैं और सदा सुखी बनाने का रास्ता वा युक्ति बता रहे हैं। यह हू ब हू जैसा घर है। थोड़े बच्चे यहां हैं, बहुत तो बाहर हैं। यह है ब्रह्मा मुख वंशावली, नई रचना है। वह हो गई पुरानी रचना। बच्चे जानते हैं कि बाबा हमको सदा सुखी बनाने आये हैं। लौकिक माँ-बाप भी बच्चों को बड़ा कर स्कूल में ले जाते हैं। यहां बेहद का बाप हमको पढ़ा भी रहे हैं, हमारी पालना भी कर रहे हैं। तुम बच्चों को अब एक के बिगर दूसरा कोई रहा ही नहीं है। माँ-बाप भी समझते हैं - यह हमारे बच्चे हैं। लौकिक कुटुम्ब होगा तो 10-15 बच्चे होंगे, 2-3 शादी की होगी। यहां तो यह सब बाबा के बच्चे बैठे हैं। जितने भी बच्चे पैदा करने हैं सो अभी ही ब्रह्मा मुख कमल द्वारा करने हैं। पीछे तो बच्चे पैदा करने ही नहीं हैं। सभी को वापिस जाना है। यह एक ही एडाप्टेड माता निमित्त है। यह बड़ी वण्डरफुल बात है। यह तो जरूर है गरीब का बच्चा समझेगा कि हमारा बाप गरीब है। साहूकार का बच्चा समझेगा कि हमारा बाप साहूकार है। वह तो अनेक माँ-बाप हैं। यह तो सारे जगत का एक ही माता-पिता है। तुम सभी जानते हो कि हम उनके मुख से एडाप्ट हुए हैं। यह हमारा पारलौकिक माँ-बाप है। यह आते ही पुरानी सृष्टि में हैं, जब मनुष्य बहुत-बहुत दु:खी होते हैं। बच्चे जानते हैं कि हमने इस पारलौकिक मात-पिता की गोद ली है। हम सब आपस में भाई-बहन हैं। दूसरा कोई हमारा सम्बन्ध नहीं है। तो भाई-बहन को आपस में बहुत मीठा, रॉयल, पीसफुल, नॉलेजफुल,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy

ब्लिसफुल बनना चाहिए। जबकि तुम पीस स्थापन कर रहे हो तो तुमको भी बहुत पीस में रहना चाहिए। बच्चों को यह तो बुद्धि में होना चाहिए कि हम पारलौकिक बाप के एडाप्टेड बच्चे हैं। परमधाम से बाप आये हैं। वह है डाडा (ग्रेण्ड फादर) यह दादा (बड़ा भाई) है, जो पूरे सरेण्डर है वे समझेंगे हम ईश्वरीय मां-बाप से पलते है। बाबा यह सब कुछ आपका है, आप हमारी पालना करते हो। जो बच्चे अर्पण होते है उनसे सभी की पालना हो जाती है। भल कोई नौकरी करते है तो भी समझते है यह सब कुछ बाबा के लिए है, तो बाप को भी मदद करते रहते है। नहीं तो यज्ञ का कारोबार कैसे चले। राजा रानी को भी मात-पिता कहते है। परन्तु वह फिर भी जिस्मानी मात-पिता हुए। राज-माता भी कहते है तो राज-पिता भी कहते है। यह फिर है बेहद के। बच्चे जानते है कि हम मात-पिता के साथ बैठे है। यह भी बच्चे जानते है कि हम जितना पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। साथ-साथ शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी करना है। यह दादा भी बुजुर्ग है। शिवबाबा को कभी बूढ़ा वा जवान नहीं कहेंगे। वह है ही निराकार। यह भी तुम जानते हो कि हम आत्माओं को निराकार बाप ने एडाप्ट किया है। और फिर साकार में है यह ब्रह्मा। अहम् आत्मा कहती है हमने बाप को अपना बनाया है। फिर नीचे आओ तो कहेंगे हम भाई बहनों ने ब्रह्मा को अपना बनाया है। शिवबाबा कहते है - तुम ब्रह्मा द्वारा हमारे ब्रह्मा मुख वंशावली बने हो। ब्रह्मा भी कहते हैं तुम हमारे बच्चे बने हो। तुम ब्राह्मणों की बुद्धि में श्वांसों श्वांस यही चलेगा कि यह हमारा बाप है, वह हमारा दादा है। बाप से जास्ती दादे को याद करते हैं। वह मनुष्य तो बाप से झगड़ा आदि करके भी दादे से प्रापर्टी लेते है। तुमको भी कोशिश करके बाप से भी जास्ती दादे से वर्सा लेना है। बाबा जब पूछते हैं तो सभी कहते हैं हम नारायण को वरेंगे। कोई-कोई नये आते थे, पवित्र नहीं रह सकते तो वह हाथ नहीं उठा सकते। कह देते माया बड़ा प्रबल है। वह तो कह भी नहीं सकते कि हम श्री नारायण को वा लक्ष्मी को वरेंगे। देखा, जब बाबा सम्मुख सुनाते है तो कितना खुशी का पारा चढ़ता है। बुद्धि को रिफ्रेश किया जाता है तो नशा चढ़ता है। फिर किसी-किसी को वह नशा स्थाई रहता है, किसी-किसी का कम हो जाता है। बेहद के बाप को याद करना है, 84 जन्मों को याद करना है और चक्रवर्ती राजाई को भी याद करना है। जो मानने वाले नहीं होंगे उनको याद नहीं रहेगी। बापदादा समझ जाते हैं कि बाबा-बाबा कहते तो हैं परन्तु सच-सच याद करते नहीं हैं और न लक्ष्मी-नारायण को वरने लायक है। चलन ही ऐसी है। अन्तर्यामी बाप हर एक की बुद्धि को समझते है। यहाँ शास्त्रों की तो कोई बात ही नहीं। बाप ने आकर राजयोग सिखाया है, जिसका नाम गीता रखा है। बाकी तो छोटे मोटे धर्मो वाले सब अपना-अपना शास्त्र बना लेते हैं फिर वह पढ़ते रहते हैं। बाबा शास्त्र नहीं पढ़े है। कहते है बच्चे - मैं तुमको स्वर्ग की राह बताने आया हूँ। तुम जैसे अशरीरी आये थे, वैसे ही तुमको जाना है। देह सहित सब इन दुःखों के कर्मबन्धन को छोड़ देना है क्योंकि देह भी दुःख देती है। बीमारी होगी तो क्लास में आ नहीं सकेंगे। तो यह भी देह का बन्धन हो गया, इसमें बुद्धि बड़ी सालिम चाहिए। पहले तो निश्चय चाहिए कि बरोबर बाबा स्वर्ग रचता है। अभी तो है नर्क। जब कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग गया,

तो जरूर नर्क में था ना। परन्तु यह तुम अभी समझते हो क्योंकि तुम्हारी बुद्धि में स्वर्ग है। बाबा रोज नये-नये तरीके से समझाते हैं। तो तुम्हारी बुद्धि में अच्छी रीति बैठे। हमारा बेहद का मात-पिता है। तो पहले बुद्धि एकदम ऊपर चली जायेगी। फिर कहेंगे इस समय बाबा आबू में है। जैसे यात्रा पर जाते हैं तो बद्रीनाथ का मन्दिर ऊपर रहता है। पण्डे ले जाते हैं बद्रीनाथ खुद तो ले चलने लिए नहीं आता है। मनुष्य पण्डा बनते हैं। यहां शिवबाबा खुद आते हैं परमधाम से। कहते हैं हे आत्मायें तुमको यह शरीर छोड़ शिवपुरी चलना है। जहाँ जाना है वह निशाना जरूर याद रहेगा। वह बद्रीनाथ चैतन्य में आकर बच्चों को साथ ले जाये, ऐसे तो हो नहीं सकता। वह तो यहां का रहवासी है। यह परमपिता परमात्मा कहते हैं मैं परमधाम का रहवासी हूँ। तुमको लेने लिए आया हूँ। कृष्ण तो ऐसे कह न सके। रुद्र शिवबाबा कहते है, यह रुद्र यज्ञ रचा हुआ है। गीता में भी रुद्र की बात लिखी हुई है। वह रूहानी बाप कहते हैं मुझे याद करो। बाप ऐसी युक्ति से यात्रा सिखाते हैं, जो जब विनाश हो तो तुम आत्मा शरीर छोड़ सीधा बाप के पास चले जायेंगे। फिर तो शुद्ध आत्मा को शुद्ध शरीर चाहिए। सो तब होगा जब इस पुरानी सृष्टि का विनाश हो। मच्छरों सदृश्य सभी वापिस चले जायेंगे, बाबा के साथ। इसलिए उनको खिवैया भी कहा जाता है। इस विषय सागर से उस पार ले जाते हैं। कृष्ण को खिवैया नहीं कह सकते। बाप ही इस दुःख के संसार से सुख के संसार में ले जाते हैं। यही भारत विष्णुपुरी, लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। अब रावणपुरी है। रावण का चित्र भी दिखाना चाहिए। चित्रों से बहुत काम लेना है। जैसे हमारी आत्मा है वैसे बाबा की आत्मा है। सिर्फ हम पहले अज्ञानी थे, वह ज्ञान का सागर है। अज्ञानी उसको कहा जाता है जो रचता और रचना को नहीं जानते हैं। रचता द्वारा जो रचता और रचना को जानते हैं उनको ज्ञानी कहा जाता है। यह ज्ञान तुमको यहां मिलता है। सतयुग में नहीं मिलता। वो लोग
a) कहते हैं परमात्मा विश्व का मालिक है। मनुष्य उस मालिक को याद करते हैं। परन्तु वास्तव में विश्व का अथवा सृष्टि का मालिक तो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। निराकार शिवबाबा तो विश्व का मालिक बनता नहीं। तो उन्हों से पूछना पड़े कि वह मालिक निराकार है या साकार? निराकार तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके। वह है ब्रह्माण्ड का मालिक। वही आकर पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। खुद पावन दुनिया का मालिक नहीं बनते। उनका मालिक तो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं और बनाने वाला है बाप। यह बड़ी गुह्य बातें हैं समझने की। हम आत्मा भी जब ब्रह्म तत्व में रहती हैं तो ब्रह्माण्ड के मालिक हैं। जैसे राजा रानी कहेंगे हम भारत के मालिक हैं तो प्रजा भी कहेगी हम मालिक हैं। वहां रहते तो हैं ना। वैसे बाप ब्रह्माण्ड का मालिक है, हम भी मालिक ही ठहरे। फिर बाबा आकर नई मनुष्य सृष्टि रचते हैं। कहते हैं मुझे इस पर राज्य नहीं करना है, मैं मनुष्य नहीं बनता हूँ। मैं तो यह शरीर भी लोन लेता हूँ। तुमको सृष्टि का मालिक बनाने राजयोग सिखाता हूँ। तुम जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना पद ऊंचा पायेंगे, इसमें कमी मत करो। टीचर तो सभी को पढ़ाते हैं। अगर इम्तहान में बहुत पास होते हैं तो टीचर का भी शो होता है। फिर उनको गवर्मेन्ट से लिफ्ट मिलती है। यह भी ऐसे है। जितना अच्छा पढ़ेंगे उतना अच्छा पद मिलेगा। माँ-बाप भी खुश होंगे। इम्तहान में पास

Compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

होते हैं तो मिठाई बाँटते हैं। यहां तो तुम रोज मिठाई बाँटते हो। फिर जब इम्तहान में पास हो जाते हो तो सोने के फूलों की वर्षा होती है। तुम्हारे ऊपर कोई आकाश से फूल नहीं गिरेंगे परन्तु तुम एकदम सोने के महलों के मालिक बन जाते हो। यह तो कोई की महिमा करने के लिए सोने के फूल बनाकर उन पर डालते हैं। जैसे दरभंगा का राजा बहुत साहूकार था, उनका बच्चा विलायत गया तो पार्टी दी, बहुत पैसा खर्च किया। उसने सोने के फूल बनाकर वर्षा की थी। उस पर बहुत खर्चा हो गया। बहुत नाम हुआ था। कहते थे देखो भारतवासी कैसे पैसे उड़ाते हैं। तुम तो खुद ही सोने के महलों में जाकर बैठेंगे तो तुमको कितना नशा रहना चाहिए। बाप कहते हैं सिर्फ मेरे वंश और चक्र को याद करो तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। कितना सहज है।

तुम बच्चे हो चेतन्य परवाने, बाबा है चेतन्य शमा। तुम कहते हो अभी हमारा राज्य स्थापन होना है। अब सच्चा बाबा आया हुआ है भक्ति का फल देने। बाबा ने खुद बतलाया है मैं कैसे आकर नये ब्राह्मणों की सृष्टि रचता हूँ। मुझे जरूर आना पड़े। तुम बच्चे जानते हो हम ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ हैं। शिवबाबा के पोत्रे हैं। यह फैमली है वण्डरफुल। देवी-देवता धर्म का कलम लग रहा है। झाड़ में क्लीयर है। नीचे तुम बैठे हो। तुम बच्चे कितने सौभाग्यशाली हो। मोस्ट बिलवेड बाप बैठ समझाते हैं कि मैं आया हूँ तुम बच्चों को रावण की जंजीरों से छुड़ाने। रावण ने तुमको रोगी बना दिया है। अब सन्यासी आदि तुम्हारे आगे झुकने वाले हैं। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो अर्थात् शिवबाबा को याद करो इससे तुम्हारी ज्योति जगेगी, फिर तुम उड़ने लायक बन जायेंगे। माया ने सबके पंख तोड़ डाले हैं। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बुद्धि को सात्विक बनाने के लिए देह में रहते, देह के बन्धन से न्यारा रहना है। अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। बीमारी आदि के समय भी बाप की याद में रहना है।

२- पारलौकिक मात पिता के बच्चे बने हैं, इसलिए बहुत-बहुत मीठा, रॉयल, पीसफुल, नॉलेजफुल और ब्लिसफुल रहना है। पीस में रह पीस स्थापन करनी है।

वरदान:- श्रेष्ठ कर्मधारी बन ऊंची तकदीर बनाने वाले पदमापदम भाग्यशाली भव

जिसके जितने श्रेष्ठ कर्म हैं उसकी तकदीर की लकीर उतनी लम्बी और स्पष्ट है। तकदीर बनाने का साधन है ही श्रेष्ठ कर्म। तो श्रेष्ठ कर्मधारी बनो और पदमापदम भाग्यशाली की तकदीर प्राप्त करो। लेकिन श्रेष्ठ कर्म का आधार है श्रेष्ठ स्मृति। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाप की स्मृति में रहने से ही श्रेष्ठ कर्म होंगे। इसलिए जितना चाहो उतना लम्बी भाग्य की लकीर खींच लो। इस एक जन्म में अनेक जन्मों की तकदीर बन सकती है।

स्लोगन:-

अपने सन्तुष्टता की पर्सनैलिटी द्वारा अनेकों को सन्तुष्ट करना ही सन्तुष्टमणि बनना है।

compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompress

20-11-08 प्रातः क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" अव्यक्त बापदादा याद है?

"मीठे बच्चे-हे अंतिम पल सब कुछ खत्म होने वाला है, इसलिए तुम्हें पुरानी दुनिया के समाचार सुनने की दरकार नहीं, तुम बाप और घर को याद करो"

प्रश्न:- श्रीमत के लिए गायन कौन सा है? श्रीमत पर चलने वालों की निशानी सुनाओ?

उत्तर:- श्रीमत के लिए गायन है, जो खिलायेंगे, जो पहनायेंगे, जहाँ बिठायेंगे... वही करेंगे। श्रीमत पर चलने वाले बच्चे बाप की हर आज्ञा का पालन करते हैं। उनसे सदा श्रेष्ठ कर्म होते हैं। वे कभी श्रीमत में अपनी मनमत मिक्स नहीं करते। उनको राइट और रांग की समझ होती है

गीत:- बनवारी रे... ओमशान्ति। यह गीत किसका है? बच्चों का। कोई गीत होता है- जिसमें बाप समझाते हैं, इसमें बच्चे कहते हैं कि बाबा अब तो हम समझ गये, दुनिया को तो पता नहीं। पतित बनती यह झूठी दुनिया है। झूठे बंधन हैं। यहाँ सब दुःखी हैं, तब ईश्वर को याद करते हैं। सतयुग में तो ईश्वर से मिलने की बात ही नहीं है। यहाँ दुःख है तब आत्माओं को याद पड़ता है- परन्तु ईश्वर अथवा बाप मिलते ही तब हैं जब स्वयं आते हैं। बाकी और जो भी पुरुषार्थ करते हैं सब व्यर्थ। क्योंकि ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हैं। ईश्वर का रास्ता गलत बताते हैं। अगर कहें कि ईश्वर और उनकी रचना के आदि मध्य अन्त को हम नहीं जानते हैं तो यह नास्तिकपना है। आगे ऋषि मुनि आदि सब कहते थे, उसी समय है रजोगुणी। उस समय झूठी दुनिया नहीं कहेंगे। झूठी दुनिया नर्क कलियुग अन्त को कहते हैं। संगम पर कहेंगे यह नर्क है, वह स्वर्ग है। त्रेता नहीं, द्वापर और नर्क कहेंगे। उस समय फिर भी रजोप्रधान बुद्धि है। अभी है तमोप्रधान। तो हेल कहाँ है, फिर संगम पर लिखेंगे। आज हेल है, कल हेविन होगा। यह भी बाप आकर समझाते हैं, दुनिया नहीं जानती कि इस समय कलियुग का अन्त है। सब अपना-अपना हिसाब किताब चुक्तू कर अन्त में सतोप्रधान बनते हैं फिर सतो रजो तमो में आना ही है, जिनका एक दो जन्म का पार्ट है वह भी सतो रजो तमो में आते हैं। उन्हों का पार्ट ही थोड़ा है। इसमें बड़ी समझ चाहिए। दुनिया में तो अनेक मत वाले मनुष्य हैं, सबकी एक मत तो नहीं होती। हरेक का अपना-अपना धर्म है।

a) तब बाबा कहते हैं- 7-8 की पार्टी आती है तो हर एक से फार्म भराना है। हर एक की गति-मति अपनी-अपनी है। बाप का आक्यूपेशन अलग, हरेक आत्मा का अलग-अलग है। धर्म भी अलग-अलग है। तो उनके लिए समझानी भी अलग-अलग चाहिए। नाम रूप देश काल सबका अलग है। देखने में आता है यह फलाने धर्म का है। हिन्दू धर्म तो सब कहते हैं परन्तु उनमें भी सब भिन्न-भिन्न हैं। कोई आर्य-समाजी, कोई सन्यासी, कोई ... गुरु ... सन्यासी आदि जो भी हैं सबको हिन्दू धर्म में मानते हैं। हम पूछें कि हम ब्राह्मण धर्म के हैं अथवा देवता धर्म के हैं तो भी वह हिन्दू में लगा देते हैं। क्योंकि और कोई नाम तो उन्हों के पास है नहीं। तो हरेक का, धर्म अलग होने से मालूम पड़ेगा और कोई धर्म वाला होगा तो इन बातों को मानेगा नहीं। फिर उनको इस्टेब्लिश करना मुश्किल है। और धर्म वाला होगा तो समझेगा कि यह तो अपने धर्म की महिमा करते हैं। इनमें द्वैत है। समझाने वाले बच्चे भी नम्बरवार हैं। सब एक समान तो हैं नहीं। इसलिए महारथियों को मंगाते हैं। बाबा ने समझाया मुझे याद करो। मेरी श्रीमत पर चलो इसमें प्रेरणा आदि की बात नहीं। अगर प्रेरणा से काम हो तो फिर बाप के आने की दरकार ही नहीं। शिवबाबा तो यहाँ है तो उनको प्रेरणा करने की क्या दरकार है। यह तो बाप की मत पर चलना होता है। प्रेरणा की बात नहीं। कोई-कोई सन्देशियाँ सन्देश ले आती हैं, उसमें भी बहुत मिक्स हो जाता है। सन्देशी तो सब एक जैसी हैं नहीं। माया का बहुत इन्टरफियर होता है।

b) इसलिए देखना होता है पैगाम ठीक लाया है। यह बात ऐसी हो सकती है या नहीं? फिर दूसरी सन्देशी से वेरीफाय कराना होता है। बाबा के पास समाचार आता है- फलानी सन्देशी ने यह सन्देश लाया है तो बाबा झट से लिख देते वेरीफाय कराओ। विचार किया जाता है- हम किसको मंगाते हैं, अगर आप और दो एक को बैठ निंदा करें तो एकदम खराब असर हो जाए ऐसे नहीं सन्देशी ने जो सन्देश लाया, वह सत्य है। आजकल तो गांवड़ों में भी ध्यान में जाते हैं फिर उल्टा सुल्टा सन्देश ले आते हैं। अपना अलग सेन्टर खोल बैठते हैं- माया का प्रवेश हो जाता है। यह बड़ा समझने की बात है। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं, वही इन बातों को समझ सकते हैं। जो श्रीमत पर हैं नहीं ...

compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

खिलायेंगे, जो पहनायेंगे, जहाँ बिठायेंगे, वह करेंगे। ऐसे कोई तो बाप की मत पर चलते हैं कोई कोई वस्तु नहीं मिलती तो झट बिगड़ पड़ते। सब थोड़ेही एक जैसे सपूत बच्चे हो सकते हैं। दासियाँ में भी देरी की देर मत वाले हैं। अजामिल जैसी पापात्मायें गणिकायें बहुत हैं। यह तो है ही रावणराज्य। यह भी समझाना पड़ता है। ईश्वर सर्वव्यापी कहना रांग है। सर्वव्यापी तो 5 विकार हैं। इसलिए बाप कहते हैं यह आसुरी दुनिया है। सतयुग में 5 विकार होते नहीं। कहते हैं शास्त्रों में [illegible] परन्तु शास्त्र तो सब मनुष्यों ने बनाये हैं। जो [illegible] मनुष्य [illegible] व्यास ने लिखा वह भी मनुष्य था ना। यह तो निराकारी बाप बैठ समझाते हैं। धर्म स्थापकों ने आकर के सुनाया उसका फिर बाद में शास्त्र बनता है। जैसे गुरुनानक ने सुनाया, बाद में फिर ग्रंथ बनता है। तो जिसने सुनाया उसका नाम हो गया। गुरु नानक ने भी उसकी महिमा गाई है। सबका बाप वह एक है। वह है पैगाम ले आने वाला। बाप कहते हैं जाकर धर्म स्थापन करो। यह बेहद का बाप कहते हैं-मुझे तो कोई भेजने वाला नहीं। शिवबाबा खुद बैठ समझाते हैं। यह है मैसेज ले आने वाले, मुझे कोई भेजने वाला नहीं। मुझे मैसेन्जर वा पैगम्बर नहीं कहेंगे। मैं तो आता हूँ बच्चों को सुख शान्ति देने। मुझे कोई ने कहा नहीं। मैं तो खुद

c) मालिक हूँ। फर्रुखाबाद में मालिक को मानते हैं ना। तुमने मालिक का अर्थ भी समझा है। वह है मालिक, हम उनके बच्चे हैं। तो जरूर वर्सा मिलना चाहिए बच्चे कहते हैं-हमारा बाबा। तो बाप के धन के तुम मालिक हो। "मेरा बाबा" बच्चे ही कहेंगे। मेरा बाबा तो फिर बाबा का धन भी मेरा है। अभी हम क्या कहते हैं-हमारा शिवबाबा। बाप भी कहेंगे यह हमारे बच्चे हैं। बाप से बच्चों को वर्सा मिलता है। बाप की प्रापर्टी जरूर होती है। बेहद का बाप है ही स्वर्ग का रचयिता। भारतवासियों को भी प्रापर्टी किससे मिलती है? शिवबाबा से। शिव जयन्ती भी मनाते हैं। शिव जयन्ती के बाद फिर होगी कृष्ण जयन्ती। फिर राम जयन्ती। बस गम्मा ब्रह्मा की जयन्ती, वा जगदम्बा की जयन्ती तो कोई गाते नहीं। शिव जयन्ती फिर राधे कृष्ण जयन्ती फिर राम सीता जयन्ती। जब शिवबाबा आये तब शूद्र राज्य विनाश हो। यह राज़ भी कोई समझते नहीं। बाप बैठ समझाते हैं वह आते हैं जरूर। बाप को क्यों बुलाते हैं। श्रीकृष्णपुरी स्थापन करने। तुम जानते हो शिव जयन्ती बरोबर होती है। शिवबाबा नालेज दे रहे हैं। आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। शिव जयन्ती है बड़े ते बड़ी जयन्ती। फिर है ब्रह्मा विष्णु शंकर। अब प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य सृष्टि में है। फिर रचना में मुख्य है लक्ष्मी नारायण। तो शिव है मात पिता, फिर मात पिता ब्रह्मा और जगदम्बा भी आ जाते हैं। यह समझने और धारण करने की बातें हैं। पहले2 समझाना पड़ता है बाप परमपिता परमात्मा आते हैं पतितों को पावन करने वह नाम रूप से न्यारा हो तो उनकी जयन्ती कैसे हो सकती। गॉड को फादर कहा। फादर को तो सब जगह मानते हैं। निराकार है ही आत्मा और परमात्मा। आत्माओं को साकार शरीर मिलता है, यह बड़ी समझने की बातें हैं। जो कुछ भी शास्त्र आदि नहीं पढ़ा हुआ हो उनके लिए और ही सहज है। आत्माओं का बाप वह परमपिता परमात्मा स्वर्ग की स्थापना करने वाला है। स्वर्ग में होती है राजाई, तो जरूर उनको आना पड़े। सतयुग में तो आ न सकें। वह है प्रारब्ध, 21 जन्मों का वर्सा संगम पर ही मिलता है। यह संगमयुग है ब्राह्मणों का। ब्राह्मण चोटी हैं फिर हैं देवताओं का युग। हरेक युग का 1250 वर्ष है। अभी 3 धर्म स्थापन होते हैं। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय। क्योंकि फिर आधाकल्प कोई धर्म स्थापन नहीं होता। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी पूज्य थे फिर तुम पुजारी बन जाते हो। वह ब्राह्मण तो किस्म2 के होते हैं। अभी तुम अच्छे कर्म बना रहे हो जो फिर सतयुग में भोगेंगे। बाप अच्छे कर्म सिखलाते हैं। तुम जानते हो हम श्रीमत पर जैसे कर्म करेंगे-औरों को आपसमान बनायेंगे। तो उसकी प्रारब्ध मिलेगी। अभी सतुरी राजधानी स्थापन होती है। आदि सनातन देवी देवताओं की राजधानी होती है। यहाँ है प्रजा का प्रजा पर राज्य। अनेक पंच हैं। नहीं तो 5 पंच होते हैं। यहाँ तो सब पंच ही पंच है। सो भी आज हैं, कल नहीं। आज मिनिस्टर हैं-कल उनको उतार देते हैं एग्रीमेंट कर फिर कैन्सिल कर देते हैं। यह है अल्पकाल का क्षणभंगुर राज्य। किसको भी उतारने में देरी नहीं [illegible] कितनी [illegible] है। [illegible]

[illegible] web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

4-11-03 प्रात:मुरली ओम् शान्ति ''बापदादा'' मधुबन

"मीठे बच्चे – देह सहित यह सब कुछ ख़त्म होने वाला है, इसलिए तुम्हें पुरानी दुनिया के समाचार सुनने की दरकार नहीं, तुम बाप और वर्से को याद करो"

प्रश्न:- श्रीमत के लिए गायन कौन-सा है? श्रीमत पर चलने वालों की निशानी सुनाओ?

उत्तर:- श्रीमत के लिए गायन है – जो खिलायेंगे, जो पहनायेंगे, जहाँ बिठायेंगे........ वही करेंगे। श्रीमत पर चलने वाले बच्चे बाप की हर आज्ञा का पालन करते हैं। उनसे सदा श्रेष्ठ कर्म होते हैं। वे कभी श्रीमत में अपनी मनमत मिक्स नहीं करते। उनमें राइट और रांग की समझ होती है।

गीत:- बनवारी रे......

ओम् शान्ति। यह गीत किसका है? बच्चों का। कोई गीत ऐसे भी होते हैं जिसमें बाप बच्चों को समझाते हैं लेकिन इस गीत में बच्चे कहते हैं कि बाबा, अब तो हम समझ गये, दुनिया को तो पता नहीं कि कैसी यह झूठी दुनिया है, झूठे बंधन हैं। यहाँ सब दु:खी हैं तब तो ईश्वर को याद करते हैं। सतयुग में तो ईश्वर से मिलने की बात ही नहीं है। यहाँ दु:ख है तब आत्माओं को याद पड़ता है परन्तु ड्रामा अनुसार बाप मिलते ही तब हैं जब स्वयं आते हैं। बाकी और जो भी पुरुषार्थ करते हैं सब व्यर्थ है क्योंकि ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हैं, ईश्वर का रास्ता ग़लत बताते हैं। अगर कहें कि ईश्वर और उनकी रचना के आदि, मध्य, अन्त को हम नहीं जानते हैं तो यह बोलना सच है। आगे ऋषि-मुनि आदि सच बोलते थे, उस समय रजोगुणी थे। उस समय झूठी दुनिया नहीं कहेंगे। झूठी दुनिया नर्क, कलियुग अन्त को कहते हैं। संगम पर कहेंगे – यह नर्क है, वह स्वर्ग है। ऐसे नहीं द्वापर को नर्क कहेंगे। उस समय फिर भी रजोप्रधान बुद्धि है। अभी है तमोप्रधान। तो हेल और हेविन संगम पर लिखेंगे। आज हेल है, कल हेविन होगा। यह भी बाप आकर समझाते हैं, दुनिया नहीं जानती कि इस समय कलियुग का अन्त है। सब अपना-अपना हिसाब-किताब चुक्तू कर अन्त में सतोप्रधान बनते हैं फिर सतो, रजो, तमो में आना ही है। जिनका एक-दो जन्म का पार्ट है, वह भी सतो, रजो, तमो में आते हैं। उन्हों का पार्ट ही थोड़ा है। इसमें बड़ी समझ चाहिए। दुनिया में तो अनेक मत वाले मनुष्य हैं। सबकी एक मत तो नहीं होती। हरेक का a) अपना-अपना धर्म है। मत अपनी-अपनी है। बाप का आक्यूपेशन अलग है। हरेक आत्मा का अलग है। धर्म भी अलग है। तो उनके लिए समझानी भी अलग चाहिए। नाम, रूप, देश, काल सबका अलग है। देखने में आता है यह फलाने का धर्म है। हिन्दू धर्म में तो सब कहते हैं परन्तु उनमें भी सब भिन्न-भिन्न हैं। कोई आर्य समाजी, कोई सन्यासी, कोई ब्रह्म समाजी। सन्यासी आदि जो भी हैं सबको हिन्दू धर्म में मानते हैं। हम लिखें कि हम ब्राह्मण धर्म के हैं अथवा देवता धर्म के हैं तो भी वे हिन्दू में लगा देते हैं क्योंकि और कोई सेक्शन तो उन्हों के पास है ही नहीं। तो हरेक का फार्म अलग-अलग होने से मालूम पड़ जायेगा। और कोई धर्म वाला होगा तो इन बातों को मानेगा नहीं। फिर उनको इकट्ठा समझाना मुश्किल है। वे तो समझेंगे कि यह तो अपने धर्म की महिमा करते हैं। इनमें द्वैत है। समझाने वाले बच्चे भी नम्बरवार हैं। सब एक समान तो हैं नहीं इसलिए महारथियों को बुलाते हैं।

बाबा ने समझाया है – मुझे याद करो, मेरी श्रीमत पर चलो। इसमें प्रेरणा आदि की कोई बात नहीं। अगर प्रेरणा से काम हो तो फिर बाप के आने की दरकार ही नहीं। शिवबाबा तो यहाँ है। तो उनको प्रेरणा की क्या दरकार है। यह तो बाप की मत पर चलना होता है। प्रेरणा की बात नहीं। कोई-कोई सन्देशियां सन्देश ले आती हैं, उसमें भी बहुत मिक्स हो जाता है। सन्देशी तो सब एक जैसी हैं नहीं। माया का बहुत इन्टरफियर होता है। दूसरी सन्देशी से वेरीफाय कराना होता है। कई तो कह देते हैं हमारे में बाबा आते हैं, मम्मा आती है फिर अपना अलग सेन्टर खोल बैठते हैं। माया को प्रवेशता हो जाती है। यह बड़ी समझने की बात है। बच्चों को बहुत सेन्सीबुल बनना चाहिए। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं, वही इन बातों को समझ सकते हैं। जो श्रीमत पर नहीं चलते, वह इन बातों को नहीं समझेंगे। श्रीमत के लिए गायन है कि आप जो खिलायेंगे, जो पहनायेंगे, जहाँ बिठायेंगे, वह करेंगे। ऐसे कोई तो बाप की मत पर चलते हैं, कोई फिर दूसरों की मत के प्रभाव में आ जाते हैं। कोई वस्तु नहीं मिली, कोई बात पसन्द नहीं आई तो झट बिगड़ पड़ते हैं। सब थोड़ेही एक जैसे सपूत बच्चे हो सकते हैं। दुनिया में तो ढेर की ढेर मत वाले हैं। अजामिल जैसी पाप आत्माएं, गणिकायें बहुत हैं।

b) यह भी समझाना पड़ता है कि ईश्वर सर्वव्यापी कहना रांग है। सर्वव्यापी तो पांच विकार हैं। इसलिए बाप कहते हैं यह आसुरी दुनिया है। सतयुग में पांच विकार होते नहीं। कहते हैं शास्त्रों में यह बात ऐसे है। परन्तु शास्त्र तो सब मनुष्यों ने बनाए हैं। तो मनुष्य ऊंच हुए या शास्त्र? जरूर सुनाने वाले ऊंच ठहरे ना। लिखने वाले तो हैं मनुष्य। व्यास ने लिखा वह भी मनुष्य था ना। यह तो निराकार बाप बैठ समझाते हैं। धर्म स्थापकों ने जो आकर के सुनाया उसका फिर बाद में शास्त्र बनता है। जैसे गुरुनानक ने सुनाया, बाद में ग्रंथ बनता है। तो जिसने सुनाया उसका नाम हो गया। गुरुनानक ने भी उनकी महिमा गाई है – सबका बाप वह एक है। बाप कहते हैं जाकर धर्म स्थापन करो। यह बेहद का बाप कहते हैं मुझे तो कोई भेजने वाला नहीं। शिवबाबा खुद बैठ समझाते हैं वह है मैसेज ले आने वाले, मुझे कोई भेजने वाला नहीं। मुझे मेसेन्जर वा पैगम्बर नहीं कहेंगे। मैं तो आता हूँ बच्चों को सुख-शान्ति देने। मुझे कोई ने कहा नहीं, मैं तो खुद मालिक हूँ।

c) मालिक को भी मानने वाले होते हैं, परन्तु उनसे पूछना चाहिए कि तुमने मालिक का अर्थ समझा है। वह मालिक है, हम उनके बच्चे हैं तो जरूर वर्सा मिलना चाहिए। बच्चे कहते हैं – हमारा बाबा। तो बाप के धन के तुम मालिक हो। "मेरा बाबा" बच्चे ही कहेंगे। मेरा बाबा तो फिर बाबा का धन भी मेरा। अभी हम क्या कहते हैं? हमारा शिवबाबा। बाप भी कहेंगे यह हमारे बच्चे हैं। बाप से बच्चों को वर्सा मिलता है। बाप के पास प्रापर्टी होती है। बेहद का बाप है ही स्वर्ग का रचयिता। भारतवासियों को भी प्रापर्टी किससे मिलती है? शिवबाबा से। शिव जयन्ती भी मनाते हैं। शिव जयन्ती के बाद फिर होगी कृष्ण जयन्ती, फिर रामजयन्ती। बस, मम्मा-बाबा की जयन्ती वा जगदम्बा की जयन्ती तो कोई गाते नहीं। शिवजयन्ती फिर राधे-कृष्ण की जयन्ती फिर राम-सीता जयन्ती।

जब शिवबाबा आये तब शूद्र राज्य विनाश हो। यह राज़ भी कोई समझते नहीं। बाप बैठ समझाते हैं। वह आते हैं जरूर। बाप को क्यों बुलाते हैं? श्री कृष्णपुरी स्थापन करने। तुम

जानते हो शिवजयन्ती बरोबर होती है। शिवबाबा नॉलेज दे रहे हैं। आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। शिवजयन्ती है बड़े ते बड़ी जयन्ती। फिर है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। अब प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य सृष्टि में है। फिर रचना में मुख्य है लक्ष्मी-नारायण। तो शिव है मात-पिता, फिर मात-पिता ब्रह्मा और जगत अम्बा भी आ जाते हैं। यह समझने और धारण करने की बातें हैं। पहले-पहले समझाना है – बाप परमपिता परमात्मा आते हैं पतितों को पावन करने। वह नाम-रूप से न्यारा हो तो उनकी जयन्ती कैसे हो सकती। गॉड को फादर कहा जाता। फादर को तो सब मानते हैं। निराकार है ही आत्मा और परमात्मा। आत्माओं को साकार शरीर मिलता है, यह बड़ी समझने की बातें हैं। जो कुछ भी शास्त्र आदि नहीं पढ़ा हुआ हो तो उसके लिए और ही सहज है। आत्माओं का बाप वह परमपिता परमात्मा स्वर्ग की स्थापना करने वाला है। स्वर्ग में होती है राजाई, तो जरूर उनको संगम पर आना पड़े। सतयुग में तो आ न सके। वह प्रालब्ध, 21 जन्मों का वर्सा संगम पर ही मिलता है। यह संगमयुग है ब्राह्मणों का। ब्राह्मण हैं चोटी, फिर है देवताओं का युग। हरेक युग 1250 वर्ष का है। अभी 3 धर्म स्थापन होते हैं – ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय क्योंकि फिर आधा कल्प कोई धर्म नहीं होता। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी पूज्य थे फिर पुजारी बन जाते हैं। वह ब्राह्मण तो किस्म-किस्म के होते हैं।

अभी तुम अच्छे कर्म कर रहे हो जो फिर सतयुग में प्रालब्ध पाओगे। बाप अच्छे कर्म सिखलाते हैं। तुम जानते हो हम श्रीमत पर जैसे कर्म करेंगे, औरों को आप समान बनायेंगे तो उसकी प्रालब्ध मिलेगी। अभी सारी राजधानी स्थापन होती है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म की राजधानी होती है। यह है प्रजा का प्रजा पर राज्य। पंचायती राज्य है, अनेक पंच हैं। नहीं तो 5 पंच होते हैं। यहाँ तो सब पंच ही पंच हैं। सो भी आज हैं, कल नहीं। आज मिनिस्टर हैं, कल उनको उतार देते हैं। एग्रीमेंट कर फिर कैन्सिल कर देते हैं। यह है अल्पकाल का क्षण भंगुर राज्य। किसको भी उतारने में देरी नहीं करते हैं। कितनी बड़ी दुनिया है। अखबारों से कुछ ना कुछ पता पड़ता है। इतने सब अखबार तो कोई पढ़ नहीं सकता। हमको इस दुनिया के समाचार की दरकार ही नहीं। यह तो जानते हैं देह सहित सब कुछ इस दुनिया का ख़त्म हो जाने वाला है। बाबा कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो तो तुम मेरे पास आ जायेंगे। मरने के बाद सारा साक्षात्कार होगा। शरीर छोड़कर फिर आत्मा भटकती भी है। उस समय भी हिसाब-किताब भोग सकते हैं। साक्षात्कार सब होता है। अन्दर ही साक्षात्कार करते हैं, भोगना भोगते हैं, बहुत पछताते हैं कि हमने नाहेक ऐसा किया। पश्चाताप होता है ना। कोई जेल बर्ड होते हैं, वह कहते हैं जेल में खाना तो मिलेगा। मतलब खाना खाने से काम है, इज्जत की परवाह नहीं करते। तुमको तो कोई तकलीफ़ नहीं। बाप है तो बाप की श्रीमत पर चलना है। ऐसे भी नहीं, किसको दुःख देंगे। वह तो है ही सुखदाता। आज्ञाकारी बच्चे तो कहेंगे बाबा जो आप डायरेक्शन देंगे। तुम्हीं से बैठूं..... यह शिवबाबा के लिए गाया हुआ है। भागीरथ अथवा नंदीगण भी मशहूर है। लिखा हुआ है ना माताओं के सिर पर कलष रखा। तो वह फिर गऊ दिखाते हैं। क्या-क्या बातें बना दी हैं।

इस दुनिया में कोई एवरहेल्दी हो नहीं सकता। अनेक प्रकार के रोग हैं। वहाँ कोई रोग नहीं है। न कभी अकाले मृत्यु होती है। समय पर साक्षात्कार होता है। बुढ़ों को तो खुशी

होती है। बुढ़े जब होते हैं तो खुशी से शरीर छोड़ते हैं। साक्षात्कार होता है कि हम जाकर बच्चा बनूँगा। अभी तुम जवानों को भी इतनी खुशी है कि हम शरीर छोड़ जाकर प्रिन्स बनेंगे। बच्चे हो वा जवान हो, मरना तो सबको है ना। तो सबको यह नशा रहना चाहिए कि हम जाकर प्रिन्स बनेंगे। जरूर जब सर्विस करो तब तो बनो। खुशी होनी चाहिए – अभी हम पुराना शरीर छोड़ बाबा के पास जायेंगे, बाबा फिर हमको स्वर्ग में भेज देंगे। सर्विस करनी चाहिए। बच्चों ने गीत सुना। बन्सी वाला कृष्ण तो है नहीं। मुरली तो बहुतों के पास होती है। बहुत अच्छी-अच्छी बजाते हैं। इसमें मुरली की बात नहीं। तुम तो कहते हो श्रीमत एक बाप ही देते हैं। श्रीकृष्ण में तो यह नॉलेज थी ही नहीं। यह सहज राजयोग और ज्ञान उसमें था ही नहीं। उसने राजयोग सिखलाया नहीं है। वह तो राजयोग सीखा है बाप के द्वारा। कितनी बड़ी बात है। जब तक कोई बच्चा नहीं बनता तब तक समझ भी नहीं सकता और इसमें फिर श्रीमत पर चलने की बात है। अपनी मत पर चलने से थोड़ेही ऊंच पद पा सकेंगे। बाप को जो जानते हैं वह बाप का परिचय औरों को भी देंगे। बाप और रचना का परिचय देना है। किसको बाप का परिचय नहीं देते तो गोया खुद जानते नहीं। अपने को नशा चढ़ा हुआ है तो औरों को भी चढ़ाना है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. श्रीमत पर सदा श्रेष्ठ कर्म करने हैं। दूसरों की मत के प्रभाव में नहीं आना है। सपूत बन हर आज्ञा का पालन करना है। जो बात समझ में नहीं आती है, उसे वेरीफाय जरूर कराना है।

२. सदा इसी नशे वा खुशी में रहना है कि हम यह पुराना शरीर छोड़ प्रिन्स बनेंगे। नशे में रह ईश्वरीय सेवा करनी है।

वरदान:- कराने वाला करा रहा है - इस स्मृति द्वारा निमित्त बन हर कर्म करने वाले बेपरवाह बादशाह भव

चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है – इस स्मृति द्वारा निमित्त बनकर हर कर्म करते चलो तो बेपरवाह बादशाह रहेंगे। "मैं कर रहा हूँ" - यह भान आया तो बेपरवाह नहीं रह सकते। लेकिन बाप द्वारा निमित्त बना हुआ हूँ - यह स्मृति बेफिकर वा निश्चिंत जीवन का अनुभव कराती है, कल क्या होगा उसकी भी चिंता नहीं। उन्हें यह निश्चय रहता कि जो हो रहा है वह अच्छा और जो होने वाला है वह और भी बहुत अच्छा, क्योंकि कराने वाला अच्छे ते अच्छा है।

स्लोगन:-

अपने शान्ति और सुख के वायब्रेशन से हर एक को सुख चैन की अनुभूति कराओ तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी।

गीत।- तुम्हें पाके हमने .. ओमशान्ति। मीठे2 रुहानी बच्चों ने यह गीत सुना। रुहानी बच्चे ही कहते हैं शिवबाबा - बच्चे जानते हैं वह बेहद का बाप बेहद का सुख देने वाला है। अर्थात वह सभी का बाप है। उनको सभी बेहद के बच्चे आत्मायें याद करती रहती हैं। किस न किस प्रकार से याद करती हैं। परन्तु उनको यह पता नहीं है कि हमको कोई उस परमपिता परमात्मा से विश्व की बादशाही मिलती है। तुम जानते हो हमको बाप जो सतयुगी विश्व की बादशाही देते हैं वह अटल, अखण्ड, अडोल है। वह हमारी बादशाही 21 जन्म कायम रहती है। सारे विश्व पर हमारी राजाई रहती है। जिसको कोई छीन न सकता। लूट नहीं सकता। हमारी राजाई है अडोल। क्योंकि वहाँ एक ही धर्म है। द्वैत है नहीं। वह है अद्वैत राज्य। बच्चे जब यह गीत सुनते हैं तो वह अपनी राजधानी का नशा बुद्धि में आना चाहिए। ऐसे2 गीत घर में रखने चाहिए। जिससे बाप और वर्से की झट याद आती है। बाप की याद भी बनी गुप्त रहनी चाहिए। तुम्हारा सब कुछ है गुप्त। और बड़े2 आदमियों का बहुत ठाठ होता है। तुमको कोई ठाठ नहीं है। तुम देखते हो बाबा ने जिसमें प्रवेश किया है उसमें भी ठाठ की कोई बात न है। कपड़े आदि सब वही है। तुम बुद्धि से

a) समझते हो इनमें बाबा ने प्रवेश किया है। हमको यह राज्यभाग देने। यह भी बच्चे जानते हैं यहाँ हर एक मनुष्य अनराईटियस ही2 काम ही करते हैं जो भी इस समय मनुष्य मात्र हैं विद्वान पण्डित साधु राजायें प्रेजीडेन्ट आदि सब अनराइटियस काम करते हैं। इसलिए बेसमझ कहा जाता है। बुद्धि को बिल्कुल ही ताला लगा हुआ है। तुम कितने समझदार थे विश्व के मालिक थे। अभी माया ने इतना बेसमझ बना दिया है जो कोई काम के न रहे हैं। बाप के पास आने के लिए यज्ञ तप आदि बहुत करते रहते हैं परन्तु मिलता कुछ भी नहीं है। ऐसे ही धक्के खाते रहते हैं जैसे कोई आरफन धक्के खाते हैं ना। दिनप्रतिदिन अकल्याण ही होता जाता है। जितना2 मनुष्य तमोप्रधान होते जाते हैं उतना2 अकल्याण होना ही है। ऋषि मुनि जिनका मान है वह पवित्र रहते थे। जब सतोप्रधान थे तो वह कहते थे हम रचता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते हैं। नेती2 कहते थे। अभी तमोप्रधान बन गये हैं तो कहते हैं शिवोहम् ततत्वम्। परमात्मा सर्वव्यापी है। तेरे में भी है, मेरे में भी है। यह लोग सिर्फ परमात्मा कह देते हैं। परमपिता कब नहीं कहेंगे। परमपिता- उनको फिर सर्वव्यापी कहना यह रांग हो जाता है। इसलिए फिर ईश्वर वा परमात्मा कह देते। पिता अक्षर बुद्धि में नहीं आता है। कदके कोई कहते भी हैं तो भी सिर्फ कहने मात्र। अगर परमपिता समझते तो बुद्धि एकदम चमक उठे। बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं। वह है ही हेविनली गाड फादर फिर हम कलियुगी नर्क में क्यों पड़े हैं। अब हम मुक्ति वा जीवनमुक्ति कैसे पा सकते हैं। यह किसकी भी बुद्धि में नहीं आता है। आत्मा पतित बेसमझ होती जाती है। आत्मा पहले सतोप्रधान समझदार होती है फिर सतो रजो तमो में आती है बेसमझ बन पड़ते हैं। अभी तुमको समझ आई है। बाबा ने हमको यह स्मृति दिलाई है। जब नई दुनिया नया भारत था तो हमारा राज्य था। एक ही मत, एक ही भाषा, एक ही महाराजा महारानी थे। सतयुग में महाराजा महारानी त्रेता में राजा रानी कहा जाता है। फिर द्वापर में वाममार्ग शुरू होता है। फिर हर एक के कर्मों पर मदार हो जाता है। कर्मों अनुसार एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको ऐसे कर्म सिखाता हूँ जो 21 जन्म तुम बादशाही पाते रहेंगे। भल वहाँ भी हद का बाप तो मिलता है परन्तु वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता कि यह बादशाही का वर्सा बेहद के बाप का दिया हुआ है। फिर द्वापर से रावणराज्य शुरू होता है। विकारी सम्बन्ध हो जाता है फिर जैसे कर्म ऐसा फल मिलता है। देवतायें वाममार्ग में चले जाते हैं। फिर सतयुग का सुख खलास हो जाता है। फिर कर्म अनुसार जन्म लेते हैं। भारत में पूज्य राजायें भी थे तो पुजारी राजायें भी थे। सतयुग त्रेता में महाराजा रानी तथा प्रजा पूज्य होते हैं। वहाँ पूजा या भक्ति कोई होती नहीं। फिर द्वापर से जब भक्तिमार्ग शुरू होता है तो बड़ा राजा रानी तथा प्रजा। पुजारी भक्त बन जाते हैं। बड़े ते बड़ा राजा जो सूर्यवंशी पूज्य था वही पुजारी बन जाते हैं। फिर वैश्यवंशी शूद्र वंशी बन जाते हैं। अभी तुम जो प्राइसलेस बनते हो उसकी प्रालब्ध 21 जन्म चलती है। फिर भक्तिमार्ग शुरू होता है। जो2 पूज्य बैठी देवतायें होकर गये हैं उन्हों के मन्दिर बनाए पूजा करते

compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रहते हैं- यह सिर्फ भारत में ही होता है। यह 84 जन्मों की कहानी जो बाप सुनाते हैं यह भी भारतवासियों के लिए है। और धर्म वाले तो आते ही बाद में हैं फिर तो वृद्धि होती2 ढेर के ढेर हो जाते हैं। वैरायटी भिन्न2 धर्म हैं। हर एक बात में भिन्न2 हो जाते- फीचर्स भी भिन्न- रसमरिवाज भी भिन्न2 देवी देवताओं की जो रसम रिवाज थी वह

b) भारत के गुरुओं की नहीं है। आधाकल्प बाद रावणराज्य शुरु होने से सारी रसम रिवाज बदल जाती है। फिर पूज्य से पुजारी बन जाते हैं। पूजा भी पहले शुरु होती है अव्यभिचारी। पहले शिव की ही पूजा करते हैं। उनके मन्दिर बनाते हैं फिर ल0ना0 के बनावेंगे। एक ने ल0ना0 का मन्दिर बनाया तो दूसरे भी बनावेंगे। फिर राम सीता के मन्दिर बनाने लग पड़ेंगे। फिर कलियुग में तो देखो गणेश हनूमान चण्डिका देवी आदि2 अनेकानेक देवियों आदि के चित्र बनाते रहते हैं। भक्ति के लिए भक्ति मार्ग के लिए सामग्री भी चाहिए ना। जैसे बीज छोटा है झाड़ कितना बड़ा है, कितनी बड़ी सामग्री हो जाती है। झाड़ के पत्ते आदि गिनती नहीं कर सकते। वैसे भक्ति का भी बहुत विस्तार हो जाता है। ढेर के ढेर शास्त्र बनाते जाते हैं। अब बाप बच्चों को कहते हैं यह भक्ति मार्ग की सामग्री सब खत्म होनी है। अब मुझ बाप को याद करो। भक्ति का प्रभाव भी तो बहुत है ना। कितने खूबसूरत हैं। नाच तमाशा गायन आदि कितना खर्चा करते हैं। अभी बाप कहते हैं मुझ बाप को और घर को याद करो। आदि सनातन अपने धर्म को याद करो। अनेक प्रकार की भक्ति जन्मजन्मान्तर तुम करते आये हो। कितने शास्त्र पढ़ते हैं। जो बहुत शास्त्र पढ़ते हैं उनको घमन्ड भी रहता है। अपने को शास्त्रों की अथार्टी समझते हैं। बड़ा घमन्ड आ जाता है। बाप कहते हैं यह अथार्टी है भक्ति मार्ग की। जिससे मनुष्य दुर्गति को ही पाते हैं। ग्रहस्थ धर्म वाले ही भक्ति शुरु करते हैं। सन्यासियों को तो भक्ति नहीं करनी है। यह तप दान पुण्य तीर्थ आदि यह सब ग्रहस्थियों का काम है न कि सन्यासियों का। वह है ही निवृत्ति मार्ग वाले। उन्हों के लिए असुल कायदा है घरबार छोड़ जाए जंगल में रहना, और ब्रह्म वा तत्व को याद करना। वह है ही तत्वज्ञानी। ब्रह्म ज्ञानी। तत्व अथवा ब्रह्म को ही ईश्वर कह देते हैं। जैसे भारतवासी असुल हैं आदि सनातन देवी देवता धर्म के परन्तु हिन्दुस्तान में रहते हैं तो अपना धर्म, हिन्दू धर्म समझ लिया है। सन्यासी भी आत्माओं के रहने के स्थान तत्व को परमात्मा समझ लेते हैं। ब्रह्म वा तत्व को ही याद करते हैं। वास्तव में सन्यासी जब सतोप्रधान हैं तो उन्हों को जंगल में जाकर रहना है शान्त में। ऐसे नहीं कि उन्हों को ब्रह्म में जाकर लीन होना है। बाप कहते हैं यह उन्हों का मिथ्या ज्ञान है। समझते हैं ब्रह्म की याद में रहने से शरीर छोड़ने से ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। बाप समझाते हैं लीन कोई हो नहीं सकते। आत्मा तो अविनाशी है ना। वह लीन कैसे हो सकती। भक्ति मार्ग में कितने माथा कूट करते हैं। फिर कहते रहते भगवान कोई न कोई रूप में कब आकर देखेंगे अब कौन राईट? वह कहते हम ब्रह्म से योग लगाए ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। ग्रहस्थ धर्म वाले कहते भगवान किस न किस रूप में आवेंगे, पतितों को पावन बनाने आवेंगे। ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखलावेंगे। टीचर घर बैठे प्रेरणा करेंगे क्या। प्रेरणा अक्षर है नहीं। प्रेरणा से कोई काम नहीं होता। भल शंकर की प्रेरणा द्वारा विनाश

c) कहा जाता है परन्तु है यह ड्रामा की नूँध। उन्हों को यह मूसल आदि तो बनाने ही हैं। यह सिर्फ महिमा गाई जाती है परमपिता परमात्मा शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। बाकी शंकर क्या करेंगे। क्या कहेंगे मर जाओ। प्रेरणा का अर्थ हो जाता किसको पढ़ाई वा अच्छाई करना प्रेरणा की बात है नहीं। शंकर कहे यह बनाओ अपना विनाश करो ऐसी कोई बात है नहीं। यह तो ड्रामा में नूँध है। या तो कहते हैं शंकर की आँख खुलने से ही प्रलय हो गई। यह सब झूठ है भाई कुछ भी नहीं समझते हैं किसके मन्दिर में जावेंगे कहेंगे अचतम केशवम्.. अर्थ कुछ भी नहीं समझते। भगडम बगडम जो आया सो कह देते। जानते कुछ भी नहीं। कोई भी अपने बड़ों की महिमा नहीं जानते। जैसे धर्म स्थापक को भी गुरु कह देते। लेकिन वे तो सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं। गुरु उनको कहा जाता जो सद्गति करे। वह तो धर्म स्थापन करने वाले हैं। उनके पिछाड़ी उनकी वंशावली आती है। सद्गति तो किसकी करते ही नहीं। तो उनको गुरु कैसे कहेंगे। गुरु तो एक ही है। जिसको सर्व का सद्गतिदाता कहा जाता है। भगवान बाप ही आकर सभी की सद्गति करते हैं। मुक्ति जीवनमुक्ति देते हैं। उनकी याद कब किसकी छूट नहीं सकती। भल पति की महिमा कितनी

यह सारी रचना है। रचता बाप में हो हूँ। समझा कुछ . . ..

वर्सा नहीं दे सकते। वर्सा हमेशा बाप से मिलता है। मैं तुम सभी बेहद के बच्चों को बेहद का वर्सा देता हूँ। इसलिए ही मुझे याद करते हैं हे परमपिता क्षमा करो- रहम करो- समझते कुछ भी नहीं। भक्तिमार्ग में अनेक प्रकार की महिमा करते रहते हैं। यह भी ड्रामा अनुसार अपना पार्ट बजाते रहते हैं। बाप कहते हैं मैं कोई यहाँ के पुकारने पर नहीं आता हूँ। यह तो ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा में मेरे आने का भी पार्ट नूँधा हुआ है। अनेक धर्म विनाश एक धर्म की स्थापना या कलियुग का विनाश सतयुग की स्थापना जरूर होती है। मैं अपने समय पर आपेही आता हूँ। यह भक्ति मार्ग का भी ड्रामा में पार्ट है। अभी जब भक्ति मार्ग का पार्ट पूरा होता है तब आया हुआ हूँ। बच्चे भी कहते हैं अभी हम जान गये 5000 वर्ष बाद फिर से आकर आपके साथ मिले हैं। कल्प पहले भी बाबा आप ब्रह्मा तन में ही आये थे। यह ज्ञान तुमको अभी मिलता है फिर कब नहीं मिलेगा। यह है ज्ञान। वह है भक्ति। ज्ञान की है प्रालब्ध। चढ़ती कला। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति कहा जाता है। जनक को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिली थी ना। यह भी अभी है। राधे जाकर अनुराधे बनती है। जनक भी जाकर फिर सीता का बाप अनु जनक बना। इस ज्ञान से। यह भी एक मिसाल दे रखा है। समझते कुछ भी नहीं हैं। कहते हैं जनक ने सेकेण्ड में जीवनमुक्ति पाई। क्या सिर्फ एक जनक ने जीवनमुक्ति पाई? जीवनमुक्ति तो सब पाते हैं ना। सारी विश्व पाती है। सद्गति वा जीवनमुक्ति एक ही अक्षर है। जीवनमुक्त अर्थात जीवन को मुक्त करते हैं। इस रावणराज्य से। बाप जानते हैं सभी बच्चों की कितनी दुर्गति हो गई है। बिल्कुल दुःखी हो गये। उन्हों की फिर सद्गति होनी है। दुर्गति से फिर ऊँच गति मुक्ति जीवनमुक्ति को पाते हैं। पहले मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे। शान्तिधाम फिर सुखधाम में आयेंगे। यह चक्र का सारा राज़ बाप ने समझाया है। तुम्हारे साथ और भी धर्म आते जाते हैं। मनुष्य सृष्टि वृद्धि को पाती जाती है। बाप कहते हैं इस समय यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ तमोप्रधान जड़जड़ीभूत हो गया है। आदि सनातन देवी देवता धर्म फाउन्डेशन सारा सड़ गया है। बाकी सभी धर्म खड़े हैं। भारत में एक भी अपने को आदि सनातन देवी देवता धर्म का समझता नहीं है। हैं देवता धर्म के। परन्तु इस समय यह समझते नहीं हैं। हम आदि सनातन देवी देवता धर्म के थे। क्योंकि देवतायें तो पवित्र थे। समझते हैं हम तो पवित्र हैं नहीं। हम अपवित्र पतित अपने को देवता कैसे कहलावें। यह भी ड्रामाप्लेन अनुसार रसम पड़ जाती है। हिन्दू कहलाने की। आदम सुमारी में भी हिन्दू धर्म लिख देते हैं। उनसे पूछो तो सही हिन्दू धर्म कहाँ से आया- कोई को पता नहीं है। कह देते हमारा धर्म कृष्ण ने स्थापन किया। कब? द्वापर में। द्वापर से ही यह लोग अपने धर्म को भूल हिन्दू कहलाने लगे हैं। है सब झूठ। कृष्ण तो द्वापर में आया नहीं। कहते हैं गीता है हिन्दू धर्म का शास्त्र। गीता कब उच्चारी? कहेंगे द्वापर में श्रीकृष्ण ने उच्चारी। यह भी झूठ है। दैवी धर्म भ्रष्ट सब बन पड़े हैं। यहाँ जब अच्छा कर्म करते हैं वहाँ सब ही 2 कर्म करते हैं। इसलिए देवी देवता धर्म भ्रष्ट कर्मभ्रष्ट कहा जाता है। अब फिर श्रेष्ठ दैवी धर्म श्रेष्ठ दैवी कर्म की स्थापना हो रही है। इसलिए कहा जाता है अब इन विकारों को छोड़ते जाओ। यह विकार आधाकल्प से रहे हैं। अब एक जन्म में इनको छोड़ना इसमें ही मेहनत है। मेहनत बिगर कोई विश्व की बादशाही मिलेगी। बाप को याद करेंगे तब ही अपने को तुम राजाई तिलक देते हो। अर्थात राजाई के अधिकारी बनते हो। जितना अच्छी रीति याद में रहेंगे श्रीमत पर चलेंगे तो तुम राजाओं का राजा बनेंगे। पढ़ाने वाला टीचर तो आया है पढ़ाने। ये पाठशाला है ही मनुष्य से देवता बनने की। नर से नारायण बनाने की कथा सुनाते हैं। ये कथा कितनी नामी ग्रामी है। इनको अमरकथा, सत्य ना० की कथा, तीजरी की कथा भी कहते हैं। तीनों का अर्थ बाप समझाते हैं। भक्तिमार्ग की तो बहुत ही कथायें हैं। तो देखो गीत कितना अच्छा है। बाबा हमको सारे विश्व का मालिक बनाते हैं जो मालिकपना कोई लूट न सके। कोई अर्थक्वीक आदि नहीं होगी। कोई दुःख न होगा। वहाँ विघ्न की कोई बात नहीं होती। ऐसा अखण्ड अटल पवित्रता सुख शान्ति का राज्य तुम पा रहे हो। कल्प पहले मुआफिक। हर 5000 वर्ष बाद भारत स्वर्ग बनता है। तुम जानते हो हम सो देवता थे। फिर 84 जन्म लेते 2 अन्त में आकर यह बने हैं फिर हम से बनते हैं। इसको कहा जाता है स्वदर्शन चक्र। अच्छा मीठे 2 सिकीलधे बच्चों प्रति मातपिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते। ओमशान्ति।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

6-2-01 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - (यहाँ तुम्हारा सब कुछ गुप्त है, इसलिए तुम्हें कोई भी ठाठ नहीं करना है, अपनी नई राजधानी के नशे में रहना है")

प्रश्नः- श्रेष्ठ धर्म और दैवी कर्म की स्थापना के लिए तुम बच्चे कौन सी मेहनत करते हो?

उत्तरः- तुम अभी 5 विकारों को छोड़ने की मेहनत करते हो, क्योंकि इन विकारों ने ही सबको भ्रष्ट बनाया है। तुम जानते हो इस समय सभी दैवी धर्म और कर्म से भ्रष्ट हैं। बाप ही श्रीमत देकर श्रेष्ठ धर्म और श्रेष्ठ दैवी कर्म की स्थापना करते हैं। तुम श्रीमत पर चल बाप की याद से विकारों पर विजय पाते हो। पढ़ाई से अपने आपको राजतिलक देते हो।

गीतः- तुम्हें पाके.....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने यह गीत सुना। (रूहानी बच्चे ही कहते हैं कि बाबा। बच्चे जानते हैं यह बेहद का बाप, बेहद का सुख देने वाला है अर्थात् वह सभी का बाप है। उनको सब बेहद के बच्चे, आत्मायें याद करते रहते हैं। किस न किस प्रकार से याद करते हैं परन्तु उनको यह पता नहीं है कि हमको कोई उस परमपिता परमात्मा से विश्व की बादशाही मिलती है। तुम जानते हो हमको बाप जो सतयुगी विश्व की बादशाही देते हैं, वह अटल अखण्ड, अडोल है, वह हमारी बादशाही 21 जन्म कायम रहती है। सारे विश्व पर हमारी राजाई रहती है जिसको कोई छीन नहीं सकता। लूट नहीं सकता। हमारी राजाई है अडोल क्योंकि वहाँ एक ही धर्म है, द्वेत है नहीं। वह है अद्वैत राज्य। बच्चे जब भी गीत सुनते हैं तो अपनी राजधानी का नशा आना चाहिए। ऐसे-ऐसे गीत घर में रहने चाहिए। (तुम्हारा सब कुछ है गुप्त और बड़े-बड़े आदमियों का बहुत ठाठ होता है। तुमको कोई ठाठ नहीं है। तुम देखते हो बाबा ने जिसमें प्रवेश किया है वह भी कितना साधारण रहते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं यहाँ हर एक मनुष्य अनराइटियस छी-छी काम ही करते हैं, इसलिए बेसमझ कहा जाता है। बुद्धि को बिल्कुल ही ताला लगा हुआ है। तुम कितने समझदार थे। विश्व के मालिक थे। अभी माया ने इतना बेसमझ बना दिया है जो कोई काम के नहीं रहे हैं। बाप के पास जाने के लिए यज्ञ-तप आदि बहुत करते रहते हैं परन्तु मिलता कुछ भी नहीं है। ऐसे ही धक्के खाते रहते हैं। दिन-प्रतिदिन अकल्याण ही होता जाता है। जितना-जितना मनुष्य तमोप्रधान हो जाते हैं, उतना-उतना अकल्याण होना ही है। (ऋषि-मुनि जिनका गायन है वह पवित्र रहते थे। नेती-नेती कहते थे। अभी तमोप्रधान बन गये हैं तो कहते हैं शिवोहम् ततत्वम्, सर्वव्यापी है, तेरे-मेरे में सबमें है। वो लोग सिर्फ परमात्मा कह देते हैं। परमपिता कभी नहीं कहेंगे। परमपिता, उनको फिर सर्वव्यापी कहना यह तो रांग हो जाता है इसलिए फिर ईश्वर वा परमात्मा कह देते। पिता अक्षर बुद्धि में नहीं आता है। करके कोई कहते भी हैं तो भी कहने मात्र। अगर परमपिता समझें तो बुद्धि एकदम चमक उठे। बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं, वह है

ही हेविनली गॉड फादर। फिर हम नर्क में क्यों पड़े हैं। अब हम मुक्ति-जीवनमुक्ति कैसे पा सकते हैं। यह किसकी भी बुद्धि में नहीं आता है। आत्मा पतित बन पड़ी है। आत्मा पहले सतोप्रधान, समझदार होती है फिर सतो रजो तमो में आती है, बेसमझ बन पड़ती है। अभी तुमको समझ आई है। बाबा ने हमको यह स्मृति दिलाई है। जब नई दुनिया भारत था तो हमारा राज्य था। एक ही मत, एक ही भाषा, एक ही धर्म, एक ही महाराजा-महारानी का राज्य था, फिर द्वापर में वाम मार्ग शुरू होता है फिर हर एक के कर्मों पर मदार हो जाता है। कर्मों अनुसार एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको ऐसे कर्म सिखाता हूँ जो 21 जन्म तुम बादशाही पाते हो। भल वहाँ भी हद का बाप तो मिलता है परन्तु वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता कि यह राजाई का वर्सा बेहद के बाप का दिया हुआ है। फिर द्वापर से रावण राज्य शुरू होता है, विकारी संबंध हो जाता है। फिर कर्मों अनुसार जन्म मिलता है। भारत में पूज्य राजायें भी थे तो पुजारी राजायें भी हैं। सतयुग-त्रेता में सब पूज्य होते हैं। वहाँ पूजा वा भक्ति कोई होती नहीं फिर द्वापर में जब भक्ति मार्ग शुरू होता है तो यथा राजा-रानी तथा प्रजा पुजारी, भगत बन जाती है। बड़े से बड़ा राजा जो सूर्यवंशी पूज्य था, वही पुजारी बन जाते।

अभी तुम जो वाइसलेस बनते हो, उसकी प्रालब्ध 21 जन्म लिए है। फिर भक्तिमार्ग शुरू होता है। देवताओं के मन्दिर बनाकर पूजा करते रहते हैं। यह सिर्फ भारत में ही होता है। 84 जन्मों की कहानी जो बाप सुनाते हैं, यह भी भारतवासियों के लिए है। और धर्म वाले तो आते ही बाद में हैं। फिर तो वृद्धि होते-होते ढेर के ढेर हो जाते हैं। वैरायटी भिन्न-भिन्न धर्म वालों के फीचर्स, हर एक बात में भिन्न-भिन्न हो जाते हैं।
b) रस्म-रिवाज़ भी भिन्न-भिन्न होती है। भक्ति मार्ग के लिए सामग्री भी चाहिए। जैसे बीज छोटा होता है, झाड़ कितना बड़ा है। झाड़ के पत्ते आदि गिनती नहीं कर सकते। वैसे भक्ति का भी विस्तार हो जाता है। ढ़ेर के ढेर शास्त्र बनाते जाते हैं। अब बाप बच्चों को कहते हैं — यह भक्ति मार्ग की सामग्री सब खत्म हो जाती है। अब मुझ बाप को याद करो। भक्ति का प्रभाव भी बहुत है ना। कितनी खूबसूरत है, नाच, तमाशा, गायन आदि कितना खर्चा करते हैं। अभी बाप कहते हैं मुझ बाप को और वर्से को याद करो। आदि सनातन अपने धर्म को याद करो। अनेक प्रकार की भक्ति जन्म-जन्मान्तर तुम करते आये हो। सन्यासी भी आत्माओं के रहने के स्थान, तत्व को परमात्मा समझ लेते हैं। ब्रह्म वा तत्व को ही याद करते हैं। वास्तव में सन्यासी जब सतोप्रधान हैं तो उन्हों को जंगल में जाकर रहना है शान्ति में। ऐसे नहीं कि उन्हों को ब्रह्म में जाकर लीन होना है। वह समझते हैं ब्रह्म की याद में रहने से, शरीर छोड़ने से ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। बाप कहते हैं—लीन कोई हो नहीं सकते। आत्मा तो अविनाशी है ना, वह लीन कैसे हो सकती। भक्ति मार्ग में कितना माथा कूट करते हैं, फिर कहते हैं भगवान कोई न कोई रूप में आयेंगे। अब कौन राइट? वह कहते हम ब्रह्म से योग लगाए ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। गृहस्थ धर्म वाले कहते भगवान किसी न किसी रूप में पतितों को पावन बनाने आयेंगे। ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखलायेंगे। टीचर घर बैठे प्रेरणा करेंगे

क्या! प्रेरणा अक्षर है नहीं। प्रेरणा से कोई काम नहीं होता। भल शंकर की प्रेरणा द्वारा विनाश कहा जाता है परन्तु है यह ड्रामा की नूँध। उन्हों को यह मूसल आदि तो बनाने ही हैं। यह सिर्फ महिमा गाई जाती है। कोई भी अपने बड़ों की महिमा नहीं जानते। धर्म स्थापक को भी गुरू कह देते हैं लेकिन वे तो सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं। गुरू उनको कहा जाता जो सद्गति करें। वह तो धर्म स्थापन करने आते हैं, उनके पिछाड़ी उनकी वंशावली आती रहती है। सद्गति तो किसकी करते ही नहीं। तो उनको गुरू कैसे कहेंगे। गुरू तो एक ही है जिसको सर्व का सद्गति दाता कहा जाता है। भगवान बाप ही आकर सबकी सद्गति करते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। उनकी याद कभी किससे छूट नहीं सकती। भल पति से कितना भी प्यार हो फिर भी हे भगवान, हे ईश्वर जरूर कहेंगे क्योंकि वही सर्व का सद्गति दाता है। बाप बैठ समझाते हैं, यह सारी रचना है। रचयिता बाप मैं हूँ। सबको सुख देने वाला एक ही बाप ठहरा। भाई, भाई को वर्सा नहीं दे सकते। वर्सा हमेशा बाप से मिलता है। तुम सभी बेहद के बच्चों को बेहद का वर्सा देता हूँ इसलिए ही मुझे याद करते हैं—हे परमपिता, क्षमा करो, रहम करो। समझते कुछ भी नहीं। भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार की महिमा करते हैं, यह भी ड्रामा अनुसार अपना पार्ट बजाते रहते हैं। बाप कहते हैं मैं कोई इन्हों के पुकारने पर नहीं आता हूँ। यह तो ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा में मेरे आने का पार्ट नूँधा हुआ है। अनेक धर्म विनाश, एक धर्म की स्थापना वा कलियुग का विनाश, सतयुग की स्थापना करनी होती है। मैं अपने समय पर आपेही आता हूँ। इस भक्ति मार्ग का भी ड्रामा में पार्ट है। अभी जब भक्ति मार्ग का पार्ट पूरा हुआ तब आया हुआ हूँ। बच्चे भी कहते हैं, अभी हम जान गये। 5 हजार वर्ष के बाद फिर से आपके साथ मिले हैं। कल्प पहले भी बाबा आप ब्रह्मा तन में ही आये थे। यह ज्ञान तुमको अभी मिलता है फिर कभी नहीं मिलेगा। यह है ज्ञान, वह है भक्ति। ज्ञान की है प्रालब्ध, चढ़ती कला। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति कहा जाता है। जनक को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिली थी ना। यह भी अक्षर हैं — राधे जाकर अनुराधे बनती है। जनक भी जाकर फिर सीता का बाप अनुजनक बना, इस ज्ञान से। यह भी एक मिसाल दे रखा है। समझते कुछ भी नहीं हैं। कहते हैं जनक ने सेकेण्ड में जीवनमुक्ति पाई। क्या सिर्फ एक जनक ने जीवनमुक्ति पाई? जीवनमुक्ति अर्थात् जीवन को मुक्त करते हैं इस रावण राज्य से।

बाप जानते हैं सब बच्चों की कितनी दुर्गति हो गई है। उन्हों की फिर सद्गति होनी है। दुर्गति से फिर ऊंच गति, मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाते हैं। पहले मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे। शान्ति से फिर सुखधाम में आयेंगे। यह चक्र का सारा राज़ बाप ने समझाया है। तुम्हारे साथ और भी धर्म आते जाते हैं, मनुष्य सृष्टि वृद्धि को पाती जाती है। बाप कहते हैं इस समय यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ तमोप्रधान जड़ जड़ीभूत हो गया है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन सारा सड़ गया है। बाकी सब धर्म खड़े हैं। भारत में एक भी अपने को आदि सनातन देवी-देवता धर्म का समझता नहीं है। हैं देवता धर्म के परन्तु इस समय यह समझते नहीं हैं - हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म

के थे क्योंकि देवतायें तो पवित्र थे। समझते हैं हम तो पवित्र हैं नहीं। हम अपवित्र पतित अपने को देवता कैसे कहलायें? यह भी ड्रामा के प्लैन अनुसार रसम पड़ जाती है हिन्दू कहलाने की। आदमशुमारी में भी हिन्दू धर्म लिख देते हैं। भल गुजराती होंगे तो भी हिन्दू गुजराती कह देंगे। उन्हों से पूछो तो सही कि हिन्दू धर्म कहाँ से आया? तो कोई को पता नहीं है सिर्फ कह देते—हमारा धर्म कृष्ण ने स्थापन किया। कब? द्वापर में। द्वापर से ही यह लोग अपने धर्म को भूल हिन्दू कहलाने लगे हैं। इसलिए उन्हों को कहा जाता है दैवी धर्म भ्रष्ट हैं। वहाँ सब अच्छा कर्म करते हैं। यहाँ सब छी-छी कर्म करते हैं इसलिए देवी-देवता धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट कहा जाता है। अब फिर श्रेष्ठ धर्म, श्रेष्ठ दैवी कर्म की स्थापना हो रही है इसलिए कहा जाता है अब इन 5 विकारों को छोड़ते जाओ। यह विकार आधाकल्प से रहे हैं। अब एक जन्म में इनको छोड़ना—इसमें ही मेहनत लगती है। मेहनत बिगर थोड़ेही विश्व की बादशाही मिलेगी। बाप को याद करेंगे तब ही अपने को तुम राजाई का तिलक देते हो अर्थात् राजाई के अधिकारी बनते हो। (जितना अच्छी रीति याद में रहेंगे, श्रीमत पर चलेंगे तो तुम राजाओं का राजा बनेंगे। पढ़ाने वाला टीचर तो आया है पढ़ाने। यह पाठशाला है ही मनुष्य से देवता बनने की। नर से नारायण बनाने की कथा सुनाते हैं। यह कथा कितनी नामीग्रामी है। इनको अमरकथा, सत्य नारायण की कथा, तीजरी की कथा भी कहते हैं। तीनों का अर्थ भी बाप समझाते हैं। भक्ति मार्ग की तो बहुत कथायें हैं। तो देखो गीत कितना अच्छा है। बाबा हमको सारे विश्व का मालिक बनाते हैं, जो मालिकपना कोई लूट न सके। अच्छा!)

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चो को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. सदा यह स्मृति रखनी है कि हम एक मत, एक राज्य, एक धर्म की स्थापना के निमित्त हैं। इसलिए एक मत होकर रहना है।

२. स्वयं को राजाई का तिलक देने के लिए विकारों को छोड़ने की मेहनत करनी है। पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना है।

वरदान:- सन्तुष्टता की विशेषता वा श्रेष्ठता द्वारा सर्व के इष्ट बनने वाले वरदानी मूर्त भव

जो सदा स्वयं से और सर्व से सन्तुष्ट रहते हैं वही अनेक आत्माओं के इष्ट व अष्ट देवता बन सकते हैं। सबसे बड़े से बड़ा गुण कहो, दान कहो या विशेषता वा श्रेष्ठता कहो—वह सन्तुष्टता ही है। सन्तुष्ट आत्मा ही प्रभूप्रिय, लोकप्रिय और स्वयं प्रिय होती है। ऐसी सन्तुष्ट आत्मा ही वरदानी रूप में प्रसिद्ध होगी। अभी अन्त के समय में महादानी से भी ज्यादा वरदानी रूप द्वारा सेवा होगी।

स्लोगन:-

विजयी रत्न वह है जिसके मस्तक पर सदा विजय का तिलक चमकता हो।

[illegible] प्रातः क्लास ओमशान्ति 'पिताश्री' शिव बाबा याद है?

नहीं सिवाय....ओमशान्ति। शिव बाबा समझाते हैं बच्चों को इस ब्रह्मा के रथ द्वारा। क्यों कि बच्चों से पूछते हैं मुझे तो अपना रथ है नहीं। मुझे रथ तो जरूर चाहिए। जैसे तुम हर [illegible] को अपना2 रथ (शरीर) है न। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी सूक्ष्म शरीर है। ल0ना0 आदि [illegible] सब आत्माओं को अपना शरीर, रूपी रथ है। जिसको अश्व भी कहते हैं। है तो मनुष्य न। मनुष्यों को [illegible] बात समझाई जाती। जिनावर को बातें जिनावर जानें। यहाँ तो मनुष्य सृष्टि है। तो बाप भी मनुष्यों को बैठ समझाते हैं। मनुष्य में भी जो आत्मा है उनको समझाते हैं। डायरेक्ट पूछते हैं तुम हर एक को अपना2 शरीर है न। हर एक आत्मा शरीर लेती है छोड़ती है। मनुष्य तो गपोड़े लगाते हैं कि 84 लाख जन्म लेते हैं। यह भूल है। अब कि तुम 84 जन्म लेकर ही बिल्कुल पत्थर हो गये हो। कितने तंग हो गये हो। तो 84 लाख जन्मों की तो बात ही नहीं। यह है मनुष्यों के गपोड़े। तो बाप समझाते हैं तुम आत्माओं को भी अपना2 रथ है। मुझे भी तो रथ चाहिए न। मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूँ। गाते भी हैं ज्ञान सागर पतित पावन। तुम और कोई को पतित-पावन नहीं कहेंगे। ल0ना0 आदि को भी नहीं कहेंगे। पतित सृष्टि को पावन बनाने वाला अर्थात पावन सृष्टि स्वर्ग का रचयिता परमपिता परमात्मा बिगर कोई हो नहीं सकता। सुप्रीम फादर वही है। बाप जानते हैं तुम नम्बरवार पत्थर बुद्धि हो गये हो। अब पारस बुद्धि बन रहे हो। बाहर वाले मनुष्य यह नहीं जानते। तो बाप समझाते हैं मुझे भी रथ तो चाहिए न। मुझ पतित पावन को [illegible] पतित दुनिया में आना पड़े न। प्लेग की बीमारी होती है तो डाक्टर को प्लेग वालों के पास आना पड़ेगा न। बाप कहते हैं तुम्हारे में 5 विकारों की बीमारी आधा कल्प की बड़ी गन्दी है। मनुष्य को दुःख देने वाले हैं। इन 5 विकारों से तुम बिल्कुल ही पतित बन पड़े हो। गाते भी हैं पतित भ्रष्टाचारी, रोगी, भोगी [illegible] तो बाप समझाते हैं मुझे पतित दुनिया में ही आना पड़े। पतित को ही भ्रष्टाचारी कहा जाता। पावन को श्रेष्ठाचारी कहेंगे। बरोबर तुम्हारा भारत पावन श्रेष्ठाचारी था ल0ना0 का राज्य था जिसकी ही महिमा गाते हो सर्वगुण सम्पन्न....वहाँ सब सुखी थे। यह तो कल की बात है। तो बाप कहते हैं मैं आऊँ तो कैसे आऊँ। किसके शरीर में आऊँ। पहले2 तो मुझे प्रजापिता चाहिए। सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा को यहाँ लेके आ सकता। वह तो फरिश्ता है न। उनको पतित दुनिया में ले आऊँ यह तो दोष हो जाये। कहेंगे मैंने क्या गुनाह किया। बाप समझाते हैं बड़ी रमणीक बातें हैं। समझेगा वही जो बाप का बना होगा। रोज2 बाप को याद करता रहेगा। बाप कहते हैं मैं आता हूँ जब जब धरती पर पाप बढ़ जाते हैं। गवर्नमेन्ट के आफिसर पाप आत्मा हैं। तो गवर्नमेन्ट पाप आत्मा ठहरी न। हाँ उनमें भी सब एक जैसे तो नहीं होते हैं। परन्तु हैं सब भ्रष्टाचारी पतित। गांधी भी गाते थे पतित पावन आओ। कलयुग में मनुष्य कितने पाप करते हैं। कितना भ्रष्टाचारी हैं। [illegible] मिलकर एक दो को काटते रहते हैं। बातें मत पूछो। तो बाप पूछते हैं बच्चे बताओ मैं आऊँ तो किस तन में आऊँ? मुझे चाहिए भी जरूर वृद्ध अनुभवी रथ। यह जो मैंने रथ लिया है। बरोबर इनके बहुत गुरु किये हुए हैं। शास्त्र आदि पढ़ा हुआ है। यह भी लिखा हुआ है न कि बहुत पढ़ा हुआ था। अर्जुन की बात नहीं। मुझे अर्जुन का वा कृष्ण का रथ थोड़े ही चाहिए। मुझे तो चाहिए ब्रह्मा का रथ। उनको ही प्रजापिता कहेंगे। कृष्ण को प्रजापिता नहीं कह सकते। मनुष्यों की बुद्धि में कितनी मूर्खता भरी हुई है। कुछ भी समझते नहीं। बाप को तो ब्रह्मा का ही रथ चाहिए। जिससे ब्राह्मणों की प्रजा रचे। ब्राह्मणों का है सर्वोत्तम कुल। विराट रूप दिखाते हैं न। देवता क्षत्रिय वैश्य शूद्र। बाकी ब्राह्मण कहाँ गये। यह किसको भी पता नहीं। ऊँच ते ऊँच है ब्राह्मणों की चोटी। चोटी हुई तब ही समझा जाता है कि यह ब्राह्मण है। सच्ची2 चोटी तो तुम्हारी है। तुम राजऋषि हो बड़ी चोटी वाले। ऋषि उनको कहा जाता जो पवित्र रहते हैं। तुम हो राजयोग ऋषि। राजाई के लिए तपस्या कर रहे हो। वह मुक्ति के लिए हठयोग की तपस्या करते हैं।

तुम जीवनमुक्ति राजाई को प्राप्ती के लिए राजयोग तपस्या कर रहे हो। इसको राजयोग की तपस्या कहा जाता है। संन्यासी हठयोगी यह राजयोग सिखा न सके। राजयोग में दोनों चाहिए। यह जो है निवृत्ति मार्ग वाले। वो तो विषय बना करके छोड़ चले जाते हैं। तुम्हारा ... लिए प्रवृत्ति रिइनकारनेशन शिव बाबा रिइनकारनेट करते हैं। तो तुम भी फिर से भारत में जन्म लेते ... जन्म लिया है न। कोई 2 ने बहुत जन्म लिया है परन्तु समझते नहीं हम शिव बाबा के बने हैं। उनके पास जन्म लिया है। अगर ऐसा समझते तो शरीर का भान बिल्कुल ही निकल जाना चाहिए। जैसे शिव बाबा निराकार इस रथ में है तुम भी अपने को निराकार आत्मा समझो। बाप कहते हैं बच्चे मुझे याद करो। अब तुमको वापिस चलना है। तुम तो पहले नंगे थे फिर तुमने देवी देवता शरीर लिया। फिर क्षत्रिय शरीर, फिर वैश्य शरीर फिर शूद्र शरीर लिया। अभी फिर तुम अशरीरी बनो। तुम मुझ निराकार को ही कहते हो बाबा हम अभी हम आप के बने हैं। हमको वापिस जाना है। देह को तो ले नहीं जाना है। हे आत्मायें अब मुझ बाप को और स्वीट होम को याद करो। मनुष्य जब विलायत से लौटते हैं तो कहते हैं चलो अपने स्वीट होम भारत में चले जहाँ जन्म लिया था वहाँ लौटें। मनुष्य मरते हैं तो जहाँ जन्म लिया था वहाँ उनको ले जाते हैं। समझते हैं भारत की मिट्टी का बना हुआ है। तो वह मिट्टी भारत में ही छोड़ें। अब बाप कहते हैं मेरा जन्म भी भारत में है। शिव जयन्ती भी मनाते हो। मेरे नाम तो ढेर रख दिये हैं। जो 2 मैंने काम किये हैं वह नाम

a) रख दिये हैं। कहते हैं शंकर महादेव। सभी के दुःख हरने वाला। वह भी ... है। ... ब्रह्मा भी सर्विस पर हाजिर है। और फिर ... स्थापना करते हैं वही फिर विष्णु के दो रूप से पालना करेंगे। मुझे प्रजापिता ब्रह्मा जरूर चाहिए। आदि देव का यादगार मन्दिर भी है न। आदि देव किसका बच्चा है जरूर यह शिव बाबा का बच्चा होगा। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तीनों हैं शिव के बच्चे। ब्रह्मा का बाप कौन है? कोई बताये। इस दिलवाला मन्दिर के जो ट्रस्टी लोग हैं वह भी यह नहीं जानते कि आदि देव है कौन? उनका बाप कौन था? आदि देव प्रजापिता ब्रह्मा है। उनका बाप है शिव। अब जिनका मन्दिर है उनकी आक्यूपेशन को नहीं जानते और बने हैं ट्रस्टी। जगतपिता ब्रह्मा का यह यादगार मन्दिर है। इस आदि देव ब्रह्मा के रथ में बाप ने बैठ ज्ञान सुनाया। कोठरियों में सब बच्चे बैठे हैं। सभी का मन्दिर तो नहीं बनायेंगे। मुख्य है 108 की माला। तो 108 कोठरियां बना दी हैं। 108 की पूजा होती है। मुख्य है शिव बाबा फिर ब्रह्मा सरस्वती युगल। वह शिव बाबा है फूल उनको अपना शरीर नहीं है। ब्रह्मा सरस्वती को अपना शरीर है। माला शरीर धारियों की बनी हुई है। फूल को तो नहीं है। सब माला को पूजते हैं। पूज कर पूरा करेंगे फिर शिव को भी नमस्कार करेंगे। माया ... = सुमरेंगे। क्योंकि उसने उन सभी को पतित से पावन बनाया है। इसलिए पूजे गाये जाते हैं। माला हाथ में ले बैठ राम राम कहते हैं। परमपिता परमात्मा के नाम का किसको पता नहीं। शिव बाबा है मुख्य। फिर ब्रह्मा सरस्वती भी मुख्य है। बाकी ब्रह्माकुमार कुमारियाँ जो जो पुरुषार्थ करती रहती है उन्हों के नाम होंगे। आगे चल तुम सभी देखते रहेंगे। जब पिछाड़ी होगी तब तुम यहाँ आकर रहेंगे। जो पक्के योगी होंगे यही रह सकेंगे। भोगी तो थोड़ा हल्ला सुनने से खत्म हो जावेंगे। कोई का आपरेशन देखने से कभी मनुष्य अनकान्सेस हो जाते हैं। अभी पार्टीशन में कितने मनुष्य मरे। वह लोग तो गपोड़े मारते रहते हैं कि हमने बिगर कोई लड़ाई राज्य ले लिया। परन्तु मरे इतने जो बात मत पूछो। यह है ही झूठी माया.. अभी सच्चा बाप बैठ तुमको सच सुनाते हैं। बाप कहते हैं मुझे रथ तो जरूर चाहिए। मैं साजन बड़ा हूँ तो सजनी भी बड़ी चाहिए। इसलिए मैंने इनमें प्रवेश किया है। इनको प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं। यह माता भी है। सरस्वती है ब्रह्मा मुख वंशावली वह कोई ब्रह्मा की युगल नहीं है। ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगदम्बा भी

PDF compression, OCR, web optimization copy of CVISION PDFCompressor

कहते हैं क्यों कि यह बैल है। नहीं तो माताओं के सम्भाल लिए उनको रखा है। ब्रह्मा मुखवंशावली सरस्वती को ब्रह्मा की बेटी हो गई। कमाल की बात है। ब्रह्मा तो वृद्ध है। सरस्वती जवान ब्रह्मा की स्त्री दीखती भी नहीं। कफ पार्टनर कहला न सके। यह तो भारत में 60वर्ष का वृद्ध हो जाये तो भी युवती को ले लेते हैं। कम बोल भी है। कन्याओं पर क्या करूं पति वृद्ध मिला है। सरस्वती भी अगर ब्रह्मा की युगल होती तो वह भी गाती क्या करूं वृद्ध पति मिला है। परन्तु ऐसे तो हो नहीं सकता। जगदम्बा बच्ची है। कम्बाइन्ड नये हो तो बाप कहते हैं कि मुझे इस ब्रह्मा का शरीर लोन लेना पड़ा है उधार पर। उधार पर भी बहुत लेते हैं। ब्राह्मण को खिलाते हैं। तो वह आत्मा आकर ब्राह्मण के शरीर का आधार लेती। कहते हैं आत्मा वह अपना शरीर छोड़ कर आती है क्या? यह तो बच्चों को समझाया गया है कि ड्रामा में 5000 की रसम पहले से नूंध है। यहां भी मनाते हैं। ऐसे नहीं कि वह आत्मा वह शरीर छोड़ कर आवेगी नहीं; यह ड्रामा में नूंध है। बाप के लिए तो यह रथ नन्दीगण है। नहीं तो शिव के मन्दिर में बैल क्यों दिखाते। सूक्ष्मवतन में शंकर के पास बैल कहां से आया। वहां तो है ही ब्रह्मा विष्णु शंकर और वह युगल दिखाते हैं। प्रवृत्ति मार्ग दिखाते। वाले जिनावर वहां कहां से आ सकता। मनुष्यों की बुद्धि कुछ भी काम
(बोलते)
b) न करती। जो आता सो बकते रहते सूंड वाला गणेश कृ- पार्वती का बच्चा था आदि 2यह सब है नानसेन्स सूंड वाला मनुष्य कहां से आया। सरस्वती तो ब्रह्मा बेटी है। उनको गर्भ आदि कहां है यह सब है भक्ति मार्ग के कर्म काण्ड की सामग्री। वेद अध्ययन जप तप आदि करना चित्र बनाना यह कुछ भी नहीं है। 8भुजा वाले तो कोई होते नहीं। सूंड वाला गणेश तो उन की स्त्री भी ऐसी होगी। हनुमान की स्त्री भी ऐसी होती उनसे बन्दर पैदा होते। यह सब है दन्त कथायें जिससे वेस्ट आफ टाइम, वेस्ट आफ एनर्जी होती है। दुर्गति को ही पाते हैं। सद्गति सतयुग को, दुर्गति कलयुग को कहा जाता है। जो सद्गति में थे उन्हों को पुनर्जन्म लेते2 फिर दुर्गति को पाना है। जो पूज्य थे वही पुजारी बनते हैं। तुम कहते हो हम सो पावन देवता थे। फिर पुनर्जन्म लेते 2 हम पतित पुजारी बने हैं। आप ही पूज्य आप ही पुजारी कोई भगवान नहीं बनता। उनको थोड़े ही 84पुनर्जन्म लेने पड़ते। माया मनुष्यों को कितनी पत्थर बुद्धि बना देती नानसेन्स राज्य है न। कल्प2 ऐसा राज्य होता है। तुम सो पूज्य देवता थे। फिर क्षत्रिय वैश्य शूद्र बने। अभी तुम ब्राह्मण बने हो फिर हम सो देवता बनेंगे। हम सो का ऐसा अर्थ है। ऐसे नहीं कि हम आत्मा सो परमात्मा। नहीं हम सो ब्राह्मण फिर हम सो देवता बनेंगे। पुनर्जन्म लेते आवेंगे। कितनी अच्छी समझानी है। बाप कहते हैं मैंने जिसमें प्रवेश किया है इस ने बहुत गुरु किये हैं शास्त्र पढ़े हैं। जन्म भी पूरे 84लिए हुए हैं। यह नहीं जानता। हम तुमको इन सहित बताता हूँ। ब्रह्मा को भी बतलाता हूँ। ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों को भी बतलाता हूँ। मुझे रथ भी तो चाहिए न। रुद्रदेव भी तो सवारी नहीं कर सकते। तुम बच्चे याद करते हो और मैं आ जाता हूँ। मुझे तो सर्विस करनी होती। श्री2शिव की मत से भारत स्वर्ग बनता है। नर्क वासियों को श्री2 का टाइटल देना तो राँग है। आगे श्री नाम था नहीं। अभी तो श्री शास्त्री जी, श्री कृ- कुता, श्री बिल्ली कह देते। सबको श्री अर्थात श्रेष्ठ बना दिया है। श्री श्री तो है शिव बाबा फिर सूक्ष्म वतन वासी ब्रह्मा विष्णु शंकर फिर श्री ल0ना0 आजकल तो भ्रष्टाचारियों पर भी श्री का ताज
(भागन्ती)
रख दिया है। यह समझने की बातें हैं। नालेज बड़े मजे की है। परन्तु कोई पढ़ते पढ़ते रफूचक्कर हो जाते हैं। माया हाथ छुड़ा देती है। दुकान भी नम्बरवार है। बड़ी दुकान में जरूर अच्छे सेल्समैन होंगे। छोटे में कम होंगे। तो जाना बड़ी दुकान पर चाहिए। जहां महारथी हों। माताओं के तो टाइम बहुत रहता है। गृहस्थियों को धन्धा आदि करना है। तो बिजी रहते हैं। माताएं तो फ्री हैं। खाना पकाना बस। हां तुम पर फिर बन्धन डालते हैं। सुनते हैं ब्रह्माकुमारियों पास जाने से विष बन्द हो जावेगा तो रोकते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

c) शिव के लिए तो झगड़ा होता है शिव पर भी झूठे कलंक लगाये हैं। पत्थरा खाता या कितनो को लानी… और ऐसे मूर्ख बुद्धि मनुष्यों का विनाश हो जावेगा। और जो तुम स्वामिनियाँ बनती हो उनको बादशाही मिलती। शिव बाबा ऐसी कितनी बेहद चीज है। जो एकदम2 फूल जाते हैं। बाप बिल्कुल सहज रास्ता बतलाते हैं मुझे याद करो। तो तुम्हारे पास भी आ जावेंगे और मेरे पास भी आ जावेंगे। याद न करेंगी तो पाप भी कटेंगे। और साथ भी नहीं ले जाऊँगा। और फिर सजा खानी पड़ेगी।

d) अमृतसर में कान्फ्रेंस होती है। सब इकट्ठे होंगे उन्हों को लिखना है कि भक्ति मार्ग में जो भी सामग्री है वेद आदि अध्ययन करना, गीता अध्ययन करना यह सब यज्ञ जप तप आदि करते2 तुम रसातल पहुँचे हो। पूरे पतित बने हो। गोया मार्ग से छाछ पी है। मक्खन तो सतयुग त्रेता में तुमने खाकर पूरा किया। बाकी पीछे छाछ रह जाती। छाछ भी पहले अच्छी मिलती फिर पानी मिलता है। इस समय भक्ति में मक्खन कुछ है नहीं। छाछ भी पानी हो गई है। छाछ पीते2 बीमार हो गये हैं। अब मैं फिर मक्खन खिलाता हूँ। सतयुग त्रेता में घी की नदियाँ हैं। अभी तो घी कितना महँगा हो गया है। घी के बदले वासलेट की नदी बह रही है। घी के लायक है। बाप कहते हैं मैं गरीब निवाज हूँ। साहूकार इतना उठा न सकें। मैं गरीबों को ही साहूकार … भक्ति मार्ग है छाछ मार्ग। ज्ञान मार्ग है मक्खन मार्ग। ज्ञान से कृष्ण की सृष्टि … मिलता है स्वराज्य रूपी मक्खन मिलता है। दो बन्दर लड़े मक्खन बिल्ली खा गया आखानी है न। यह क्रिश्चियन लोग लड़ते हैं मक्खन बीच में तुमको मिल जाता है। भक्ति मार्ग में छाछ पीते2 बीमार हो जाते हैं। खाते तो बड़े=बड़े छोटे छोटे रहते हैं। बाप को तरस पड़ता है। सबको आत्मा काली हो गई। अभी मैं आया हूँ दीपक जगाने। तुम्हारी बच्ची2 दीपावली सतयुग में होती है। यह आसुरी … की दीपावली है। वहाँ कोरोनेशन मनाते हैं। वहाँ मतशादानी ऐसी नहीं होती जो वास करें। यहाँ तो बारूद की कितनी गन्दी वास होती है। वहाँ ऐसी दुखदायक चीज होती नहीं। वहाँ हर चीज सुगन्धित होती है। ऐसे स्वर्ग के मालिक बनने के तुम पढ़ रहे हो। अच्छा मात पिता बाप दादा का मीठे2 सिकीलधे बच्चों को याद प्यार और गुड मॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

रात्रि क्लास ओमशान्ति शिव, बाबा, याद है?

दिन और रात ज्ञान और भक्ति। मक्खन और छाछ। दिखाते भी हैं कृष्ण के मुख में मक्खन। बाकी छाछ किसको? आधा कल्प मक्खन आधा कल्प छाछ। समझने की है बहुत इजी (सहज) समझते हैं। नई सृष्टि में सतो रजो तमो में आना ही है। तमो प्रधान माना भ्रष्टाचारी होगी। जरूर पुरानी दुनिया में दुःख होता जावेगा। हर एक चीज पुरानी होती है। अभी तुम बच्चों को हर एक बात समझाना सहज है। गीता ही भारत का देवी शास्त्र है। शुरुआत है ही भगवानुवाच। गीता को माता कहा जाता है। जन्म देने वाला पिता है। कृष्ण तो बच्चा है। वह जन्म दे न सके। तो माया बच्चों को कितना बेसमझ बना देती है। हम समझदार विश्व के मालिक थे। विश्व का रचयिता ही विश्व का मालिक बनावेगा। माया कौड़ी समान बना देती। माया बहुतों को हिला देती है। बाप बच्चों को समझाते हैं बच्चे फारकती न देना फिर भी दे देते हैं। स्टीमर से उतर पड़ते हैं। तुम जा रहे हो उस पार फिर रास्ते में चलते2 उतर पड़ते। लिखाया भी जाता है फोटो भी देते हैं पासपोर्ट लिए फिर उतर पड़ते हैं। अच्छा बच्चों मीठे2 सिकीलधे बच्चों को मात पिता बाप दादा का याद प्यार और गुड नाईट। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते। ओमशान्ति

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked

30-10-03 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे-बच्चे – तुम आत्माओं को अपना-अपना रथ है, मैं हूँ निराकार, मुझे कल्प में एक ही बार रथ चाहिए, मैं ब्रह्मा का अनुभवी वृद्ध रथ उधार लेता हूँ"

प्रश्न:- किस निश्चय के आधार पर शरीर का भान भूलना अति सहज है?

उत्तर:- तुम बच्चों ने निश्चय से कहा – बाबा, हम आपके बन गये, तो बाप का बनना माना ही शरीर का भान भूलना। जैसे शिवबाबा इस रथ पर आता और चला जाता, ऐसे तुम बच्चे भी प्रैक्टिस करो इस रथ पर आने-जाने की। अशरीरी बनने का अभ्यास करो। इसमें मुश्किल का अनुभव नहीं होना चाहिए। अपने को निराकारी आत्मा समझ बाप को याद करो।

गीत:- ओम् नमो शिवाए.....

ओम् शान्ति। शिवबाबा बच्चों को इस ब्रह्मा के रथ द्वारा समझाते हैं क्योंकि बाप बच्चों से ही पूछते हैं मुझे अपना रथ तो है नहीं। मुझे रथ तो जरूर चाहिए। जैसे तुम हर एक आत्मा को अपना-अपना रथ है ना। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी सूक्ष्म शरीर है ना। लक्ष्मी-नारायण आदि सब आत्माओं को शरीर रूपी रथ है जरूर, जिसको अश्व कहते हैं। हैं तो मनुष्य ना। मनुष्यों की ही बात समझाई जाती है, जानवरों की बातें जानवर जानें। यहाँ तो मनुष्य सृष्टि है तो बाप भी मनुष्यों को बैठ समझाते हैं। मनुष्य में भी जो आत्मा है, उनको बैठ समझाते हैं। डायरेक्ट पूछते हैं तुम हर एक को अपना-अपना शरीर है ना। हर एक आत्मा शरीर लेती और छोड़ती है। मनुष्य तो कह देते कि आत्मा 84 लाख जन्म लेती है। यह भूल है जबकि तुम 84 जन्म लेकर ही बिल्कुल फाँ हो गये हो (थक गये हो), कितने तंग हो गये हो। तो 84 लाख जन्मों की तो बात ही नहीं। यह है मनुष्यों के गपोड़े। तो बाप समझाते हैं तुम आत्माओं का भी अपना-अपना रथ है। मुझे भी तो रथ चाहिए ना। मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूँ। गाते भी हैं पतित-पावन, ज्ञान का सागर..... तुम और कोई को पतित-पावन नहीं कहेंगे। लक्ष्मी-नारायण आदि को भी नहीं कहेंगे। पतित सृष्टि को पावन बनाने वाला अर्थात् पावन सृष्टि स्वर्ग का रचयिता, परमपिता परमात्मा बिगर कोई हो नहीं सकता। सुप्रीम फादर वही है। बाप जानते हैं तुम नम्बरवार पत्थरबुद्धि से पारस बुद्धि बन रहे हो। बाहर वाले मनुष्य यह नहीं जानते। तो बाप समझाते हैं मुझे भी जरूर रथ तो चाहिए ना। मुझ पतित-पावन को जरूर पतित दुनिया में आना पड़े ना। प्लेग की बीमारी होती है तो डॉक्टर को प्लेगियों के पास आना पड़ेगा। बाप कहते हैं तुम्हारे में 5 विकारों की बीमारी आधाकल्प की है। मनुष्य तो दु:ख देने वाले हैं। इन 5 विकारों से तुम बिल्कुल ही पतित बन गये हो। तो बाप समझाते हैं मुझे पतित दुनिया में ही आना पड़े ना। पतित को ही भ्रष्टाचारी कहा जाता है, पावन को श्रेष्ठाचारी कहेंगे। बरोबर तुम्हारा भारत पावन श्रेष्ठाचारी था, लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। जिसकी ही महिमा गाते हो सर्वगुण सम्पन्न..... वहाँ सब सुखी थे। यह तो कल की बात है। तो बाप कहते हैं मैं आऊं तो कैसे आऊं, किसके शरीर में आऊं? पहले तो मुझे प्रजापिता चाहिए। सूक्ष्म वतनवासी को यहाँ कैसे ले आ सकता? वह तो

Optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDF

फरिश्ता है ना। उनको पतित दुनिया में ले आऊं — यह तो दोष हो जाए। कहेंगे मैंने क्या गुनाह किया? बाप बड़ी रमणीक बातें समझाते हैं। समझेगा वही जो बाप का बना होगा। घड़ी-घड़ी बाप को याद करता रहेगा।

बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब धरती पर पाप बढ़ जाता है। कलियुग में मनुष्य कितने पाप करते हैं। तो बाप पूछते हैं — बच्चे, बताओ मैं आऊं तो किस तन में आऊं? मुझे चाहिए भी जरूर वृद्ध अनुभवी रथ। यह जो मैंने रथ लिया है, बरोबर इनके बहुत गुरु किये हुए हैं। शास्त्र आदि पढ़ा हुआ है। यह भी लिखा हुआ है ना कि बहुत पढ़ा हुआ था। अर्जुन की बात नहीं। मुझे कोई अर्जुन वा कृष्ण का रथ थोड़ेही चाहिए। मुझे तो चाहिए ब्रह्मा का रथ, उनको ही प्रजापिता कहेंगे। कृष्ण को तो प्रजापिता नहीं कहेंगे। बाप को तो ब्रह्मा का ही रथ चाहिए जिससे ब्राह्मणों की प्रजा रचे। ब्राह्मणों का है सर्वोत्तम कुल। विराट रूप दिखाते हैं ना। देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, बाकी ब्राह्मण कहाँ गये? यह किसको भी पता नहीं। ऊंच ते ऊंच है ब्राह्मणों की चोटी। चोटी हो तब ही समझा जाता है कि यह ब्राह्मण है। सच्ची-सच्ची चोटी तो तुम्हारी है। तुम राजऋषि हो, बड़ी चोटी वाले। ऋषि उनको कहा जाता जो पवित्र रहते हैं। तुम हो राजयोगी, राजऋषि। राजाई के लिए तपस्या कर रहे हो। वह मुक्ति के लिए हठयोग की तपस्या करते हैं, तुम जीवनमुक्ति, राजाई के लिए राजयोग की तपस्या कर रहे हो। तुम्हारा नाम ही है शिव शक्ति। शिवबाबा तुम्हें रीइनकारनेट करते हैं। तो तुम फिर से भारत में जन्म लेते हो। जन्म लिया है ना। कोई-कोई ने भल जन्म लिया है परन्तु समझते नहीं कि हम शिवबाबा के बने हैं, उनके पास जन्म लिया है। अगर ऐसा समझें तो शरीर का भान बिल्कुल ही निकल जाना चाहिए। जैसे शिवबाबा निराकार इस रथ में है, तुम भी अपने को निराकार आत्मा समझो। बाप कहते हैं — बच्चे, मुझे याद करो। अब वापिस घर चलना है। तुम तो पहले अशरीरी थे फिर देवी-देवता शरीर लिया, फिर क्षत्रिय शरीर, फिर वैश्य शरीर, फिर शूद्र शरीर लिया। अभी फिर तुम अशरीरी बनो। तुम मुझ निराकार को ही कहते हो — बाबा, अभी हम आपके बने हैं, हमको वापिस जाना है। देह को तो ले नहीं चलना है। हे आत्मायें, अब मुझ बाप को और स्वीट होम को याद करो। मनुष्य जब विलायत से लौटते हैं तो कहते हैं — चलो, अपने स्वीट होम भारत में चलें। जहाँ जन्म लिया था वहाँ लौटें। मनुष्य मरते हैं तो जहाँ जन्म लिया था उनको वहाँ ले जाते हैं। समझते हैं भारत की मिट्टी का बना हुआ है तो वह मिट्टी भारत में ही छोड़ें।

बाप कहते हैं मेरा जन्म भी भारत में है। शिव जयन्ती भी मनाते हो। मेरे नाम तो ढेर रख दिये हैं। कहते हैं हर-हर महादेव, सबके दुःख काटने वाला, वह भी मैं ही हूँ, शंकर नहीं है। ब्रह्मा सर्विस पर हाजिर है। और फिर जो स्थापना करते हैं वही विष्णु के दो रूप से पालना करेंगे। मुझे प्रजापिता ब्रह्मा जरूर चाहिए। आदि देव का बरोबर मन्दिर भी है। आदि देव किसका बच्चा है? कोई बताये। इस देलवाड़ा मन्दिर के जो ट्रस्टी लोग हैं वह भी यह नहीं जानते कि आदि देव है कौन? उनका बाप कौन था? आदि देव प्रजापिता ब्रह्मा है, उनका बाप है शिव। अब जिनका मन्दिर है उनके आक्यूपेशन को नहीं जानते और बने हैं

ट्रस्टी। जगतपिता, जगत अम्बा का यह यादगार मन्दिर है। इस आदि देव ब्रह्म के रथ में बाप ने बैठ ज्ञान सुनाया है। कोठरी में सब बच्चे बैठे हैं। सभी का मन्दिर तो नहीं बनायेंगे। मुख्य है 108 की माला, तो 108 कोठरियां बना दी हैं। 108 की ही पूजा होती है। मुख्य है शिवबाबा फिर ब्रह्मा-सरस्वती युगल। वह शिवबाबा है फूल। उनको अपना शरीर नहीं है। ब्रह्मा-सरस्वती को अपना शरीर है। माला शरीरधारियों की बनी हुई है। सब माला को पूजते हैं। पूजकर पूरा करेंगे फिर शिवबाबा को नमस्कार करेंगे, माथा झुकायेंगे क्योंकि उसने इन सबको पतित से पावन बनाया है इसलिए पूजी जाती है। माला हाथ में ले बैठ राम-राम कहते हैं। परमपिता परमात्मा के नाम का किसको पता नहीं है। शिवबाबा है मुख्य फिर प्रजापिता ब्रह्मा और सरस्वती भी मुख्य हैं। बाकी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ जो-जो पुरुषार्थ करते रहते हैं उन्हों के नाम होंगे। आगे चल तुम सब देखते रहेंगे। जब पिछाड़ी होगी तब तुम यहाँ आकर रहेंगे। जो पक्के योगी होंगे वही रह सकेंगे। भोगी तो थोड़ा ठका सुनने से ख़त्म हो जायेंगे। कोई का आपरेशन देखने से भी मनुष्य अनकॉन्सेस हो जाते हैं। अभी पार्टीशन में कितने मनुष्य मरे। वो लोग तो गपोड़े मारते रहते हैं कि हमने बिगर कोई लड़ाई राज्य ले लिया। परन्तु मरे इतने जो बात मत पूछो। यह है ही झूठी माया........ अभी सच्चा बाप बैठ तुमको सच सुनाते हैं। बाप कहते हैं मुझे रथ तो जरूर चाहिए। मैं साजन बड़ा हूँ तो सजनी भी बड़ी चाहिए। सरस्वती है ब्रह्मा मुख वंशावली। वह कोई ब्रह्मा की युगल नहीं है, ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगत अम्बा क्यों कहते हैं? क्योंकि यह मेल है ना, तो माताओं की सम्भाल के लिए उनको रखा है। ब्रह्मा मुख वंशावली सरस्वती तो ब्रह्मा की बेटी हो गई। मम्मा तो जवान है, ब्रह्मा तो बूढ़ा है। सरस्वती जवान, ब्रह्मा की स्त्री शोभती भी नहीं। हाफ पार्टनर कहला न सके। अभी तुम समझ गये हो। तो बाप कहते हैं मुझे इस ब्रह्मा का शरीर लोन लेना पड़ता है। उधार पर तो बहुत लेते हैं। ब्राह्मण को खिलाते हैं तो वह आत्मा आकर ब्राह्मण के शरीर का आधार लेगी। आत्मा वह शरीर छोड़कर आती है क्या? नहीं, यह तो बच्चों को समझाया गया है कि ड्रामा में साक्षात्कार की रस्म-रिवाज़ पहले से नूँध है। यहाँ भी बुलाते हैं। ऐसे नहीं कि आत्मा शरीर छोड़कर आयेगी। नहीं, यह ड्रामा में नूँध है। बाप के लिए तो यह रथ नंदीगण है। नहीं तो शिव के मन्दिर में बैल क्यों दिखाते? सूक्ष्म वतन में शंकर के पास बैल कहाँ से आया? वहाँ तो है ही ब्रह्मा, विष्णु, शंकर और वह युगल दिखाते हैं। प्रवृत्ति मार्ग दिखाते हैं। बाकी वहाँ जानवर कहाँ से आया? मनुष्यों की बुद्धि कुछ भी काम नहीं करती, जो आता है सो कहते रहते। जिससे वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ एनर्जी होती है।

b) तुम कहते हो हम सो पावन देवता थे फिर पुनर्जन्म लेते-लेते हम पतित पुजारी बने हैं। आपे ही पूज्य, आपेही पुजारी। पूज्य और पुजारी कोई भगवान् नहीं बनता। उनको थोड़ेही 84 जन्म लेने पड़ते। माया मनुष्यों को बिल्कुल पत्थरबुद्धि बना देती है। हम सो का अर्थ यह नहीं कि हम आत्मा सो परमात्मा हैं, नहीं। हम सो ब्राह्मण, सो देवता बनेंगे। पुनर्जन्म लेते आयेंगे। कितनी अच्छी समझानी है। बाप कहते हैं मैंने जिसमें प्रवेश किया है, इसने

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बहुत गुरु किये, शास्त्र पढ़े हैं, जन्म भी पूरे 84 लिए हुए हैं। यह नहीं जानता, हम तुमको इन सहित बताता हूँ। ब्रह्मा को भी बतलाता हूँ। सदैव भी तो सवारी नहीं कर सकता हूँ। ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों को बतलाता हूँ। मुझे रथ भी चाहिए ना। तुम बच्चे याद करते हो और मैं आ जाता हूँ। मुझे तो सर्विस करनी है तो श्री श्री शिव की मत से भारत पावन बनता है। नर्कवासियों को श्री श्री का टाइटिल देना रांग है। आगे श्री नाम नहीं था। अभी तो सबको श्री अर्थात् श्रेष्ठ बना दिया है। श्री श्री तो है शिवबाबा। फिर सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर फिर श्री लक्ष्मी-नारायण। यह समझने की बातें हैं। नॉलेज बड़ी मज़े की है। परन्तु कोई-कोई पढ़ते-पढ़ते रफू-चक्कर हो जाते हैं। माया हाथ छुड़ा देती है। दुकान भी नम्बरवार हैं। बड़ी दुकान में जरूर अच्छे सेल्स मैन होंगे। छोटे-छोटे में कम होंगे। तो बड़ी दुकान पर जाना चाहिए जहाँ महारथी हों। माताओं को तो टाइम बहुत रहता है। पुरुषों को धंधा आदि करना है तो बिजी रहते हैं। मातायें तो फ्री हैं। खाना पकाया बस। वह तुम पर फिर बंधन डालते हैं। c) सुनते हैं ब्रह्माकुमारियों पास जाने से विष बंद हो जायेगा तो रोकते हैं।

शिवबाबा ऐसी तिरकनी (फिसलने वाली) चीज़ है जो घड़ी-घड़ी भूल जाती है। बाप बिल्कुल सहज रास्ता बताते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भी कट जायेंगे और मेरे पास भी आ जायेंगे। याद नहीं करेंगे तो पाप भी नहीं कटेंगे और साथ भी नहीं ले जाऊंगा। d) फिर सज़ा खानी पड़ेगी। भक्ति मार्ग में छांछ पीते आये। मक्खन तो तुमने सतयुग-त्रेता में खाकर पूरा कर दिया। बाकी पीछे छांछ रह जाती है। छांछ भी पहले अच्छी मिलती फिर पानी मिलता है। सतयुग-त्रेता में घी दूध की नदी बहती है। अभी तो घी कितना महंगा हो गया है। अच्छा!

मात-पिता बापदादा का मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- राजऋषि बन तपस्या करनी है। पूज्यनीय माला में आने के लिए बाप समान सर्विस करनी है। पक्का योगी बनना है।

२- नॉलेज बड़ी मज़े की है, इसलिए रमणीकता से पढ़ना है, मूँझना नहीं है।

वरदान:- सदा अपनी श्रेष्ठ शान में रह परेशानियों को मिटाने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान भव

सदा यह वरदान स्मृति में रहे कि हम अपनी श्रेष्ठ शान में रहने वाले औरों की भी परेशानी को मिटाने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान हैं। कमजोर नहीं। श्रेष्ठ शान के तख्तनशीन हैं। जो अकालतख्तनशीन, बाप के दिल तख्तनशीन श्रेष्ठ शान में रहने वाले हैं, वे स्वप्न में भी कभी परेशान नहीं हो सकते। कोई कितना भी परेशान करे लेकिन अपनी श्रेष्ठ शान में ही रहते हैं।

स्लोगन:-

सदा अपने स्वमान में रहो तो सर्व का मान मिलता रहेगा।

PDF co... ...y of CVISION PDFCompressor

20-5-98 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – कभी जिस्म (साकार शरीर) को याद नहीं करना है, आँखों से भल इन्हें देखते हो परन्तु याद सुप्रीम टीचर शिवबाबा को करना है"

प्रश्न:- तुम बच्चे किस एक कायदे को जानने के कारण हार-फूल अभी स्वीकार नहीं कर सकते?

उत्तर:- हम जानते हैं कि जिनकी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र है, वही हार-फूल के हकदार हैं। इस कायदे अनुसार हम फूल-हार स्वीकार नहीं कर सकते। बाबा कहते है मैं भी तुम्हारे फूल-हार स्वीकार नहीं करता क्योंकि मैं न पूज्य बनता हूँ, न पुजारी। मैं तो तुम्हारा ओबीडियन्ट फादर और टीचर हूँ।

गीत:- छोड़ भी दे आकाश सिंहासन... ओम् शान्ति।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। इस गीत से सर्वव्यापी का ज्ञान उड़ जाता है। याद करते हैं अब भारत बहुत दु:खी है। ड्रामा अनुसार यह सब गीत बने हुए हैं। दुनिया वाले नहीं जानते हैं। बाप आते हैं पतितों को पावन बनाने वा दु:खियों को दु:ख से लिबरेट करने। दु:ख हरकर सुख देने लिए। बच्चे जान गये हैं वही बाप आया हुआ है। बच्चों को पहचान मिल गई है। स्वयं बैठ बतलाते हैं मैं साधारण तन में प्रवेश कर फिर तुम बच्चों को सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बताता हूँ। सृष्टि एक ही है सिर्फ नई और पुरानी होती है। जैसे शरीर बचपन में नया होता है फिर पुराना होता है। नया शरीर, पुराना शरीर – दो चीज़ तो नहीं कहेंगे। है एक ही, सिर्फ नये से पुराना बनता है। वैसे दुनिया एक ही है, नई से अब पुरानी हुई है। नई कब थी – यह फिर कोई भी बता नहीं सकते हैं। बाप आकर समझाते हैं – बच्चे, जब नई दुनिया थी तो भारत नया था। सतयुग कहा जाता है। वही भारत अब पुराना बना है। इसको पुरानी ओल्ड वर्ल्ड कहा जाता है। न्यु वर्ल्ड से फिर ओल्ड बनी है। फिर उनको नया ज़रुर बनना है। नई दुनिया का बच्चों ने साक्षात्कार किया है। अच्छा, उस नई दुनिया के मालिक कौन थे? बरोबर यह लक्ष्मी-नारायण थे। आदि सनातन देवी-देवतायें मालिक थे। यह बाप बच्चों को समझा रहे हैं। बाप

b) कहते हैं अब निरन्तर यही याद करो। बाप परमधाम से हमको पढ़ाने राजयोग सिखाने आया हुआ है। महिमा सारी उस एक की ही है। इनकी महिमा कुछ नहीं है। इस समय सब तुच्छ बुद्धि हैं, कुछ नहीं समझते हैं, इसलिए मैं आता हूँ। तब तो यह गीत भी बना हुआ है। सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। हरेक का पार्ट तो अपना-अपना है। बाप बार-बार कहते हैं देह-अभिमान

c) छोड़ देही-अभिमानी बनो और याद शिवबाबा को करो। ऐसे ही समझो – शिवबाबा ही सब कुछ करते हैं। ब्रह्मा है ही नहीं। भल इनका रूप इन आँखों से दिखाई पड़ता है परन्तु तुम्हारी बुद्धि शिवबाबा के तरफ़ जानी चाहिए। शिवबाबा न हो तो इनकी आत्मा, इनका शरीर कोई काम का नहीं है। हमेशा समझो इसमें शिवबाबा है जो इस द्वारा पढ़ाते हैं। तुम्हारा यह टीचर नहीं है। सुप्रीम टीचर वह है, याद उनको करना है। कभी भी इस जिस्म को याद नहीं करना है। बुद्धियोग बाप के साथ लगाना है। तो सर्वव्यापी का ज्ञान ठहर भी न सके। बच्चे याद करते हैं फिर से आकर ज्ञान योग सिखाओ। परमपिता परमात्मा के सिवाए तो कोई राजयोग सिखला न सके। तुम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बच्चों की बुद्धि में है कि यह गीता का ज्ञान स्वयं बाप सुनाते हैं फिर यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। वहाँ दरकार ही नहीं है। राजधानी स्थापन हो गई, सद्गति हो जाती है। ज्ञान दिया जाता है दुर्गति से सद्गति में जाने लिए। बाकी वह तो सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। मनुष्य जप, तप, दान, पुण्य आदि जो कुछ भी करते हैं सब भक्ति मार्ग की बातें हैं। इससे मुझे कोई मिल नहीं सकता है। आत्मा के पंख टूट गये हैं। पत्थर बन गये हैं। पत्थर से फिर पारस बनाने मुझे आना
d) पड़ता है।

बाप कहते हैं अब कितने मनुष्य हैं, सरसों मिसल संसार भरा हुआ है। सब खत्म हो जाने हैं। सतयुग में तो इतने मनुष्य होते नहीं। नई दुनिया में वैभव बहुत, मनुष्य थोड़े होते हैं। यहां तो इतने मनुष्य हैं जो खाने के लिए भी नहीं मिलता है। पुरानी कलराठी जमीन है। फिर नई हो जायेगी। वहाँ है एवरीथिंग न्यु। नाम ही कितना मीठा है – हेविन, बहिश्त। देवताओं की नई दुनिया। पुराने घर को तोड़ नये में बैठने की दिल होती है ना। अब है नई दुनिया स्वर्ग में आने की तात (लगन)। इस पुराने शरीर की कोई वैल्यु नहीं है। शिवबाबा को तो कोई शरीर है नहीं। बच्चे कहते हैं हार पहनायें। लेकिन इनको हार पहनायेंगे तो तुम्हारा बुद्धियोग इसमें चला जायेगा। शिवबाबा कहते हैं हमको हार की दरकार नहीं है। तुम ही पूज्य बनते हो। पुजारी भी बनते हो। आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी बनते हो। तो अपने ही चित्र की पूजा करने लग पड़ते हो। बाबा कहते हैं – मैं न पूज्य बनता हूँ, न फूलों आदि की दरकार है। मैं क्यों पहनूँ? इसलिए कब फूल लेते नहीं हैं। तुम जब पूज्य बनो फिर जितना चाहिए उतना फूल पहनना। मैं तो तुम बच्चों का मोस्ट ओबीडियन्ट फादर भी हूँ, टीचर भी हूँ, सर्वेन्ट भी हूँ। बड़े-बड़े रॉयल आदमी जब नीचे सही डालते हैं तो लिखते हैं – मेन्टोकरजिन... अपने को लार्ड कभी नहीं लिखते हैं। यहां तो लिखते – श्री श्री लक्ष्मी-नारायण, श्री फलाना। एकदम 'श्री' अक्षर डाल देते हैं। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं – बच्चे, अब इस शरीर को याद न करो। अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो। इस पुरानी दुनिया में आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। सोना 9 कैरेट का होगा तो जेवर भी 9 कैरेट का होगा। सोने में ही खाद पड़ती है। तो आत्मा को निर्लेप नहीं समझना चाहिए। यह ज्ञान तुमको है। सतयुग में 21 जन्म के लिए प्रालब्ध पा लेते हो तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। परन्तु बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हमको शिक्षा दे रहे हैं। ब्रह्मा की आत्मा भी उनको याद करती है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं सूक्ष्मवतन
e) वासी। बाप पहले-पहले सूक्ष्म शरीर रचते हैं। यह ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी अपना पार्ट बजाए फिर वापस चले जायेंगे। निर्वाणधाम ऊंचे ते ऊंचा धाम है। आत्माओं का निर्वाणधाम सबसे ऊंच है एक भगवान की सब भक्त याद करते हैं। परन्तु तमोप्रधान बन गये हैं तो बाप को भूल ठिक्कर-भित्तर सबकी पूजा करते हैं। हम जानते हैं जो कुछ चलता है, ड्रामा शूट होता जाता है। ड्रामा में एक बार जो शूटिंग होती है, समझो बीच में कोई पंछी आदि उड़ता है तो वही शूटिंग में घड़ी-घड़ी दिखाई देगा। पतंग का उड़ना हुआ, शूट हो गया तो फिर रिपीट होता रहेगा। यह भी ड्रामा सेकण्ड-सेकण्ड रिपीट होता रहता है। शूट होता रहता है। बना बनाया ड्रामा है, तुम एक्टर्स हो। सारे ड्रामा को साक्षी हो देखते हो। एक-एक सेकण्ड ड्रामा अनुसार पास होता रहता है। पत्ता

हिला, ड्रामा पास हुआ। ऐसे नहीं, पत्ता-पत्ता भगवान के हुक्म पर चलता है। यह सब ड्रामा की नूँध है। इनको अच्छी रीति समझाना पड़ता है। बाप ही आकर राजयोग सिखाते हैं और ड्रामा की नॉलेज देते हैं। चित्र भी कितने अच्छे बने हुए हैं! संगमयुग पर काँटा भी लगा हुआ है। कलियुग अन्त, सतयुग आदि का संगम है। अभी पुरानी दुनिया में अनेक धर्म हैं। नई दुनिया में फिर यह नहीं होंगे। तुम बच्चे हमेशा ऐसे समझो बाप हमको पढ़ाते हैं। हम गॉडली स्टूडेन्ट हैं। भगवानुवाच – मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। राजे लोग भी इन लक्ष्मी-नारायण को पूजते हैं। तो उन्हों को पूज्य बनाने वाला भी मैं हूँ। पूज्य जो थे वह अब पुजारी हो गये हैं। तुम बच्चे अब समझ गये हो हम सो पूज्य थे, फिर हम सो पुजारी बने। बाबा तो नहीं बनते हैं। तुम भी स्वीकार नहीं कर सकते हो, कायदे अनुसार जिनकी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हैं वही हकदार हैं फूलों के। वहाँ स्वर्ग में है ही खुशबूदार फूल। खुशबू लेने लिए फूल होते हैं। हार पहनने के लिए भी फूल होते हैं। बाप कहते हैं अब तुम बच्चे विष्णु के गले का हार बनते हो, नम्बरवार तुमको तख्त पर बैठना है। जिन्होंने जितना कल्प पहले पुरुषार्थ किया है वह करते हैं, करने लग पड़ेंगे। नम्बरवार तो हैं ही। बुद्धि कहती है फलाना बच्चा बहुत सर्विसएबुल है। जैसे दुकान में होता है – सेठ बनते हैं, भागीदार बनते हैं, मैनेजर बनते हैं। यह भी ऐसे है।

तुम बच्चों को मात-पिता पर जीत पानी है। तुम वन्डर खाते हो मात-पिता के आगे कैसे जा सकते हैं। बाप तो बच्चों को मेहनत कर लायक बनाते हैं, तख्त-नशीन बनाने। इसलिए कहते हैं हमारे तख्त पर जीत पहनना। एक दो पर जीत पहनते हैं ना। पुरुषार्थ इतना करो जो नर से नारायण बनो। एम ऑबजेक्ट मुख्य है ही एक। फिर कहते हैं किंगडम स्थापन हो रही है। फिर उसमें वैराइटी पद है। माया को जीतने का पूरा पुरुषार्थ करो। बच्चों आदि को भी प्यार से चलाओ। परन्तु ट्रस्टी होकर रहो। भक्तिमार्ग में कहते थे ना – प्रभु, यह सब कुछ आपका दिया हुआ है। आपकी अमानत आपने ले ली फिर रोने की बात ही नहीं। परन्तु यह है ही रोने की दुनिया। मनुष्य कथायें सुनाते हैं, मोह जीत राजा की भी कथा सुनाते हैं। वहां कोई दुःख फील नहीं होता है। एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। वहां कभी कोई बीमारी होती नहीं। एवरहेल्दी निरोगी काया रहती है। शादी आदि कैसे होती है, क्या ड्रेस पहनते हैं, वहाँ की रस्म-रिवाज कैसे चलती है)– यह सब बच्चों ने साक्षात्कार किया है। वह पार्ट सब बीत गया। उस समय इतना ज्ञान नहीं था। अब दिन-प्रतिदिन तुम बच्चों में ताकत बहत जोर से आती जाती है। यह भी सब पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है। वन्डर है – परमात्मा में भी कितना भारी पार्ट है। खुद बैठ समझाते हैं – ब्रह्माण्ड में ऊपर बैठ मैं कितना काम करता हूँ! नीचे तो कल्प में एक ही बार आता हूँ। बहुत निराकार के भी पुजारी होते हैं। परन्तु निराकार परमपिता परमात्मा कैसे आकर पढ़ाते हैं – यह बात गुम कर दी है। गीता में श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। तो निराकार से प्रीत ही टूट गई है। यह तो परमात्मा ने ही सहज राजयोग सिखाया और दुनिया को बताया। दुनिया बदलती रहती है, युग बदलते रहते हैं। इस ड्रामा के चक्र को अब तुम समझ गये हो। मनुष्य कुछ नहीं जानते। सतयुग के देवी-देवताओं को भी नहीं जानते। सिर्फ देवताओं की निशानियाँ रह गई हैं।

बाप समझाते हैं हमेशा ऐसे समझो – हम शिवबाबा के हैं, शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

h) शिवबाबा हमको इस ब्रह्मा तन द्वारा शिक्षा दे रहे हैं। शिवबाबा की याद में फिर बहुत मजा आता रहेगा। ऐसा गॉड फादर कौन कहलाये। फादर भी है, टीचर भी है। परन्तु वह फादर गुरु भी हो, ऐसा हो नहीं सकता। टीचर हो सकता है। फादर को गुरु कभी नहीं कहेंगे। इनका (बाबा का) फादर भी टीचर था, पढ़ाते थे। हम भी पढ़ते थे। वह है हद का फादर टीचर। यह है बेहद का फादर टीचर। तुम अपने को गॉडली स्टूडेन्ट समझो तो भी अहो सौभाग्य। गॉड फादर पढ़ाते हैं। कितना क्लीयर है। तो कितना मीठा बाप है! मीठी चीज़ को याद किया जाता है। जैसे आशिक-माशुक का प्यार होता है। उनका विकार के लिए प्यार नहीं होता है। बस, एक दो को देखते रहते हैं। तुम्हारा फिर है आत्माओं का परमात्मा के साथ। आत्मा कहती है -- बाबा कितना ज्ञान का, प्रेम का सागर है! इस पतित शरीर में आकर कितना हमको ऊंच बनाते हैं! गायन भी है – मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार। सेकण्ड में वैकुण्ठ में चले जाते हैं। सेकण्ड में मनुष्य से देवता बन जाते हैं। यह है एम ऑबजेक्ट। इसके लिए पढ़ाई करनी चाहिए। गुरु नानक ने भी कहा है मूत पलीती कपड़ धोए.. लक्ष्य सोप है ना। बाबा कहते हैं मैं कितना बड़ा धोबी हूँ। तुम्हारे वस्त्र (आत्मा और शरीर) कितना शुद्ध बनाता हूँ! ऐसा धोबी कभी देखा? आत्मा जो बिल्कुल काली हो गई है उनको योगबल से कितना स्वच्छ बनाता हूँ! तो इनको (दादा को) कभी याद नहीं करना है। यह काम सारा शिवबाबा का है। उनको ही याद करो। इन ब्रह्मा से मीठा वह है। आत्माओं को कहते हैं तुमको इन ऑखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है परन्तु तुम याद शिवबाबा को करो। शिवबाबा तुमको इनके द्वारा कौड़ी से हीरे जैसा बना रहे हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद, प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- हम गॉडली स्टूडेन्ट हैं, भगवान टीचर बन पढ़ाते हैं – इसी स्मृति में रहना है। घर गृहस्थ में रहते पूरा ट्रस्टी बनना है।

२- अभी हार-फूल स्वीकार नहीं करने हैं। विष्णु के गले का हार बनने के लिए माया को जीतने का पुरुषार्थ करना है।

वरदान :- सब कुछ बाप हवाले कर संगमयुगी बादशाही का अनुभव करने वाले अविनाशी राजतिलक अधिकारी भव

आजकल की बादशाही या तो धन दान करने से मिलती है या वोटों से मिलती हैं लेकिन आप बच्चों को स्वयं बाप ने राजतिलक दे दिया। बेपरवाह-बादशाह – यह कितनी अच्छी स्थिति है। जब सब कुछ बाप के हवाले कर दिया तो परवाह किसको होगी? बाप को। लेकिन ऐसे नहीं कि थोड़ा-थोड़ा कहीं अपनी अथॉरिटी को या मनमत को छिपाकर रखा हो। अगर श्रीमत पर हैं तो बाप हवाले हैं। ऐसे सच्चे दिल से सब कुछ बाप हवाले करने वाले डबल लाइट, अविनाशी राजतिलक के अधिकारी बनते हैं।

स्लोगन:-

एक-एक वाक्य महावाक्य हो, कोई भी बोल व्यर्थ न जाए
तब कहेंगे मास्टर सतगुरू।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

14-6-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – शिवबाबा तुम्हारे फूल आदि स्वीकार नही कर सकते क्योंकि वह पूज्य वा पुजारी नहीं बनते, तुम्हें भी संगम पर फूल हार नहीं पहनने हैं"

प्रश्न:- भविष्य राज्य तख्त के अधिकारी कौन बनते हैं?

उत्तर:- जो अभी मात-पिता के दिलतख्त को जीतने वाले हैं, वही भविष्य तख्तनशीन बनते हैं। वन्डर है बच्चे मात-पिता पर भी विजय प्राप्त करते हैं। मेहनत कर मात-पिता से भी आगे जाते हैं।

गीत:- छोड़ भी दे आकाश सिंहासन...

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। इस गीत से सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। याद करते हैं, अब भारत बहुत दुःखी है। ड्रामा अनुसार यह सब गीत बने हैं। दुनिया वाले नहीं जानते। बाप आते हैं पतितों को पावन करने वा दुःखियों को दुःख से लिबरेट कर सुख देने लिए। बच्चे जान गये हैं—वही बाप आया हुआ है। बच्चों को पहचान मिल गई है। स्वयं बैठ बतलाते हैं—मैं साधारण तन में प्रवेश कर सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का

a) राज़ सुनाता हूँ। सृष्टि एक ही है, सिर्फ नई और पुरानी होती है। जैसे शरीर बचपन में नया होता है फिर पुराना होता है। नया शरीर, पुराना शरीर दो शरीर तो नहीं कहेंगे। है एक ही सिर्फ नये से पुराना बनता है। वैसे दुनिया एक ही है। नये से अब पुरानी होती है। नई कब थी? यह फिर कोई बता न सके। बाप आकर समझाते हैं, बच्चे जब नई दुनिया थी तो भारत नया था। सतयुग कहा जाता था। वही भारत फिर पुराना बना है। इसको पुरानी, ओल्ड वर्ल्ड कहा जाता है। न्यु वर्ल्ड से फिर ओल्ड बनी है फिर उनको नया जरूर बनना है। नई दुनिया का बच्चों ने साक्षात्कार किया है। अच्छा उस नई दुनिया के मालिक कौन थे? बरोबर यह लक्ष्मी-नारायण थे। आदि सनातन देवी-देवता उस दुनिया के मालिक थे। यह बाप बच्चों को समझा रहे हैं। बाप कहते हैं—अब निरन्तर यही याद करो। बाप परमधाम से हमको पढ़ाने आते हैं। राजयोग

b) सिखाने आये हुए हैं। महिमा सारी उस एक की है, इनकी महिमा कुछ नहीं है। इस समय सब तुच्छ बुद्धि हैं, कुछ नहीं समझते। इसलिए मैं आता हूँ तब तो गीत भी बनाया हुआ है। सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। हर एक का पार्ट अपना-अपना है। बाप बार-बार कहते हैं— देह-अभिमान छोड़ तुम आत्म-अभिमानी बनो और आरगन्स द्वारा शिक्षा धारण करो। भल

c) इस बाबा को चलते-फिरते देखते हो परन्तु याद शिवबाबा को करो। ऐसे तो समझो शिवबाबा ही सब कुछ करते हैं ब्रह्मा है नहीं। भल इनका रूप इन आँखों से दिखाई पड़ता है। तुम्हारी बुद्धि शिवबाबा की तरफ जानी चाहिए। शिवबाबा न हो तो इनकी आत्मा, इनका शरीर कोई काम का नहीं। हमेशा समझो इसमें शिवबाबा है। वह इन द्वारा पढ़ाते हैं। तुम्हारा यह टीचर नहीं है। सुप्रीम टीचर वह है। याद उनको करना है। कभी भी जिस्म को याद नहीं करना है। बुद्धियोग बाप के साथ लगाना है। बच्चे याद करते हैं फिर से आकर ज्ञान-योग सिखाओ, परमपिता परमात्मा के सिवाए कोई राजयोग सिखा न सके। बच्चों की बुद्धि में है वही बैठ गीता का ज्ञान सुनाते हैं फिर यह नॉलेज प्रायःलोप हो जाता है। वहाँ दरकार ही नहीं। राजधानी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

स्थापन हो गई। सद्गति हो जाती है। ज्ञान दिया जाता है दुर्गति से सद्गति होने के लिए। बाकी वह तो सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। मनुष्य जप-तप, दान-पुण्य आदि जो कुछ करते हैं, सब भक्ति मार्ग की बातें हैं, इससे मुझे कोई मिल नहीं सकता। आत्मा के पंख टूट गये हैं। पत्थरबुद्धि बन गई है। पत्थर से फिर पारस बनाने मुझे आना पड़े। बाप कहते हैं– अब कितने d) मनुष्य हैं। सरसों मिसल संसार भरा हुआ है। अब सब खत्म हो जाने हैं। सतयुग में तो इतने मनुष्य होते नहीं। नई दुनिया में वैभव बहुत और मनुष्य थोड़े होंगे। यहाँ तो इतने मनुष्य हैं जो खाने के लिए भी नहीं मिलता है। पुरानी रेतीली जमीन है फिर नई हो जायेगी। वहाँ है ही एवरीथिंग न्यु। नाम ही कितना मीठा है – हेविन, बहिश्त, देवताओं की नई दुनिया। पुरानी को तोड़ नई में बैठने की दिल होती है ना। अब है नई दुनिया, स्वर्ग में जाने की बात। इसमें पुराने शरीर की कोई वैल्यु नहीं है। शिवबाबा को तो कोई शरीर है नहीं।

बच्चे कहते हैं– बाबा को हार पहनायें। परन्तु इनको हार पहनायेंगे तो तुम्हारा बुद्धियोग इसमें चला जायेगा। शिवबाबा कहते हैं हार की दरकार नहीं है। तुम ही पूज्य बनते हो। पुजारी भी तुम बनते हो। आपेही पूज्य आपेही पुजारी। तो अपने ही चित्र की पूजा करने लगते हैं। बाबा कहते हैं मैं न पूज्य बनता हूँ, न फूल आदि की दरकार है। मैं क्यों यह पहनूँ। इसलिए कभी फूल माला आदि लेते नहीं हैं। तुम पूज्य बनते हो फिर जितना चाहिए उतना फूल पहनना। मैं तो तुम बच्चों का मोस्ट बिलवेड ओबीडियन्ट फादर भी हूँ, टीचर भी हूँ, सर्वेन्ट भी हूँ। बड़े-बड़े रॉयल आदमी जब नीचे सही डालते हैं तो लिखते हैं मिन्टो, करजेन आदि... अपने को लार्ड कभी नहीं लिखेंगे। यहाँ तो श्री लक्ष्मी-नारायण, श्री फलाना। एकदम श्री अक्षर डाल देते हैं। तो बाप बैठ समझाते हैं अब इस शरीर को याद नही करो। अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो। इस पुरानी दुनिया में आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। सोना 9 कैरेट होगा तो जेवर भी 9 कैरेट। सोने में ही खाद पड़ती है। आत्मा को कभी निर्लेप नहीं समझना चाहिए। यह ज्ञान तुमको अभी है। तुम आधाकल्प 21 जन्म लिए प्रालब्ध पाते हो तो कितना पुरूषार्थ करना चाहिए! परन्तु बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। शिवबाबा, ब्रह्मा द्वारा हमको शिक्षा दे रहे हैं। ब्रह्मा की आत्मा भी उनको याद करती है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी। बाप पहले सूक्ष्म सृष्टि रचते हैं। e) निर्वाणधाम ऊंच ते ऊंच धाम है। आत्माओं का निर्वाणधाम सबसे ऊंच है। एक भगवान को सब भक्त याद करते हैं। परन्तु तमोप्रधान बन गये हैं तो बाप को भूल, ठिक्कर-भित्तर सबकी पूजा करते रहते हैं। हम जानते हैं जो कुछ चलता है ड्रामा शूट होता जाता है। ड्रामा में एक बार जो शूटिंग होती है। समझो बीच में कोई पंछी आदि उड़ता है तो वही घड़ी-घड़ी रिपीट होता रहेगा। पतंग उड़ता हुआ शूट हो गया तो फिर-फिर रिपीट होता रहेगा। यह भी ड्रामा का सेकेण्ड-सेकेण्ड रिपीट होता जाता है। शूट होता रहता है। यह बना बनाया ड्रामा है। तुम एक्टर्स हो सारे ड्रामा को साक्षी हो देखते हो। एक-एक सेकेण्ड ड्रामा अनुसार पास होता है। पत्ता हिला, ड्रामा पास हुआ। ऐसे नहीं पत्ता-पत्ता भगवान के हुक्म से चलता है। नहीं, यह सब ड्रामा में नूँध है। इनको अच्छी रीति समझना पड़ता है। बाप ही आकर राजयोग सिखलाते हैं और ड्रामा की नॉलेज देते हैं। चित्र भी कितने अच्छे बने हुए हैं। संगमयुग पर घडी का कांटा भी लगा हुआ है। कलियुग अन्त सतयुग आदि

PDF compressed with CVISION PDFCompressor

का संगम है। अभी पुरानी दुनिया में अनेक धर्म हैं। नई दुनिया में फिर यह नहीं होंगे। तुम बच्चे हमेशा ऐसे समझो--हमको बाप पढ़ाते हैं, हम गॉडली स्टूडेन्ट हैं। भगवानुवाच -- मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। राजे लोग भी लक्ष्मी-नारायण को पूजते हैं। तो उन्हों को पूज्य बनाने वाला मैं हूँ। जो पूज्य थे वह अब पुजारी हो गये हैं। तुम बच्चे समझ गये हो हम सो पूज्य थे फिर हम सो पुजारी बने। बाबा तो नहीं बनते हैं। बाबा कहते हैं, न मैं पुजारी हूँ, न पूज्य बनता हूँ। इसलिए मैं न हार पहनता हूँ, न पहनाने पड़ते हैं। फिर हम क्यों फूलों को स्वीकार करें। तुम भी स्वीकार नहीं कर सकते हो। कायदे अनुसार उन देवताओं का हक है, उनकी आत्मा और शरीर पवित्र है। वही हकदार हैं फूलों के। वहाँ स्वर्ग में तो हैं ही खुशबूदार फूल। फूल होते ही हैं खुशबू के लिए। पहनने के लिए भी होते हैं। बाप कहते हैं-- अभी तुम बच्चे विष्णु के गले का हार बनते हो। नम्बरवार तुमको तख्त पर बैठना है। जिन्होंने जितना कल्प पहले पुरूषार्थ किया है, अब करते हैं और करने लग पड़ेंगे। नम्बरवार तो हैं। बुद्धि कहती है फलाना बच्चा बहुत सर्विसएबुल है। जैसे दुकान में होता है। सेठ बनते हैं, भागीदार बनते हैं। मैसेन्जर बनते हैं। नीचे वालों को भी लिफ्ट मिलती है। यह भी ऐसे है। तुम बच्चों को भी मात-पिता पर जीत पानी है। तुम वन्डर खाते हो -- मात-पिता से आगे कैसे जा सकते हैं। बाप तो बच्चों को मेहनत कर लायक बनाते हैं, तख्तनशीन बनाने लिए। इसलिए कहते हैं, अब हमारे दिल रूपी तख्त पर जीत पहनने से भविष्य के तख्तनशीन बनेंगे। पुरूषार्थ इतना करो, जो नर से नारायण बनो। एम ऑब्जेक्ट मुख्य है ही एक, फिर किंगडम स्थापन हो रही है तो उसमें वैरायटी पद है।

तुम्हें माया को जीतने का पूरा-पूरा पुरूषार्थ करना है। बच्चों आदि को भी भल प्यार से चलाओ। परन्तु ट्रस्टी होकर रहो। भक्ति मार्ग में कहते थे ना-- प्रभू यह सब आपका दिया हुआ है। आपकी अमानत आपने ले ली। अच्छा फिर रोने की बात ही नहीं। परन्तु यह तो है ही रोने की दुनिया। मनुष्य कथायें बहुत सुनाते हैं। मोहजीत राजा की कथा भी सुनाते हैं। फिर कोई दु:ख फील नहीं होता है। एक शरीर छोड़ जाए दूसरा लिया। वहाँ कभी कोई बीमारी आदि होती नहीं। एवरहेल्दी, निरोगी काया रहती है, 21 जन्म के लिए। बच्चों को सब साक्षात्कार होता है। वहाँ की रसमरिवाज कैसे चलती है, क्या ड्रेस पहनते हैं। स्वयंवर आदि कैसे होते हैं-- सब बच्चों ने साक्षात्कार किया है। वह पार्ट सब बीत गया। उस समय इतना ज्ञान नहीं था। अब दिन-प्रतिदिन तुम बच्चों में ताकत बहुत आती जाती है। यह भी सब ड्रामा में नूँधा हुआ है। वन्डर है ना। परमपिता परमात्मा का भी कितना भारी पार्ट है। खुद बैठ समझाते हैं भक्ति मार्ग में भी ऊपर बैठ मैं कितना काम करता हूँ। नीचे तो कल्प में एक ही बार आता हूँ। बहुत, निराकार के पुजारी भी होते हैं। परन्तु निराकार परमात्मा कैसे आकर पढ़ाते हैं, यह बात गुम कर दी है। गीता में भी कृष्ण का नाम डाल दिया है। तो निराकार से प्रीत ही टूट गई है। यह तो परमात्मा ने ही आकरके सहज योग सिखलाया और दुनिया को बदलाया, दुनिया बदलती रहती है। युग फिरते रहते हैं। इस ड्रामा के चक्र को अभी तुम समझ गये हो। मनुष्य कुछ नहीं जानते। सतयुग के देवी-देवताओं को भी नहीं जानते। सिर्फ देवताओं की निशानियाँ रह गई है। तो बाप समझाते हैं, हमेशा ऐसे समझो हम शिवबाबा के हैं। शिवबाबा

हमको पढ़ाते हैं। शिवबाबा, इस ब्रह्मा द्वारा हमेशा शिक्षा देते हैं। शिवबाबा की याद में फिर बहुत मज़ा आता रहेगा। ऐसा गॉड फादर कौन? वह फादर भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। कई बाप बच्चों को पढ़ाते भी हैं तो वह जरूर कहेंगे हमारा यह फादर, टीचर है। परन्तु वह फादर गुरू भी हो, ऐसे नहीं होते हैं। हाँ टीचर हो सकता है। फादर को गुरू कभी नहीं कहेंगे। इनका (बाबा का) फादर टीचर भी था, पढ़ाते थे। वह है हद का फादर टीचर। यह है बेहद का फादर टीचर। तुम अपने को गॉडली स्टूडेन्ट समझो तो भी अहो सौभाग्य। गॉड फादर पढ़ाते हैं, कितना क्लीयर है। तो कितना मीठा बाबा है। मीठी चीज़ को याद किया जाता है। जैसे आशिक-माशूक का प्यार होता है। उनका विकार के लिए प्यार नहीं होता है। बस एक दो को देखते रहते हैं। तुम्हारा फिर है आत्माओं का परमात्मा बाप के साथ योग। आत्मा कहती है बाबा कितना ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है। इस पतित दुनिया, पतित शरीर में आकर हमको कितना ऊंच बनाते हैं। गायन भी हैं-- मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार। सेकेण्ड में बैकुण्ठ में जाते हैं। सेकेण्ड में मनुष्य से देवता बन पड़ते हैं। यह है एम आब्जेक्ट। उसके लिए पढ़ाई करनी चाहिए। गुरू नानक ने भी कहा है ना मूत पलीती कपड़ धोए... लक्ष्य सोप है ना। बाबा कहते हैं मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। तुम्हारे वस्त्र, तुम्हारी आत्मा और शरीर कितना शुद्ध बनाता हूँ। तो इनको (दादा को) कभी याद नहीं करना है। यह सारा कार्य शिवबाबा का है, उनको ही याद करो। इनसे मीठा वह है। आत्मा को कहते हैं तुमको इन आंखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है परन्तु तुम याद शिवबाबा को करो। शिवबाबा इनके द्वारा तुमको कौड़ी से हीरे जैसा बना रहे हैं। अच्छा--

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बाप के दिल रूपी तख्त पर जीत पाने का पुरूषार्थ करना है। परिवार में ट्रस्टी रहकर प्यार से सबको चलाना है। मोहजीत बनना है।

२- योगबल से आत्मा को स्वच्छ बनाना है। इन आंखों से सब कुछ देखते हुए याद एक बाप को करना है। यहाँ फूल हार स्वीकार न कर खुशबूदार फूल बनना है

वरदान:- सदा मनन द्वारा मगन अवस्था के सागर में समाने का अनुभव करने वाले अनुभवी मूर्त भव

अनुभवों को बढ़ाने का आधार है मनन शक्ति। मनन वाला स्वत: मगन रहता है। मगन अवस्था में योग लगाना नहीं पड़ता लेकिन निरन्तर लगा रहता है, मेहनत नहीं करनी पड़ती। मगन अर्थात् मुहब्बत के सागर में समाया हुआ, ऐसा समाया हुआ जो कोई अलग कर नहीं सकता। तो मेहनत से छूटो, सागर के बच्चे हो तो अनुभवों के तलाब में नहीं नहाओ लेकिन सागर में समा जाओ तब कहेंगे अनुभवी मूर्त।

स्लोगन:-

ज्ञान स्वरूप आत्मा वह है जिसका हर संकल्प, हर सेकण्ड समर्थ हो।

PDF Compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

...अधिकार अच्छी हो तो मैं उनके मित्र सम्बन्धियों को भी दे सकता हूँ। जिससे उनका भी शरीर निर्वाह चलता रहे। परन्तु बच्चे अच्छे हों, सर्विसएबुल हों, अन्दर बाहर साफ हों, बोली के बड़े मीठे हों। वास्तव में कुमारी की कमाई माँ बाप खा नहीं सकते। बाबा का बनकर फिर भी उस जिस्मानी सर्विस में ध्यान बहुत रहा- यह तो डिसरिगार्ड हो गया। बाप कहते हैं मनुष्य मात्र को हेविन का मालिक बनाओ। बच्चा फिर जिस्मानी सर्विस में माथा मारे। स्कूल खोलना तो गवर्मेन्ट का काम है अब बच्चियों को बाप से काम लेना है। कौन सी सर्विस करें? ईश्वरीय गवर्मेन्ट की या उस गवर्मेन्ट की। जैसे यह बाबा जवाहरात का धन्धा करते थे फिर बड़े बाबा ने कहा यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन्धा करना है। इससे तुम यह बनेंगे। चतुर्भुज का भी साक्षात्कार करा दिया। अब यह विश्व की बादशाही लेवें या यह करें। सबसे अच्छा धन्धा यह है। भल कमाई अच्छी थी परन्तु बाबा ने इसमें प्रवेश होकर मत दी कि अल्फ और बे को याद करो। कितना सहज है। छोटे बच्चे भी पढ़ सकते हैं। शिवबाबा तो हर एक बच्चे को समझ सकते हैं। यह भी सीख सकते हैं। यह है बाहरयामी, शिवबाबा है अन्तर्यामी। यह बाबा भी हर एक की शक्ल से, बोल से, एक्ट से सब कुछ समझ सकते हैं। बच्चियों को यह रूहानी सर्विस का चांस एक ही बार मिलता है। अब दिल में आना चाहिए हम मनुष्य को देवता बनायें या कांटों को कांटा बनायें? सोचो क्या करना चाहिए? निराकार भगवानुवाच- देह सहित देह के सब सम्बन्ध तोड़ो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। ब्रह्मा के तन से बाप ब्राह्मणों से ही बात करते हैं। यह ब्राह्मण लोग भी कहते हैं- ब्राह्मण देवी देवताए नमः जिसको नमः कहते। वह कुख वंशावली, तुम हो मुख वंशावली। बाबा को जरूर ब्रह्मा बच्चा चाहिए? कमारका बताओ बाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते 550 करोड़ कोई कहते एक ब्रह्मा.. अब तुम त्रिमूर्ति कहते हो परन्तु आक्यूपेशन तो अलग2 है ना। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। ब्रह्मा की नाभी से विष्णु, तो एक हो गये। विष्णु 84 जन्म लेते हैं या ब्रह्मा - बात तो एक ही है। बाकी रहा शंकर। ऐसे तो नहीं शंकर सो विष्णु होता है। नहीं, त्रिमूर्ति कहलाया जाता है। परन्तु रीयलाइज्ड बच्चे तो तुम। यह सब ज्ञान की बातें हैं। ब्रह्मा और शंकर।

a) तो बच्चियों के लिए यह सर्विस करना अच्छा है ना। या मैट्रिक आदि पढ़ना अच्छा है। वहाँ तो अल्पकाल का सुख मिलेगा। थोड़ी तनखाह मिलेगी। यहाँ तो तुम भविष्य 21 जन्मों के लिए मालामाल हो सकते हो। तो क्या करना चाहिए? कन्या तो निरबन्धन हैं। अधर कन्या से कुंवारी कन्या तीखी जा सकती हैं। क्योंकि पवित्र हैं। मम्मा भी कुमारी थी ना। पैसे की तो बात ही नहीं। कितनी तीखी गई तो फालो करना चाहिए खास कन्याओं को।

b) कांटों को फूल बनायें। ईश्वरीय पढ़ाई का एडवान्स लें या उस पढ़ाई का। कन्याओं का सेमीनार करना चाहिए। माताओं को तो पति आदि याद पड़ता है। सन्यासियों को भी याद बहुत पड़ता रहता है। कन्याओं को तो पढ़ाई छूटनी नहीं चाहिए। संग बहुत लग जाता है। कोई बड़े आदमी का बच्चा देखा दिल लग गई शादी हो गई। खेल खत्म। माया

c) एकदम गिरा देती है। अब बच्चे यहाँ सम्मुख आते हैं। सुनते हैं तो नशा चढ़ जाता है। सेन्टर से अन्दर बाहर जाते हैं तो नशा खत्म हो जाता है। यह है मधुबन। ऐसे भी बहुत आते हैं कहते हैं हम बाहर सेन्टर खोलेंगे। फिर लापता हो गए। यहाँ ज्ञान का गर्भ धारण करते, बाहर जाने से गर्भ मिस हो जाता है। माया हप कर लेती है। आपोजिशन बहुत करती है। माया भी कहती है बाबा। अब बाबा तो भी बलवान है फिर भी बाप को याद नहीं करते तो हम भी घूँसा मारेंगी। ऐसे नहीं कहो कि बाबा आप माया को कहो हमको घूंसा न मारे। युद्ध का मैदान है ना। एक तरफ है रावण की सेना, दूसरे तरफ है राम की सेना। बहादुर बन राम की तरफ जाना चाहिए। आसुरी सम्प्रदाय को ही दैवी सम्प्रदाय बनाने का धन्धा करना है। जिस्मानी विद्या तुम कितने वर्ष पढ़ेंगे। जब तक यह पढ़कर बड़े हो तब तक विनाश भी सामने आ जायेगा। आसार भी तुम देख रहे हो। बाबा ने समझाया है दोनों क्रिश्चियन भाई2 आपस में मिल जाएं तो लड़ाई हो न सके। परन्तु भावी ऐसी नहीं है। उन्हों को समझ ही नहीं आता है। अब तुम बच्चे योगबल से राजधानी स्थापन कर रहे हो। यह है शिव शक्ति सेना। जो शिवबाबा से...

"मीठे बच्चे - बाप आये हैं - तुम्हें श्रेष्ठ मत देकर सदा के लिए सुखी, शान्त बनाने, उनकी मत पर चलो, रुहानी पढ़ाई पढ़ो और पढ़ाओ तो एवरहेल्दी वेल्दी बन जायेंगे"

प्रश्न:- कौन सा चांस सारे कल्प में इस समय ही मिलता है, जो मिस नहीं करना है?

उत्तर:- रूहानी सेवा करने का चांस, मनुष्य को देवता बनाने का चांस **अभी** ही मिलता है। यह चांस मिस नहीं करना है। रूहानी सर्विस में लग जाना है। सर्विसएबुल बनना है। खास कुमारियों को ईश्वरीय गवर्मेन्ट की सेवा करनी है। मम्मा को पूरा-पूरा फालो करना है। अगर कुमारियां बाप का बनकर जिस्मानी सर्विस ही करती रहें, कांटों को फूल बनाने की सर्विस नहीं करें तो यह भी जैसे बाप का डिसरिगार्ड है।

गीत:- जाग सजनियां जाग....

ओम् शान्ति। सजनियों को किसने समझाया? कहते हैं साजन आया सजनियों के लिए। कितनी सजनियां हैं? एक साजन को इतनी सजनियां.. वन्डर है ना! मनुष्य तो कहते कृष्ण को 16108 सजनियां थीं, परन्तु नहीं। शिवबाबा कहते हैं मुझे तो करोड़ों सजनियां हैं। सब सजनियों को मैं अपने साथ स्वीट होम में ले जाऊंगा। सजनियां भी समझती हैं हमको फिर से बाबा ले जाने आये हैं। जीव आत्मा सजनी ठहरी। दिल में है साजन आया है हमको श्रीमत दे श्रृंगार कराने के लिए। मत तो हर एक को देते हैं। पुरुष स्त्री को, बाप बच्चे को, साधू अपने शिष्य को, परन्तु इनकी मत तो सबसे न्यारी है, इसलिए इनको श्रीमत कहा जाता है, और सब हैं मनुष्य मत। वह सब मत देते हैं अपने शरीर निर्वाह के लिए। साधू सन्त आदि सबको तात लगी हुई है शरीर निर्वाह की। सभी एक दो को धनवान बनने की मत देते रहते हैं। सबसे अच्छी मत साधुओं, गुरुओं की मानी जाती है। परन्तु वह भी अपने पेट के लिए कितना धन इक्ट्ठा करते हैं। मुझे तो अपना शरीर नहीं है। मैं अपने पेट के लिए कुछ नहीं करता हूँ। तुमको भी अपने पेट का ही काम है कि हम महाराजा महारानी बनें। सबको तात है पेट की। फिर कोई ज्वार की रोटी खाते तो कोई अशोका होटल में खाते। साधू लोग धन इक्ट्ठा कर बड़े मन्दिर आदि बनाते हैं। शिवबाबा शरीर निर्वाह अर्थ तो कुछ करते नहीं हैं। तुमको सब कुछ देते हैं--सदा सुखी बनाने के लिए। तुम एवरहेल्दी, वेल्दी बनेंगे। मैं तो एवरहेल्दी बनने का पुरुषार्थ नहीं करता हूँ। मैं हूँ ही अशरीरी। मैं आता ही हूँ तुम बच्चों को सदा सुखी बनाने के लिए। शिवबाबा तो है निराकार। बाकी सबको पेट की लगी रहती है। द्वापर में बड़े-बड़े सन्यासी, तत्व ज्ञानी, ब्रह्म ज्ञानी थे। याद में रहते थे तो घर बैठे उनको सब कुछ मिल जाता था। पेट तो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सबको है, सबको भोजन चाहिए। परन्तु योग में रहते हैं इसलिए उनको धक्का नहीं खाने पड़ते हैं। अब बाप तुम बच्चों को युक्ति बतलाते हैं कि तुम सदा सुखी कैसे रह सकते हो। बाबा अपनी मत देकर विश्व का मालिक बनाते हैं। तुम चिरंजीवी रहो, अमर रहो। सबसे अच्छी मत उनकी है। मनुष्य तो बहुत मत देते हैं। कोई इम्तहान पास कर बैरिस्टर बन जाते परन्तु वह सब हैं अल्पकाल के लिए। पुरूषार्थ करते हैं अपने और बाल बच्चों के पेट के लिए।

अब बाबा तुमको श्रीमत देते हैं हे बच्चे श्रीमत पर चल यह रूहानी पढ़ाई पढ़ो जो मनुष्य विश्व का मालिक बन जावें। सबको बाप का परिचय दो तो बाप की याद में रहने से एवरहेल्दी, वैल्दी बन जायेंगे। वह है अविनाशी सर्जन। तुम बाप के बच्चे भी रूहानी सर्जन हो, इसमें कोई तकलीफ नहीं। सिर्फ मुख से आत्माओं को श्रीमत दी जाती है। सर्वोत्तम सेवा तुम बच्चों को करनी है। ऐसी मत तुमको कोई दे न सके। अब हम बाप के बच्चे बने हैं तो बाप का धन्धा करें या जिस्मानी धन्धा करें। बाबा से हम अविनाशी ज्ञान रत्नों की झोली भरते हैं। शिव के आगे कहते हैं भर दे झोली। वह समझते हैं — 10-20 हजार मिल जायेंगे। अगर मिल गये तो बस उन पर बलिहार जायेंगे, बहुत खातिरी करेंगे। वह सब है भक्ति मार्ग। अब सबको बाप का परिचय दो और बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाओ। बहुत इज़ी है। हद की हिस्ट्री-जॉग्राफी में तो बहुत बातें हैं। यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी है कि बेहद का बाप कहाँ रहते हैं, कैसे आते हैं! हम आत्माओं में कैसे 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। बस जास्ती कुछ नहीं समझाओ सिर्फ अल्फ और बे। अहम् आत्मा बाप को याद करके विश्व का मालिक बन जायेंगी। अभी पढ़ना और पढ़ाना है। अल्फ-माबा अल्लाह, बे माना बादशाही। अब सोचो यह धन्धा करें या जिस्मानी धन्धा कर 2-4 सौ कमायें!

बाबा कहते हैं अगर कोई होशियार बच्ची हो तो मैं उनके मित्र सम्बन्धियों को भी दे सकता हूँ, जिससे उनका भी शरीर निर्वाह चलता रहे। परन्तु बच्ची अच्छी हो, सर्विसएबुल हो, अन्दर बाहर साफ हो, बोली की बड़ी मीठी हो। वास्तव में कुमारी की कमाई माँ बाप खा नहीं सकते। बाबा का बनकर फिर भी उस जिस्मानी सर्विस में ध्यान बहुत देना - यह तो डिसरिगार्ड हो गया। बाप कहते हैं मनुष्य मात्र को हेविन का मालिक बनाओ। बच्चे फिर जिस्मानी सर्विस में माथा मारें! स्कूल खोलना तो गवर्मेन्ट का काम है। अब बच्चियों को बुद्धि से काम लेना है। कौन सी सर्विस करें — ईश्वरीय गवर्मेन्ट की या उस गवर्मेन्ट की? जैसे यह बाबा जवाहरात का धन्धा करते थे फिर बड़े बाबा ने कहा यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन्धा करना है, इससे तुम यह बनेंगे। चतुर्भुज का भी साक्षात्कार करा दिया। अब वह विश्व की बादशाही लेवें या यह करें। सबसे अच्छा धन्धा यह है। भल कमाई अच्छी थी परन्तु बाबा ने इसमें प्रवेश होकर

मत दी कि अल्फ और बे को याद करो। कितना सहज है! छोटे बच्चे भी पढ़ सकते हैं। शिवबाबा तो हर एक बच्चे को समझ सकते हैं। यह भी सीख सकते हैं। यह है बाहरयामी, शिवबाबा है अन्तर्यामी। यह बाबा भी हर एक की शक्ल से, बोल से, एक्ट से सब कुछ समझ सकते हैं। बच्चियों को रूहानी सर्विस का चांस एक ही बार मिलता है। अब दिल में आना चाहिए हम मनुष्य को देवता बनायें या कांटो को कांटा बनायें? सोचो क्या करना चाहिए? निराकार भगवानुवाच - देह सहित देह के सब सम्बन्ध तोड़ो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। ब्रह्मा के तन से बाप ब्राह्मणों से ही बात करते हैं। वह ब्राह्मण लोग भी कहते हैं - ब्राह्मण देवी देवताए नमः, वह कुख वंशावली, तुम हो मुख वंशावली। बाबा को जरूर ब्रह्मा बच्चा चाहिए। कुमारका बताओ बाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते 600 करोड़, कोई कहते एक ब्रह्मा .. भले तुम त्रिमूर्ति कहते हो परन्तु आक्यूपेशन तो अलग-अलग है ना। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। ब्रह्मा की नाभी से विष्णु, तो एक हो गये। विष्णु 84 जन्म लेते हैं वा ब्रह्मा - बात तो एक ही है। बाकी रहा शंकर। ऐसे तो नहीं शंकर सो शिव होता है। नहीं, त्रिमूर्ति कहलाया जाता है। परन्तु राइटियस बच्चे दो हुए। यह सब ज्ञान की
a) बातें हैं।

तो बच्चियों के लिए यह सर्विस करना अच्छा है या मैट्रिक आदि पढ़ना अच्छा है? वहाँ तो अल्पकाल का सुख मिलेगा। थोड़ी तनख्वाह मिलेगी। यहाँ तो तुम भविष्य 21 जन्मों के लिए मालामाल हो सकते हो। तो क्या करना चाहिए? कन्या तो निर्बन्धन है। अधर कन्या से कुवांरी कन्या तीखी जा सकती है क्योंकि पवित्र है। मम्मा भी कुमारी थी ना। पैसे की तो बात ही नहीं। कितनी तीखी गई तो फालो करना चाहिए खास
b) कन्याओं को। कांटो को फूल बनायें। ईश्वरीय पढ़ाई का चांस लें या उस पढ़ाई का? कन्याओं का सेमीनार करना चाहिए। माताओं को तो पति आदि याद पड़ता है। सन्यासियों को भी याद बहुत पड़ता रहता है। कन्याओं को तो सीढ़ी चढ़नी नहीं चाहिए। संग का रंग बहुत लग जाता है। कोई बड़े आदमी का बच्चा देखा दिल लग गई, शादी
c) हो गई। खेल खत्म। सेन्टर से सुनकर बाहर जाते हैं तो खेल खत्म हो जाता है। यह है मधुबन। यहाँ ऐसे भी बहुत आते हैं, कहते हैं हम जाकर सेन्टर खोलेंगे। बाहर जाकर गुम हो जाते हैं। यहाँ ज्ञान का गर्भ धारण करते, बाहर जाने से नशा गुम हो जाता है। माया आपोजीशन बहुत करती है। माया भी कहती है वाह! इसने बाबा को भी पहचाना है फिर भी बाबा को याद नहीं करते तो हम भी घूंसा मारेंगी। ऐसे नहीं कहो कि बाबा आप माया से कहो हमको घूंसा न मारे। युद्ध का मैदान है ना। एक तरफ है रावण की सेना, दूसरे तरफ है राम की सेना। बहादुर बन राम की तरफ जाना चाहिए। आसुरी सम्प्रदाय को ही दैवी सम्प्रदाय बनाने का धन्धा करना है। जिस्मानी विद्या तुम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2.9.86. प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"इस बेहद की महफिल में बाप आये हैं, गरीब बच्चों को गोद में लेने, उन्हें देवताओं की महफिल में आने की जरूरत नहीं"

प्रश्न:-बच्चों को कौन सा दिन बड़े ही धूमधाम से मनाना चाहिए?

उत्तर:-जिस दिन मरजीवा जन्म हुआ, बाप में निश्चय हुआ, वह दिन बड़े ही धूमधाम से मनाना चाहिए। वही तुम्हारे लिए जन्माष्टमी है। अगर अपना मरजीवा जन्मदिन मनायेंगे तो बुद्धि में याद रहेगा कि हमने पुरानी दुनिया से किनारा कर लिया, हम बाबा के बन गये अर्थात् वर्से के अधिकारी बन गये, फिर अपार खुशी रहेगी।

गीत:-महफिल में जल उठी शमा...ओमशान्ति। गीत, कवितायें, भजन, वेद शास्त्र, उपनिषद महिमायें देवताओं की आदि 2 बहुत ही भारतवासी वा तुम बच्चे सुनते आये हो। अभी तुमको समझ मिली है कि यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। पास्ट को भी बच्चों ने जाना है। प्रेजेन्ट दुनिया का क्या है, वह भी देख रहे हो। वह प्रैक्टिकल में अनुभव किया है। बाकी जो कुछ होना है सो अभी प्रैक्टिकल में अनुभव किया है। पास्ट जो हुआ है उनका अनुभव किया है। बाप ने ही सब समझाया है। बाप बिगर कोई समझा न सके। अर्थात् मनुष्य हैं परन्तु वे कुछ भी जानते ही नहीं हैं। रचयिता और रचना के आदि, मध्य अन्त को कुछ नहीं जानते। अभी कलियुग का अन्त है, यह भी मनुष्य नहीं जानते। हाँ आगे चल अन्त में जानेंगे। बाकी सारी नालेज नहीं जानेंगे। पढ़ने वाले स्टूडेण्ट ही जान सकते हैं। यह है मनुष्य से राजाओं का राजा बनना। सो भी न आसुरी राजायें, परन्तु दैवी राजायें। जिनको वो आसुरी राजायें पूजते हैं। यह सब बातें तुम बच्चे ही जानते हो। ऋषि, मुनि आचार्य आदि जरा भी नहीं जानते। भगवान जिसको शमा कह पुकारते हैं महफिल में, परन्तु जानते नहीं हैं। गीत गाने वाले भी कुछ नहीं जानते। महिमा सिर्फ गाते हैं, भगवान भी कोई समय इस दुनिया की महफिल में आया था। महफिल अर्थात् जहाँ बहुत इकट्ठे हों। महफिल में खाना पीना, शराब आदि मिलता है। अभी इस महफिल में तुमको बाप से अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना मिल रहा है, अथवा ऐसे कहें कि हमको वैकुण्ठ की बादशाही बाप से मिल रही है। इस सारी महफिल में बच्चे ही बाप को जानते हैं कि बाप हमको सौगात देते हैं। बाप महफिल में क्या देते हैं। मनुष्य महफिल में एक दो को क्या देते हैं। रातदिन का फर्क है। बाप जैसे हलुआ खिलाते हैं। और वो सस्ते में सस्ती वस्तु चना खिलाते हैं। हलुआ और चने में कितना फर्क है। अभी तुम बच्चे जानते हो कि बेहद का बाप हमको स्वर्ग की राजाई का वरदान दे रहे हैं। शिवबाबा इस महफिल में आते हैं ना। शिव जयन्ती भी तो मनाते हैं ना। परन्तु वह क्या आकर करते हैं, यह किसको भी पता नहीं है। वह बाप है। बाप जरूर कुछ खिलाते हैं, देते हैं। मातपिता जीवन की पालना तो करते हैं ना। तुम भी जानते हो वह मात पिता आकर के बेहद के जीवन की सम्भाल करते हैं। एडाप्ट करते हैं। बच्चे खुद कहते हैं बाबा हम आपके 10 दिन के बच्चे हैं, अर्थात् 10 दिन से आपके बने हैं। तो समझना चाहिए कि हम बाप से स्वर्ग की बादशाही लेने का हकदार बन गये। तो बहुत निश्चय हो जाना चाहिए। बाबा हम आपके हो चुके हैं। चिट्ठी में भी प्रेम से लिखते हैं शिवबाबा हम आपके हो चुके हैं, गोद ली है। जीते जी किसकी गोद ली जाती है, बन्धमदा से नहीं लेते हैं। मात पिता भी गोद में देते ... हैं हमारा बच्चा उनके पास जास्ती सुखी रहेगा। और ... प्यार से सम्भालेंगे। तुम भी लौकिक बाप के बच्चे यहाँ बेहद के बाप की गोद लेते हो। बेहद का बाप कितना ... गोद लेते हैं। बच्चे भी लिखते हैं बाबा हम आपका हो गया। शिवबाबा दूर से तो नहीं कहेंगे। ... में गोद ली जाती है तो फिर सेरेमनी भी की जाती है। जैसे जन्मदिन मनाते हैं ना। जन्माष्टमी कहते हैं। फिर 6-7 दिनों के बाद छठी करते हैं। कृष्ण की भी जन्माष्टमी मनाते हैं। तो यह भी बच्चे बनते हैं, कहते हैं हम आपके हैं, तो 6-7 दिन बाद नामकरण भी मनाना चाहिए ना। परन्तु कोई भी मनाते नहीं। अपनी जन्म अष्टमी तो बड़ी धूमधाम से मनानी चाहिए, परन्तु मनाते नहीं हैं। ज्ञान भी नहीं है कि हमको जयन्ती मनानी है। 12 मास बाद क्यों मनाते हैं, पहले ही मनाना चाहिए। ज्ञान ही नहीं, निश्चय नहीं होता।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जन्म दिन मनाया फिर अगर भ्रान्ती होगी तो समझा जायेगा यह मर गया।जन्म भी तो कोई बहुत धूमधाम से मनाते हैं,कोई गरीब होगा तो खण्ड भूगरा(चीनी-चना)भी बाँट सकते हैं।जास्ती नहीं।बच्चों को पूरी रीति समझ में नहीं आता है इसलिए खुशी नहीं होती है।जन्मदिन मनायें तो याद भी पक्का पड़े।परन्तु वह बुद्धि नहीं है।बच्चों को बाप और वर्से को पूरा याद करना चाहिए।बच्चा कब यह भूलता थोड़ेही है कि मैं फलाने का बच्चा हूँ।यहाँ कहते हैं कि बाबा आप हमको याद नहीं पड़ते हो।ऐसे अज्ञानकाल में तो कब नहीं कहेंगे।याद न पड़ने का सवाल भी नहीं उठता।तुम बाप को याद करते हो।बाप तो सबको याद करते ही हैं।सब हमारे बच्चे काम चिता पर जलकर भस्म हो गये हैं।ऐसे और कोई गुरू वा महात्मा आदि नहीं कहेंगे।यह भगवानुवाच ही है कि मेरे सब बच्चे हैं।भगवान के तो सब बच्चे हैं ना।सभी आत्मायें,परमात्मा बाप के बच्चे हैं।बाप भी जब शरीर में आते हैं तब कहते हैं यह सब आत्मायें हमारे बच्चे हैं।काम चिता पर चढ़ भस्मीभूत तमोप्रधान हो पड़े हैं।भारतवासी कितने आइरन एज्ड हो गये हैं।काम चिता पर चढ़ना सर्प पर चढ़ना है। वैकुण्ठ में सर्प आदि थोड़ेही होते हैं।जो किसको डसें।ऐसी बात हो नहीं सकती।बाप कहते हैं 5विकारों की प्रवेशता होने से तुम तो जैसे जंगली काँटे बन गये हो।भगवानुवाच-मुझ ज्ञान सागर के बच्चे जिनको कल्प पहले भी आकर पावन स्वच्छ बनाया था,वह अब पतित काले बन गये हैं।बच्चे जानते हैं हम गोरे से सांवरे कैसे बनते हैं।सारे 84 जन्मों की हिस्ट्री जाग्राफी नटशेल में बुद्धि में है।इस समय ही तुम जान सकते हो।कोई 5-6वर्ष से लेकर अपनी बायोग्राफी जानते हैं।नम्बरवार बुद्धि अनुसार अपनी बायोग्राफी को जानते हैं।अभी तुम बच्चे भी अपने 84जन्मों की बायोग्राफी को जानते हो।हरेक अपने पास्ट बायोग्राफी को भी जानते हैं।हमने क्या2बुरा काम किया,मोटी2बातें बताई जाती हैं।हमने क्या2किया,यह2

a) बेहद।जिन्होंने 84 जन्म पूरे लिए हैं,उनके स्मृति में आयेगा।अभी फिर हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है।बनेंगे भी वही जिन्होंने 84 जन्म लिए हैं।यह दुनिया अभी है ही तमोप्रधान।जन्म ले2तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बनी है।पहले आत्मा सतोप्रधान थी अभी तो है ही कलियुग का अन्त।अभी फिर सतोप्रधान बन अपने घर कैसे लौटें।यह बाप बैठ समझाते हैं।बाप कहते हैं तमोप्रधान से सतोप्रधान बनके घर जाने के लिए मैं तुमको मत देता हूँ।इस

b) लिए बाप कहते हैं यह नालेज सब धर्म वालों के लिए है।इस समय सारी दुनिया जड़जड़ीभूत अवस्था में है।कलियुग का अन्त है।अब इस पुरानी तमोप्रधान दुनिया का विनाश होना है। अगर मुक्तिधाम घर जाने चाहते हो,सो तो बाप ही ले जा सकते हैं।सिवाए बाप के कोई भी अपने घर जा नहीं सकते।वही सर्व का सद्गतिदाता,पतित पावन है।उनके बिगर कब कोई वापिस जा नहीं सकते।कोई प्राप्त यह युक्ति है नहीं,जो बाप को याद कर और वहाँ पहुँचे।पुनर्जन्म तो सबको लेना ही है।मोक्ष का ख्याल तो कब भी नहीं आना चाहिए।यह हो नहीं सकता।यह तो अनादि बना बनाया ड्रामा है।इससे कोई निकल नहीं सकते।सभी का एक बाप ही लिबरेटर गाइड है।वही आकर युक्ति बताते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।नहीं तो सजायें खानी पड़ेंगी।पुरूषार्थ नहीं करते तो समझते हैं यहाँ का नहीं है।मुक्ति जीवनमुक्तिधाम का रास्ता तुम बच्चे भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हो।समझाने की हरेक की रफ्तार अपनी2 होती है।तुम यह तो कह सकते हो कि इस समय पतित तमोप्रधान दुनिया है।कितनी मारामारी होती है,सतयुग में यह नहीं होगी।अभी कलियुग है ना।यह तो सब मनुष्य मानेंगे-सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलियुग।गोल्डन एज

c) सिल्वर एज... कहते हैं ना राम ने रामराज्य स्थापन करने के लिए रावण पर जीत पाने बन्दरों का लश्कर लिया।अभी तुम जानते हो हम बरोबर बन्दरबुद्धि थे।शक्ल मनुष्य जैसी सीरत बन्दरों जैसी थी,क्योंकि तमोप्रधान हैं ना।कहाँ सतोप्रधान देवताओं की शक्ल,कहाँ असुरों की।देवताओं के आगे जाकर गाते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न...हम सम्पूर्ण विकारी पापी।यह तो सब मानते हैं हमारे में कोई अब गुण नहीं है।बाबा आप आकर रहम करो। फिर से हमको पवित्र बनाओ।हम पतित हैं।पतित को बन्दर कहा जाता है।आगे थोड़ेही समझते थे कि हम बन्दर हैं।अभी समझते हैं यह रावण सम्प्रदाय सब बन्दर हैं।बाबा ही

PDF compression, OCR, web optimization

फिर से हमको पवित्र बनाओ हम पतित हैं। पतित को बन्दर कहा जाता है। आगे थोड़ेही समझते थे कि हम बन्दर हैं।अभी समझते हैं यह रावण सम्प्रदाय सब बन्दर है।बाबा ही आकर राज्य पर जीत प्राप्त कराते हैं।रामराज्य के लिए लायक बनाते हैं।कैसी वन्डरफुल बातें हैं।कब किसकी बुद्धि में आ न सकें।जब तक बाप ने आकर समझाया।वेद शास्त्र ग्रंथ आदि कितने हैं।बाप कहते हैं इन वेदों शास्त्रों से कोई भी हमारे साथ नहीं मिल सकता है।अभी तुम बच्चे समझते हो कि वापिस एक भी जा नहीं सकते।सबको सतोप्रधान,सतो रजो,तमो में आना ही है।अब बाप इस पतित महफिल में आते हैं।कितनी बड़ी महफिल है।बन्दरों की महफिल में आता हूँ।मैं देवताओं की महफिल में कब नहीं आता। जहाँ माल-ठाल 36 प्रकार के भोजन मिल सकते,वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ। जहाँ रोटी भी नहीं मिलती,बच्चों को,उन्हों को आकर गोद्र लेकर

d) बच्चा बनाकर गोद में लेता हूँ। साहूकारों को गोद में नहीं लेता हूँ। वह अपने ही नशे में चूर रहते हैं। खुद कहते हैं कि हमारे लिए तो स्वर्ग यहाँ ही है। फिर कोई मरता है तो कहते हैं कि स्वर्गवासी हुआ।तो जरूर यह नर्क हुआ ना। तुम क्यों नहीं समझाते हो।अभी अखबार में भी युक्तियुक्त कोई से डलवाते नहीं है। यह अक्षर ही सिद्ध करते हैं कि भारतवासी नर्कवासी हैं। परन्तु ऐसे युक्तियुक्त कोई नहीं अखबार में डालता है।बच्चे यह जानते हैं,हमको ड्रामा पुरुषार्थ कराते हैं,हम जो पुरुषार्थ करते हैं वह ड्रामा में नूँध है। पुरुषार्थ करना भी जरूर है।ड्रामा पर बैठ नहीं जाना है। हर बात में पुरुषार्थ जरूर करना ही है। कर्मयोगी,राजयोगी हैं ना। वह हैं कर्मसन्यासी हठयोगी। तुम तो सब कुछ करते हो।घर में रहते बाल बच्चों को सम्भालते हो वह तो भाग जाते हैं। अच्छा नहीं लगता है, परन्तु वह पवित्रता भी भारत में चाहिए ना। फिर भी अच्छा है। अभी तो पवित्र भी नहीं रहते हैं।ऐसे नहीं कि कोई पवित्र दुनिया में जा सकते हैं। सिवाए बाप के कोई जा नहीं सकते हैं। अभी तुम जानते हो शान्तिधाम तो हमारा घर है।परन्तु जावें कैसे। बहुत पाप किये हुए हैं।ईश्वर सर्वव्यापी कहना यह बड़ा पाप है।ईश्वर की ग्लानी करते हैं। अब यह किसकी इज्जत गंवाते हैं। शिवबाबा को। कुत्ते-बिल्ली कण2 में कह देते हैं। बाप रिपोर्ट किसको करें। बाप कहते हैं मैं ही समर्थ हूँ। मेरे साथ फिर धर्मराज भी है।यह सबके लिए क्यामत का समय है। सब सजायें आदि भोगकर फिर वापिस चले जायेंगे। ड्रामा की बनावट ही ऐसी है सजायें खानी ही है जरूर।यह तो सा0भी होते हैं। गर्भजेल में भी सा0होता है।तुमने यह2काम किये हैं फिर उनकी सजा मिलती है तब तो कहते हैं कि अब इस जेल से निकालो।हम फिर ऐसे पाप नहीं करेंगे।बाप यहाँ सम्मुख आकर यह सब बातें सम्मुख समझाते हैं।गर्भ में सजायें खाते हैं,वो ही जेल है। दुख फील होता है।वहाँ सतयुग में दोनों जेल नहीं होती।यहाँ तो दोनों है।वो यह भी कहते हैं कि यह राइट है,वहाँ कोई पाप होता नहीं जो गर्भ में सजा खायें।अब बाप समझाते हैं बच्चे मुझे याद करो तो खाद निकल जायेगी।यह तुम्हारे अक्षर बहुत मानेंगे। भगवान का नाम तो है,सिर्फ भूल की है जो कृष्ण का नाम डाल दिया है। अब बाप भी बच्चों को बैठ समझाते हैं।यह जो सुनते हो सुनकर अखबार में डालो। शिवबाबा इस समय सबको कहते हैं तुम 84जन्म भोग तमोप्रधान बने हो। अभी फिर मैं राय देता हूँ मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। फिर तुम मुक्ति-जीवनमुक्ति-धाम में चले जायेंगे। बाप का यह फरमान है मुझे याद करो तो खाद निकल जायेगी। अच्छा-बच्चे कितना समझाकर कितना समझायें.....

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

सूचना:- आप सबको ज्ञात हो कि मीठे बाबुल की अति स्नेही,सदा बापदादा के अंग-संग रहने वाली,आदि रतन,त्याग-तपस्या की मूर्त- मीठी "क्वीन मदर" 2 सितम्बर बुधवार के दिन दोपहर 3 बजे के करीब मधुबन में अपना यह पुराना शरीर छोड़ 87 वर्ष की आयु पूरी कर पल भर में बाबुल की गोद में चली गई। उनके निमित्त यज्ञ की तरफ से सर्व सेवाकेन्द्रों पर 10सितम्बर गुरुवार के दिन - मीठा चावल,पूड़ी और जीरे वाले आलू की सब्जी का भोग लगाया जाए-यही भोग सर्व ब्राह्मणों को स्वीकार कराना है।

(विस्तार में दिनचर्या अलग से भेजी जायेगी) ओमशान्ति।

...compression ... web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

25-9-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - बेहद का बाप इस बेहद की महफिल में गरीब बच्चों को गोद लेने के लिए आये हैं, उन्हें देवताओं की महफिल में आने की जरूरत नहीं"

प्रश्नः- बच्चों को कौन सा दिन बड़े ही धूमधाम से मनाना चाहिए?

उत्तरः- जिस दिन मरजीवा जन्म हुआ, बाप में निश्चय हुआ... वह दिन बड़े ही धूमधाम से मनाना चाहिए। वही तुम्हारे लिए जन्माष्टमी है। अगर अपना मरजीवा जन्म दिन मनायेंगे तो बुद्धि में याद रहेगा कि हमने पुरानी दुनिया से किनारा कर लिया। हम बाबा के बन गये अर्थात् वर्से के अधिकारी बन गये।

गीतः- महफिल में जल उठी शमा...

ओम् शान्ति। गीत-कवितायें, भजन, वेद-शास्त्र, उपनिषद, देवताओं की महिमा आदि तुम भारतवासी बच्चे बहुत ही सुनते आये हो। अभी तुमको समझ मिली है कि वह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। पास्ट को भी बच्चों ने जाना है। प्रेजन्ट दुनिया का क्या है, वह भी देख रहे हो। वह भी प्रैक्टिकल में अनुभव किया है। बाकी जो कुछ होना है - सो अभी प्रैक्टिकल में अनुभव नहीं किया है। पास्ट में जो हुआ है उसका अनुभव किया है। बाप ने ही समझाया है, बाप बिगर कोई समझा न सके। अथाह मनुष्य हैं परन्तु वो कुछ भी नहीं जानते हैं। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को कुछ नहीं जानते। अभी कलियुग का अन्त है, यह भी मनुष्य नहीं जानते। हाँ आगे चल अन्त को जानेंगे मूल को जानेंगे। बाकी सारी नॉलेज को नहीं जानेंगे। पढ़ने वाले स्टूडेन्ट ही जान सकते हैं। यह है मनुष्य से राजाओं का राजा बनना। सो भी न आसुरी राजायें परन्तु दैवी राजायें, जिन्हों को आसुरी राजायें पूजते हैं। यह सब बातें तुम बच्चे ही जानते हो। विद्वान, आचार्य आदि जरा भी नहीं जानते। भगवान, जिसको शमा कह पुकारते हैं उसको जानते नहीं। गीत गाने वाले भी कुछ नहीं जानते। महिमा सिर्फ गाते हैं। भगवान भी कोई समय इस दुनिया की महफिल में आया था। महफिल अर्थात् जहाँ बहुत इकट्ठे हों। महफिल में खाना-पीना, शराब आदि मिलता है। अभी इस महफिल में तुमको बाप से अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना मिल रहा है अथवा ऐसे कहें हमको बैकुण्ठ की बादशाही बाप से मिल रही है। इस सारी महफिल में बच्चे ही बाप को जानते हैं कि बाप हमको सौगात देने आये हैं। बाप महफिल में क्या देते हैं, मनुष्य महफिल में एक-दो को क्या देते हैं, रात-दिन का फर्क है। बाप जैसे हलुआ खिलाते हैं और वह सस्ते में सस्ती वस्तु चने खिलाते हैं। हलुआ और चना - दोनों में कितना फर्क है। एक-दो को चने खिलाते रहते हैं। कोई कमाता नहीं है तो कहा जाता है – यह तो चने चबा रहे हैं।

अभी तुम बच्चे जानते हो बेहद का बाप हमको स्वर्ग की राजाई का वरदान दे रहे हैं। शिवबाबा इस महफिल में आते हैं ना। शिव जयन्ती भी तो मनाते हैं ना। परन्तु वह क्या आकर करते हैं – यह किसको भी पता नहीं है। वह बाप है। बाप जरूर कुछ खिलाते हैं,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

देते हैं। मात-पिता जीवन की पालना तो करते हैं ना। तुम भी जानते हो यह मात-पिता आकरके जीवन की सम्भाल करते और एडाप्ट करते हैं। बच्चे खुद कहते हैं बाबा हम आपके 10 दिन के बच्चे हैं अर्थात् 10 दिन से आपके बने हैं। तो समझना चाहिए कि हम आपसे स्वर्ग की बादशाही लेने का हकदार बन चुके हैं। गोद ली है। जीते जी किसी की गोद ली जाती है तो अन्धश्रद्धा से तो नहीं लेते हैं। मात-पिता भी गोद में देते हैं। समझते हैं हमारा बच्चा उनके पास जास्ती सुखी रहेगा और ही प्यार से सम्भालेंगे। तुम भी लौकिक बाप के बच्चे यहाँ बेहद के बाप की गोद लेते हो। बेहद का बाप कितना रुचि से गोद लेते हैं। बच्चे भी लिखते हैं बाबा हम आपका हो गया। सिर्फ दूर से तो नहीं कहेंगे। प्रैक्टिकल में गोद ली जाती है तो सेरीमनी भी की जाती है। जैसे जन्म दिन मनाते हैं ना। तो यह भी बच्चे बनते हैं, कहते हैं हम आपके हैं तो 6-7 दिन बाद नामकरण भी मनाना चाहिए ना। परन्तु कोई भी मनाते नहीं। अपनी जन्माष्टमी तो बड़े धूमधाम से मनानी चाहिए। परन्तु मनाते हो नहीं। ज्ञान ही नहीं है कि हमको जयन्ती मनानी है। 12 मास होते हैं तो मनाते हैं। अरे पहले मनाया नहीं, 12 मास के बाद क्यों मनाते हो। ज्ञान ही नहीं, निश्चय नहीं होगा। एक बार जन्म दिन मनाया वह तो पक्के हो गये फिर अगर जन्म दिन मनाते हुए भागन्ती हो गये तो समझा जायेगा यह मर गया। जन्म भी कोई तो बहुत धूमधाम से मनाते हैं। कोई गरीब होगा तो गुड़ चने भी बांट सकते हैं। जास्ती नहीं। बच्चों को पूरी रीति समझ में नहीं आता है इसलिए खुशी नहीं होती है। जन्म दिन मनायें तो याद भी पक्की पड़े। परन्तु वह बुद्धि नहीं है। आज फिर भी बाप समझाते हैं जो-जो नये बच्चे बने, उनको निश्चय होता है तो जन्म दिन मनायें। फलाने दिन हमको निश्चय हुआ, जिससे जन्माष्टमी शुरू होती है। तो बच्चे को बाप और वर्से को पूरा याद करना चाहिए। बच्चा कभी भी भूलता थोड़ेही है कि मैं फलाने का बच्चा हूँ। यहाँ कहते हैं कि बाबा आप हमको याद नहीं पड़ते हो। ऐसे अज्ञानकाल में तो कभी नहीं कहेंगे। याद न पड़ने का सवाल भी नहीं उठता। तुम बाप को याद करते हो, बाप तो सबको याद करते ही हैं। सब हमारे बच्चे काम-चिता पर जलकर भस्म हो गये हैं। ऐसे और कोई गुरू वा महात्मा आदि नहीं कहेंगे। यह भगवानुवाच ही है कि मेरे सब बच्चे हैं। भगवान के तो सब बच्चे हैं ना। सब आत्मायें परमात्मा बाप के बच्चे हैं। बाप भी जब शरीर में आते हैं तब कहते हैं — यह सब आत्मायें हमारे बच्चे हैं। काम-चिता पर चढ़ भस्मीभूत तमोप्रधान हो पड़े हैं। भारतवासी कितने आइरन एजेड हो गये हैं। काम-चिता पर बैठ सब सांवरे बन पड़े हैं। जो पूज्य नम्बरवन गोरा था, सो अब पुजारी सांवरा बन गया है। सुन्दर सो श्याम है। यह काम-चिता पर चढ़ना गोया सांप पर चढ़ना है। बैकुण्ठ में सांप आदि नहीं होते हैं जो किसको डसें। ऐसी बात हो न सके। बाप कहते हैं—5 विकारों की प्रवेशता होने से तुम तो जैसे जंगली कांटे बन गये हो। कहते हैं बाबा हम मानते हैं यह है ही कांटों का जंगल। एक-दो को डसकर सब भस्मीभूत हो गये हैं। भगवानुवाच मुझ ज्ञान सागर के बच्चे जिनको मैंने कल्प पहले भी आकर स्वच्छ बनाया था वह अब पतित काले हो गये हैं। बच्चे जानते हैं हम गोरे से सांवरे कैसे बनते हैं। सारे 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी नटशेल में बुद्धि में है।

PDF Compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इस समय तुम जानते हो कोई 5-6 वर्ष से लेकर अपनी बायोग्राफी जानते हैं — नम्बरवार बुद्धि अनुसार हर एक अपने पास्ट बायोग्राफी को भी जानते हैं - हमने क्या-क्या बुरा काम किया। मोटी-मोटी बातें तो बताई जाती हैं - हमने क्या-क्या किया। आगे जन्म की तो बता ही नहीं सकते। जन्म-जन्मान्तर की बायोग्राफी कोई बता न सके। बाकी 84 जन्म कैसे लिए हैं सो बाप बैठ उन्हों को समझाते हैं, जिन्होंने पूरे 84 जन्म लिए हैं, उनकी ही स्मृति में आयेगा। घर जाने के लिए मैं तुमको मत देता हूँ। इसलिए बाप कहते हैं यह नॉलेज सब धर्म वालों के लिए है। अगर मुक्तिधाम घर जाने चाहते हो तो बाप ही ले जा सकते हैं। सिवाए बाप के और कोई भी अपने घर जा नहीं सकते। कोई के पास यह युक्ति है नहीं जो बाप को याद कर और वहाँ पहुंचे। पुनर्जन्म तो सबको लेना है। बाप बिगर तो कोई ले जा नहीं सकते। मोक्ष का ख्याल तो कभी भी नहीं करना है। यह तो हो नहीं सकता। यह तो अनादि बना-बनाया ड्रामा है, इससे कोई भी निकल नहीं सकते। सबका एक बाप ही लिबरेटर, गाइड है। वही आकर युक्ति बतलाते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। नहीं तो सजायें खानी पड़ेंगी। पुरुषार्थ नहीं करते हैं तो समझते हैं यहाँ का नहीं है। मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता तुम बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो। हर एक के समझने की रफ्तार अपनी-अपनी है। तुम भी तो कह सकते हो - इस समय पतित दुनिया है। कितना मारामारी आदि होती है। सतयुग में यह नहीं होगा। अभी कलियुग है। यह तो सब मनुष्य मानेंगे। सतयुग गोल्डन एज, सिल्वर एज... और-और भाषाओं में भी कोई नाम कहते जरूर होंगे। इंगलिश तो सब जानते हैं। डिक्शनरी भी होती है — इंगलिश हिन्दी की। अंग्रेज लोग बहुत समय राज्य करके गये तो उन्हों की इंगलिश काम में आती है।

मनुष्य इस समय यह तो मानते हैं कि हमारे में कोई गुण नहीं है, बाबा आप आकर रहम करो फिर से हमको पवित्र बनाओ, हम पतित हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो कि पतित आत्मायें एक भी वापिस जा नहीं सकती। सबको सतो-रजो-तमो में आना ही है। अब बाप इस पतित महफिल में आते हैं, कितनी बड़ी महफिल है। मैं देवताओं की महफिल में कभी आता ही नहीं हूँ। जहाँ माल-ठाल, 36 प्रकार के भोजन मिल सके, वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ। जहाँ बच्चों को रोटी भी नहीं मिलती, उन्हों के पास आकर गोद में लेकर बच्चा बनाए वर्सा देता हूँ। साहूकारों की गोद में नहीं लेता हूँ, वे तो अपने ही नशे में चूर रहते हैं। खुद कहते हैं कि हमारे लिए तो स्वर्ग यहाँ ही है फिर कोई नरक है तो कहते हैं कि स्वर्गवासी हुआ। तो जरूर यह नर्क हुआ ना। तुम क्यों नहीं समझाते हो। अभी अखबार में भी युक्तियुक्त कोई ने डाला नहीं है। बच्चे भी जानते हैं हमको ड्रामा पुरुषार्थ कराता है, हम जो पुरुषार्थ करते हैं — वह ड्रामा में नूँध है। पुरुषार्थ करना भी जरूर है। ड्रामा पर बैठ नहीं जाना है। हर बात में पुरुषार्थ जरूर करना ही है। कर्म योगी, राजयोगी हैं ना। वह हैं कर्म सन्यासी, हठयोगी। तुम तो सब कुछ करते हो। घर में रहते, बाल-बच्चों को सम्भालते हो। वह तो भाग जाते हैं। अच्छा नहीं लगता है। परन्तु वह पवित्रता भी भारत में चाहिए ना। फिर भी अच्छा है। अभी तो पवित्र भी नहीं रहते हैं। ऐसे नहीं कि कोई पवित्र दुनिया में जा सकते

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation version of PDFCompressor

हैं सिवाए बाप के कोई ले नहीं जा सकते। अभी तुम जानते हो – शान्तिधाम तो हमारा घर है। परन्तु जायें कैसे? बहुत पाप किये हुए हैं। ईश्वर को सर्वव्यापी कह देते हैं। यह इज्जत किसकी गँवाते हैं? शिवबाबा की। कुत्ते बिल्ली, कण-कण में परमात्मा कह देते हैं। अब रिपोर्ट किसको करें! बाप कहते हैं मैं ही समर्थ हूँ। मेरे साथ धर्मराज भी है। यह सबके लिए कयामत का समय है। सब सजायें आदि भोग कर वापिस चले जायेंगे। ड्रामा की बनावट ही ऐसी है। सजायें खानी ही हैं जरूर। यह तो साक्षात्कार भी होता है। गर्भजेल में भी साक्षात्कार होता है। तुमने यह-यह काम किये हैं फिर उनकी सजा मिलती है, तब तो कहते हैं कि अब इस जेल से निकालो। हम फिर ऐसे पाप नहीं करेंगे। बाप यहाँ सम्मुख आकर यह सब बातें तुम्हें समझाते हैं। गर्भ में सजायें खाते हैं। वह भी जेल है, दुःख फील होता है। वहाँ सतयुग में दोनों जेल नहीं होती, जहाँ सजा खायें।

अब बाप समझाते हैं बच्चे मुझे याद करो तो खाद निकल जायेगी। यह तुम्हारे अक्षर बहुत मानेंगे। भगवान का नाम तो है। सिर्फ भूल की है जो कृष्ण का नाम डाल दिया है। अब बाप भी बच्चों को समझाते हैं – यह जो सुनते हो, सुनकर अखबार में डालो। शिवबाबा इस समय सबको कहते हैं - 84 जन्म भोग तमोप्रधान बने हो। अभी फिर मैं राय देता हूँ - मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे फिर तुम मुक्ति-जीवनमुक्ति धाम में चले जायेंगे। बाप का यह फरमान है - मुझे याद करो तो खाद निकल जायेगी। अच्छा- बच्चे कितना समझायें कितना समझायें। अच्छा–

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- हर बात के लिए पुरुषार्थ जरूर करना है। ड्रामा कहकर बैठ नहीं जाना है। कर्मयोगी, राजयोगी बनना है। कर्म सन्यासी, हठयोगी नहीं।

२- बिगर सजा खाये बाप के साथ घर चलने के लिए याद में रहकर आत्मा को सतोप्रधान बनाना है। सांवरे से गोरा बनना है।

वरदान:- सर्व शक्तियों की सम्पत्ति से सम्पन्न बन दाता बनने वाले विधाता, वरदाता भव

जो बच्चे सर्व शक्तियों के सम्पत्तिवान हैं–वही सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति के समीपता का अनुभव करते हैं उनमें कोई भी भक्तपन के वा भिखारीपन के संस्कार इमर्ज नहीं होते, बाप की मदद चाहिए, आशीर्वाद चाहिए, सहयोग चाहिए, शक्ति चाहिए–यह चाहिए शब्द दाता विधाता, वरदाता बच्चों के आगे शोभता ही नहीं। वे तो विश्व की हर आत्मा को कुछ न कुछ दान वा वरदान देने वाले होते हैं।

स्लोगन:-

हर आत्मा को कोई न कोई प्राप्ति कराने वाले वचन ही सत वचन हैं।

21-8-84-प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना आत्मा में लाइट आयेगी ज्ञानवान आत्मा चमकीली बन जाती है"

किन बच्चों को माया तंग नहीं कर सकती उत्तर:-जो पक्के योगी है।योगबल उनको इन्द्रियों को शीतल कर देता है। तुम बच्चे- योग में रहने की मेहनत करो।जब तुम योगी बन जायेंगे तब सायंस बनेंगे। सायंस बनने के लिए प्युरिटी है फर्स्ट। सतयुग में सायंस है क्योंकि आत्मा और शरीर दोनों ही वहां पवित्र है।इसलिए आयु भी बड़ी है। हेल्थ वेल्थ और हैपिनेस का वहां योग से प्राप्त हो जाता है।

शान्ति।मीठे2बच्चों को बाप बैठ समझाते है जिसमें अज्ञान है यानी ज्ञान नहीं है। तम के कारण तुम्हारी आत्मा डल हो गई है।हीरे में चमक होती है ना। पत्थर में चमक होती। इसलिए कहा जाता है पत्थर मिसल डल हो गई है।फिर जागती है तो कहा जाता है यह जैसे पारसमणी। अब अज्ञान के कारण आत्मा डिम हो गई है।काली नहीं होती कह रखा हुआ है यह।आत्मा तो सबको एक जैसे ही होती है।शरीर कैसे2काले होते है। आत्मा तो कितने काले है।शरीरों की बनावट अनेक प्रकार की है। आत्मा तो एक ही है। तुम समझते हम आत्मा है, बाप के बच्चे है।यह सारा ज्ञान धारण कर फिर धीरे2निकल जाते है।निकलता2आखरीन कुछ नहीं रहता तो कहेंगे अज्ञानी। तुम भी अज्ञानी थे। ज्ञान सागर से ज्ञानी बनते जाते हो।आत्मा तो बहुत सूक्ष्म है।इन आंखों से देखने में आती।बाप आकर समझाते है बच्चों को नालेजफुल बनाते है।तब सुजाग होती है।घर2 सुधरा हो जाता है।घर2 में अन्धियारा है अर्थात् आत्मा डिम हो गई है।अब बाप कहते है मुझे याद करो तो लाइट आ जायेगी।फिर तुम ज्ञानवान बन जायेंगे। बाप को ग्लानी नहीं करते है।यह तो ड्रामा का राज समझाते है।बच्चों को कहा है ना- तो सब मूढमती हो गये है।कौन कहते है? बाप।बच्चे तुम्हारी कितनी सुन्दर बुद्धि थी श्रीमत पर।अभी तुम फील करते हो ना मनुष्य तो बिल्कुल ही जानवर मिसल है, कुछ को ही नहीं जानते।अभी तुम बच्चों को बाप ने ज्ञान दिया है।ज्ञान को पढ़ाई कहा जाता है।बाप की पढ़ाई से हमारी ज्योति जग गई है।उनको ही सच्ची2दीपावली कहा जाता है।छोटे पन में मिट्टी के दीपक में तेल डाल ज्योति जगाते थे।वह तो रस्म चलती आई है।उनसे कोई दीपावली नहीं होती।यह तो आत्मा जो अन्दर है वह डिम हो गई है ज्योति बाप आकर जगाते है।बच्चों को आकर नालेज देते है।पढ़ाते है।स्कूल में होता है ना।वह है हद की नालेज।यह है बेहद की नालेज।कोई साधू सन्त आदि भी जानते है क्या। रचता और रचना के आदि मध्य अन्त की नालेज कब सुनी? कब कोई ने सुनी? जाकर देखो कहां यह नालेज कोई पढ़ाते है? सिर्फ एक बाप ही पढ़ाते है।तो उनसे पढ़ना चाहिए।बाप अनायास ही आते है।ढिंढोरा थोड़ेही पीटते है मैं आ गया हूं।अनायास ही आकर प्रवेश करते है।वह आवाज तो कर ही नहीं सकते।जब तक उनको चान्स न मिले।आत्मा परमात्मा बिगर आरगन्स आवाज कर नहीं सकते।शरीर में जब आवाज करते है तुम समझाओ तो कोई मानेंगे नहीं।बच्चों को जब यह नालेज देते है तब समझते है यह नालेज बाप के सिवाए कोई दे न सके।विनाश का सा० भी चाहते थोड़ेही है।यह बाप ही आकर कराते है।पुरानी दुनिया अब खत्म होनी है। दुनिया स्थापन हो रही है।ड्रामा अनुसार जिनको बाप से नालेज लेनी है।वह आते है।कितने को तुमने ज्ञान दिया होगा।अनगिनत। गांव2 से कितने ढेर आते है। यह माओ परमात्मा का बड़ा भारी मेला है।दिन प्रतिदिन मेला बढ़ता जायेगा।उस रूप में पहले2थोड़े जाते है फिर 10-20हजार।आजकल तो लाखों जाते है।तुम बच्चे समझ गये हो- आत्मा और परमात्मा का मेला एक ही बार लगता है।संगमयुग पर ही आते है।बाप आकर नई दुनिया स्थापन करेंगे।जिनको ज्योति जगाते है।वह फिर और औरों को ज्योति जगाते है।अभी तुम सबको वापिस जाना है।इसमें बुद्धि से काम होता है।भक्ति मार्ग में तो है अन्धियारा।ज्ञान देने वाला तो एक बाप चाहिए।

आते हो है संगम पर।पुरानी दुनिया में मिल न सके।मनुष्यों के ख्याल में तो है अभी
पड़े हैं।बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में है।समझते हैं 40हजार वर्ष बाद भगवान आ
कर आकर ज्ञान दे सद्‌गति करेंगे।तो मोया अज्ञान है नाम इनको अज्ञान अन्धियारा
जाता है।अज्ञान वालो को ज़रूर ज्ञान चाहिए।भक्ति को ज्ञान नहो कहा जाता।अ
ज्ञान है नहीं।परन्तु डल बुद्धि होने के कारण समझते हैं भक्ति ही ज्ञान है।एक तरफ
है ज्ञान सूर्य के आने से सोझरा होगा।परन्तु समझते कुछ नहो।गाते हैं ज्ञान सूर्य प्रगट
किसके लिए कहते हैं ज्ञान सूर्य? कब आया यह कोई नहो जानते।पण्डित आदि होंगे
कहेंगे जब कलियुग पूरा होगा तब फिर सोझरा होगा।यह सब बातें बाप आकर बै
समझाते हैं।बच्चे नम्बरवार समझते हैं।टीचर बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं।एकरस तो सब न
पढ़ेंगे।पढ़ाई में एकरस मार्क्स कब होती नहीं।तुम जानते हो बेहद का बाप आया हु
अब पुरानी दुनिया का विनाश भी सामने खड़ा है।अभी ही बाप से ज्ञान लेना है।
भी सीखना है।याद से ही विकर्म विनाश होंगे।बाप कहते हैं इस संगम पर ही मैं
इस शरीर का लोन लेता हूँ अर्थात प्रकृति का आधार लेता हूँ।गीता में भी यह अ
और कोई शास्त्र का नाम बाबा नहो लेगा।एक ही गीता है।है भी यह राजयोग
नाम रख दिया है गीता।इसमें पहले2लिखा हुआ है भगवानुवाच। अब भगवान किसको
जाता।भगवान तो है निराकार।उनको अपना शरीर तो है नहीं।वह है निराकारी
जहाँ आत्मायें रहती हैं।सूक्ष्मवतन को दुनिया नहो कहा जाता।यह स्थूल साकार दु
वह है मूलवतन आत्माओं की दुनिया।खेल सारा यहाँ चलता है।निराकारी दुनिया
आत्मायें कितनी छोटी2 हैं।फिर पार्ट बजाने आती हैं।यह ख्यालात तुम बच्चों की
बुद्धि में बिठाया जाता है।इसको ही ज्ञान कहा जाता।वेद शास्त्र को ... कहा जाता
ज्ञान नहीं।तुम्हारा साधू सन्यासियों से इतना संग नहीं हुआ है।बाबा का तो बहुत
रहा है।इन सबके साथ।बहुत गुरू किये हैं।पूछा जाता है आपने सन्यास क्यों किया?
क्यों छोड़ा।कहते थे विकार से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।इसलिए घरबार छोड़ा जाता
अच्छा जंगल में जाकर रहते हो फिर घरबार की याद आती होगी? बोला हाँ।बा
देखा हुआ है एक सन्यासी तो फिर वापस घर भी गया था।यह भी शास्त्रों में है।
मनुष्य वानप्रस्थ अवस्था में जाते हैं जब आयु बड़ी हो जाती है।छोटी आयु में तो
ले न सके।कुम्भ के मेले में बहुत छोटे2नागे लोग आते हैं।दवाई खिलाते हैं जिससे क
ठण्डी पड़ जाती है।तुम्हारा तो है योगबल से कर्मइन्द्रियों को वश में करना।योगबल
बल होते 2 आखरीन ठण्डी हो ही जायेंगी।कई लिखते हैं बाबा माया बड़ी तंग कर
वहाँ तो ऐसी बातें होती नहीं।कर्मइन्द्रियाँ वश तब होंगी जब योग में तुम पक्के हो
कर्मइन्द्रियाँ शान्त हो जायेंगी।इसमें बड़ी मेहनत है।वहाँ ऐसे छी2काम होता नहीं।
आये हैं ऐसे स्वर्गधाम में ले जाने।तुमको लायक बना रहे हैं।माया तुमको नालायक
है।अर्थात् स्वर्ग वा जीवनमुक्तिधाम चलने लायक नहीं।तो बाप बैठ लायक बनाते हैं
लिए ... प्युरिटी है फर्स्ट। गाते भी हैं बाबा हम पतित बन पड़े हैं।हमको आकर
बनाओ। पावन माना प्युअर। गायन भी है अमृत छोड़ विष काहे को खाए।उसका
विष भी है।जो तुमको आदि मध्य अन्त दुख देते हैं।यह भी ड्रामा में नूँध है।बाप कि
बार आये हैं।तुम बच्चों से आकर मिले हैं।तुमको कनिष्ट से उत्तम पुरूष बनाया है।
पवित्र होती है तो तुम्हारी आयु भी बड़ी हो जाती है।हेल्थ वेल्थ और हैपीनेस
जाती है।यह भी तुम बोर्ड पर लिख सकते हो।हेल्थ वेल्थ हैपीनेस फार 21जनरेशन
बाप से यह वर्सा मिलता है 21जन्मों के लिए।कई बच्चे बोर्ड लगाने से भी डरते हैं।
तो सबके घर पर रहता ही है।तुम सर्जन के बच्चे हो ना।तुमको हेल्थ वेल्थ हैपीनेस
मिलती है।तो तुम फिर औरों को दो। दे सकते हो तो फिर क्यों नहीं बोर्ड पर
देते हो।तो मनुष्य आकर समझें।भारत में आज से 5हजार वर्ष पहले हेल्थ वेल्थ थी।प
भी थी। बेहद के बाप का वर्सा इन सेकण्ड।तुम्हारे पास बहुत आयेंगे।तुम बैठ समझा
भारत सोने की चिड़िया थी।इन्हों का राज्य था।फिर यह सब कहाँ गये। 84जन्म

है ना।यह भी फिर लास्ट में आते है।बाप कहते है तुम्हारा अब 84 का
आ।फिर शुरू होना है।बेहद का बाप ही आकर यह पद प्राप्त कराते है।
है तुम मुझे याद करो तो पावन बन जायेंगे। 84 के चक्र को जानकर बाप से
है।परन्तु पढ़ाई तो चाहिए ना।तुमको कहा जाता है स्वदर्शन चक्रधारी।नया
समझ न सके।तुम जानते हो स्व आत्मा को कहा जाता है।हम आत्मा जो
शुरू से लेकर 84 का चक्र लगाया।यह भी बाप बताते है।तुमने पहले2शिव को
की।तुम अव्यभिचारी भक्त थे।बाप के सिवाए कोई समझा न सकें।बाप कहते है
तुमने पहले2यह जन्म लिया।कोई साहूकार होगा तो कहेंगे ना।आगे जन्म में
कर्म किया है।कोई रोगी होगा।कहेंगे पिछले कर्म।हिसाब किताब है।अच्छा इन
कौन से कर्म किये।यह बाप बैठ समझाते है।इनके 84 जन्म पूरे हुए फिर फर्स्ट
जाना है।राजयोग भगवान संगमयुग पर ही आकर सिखलाते है।अभी तुम समझते हो
हमको राजयोग सिखला रहे है।फिर यह तुम भूल जायेंगे।कर्म अकर्म विकर्म की गति भी
समझाई है।रावण राज्य में तुम्हारे कर्म विकर्म हो जाते है।वहां कर्म अकर्म होते है।
राज्य ही नहीं।विकार होता नहीं।वहां है ही योगबल।जबकि योगबल से हम विश्व
बनते हैं तो जरूर पवित्र दुनिया भी चाहिए।पुरानी दुनिया को कहा विशश।नई
को पवित्र दुनिया कहा जाता है।वह है वाइसलेस वर्ल्ड।यह है विशश वर्ल्ड।बाप
वेश्यालय को शिवालय बनाते है।सतयुग है शिवालय। शिवबाबा आकर तुमको
लिए लायक बना रहे हैं। ल०ना० के मन्दिर में जाकर तुम पूछ सकते हो-आपको
इन्हों ने यह पद कैसे पाया? विश्व के मालिक कैसे बने? बाप कहते है तुम नहीं
।हम जानते है।तुम बाप के बच्चे भी कह सकते हो कि हम आपको बता सकते है।
यह पद कैसे पाया।इन्हों ने ही पूरे 84 जन्म लिए।फिर पुरुषोत्तम संगमयुग पर
बाप ने राजयोग सिखाया।और राजा बनें। उसके आगे नम्बरवन पतित थे।फिर
a) पावन बने।सारी राजधानी है ना।रामचन्द्र भी राजयोग सीखता था।सीखते2
गया। इसलिए क्षत्रिय नाम पड़ा।वह सूर्यवंशी चन्द्रवंशी द्वापर आया तो रावण
हो गया।तुम्हारे चित्र में सब क्लीयर है।इन्हों को राजयोग किसने सिखाया
है ही परमात्मा। देवतायें तो सिखला न सके। भगवान ही सिखलाते है।
b) नालेजफुल कहा जाता है। बाप टीचर सतगुरु भी कहा जाता है।यह नम्बरवन
थे।यह फिर सद्गति में जाना है।लास्ट सो नम्बरवन। चक्र फिरता है ना।किन
मन्दिर बनाने वाले से भी तुम जाकर पूछ सकते हो।शुरू में शिव की भक्ति।जिन्हों
की वह सहज समझ सकेंगे।उनसे पूछो आपने यह मन्दिर बनाया है।इन्होंने यह
पाया।इन्हों का राज्य था ना।फिर यह कहां गये।अब कहां है।तुम 84 की कहानी
तो बहुत खुश हो जायेंगे।चित्र पाकेट में पड़ा हो।तुम किसको भी समझा सकते हो
शिव की भक्ति जिसने की होगी वह सुनते रहेंगे।खुश होते रहेंगे।तुम समझ जायेंगे यह
का है।दिनप्रतिदिन बाबा बहुत सहज युक्तियां बतलाते है। तुमको अब समझ
है परमपिता परमात्मा ही सर्व का सद्गति दाता है। 21जन्मों के लिए सद्गति
जाती है। 21जन्मों का वर्सा अब की पढ़ाई से ही मिलता है।टापिक भी बहुत है।
और शिवालय किसको कहा जाता है।यह टापिक।परमपिता परमात्मा की
जीवनकहानी बता सकते हैं यह भी। ल०ना० के84जन्मों कहानी-यह टापिक।विश्व में
कैसे थी यह फिर अशान्ति कैसे हुई।अब फिर शान्ति कैसे स्थापन हो रही है।यह
टापिक है। अच्छा-

--- मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार
गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

17-8-04 प्रातःमुरली ओमशान्ति ''बापदादा'' मधुबन

''मीठे बच्चे – तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना आत्मा में लाइट आयेगी, ज्ञानवान आत्मा चमकीली बन जाती है''

प्रश्न:- माया किन बच्चों को ज़रा भी तंग नहीं कर सकती?

उत्तर:- जो पक्के योगी हैं, जिन्होंने योगबल से अपनी सर्व कर्मेन्द्रियों को शीतल बनाया है, जो योग में ही रहने की मेहनत करते हैं, उन्हें माया ज़रा भी तंग नहीं कर सकती। जब तुम पक्के योगी बन जायेंगे तब लायक बनेंगे। लायक बनने के लिए प्योरिटी फर्स्ट है।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं। अज्ञान के कारण तुम्हारी आत्मा डल हो गई है। हीरे में चमक होती है ना, पत्थर में चमक नहीं होती। इसलिए कहा जाता है पत्थर मिसल डल हो गई है। फिर जागती है तो कहा जाता है यह जैसे पारसमणी है। अब अज्ञान के कारण आत्मा की ज्योति डिम हो गई है, काली नहीं होती है। नाम यह रखा हुआ है। आत्मा सबकी एक जैसी होती है, शरीर कैसे-कैसे काले होते हैं। अफ्रीका तरफ कितने काले हैं। शरीरों की बनावट अनेक प्रकार की होती है। आत्मा तो एक ही है। अब तुम समझते हो हम आत्मा हैं, बाप के बच्चे हैं। यह सारा ज्ञान था वह फिर धीरे-धीरे निकल गया है। निकलता-निकलता आखरीन कुछ नहीं रहता तो कहेंगे अज्ञान। तुम भी अज्ञानी थे। अब ज्ञान के सागर से ज्ञानी बनते जाते हो, आत्मा तो बहुत सूक्ष्म है। इन आंखों से देखने में नहीं आती। बाप आकर समझाते हैं, बच्चों को नॉलेजफुल बनाते हैं, तब सुज़ाग होते हो। घर-घर में सोझरा हो जाता है। अब घर-घर में अन्धियारा है अर्थात् आत्मा डिम हो गई है। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो लाइट आ जायेगी फिर तुम ज्ञानवान बन जायेंगे। बाप किसकी ग्लानि नहीं करते हैं। यह तो ड्रामा का राज़ समझाते हैं। बच्चों को कहा है ना यह तो सब मूढ़मति हो गये हैं। कौन कहते हैं? बाप। बच्चे, तुम्हारी कितनी सुन्दर बुद्धि बनी थी श्रीमत पर। अभी तुम फील करते हो ना। तुम्हें ज्ञान मिला है। ज्ञान को पढ़ाई कहा जाता है। बाप की पढ़ाई से हमारी ज्योति जग गई है, इनको ही सच्ची-सच्ची दीपावली कहा जाता है। छोटेपन में मिट्टी के दीपक में तेल डाल ज्योति जगाते थे। वह तो रस्म चलती रहती है। उनसे कोई दीपावली नहीं होती। यह तो आत्मा जो अन्दर है, वह डिम हो गई है। उनकी ज्योति आकर बाप जगाते हैं। बच्चों को आकर नॉलेज देते हैं, पढ़ाते हैं। स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं ना। वह है हद की नॉलेज, यह है बेहद की नॉलेज। कोई साधू-सन्त भी पढ़ाते हैं क्या! रचयिता और रचना के आदि, मध्य और अन्त की नॉलेज कब सुनी? कभी कोई ने आकर पढ़ाई? जाकर देखो कहाँ यह नॉलेज पढ़ाते हैं? सिर्फ एक बाप ही पढ़ाते हैं तो उनके पास पढ़ना चाहिए। बाप अनायास ही आ जाते हैं। ढिंढोरा थोड़ेही पीटते हैं कि मैं आ रहा हूँ। अनायास ही आकर प्रवेश करते हैं। वह आवाज़ तो कर ही नहीं सकते जब तक उनको आरगन्स न मिलें। आत्मा भी आरगन्स बिगर आवाज़ नहीं कर सकती, शरीर में जब आयी है, तब आवाज़ करती है। तुम समझाओ तो कोई मानेंगे नहीं। बच्चों को जब यह नॉलेज दी जाती है तब समझते हैं। यह नॉलेज एक बाप के सिवाए कोई दे न सके। विनाश का साक्षात्कार

compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भी कोई चाहते थोड़ेही हैं। यह बाप ही आकर कराते हैं। ड्रामानुसार पुरानी दुनिया अब खत्म होनी है। नई दुनिया स्थापन हो रही है। जिनको बाप से नॉलेज लेनी है वह आते रहते हैं। कितनों को ज्ञान दिया होगा। अनगिनत गांव-गांव से कितने ढेर आते हैं। यह आत्माओं और परमात्मा का मेला एक ही बार लगता है। संगमयुग पर ही आते हैं। बाप आकर नई दुनिया स्थापन करते हैं, जिनकी ज्योति जगाते हैं वह फिर जाकर औरों की ज्योति जगाते हैं। अभी तुम सबको वापिस जाना है। इसमें बुद्धि से काम लेना होता है। भक्ति मार्ग में तो है अन्धियारा। ज्ञान देने वाला तो एक बाप चाहिए। वह आते ही हैं संगम पर। पुरानी दुनिया में ज्ञान मिल न सके। मनुष्यों के ख्याल में है अभी तो 40 हज़ार वर्ष पड़े हैं, बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में हैं। समझते हैं 40 हज़ार वर्ष बाद भगवान् आयेगा। जरूर आकर ज्ञान दे सद्गति करेंगे तो गोया अज्ञान है ना। इनको अज्ञान अन्धियारा कहा जाता है। अज्ञान वालों को ज्ञान चाहिए। भक्ति को ज्ञान नहीं कहा जाता है। आत्मा में ज्ञान है नहीं परन्तु डल बुद्धि होने कारण समझते हैं भक्ति ही ज्ञान है। एक तरफ कहते हैं ज्ञान सूर्य के आने से सोझरा होगा, परन्तु समझते कुछ नहीं। गाते हैं ज्ञान सूर्य प्रगटा..... किसके लिए कहते हैं ज्ञान सूर्य? कब आया यह कोई नहीं जानते। पण्डित आदि होगा तो कहेगा जब कलियुग पूरा होगा तब सोझरा होगा। यह सब बातें बाप आकर समझाते हैं। बच्चे नम्बरवार समझते हैं। टीचर बच्चों को पढ़ाते हैं, एकरस तो बच्चे नहीं पढ़ेंगे। पढ़ाई में एकरस मार्क्स कभी होती नहीं।

तुम जानते हो कि बेहद का बाप आया हुआ है। अब पुरानी दुनिया का विनाश भी सामने खड़ा है। अभी ही बाप से ज्ञान लेना है और योग भी सीखना है। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते हैं इस संगम पर ही आकर इस शरीर का लोन लेता हूँ अर्थात् प्रकृति का आधार लेता हूँ। गीता में भी यह अक्षर है, और कोई शास्त्र का नाम बाबा नहीं लेते हैं। एक ही गीता है। यह है ही राजयोग की पढ़ाई। नाम रख दिया है गीता। इसमें पहले-पहले लिखा है भगवानुवाच। अब भगवान् किसको कहा जाता है? भगवान् तो है निराकार, उनको अपना शरीर तो है नहीं। वह है निराकारी दुनिया, जहाँ आत्मायें रहती हैं। सूक्ष्मवतन को दुनिया नहीं कहा जाता। यह है स्थूल साकार दुनिया, वह है आत्माओं की दुनिया। खेल सारा यहाँ चलता है। निराकारी दुनिया में आत्मायें कितनी छोटी-छोटी हैं। फिर पार्ट बजाने आती हैं। यह ख्यालात तुम बच्चों की ही बुद्धि में बिठाये जाते हैं। इसको ही ज्ञान कहा जाता है। वेद-शास्त्र को कहा जाता है भक्ति, ज्ञान नहीं। तुम्हारी साधू-सन्यासियों से इतनी भेंट नहीं हुई है, बाबा का तो बहुत संग रहा है। बहुत गुरू किये हैं। पूछा जाता है आपने सन्यास क्यों किया? घरबार क्यों छोड़ा? कहते थे विकार से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है इसलिए घरबार छोड़ा। अच्छा, जंगल में जाकर रहते हो फिर घरबार की याद आती होगी? बोला हाँ। बाबा का तो देखा हुआ है एक सन्यासी तो फिर वापिस घर भी गया था। यह भी शास्त्रों में है। मनुष्य वानप्रस्थ अवस्था में तब जाते हैं जब आयु बड़ी हो जाती है, छोटी आयु में तो वानप्रस्थ ले न सकें। कुम्भ के मेले में बहुत छोटे-छोटे नांगे लोग आते हैं। दवाई खिलाते हैं, जिससे कर्मेन्द्रियां ठण्डी पड़ जाती हैं। तुम्हारा तो है योगबल से कर्मेन्द्रियों को वश में करना। योगबल से वश होते होते आखरीन ठण्डी हो ही जायेंगी। कई

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कहते हैं बाबा माया बहुत तंग करती है। वहाँ तो ऐसी बातें होती नहीं। कर्मेन्द्रियां वश तब होंगी जब योग में तुम पक्के होंगे। कर्मेन्द्रियां शान्त हो जायेंगी। इसमें बड़ी मेहनत है। वहाँ ऐसे छी-छी कर्म होते नहीं। बाप आये हैं ऐसे स्वर्गधाम में ले जाने। तुमको लायक बना रहे हैं। माया तुमको न-लायक बनाती है अर्थात् स्वर्ग वा जीवनमुक्ति धाम में चलने लायक नहीं। तो बाप बैठ लायक बनाते हैं। उसके लिए प्योरिटी है फर्स्ट। गाते भी हैं--बाबा, हम पतित बन पड़े हैं, हमको आकर पावन बनाओ। पावन माना पवित्र, गायन भी है अमृत छोड़ विष काहे को खाये। उनका नाम विष भी है, जो आदि मध्य अन्त दु:ख देता है। यह भी ड्रामा में नूंध है। बाप कितना बार आये हैं, तुम बच्चों से आकर मिले हैं। तुम्हें कनिष्ट से उत्तम पुरूष बनाया जाता है। आत्मा पवित्र होती है तो आयु भी बड़ी हो जाती है। हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस सब मिल जाती है। यह भी तुम बोर्ड पर लिख सकते हो। हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस फॉर 21जनरेशन वन सेकण्ड। बाप से यह वर्सा मिलता है 21 जन्मों के लिए। कई बच्चे बोर्ड लगाने से भी डरते हैं। बोर्ड तो सबके घर पर रहता ही है। तुम सर्जन के बच्चे हो ना। तुमको हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस सब मिलती है। तो तुम फिर औरों को दो। दे सकते हो तो क्यों नहीं बोर्ड पर लिख देते हो! तो मनुष्य आकर समझें कि भारत में आज से 5 हज़ार वर्ष पहले हेल्थ-वेल्थ थी, पवित्रता भी थी। बेहद के बाप का वर्सा एक सेकण्ड में। तुम्हारे पास बहुत आयेंगे। तुम बैठ समझाओ यही भारत सोने की चिड़िया थी, इन्हों का राज्य था। फिर यह कहाँ गये? 84 जन्म पहले यह लेंगे। यह नम्बरवन है ना, यही फिर लास्ट में आते हैं। बाप कहते हैं अब तुम्हारा 84 का चक्र पूरा हुआ। फिर शुरू होना है। बेहद का बाप ही आकर यह पद प्राप्त कराते हैं। सिर्फ कहते हैं, तुम मुझे याद करो तो पावन बन जायेंगे। 84 जन्मों को जानकर बाप से वर्सा लेना है। परन्तु पढ़ाई तो चाहिए ना।

तुमको कहा जाता है स्वदर्शन चक्रधारी। नया तो कोई समझ न सके। तुम जानते हो स्व आत्मा को कहा जाता है। हम आत्मा जो पवित्र थी, शुरू से लेकर 84 का चक्र लगाया। वह भी बाप बताते हैं, तुमने पहले-पहले शिव की भक्ति शुरू की। तुम तो अव्यभिचारी भक्त थे। बाप के सिवाए कोई समझा न सके। बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों तुमने पहले-पहले यह जन्म लिया। कोई साहूकार होगा तो कहेंगे ना कि आगे जन्म में इसने ऐसा कर्म किया है। कोई रोगी होगा तो कहेंगे पिछले कर्म का हिसाब-किताब है। अच्छा, इन लक्ष्मी-नारायण ने कौन से कर्म किये? यह बाप बैठ समझाते हैं। इनके 84 जन्म पूरे हुए फिर फर्स्ट नम्बर में आना है। भगवान् संगमयुग पर ही आकर राजयोग सिखलाते हैं। अभी तुम समझ रहे हो कि बाबा हमें राजयोग सिखला रहे हैं। फिर भी तुम भूल जायेंगे। कर्म, अकर्म और विकर्म की गुह्य गति भी बाप ने समझाई है, रावण राज्य में तुम्हारे कर्म विकर्म हो जाते हैं। वहाँ कर्म अकर्म होते हैं। वहाँ रावण राज्य ही नहीं। विकार होता नहीं। वहाँ है ही योगबल जबकि योगबल से हम विश्व के मालिक बनते हैं। तो जरूर पवित्र दुनिया भी चाहिए। पुरानी दुनिया को अपवित्र, नई दुनिया को पवित्र दुनिया कहा जाता है। वह है वाइसलेस वर्ल्ड, यह है विशश वर्ल्ड। बाप ही आकर वेश्यालय को शिवालय बनाते हैं। सतयुग है शिवालय। शिवबाबा आकर तुमको सतयुग के लिए लायक बना रहे हैं। लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जाकर तुम पूछ सकते हो। आपको मालूम है इन्हों ने यह पद कैसे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पाया? विश्व के मालिक कैसे बने? बाप कहते हैं तुम नहीं जानते हो, हम जानते हैं। तुम बाप के बच्चे ही कह सकते हो कि हम आपको बता सकते हैं—इन्हों ने यह पद कैसे पाया। इन्हों ने ही पूरे 84 जन्म लिये फिर पुरूषोत्तम संगमयुग पर आकर बाप ने राजयोग सिखलाया है और राजाई दी है। उसके पहले नम्बरवन पतित थे। फिर नम्बरवन पावन बनें। सारी राजधानी है ना।

a) तुम्हारे चित्रों में सब क्लीयर है—इन्हों को राजयोग किसने सिखलाया। ऊंच ते ऊंच है ही परमात्मा। देवतायें तो सिखला न सके। भगवान् ही सिखलाते हैं, जिसको नॉलेजफुल कहा जाता है। बाप

b) टीचर सतगुरू भी कहा जाता है।

यह सब बातें वही समझ सकते हैं जिसने शुरू से शिव की भक्ति की होगी। मन्दिर बनाने वालों से तुम पूछो — आपने यह मन्दिर बनाया है, इन्होंने यह पद कैसे पाया? इन्हों का राज्य कब था? फिर यह कहाँ गये? अब यह कहाँ हैं? तुम 84 की कहानी बताओ तो बहुत खुश हो जायेंगे। चित्र पॉकेट में पड़ा हो। तुम किसको भी समझा सकते हो। शुरू से जिसने शिव की भक्ति की होगी, वह सुनते रहेंगे खुश होते रहेंगे। तुम समझ जायेंगे यह हमारे कुल का है। दिन-प्रतिदिन बाबा बहुत सहज युक्तियाँ बतलाते हैं। तुमको अब समझ मिली है परमपिता परमात्मा ही सर्व का सद्गति दाता है। 21 जन्मों के लिए सतयुगी बादशाही मिल जाती है। 21 जन्मों का वर्सा इस पढ़ाई से ही मिलता है। टॉपिक भी बहुत हैं, वेश्यालय और शिवालय किसको कहा जाता है—इस टॉपिक पर हम परमपिता परमात्मा की जीवन कहानी बता सकते हैं। लक्ष्मी-नारायण के 84 जन्मों की कहानी—यह भी टॉपिक है। विश्व में शान्ति कैसे थी, फिर अशान्ति कैसे हुई, अब फिर शान्ति कैसे स्थापन हो रही है—यह भी टॉपिक है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अब उत्तम पुरूष बनने के लिए याद के बल से आत्मा को पवित्र बनाना है कर्मेन्द्रियों से कोई भी विकर्म नहीं करना है।

२. ज्ञानवान बन आत्माओं को सुजाग करने की सेवा करनी है। आत्मा रूपी ज्योति में ज्ञान-योग का घृत डालना है। श्रीमत पर बुद्धि को स्वच्छ बनाना है।

वरदान:- सब कुछ बाप हवाले कर कमल पुष्प समान न्यारे प्यारे रहने वाले डबल लाइट भव

बाप का बनना अर्थात् सब बोझ बाप को दे देना। डबल लाइट का अर्थ ही है सब कुछ बाप हवाले करना। यह तन भी मेरा नहीं। तो जब तन ही नहीं तो बाकी क्या। आप सबका वायदा ही है तन भी तेरा, मन भी तेरा, धन भी तेरा—जब सब कुछ तेरा कहा तो बोझ किस बात का। इसलिए कमल पुष्प का दृष्टान्त स्मृति में रख सदा न्यारे और प्यारे रहो तो डबल लाइट बन जायेंगे।

स्लोगन:-

रूहानियत से रोब को समाप्त कर, स्वयं को शरीर की स्मृति से गलाने वाले ही सच्चे पाण्डव हैं।

Compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

15•8•84 प्रात:क्लास ओमशान्ति [illegible] शिवबाबा याद [illegible]

"मीठे बच्चे- विनाशी शरीरों से प्यार न करके अविनाशी बाप से प्यार [illegible]
तो रोने से छूट जायेंगे"

प्रश्न:-अनराइटियस प्यार क्या है और उसका परिणाम क्या होता है? उत्तर:- [illegible] शरीरों में मोह रखना यह है अनराइटियस प्यार। जो विनाशी चीजों में मोह [illegible] वह रोते हैं। देह अभिमान के कारण रोना आता। सतयुग में सब आत्म अभिमानी [illegible] रोने की बात ही नहीं रहती। जो रोते हैं वह खोते हैं। अविनाशी बाप की अवि[illegible] बच्चों को अब शिक्षा मिलती है- देही अभिमानी बनो।

ओमशान्ति। यह तो बच्चे जानते हैं कि आत्मा अविनाशी है, बाप भी अविनाशी [illegible] तो प्यार किसको करना चाहिए? अविनाशी आत्मा को। अविनाशी को ही प्यार [illegible] विनाशी शरीर को थोड़ेही प्यार करना चाहिए। सारी दुनिया विनाशी है। हर [illegible] विनाशी है। यह शरीर विनाशी है। आत्मा अविनाशी है। आत्मा का प्यार अविना[illegible] जाता है। आत्मा कब मरती नहीं। उनको कहा जाता है राइटियस। बाप कहते हैं तुम अनराइटियस बन गये हो। वास्तव में अविनाशी का अविनाशी के साथ प्यार होना [illegible] तुम्हारा प्यार विनाशी शरीर के साथ हो गया है इसलिए रोना पड़ता है। अवि[illegible] के साथ प्यार नहीं। विनाशी के साथ प्यार होने से रोना पड़ता है। अभी तुम अपन[illegible] अविनाशी समझते हो सो रोने की बात नहीं। वह अनराइटियस प्यार है इसलिए [illegible] पड़ता है। बाप पूछते हैं सतयुग में रोते हैं? नहीं क्योंकि आत्म अभिमानी हैं। यहाँ मनुष्य देह अभिमानी हैं, तो बाप अब तुम बच्चों को आत्म अभिमानी समझते हैं। देह अभिमानी होने से रोना पड़ता है। विनाशी शरीर के पिछाड़ी रोते हैं समझते भी हैं आत्मा [illegible] नहीं है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो तो रोने की दरकार नहीं। तुम अविना[illegible] बाप के बच्चे तुम भी अविनाशी आत्मा हो। तुमको रोने की दरकार नहीं। आत्मा [illegible] शरीर छोड़ जाकर दूसरा पार्ट बजाती है। खेल करने दो। तुम शरीर में ममत्व क्यों रखते हो। देह सहित देह के सब सम्बन्धों से बुद्धि का योग तोड़ो। अपने को भी आत्मा अविनाशी समझो। आत्मा तो कब मरती नहीं। गायन भी है जो रोते हैं सो खोते हैं। आत्म अभिमानी बनने से ही लायक बन जाते हो। तो बाप [illegible] देह अभिमान से आत्म अभिमानी बनाते हैं। कहते हैं तुम कितने भूले हुए हो। जन्म-जन्मान्तर तुमको [illegible] पड़ा है। अब फिर तुमको आत्म अभिमानी होने की शिक्षा मिलती है। फिर कब तुम [illegible] हो नहीं। यह है रोने वाली दुनिया। वह है हंसने वाली दुनिया। यह दुःख की दुनिया [illegible] सुख की दुनिया। बाप बहुत अच्छी तरह से शिक्षा देते हैं। अविनाशी बाप के अविना[illegible] बच्चों को शिक्षा मिलती है। वह देह अभिमानी हैं तो देह को ही [illegible] शिक्षा देते [illegible] देह को याद आने से रोते हैं। देखते भी हैं शरीर खत्म हो गया। फिर उनको याद [illegible] रोने से क्या फायदा। मिट्टी को याद [illegible] जाता है क्योंकि अविनाशी चीज ने [illegible] दूसरा शरीर लिया। यह तो बच्चे जानते हैं जो अच्छा कर्म [illegible] उनको फिर [illegible] भी अच्छा मिलता है। कोई को खराब रोगी शरीर मिलता [illegible] कर्मों अनुसार [illegible] ऐसे नहीं कि अच्छा कर्म किया है तो ऊपर [illegible] कोई भी जा [illegible] नहीं सकते। अच्छे कर्म किये हैं तो अच्छा कहलायेंगे। [illegible] फिर भी [illegible] तो उतरना ही है। तुम जानते हो हम चढ़ते कैसे [illegible] उतरते [illegible] अच्छे [illegible] कोई महात्मा बनेगा फिर भी कला तो कम होती जायेगी। [illegible] करते हैं फिर भी [illegible] को याद कर अच्छा कर्म करते हैं तो मैं उनको [illegible] देता हूँ। फि[illegible] सीढ़ी तो जरूर उतरनी है। नाम करके अच्छा [illegible] को भी नहीं जानते हैं। रिद्धि सिद्धि वाले की कितनी मान [illegible] उन्हों के पिछा[illegible] मनुष्य जैसे हैरान होते हैं। है तो सारा अज्ञान। समझो कोई इनडायरेक्ट दान पुण्य क[illegible] धर्मशाला हास्पीटल आदि बनाते हैं तो दूसरे जन्म में उसका एवजा जरूर मिलता है। [illegible] को याद करते हैं भल गालियाँ भी देते हैं फिर भी मुख से भगवान तो कहते हैं। [illegible]
[illegible]

Simply ... watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

a) ज्ञान समझते है। इनके लिए कहते है आकर यज्ञ रचते है रूद्र शिव को पूजा करते बाप है मेरी पूजा करते है परन्तु बेसमझी से क्या2बनाते है। क्या2करते है। जितने मनुष्य उतने के गुरू है। झाड में नये पत्ते टाल टालियां आदि निकलते है। तो वह कितने शोभते है। सतोगुणी होने कारण महिमा भी उनकी होती है। बाप कहते है यह दुनिया है ही दौड़ने की प्यार करने वाली। कोई2का बहुत प्यार होता है तो मोह में जैसे [illegible] जाते है। बड़े2सेठ लोग मोटका चरिये हो जाते है। माताओं को ज्ञान न धारणा कितनी शरीर पिछड़ी विधवा बन कितना रोती याद करती रहती है। अभी अपने को आत्मा समझ चलते हो। दूसरे को भी आत्मा देखते हो तो जरा भी दुख नहीं। पढ़ाई को मीन्स आफ इनकम कहा जाता है। पढ़ाई में एम आब्जेक्ट भी होती है। बाप है एक जन्म के लिए गवर्मेन्ट से पधार मिलती है। पढ़कर धन्धा आदि करते है। भी ऐसे मिलते है। यहां तो फिर बात ही नई है। तुम अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भरते हो। जो तुम समझती है बाबा हमको अविनाशी ज्ञान खजाना देते है। भगवान [illegible] है तो जरूर भगवान ही बनना है परन्तु वास्तव में इन ल0ना0को भगवान भगवती

b) ना रावण [illegible] राम सीता की डिनायस्टी तो चल रही है। यह कोई जानते थोड़ेही है। [illegible] भी जानते है। तुम भविष्य बच्चे तो हो ना। माया रावण पर जीत पाते हो। रावण का अर्थ नहीं जानते। यह भी ड्रामा में तुम जानते हो। बोलो हम जब अभिमानी होते है तो हमारी बुद्धि कितनी डिट्टेच हो जाती है। कैसे जानवर बुद्धि वाले है। जानवरों की भी सेवा बहुत अच्छी होती है। मनुष्यों को तो कुछ भी नहीं। घोड़े आदि की कितनी सम्भाल होती है। यहां के मनुष्यों की देखो क्या हालत है। कुत्ते को भी कितने प्यार से सम्भालते है। चाटते रहते है। साथ में सुलाते है। देखो दुनिया का हाल है। वहां सतयुग में ऐसा धन्धा नहीं होता। तो बाप कहते है बच्चे तुमको माया [illegible] बनाकर [illegible] बनाकर डिवाइन राज्य है। वहां मनुष्य भी अनहादटियस दुनिया भी [illegible] अनहादटियस बन जाती है। हादटियस और अनहादटियस दुनिया कितना फर्क है। कलियुग की हालत देखी क्या है। मैं स्वर्ग स्थापन कर रहा हूं तो अपनी स्वर्ग चित्रावली हाटे सटेशन देती है। आटोमिक्स बन कितना है। समझते है- यहां स्वर्ग में बैठे है। स्वर्ग में थोड़ेही इतने 100मंजिल के मकान होते है। कैसे2मकान [illegible] है। वहां तो ऊबल स्टोरी के भी मकान नहीं होते। मनुष्य ही बहुत थोड़े रहते है। जमीन तुम क्या करेंगे। यहां जमीन के पिछाड़ी भी कितना लड़ते झगड़ते है। जमीन सारी तुम्हारी रहती है। कितना लड़ते झगड़ते है। वहां सारी जमीन तुम्हारी रहती है। [illegible] रात दिन का फर्क है। वह नो डिक बाप, यह है पारलौकिक बाप। पारलौकिक बाप भी क्या नहीं देते है। सब कुछ देते है। आधाकल्प तुम भक्ति करते आये हो। बाप साफ [illegible] इनसे मुक्ति नहीं मिलती। अर्थात मेरे से नहीं मिलते। तुम मुक्तिधाम में मेरे से मिलते [illegible] मुक्तिधाम में रहता है। तुम भी मुक्तिधाम में रहते हो। फिर वहां से तुम स्वर्ग में [illegible] वहां से नहीं होता। यह भी ड्रामा में नूंध है। फिर भी वह ऐसे रिपीट होगा।

c) [illegible] ज्ञान दे जायेंगा। प्राय:लोप हो जायेगा। जब तक कोई तुम समझाने नहीं [illegible] है तो मुक्ति का ज्ञान हो कैसे सकता। बाकी जो भी शास्त्र आदि है वह है भक्ति

d) शास्त्र इनसे मेरे नाम कोई भी नहीं मिलता। मनुष्य व्यर्थ पुरुषार्थ करते रहते है। [illegible] करते है हे पतित पावन आओ तुमको कितना कलियुग है। अब काले से गोरा बनना है मनुष्य को अक्ल का काम नहीं मनुष्य कहेंगे भगवान तो निराकार है। उसने कैसे [illegible] रामसीता को दिव्य दृष्टि देकर बनाया है। दिव्य दृष्टि तो है ना। मीरा [illegible] का सामने है। मीरा ने बहुत भक्ति के सा0किये है। कृष्ण रहता था। [illegible] उसको क्यों तो ज्ञान न हो। मंजिल मार्ग है तो गिनने को। अब तुम नालेज फुल में बाल रूप ज्ञान का सागर हूं। तुमको कुछ भी करने नहीं देता। पांव भी नहीं [illegible] पांव किसको पड़ेंगे? शिवबाबा को तो पांव है नहीं। यह तो ब्रह्मा को पांव पड़ने [illegible] मैं तो तुम्हारा गुलाम हूं। उनको कहते ही है निराकारी निर अहंकारी तुम्हें

भी [illegible] में आये सब तो निरअहंकारी बनना है। बाप तुमको अथाह ज्ञान देते हैं [illegible] ज्ञान रत्नों का दान। फिर जो जितना लेवे। अविनाशी रत्न लेकर और [illegible] दान करते जाओ। इन रत्नों के लिए ही कहा जाता है। एक2रत्न लाखों का है। कदम2 [illegible] बदन देने वाला तो एक बाप ही है। सर्विस पर बड़ा अटेन्शन चाहिए। तुम्हारा कदम [illegible] की यात्रा का। उनसे तुम अमर बन जाते हो। वहां मरने आदि का फिकर होता नहीं। शरीर छोड़ा दूसरा लिया। मीठे [illegible] राजा [illegible] भी सुनते [illegible]। यह तो बाप [illegible] समझाते हैं। अब बाप तुमको ऐसा बनाते हैं। [illegible] अभी कोई हो बाते [illegible] कहा जाता है। यह [illegible] की निशानी है। कब भगवान ने कहा कि पवित्र बनो। यह मनुष्य क्या पता। नई दुनिया कब पुरानी दुनिया कब होती है। यह भी किसको पता नहीं। कहते हैं कि अभी कलियुग है। सतयुग था। अब नहीं है। पुनर्जन्म को भी मानते 84लाख [illegible] कह देते हैं। तो जरूर पुनर्जन्म हुआ ना। निराकार बाप को सब याद करते हैं। वह है [illegible] आत्माओं का बाप वही आकर समझाते हैं। देहधारी बाप तो बहुत हैं। जानवर भी [illegible] बच्चों के बाप हैं। उनके लिए तो ऐसे नहीं [illegible] जानवरों का बाप। सतयुग में कोई [illegible] पट्टी होती नहीं। जैसा मनुष्य वैसा फरनीचर होता है। वहां पक्षी आदि भी फर्स्टक्लास खूबसूरत होंगे। सब अच्छी2चीजें होंगी। वहां फल कितने अच्छे बड़े स्वीट होते हैं। फिर [illegible] कहां चले जाते हैं। स्वीटनेस निकलकर कड़ुवाईस आ जाती है। थर्डक्लास बनते हैं तो चीजें थर्डक्लास मिलती हैं। सतयुग है फर्स्टक्लास तो सब फर्स्टक्लास चीजें मिलती हैं। कलियुग को कहेंगे थर्ड क्लास। सतो रजो तमो यहां तो कोई मजा नहीं है। आत्मा भी तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान है। अभी तुम बच्चों को ज्ञान है। कहां वह कहां यह। रात दिन का [illegible] है। बाप तुमको कितना ऊंच बनाते हैं। जितना याद करेंगे। हेल्थ वेल्थ दोनों मिल जाती [illegible] बाकी क्या चाहिए। दोनों चीजों से एक भी नहीं होगी तो हैपीनेस नहीं होगी। [illegible] हेल्थ है वेल्थ नहीं तो क्या काम का। गाते भी हैं -धन है तो [illegible] घूमकर [illegible] (सिन्धी कहावत) बच्चे समझते हैं भारत सोने की चिड़िया थी। अभी सोनो कहां [illegible] आगे चलकर चमड़े के भी सिक्के चलाये। हालत ऐसी होती जाती है। सोना चांदी ता[illegible] गया। अभी तो कागज ही कागज है। कागज पानी में बह जाए तो पैसे कहां से मिले। [illegible] बहुत भारी होता है। वह वहां ही पड़ा रहता है। आग भी सोने को जला न सके। तो यह सब दुःख की बातें हैं। वहां तो यह सब बातें होती नहीं। यहां इस समय अपार दुःख [illegible] बाप आते ही तब हैं जबकि अपार दुःख है। कल फिर अपार सुख होगा। बाबा तो कल्प [illegible] आकर पढ़ाते हैं। यह कोई नई बात थोड़ेही है। खुशी में रहना चाहिए। खुशी ही खुशी। यह अन्त की बात है। अतिइन्द्रिय सुख गोप गोपियों से पूछो। पिछाड़ी में तुम बहुत अच्छी रीति समझ जाते हो। तो बाप कितना आत्म अभिमानी बनाते हैं। जबकि तुम शान्ति स्थापन करने आये हो। फिर अशान्ति क्यों फैलाते हो? तुम्हारा स्वधर्म ही शान्त [illegible] कर्म तो करना ही है। (रीयल शान्ति बाप ही देते हैं। शान्ति का वर्सा तुम बाप से [illegible] उनको सब याद करते हैं। बाप शान्ति का सागर है। बाप समझाते हैं मेरे [illegible] कोई [illegible] सकते हैं। फलाना2धर्म फलाने2समय पर आते हैं। स्वर्ग में तो कोई आ न सके। अभी संन्यासी आदि ढेर निकल पड़े हैं। तो उन्हों की महिमा देखते हैं। पवित्र हैं। उनकी महिमा [illegible] होनी चाहिए। अभी नई उतरी है। पुरानों की तो इतनी महिमा हो न सके। वह तो [illegible] भोग तमोप्रधान में चले गये हैं। कितने ढेर गुरू किसम2के निकलते जाते हैं। इस बेहद के [illegible] को कोई जानते नहीं। बाप समझाते हैं भक्ति की सामग्री इतनी है, जितना झाड फैला होता है। ज्ञान बीज कितना थोड़ा है। भक्ति को आधाकल्प लगता है। तुम्हारा ज्ञान [illegible] सिर्फ यह एक अन्तिम जन्म। ज्ञान को पाकर फिर तुम आधाकल्प के लिए मालिक बन [illegible] भक्ति बन्द हो जाती है। दिन हो जाता है। तुम तो सर्विस होते हो। इसको कहा जाता है ईश्वर की [illegible] लाटरी। इसके लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। ईश्वरीय लाटरी आसुरी लाटरी में कितना फर्क होता है। अच्छा-मीठे2सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

PDF Compression

28-8-04 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – विनाशी शरीरों से प्यार न करके अविनाशी बाप से प्यार करो तो रोने से छूट जायेंगे"

प्रश्नः- अनराइटियस प्यार क्या है और उसका परिणाम क्या होता है?

उत्तरः- विनाशी शरीरों में मोह रखना अनराइटियस प्यार है। जो विनाशी चीज़ों में मोह रखते हैं, वह रोते हैं। देह-अभिमान के कारण रोना आता है। सतयुग में सब आत्म-अभिमानी हैं, इसलिए रोने की बात ही नहीं रहती। जो रोते हैं वह खोते हैं। अविनाशी बाप की अविनाशी बच्चों को अब शिक्षा मिलती है, देही-अभिमानी बनो तो रोने से छूट जायेंगे।

ओम् शान्ति। यह तो बच्चे ही जानते हैं कि आत्मा अविनाशी है और बाप भी अविनाशी है, तो प्यार किसको करना चाहिए? अविनाशी आत्मा को। अविनाशी को ही प्यार करना है, विनाशी शरीर को थोड़ेही प्यार करना चाहिए। सारी दुनिया विनाशी है, हर एक चीज़ विनाशी है, यह शरीर विनाशी है, आत्मा अविनाशी है। आत्मा का प्यार अविनाशी होता है। आत्मा कभी मरती नहीं, उसको कहा जाता है राइटियस। बाप कहते हैं तुम अनराइटियस बन गये हो। वास्तव में अविनाशी का अविनाशी के साथ प्यार होना चाहिए। तुम्हारा प्यार विनाशी शरीर के साथ हो गया है इसलिए रोना पड़ता है। अविनाशी के साथ प्यार नहीं। विनाशी के साथ प्यार होने से रोना पड़ता है। अभी तुम अपने को अविनाशी आत्मा समझते हो तो रोने की बात नहीं क्योंकि आत्म-अभिमानी हैं। तो बाप अब तुम बच्चों को आत्म-अभिमानी बनाते हैं। देह-अभिमानी होने से रोना होता है। विनाशी शरीर पिछाड़ी रोते हैं। समझते भी हैं आत्मा मरती नहीं है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। तुम अविनाशी बाप के बच्चे अविनाशी आत्मा हो, तुमको रोने की दरकार नहीं। आत्मा एक शरीर छोड़ जाए दूसरा पार्ट बजाती है। ये तो खेल है। तुम शरीर में ममत्व क्यों रखते हो। देह सहित देह के सब सम्बन्धों से बुद्धियोग तोड़ो। अपने को अविनाशी आत्मा समझो। आत्मा कभी मरती नहीं। गायन भी है जो रोया सो खोया। आत्म-अभिमानी बनने से ही लायक बन जायेंगे। तो बाप आकर देह-अभिमानी से आत्म-अभिमानी बनाते हैं। कहते हैं तुम कैसे भूले हुए हो। जन्म-जन्मान्तर तुमको रोना पड़ा है। अब फिर से तुमको आत्म-अभिमानी बनने की शिक्षा मिलती है। फिर तुम कभी रोयेंगे ही नहीं। यह है रोने वाली दुनिया, वह है हँसने की दुनिया। यह दुःख की दुनिया, वह सुख की दुनिया। बाप बहुत अच्छी रीति से शिक्षा देते हैं। अविनाशी बाप की अविनाशी बच्चों को शिक्षा मिलती है। वह देह-अभिमानी हैं तो देह को ही देख शिक्षा देते हैं। तो देह की याद आने से रोते हैं। देखते भी हैं शरीर खत्म हो गया फिर उनको याद करने से क्या फायदा। मिट्टी को याद किया जाता है क्या? अविनाशी चीज़ ने जाकर दूसरा शरीर लिया।

यह तो बच्चे जानते हैं – जो अच्छा कर्म करता है, उनको फिर शरीर भी अच्छा मिलता है। कोई को खराब रोगी शरीर मिलता है, वह भी कर्मों अनुसार है। ऐसा नहीं कि अच्छा कर्म किया है तो ऊपर चले जायेंगे। नहीं, ऊपर तो कोई जा नहीं सकते। अच्छे कर्म किये हैं तो अच्छा कहलायेंगे। जन्म अच्छा मिलेगा फिर भी नीचे तो उतरना ही है। तुम जानते हो कि हम चढ़ते कैसे हैं। भल

अच्छे कर्मों से कोई महात्मा बनेगा फिर भी कला तो कम होती ही जायेगी। बाप कहते हैं फिर भी ईश्वर को याद कर अच्छा कर्म करते हैं तो उनको अल्पकाल क्षण भंगुर सुख देता हूँ। फिर भी सीढ़ी नीचे तो उतरना ही है। नाम करके अच्छा हो। यहाँ तो मनुष्य अच्छे-बुरे कर्मों को भी नहीं जानते हैं। रिद्धि-सिद्धि वालों को कितना मान देते हैं। उन्हें के पिछाड़ी मनुष्य जैसे हैरान होते हैं। है तो सारा अज्ञान। समझो कोई इनडायरेक्ट दान-पुण्य करते हैं, धर्मशाला, हॉस्पिटल बनाते हैं। तो दूसरे जन्म में उसका एवज़ा जरूर मिलता है। बाप को याद करते हैं, भल गालियाँ भी देते हैं तो भी मुख से भगवान् का नाम कहते हैं। बाकी अन्जान होने कारण जानते कुछ नहीं। भगवान को काट कर रूद्र पूजा करते हैं, रूद्र को भगवान समझते हैं। रूद्र यज्ञ रचते हैं। शिव वा रूद्र की पूजा करते हैं। बाप कहते हैं मेरी पूजा करते हैं परन्तु बेसमझी से क्या-क्या बनाते हैं, क्या-क्या करते हैं। जितने मनुष्य उतने उन्हें के गुरू हैं। झाड़ में नये-नये पत्ते, टाल-टालियां आदि निकलते हैं तो वह कितने शोभते हैं। सतोगुणी होने के कारण उनकी महिमा होती है। बाप कहते हैं कि यह दुनिया है ही विनाशी चीज़ों को प्यार करने वाली। कोई-कोई का बहुत प्यार होता है तो मोह में जैसे पागल बन जाते हैं। बड़े-बड़े सेठ लोग मोहवश पागल हो जाते हैं। माताओं को ज्ञान न होने कारण विनाशी शरीर पिछाड़ी विधवा बन कितना रोती, याद करती रहती हैं। अभी तुम अपने को आत्मा समझ, दूसरे को भी आत्मा देखते हो तो ज़रा भी दुःख नहीं होता। पढ़ाई को सोर्स ऑफ इनकम कह जाता है। पढ़ाई में एम ऑबजेक्ट भी होती है। परन्तु वह है एक जन्म के लिए। वर्मेन्ट से पक्का मिलता है। पढ़कर धंधाधोरी करते हैं, तब पैसे आदि मिलते हैं। यहाँ तो फिर बात ही नई है। तुम अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली कैसे भरते हो। आत्मा समझती है कि बाबा हमको अविनाशी ज्ञान खजाना देते हैं। भगवान पढ़ाते हैं तो जरूर भगवान भगवती ही बनायेंगे।

b) परन्तु वास्तव में इन लक्ष्मी-नारायण को भगवान-भगवती समझना रांग है। अभी तुम बच्चे जानते हो — ओहो, जब हम देह-अभिमानी हो जाते हैं तो हमारी बुद्धि कितनी डिग्रेट हो जाती है। जैसे जानवर बुद्धि बन जाते हैं। जानवरों की सेवा भी बहुत अच्छी होती है। मनुष्यों की तो कुछ भी नहीं। रेस के घोड़ों आदि की कितनी सम्भाल होती है। यहाँ के मनुष्यों की देखो क्या हालत है। कुत्ते को कितने प्यार से सम्भालते हैं। चाटते रहते हैं। साथ में सुलाते भी हैं। देखो दुनिया का क्या हाल हो गया है। वहाँ सतयुग में वह धंधा होता नहीं।

तो बाप कहते हैं — बच्चों, तुमको माया रावण ने अनराइटियस बना दिया है। अनराइटियस राज्य है ना। मनुष्य अनराइटियस तो सारी दुनिया भी अनराइटियस हो जाती है। राइटियस और अनराइटियस दुनिया में देखो फ़र्क कितना है! कलियुग की हालत देखो क्या है! मैं स्वर्ग स्थापन कर रहा हूँ तो माया भी अपना स्वर्ग दिखाती है, टैम्पटेशन देती है। आर्टीफिशल धन कितना है। समझते हैं हम यहाँ ही स्वर्ग में बैठे हैं। स्वर्ग में थोड़ेही इतने ऊंचे 100 मंजिल के मकान आदि होते हैं। कैसे-कैसे मकान सजाते हैं, वहाँ तो डबल स्टोरी के भी मकान नहीं होते। मनुष्य ही बहुत थोड़े होते हैं। इतनी जमीन तुम क्या करेंगे। यहाँ जमीन के पिछाड़ी कितना लड़ते-झगड़ते हैं। वहाँ सारी जमीन तुम्हारी रहती है। कितना रात-दिन का फ़र्क है। वह लौकिक बाप, यह पारलौकिक बाप है। पारलौकिक बाप बच्चों को क्या नहीं देते हैं। आधाकल्प तुम भक्ति करते हो। बाप साफ कहते

PDF compression, OCR, web optimization

हैं इनसे मुक्ति नहीं मिलती है अर्थात् मेरे से नहीं मिलते। तुम मुक्तिधाम में मेरे से मिलते हो। मैं भी मुक्तिधाम में रहता हूँ। तुम भी मुक्तिधाम में रहते हो फिर वहाँ से तुम स्वर्ग में जाते हो। वहाँ स्वर्ग में मैं नहीं होता। यह भी ड्रामा है। फिर हूबहू ऐसे रिपीट होगा फिर यह ज्ञान भूल जायेगा।
c) प्राय: लोप हो जायेगा। जब तक संगमयुग नहीं आया है तब तक गीता का ज्ञान हो कैसे सकता। बाकी जो भी शास्त्र आदि हैं, वह हैं भक्ति मार्ग के शास्त्र।
d) अब तुम नॉलेज सुन रहे हो। मैं बीजरूप, ज्ञान का सागर हूँ। तुमको कुछ भी करने नहीं देता, पाँव भी पड़ने नहीं देता। पाँव किसका पड़ेंगे। शिवबाबा के तो पांव हैं नहीं। यह तो ब्रह्मा के पांव पड़ना हो जायेगा। मैं तो तुम्हारा गुलाम हूँ। उनको कहते हैं निराकारी, निरहंकारी, सो भी जब वह एक्ट में आये तब तो निरहंकारी कहा जाये। बाप तुमको अथाह ज्ञान देते हैं। यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान। फिर जो जितना लेवे। अविनाशी ज्ञान रत्न लेकर फिर औरों को दान करते जाओ। इन रत्नों के लिए ही कहा जाता है – एक-एक रत्न लाखों का है। कदम-कदम पर पद्म देने वाला तो एक ही बाप है। सर्विस पर बड़ा अटेन्शन चाहिए। तुम्हारा कदम है याद की यात्रा का। उनसे तुम अमर बन जाते हो। वहाँ मरने आदि का फिक्र होता नहीं। एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। मोहजीत राजा की कथा भी सुनी होगी। यह तो बाप बैठ समझाते हैं। अब बाप तुमको ऐसा बनाते हैं। अभी की ही बातें हैं।

रक्षाबंधन का पर्व भी मनाते हैं। यह कब की निशानी है? कब भगवान ने कहा कि पवित्र बनो? यह मनुष्यों को क्या पता कि नई दुनिया कब, पुरानी दुनिया कब होती है? यह भी किसको पता नहीं। इतना कहते हैं कि अभी कलियुग है। सतयुग था, अभी नहीं है। पुनर्जन्म को भी मानते हैं। 84 लाख कह देते हैं तो जरूर पुनर्जन्म हुआ ना। निराकार बाप को सब याद करते हैं। वह है सब आत्माओं का बाप। वही आकर समझाते हैं। देहधारी बापू तो बहुत हैं। जानवर भी अपने बच्चों के बापू हैं। उनके लिए तो ऐसा नहीं कहेंगे कि जानवरों का बाप। सतयुग में कोई कुछ किचड़पट्टी होती नहीं। जैसा मनुष्य वैसा फर्नीचर होता है। वहाँ पंछी आदि भी फर्स्टक्लास खूबसूरत होते हैं। सब अच्छी-अच्छी चीज़े होंगी। वहाँ फल कितने स्वीट बड़े होते हैं। फिर वह सब कहाँ चला जाता है। स्वीट से निकल कड़ुवाहट आ जाती है। थर्ड क्लास बनते हैं तो चीज़ें भी थर्ड क्लास बन जाती हैं। सतयुग है फर्स्टक्लास तो सब चीज़ें फर्स्टक्लास मिलती हैं। कलियुग में है थर्ड क्लास। सब चीज़ें सतो, रजो, तमो..... से पास होती हैं। यहाँ तो कोई मजा नहीं है। आत्मा भी तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान है। अभी तुम बच्चों को ज्ञान है, कहाँ वह, कहाँ यह, रात-दिन का फर्क है। बाप तुमको कितना ऊंच बनाते हैं। जितना याद करेंगे, हेल्थ-वेल्थ दोनों मिल जायेंगे। बाकी क्या चाहिए। दोनों चीज़ों से एक नहीं होगी तो हैप्पीनेस नहीं होगी। समझो हेल्थ है, वेल्थ नहीं तो क्या काम के। गाते भी हैं – "पैसा है तो लाडकाना घूमकर आओ।" बच्चे समझते हैं – भारत सोने की चिड़िया था, अभी सोना कहाँ। सोना, चांदी, ताम्बा गया, अभी तो कागज ही कागज हैं। कागज पानी में बह जाये तो पैसे कहाँ से मिलें। सोना तो बहुत भारी होता है, वह वहाँ ही पड़ा रहता है। आग भी सोने को जला न सकें। तो यहाँ सब दु:ख की बातें हैं। वहाँ यह सब बातें होती नहीं। यहाँ इस समय अपार दु:ख हैं। बाप आते ही तब हैं जब अपार दु:ख हैं। कल फिर

अपार सुख होगा। बाबा तो कल्प-कल्प आकर पढ़ाते हैं। यह कोई नई बात थोड़ेही है। खुशी में रहना चाहिए। खुशी ही खुशी, यह अन्त की बात है। अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। पिछाड़ी में तुम बहुत अच्छी रीति समझ जाते हो।

रीयल शान्ति किसे कहा जाता है, यह बाप ही बतलाते हैं। तुम बाप से शान्ति का वर्सा लेते हो। उनको सब याद करते हैं। बाप शान्ति का सागर है। बाप समझाते हैं मेरे पास आ कौन सकते हैं। फलाना-फलाना धर्म फलाने-फलाने समय पर आते हैं। स्वर्ग में तो आ न सकें। अभी साधू सन्त ढेर निकल पड़े हैं तो उन्हों की महिमा होती है। पवित्र हैं तो उनकी महिमा जरूर होनी चाहिए। अभी नये उतरे हैं। पुरानों की तो इतनी महिमा हो न सकें। वह तो सुख भोग तमोप्रधान में चले गये हैं। कितने ढेर गुरू किस्म-किस्म के निकलते जाते हैं। इस बेहद के झाड़ को कोई जानते नहीं हैं। बाप समझाते हैं कि भक्ति की सामग्री इतनी है, जितना झाड़ फैला होता है। ज्ञान बीज कितना थोड़ा है। भक्ति को आधाकल्प लगता है। यह ज्ञान तो सिर्फ इस एक अन्तिम जन्म के लिए है। ज्ञान को प्राप्त कर तुम आधाकल्प के लिए मालिक बन जाते हो। भक्ति बंद हो जाती है, दिन हो जाता है। अभी तुम सदाकाल के लिए हर्षित बनते हो, इसको कहा जाता है ईश्वर की अविनाशी लॉटरी। उसके लिए पुरूषार्थ करना पड़ता है। ईश्वरीय लॉटरी और आसुरी लॉटरी में कितना फ़र्क होता है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. तुम्हारे याद के हर कदमों में पदम हैं, इससे ही अमर पद प्राप्त करना है। अविनाशी ज्ञान रत्न जो बाप से मिलते हैं, उनका दान करना है।

२. आत्म-अभिमानी बन अपार खुशी का अनुभव करना है। शरीरों से मोह निकाल सदा हर्षित रहना है, मोहजीत बनना है।

वरदान:- किसी भी परिस्थिति में फुलस्टॉप लगाकर स्वयं को परिवर्तन करने वाले सर्व की दुआओं के पात्र भव

किसी भी परिस्थिति में फुलस्टाप तब लगा सकते हैं जब बिन्दु स्वरूप बाप और बिन्दू स्वरूप आत्मा दोनों की स्मृति हो। कन्ट्रोलिंग पावर हो। जो बच्चे किसी भी परिस्थिति में स्वयं को परिवर्तन कर फुलस्टॉप लगाने में स्वयं को पहले आफर करते हैं, वह दुआओं के पात्र बन जाते हैं। उन्हें स्वयं को स्वयं भी दुआयें अर्थात् खुशी मिलती है, बाप द्वारा और ब्राह्मण परिवार द्वारा भी दुआयें मिलती हैं।

स्लोगन:-

जो संकल्प करते हो उसे बीच-बीच में दृढ़ता का ठप्पा लगाओ तो विजयी बन जायेंगे।

... optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

24.2.90 प्रात:क्लास ओम्शान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे- तुम्हें कलियुगी मनुष्यों को सतयुगी देवता बनाने का श्रेष्ठ कर्तव्य करना है, तुम्हें अभी बाप द्वारा अद्वेत मत मिल रही है"

प्रश्न:-सभी मनुष्य मात्र दुखी क्यों बने है-उसका मूल कारण क्या है?

उतर:-रावण ने सभी को श्रापित कर दिया है, इसलिए सभी दुखी बने है। बाप वर्सा देता, रावण श्राप देता। यह भी दुनिया नहीं जानती। बाप ने वर्सा दिया, तब तो भारतवासी इतने सुखी थे, स्वर्ग के मालिक बने, पूज्य बने। श्रापित होने से पुजारी बन जाते हैं।

ओम्शान्ति। बच्चे यहाँ मधुबन में आते हैं बापदादा के पास। हाल में जब आते हो, देखते हो पहले बहन भाई बैठते हैं फिर पीछे देखते हो बापदादा आया हुआ है तो बाप की याद आती है। तुम हो ब्राह्मण ब्राह्मणियां प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। ब्राह्मण और ब्राह्मणियां [illegible] तो बाप ब्रह्मा को जानते नहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो-बाप जब आते हैं तो ब्रह्मा विष्णु शंकर भी जरूर चाहिए। कहते ही हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। अब तीनों द्वारा तो नहीं बोलेंगे ना। यह बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करनी है। बेहद के बाप से जरूर स्वर्ग का वर्सा मिलती है। इसलिए सभी भक्त भगवान से क्या चाहते हैं? जीवनमुक्ति। अभी है जीवनबन्ध। सभी बाप को याद करते हैं कि आकर इस बंधन से मुक्त करो। अभी तुम बच्चे ही जानते हो कि बाबा आया हुआ है। कल्प2बाप आते हैं। पुकारते भी हैं तुम मात पिता..परन्तु उनका अर्थ तो कोई भी नहीं समझते। निराकार बाप के लिए समझ लेते हैं। गाते हैं परन्तु मिलता कुछ भी नहीं है। अभी तुम बच्चों को उनसे वर्सा मिलता है फिर कल्प बाद मिलेगा। बच्चे जानते है बाप आधाकल्प के लिए आकर वर्सा देते हैं और रावण फिर श्राप देते हैं। यह भी दुनिया नहीं जानती कि हम सभी श्रापित हैं, रावण का श्राप लगा हुआ है इसलिए सभी दुखी हैं। भारतवासी सभी भूल गये हैं कि लक्ष्मी नारायण का राज्य भारत में था। देवताओं के आगे माथा टेकते हैं, पूजा करते हैं परन्तु सतयुग कब था यह किसको पता नहीं। अब देखो लाखों वर्ष की आयु सिर्फ सतयुग की, फिर त्रेता की, द्वापर कलियुग की, उस हिसाब से मनुष्य कितने ढेर हो जाएं। सिर्फ सतयुग में ही मनुष्य ढेर हो जाएं। भारत की संख्या इस समय 80करोड़ कहते हैं। अगर सतयुग लाखों वर्ष का हो तो मनुष्य कितने होने चाहिए। पदमों की अन्दाज में हो जाएं। कोई भी मनुष्य की बुद्धि में नहीं बैठता। बाप बैठ समझाते हैं कि देखो गाया भी जाता है 33करोड़ देवतायें होते हैं। ऐसे थोड़ेही वह कोई लाखों वर्ष में हो सकते हैं। 33करोड देवतायें सतयुग त्रेता में कहते हैं, 2500 वर्ष में 33 करोड़ मनुष्य। बेसमझ मनुष्यों को समझाना पड़े ना। अभी तुम समझते हो कि बाबा हमको स्वच्छ बुद्धि बनाते हैं। रावण मलेच्छ बुद्धि बनाते हैं। मुख्य बात तो यह है सतयुग में हैं पवित्र। यहाँ हैं अपवित्र। यह भी किसको पता नहीं है कि रामराज्य कब से कब तक, रावण राज्य कब से कब तक होता है। समझते हैं यहाँ ही रामराज्य भी है, रावण राज्य भी है। अनेक मत मतान्तर हैं ना। जितने हैं मनुष्य उतनी हैं मतें। अभी यहाँ तुम बच्चों को एक अद्वेत मत मिलती है। बाप ही देते हैं। तुम अभी ब्रह्मा द्वारा देवता बन रहे हो। देवताओं की महिमा गाई जाती है-सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण..हैं तो वह भी मनुष्य, मनुष्य की महिमा गाते हैं क्यों? जरूर फर्क होगा ना। अभी तुम बच्चे भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो अच्छी रीति पढ़ते है तो फिर पढ़ाते भी हैं। अभी तुम बच्चे मनुष्य को देवता बनाने का कर्तव्य सीखते हो। कलियुगी मनुष्य को तुम सतयुगी देवता बनाते हो अर्थात् शान्तिधाम, ब्रह्माण्ड का और विश्व का मालिक बनाते हो। यह तो शान्तिधाम नहीं है ना। यहाँ तो कर्म जरूर करना पड़े। वह है स्वीट साइलेन्स होम। अभी तुम समझते हो हम आत्मायें स्वीट होम ब्रह्माण्ड के मालिक हैं। वहाँ दुख सुख से न्यारे रहते हैं। फिर सतयुग में विश्व के मालिक बनते हैं। अभी तुम बच्चे लायक बन रहे हो। एम आबजेक्ट एक्यूरेट

a) सामने खड़ी है। ऐसे नहीं कि राम सीता को सामने रखा है। नहीं। वह तो नामाक्स की एमआबजेक्ट है। वह कौन सामने रखेंगे। यह लक्ष्मी नारायण है फल पास। अब तुम हो योगबल वाले। वह हैं बाहुबल वाले। तुम भी हो युद्ध के मैदान पर। परन्तु तुम हो डबल अहिंसक। वह हैं हिंसक। हिंसा काम कटारी को कहा जाता है। सन्यासी भी समझते हैं यह हिंसा है। इसलिए पवित्र बनते हैं। परन्तु तुम्हारे सिवाए बाप के साथ प्रीत कोई की है नहीं। आशिक माशूक की प्रीत होती है ना-

PDF compressor

वह आत्मिक माशूक तो एक जन्म के गाये जाते हैं। तुम सभी हो मुझ माशूक के आत्मिक। भक्ति मार्ग में सब एक माशूक को याद करते आये हो। अब मैं कहता हूँ यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो और पहले ही याद करो तो फिर याद करने से ही तुम छूट जायेंगे। तत्पश्चात् मेरा याद भूल जाने की टक्कर ही नहीं रहेगी। दुख में सिमरण सब करते हैं। भक्ति मार्ग दुख का मार्ग है ना। यह है दुख। इनको स्वर्ग तो नहीं कहेंगे ना। वह आदमी जो धनवान है वह समझते हैं यह हमारे लिए तो यही स्वर्ग है। विमान आदि सब कुछ वैभव है, कितना अन्धश्रद्धा में रहते हैं। गाते भी हैं तुम मात पिता... परन्तु समझते कुछ नहीं। कौन से सत चैतन्य मिले यह जानते भी नहीं। बोलती तो आत्मा है ना। तुम आत्मायें समझती हो हमको सत चैतन्य मिले हैं। उसका नाम ही स्वर्ग सतधाम। स्वर्ग सभी को बहुत मीठा भी लगता है। तुम अभी जानते हो - स्वर्ग में हीरे जवाहरों के कितने महल थे। भक्ति मार्ग में भी कितना धन था। अन्धश्रद्धा। जो सोमनाथ का मन्दिर बनाया है। सबसे चित्र दो चार लाख की मत वाले थे वह सब लूटकर ले गये। कितना लूटकर ले गये। मुसलमानों ने जाकर मस्जिद आदि में लगाया। इतना अथाह धन था। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है कि बाप से फिर स्वर्ग के मालिक बनते हैं। सारे मन्दिरों के दरवाजों पर भी जड़ित लगी हुई होगी। नैनियों के मन्दिर भी ऐसे बने हुए होते हैं। अब हीरे आदि तो नहीं हैं ना जो पहले थे। अभी तुम जानते हो हम बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। न शिवबाबा अभी भी भारत में ही हैं। भारत को ही शिव भगवान से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। क्रिश्चियन भी कहते हैं क्राइस्ट से तीन हजार वर्ष पहले भारत हेविन था। राज्य कौन करते हैं। यह किसको पता नहीं है। काली यह समझते हैं भारत बहुत पुराना है। तो यही स्वर्ग था ना। बाप को कहते भी हैं हेविनली गॉड फादर हेविन स्थापन करने वाला फादर। जरूर फादर। आये होंगे। तब तुम स्वर्ग के मालिक बने होंगे। 5हजार वर्ष बाद स्वर्ग के मालिक बनते हो फिर आधाकल्प बाद रावण राज्य शुरू होता है। चित्रों में ऐसा क्लीयर कर दिखाओ जो लाखों वह भी बात बुद्धि से ही निकल जाए। लक्ष्मी नारायण कोई एक नहीं, इन्हों की डिनायस्टी होगी ना फिर उन्हों के बच्चे राजा बनते होंगे। राजायें तो बहुत बनते हैं ना। सारी मालायें बनी हुई है। माला को ही सिमरण करते हैं ना। जो बाप के मददगार बन बाप की सर्विस करते हैं उन्हों की ही माला बनती है। जो पूरा चक्र में आते, पूज्य पुजारी बनते हैं उन्हों का यह यादगार है। तुम पूज्य से पुजारी बनते हो तो फिर अपनी माला को बैठ पूजते हो। पहले माला पर हाथ लगाकर फिर माला टेकेंगे। पीछे माला को फेरना शुरू करते हैं। तुम भी सारा चक्र लगाते हो फिर शिवबाबा से वर्सा पाते हो। यह राज तुम ही जानते हो। मनुष्य तो कोई किसके नाम पर, कोई किसके नाम पर माला फेरते हैं। जानते कुछ भी नहीं। अभी तुमको माला का सारा ज्ञान है। और कोई को यह ज्ञान नहीं। क्रिश्चियन थोड़ेही समझते हैं। तुम्हारी माला फेरते हैं। यह माला है ही उन्हों की जो बाप के मददगार बन सर्विस करते हैं। इस समय सब पतित हैं, जो पावन थे वह सब यहाँ आते2 अब पतित बने हैं। फिर नम्बरवार सब जायेंगे। नम्बरवार आते हैं। नम्बरवार जाते हैं। कितनी समझने की बातें हैं। यह झाड़ है। कितने टालेटालियां मठ पंथ हैं। जो घर से रूठा वह जाकर अपनी संस्था बनाये। अभी यह सारा झाड़ खलास होना है फिर तुम्हारा फाउन्डेशन लगेगा। तुम हो इस झाड़ के फाउन्डेशन। उसमें सूर्यवंशी चन्द्रवंशी दोनों हैं। सतयुग त्रेता में जो राज्य करने वाले थे उन्हों का अभी धर्म ही नहीं है, सिर्फ चित्र हैं। जिनके चित्र हैं उन्हों की बायोग्राफी को तो जानना चाहिए ना। कह देते फलानी चीज लाखों वर्ष की पुरानी है। अब वास्तव में पुराने से पुराना है आदि सनातन देवी देवता धर्म। उनके आगे तो कोई चीज हो नहीं सकती। बाकी सब 2500 वर्ष की पुरानी चीजें होंगी। नीचे से खोदकर निकालते हैं ना। भक्ति मार्ग में जो पूजा करते हैं वह पुराने चित्र निकालते हैं क्योंकि अर्थक्वेक में सब मन्दिर आदि गिर पड़ते हैं फिर नये बनते हैं। हीरे सोने आदि की खानियां जो अभी खाली हो गई है। वह फिर वहाँ भरपूर हो जायेंगी। यह सब बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं ना। बाप ने वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी समझाई है। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होते हैं। फिर वृद्धि को पाते हैं। आत्मायें सब परमधाम से आती रहती हैं। आते2 झाड़ बढ़ता है। फिर जब झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाता है तो कहा जाता है राम गया रावण गया। जिनका

बहु परिवार है। अनेक धर्म हैं ना। हमारा परिवार कितना छोटा है। यह सिर्फ ब्राह्मणों का ही परिवार है। वह कितने अनेक धर्म है, जनसंख्या बतलाते हैं ना। वह सब है रावण सम्प्रदाय। यह सब जायेंगे। बाकी थोड़े ही रहेंगे। रावण सम्प्रदाय फिर आयेंगे नहीं, सब मुक्तिधाम में चले जायेंगे। बाकी तुम जो पढ़ते हो, यह नम्बरवार आयेंगे स्वर्ग में। अभी तुम बच्चों ने समझा है कैसे वह निराकार झाड़ है। यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ है। यह तुम्हारी बुद्धि में है। पढ़ाई पर ध्यान नहीं देंगे तो इम्तहान में नापास हो जायेंगे। पढ़ते और पढ़ाते रहेंगे तो खुशी भी रहेगी। अगर विकार में गिरा तो बाकी यह सब भूल जायेगा। आत्मा जब पवित्र सोना हो तब उसमें धारणा अच्छी हो। सोने का बर्तन होता है - पवित्र गोल्डन। अगर कोई पतित बना तो ज्ञान सुना नहीं सकता। अभी तुम सामने बैठे हो, जानते हो गॉड फादर शिवबाबा हम आत्माओं को पढ़ा रहे हैं। हम आत्मायें इन आरगन्स द्वारा सुन रही हैं। पढ़ाने वाला बाप है, ऐसी पाठशाला सारी दुनिया में कहाँ होगी। वह गॉड फादर है, टीचर भी है। सतगुरु भी है, सबको वापिस ले जायेंगे। अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। सम्मुख मुरली सुनने में कितना फर्क है। जैसे यह टेप मशीन निकली है। सबके पास एक दिन आ जायेगी। बच्चों के सुख के लिए बाप ऐसी चीजें बनवाता है। कोई बड़ी बात नहीं है ना। (शिवबाबा कहते हैं सांवल शाह तो हैं ना। गोरा था, अभी सांवरा बना है तब तो श्याम सुन्दर कहते हैं। तुम जानते हो हम सुन्दर थे अब श्याम बने हैं फिर सुन्दर बनेंगे। सिर्फ एक क्यों बनेगा। एक को सर्प ने डसा क्या? सर्प तो माया को कहा जाता है ना।

b) विकार में जाने से सांवरा बन जाते हैं। कितनी समझने की बातें हैं। मुख्य है त्रिमूर्ति का चित्र। बेहद का बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते यह अन्तिम जन्म फार मोई सेक मेरे सदके पवित्र बनो। बच्चों से यह भीख मांगते हैं। कमल फूल समान पवित्र बनो और मुझे याद करो तो यह जन्म भी पवित्र बनेंगे और याद में रहने से पास्ट के विकर्म भी विनाश होंगे। यह है योग अग्नि जिससे जन्म जन्मान्तर के पाप दग्ध होते हैं। सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आते हैं तो कला कम हो जाती है, खाद पड़ती जाती है। अब बाप कहते हैं सिर्फ मामेकम् याद करो। बाकी पानी की नदियों में स्नान करने से थोड़ेही पावन बनेंगे। पानी भी तत्व हैं ना। 5 तत्व कहे जाते हैं। यह नदियां कैसे पतित पावनी हो सकती हैं। नदियां तो सागर से निकलती हैं। पहले तो सागर पतित पावन होना चाहिए ना। अच्छा -

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- ॥1॥ विजय माला में आने के लिए बाप का मददगार बन सर्विस करनी है। एक माशूक के साथ सच्ची प्रीत रखनी है। एक को ही याद करना है।

॥2॥ अपनी एक्यूरेट एम आब्जेक्ट को सामने रख पूरा पुरूषार्थ करना है। डबल अहिंसक बन मनुष्य को देवता बनाने का श्रेष्ठ कर्तव्य करते रहना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CV

5.2.95 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम्हें बाप द्वारा जो अद्वैत मत मिल रही है, उस मत पर चलकर कलियुगी मनुष्यों को सतयुगी देवता बनाने का श्रेष्ठ कर्तव्य करना है"

प्रश्नः- सभी मनुष्य मात्र दुःखी क्यों बने हैं, उसका मूल कारण क्या है ?

उत्तरः- रावण ने सभी को श्रापित कर दिया है, इसलिए सभी दुःखी बने हैं। बाप वर्सा देता, रावण श्राप देता – यह भी दुनिया नहीं जानती। बाप ने वर्सा दिया तब तो भारतवासी इतने सुखी स्वर्ग के मालिक बने, पूज्य बनें। श्रापित होने से पुजारी बन जाते हैं।

ओम् शान्ति। बच्चे यहाँ मधुबन में आते हैं बापदादा के पास। हाल में जब आते हो, देखते हो पहले बहन-भाई बैठते हैं फिर पीछे देखते हो बापदादा आया हुआ है तो बाप की याद आती है। तुम प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे, ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ। वह ब्राह्मण तो ब्रह्मा बाप को जानते हीनहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो – बाप जब आते हैं तो ब्रह्मा-विष्णु-शंकर भी जरूर चाहिए। कहते ही हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। अब तीनों द्वारा तो नहीं बोलेंगे ना। यह बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करनी है। बेहद के बाप से जरूर स्वर्ग का वर्सा मिलता है। इसलिए सभी भक्त भगवान से क्या चाहते हैं ? जीवनमुक्ति। अभी है जीवनबन्ध। सभी बाप को याद करते हैं कि आकर इस बंधन से मुक्त करो। अभी तुम बच्चे हो जानते हो कि बाबा आया हुआ है। कल्प-कल्प बाप आते हैं। पुकारते भी हैं – तुम मात पिता... परन्तु इसका अर्थ तो कोई भी नहीं समझते। निराकार बाप के लिए समझ लेते हैं। गाते हैं परन्तु मिलता कुछ भी नहीं है। अभी तुम बच्चों को उनसे वर्सा मिलता है फिर कल्प बाद मिलेगा। बच्चे जानते हैं बाप आधाकल्प के लिए आकर वर्सा देते हैं और रावण फिर श्राप देते हैं। यह भी दुनिया नहीं जानती कि हम सभी श्रापित हैं। रावण का श्राप लगा हुआ है इसलिए सभी दुःखी हैं। भारतवासी सुखी थे। कल इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य भारत में था। देवताओं के आगे माथा टेकते हैं, पूजा करते हैं परन्तु सतयुग कब था, यह किसको पता नहीं। अब देखो लाखों वर्ष की आयु सिर्फ सतयुग की फिर त्रेता की, द्वापर-कलियुग की, उस हिसाब से मनुष्य कितने ढेर हो जाएं। सिर्फ सतयुग में ही ढेर मनुष्य हो जाएं। कोई भी मनुष्य की बुद्धि में नहीं बैठता है। बाप बैठ समझाते हैं कि देखो गाया भी जाता है 33 करोड़ देवतायें होते हैं। ऐसे थोड़ेही वह कोई लाखों वर्ष में हो सकते हैं। तो यह भी मनुष्यों को समझाना पड़े।

अभी तुम समझते हो कि बाबा हमको स्वच्छ बुद्धि बनाते हैं। रावण मलेच्छ बुद्धि बनाते हैं। मुख्य बात तो यह है। सतयुग में हैं पवित्र। यहाँ हैं अपवित्र। यह भी किसको पता नहीं है कि रामराज्य कब से कब तक ? रावण राज्य कब से कब तक होता है ? समझते हैं यहाँ ही राम राज्य भी है, रावण राज्य भी है। अनेक मत-मतान्तर हैं ना। जितने हैं मनुष्य, उतनी हैं मतें। अभी यहाँ तुम बच्चों को एक अद्वैत मत मिलती है जो बाप ही देते हैं। तुम अभी ब्रह्मा द्वारा देवता बन रहे हो। देवताओं की महिमा गाई जाती है – सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण... हैं तो वह भी मनुष्य, मनुष्य की महिमा गाते हैं क्यों ?

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जरूर फर्क होगा ना । अभी तुम बच्चे भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार मनुष्य को देवता बनाने का कर्तव्य सीखते हो । कलियुगी मनुष्य को तुम सतयुगी देवता बनाते हो अर्थात् शान्तिधाम, ब्रह्माण्ड का और विश्व का मालिक बनाते हो, यह तो शान्तिधाम नहीं है ना । यहाँ तो कर्म जरूर करना पड़े । वह है स्वीट साइलेन्स होम । अभी तुम समझते हो हम आत्मायें स्वीट होम, ब्रह्माण्ड के मालिक हैं । वहाँ दुःख-सुख से न्यारे रहते हैं । फिर सतयुग में विश्व के मालिक बनते हैं । अभी तुम बच्चे लायक बन रहे हो । एम
a) ऑब्जेक्ट एक्यूरेट सामने खड़ी है । तुम बच्चे हो योगबल वाले । वह हैं बाहुबल वाले । तुम भी हो युद्ध के मैदान पर, परन्तु तुम हो डबल अहिंसक । वह है हिंसक । हिंसा काम कटारी को कहा जाता है । सन्यासी भी समझते हैं यह हिंसा है इसलिए पवित्र बनते हैं । परन्तु तुम्हारे सिवाए बाप के साथ प्रीत कोई की है नहीं । आशिक माशूक की प्रीत होती है ना । वह आशिक माशूक तो एक जन्म के गाये जाते हैं । तुम सभी हो मुझ माशूक के आशिक । भक्तिमार्ग में मुझ एक माशूक को याद करते आये हो । अब मैं कहता हूँ यह अन्तिम जन्म सिर्फ पवित्र बनो और यथार्थ रीति याद करो तो फिर याद करने से ही तुम छूट जायेंगे । सतयुग में याद करने की दरकार ही नहीं रहेगी । दुःख में सिमरण सब करते हैं । भक्ति मार्ग दुःख का मार्ग है ना । यह है नर्क । इनको स्वर्ग तो नहीं कहेंगे ना । बड़े आदमी जो धनवान हैं वह समझते हैं हमारे लिए तो यहाँ ही स्वर्ग है । विमान आदि सब कुछ वैभव हैं, कितना अन्धश्रद्धा में रहत हैं । गाते भी हैं तुम मात पिता... परन्तु समझते कुछ नहीं । कौन से सुख घनेरे मिले — यह कोई भी नहीं जानते हैं । बोलती तो आत्मा है ना । तुम आत्मायें समझती हो हमको सुख घनेरे मिलने हैं । उसका नाम ही है — स्वर्ग, सुखधाम । स्वर्ग सभी को बहुत मीठा भी लगता है । तुम अभी जानते हो स्वर्ग में हीरे जवाहरों के कितने महल थे । भक्ति मार्ग में भी कितना अनगिनत धन था । जो सोमनाथ का मन्दिर बनाया है । एक-एक चित्र लाखों की कीमत वाले थे । वह सब कहाँ चले गये ? कितना लूटकर ले गये ! मुसलमानों ने जाए मस्जिद आदि में लगाया । इतना अथाह धन था । अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है हम बाप द्वारा फिर से स्वर्ग के मालिक बनते हैं । हमारे महल सोने के होंगे । दरवाजों पर भी जड़ित लगी हुई होगी । जैनियों के मन्दिर भी ऐसे बने हुए होते हैं । अब हीरे आदि तो नहीं हैं ना जो पहले थे । अभी तुम जानते हो हम बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं । शिवबाबा आते भी भारत में ही हैं । भारत को ही शिव भगवान से स्वर्ग का वर्सा मिलता है । क्रिश्चियन भी कहते हैं क्राइस्ट से 3 हज़ार वर्ष पहले भारत हेवन था । राज्य कौन करते थे ? यह किसको पता नहीं हैं । बाकी यह समझते हैं भारत बहुत पुराना है । तो यही स्वर्ग था ना । बाप को कहते भी हैं हेवनली गॉड फादर अर्थात् हेवन स्थापन करने वाला फादर । जरूर फादर आये होंगे, तब तुम स्वर्ग के मालिक बने होंगे । हर 5 हज़ार वर्ष बाद स्वर्ग के मालिक बनते हो फिर आधाकल्प बाद रावण राज्य शुरू होता है । चित्रों में ऐसा क्लीयर कर दिखाओ जो लाखों वर्ष की बात बुद्धि से ही निकल जाए । लक्ष्मी-नारायण कोई एक नहीं, इन्हों की डिनायस्टी होगी ना फिर उन्हों के बच्चे राजा बनते होंगे । राजायें तो बहुत बनते हैं ना । सारी माला बनी हुई है । माला को ही सिमरण करते हैं ना । जो बाप के मददगार बन बाप की सर्विस करते हैं उन्हों की ही माला बनती है । जो पूरा चक्र

PDF compressor

में आते, पूज्य पुजारी बनते हैं उन्हों का यह यादगार है। तुम पूज्य से पुजारी बनते हो तो फिर अपनी माला को बैठ पूजते हो। पहले माला पर हाथ लगाकर फिर माथा टेकेंगे। पीछे माला को फेरना शुरू करते हैं। तुम भी सारा चक्र लगाते हो फिर शिवबाबा से वर्सा पाते हो। यह राज़ तुम ही जानते हो। मनुष्य तो कोई किसके नाम पर, कोई किसके नाम पर माला फेरते हैं। जानते कुछ भी नहीं। अभी तुमको माला का सारा ज्ञान है, और कोई को यह ज्ञान नहीं। क्रिश्चियन थोड़ेही समझते हैं। तुम्हारी माला फेरते हैं। यह माला है ही उन्हों की जो बाप के मददगार बन सर्विस करते हैं। इस समय सब पतित हैं, जो पावन थे वह सब यहाँ आते-आते अब पतित बने हैं। फिर नम्बरवार सब जायेंगे। नम्बरवार आते हैं, नम्बरवार जाते हैं। कितनी समझने की बातें हैं। यह झाड़ है। कितने टाल-टालियां मठ पंथ हैं। अभी यह सारा झाड़ खलास होना है, फिर तुम्हारा फाउन्डेशन लगेगा। तुम हो इस झाड़ के फाउन्डेशन। उसमें सूर्यवंशी चन्द्रवंशी दोनों हैं। सतयुग-त्रेता में जो राज्य करने वाले थे, उन्हों का अभी धर्म ही नहीं हैं, सिर्फ चित्र हैं। जिनके चित्र हैं उन्हों की बायोग्राफी को तो जानना चाहिए ना। कह देते फलानी चीज लाखों वर्ष पुरानी है। अब वास्तव में पुराने ते पुराना है आदि सनातन देवी-देवता धर्म। उनके आगे तो कोई चीज़ हो नहीं सकती। बाकी सब 2500 वर्ष की पुरानी चीजें होंगी, नीचे से खोदकर निकालते हैं ना। भक्ति मार्ग में जो पूजा करते हैं वह पुराने चित्र निकालते हैं। क्योंकि अर्थक्वेक में सब मन्दिर आदि गिर पड़ते हैं फिर नये बनते हैं। हीरे सोने आदि की खानियां जो अभी खाली हो गई हैं वह फिर वहाँ भरतू हो जायेंगी। यह सब बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं ना। बाप ने वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी समझाई है। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होते हैं फिर वृद्धि को पाते हैं। आत्मायें सब परमधाम से आती रहती हैं। आते-आते झाड़ बढ़ता है। फिर जब झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाता है तो कहा जाता है राम गयो रावण गयो, जिनका बहु परिवार है। अनेक धर्म हैं ना। हमारा परिवार कितना छोटा है। यह सिर्फ ब्राह्मणों का ही परिवार है। वह कितने अनेक धर्म हैं, जनसंख्या बतलाते हैं ना। वह सब हैं रावण सम्प्रदाय। यह सब जायेंगे। बाकी थोड़े ही रहेंगे। रावण सम्प्रदाय फिर आयेंगे नहीं, सब मुक्तिधाम में चले जायेंगे। बाकी तुम जो पढ़ते हो वह नम्बरवार आयेंगे स्वर्ग में।

अभी तुम बच्चों ने समझा है कैसे वह निराकारी झाड़ है, यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ है। यह तुम्हारी बुद्धि में है। पढ़ाई पर ध्यान नहीं देंगे तो इम्तहान में नापास हो जायेंगे। पढ़ते और पढ़ाते रहेंगे तो खुशी भी रहेगी। अगर विकार में गिरा तो बाकी यह सब भूल जायेगा। आत्मा जब पवित्र सोना हो तब उसमें धारणा अच्छी हो। सोने का बर्तन होता है पवित्र गोल्डन। अगर कोई पतित बना तो ज्ञान सुना नहीं सकता। अभी तुम सामने बैठे हो, जानते हो गॉड फादर शिवबाबा हम आत्माओं को पढ़ा रहे हैं। हम आत्मायें इन आरगन्स द्वारा सुन रही हैं। पढ़ाने वाला बाप है, ऐसी पाठशाला सारी दुनिया में कहाँ होगी। वह गॉड फादर है, टीचर भी है, सतगुरु भी है, सबको वापिस ले जायेंगे। अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। सम्मुख मुरली सुनने में कितना फर्क है। जैसे यह टेप मशीन निकली है, सबके पास एक दिन आ जायेगी। बच्चों के सुख के लिए बाप ऐसी चीज़ें बनवाते हैं। कोई बड़ी बात नहीं है ना। यह सांवल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शाह है ना । पहले गोरा था अभी सांवरा बना है तब तो श्याम सुन्दर कहते हैं । तुम जानते हो हम सुन्दर थे अब श्याम बने हैं फिर सुन्दर बनेंगे । सिर्फ एक क्यों बनेगा ? एक को सर्प ने डसा क्या ? सर्प तो माया को कहा जाता है ना । विकार में जाने से सांवरा बन जाते हैं । कितनी समझने की बातें हैं। बेहद का बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते यह अन्तिम जन्म फार माई सेक (मेरे सदके) पवित्र बनो । बच्चों से यह भीख मांगते हैं । कमल फूल समान पवित्र बनो और मुझे याद करो तो यह जन्म भी पवित्र बनेंगे । और याद में रहने से पास्ट के विकर्म भी विनाश होंगे । यह है योग अग्नि, जिससे जन्म जन्मान्तर के पाप दग्ध होते हैं । सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आते हैं तो कला कम हो जाती है । खाद पड़ती जाती है । अब बाप कहते हैं सिर्फ मामेकम् याद करो । बाकी पानी की नदियों में स्नान करने से थोड़ेही पावन बनेंगे । पानी भी तत्व है ना । 5 तत्व कहे जाते हैं । यह नदियाँ कैसे पतित पावनी हो सकती हैं । नदियाँ तो सागर से निकलती हैं । पहले तो सागर पतित-पावन होना चाहिए ना । अच्छा !

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1. विजय माला में आने के लिए बाप का मददगार बन सर्विस करनी है । एक माशूक के साथ सच्ची प्रीत रखनी है । एक को ही याद करना है ।

2. अपनी एक्यूरेट एम ऑबजेक्ट को सामने रख पूरा पुरूषार्थ करना है । डबल अहिंसक बन मनुष्य को देवता बनाने का श्रेष्ठ कर्तव्य करते रहना है ।

वरदानः- सर्वगुण सम्पन्न बनने के साथ-साथ किसी एक विशेषता में विशेष प्रभावशाली भव

जैसे डॉक्टर्स जनरल बीमारियों की नॉलेज तो रखते ही हैं लेकिन साथ-साथ किसी बात की विशेष नॉलेज में नामीग्रामी हो जाते हैं, ऐसे आप बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न तो बनना ही है फिर भी एक विशेषता को विशेष रूप से अनुभव में लाते, सेवा में लाते आगे बढ़ते चलो । जैसे सरस्वती को विद्या की देवी, लक्ष्मी को धन की देवी कहकर पूजते हैं, ऐसे अपने में सर्वगुण, सर्वशक्तियाँ होते भी एक विशेषता में विशेष रिसर्च कर स्वयं को प्रभावशाली बनाओ ।

सलोगनः-

विकारों रूपी सांपों को सहजयोग की शैया बना दो तो सदा निश्चिंत रहेंगे ।

16.7.89 प्रात: क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" रिवाइज-कैसेट 69

"मीठे बच्चे- सर्विस समाचार सुनने, पढ़ने का भी तुम्हें शौक चाहिए, क्योंकि इससे उमंग-उत्साह बढ़ता है, सर्विस करने का संकल्प उठता है"

प्रश्न :-संगमयुग पर बाप तुम्हें सुख नहीं देते हैं लेकिन सुख का रास्ता बताते हैं क्यों?

उत्तर:-क्योंकि बाप के सब बच्चे हैं, अगर एक बच्चे को सुख दें दूसरे को न दें तो यह भी ठीक नहीं। लौकिक बाप से बच्चों को बराबर हिस्सा मिलता है, बेहद का बाप हिस्सा नहीं बाँटते सुख का रास्ता बताते हैं जो उस रास्ते पर चलते हैं, पुरुषार्थ करते हैं उन्हें ऊँच पद मिलता है। बच्चों को पुरुषार्थ करना है, सारा मदार पुरुषार्थ पर है। रावण भी दुख नहीं देता लेकिन दुख का रास्ता बताता है।

ओमशान्ति। बच्चे जानते हैं बाप मुरली बजाते हैं। सबके पास जाती है, और जो मुरली पढ़कर सर्विस करते हैं उन्हों का समाचार मैगजीन में आता है। अब बच्चे मैगजीन पढ़ते हैं वा नहीं, पढ़ेंगे तो सेन्टर्स के सर्विस समाचार का मालूम पड़ेगा, फलानी2 जगह ऐसी सर्विस हो रही है। जो पढ़ेंगे ही नहीं तो उनको कुछ भी समाचार का मालूम नहीं पड़ेगा और पुरुषार्थ भी नहीं करेंगे। सर्विस का समाचार सुनकर दिल में आता है मैं भी ऐसी सर्विस करूँ। मैगजीन से मालूम पड़ता है, हमारे भाई बहिन कितनी सर्विस करते हैं। यह तो बच्चे समझते हैं, जितनी सर्विस उतना ऊँच पद मिलेगा। इसलिए मैगजीन भी उत्साह दिलाती है सर्विस के लिए। यह कोई फालतू नहीं बनती है। फालतू वह समझते हैं जो खुद पढ़ते नहीं हैं। कोई कहते हम अक्षर नहीं जानते, अरे रामायण, भागवत, गीता आदि सुनने के लिए जाते हैं, यह भी सुननी चाहिए। नहीं तो सर्विस का उमंग नहीं बढ़ेगा। देहली में समाचार जाता है जो फिर मैगजीन में समाचार लिखते हैं, फलानी जगह यह सर्विस हुई। शौक हो तो किसको कहे वह पढ़कर सुनाये। बहुत सेन्टर्स पर ऐसे भी होगा जो मैगजीन नहीं पढ़ते होंगे। बहुत हैं जिनके पास तो सर्विस का नाम निशान नहीं रहता। तो पद भी ऐसा पायेंगे। यह तो समझते हैं राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें जो जितनी मेहनत करते हैं, उतना

a) पद पाते हैं। (पढ़ाई में अटेन्शन नहीं देंगे तो फेल हो जायेंगे। बाप समझाते हैं ऐसा नहीं कहेंगे- रामचन्द्र फेल हुआ, नहीं। कोई बच्चे फेल हुए जो जाकर रामचन्द्र भविष्य में बनते हैं। राम सीता त्रेता में थोड़ेही पढ़ते हैं जो कहें फेल हुए। यह भी समझने की बात है ना। कोई सुने रामचन्द्र फेल हुआ तो कहेंगे कहाँ पढ़ते थे? आगे जन्म में ऐसा पढ़कर यह पद पाया है तो सारा मदार है इस समय की पढ़ाई पर। जितना पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे उतना अपना ही फायदा है) बहुत बच्चे हैं जिनको मैगजीन पढ़ने का ख्याल भी नहीं आता है। पाई पैसे का पद पा लेंगे। वहाँ यह ख्यालात नहीं रहती कि इसने पुरुषार्थ नहीं किया है, तो यह पद मिला है। नहीं। कर्म-विकर्म की बातें सब यहाँ बुद्धि में हैं। कल्प के संगमयुग पर ही बाप समझाते हैं। जो नहीं समझते हैं- वह तो जैसे पत्थरबुद्धि हैं। तुम भी समझते हो हम तुच्छ बुद्धि थे फिर उसमें भी परसेन्टेज होती है। बाबा बच्चों को समझाते रहते हैं, अभी कलियुग है, इसमें दुख अपार होते हैं। यह2 दुख हैं। जो सेन्सीबुल होंगे वह झट समझ जायेंगे कि यह तो ठीक बोलते हैं। तुम भी जानते हो कल हम कितने दुखी थे, अपार दुखों के बीच थे। अभी फिर अपार सुखों के बीच में जा रहे हैं, यह है ही रावण राज्य कलियुग। यह भी तुम जानते हो, जो जानते हैं लेकिन औरों को नहीं समझाते हैं तो बाबा कहेगा कुछ नहीं जानते हैं। जानते हैं तब जबकि सर्विस करें। समाचार मैगजीन में आये। रोज प्रातःदिन बाबा बहुत सहज प्वाइंट्स भी सुनाते रहते हैं। वो लोग तो समझते कलियुग अजुन बच्चा, जब संगम समझें तब भेंट कर सकें- सतयुग और कलियुग में। कलियुग में अपार दुख है। सतयुग में अपार सुख हैं। दोनों अपार सुख दुख बच्चों को बाप दे रहे हैं। जो हम वर्णन कर रहे हैं। और कोई ऐसे समझा न सके। तुम नई बातें सुनाते हो और कोई तो यह पूछ न सके कि तुम स्वर्गवासी हो या नर्कवासी हो। तुम बच्चों में भी नम्बरवार हैं। इतनी प्वाइंट्स याद नहीं कर सकते हो। समझाने समय देह अभिमान आ जाता है। आत्मा ही सुनती है, धारण करती है। परन्तु अच्छे2 महारथी भी यह भूल जाते हैं। देह अभिमान में आकर बोलने लग पड़ते हैं, ऐसे सबका होता है। बाप तो कहते हैं सब पुरुषार्थी हैं। ऐसे नहीं कि आत्मा समझ बात करते हैं। नहीं। बाप आत्मा समझ ज्ञान देते हैं। बाकी जो भाई2 हैं, वह पुरुषार्थ कर रहे हैं- ऐसी अवस्था में ठहरने का

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

13-7-04 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – सर्विस समाचार सुनने, पढ़ने का भी तुम्हें शौक चाहिए, क्योंकि इससे उमंग-उत्साह बढ़ता है, सर्विस करने का संकल्प उठता है"

प्रश्न:- संगमयुग पर बाप तुम्हें सुख नहीं देते हैं लेकिन सुख का रास्ता बताते हैं – क्यों?
उत्तर:- क्योंकि बाप के सब बच्चे हैं, अगर एक बच्चे को सुख दें तो यह भी ठीक नहीं। लौकिक बाप से बच्चों को बराबर हिस्सा मिलता है, बेहद का बाप हिस्सा नहीं बाँटते, सुख का रास्ता बताते हैं। जो उस रास्ते पर चलते हैं, पुरूषार्थ करते हैं, उन्हें ऊंच पद मिलता है। बच्चों को पुरूषार्थ करना है, सारा मदार पुरूषार्थ पर है।

ओम् शान्ति। बच्चे जानते हैं बाप मुरली बजाते हैं। मुरली सबके पास जाती है और जो मुरली पढ़कर सर्विस करते हैं उन्हों का समाचार मैगज़ीन में आता है। अब जो बच्चे मैगज़ीन पढ़ते हैं, उन्हें सेन्टर्स के सर्विस समाचार का मालूम पड़ेगा--फलानी-फलानी जगह ऐसी सर्विस हो रही है। जो पढ़ेंगे ही नहीं तो उनको कुछ भी समाचार का मालूम नहीं पड़ेगा और पुरूषार्थ भी नहीं करेंगे। सर्विस का समाचार सुनकर दिल में आता है मैं भी ऐसी सर्विस करूँ। मैगज़ीन से मालूम पड़ता है, हमारे भाई-बहिन कितनी सर्विस करते हैं। यह तो बच्चे समझते हैं--जितनी सर्विस, उतना ऊंच पद मिलेगा। इसलिए मैगज़ीन भी उत्साह दिलाती है सर्विस के लिए। यह कोई फालतू नहीं बनती है। फालतू वह समझते हैं जो खुद पढ़ते नहीं हैं। कोई कहते हम अक्षर नहीं जानते, अरे रामायण, भागवत, गीता आदि सुनने के लिए जाते हैं, यह भी सुननी चाहिए। नहीं तो सर्विस का उमंग नहीं बढ़ेगा। फलानी जगह यह सर्विस हुई। शौक हो तो किसको कहें वह पढ़कर सुनाये। बहुत सेन्टर्स पर ऐसे भी होगा जो मैगज़ीन नहीं पढ़ते होंगे। बहुत हैं जिनके पास तो सर्विस का नाम-निशान भी नहीं रहता। तो पद भी ऐसा पायेंगे। यह तो समझते हैं राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें जो जितनी मेहनत करते हैं, उतना पद पाते हैं। पढ़ाई में अटेन्शन नहीं देंगे तो फेल हो जायेंगे। सारा मदार है इस समय की पढ़ाई पर। जितना पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे उतना अपना ही फ़ायदा है। बहुत बच्चे हैं जिनको मैगज़ीन पढ़ने का ख्याल भी नहीं आता है। वो पाई-पैसे का पद पा लेंगे। वहाँ यह ख्यालात नहीं रहती कि इसने पुरूषार्थ नहीं किया है तो यह पद मिला है। नहीं। कर्म-विकर्म की बातें सब यहाँ बुद्धि में हैं।

कल्प के संगमयुग पर ही बाप समझाते हैं। जो नहीं समझते हैं वह तो जैसे पत्थरबुद्धि हैं। तुम भी समझते हो हम तुच्छ बुद्धि थे फिर उसमें भी परसेन्टेज़ होती हैं। बाबा बच्चों को समझाते रहते हैं, अभी कलियुग है, इनमें अपार दु:ख होते हैं। यह-यह दु:ख हैं। जो सेन्सीबुल होंगे वह झट समझ जायेंगे कि यह तो ठीक बोलते हैं। तुम भी जानते हो कल हम कितने दु:खी थे, अपार दु:खों के बीच थे। अभी फिर अपार सुखों के बीच में जा रहे हैं। यह है ही रावण राज्य कलियुग--यह भी तुम जानते हो। जो जानते हैं लेकिन औरों को नहीं समझाते हैं तो बाबा कहेगा कुछ नहीं जानते हैं। जानते हैं तब कहें जब सर्विस करें, समाचार मैगज़ीन में आये। दिन-प्रतिदिन बाबा बहुत सहज प्वाइंट्स भी सुनाते रहते हैं। वो लोग तो समझते कलियुग अजुन

a)

बच्चा है, जब संगम समझें तब भेंट कर सकें—सतयुग और कलियुग में। कलियुग में अपार दुःख हैं, सतयुग में अपार सुख हैं। बोलो, अपार सुख हम बच्चों को बाप दे रहे हैं जो हम वर्णन कर रहे हैं। और कोई ऐसे समझा न सके। तुम नई बातें सुनाते हो और कोई तो यह पूछ न सके कि तुम स्वर्गवासी हो या नर्कवासी हो? तुम बच्चों में भी नम्बरवार हैं। इतनी प्वाइंट्स याद नहीं कर सकते हो। समझाने समय देह-अभिमान आ जाता है। आत्मा ही सुनती वा धारण करती है। परन्तु अच्छे-अच्छे महारथी भी यह भूल जाते हैं। देह-अभिमान में आकर बोलने लग पड़ते हैं, ऐसे सबका होता है। बाप तो कहते हैं सब पुरूषार्थी हैं। ऐसे नहीं कि आत्मा समझ नात करते हैं। नहीं, बाप आत्मा समझ ज्ञान देते हैं। बाकी जो भाई-भाई हैं, वह पुरूषार्थ कर रहे हैं—ऐसी अवस्था में ठहरने का। तो बच्चों को भी समझाना है, कलियुग में अपार दुःख हैं, सतयुग में अपार सुख हैं। अभी संगमयुग चल रहा है। बाप रास्ता बताते हैं, ऐसे नहीं बाप सुख देते हैं। सुख का रास्ता बताते हैं। रावण भी दुःख देते नहीं हैं। दुःख का उल्टा रास्ता बताते हैं। बाप न दुःख देते हैं, न सुख देते हैं, सुख का रास्ता बताते हैं। फिर जो जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना सुख मिलेगा। सुख देते नहीं हैं। बाप की श्रीमत पर चलने से सुख पाते हैं। बाप तो सिर्फ रास्ता बताते हैं, रावण से दुःख का रास्ता मिलता है। अगर बाप देता हो तो फिर सबको एक जैसा वर्सा मिलना चाहिए। जैसे लौकिक बाप भी वर्सा बांटते हैं। यहाँ तो जो जैसा पुरूषार्थ करे। बाप रास्ता बहुत सहज बताते हैं। ऐसे-ऐसे करेंगे तो इतना ऊंच पद पायेंगे। बच्चों को पुरूषार्थ करना होता है—हम सबसे जास्ती पद पायें। पढ़ना है। ऐसे नहीं यह भल ऊंच पद पायें, मैं बैठा रहूँ। नहीं, पुरूषार्थ फर्स्ट। ड्रामा अनुसार पुरूषार्थ जरूर करना होता है। कोई तीव्र पुरूषार्थ करते हैं, कोई डल। सारा पुरूषार्थ पर मदार है। बाप ने तो रास्ता बताया है—मुझे याद करो। जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। ड्रामा पर छोड़ नहीं देना है। यह तो समझ की बात है।

वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। तो जरूर जो पार्ट बजाया है वही बजाना पड़े। सब धर्म फिर से अपने समय पर आयेंगे। समझो क्रिश्चियन अब 100 करोड़ हैं फिर इतने ही पार्ट बजाने आयेंगे। न आत्मा विनाश होती, न उनका पार्ट कभी विनाश हो सकता है। यह समझने की बातें हैं। जो समझते हैं तो समझायेंगे भी जरूर। धन दिये धन ना खुटे। धारणा होती रहेगी, औरों को भी साहूकार बनाते रहेंगे लेकिन तकदीर में नहीं है तो फिर अपने को भी बेवश समझते हैं। टीचर कहेंगे—नहीं बोल सकते तो तुम्हारी तकदीर में पाई-पैसे का पद है। तकदीर में नहीं तो तदबीर क्या कर सकते। यह है बेहद की पाठशाला। हर एक टीचर की सब्जेक्ट अपनी होती है। बाप के पढ़ाने का तरीका बाप ही जाने और तुम बच्चे जानो, और कोई नहीं जान सकते। तुम बच्चे कितनी कोशिश करते हो तो भी जब कोई समझें। बुद्धि में बैठता ही नहीं है। जितना नज़दीक होते जायेंगे, देखने में आता है होशियार होते जायेंगे। अब म्युज़ियम, रूहानी कॉलेज आदि भी खोलते हैं। तुम्हारा तो नाम ही न्यारा है रूहानी युनिवर्सिटी। गवर्मेन्ट भी देखेगी। बोलो तुम्हारी है जिस्मानी युनिवर्सिटी, यह है रूहानी। रूह पढ़ती है। सारे 84 के चक्र में एक ही बार रूहानी बाप आकर रूहानी बच्चों को पढ़ाते हैं। ड्रामा (फिल्म)

तुम देखेंगे फिर 3 घण्टे बाद हूबहू रिपीट होगा। यह भी 5 हज़ार वर्ष का चक्र हूबहू रिपीट होता है। यह तुम बच्चे जानते हो। वह तो सिर्फ भक्ति में शास्त्रों को ही राइट समझते हैं। तुमको तो कोई शास्त्र नहीं है। बाप बैठ समझाते हैं, बाप कोई शास्त्र पढ़ा है क्या। वह तो गीता पढ़कर सुनायेंगे। पढ़ा हुआ तो माँ के पेट से नहीं निकलेगा। बेहद के बाप का पार्ट है पढ़ाने का। अपना परिचय देते हैं। दुनिया को तो पता ही नहीं। गाते भी हैं--बाप ज्ञान का सागर है। कृष्ण के लिए नहीं कहते ज्ञान का सागर है। यह लक्ष्मी-नारायण ज्ञान सागर हैं क्या? नहीं। यही वन्डर है, हम ब्राह्मण हों यह ज्ञान सुनाते हैं श्रीमत पर। तुम समझाते हो इस हिसाब से हम ब्राह्मण ही प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान ठहरे। अनेक बार बने थे, फिर होंगे। मनुष्यों की समझ में जब आयेगा तब मानेंगे। तुम जानते हो कल्प-कल्प हम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान एडाप्टेड बच्चे बनते हैं। जो समझते हैं वह निश्चयबुद्धि भी हो जाते हैं। ब्राह्मण बनने बिगर देवता कैसे बनेंगे। हर एक की बुद्धि पर है। स्कूल में ऐसा होता है--कोई तो स्कॉलरशिप लेते, कोई फेल हो पड़ते हैं। फिर नयेसिर पढ़ना पड़े। बाप कहते हैं विकार में गिरे तो की कमाई चट हुई, फिर बुद्धि में बैठेगा नहीं। अन्दर खाता रहेगा।

तुम समझते हो इस जन्म में जो पाप किये हैं, उनका तो सबको पता है। बाकी आगे जन्मों में क्या किया है वह तो याद नहीं है। पाप किये जरूर हैं। जो पुण्य आत्मा थे वही फिर पाप आत्मा बनते हैं। हिसाब-किताब बाप बैठ समझाते हैं। बहुत बच्चे हैं, भूल जाते हैं, पढ़ते नहीं हैं। अगर पढ़ें तो जरूर पढ़ायें भी। कोई डल बुद्धि होशियार बुद्धि बन जाते, कितनी बड़ी पढ़ाई है। इस बाप की पढ़ाई से ही सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी घराना बनने का है। वह इस जन्म में ही पढ़कर और मर्तबा पा लेते हैं। तुम तो जानते हो इस पढ़ाई का पद फिर नई दुनिया में मिलना है। वह कोई दूर नहीं है। जैसे कपड़ा बदला जाता है ऐसे ही पुरानी दुनिया को छोड़ जाना है नई दुनिया में। विनाश भी होगा जरूर। अब तुम नई दुनिया के बन रहे हो। फिर यह पुराना चोला छोड़ जाना है। नम्बरवार राजधानी स्थापन हो रही है। जो अच्छी रीति पढ़ेंगे वही पहले स्वर्ग में आयेंगे। बाकी पीछे आयेंगे। स्वर्ग में थोड़ेही आ सकेंगे। स्वर्ग में जो दास-दासियां होंगे वह भी दिल पर चढ़े हुए होंगे। ऐसे नहीं कि सब आ जायेंगे। अब रूहानी कॉलेज आदि खोलते रहते हैं, सब आकर पुरूषार्थ करेंगे। जो पढ़ाई में ऊंचे तीखे जायेंगे, वह ऊंच पद पायेंगे। डल बुद्धि कम पद पायेंगे। हो सकता है, आगे चल डल बुद्धि भी अच्छा पुरूषार्थ करने लग पड़े। कोई समझदार बुद्धि नीचे भी चले जाते हैं। पुरूषार्थ से समझा जाता है। यह सारा ड्रामा चल रहा है। आत्मा शरीर धारण कर यहाँ पार्ट बजाती है, नया चोला धारण कर नया पार्ट बजाती है। कब क्या, कब क्या बनती है। संस्कार आत्मा में होते हैं। ज्ञान बाहर में ज़रा भी किसी के पास नहीं है। बाप जब आकर पढ़ायें तब ही ज्ञान मिले। टीचर ही नहीं तो ज्ञान कहाँ से आये। वह हैं भक्त। भक्ति में अपार दु:ख हैं, मीरा को भल साक्षात्कार हुआ परन्तु सुख थोड़ेही था। क्या बीमार नहीं पड़ी होगी। वहाँ तो कोई प्रकार के दु:ख की बात होती ही नहीं। यहाँ अपार दु:ख हैं, वहाँ अपार सुख हैं। यहाँ सब दु:खी होते हैं, राजाओं को भी दु:ख है ना, नाम ही है दु:खधाम। वह है सुखधाम। सम्पूर्ण दु:ख और सम्पूर्ण सुख का यह है संगमयुग। सतयुग

में सम्पूर्ण सुख, कलियुग में सम्पूर्ण दु:ख। दु:ख की जो वैराइटी है सब वृद्धि को पाती रहती है। आगे चल कितना दु:ख होता रहेगा। अथाह दु:ख के पहाड़ गिरेंगे।

वह लोग तो तुम्हें बोलने का टाइम बहुत थोड़ा देते हैं। दो मिनट देवें तो भी समझाओ, सतयुग में अपार सुख थे जो बाप देते हैं। रावण से अपार दु:ख मिलते हैं। अब बाप कहते हैं काम पर जीत पहनो तो जगत जीत बनेंगे। इस ज्ञान का विनाश नहीं होता है। थोड़ा भी सुना तो स्वर्ग में आयेंगे। प्रजा तो बहुत बनती है। कहाँ राजा, कहाँ रंक। हर एक की बुद्धि अपनी-अपनी है। जो समझकर औरों को समझाते हैं, वही अच्छा पद पाते हैं। यह स्कूल भी मोस्ट अनकॉमन है। भगवान् आकर पढ़ाते हैं। श्रीकृष्ण तो फिर भी दैवी गुणों वाला देवता है। बाप कहते हैं मैं दैवी गुणों और आसुरी गुणों से न्यारा हूँ। मैं तुम्हारा बाप आता हूँ पढ़ाने। रूहानी नॉलेज सुप्रीम रूह ही देता है। गीता का ज्ञान कोई देहधारी मनुष्य वा देवता ने नहीं दिया। विष्णु देवता नम: कहते, तो कृष्ण कौन? देवता कृष्ण ही विष्णु है—यह कोई जानते नहीं। तुम्हारे में भी भूल जाते हैं। खुद पूरा समझा हुआ हो तो औरों को भी समझाये। सर्विस करके सबूत ले आये तब समझें कि सर्विस की। इसलिए बाबा कहते हैं लम्बे-चौड़े समाचार न लिखो, वह फलाना आने वाला है, ऐसे कहकर गया है..... यह लिखने की दरकार नहीं है। कम लिखना होता है। देखो, आया, ठहरता है? समझकर और सर्विस करने लगे तब समाचार लिखो। कोई-कोई शो करके समाचार देते हैं। बाबा को हर बात की रिज़ल्ट चाहिए। ऐसे तो बहुत आते हैं बाबा के पास, फिर चले जाते हैं, उनसे क्या फ़ायदा। उनको बाबा क्या करे। न उन्हें फ़ायदा, न तुम्हें। तुम्हारे मिशन की वृद्धि तो हुई नहीं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. किसी भी बात में वेवश नहीं होना है। स्वयं में ज्ञान को धारण कर दान करना है। औरों की भी तकदीर जगानी है।

२. किसी से भी बात करते समय स्वयं को आत्मा समझ आत्मा से बात करनी है। ज़रा भी देह-अभिमान न आये। बाप से जो अपार सुख मिले हैं, वो दूसरों को बांटने हैं।

वरदान:- ब्रह्मा बाप समान लक्ष्य को लक्षण में लाने वाले प्रत्यक्ष सैम्पल बन सर्व के सहयोगी भव

जैसे ब्रह्मा बाप ने स्वयं को निमित्त एक्जैम्पुल बनाया, सदा यह लक्ष्य लक्षण में लाया - जो ओटे सो अर्जुन, इसी से नम्बरवन बनें। तो ऐसे फालो फादर करो। कर्म द्वारा सदा स्वयं जीवन में गुण मूर्त बन, प्रत्यक्ष सैम्पुल बन औरों को सहज गुण धारण करने का सहयोग दो - इसको कहते हैं गुणदान। दान का अर्थ ही है सहयोग देना। कोई भी आत्मा अब सुनने के बजाए प्रत्यक्ष प्रमाण देखना चाहती है। तो पहले स्वयं को गुणमूर्त बनाओ।

स्लोगन:-

सर्व की निराशाओं का अंधकार दूर करने वाले ही ज्ञान दीपक हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

1.7.94 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाबा आया है तुम्हें ज्ञान रत्न देने, मुरली सुनाने, इसलिए तुम्हें कभी भी मुरली मिस नहीं करनी है, मुरली से प्यार नहीं तो बाप से प्यार नहीं"

प्रश्नः- सबसे अच्छा कैरेक्टर कौन-सा है, जो तुम इस नॉलेज से धारण करते हो ?

उत्तरः- वाइसलेस बनना यह सबसे अच्छा कैरेक्टर है । तुम्हें नॉलेज मिलती है कि यह सारी दुनिया विशश है, विशश माना ही कैरेक्टरलेस । बाप आया है वाइसलेस वर्ल्ड स्थापन करने । वाइसलेस देवतायें कैरेक्टर वाले हैं । कैरेक्टर सुधरते हैं बाप की याद से ।

ओम् शान्ति । बच्चे तुम्हें पढ़ाई कभी मिस नहीं करना है । अगर पढ़ाई मिस की तो पद से भी मिस हो जायेंगे । मीठे-मीठे रूहानी बच्चे कहाँ बैठे हैं ? गॉडली स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी में । बच्चों को यह भी पता है कि हर 5 हज़ार वर्ष बाद हम इस युनिवर्सिटी में दाखिल होते हैं । यह भी तुम बच्चे जानते हो – बाप, बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है । वैसे गुरु की मूर्ति अलग, बाप की अलग, टीचर की अलग होती है । यह मूर्ति एक ही है । परन्तु हैं तीनों ही अर्थात् बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरु भी बनते हैं । मुनष्य की लाइफ में यह 3 मुख्य हैं । बाप, टीचर, गुरु वही है । तीनों पार्ट खुद बजाते हैं । एक-एक बात समझने से तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए और ऐसी त्रिमूर्ति युनिवर्सिटी में बहुतों को ले आकर दाखिल करना चाहिए । जिस-जिस युनिवर्सिटी में पढ़ाई अच्छी होती है तो वहाँ पढ़ने वाले दूसरों को कहते हैं – इस युनिवर्सिटी में पढ़ो, यहाँ नॉलेज अच्छी मिलती है और कैरेक्टर्स भी सुधरते हैं । तुम बच्चों को भी दूसरों को ले आना है । मातायें माताओं को, पुरूष पुरूषों को समझायें । देखो यह बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है । ऐसे समझाते हैं या नहीं, वह तो हर एक अपनी दिल से पूछे । कभी अपने मित्र सम्बन्धियों, सखियों को समझाते हैं कि यह सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम गुरु भी है ? बाप सुप्रीम देवी-देवता बनाने वाला है, बाप आप समान बाप नहीं बनाते । बाकी उनकी जो महिमा है, उसमें आपसमान बनाते हैं । बाप का काम है परवरिश करना और प्यार करना । ऐसे बाप को जरूर याद करना है । उनकी भेंट और कोई से हो न सके । भल कहते हैं गुरु से शान्ति मिलती है । परन्तु यह तो विश्व का मालिक बनाते हैं । ऐसे भी कोई नहीं कहेंगे कि हम सब आत्माओं का बाप हूँ । यह किसको पता नहीं है कि सभी आत्माओं का बाप कौन हो सकता है । एक बेहद का बाप, जिसे हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चियन आदि सब गॉड फादर जरूर कहते हैं । बुद्धि जरूर निराकार तरफ जाती है । यह किसने कहा ? आत्मा ने कहा गॉड फादर । तो जरूर मिलना चाहिए । फादर सिर्फ कहे और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता ? सारी दुनिया के बच्चों को जो आश है वह पूर्ण करते हैं । सबकी कामना रहती है कि हम शान्तिधाम जायें । आत्मा को घर याद पड़ता है । आत्मा रावण राज्य में थक गई है । अंग्रेजी में भी कहते हैं ओ गॉड फादर, लिबरेट करो । तमोप्रधान बनते-बनते पार्ट बजाते-बजाते शान्तिधाम चले जायेंगे । फिर पहले सुखधाम में आते हैं । ऐसे नहीं, पहले-पहले आकर विशश बनते हैं । नहीं । बाप

समझाते है यह है वेश्यालय, रावण राज्य । इसे रौरव नर्क कहा जाता है ।

a) तुमने गरूड़ पुराण देखा नहीं है । बिगर शास्त्र पढ़े, बिगर देखे भी तुम समझ सकते हो । भारत में वा इस दुनिया में कितने शास्त्र, कितनी पढ़ाई की पुस्तकें हैं । शास्त्र आदि सब खत्म हो जायेंगे । बाप तुमको यह जो सौगात देते हैं, वह कभी जलने वाली नहीं है । यह है धारण करने की । जो काम की चीज़ नहीं होती उसको जलाया जाता है । ज्ञान कोई शास्त्र नहीं जो जलाया जाए । तुमको नॉलेज मिलती है, जिससे तुम 21 जन्म पद पाते हो । ऐसे नहीं कि इनके शास्त्र हैं जो जला देंगे । नहीं, यह ज्ञान आपेही प्रायः लोप हो जाता है । कोई पढ़ने की किताब आदि नहीं है । ज्ञान-विज्ञान भवन नाम भी है । परन्तु उनको पता नहीं कि यह नाम क्यों पड़ा है, इसका अर्थ क्या है ? ज्ञान-विज्ञान की महिमा कितनी भारी है ! ज्ञान अर्थात् सृष्टि चक्र की नॉलेज जो अभी तुम धारण करते हो । विज्ञान माना शान्तिधाम । ज्ञान से भी तुम परे जाते हो । ज्ञान में पढ़ाई के आधार से फिर तुम राज्य करते हो । तुम समझते हो हम आत्माओं को बाप आकर पढ़ाते हैं । नहीं तो भगवानुवाच गुम हो जाए । भगवान् कोई शास्त्र थोड़ेही पढ़कर आते हैं । भगवान् में तो ज्ञान-विज्ञान दोनों है । जो जैसा होता है, वैसा बनाते हैं । यह हैं बहुत सूक्ष्म बातें । ज्ञान से विज्ञान बहुत सूक्ष्म है । ज्ञान से भी परे जाना है । ज्ञान स्थूल है, हम पढ़ाते हैं, आवाज़ होता है ना । विज्ञान सूक्ष्म है इसमें आवाज़ से परे शान्ति में जाना होता है । जिस शान्ति के लिए ही भटकते हैं । सन्यासियों के पास जाते हैं । परन्तु जो चीज़ बाप के पास है वह दूसरे कोई से मिल नहीं सकती है । हठयोग करते, खड्डे में बैठ जाते परन्तु इसमें शान्ति मिल न सके । इसमें तकलीफ़ की कोई बात नहीं । पढ़ाई भी बहुत सहज है । 7 रोज का कोर्स उठाया जाता है । 7 रोज़ का कोर्स करके फिर भल कहाँ भी बाहर चला जाए, ऐसे और कोई जिस्मानी कालेज में कर न सके । तुम्हारे लिए कोर्स ही यह 7 रोज़ का है । सब समझाया जाता है । परन्तु 7 रोज़ कोई दे न सके । बुद्धियोग कहाँ न कहाँ चला जाता है । तुम तो भट्ठी में पड़े, कोई का शक्ल नही देखते थे । कोई से बात नहीं करते थे । बाहर भी नहीं निकलते थे । तपस्या के लिए सागर के कण्ठे पर जाकर बैठते थे याद में । उस समय यह चक्र नहीं समझा था । यह पढ़ाई नहीं समझते थे । पहले-पहले तो बाबा से योग चाहिए । बाप का परिचय चाहिए । फिर पीछे टीचर चाहिए । पहले बाप के साथ योग सीखना पड़े । क्योंकि यह बाप तो है अशरीरी, दूसरा तो कोई मानते ही नहीं । कहते हैं गॉड फादर ओमनीं प्रेजन्ट है । बस सर्वव्यापी का ज्ञान ही चला आता है । अभी तुम्हारी बुद्धि में वह बात नहीं है । तुम तो स्टूडेन्ट हो । बाप कहते हैं अपना धन्धा आदि भी भल करो परन्तु क्लास जरूर पढ़ो । गृहस्थ व्यवहार में भल रहो । अगर कहते स्कूल में नहीं जाना है तो फिर बाप भी क्या करे । अरे, भगवान् पढ़ाते हैं, भगवान् भगवती बनाने ! भगवानुवाच — मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ । तो क्या भगवान् से राजयोग नहीं सीखेंगे ? ऐसे कौन ठहर सकेंगे ! इसलिए ही तुम्हारा भागना हुआ । विष से बचने के लिए भागे । तुम आकर भट्ठी में पड़े, जो कोई देख न सके, मिल न सके । कोई को देखते ही नहीं थे । तो फिर दिल किससे लगायें । यह बच्चों को निश्चय भी है कि भगवान् पढ़ाते हैं । फिर भी बहाना करते हैं, बीमारी है, यह काम है । बाप तो बहुत शिफ्ट दे सकते हैं । आजकल स्कूल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

में शिफ्ट बहुत देते हैं। यहाँ कोई जास्ती पढ़ाई तो है नहीं। सिर्फ अल्फ और बे को समझने लिए बुद्धि अच्छी चाहिए। अल्फ और बे — यह याद करो, सभी को बताओ। त्रिमूर्ति तो बहुत बनाते हैं परन्तु ऊपर में शिवबाबा दिखलाते नहीं। यह थोड़ेही समझते हैं गीता का भगवान् शिव है, जिस द्वारा यह नालेज लेकर विष्णु बनते हैं। राजयोग है ना। अभी यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म, कितनी सहज समझानी है। किताब आदि तो कुछ भी हाथ में नहीं है। सिर्फ एक बैज हो, उसमें भी सिर्फ त्रिमूर्ति का चित्र हो। जिस पर समझाना है कि बाप कैसे ब्रह्मा द्वारा पढ़ाई पढ़ाकर विष्णु समान बनाते हैं।

कई समझते हैं हम राधे जैसा बनें। कलष तो माताओं को मिलता है। गोया राधे के बहुत जन्मों के अन्त में उनको कलष मिलता है। यह राज़ भी बाप ही समझा सकते हैं। और कोई मनुष्य मात्र जानते नहीं। तुम्हारे पास सेन्टर पर कितने आते हैं। कोई तो एक रोज़ आते फिर 4 रोज नहीं। तो पूछना चाहिए इतने रोज़ तुम क्या करते थे? बाप को याद करते थे? स्वदर्शन चक्र फिराते थे? जो बहुत देरी से आते हैं उनसे लिखकर भी पूछना चाहिए। कई बदली होकर जाते है फिर भी कोई सेन्टर का तो जरूर है, उनको मन्त्र मिला हुआ है — बाप को याद करना है और चक्र को फिराना है। बाप ने तो बहुत सहज बात बताई है। अक्षर तो दो हैं — मनमनाभव, मुझे याद करो और वर्से को याद करो। इसमें सारा चक्र आ जाता है। जब कोई शरीर छोड़ते हैं तो कहते हैं फलाना स्वर्ग गया। परन्तु स्वर्ग क्या है, किसको पता नहीं है। तुम अभी समझते हो वहाँ तो राजाई है। ऊंच से लेकर नींच तक, साहूकार से लेकर गरीब तक सब सुखी होते हैं। यहाँ है दुःखी दुनिया। वह है सुखी दुनिया। बाप समझाते तो बहुत अच्छा हैं। भल कोई दुकानदार हो वा क्या भी हो, पढ़ाई के लिए बहाना देना अच्छा नहीं लगता है। नहीं आते हैं तो उनसे पूछना है, तुम कितना बाप को याद करते हो? स्वदर्शन चक्र फिराते हो? खाओ पियो, घूमो फिरो — उसकी कोई मना नहीं है। इसके लिए भी टाइम निकालो। औरों का भी कल्याण करना है। समझो कोई का कपड़े साफ करने का काम है, बहुत लोग आते हैं। भल मुसलमान है वा पारसी है, हिन्दू है, बोलो तुम स्थूल कपड़े धुलाते हो परन्तु यह जो तुम्हारा शरीर है, यह तो पुराना मैला वस्त्र है, आत्मा भी तमोप्रधान हैं, उनको सतोप्रधान, स्वच्छ बनाना है। यह सारी दुनिया तमोप्रधान, पतित कलियुगी पुरानी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए लक्ष्य है ना। अब करो न करो, समझो न समझो, तुम्हारी मर्जी। तुम आत्मा हो ना। आत्मा जरूर पवित्र होनी चाहिए। अभी तो तुम्हारी आत्मा इम्प्योर हो गई है। आत्मा और शरीर दोनों मैले हैं। उनको साफ करने के लिए तुम बाप को याद करो तो गैरन्टी है तुम्हारी सोल एकदम 100% पवित्र सोना बन जायेगी। फिर जेवर भी अच्छा बनेगा। मानो न मानो, तुम्हारी मर्जी। यह भी कितनी सर्विस हुई। डॉक्टर्स पास जाओ, कालेजों में जाओ, बड़ों-बड़ों को जाकर समझाओ कि कैरेक्टर बहुत अच्छा होना चाहिए। यहाँ तो सब हैं कैरेक्टरलेस। बाप कहते हैं वाइसलेस बनना है। वाइसलेस दुनिया थी ना। अभी विशश है अर्थात् कैरेक्टरलेस है। कैरेक्टर बहुत खराब हो गये हैं। वाइसलेस बनने के बिना सुधरेंगे नहीं। यहाँ मनुष्य हैं ही कामी। अभी विशश दुनिया से वाइसलेस वर्ल्ड एक बाप ही स्थापन करते हैं। बाकी पुरानी दुनिया विनाश हो जायेगी। यह चक्र है ना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इस गोले में समझानी बहुत अच्छी है। यह वाइसलेस वर्ल्ड थी, जहाँ देवी-देवता राज्य करते थे। अभी वो कहाँ गया? आत्मा तो विनाश होती नहीं, एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। देवी-देवताओं ने भी 84 जन्म लिये हैं। अभी तुम सयाने बने हो। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। अभी यह पुरानी दुनिया कितनी गन्दी है, तुम फील करते हो बाबा जो कहते हैं वह तो बरोबर ठीक है। वहाँ तो है ही पवित्र दुनिया। यह पवित्र दुनिया न होने कारण अपने पर देवता के बदले हिन्दू नाम रख दिया है। हिन्दूस्तान में रहने वाले हिन्दू देवता हैं स्वर्ग में। अभी तुम इस चक्र को समझ गये हो। जो जो सेन्सीबुल हैं वह अच्छी रीति समझते हैं तो जैसे बाप समझाते हैं ऐसे फिर बैठ रिपीट करना चाहिए। मुख्य-मुख्य अक्षर नोट करते जाओ। फिर सुनाओ, बाप ने यह-यह पॉइंट सुनाई है। बोलो, मैं तो गीता का ज्ञान सुनाता हूँ। यह गीता का ही युग है। 4 युग हैं, यह तो सब जानते हैं। यह है लीप युग। इस संगम युग का किसको भी पता नहीं, समझते हैं पुरूषोत्तम युग। परन्तु कैसे, कब, क्यों पुरूषोत्तम युग है, यह किसको भी पता नहीं। शिव जयन्ती भी है। उनके बादु चाहिए कृष्ण जयन्ती। वह मेले-मलाखड़े की बात अलग है, जयन्ती सिर्फ उन्हों की मनाई जाती है। शिवजयन्ती फिर राम जयन्ती, कृष्ण जयन्ती और किसकी जयन्ती? जगत अम्बा, जगत पिता की थोड़ेही जयन्ती मनाते हैं। नम्बरवार आते हैं ना। अभी तुमको यह सारी नॉलेज मिलती है। अच्छा!

b)

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1. *हमारा बाप, सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सतगुरु है — यह बात सबको सुनानी है। अल्फ और बे की पढ़ाई पढ़ानी है।*
2. *ज्ञान अर्थात् सृष्टि चक्र की नॉलेज को धारण कर स्वदर्शन चक्रधारी बनना है और विज्ञान अर्थात् आवाज़ से परे शान्ति में जाना है। 7 रोज का कोर्स लेकर फिर कहां भी रहते पढ़ाई करनी है।*

वरदानः- सर्व सम्बन्धों का रस एक बाप से लेने वाले नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप भव

रोज़ अमृतवेले यह स्मृति में लाओ कि सर्व सम्बन्धों का सुख बापदादा से लेकर औरों को भी दान देना है। हर संबंध का सुख लो, सर्व सुखों के अधिकारी बन औरों को भी बनाओ। जो भी काम हो तो पहले साकार साथी याद न आये, बाप याद आये, ऐसे सच्चे साथी का सदा साथ लो, एक बाप दूसरा न कोई — इस स्थिति का अनुभव करो तो सहज ही नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बन जायेंगे।

स्लोगन —

स्मृति को श्रेष्ठ बनाओ तो स्थिति स्वतः श्रेष्ठ हो जायेगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

22-7-04 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाबा आया है तुम्हें ज्ञान रत्न देने, मुरली सुनाने, इसलिए तुम्हें कभी भी मुरली मिस नहीं करनी है, मुरली से प्यार नहीं तो बाप से प्यार नहीं"

प्रश्न:- सबसे अच्छा कैरेक्टर कौन-सा है, जो तुम इस नॉलेज से धारण करते हो?
उत्तर:- वाइसलेस बनना यह सबसे अच्छा कैरेक्टर है। तुम्हें नॉलेज मिलती है कि यह सारी दुनिया विशश है, विशश माना ही कैरेक्टरलेस। बाप आया है वाइसलेस वर्ल्ड स्थापन करने। वाइसलेस देवतायें कैरेक्टर वाले हैं। कैरेक्टर सुधरते हैं बाप की याद से।

ओम् शान्ति। बच्चे तुम्हें पढ़ाई कभी मिस नहीं करना है। अगर पढ़ाई मिस की तो पद से भी मिस हो जायेंगे। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे कहाँ बैठे हैं? गॉडली स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी में। बच्चों को यह भी पता है कि हर 5 हज़ार वर्ष बाद हम इस युनिवर्सिटी में दाखिल होते हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो–बाप, बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है। वैसे गुरू की मूर्ति अलग, बाप की अलग, टीचर की अलग होती है। यह मूर्ति एक ही है। परन्तु हैं तीनों ही अर्थात् बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरू भी बनते हैं। मनुष्य की लाइफ में यह 3 मुख्य हैं। बाप, टीचर, गुरू वही है। तीनों पार्ट खुद बजाते हैं। एक-एक बात समझने से तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए और ऐसी त्रिमूर्ति युनिवर्सिटी में बहुतों को ले आकर दाखिल करना चाहिए। जिस-जिस युनिवर्सिटी में पढ़ाई अच्छी होती है तो वहाँ पढ़ने वाले दूसरों को कहते हैं–इस युनिवर्सिटी में पढ़ो, यहाँ नॉलेज अच्छी मिलती है और कैरेक्टर्स भी सुधरते हैं। तुम बच्चों को भी दूसरों को ले आना है। मातायें माताओं को, पुरूष पुरूषों का समझायें। देखो यह बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है। ऐसे समझाते हैं वा नहीं, वह तो हर एक अपनी दिल से पूछे। कभी अपने मित्र सम्बन्धियों, सखियों को समझाते हैं कि यह सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम गुरू भी है? बाप सुप्रीम देवी-देवता बनाने वाला है, बाप आप समान बाप नहीं बनाते। बाकी उनकी जो महिमा है, उसमें आपसमान बनाते हैं। बाप का काम है परवरिश करना और प्यार करना। ऐसे बाप को जरूर याद करना है। उनकी भेंट और कोई से हो न सके। भल कहते हैं गुरू से शान्ति मिलती है। परन्तु यह तो विश्व का मालिक बनाते हैं। ऐसे भी कोई नहीं कहेंगे कि हम सब आत्माओं का बाप हूँ। यह किसको पता नहीं है कि सभी आत्माओं का बाप कौन हो सकता है। एक बेहद का बाप, जिसे हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चियन आदि सब गॉड फादर जरूर कहते हैं। बुद्धि जरूर निराकार तरफ जाती है। यह किसने कहा? आत्मा ने कहा गॉड फादर। तो जरूर मिलना चाहिए। फादर सिर्फ कहे और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता? सारी दुनिया के बच्चों की जो आश है वह पूर्ण करते हैं। सबकी कामना रहती है कि हम शान्तिधाम जायें। आत्मा को घर याद पड़ता है। आत्मा रावण राज्य में थक गई है। अंग्रेजी में भी कहते हैं ओ गॉड फादर, लिबरेट करो। तमोप्रधान बनते-बनते पार्ट बजाते-बजाते शान्तिधाम चले जायेंगे। फिर पहले सुखधाम में आते हैं। ऐसे नहीं, पहले-पहले

आकर विशश बनते हैं। नहीं। बाप समझाते हैं यह है वेश्यालय, रावण राज्य। इसे रौरव नर्क कहा जाता है।

a) भारत में वा इस दुनिया में कितने शास्त्र, कितनी पढ़ाई की पुस्तके हैं, वह सब खत्म हो जायेंगे। बाप तुमको यह जो सौगात देते हैं, वह कभी जलने वाली नहीं है। यह है धारण करने की। जो काम की चीज़ नहीं होती उसको जलाया जाता है। ज्ञान कोई शास्त्र नहीं जो जलाया जाए। तुमको नॉलेज मिलती है, जिससे तुम 21 जन्म पद पाते हो। ऐसे नहीं कि इनके शास्त्र हैं जो जला देंगे। नहीं, यह ज्ञान आपेही प्राय:लोप हो जाता है। कोई पढ़ने की किताब आदि नहीं है। ज्ञान-विज्ञान भवन नाम भी है। परन्तु उनको पता नहीं कि यह नाम क्यों पड़ा है, इसका अर्थ क्या है? ज्ञान-विज्ञान की महिमा कितनी भारी है! ज्ञान अर्थात् सृष्टि चक्र की नॉलेज जो अभी तुम धारण करते हो। विज्ञान माना शान्तिधाम। ज्ञान से भी तुम परे जाते हो। ज्ञान में पढ़ाई के आधार से फिर तुम राज्य करते हो। तुम समझते हो हम आत्माओं को बाप आकर पढ़ाते हैं। नहीं तो भगवानुवाच गुम हो जाए। भगवान् कोई शास्त्र थोड़ेही पढ़कर आते हैं। भगवान् में तो ज्ञान-विज्ञान दोनों हैं। जो जैसा होता है, वैसा बनाते हैं। यह हैं बहुत सूक्ष्म बातें। ज्ञान से विज्ञान बहुत सूक्ष्म है। ज्ञान से भी परे जाना है। ज्ञान स्थूल है, हम पढ़ाते हैं, आवाज़ होता है ना। विज्ञान सूक्ष्म है इसमें आवाज़ से परे शान्ति में जाना होता है। जिस शान्ति के लिए ही भटकते हैं। सन्यासियों के पास जाते हैं। परन्तु जो चीज़ बाप के पास है वह दूसरे कोई से मिल नहीं सकती है। हठयोग करते, खड्डे में बैठ जाते परन्तु इससे कोई शान्ति मिल न सके, यहाँ तो तकलीफ़ की कोई बात नहीं। पढ़ाई भी बहुत सहज है। 7 रोज़ का कोर्स उठाया जाता है। 7 रोज़ का कोर्स करके फिर भल कहाँ भी बाहर चला जाए, ऐसे और कोई जिस्मानी कालेज में कर न सके। तुम्हारे लिए कोर्स ही यह 7 रोज़ का है। सब समझाया जाता है। परन्तु 7 रोज़ कोई दे न सके। बुद्धियोग कहाँ न कहाँ चला जाता है। तुम तो भट्ठी में पड़े, कोई की शक्ल नही देखते थे। कोई से बात नहीं करते थे। बाहर भी नहीं निकलते थे। तपस्या के लिए सागर के कण्ठे पर जाकर बैठते थे याद में। उस समय यह चक्र नहीं समझा था। यह पढ़ाई नहीं समझते थे। पहले-पहले तो बाबा से योग चाहिए। बाप का परिचय चाहिए। फिर पीछे टीचर चाहिए। पहले तो बाप के साथ योग कैसे लगायें, यह भी सीखना पड़े क्योंकि यह बाप है अशरीरी, दूसरे तो कोई मानते ही नहीं। कहते हैं गॉड फादर ओमनी प्रेजन्ट है। बस सर्वव्यापी का ज्ञान ही चला आता है। अभी तुम्हारी बुद्धि में वह बात नहीं है। तुम तो स्टूडेन्ट हो। बाप कहते हैं अपना धन्धा आदि भी भल करो परन्तु क्लास जरूर पढ़ो। गृहस्थ व्यवहार में भल रहो। अगर कहते स्कूल में नहीं जाना है तो फिर बाप भी क्या करे। अरे, भगवान् पढ़ाते हैं, भगवान् भगवती बनाने! भगवानुवाच—मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। तो क्या भगवान् से राजयोग नहीं सीखेंगे? ऐसे कौन ठहर सकेंगे! इसलिए ही तुम्हारा भागना हुआ। विष से बचने के लिए भागे। तुम आकर भट्ठी में पड़े, जो कोई देख न सके, मिल न सके। कोई को देखते ही नहीं थे। तो फिर दिल किससे लगायें। यह बच्चों को निश्चय भी है कि भगवान्

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पढ़ाते हैं। फिर भी बहाना करते हैं, बीमारी है, यह काम है। बाप तो बहुत शिफ्ट दे सकते हैं। आजकल स्कूल में शिफ्ट बहुत देते हैं। यहाँ कोई जास्ती पढ़ाई तो है नहीं। सिर्फ अल्फ और बे को समझने लिए बुद्धि अच्छी चाहिए। अल्फ और बे--यह याद करो, सभी को बताओ। त्रिमूर्ति तो बहुत बनाते हैं परन्तु ऊपर में शिवबाबा दिखलाते नहीं। यह थोड़ेही समझते हैं गीता का भगवान् शिव है, जिस द्वारा यह नॉलेज लेकर विष्णु बनते हैं। राजयोग है ना। अभी यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म, कितनी सहज समझानी है। किताब आदि तो कुछ भी हाथ में नहीं है। सिर्फ एक बैज हो, उसमें भी सिर्फ त्रिमूर्ति का चित्र हो। जिस पर समझाना है कि बाप कैसे ब्रह्मा द्वारा पढ़ाई पढ़ाकर विष्णु समान बनाते हैं।

कई समझते हैं हम राधे जैसा बनें। कलष तो माताओं को मिलता है। गोया राधे के बहुत जन्मों के अन्त में उनको कलष मिलता है। यह राज़ भी बाप ही समझा सकते हैं। और कोई मनुष्य मात्र जानते नहीं। तुम्हारे पास सेन्टर पर कितने आते हैं। कोई तो एक रोज़ आते फिर 4 रोज़ नहीं। तो पूछना चाहिए इतने रोज़ तुम क्या करते थे? बाप को याद करते थे? स्वदर्शन चक्र फिराते थे? जो बहुत देरी से आते हैं उनसे लिखकर भी पूछना चाहिए। कई बदली होकर जाते हैं फिर भी कोई सेन्टर का तो जरूर है, उनको मन्त्र मिला हुआ है--बाप को याद करना है और चक्र को फिराना है। बाप ने तो बहुत सहज बात बताई है। अक्षर ही दो हैं--मनमनाभव, मुझे याद करो और वर्से को याद करो। इसमें सारा चक्र आ जाता है। जब कोई शरीर छोड़ते हैं तो कहते हैं फलाना स्वर्ग गया। परन्तु स्वर्ग क्या है, किसको पता नहीं है। तुम अभी समझते हो वहाँ तो राजाई है। ऊंच से लेकर नीच तक, साहूकार से लेकर गरीब तक सब सुखी होते हैं। यहाँ है दुःखी दुनिया। वह है सुखी दुनिया। बाप समझाते तो बहुत अच्छा हैं। भल कोई दुकानदार हो वा क्या भी हो, पढ़ाई के लिए बहाना देना अच्छा नहीं लगता है। नहीं आते हैं तो उनसे पूछना है, तुम कितना बाप को याद करते हो? स्वदर्शन चक्र फिराते हो? खाओ पियो, घूमो फिरो--उसकी कोई मना नहीं है। इसके लिए भी टाइम निकालो। औरों का भी कल्याण करना है। समझो कोई का कपड़े साफ करने का काम है, बहुत लोग आते हैं। भल मुसलमान है वा पारसी है, हिन्दू है, बोलो तुम स्थूल कपड़े धुलाते हो परन्तु यह जो तुम्हारा शरीर है, यह तो पुराना मैला वस्त्र है, आत्मा भी तमोप्रधान हैं, उनको सतोप्रधान, स्वच्छ बनाना है। यह सारी दुनिया तमोप्रधान, पतित कलियुगी पुरानी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए लक्ष्य है ना। अब करो न करो, समझो न समझो, तुम्हारी मर्जी। तुम आत्मा हो ना। आत्मा जरूर पवित्र होनी चाहिए। अभी तो तुम्हारी आत्मा इमप्योर हो गई है। आत्मा और शरीर दोनों मैले हैं। उनको साफ करने के लिए तुम बाप को याद करो तो गैरन्टी है तुम्हारी सोल एकदम 100 प्रतिशत पवित्र सोना बन जायेगी। फिर जेवर भी अच्छा बनेगा। मानो न मानो, तुम्हारी मर्जी। यह भी कितनी सर्विस हुई। डॉक्टर्स पास जाओ, कालेजों में जाओ, बड़ों-बड़ों को जाकर समझाओ कि कैरेक्टर बहुत अच्छा होना चाहिए। यहाँ तो सब हैं कैरेक्टरलेस। बाप कहते हैं वाइसलेस बनना है। वाइसलेस दुनिया थी ना। अभी विशश है अर्थात् कैरेक्टरलेस है। कैरेक्टर बहुत

This document was created for web optimization using a watermarked evaluation copy of PDF Compressor

खराब हो गये हैं। वाइसलेस बनने के बिना सुधरेंगे नहीं। यहाँ मनुष्य हैं ही कामी। अभी विशश दुनिया से वाइसलेस वर्ल्ड एक बाप ही स्थापन करते हैं। बाकी पुरानी दुनिया विनाश हो जायेगी। यह चक्र है ना। इस गोले में समझानी बहुत अच्छी है। यह वाइसलेस वर्ल्ड थी, जहाँ देवी-देवता राज्य करते थे। अभी वो कहां गये? आत्मा तो विनाश होती नहीं, एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। देवी-देवताओं ने भी 84 जन्म लिये हैं। अभी तुम सयाने बने हो। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। अभी यह पुरानी दुनिया कितनी गन्दी है, तुम फील करते हो बाबा जो कहते हैं वह तो बरोबर ठीक है। वहाँ तो है ही पवित्र दुनिया। यह पवित्र दुनिया न होने कारण अपने पर देवता के बदले हिन्दू नाम रख दिया है। हिन्दूस्तान में रहने वाले हिन्दू कह देते हैं, देवतायें हैं स्वर्ग में। अभी तुम इस चक्र को समझ गये हो। जो जो सेन्सीबुल हैं वह अच्छी रीति समझते हैं तो जैसे बाप समझाते हैं ऐसे फिर बैठ रिपीट करना चाहिए। मुख्य-मुख्य अक्षर नोट करते जाओ। फिर सुनाओ, बाप ने यह-यह प्वाइंट सुनाई है। बोलो, मैं तो गीता का ज्ञान सुनाता हूँ। यह गीता का ही युग है। 4 युग हैं, यह तो सब जानते हैं। यह है लीप युग। इस संगमयुग का किसको भी पता नहीं हैं, तुम जानते हो यह पुरूषोत्तम संगम युग है। मनुष्य शिव जयन्ती भी मनाते हैं परन्तु वह कब आये, क्या किया D) यह जानते नहीं। शिव जयन्ती के बाद है कृष्ण जयन्ती फिर राम जयन्ती। जगत अम्बा, जगत पिता की जयन्ती तो कोई मनाते नहीं। सब नम्बरवार आते हैं ना। अभी तुमको यह सारी नॉलेज मिलती है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. हमारा बाप, सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सतगुरू है – यह बात सबको सुनानी है। अल्फ और बे की पढ़ाई पढ़ानी है।

२. ज्ञान अर्थात् सृष्टि चक्र की नॉलेज को धारण कर स्वदर्शन चक्रधारी बनना है और विज्ञान अर्थात् आवाज से परे शान्ति में जाना है। 7 रोज का कोर्स लेकर फिर कहां भी रहते पढ़ाई करनी है।

वरदान:- इस कल्याणकारी युग में सर्व का कल्याण करने वाले प्रकृतिजीत मायाजीत भव

संगमयुग को कल्याणकारी युग कहा जाता है इस युग में सदा ये स्वमान याद रहे कि मैं कल्याणकारी आत्मा हूँ, मेरा कर्तव्य है पहले स्व का कल्याण करना फिर सर्व का कल्याण करना। मनुष्यात्मायें तो क्या हम प्रकृति का भी कल्याण करने वाले हैं इसलिए प्रकृतिजीत, मायाजीत कहलाते हैं। जब आत्मा पुरुष प्रकृतिजीत बन जाती है, तो प्रकृति भी सुखदाई बन जाती है। प्रकृति वा माया की हलचल में आ नहीं सकते। उन्हों पर अकल्याण के वायुमण्डल का प्रभाव पड़ नहीं सकता।

स्लोगन:-

एक दूसरे के विचारों को सम्मान दो तो माननीय आत्मा बन जायेंगे।

भविष्य को जानने की युक्तियां अ.वा. नं. 37

9.11.69

"दीपावली के शुभ दिवस पर प्राणप्रिय अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य"

बापदादा एक-एक दीपक को एक काल (समय) की दृष्टि से देख रहे हैं या तीनों कालों की? बाप तो त्रिकालदर्शी है वा दादा भी त्रिकालदर्शी है? आप भी त्रिकालदर्शी हो या बन रहे हो? अगर त्रिकालदर्शी हो तो अपने भविष्य को देखते हो व जानते हो? जानते हो मैं क्या बनूंगा? पाण्डव सेना में अपना भविष्य जानते हो या स्पष्ट है कि क्या बनोगे और कौनसी राजधानी में? ल०ना० भी किस नम्बर में? (हरेक ने अपना विचार बताया) जैसे आप आगे बढ़ते जायेंगे वैसे अपना भविष्य नाम-रूप-देश-काल यह चारों ही स्पष्ट होते जायेंगे कि किस देश में राज्य करना है किस नाम से, किस रूप से और किस समय, पहले राजधानी में भी क्या बनेंगे। दूसरी राजधानी में क्या बनेंगे। यह पूरी जन्मपत्री एक-एक को अपने अन्दर स्पष्ट होगी। बापदादा अब भी किसी को देखते हैं तो तीनों कालों को देखते हैं। पहले क्या था अब क्या है फिर भविष्य में क्या बनने वाले हैं। तो एक-एक दीप में यह तीनों काल देखते हैं। आप दो काल तो स्पष्ट जानते हो। पहले क्या थे और अब क्या हैं लेकिन भविष्य में क्या होना है, उसको जितना-जितना योगयुक्त होंगे उतना भविष्य भी स्पष्ट हो जाएगा। जैसे वर्तमान स्पष्ट है। वर्तमान में कब भी संकल्प नहीं उठता है कि हैं या नहीं हैं। ना मालूम क्या हैं यह कब संकल्प नहीं उठेगा। इसी रीति से भविष्य भी स्पष्ट होगा। ऐसा स्पष्ट नशा हर एक को बुद्धि में नम्बरवार आता जाएगा। जैसे साकार रूप में मां-बाप दोनों को अपना भविष्य स्पष्ट था। नाम भी, रूप भी स्पष्ट, देश भी स्पष्ट और काल भी स्पष्ट था। इतना स्पष्ट है कि किस सम्बन्ध में आयेंगे? वा सम्बन्ध भी स्पष्ट किस रूप में सामने आयेगा। अभी दिल में थोड़ा बहुत किस-किस को आ सकता है। लेकिन कुछ समय बाद ऐसे ही निश्चय बुद्धि होकर कहेंगे कि यह होना ही है। अभी अगर आप कहेंगे भी तो दूसरे निश्चय करें या न करें। लेकिन थोड़े समय में आपकी चलन, आपकी तदबीर जो है वह आपके

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है–कहां तक हम समानता में समीप आये हैं ? जितना-जितना समानता में समीप होंगे उतना ही समझो कर्मातीत अवस्था के समीप पहुंचेंगे। यही समानता का मीटर है। अपनी कर्मातीत अवस्था परखना है। सिर्फ स्नेह रखने से भी सम्पूर्ण नहीं बनेंगे। स्नेह के साथ-साथ शक्ति भी होगी तो खुद सम्पूर्ण बन औरों को भी सम्पूर्ण बनायेंगे। क्योंकि शक्ति से वह संस्कार भर जाते हैं। तो अब स्नेह के साथ शक्ति भी भरनी है।

सभी के दिलों पर विजय किन गुणों से पहन सकते हो? सभी को सन्तुष्ट करना। बाप में यह विशेष गुण था। वही फालो करना है कमला
a) तुम किस लिस्ट में हो ? तुम थुवन की लिस्ट में हो या आलराउन्डर की लिस्ट में हो ? एक है हद की लिस्ट, दूसरी है बेहद की लिस्ट। आलराउन्डर और एवररेडी। इसी लिस्ट में मालूम है क्या करना होता है? एक सेकेण्ड में तैयार। संकल्पों को भी एक सेकेण्ड में बन्द करना है। मिलिट्री वालों का हर समय बिस्तरा तैयार रहता है। यह संकल्पों का बिस्तरा भी बन्द करना है। बिस्तरा भी एवररेडी रहना चाहिए। एवररेडी बनने वालों का संकल्पों का बिस्तरा तैयार रहना चाहिए। कोई भी परिस्थिति हो उसका सामना करने के लिए पेटी बिस्तरा तैयार हो। अच्छा।

रुहानी बच्चो! तुम आत्माओं को वाणी से परे अपने घर जाने के लिए पुरुषार्थ करना है। इसलिए इस पुरानी दुनिया में रहते देह और देह के सम्बन्धों से उपरामचित होना है। पतित दुनिया में रहते हुए बाप पवित्र बनने की शक्ति देते हैं। पुरुषार्थ करके तुम को सदा पवित्र बनना है।

बच्चे! सदैव गुणग्राहक बनना है। स्तुति-निन्दा, लाभ-हानि, जय-पराजय सभी में सन्तुष्ट होकर चलना है और रहमदिल बनना है। अच्छा।

भविष्य को जानने की युक्तियां

"दीपावली के शुभ दिवस पर प्राणप्रिय अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य"

बापदादा एक-एक दीपक को एक काल (समय) की दृष्टि से देख रहे हैं या तीनों कालों की ? बाप तो त्रिकालदर्शी हैं । वा दादा भी त्रिकालदर्शी हैं ? आप भी त्रिकालदर्शी हो या बन रहे हो ? अगर त्रिकालदर्शी हो तो अपने भविष्य को देखते वा जानते हो ? जानते हो, मैं क्यां बनूंगा ? पाण्डव सेना में अपना भविष्य जानते हो ? यह स्पष्ट है कि क्या बनोगे और कौनसी राजधानी में ? लक्ष्मी-नारायण भी किस नम्बर में ? (हरेक ने अपना विचार बताया) जैसे आप आगे बढ़ते जायेंगे वैसे अपना भविष्य नाम, रूप, देश, काल – यह चारों ही स्पष्ट होते जायेंगे कि किस देश में राज्य करना है, किस नाम से, किस रूप से और किस समय । पहले राजधानी में भी क्या बनेंगे, दूसरी राजधानी में क्या बनेंगे – यह पूरी जन्मपत्री एक-एक को अपने अन्दर स्पष्ट होगी । बापदादा जब भी किसी को देखते हैं तो तीनों कालों को देखते हैं – पहले क्या था, अब क्या है, फिर भविष्य में क्या बनने वाले हैं । तो एक-एक दीपक में यह तीनों काल देखते हैं । आप दो काल तो स्पष्ट जानते हो – पहले क्या थे और अब क्या हैं । लेकिन भविष्य में क्या होना है – उसको जितना-जितना योगयुक्त होंगे उतना भविष्य भी स्पष्ट जान जायेंगे । जैसे वर्तमान स्पष्ट है, वर्तमान में कभी भी संकल्प नहीं उठता है कि है या नहीं है । ना मालूम क्या है – यह कभी संकल्प नहीं उठेगा । इसी रीति से भविष्य भी स्पष्ट होगा । ऐसा स्पष्ट नशा हर एक की बुद्धि में नम्बरवार आता जायेगा । जैसे साकार रूप में मां-बाप दोनों को अपना भविष्य स्पष्ट था – नाम भी, रूप भी स्पष्ट, देश भी स्पष्ट और काल भी स्पष्ट था । इतना स्पष्ट है कि किस सम्बन्ध में आयेंगे वा सम्बन्ध भी स्पष्ट किस रूप में सामने आयेगा ? अभी दिल में थोड़ा-बहुत किस-किस को आ सकता है । लेकिन कुछ समय बाद ऐसे ही निश्चयबुद्धि होकर कहेंगे कि यह होना ही है । अभी अगर आप कहेंगे भी तो दूसरे निश्चय करें या न करें । लेकिन थोड़े समय में आपकी चलन,

आपकी तदबीर जो है वह आपके भविष्य तस्वीर को प्रसिद्ध करेगी। अब तदबीर और भविष्य में कुछ फर्क है। लेकिन जैसे-जैसे समय और आपका पुरुषार्थ समान होता जायेगा, तो फिर कोई को संकल्प नहीं उठेगा।

आप सभी ने दीपमाला मनाई। दीपमाला पर क्या करते हैं? एक दीप से अनेक दीप जगाते हैं। तो अनेकों का एक के साथ लगन लगता है, यही दीपमाला है। अगर एक-एक दीपक की एक दीपक के साथ लगन है – तो यही दीपमाला है। दीपक में क्या है? अग्नि। तो लगन होगी तो अग्नि भी होगी। लगन नहीं तो अग्नि भी नहीं। यही देखना है कि हम दीपक लगन लगाकर अग्नि बने हैं? दीपक कितने प्रकार के होते है, जो दुनिया में भी प्रसिद्ध हैं? (हरेक ने अपना-अपना विचार सुनाया) एक है अंधियारे को मिटाकर रोशनी करने वाला मिट्टी का स्थूल दीपक और दूसरा है आत्मा का दीपक, तीसरा है कुल का दीपक और चौथा कौन सा है? आशाओं का दीपक कहते हैं ना। बाप को बच्चों में आशा रहती है। तो चौथा है आशाओं का दीपक। यह चार प्रकार के दीपक गाये जाते हैं। अब इन चार दीपकों में से हरेक ने कितने दीपक जगाये हैं? बापदादा की आशायें जो बच्चों में रहती हैं – वह दीपक जगाया है? मिट्टी के दीपक तो कई जन्म जगाये हैं। आत्मा का दीपक जगा है? यह चारों प्रकार के दीपक जब जग जाते हैं तब समझो दीपमाला मनाई। ऐसा कोई कर्म न हो जो कुल का दीपक बुझ जाये। ऐसी कोई चलन न हो जो बापदादा बच्चों में आशाओं का दीपक जगाते वह बुझ जाये। एकरस और अटल-अडोल। यह सभी दीपक जग रहे हैं? जिसका दीपक खुद जगा हुआ होगा वह औरों का दीपक जगाने बिगर रह नहीं सकता। बापदादा की बच्चों में मुख्य आशायें कौनसी रहती हैं? बापदादा की हर एक बच्चे में यही आशा रहती है कि एक-एक बच्चा पहले नम्बर में जाये अर्थात् हरेक विजयी रत्न बने। विजयी रत्न की निशानियां क्या होंगी? जो आप सभी ने सुनाया वह तो जो सुना है वही बोला। इसलिए ठीक ही है। जो विजयी होगा उनके लक्षण तो आप सभी ने सुनाये, लेकिन साथ-साथ विजयी उनको कहा जाता है – जो खुद तो विजय प्राप्त किया हुआ हो लेकिन औरों को भी अपने से आगे विजयी बनाये। जैसे बापदादा बच्चों को अपने से

भी आगे रखते थे ना ! वैसे ही जो विजयी रत्न होंगे उनकी विजय की निशानी यह है कि वे अपने संग का रंग सभी को लगायेंगें । जो भी सामने आये वह विजयी बनकर ही निकले । ऐसे विजयी रत्न विजय-माला के किस नम्बर में आते हैं? खुद तो विजयी बने हो लेकिन और भी आपके संग के रंग से विजयी बन जायें । यही सर्विस रही हुई है । ऐसे नहीं कि कोटों में कोई ही विजयी बनेंगे । लेकिन जो जैसा होता है वैसा ही बनाता है । ऐसे विजयी रत्न जो अनेकों को विजयी बना सकें, वही माला के मुख्य मणके हैं । तो विजयी की निशानी है आप समान विजयी बनाना । अभी यह सर्विस रही हुई है । अनेकों को विजयी बनाना है, सिर्फ खुद को नहीं बनाना है । दीपमाला में पूरी दीपमाला जगी हुई होती है । जब दीपमाला कहा जाता है, तो अनेक जगे हुए दीपकों की माला हरेक ने गले में डाली है ? ऐसे जगे हुए दीपकों की माला हरेक रत्न अपने गले में जब डालेंगे तब विजय का नगाड़ा बजेगा । जैसे दिव्य गुणों की माला अपने में डाली है, वैसे अनेक जगे हुए दीपकों की माला अपने गले में डालनी है । जितनी यहाँ दीपकों की माला अपने गले में डालेंगे उतनी वहाँ प्रजा बनेगी । कोई-कोई माला बहुत लम्बी-चौड़ी होती है, कोई सिर्फ गले में पहनने तक होती है । तो माला कौनसी पहननी है ? बहुत बड़ी । ऐसी माला से अपने आपको श्रृंगार करना है । कितने दीपकों की माला अब तक डाली है ? गिनती कर सकते हो वा अनगिनत हैं ? दीपक भी अच्छे वह लगते हैं जो तेज जगे हुए होते हैं । टिम-टिम करने वाले अच्छे नहीं लगते । अच्छा !

मधुबन के फूलों में विशेषतायें क्या होनी चाहिएं? नाम ही है मधुबन । तो पहली विशेषता है मधुरता । मधुरता ऐसी चीज है जो कोई को भी हर्षित कर सकते हैं । मधुरता को धारण करने वाला यहाँ भी महान् बनता है और वहाँ भी मर्तबा पाता है । मधुरता वालों को सभी महान रूप से देखते हैं । तो यह मधुरता का विशेष गुण होना चाहिए । मधुरता से ही मधुसूदन का नाम बाला करेंगे । यह मधुबन नाम है । मधु अर्थात् मधुरता और वन में क्या विशेषता होती है ? बन में वैराग्य वृत्ति वाले जाते हैं । तो बेहद की वैराग्य बुद्धि भी चाहिए । फिर इससे सारी बातें आ जायेंगी । और आप सभी को कॉपी करने

के लिए यहाँ आयेंगे। सभी सोचेंगे – यह कैसे ऐसे बने हैं! सभी के मुख से निकलेगा कि मधुबन तो मधुबन ही है। तो यह दो विशेषतायें धारण करनी हैं – मधुरता और बेहद की वैराग्य वृत्ति। दूसरे शब्दों में कहते हैं 'स्नेह और शक्ति'। आप सभी का सभी से जास्ती स्नेह है ना बापदादा से। और बापदादा का मधुबन वालों से विशेष स्नेह रहता है। क्योंकि भले कैसे भी हैं लेकिन सर्वस्व त्यागी हैं। इसलिए आकर्षित करते हैं। लेकिन सर्वस्व त्यागी के साथ अब स्नेह और शक्ति भी भरनी है। समझा किस विशेषता को भरना है?

कुमारियों को कमाल कर दिखानी है। कुमारियों का हर कर्त्तव्य कमाल योग्य होना चाहिए। संकल्प और वाणी तथा कर्म कमाल का होना चाहिए। कुमारियां पवित्र होने के कारण अपनी धारणा को तेज बना सकती हैं। ऐसे कमाल का कर्त्तव्य कर दिखाना है, जो हर एक के मुख से यही निकले कि इन्हों का कर्त्तव्य कमाल का है। जैसे बापदादा के हर बोल सुनते हैं तो मुख से निकलता है ना कि आज की मुरली तो कमाल की है। तो कुमारियों के हर कर्म ऐसे कमाल के होने चाहिएं। बापदादा को फालो करना है। ऐसे नहीं कहना कि कोशिश करेंगे। जब तक कोशिश करेंगे तब तक कशिश नहीं होगी। अगर कशिश धारण करनी है तो कोशिश शब्द को खत्म कर दो। अभी कशिश रूप बनना है। फालो फादर करना है। बापदादा कब कहते थे कि कोशिश करेंगे? फिर आप क्यों कहती हो कि कोशिश करेंगी? कुमारियां कमाल करेंगी तो साथी साथ भी देगा। नहीं तो साथी साक्षी हो जायेगा। इसलिए साथी को साथ रखना है। नहीं तो साक्षी बन जायेंगे। साक्षी अच्छा लगता है या साथी? जो मेहनत करते हैं उसका फल भी यहाँ ही मिलता है। यह स्नेह और भविष्य पद मिलता है। सभी का स्नेही बनने के लिए मेहनत करनी है। जो जितनी मेहनत करते हैं वह उतने ही स्नेही बनते हैं। समय पर स्नेही को ही याद आती है। कोई बात में मेहनत की याद आती है। बाबा भी क्यों याद आते हैं? मेहनत की है तब स्नेह है। मेहनत से स्नेही बनना है। जितना जास्ती मेहनत उतना सर्व के स्नेही बनेंगे। मेहनत का फल ही स्नेह है। जो मेहनत करते हैं उनको हरेक स्नेह की नज़र से देखेंगे। जो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मेहनत नहीं करेंगे उनको स्नेह की नजर से नहीं देखेंगे । स्टूडेन्ट को टीचर के गुण जरूर धारण करने हैं । स्नेह ही सम्पूर्ण बनाता है । स्नेह के साथ फिर शक्ति भी चाहिए । दोनों का जब मिलन हो जाता है तो स्नेह और शक्ति वाली अवस्था अति न्यारी और अति प्यारी होती है । जिसके लिए स्नेह है उसके समान बनना है । यही स्नेह का सबूत है । इसमें अपने को चेक करना है—कहाँ तक हम समानता में समीप आये हैं ? जितना-जितना समानता में समीप होंगे उतना ही समझो कर्मातीत अवस्था के समीप पहुंचेगे । यही समानता का मीटर है । अपनी कर्मातीत अवस्था को परखना है । सिर्फ स्नेह रखने से भी सम्पूर्ण नहीं बनेंगे । स्नेह के साथ-साथ शक्ति भी होगी तो खुद सम्पूर्ण बन औरों को भी सम्पूर्ण बनायेंगे । क्योंकि शक्ति से वह संस्कार भर जाते हैं । तो अब स्नेह के साथ शक्ति भी भरनी है ।

सभी के दिलों पर विजय किन गुणों से प्राप्त कर सकते हो ? सभी को सन्तुष्ट करना । बाप में यह विशेष गुण था । वही फालो करना है । सभी मधुबन की
a) लिस्ट में हो या आलराउन्डर की लिस्ट में हो ? एक है हद की लिस्ट, दूसरी है बेहद की लिस्ट । आलराउन्डर और एवररेडी । इस लिस्ट में मालूम है क्या करना होता है ? एक सेकेण्ड में तैयार । संकल्पों को भी एक सेकेण्ड में बन्द करना है । मिलिट्री वालों का हर समय बिस्तरा तैयार रहता है । यह संकल्पों का बिस्तरा भी बन्द करना है । बिस्तरा भी एवररेडी रहना चाहिए । एवररेडी बनने वालों का संकल्पों का बिस्तरा तैयार रहना चाहिए । कोई भी परिस्थिति हो उसका सामना करने के लिए पेटी-बिस्तरा तैयार हो । अच्छा !

रूहानी बच्चो ! तुम आत्माओं को वाणी से परे अपने घर जाने के लिए पुरुषार्थ करना है । इसलिए इस पुरानी दुनिया में रहते देह और देह के सम्बन्धों से उपराम-चित होना है । पतित दुनिया में रहते हुए बाप पवित्र बनने की शक्ति

...के तुमको सदा पवित्र बनना है ।

...क बनना है । स्तुति-निन्दा, लाभ-हानि, जय-पराजय — चलना है और रहमदिल बनना है । अच्छा !

... web optimization using a watermarked evaluation copy of ... Compressor

29·8·84 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

'मीठे बच्चे-याद की यात्रा से ही तुम्हारी कमाई जमा होती है,तुम घाटे से फायदे में आते हो,विश्व के मालिक बनते हो'

प्रश्न:-सत का संग तारे कुसंग बोरे, इसका अर्थ क्या है?
उत्तर:-जब तुम बच्चों को सत का संग अर्थात् बाप का संग मिलता है जिससे तुम्हारी चढ़ती कला हो जाती है। रावण का संग कुसंग है ,उसके संग से तुम नीचे गिरते हो। अर्थात् रावण तुम्हें डुबोता है।बाप पार ले जाता है।बाप की भी कमाल है जो सेकण्ड में ऐसा संग देते जिससे तुम्हारी गति सद्गति हो जाती है।इसलिए उसे जादूगर भी कहा जाता है।

ओमशान्ति।बच्चे बैठे थे इसको कहा जाता है याद की यात्रा।बाप कहते हैं योग अक्षर काम में न लाओ।बाप को याद करो वह है आत्माओं का बाप।परमपिता परमात्मा, पतित पावन।उस पतित पावन बाप को ही याद करना है।बाप कहते हैं देह के सब सम्बन्ध छोड़ एक बाप को याद करो।कहते हैं ना आप मुये मर गई दुनिया।देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध आदि देखने में आते हैं उनको याद न करो।एक बाप को ही याद करो।तो तुम्हारे पाप जल जायेंगे।तुम जन्म जन्मान्तर की पाप आत्मायें हो ना।यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया।सतयुग है पुण्य आत्माओं की दुनिया।अब पाप सब कटकर पुण्य कैसे जमा हो।बाप की याद से ही जमा होगा।आत्मा में मन बुद्धि है ना।तो आत्मा को बुद्धि से याद करना है।बाप कहते हैं तुम्हारे जो मित्र सम्बन्धी आदि हैं उन सबको भूलो वह सब एक दो को दुख देते हैं।एक तो विकारी काम कटारी चलाते हैं। दूसरा फिर पाप क्या करते हैं जो बाप को कुत्ते बिल्ली ठिक्कर भित्तर में कह देते हैं। वह बाप तो सर्व का सद्गति दाता है,बच्चों को बेहद का सुख देते हैं अर्थात् स्वर्ग का मालिक बनाते हैं।यह पाठशाला है।तुम आये हो पढ़ने।यह लक्ष्मी-नारायण है तुम्हारी एम आबजेक्ट और कोई ऐसे कह न सके।तुम जानते हो अभी हमको पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनना है। हम विश्व के मालिक थे। पूरे 5 हजार वर्ष हुए। दैवी देवतायें विश्व के मालिक हैं ना।कितना ऊँच पद है।जरूर यह बाप ही बनायेंगे। बाप को ही परमात्मा कहते हैं उनका असुल नाम है शिव। फिर बहुत नाम रख दिये हैं। जैसे बाम्बे में बाबुरी नाथ का मन्दिर है अर्थात् कांटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाने वाला है।नहीं तो उनका असली नाम एक ही शिव है। इनमें प्रवेश करते हैं तो भी नाम शिव ही है।तुमको इन (ब्रह्मा) को याद नहीं करना है।यह तो देहधारी है।तुमको याद करना है विदेही को। तुम्हारी आत्मा पतित बनी है।उनको पावन बनाना है।कहते भी हैं महान आत्मा,पाप आत्मा। महान परमात्मा नहीं कहते हैं। अपने को परमात्मा वा ईश्वर भी कोई कह न सके।कहते ही हैं महात्मा पवित्र आत्मा। सन्यासी सन्यास करते हैं इसलिए पवित्र आत्मा हैं। बाप ने समझाया है वह भी सब पुनर्जन्म लेते हैं। देहधारियों को पुनर्जन्म जरूर लेना पड़ता है। विष से जन्म ले फिर जब बड़े बालिग हो जाते हैं तो सन्यास कर लेते हैं।
a) देवतायें तो ऐसे नहीं करते हैं।वह तो पवर पवित्र हैं।(उन्हों को गृहस्थी घर में जन्म लेना पड़े।उनको कहा ही जाता है वह के सन्यासी महान आत्मा न कि परमात्मा।) बाप अब तुमको आसुरी से दैवी बनाते हैं। दैवी गुण धारण करने से ही दैवी सम्प्रदाय बनेंगे।दैवी सम्प्रदाय रहते हैं सतयुग में। आसुरी सम्प्रदाय रहते हैं कलियुग में।अभी है संगम युग।अब तुमको बाप मिला है।कहते हैं अब तुमको फिर दैवी सम्प्रदाय बनना है जरूर। तुम यहाँ आये हो हो दैवी सम्प्रदाय बनने। दैवी सम्प्रदाय में अथाह सुख है। इस दुनिया को कहा जाता है-पतित दुनिया।विशश दुनिया।देवतायें तो हैं वाइसलेस।विशश बनते हैं तो बाप को ही भूल जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 रूहानी बच्चों बाप को याद करो।/तुम्हारे जो गुरु लोग हैं वह भी सब देह धारी हैं। अभी तुम आत्माओं को परमात्मा बाप को याद करना है। सुख तब मिलेगा जब तुम पुण्य आत्मा बनेंगे । 84 जन्मों के बाद ही तुम पाप आत्मा बन जाते हो। अभी तुम जज करते हो। घाटे को खत्म करते हो योगबल से।इस याद की यात्रा से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो।तुम विश्व के मालिक थे सही ना। वह फिर कहाँ गये ? यह भी बाप ही बताते हैं।तुमने 84जन्म लिए सूर्यवंशी···चन्द्रवंशी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भगे। कहते भी हैं भक्ति का फल भगवान देते हैं। भगवान कोई देहधारी को नहीं कहा जाता वह तो है ही निराकार शिव। उनकी शिव रात्रि मनाते हैं तो जरूर आते हैं ना। परन्तु कहते हैं मैं तुम्हारे सदृश्य जन्म नहीं लेता हूँ। मुझे शरीर का लोन लेना पड़ता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। अगर होता तो उनका नाम होता। ब्रह्मा नाम तो इनका अपना है। इसने सन्यास किया है तब नाम ब्रह्मा रखा है। तुम हो ब्र0कु0कुमारियाँ। नहीं तो ब्रह्मा

b) कहाँ से आया। ब्रह्मा बेटा किसका? क्योंकि ब्रह्मा भी क्रियेटर है ना। क्रियेटर तो एक है। ब्रह्मा बेटा शिव का। शिवबाबा अपने बच्चे में प्रवेश कर इन द्वारा तुमको ज्ञान देते हैं। आत्मायें सब उनके बच्चे हैं। निराकार बाप के सब हैं निराकार बच्चे। आत्मायें जो फिर यहाँ आकर शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ पतितों को पावन बनाने। मैं इस शरीर का लोन लेता हूँ। शिव भगवानुवाच है ना। कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। भगवान तो एक ही है। कृष्ण की महिमा ही अलग है। पहला नम्बर देखा राधे कृष्ण जो स्वयंवर बाद फिर ल0ना0 बनते हैं। परन्तु यह कोई जानते नहीं। राधे कृष्ण का किसको पता नहीं वह फिर कहाँ चले जाते हैं। राधे कृष्ण ही स्वयंवर बाद फिर ल0ना0 बनते हैं। दोनों अलग2 महाराजाओं के हैं। वहाँ अपवित्रता का नाम नहीं। क्योंकि 5 विकारों रूपी रावण ही नहीं है। है ही रामराज्य। इनको कहा जाता है रामराज्य। अब बाप आत्मा को कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। तुम सतोप्रधान से अब तमोप्रधान बने हो। घाटा पड़ा है फिर जमा करना है। भगवान को व्यापारी भी कहा जाता है। कोई विरला उनसे व्यापार करे। जादूगर भी उनको कहते हैं। कमाल करते हैं। जो सारी दुनिया को सद्गति कर देते हैं। सबको मुक्ति जीवनमुक्ति देते हैं। जादू का खेल है ना। मनुष्य2 को दे नहीं सकते। तुम 63 जन्म भक्ति करते आये हो। कोई ने सद्गति को पाया है? कोई है जो सद्गति दे? हो नहीं सकता। एक भी वापस जा नहीं सकता। बेहद का बाप ही आकर सबको वापस ले जाते हैं। कलियुग में अनेक राजायें हैं। वहाँ तुम थोड़े ही राज्य करते हो। बाकी सब आत्मायें मुक्तिधाम में चली जाती हैं। तुम जाते हो जीवनमुक्ति में बाकी मुक्तिधाम। यह चक्र फिरता रहता है। अभी तुम आत्माओं को दर्शन हुआ है इस सृष्टि चक्र का। रचता और रचना के आदि मध्य अन्त का। तुम ही इस ज्ञान से नर से नारायण बनते हो। देवताओं की राजधानी स्थापन हो गई फिर तुमको ज्ञान की दरकार नहीं रहेगी। आधाकल्प ज्ञान आधाकल्प भक्ति। भक्तों को भगवान ने फल दिया। आधाकल्प सुख का। फिर रावण राज्य में दुःख शुरू होता है। आहिस्ते2 सीढ़ी उतरते हैं। तुम सतयुग में हो तो भी एक दिन जो बीता सीढ़ी उतरनी ही होती है। तुम 16 कला सम्पूर्ण बनते हो। फिर त्रेता में दो कला कम हो जाती हैं। सीढ़ी उतरते ही रहते हैं। सेकण्ड ब सेकण्ड टिक2 होती है। उतरते ही रहते हैं। उतरते2 इस जगह पर आकरके पहुँचे हो। वहाँ भी

c) तो ऐसे ही घड़ियाँ बीतती जायेंगी। हम सीढ़ी चढ़ते हैं एकदम फट से। तेरे भाने सर्व का भला फिर सीढ़ी उतरनी है जूँ मिसल। बाप कहते हैं मैं सर्व की सद्गति करने वाला हूँ। मनुष्य2 की सद्गति कर न सकें। क्योंकि वह विष से पैदा होते हैं। पतित हैं। वहाँ तो पतित कोई होता ही नहीं। वास्तव में कृष्ण को ही सच्चा महात्मा कह सकते हैं। यह महात्मा लोग तो फिर भी विष से जन्म ले फिर सन्यास करते हैं। वह तो है देवता। देवतायें तो सदैव पावन हैं। उनमें कोई विकार होता नहीं। उनको ही कहा जाता है निर्विकारी दुनिया। उनको कहा जाता है निर्विकारी दुनिया। नो प्युरिटी। चलन कितनी खराब है। देवताओं की चलन तो बड़ी अच्छी होती है। सब उनको नमन करते हैं। कैरेक्टर्स उन्हों के अच्छे हैं तब तो अपवित्र मनुष्य उन पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। अभी तो लड़ना झगड़ना क्या लगा पड़ा है। बड़ा हंगामा है। अभी तो रहने की भी जगह नहीं है। चाहते हैं मनुष्य कम हों। परन्तु यह तो बाप का ही काम है। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। इतने सब शरीरों की होलिका हो जाती है। बाकी सब आत्मायें चली जाती हैं। अपने स्वीट होम में। बजाये तो नम्बरवार विजय माला का दाना बनते हैं वह सजाओं से छूट जाते हैं। माला एक की तो नहीं है। जिन्होंने उन्हों को पैसा कमाया वह है फूल। फिर है मेरू प्रवृति मार्ग है ना। तो जोड़ी की माला है ... ल

... नहीं ... प्रवृति मार्ग ...

प्रवृत्ति मार्ग वालों को ज्ञान दे न सकें। पवित्र बनने के लिए। उनका है हद का सन्यास। यह है ही उपयोगी। यह है राजयोग। राजाई प्राप्त करने के लिए बाप तुमको सिखलाते हैं। हर 5हजार वर्ष बाद आते हैं। आधाकल्प तुम राजाई करते हो सुख में। फिर रावण राज्य होता है। आहिस्ते2 तुम दुखी होते जाते हो। इसको कहा ही जाता है सुख दुख का खेल। तुम पाण्डवों को जीत पहनाते हैं। अब तुम हो पण्डे। घर जाने की यात्रा कराते हो। वह यात्रायें तो मनुष्य जन्म जन्मान्तर करते आये हैं। अब तुम्हारी यात्रा है घर जाने की। बाप आकर सबको मुक्ति जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं। तुम जीवनमुक्ति में बाकी सब मुक्ति में चले जायेंगे। हाहाकार के बाद फिर जय2कार हो जाती है। रक्त की नदियाँ बहती हैं फिर घी की नदियाँ बहेंगी। अभी है कलियुग का अन्त। आफ़तें तो बहुत आने की हैं। फिर उस समय तुम याद की यात्रा में रह नहीं सकेंगे। क्योंकि हंगामा बहुत हो जायेगा। इसलिए बाप कहते हैं अब याद की यात्रा को बढ़ाते जाओ तो पाप भस्म हो जाए। और फिर जमा भी करो। सतोप्रधान तो बनो। बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ। यह तो बहुत छोटा सा ब्राह्मणों का युग है। ब्राह्मणों की निशानी चोटी होती है। ब्राह्मण देवता···यह चक्र फिरता ही रहता है। ब्राह्मणों का बहुत छोटा कुल

d) होता है। 40-50 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। तुम बच्चे हो स्टूडेन्ट भी हो। फालोअर्स भी हो। एक के हो। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो बाप भी हो, शिक्षा देने वाला टीचर भी हो, सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान देता हो। फिर साथ भी ले जाए। ऐसा कोई मनुष्य न हो सके। यह बातें अभी तुम समझते हो। सतयुग में भी पहले2 बहुत छोटा झाड होता है। बाकी सब शान्तिधाम में चले जायेंगे। बाप को ही कहा जाता है सर्व का सद्गति दाता। बाप को बुलाते भी हैं कि हे पतित पावन बाबा आओ और दूसरे तरफ फिर कहते हैं परमात्मा कुत्ते बिल्ली में है। बेहद के बाप का अपकार करते हैं। कण2 में कहना उनका तो कोई हिसाब ही नहीं हो सकता। यह तो पाप करते हैं ना। बाप जो विश्व का मालिक बनाते उनको डिफेम करते हैं। उनको पत्थर भित्तर में कह देते हैं। तब बाप कहते हैं यदा यदाहि···भारत में ही धर्म की ग्लानी होती है। बाप को पत्थर ठिक्कर में डाल दिया है। तो तुम्हारी पत्थर बुद्धि हो गई है। मुझे सब गाली देते हैं। यह है रावण का संगदोष। सत का संग तारे कुसंग बोरे··· रावण राज्य शुरू होता है तो तुम गिरने लग पड़ते हो बाप आके तुम्हारी चढ़ती कला करते हैं। बाप आकर मनुष्यों को देवता बनाते हैं तो सर्व का भला हो जाता है। अभी तो सब यहाँ हैं। बाकी भी जो रहे हुए हैं वह आते रहते हैं। जब तक निराकारी दुनिया से सब आत्मायें आ जायेंगी तब तक तुम इम्तहान में भी नम्बरवार पास होते जायेंगे। इनको कहा जाता है रूहानी कालेज। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को पढ़ाने आते हैं। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। रावण राज्य आया तो फिर शरीर छोड़ कोई अपवित्र राजा बनें। और पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकने लगे। आत्मा ही पतित अथवा पावन बनती है। आत्मा पतित तो शरीर भी पतित मिलता है। सच्चा सोना में खाद पड़ती है तो खाद का जेवर हो जाता है। अब आत्मा से खाद निकले कैसे? इसके लिए योग अग्नि चाहिए। उनसे ही तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। चाँदी ताँबा लोहा पड़ गये हैं। यह है खाद। गोल्डन एज से आइरन एज में आ गये। आत्मा सच्चा सोना थी अब झूठी बन गई है। अब खाद निकले कैसे। यह है योग अग्नि। ज्ञान चिता पर बैठे हो। आगे थे काम चिता पर। बाप ज्ञान चिता पर बिठाते हैं। सिवाए ज्ञान सागर बाप के और कोई ज्ञान चिता पर बिठा न सके। मनुष्य भक्ति मार्ग में अन्धश्रद्धा से कितनी पूजा करते रहते हैं। किसको भी जानते नहीं। अभी तुम सबको जान गये हो। तुम सो देवता बनते हो तो फिर पूजा की बात ही खत्म हो जाती है। जब रावण राज्य शुरू होता है तब भक्ति शुरू होती है। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की, रूहानी बच्चों को नमस्ते।

25-8-04 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे बच्चे – याद की यात्रा से ही तुम्हारी कमाई जमा होती है, तुम घाटे से फायदे में आते हो, विश्व के मालिक बनते हो'

प्रश्न:- सत का संग तारे कुसंग बोरें – इसका अर्थ क्या है?

उत्तर:- जब तुम बच्चों को सत का संग अर्थात् बाप का संग मिलता है तब तुम्हारी चढ़ती कला हो जाती है। रावण का संग कुसंग है, उसके संग से तुम नीचे गिरते हो अर्थात् रावण तुम्हें डुबोता है, बाप पार ले जाता है। बाप की भी कमाल है जो सेकण्ड में ऐसा संग देते जिससे तुम्हारी गति सद्गति हो जाती है, इसलिए उसे जादूगर भी कहा जाता है।

ओम् शान्ति। बच्चे याद में बैठे थे इसको कहा जाता है याद की यात्रा। बाप कहते हैं योग अक्षर काम में न लाओ। बाप को याद करो, वह है आत्माओं का बाप, परमपिता, पतित-पावन। उस पतित-पावन को ही याद करना है। बाप कहते हैं देह के सब सम्बन्ध छोड़ एक बाप को याद करो। कहते हैं ना आप मुये मर गई दुनिया..... देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध आदि देखने में आते हैं, उनको याद नहीं करो। एक बाप को ही याद करो तो तुम्हारे पाप जल जायेंगे। तुम जन्म-जन्मान्तर की पाप आत्मायें हो ना। यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया। सतयुग है पुण्य आत्माओं की दुनिया। अब पाप सब कटकर पुण्य कैसे जमा हो? बाप की याद से ही जमा होंगे। आत्मा में मन-बुद्धि है ना। तो आत्मा को बुद्धि से याद करना है। बाप कहते हैं तुम्हारे जो भी मित्र-सम्बन्धी हैं, उन सबको भूलो। वह सब एक-दो को दु:ख देते हैं। एक पाप करते हैं जो काम कटारी चलाते हैं, दूसरा पाप फिर क्या करते हैं? जो बाप सर्व का सद्गति दाता है, बच्चों को बेहद का सुख देते हैं अर्थात् स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उसे सर्वव्यापी कह देते हैं। यह पाठशाला है, तुम आये हो यह पढ़ने। यह लक्ष्मी-नारायण है तुम्हारी एम-ऑब्जेक्ट। और कोई ऐसे कह न सके। तुम जानते हो अभी हमको पवित्र बन पावन दुनिया का मालिक बनना है। हम ही विश्व के मालिक थे। पूरे 5 हज़ार वर्ष हुए। देवी-देवता विश्व के मालिक हैं ना। कितना ऊंच पद है। जरूर यह बाप ही बनायेंगे। बाप को ही परमात्मा कहते हैं, उनका असुल नाम है शिव। फिर बहुत नाम रख दिये हैं। जैसे बाम्बे में बबुलनाथ का मन्दिर है अर्थात् कांटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाने वाला है। नहीं तो उनका असली नाम एक ही शिव है। इनमें प्रवेश करते हैं तो भी नाम शिव ही है। तुमको इन ब्रह्मा को याद नहीं करना है। यह तो देहधारी है। तुमको याद करना है विदेही को। तुम्हारी आत्मा पतित बनी है, उनको पावन बनाना है। कहते भी हैं महान् आत्मा, पाप आत्मा। महान् परमात्मा नहीं कहते हैं। अपने को परमात्मा वा ईश्वर भी कोई कह न सकें। कहते भी हैं महात्मा, पवित्र आत्मा। सन्यासी सन्यास करते हैं, इसलिए पवित्र आत्मा हैं। बाप ने समझाया है वह भी सभी पुनर्जन्म लेते हैं। देहधारियों को पुनर्जन्म जरूर लेना पड़ता है। विकार से जन्म ले फिर जब बड़े बालिग बन जाते हैं तो सन्यास कर लेते हैं। देवतायें तो ऐसे नहीं करते। वह तो एवर पवित्र हैं। बाप अभी तुमको आसुरी से दैवी बनाते हैं, दैवीगुण धारण करने से दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। दैवी सम्प्रदाय रहते हैं सतयुग में, आसुरी सम्प्रदाय रहते हैं कलियुग में। अभी है संगमयुग। अब तुमको बाप मिला

है, कहते हैं अब तुमको फिर दैवी सम्प्रदाय बनना है जरूर। तुम यहाँ आये ही हो दैवी सम्प्रदाय बनने। दैवी सम्प्रदाय वालों को अथाह सुख हैं। इस दुनिया को कहा जाता है हिंसक, देवतायें हैं अहिंसक।

बाप कहते हैं – मीठे-मीठे रूहानी बच्चों, बाप को याद करो। तुम्हारे जो गुरू लोग हैं, वह भी सब देहधारी हैं। अभी तुम आत्माओं को परमात्मा बाप को याद करना है। सुख तब मिलेगा जब तुम पुण्य आत्मा बनेंगे। 84 जन्मों के बाद ही तुम पाप आत्मा बन जाते हो। अभी तुम पुण्य जमा करते हो। योगबल से पापों को खत्म करते हो। इस याद की यात्रा से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम विश्व के मालिक थे तो सही ना। वह फिर कहाँ गये, यह भी बाप ही बताते हैं। तुमने 84 जन्म लिए, सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनें। कहते भी हैं भक्ति का फल भगवान देते हैं। भगवान कोई देहधारी को नहीं कहा जाता है। वह है ही निराकार शिव। उनकी शिवरात्रि मनाते हैं तो जरूर आते हैं ना। परन्तु कहते मैं तुम्हारे सदृश्य जन्म नहीं लेता हूँ, मुझे शरीर का लोन लेना पड़ता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। अगर होता तो उनका नाम होता। ब्रह्मा नाम तो इनका अपना है। इसने सन्यास किया तब नाम ब्रह्मा रखा है। तुम हो ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। नहीं तो ब्रह्मा कहाँ से आया। ब्रह्मा है
b) शिव का बेटा। शिवबाबा अपने बच्चे ब्रह्मा में प्रवेश कर तुमको ज्ञान देते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी इनके बच्चे हैं। निराकार बाप के सब बच्चे निराकार हैं। आत्मायें यहाँ आकर शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ पतितों का पावन बनाने। मैं इस शरीर का लोन लेता हूँ। शिव भगवानुवाच है ना। कृष्ण को तो भगवान नहीं कह सकते। भगवान तो एक ही है। कृष्ण की महिमा ही अलग है। पहला नम्बर देवता हैं राधे-कृष्ण, जो स्वयंवर के बाद फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। परन्तु यह कोई जानते नहीं। राधे-कृष्ण का किसको भी पता नहीं है। वह फिर कहाँ चले जाते हैं? राधे-कृष्ण ही स्वयंवर के बाद फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। दोनों अलग-अलग महाराजाओं के बच्चे हैं। वहाँ अपवित्रता का नाम नहीं है क्योंकि 5 विकार रूपी रावण ही नहीं है। है ही राम राज्य। अब बाप आत्माओं को कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। तुम सतोप्रधान थे, अब तमोप्रधान बने हो, घाटा पड़ा है फिर जमा करना है। भगवान् को व्यापारी भी कहा जाता है। कोई विरला उनसे व्यापार करे। जादूगर भी उनको कहते हैं, कमाल करते हैं, जो सारी दुनिया की सद्गति करते हैं। सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। जादू का खेल है ना। मनुष्य, मनुष्य को दे नहीं सकते। तुम 63 जन्म भक्ति करते आये हो, इस भक्ति से कोई ने सद्गति को पाया है? कोई है जो सद्गति दे? हो नहीं सकता। एक भी वापिस जा नहीं सकता। बेहद का बाप ही आकर सबको वापिस ले जाते हैं। कलियुग में अनेक राजायें हैं। वहाँ तुम थोड़े राज्य करते हो। बाकी सब आत्मायें मुक्ति में चली जाती हैं। तुम जाते हो जीवनमुक्ति में वाया मुक्तिधाम। यह चक्र फिरता रहता है। अभी तुम आत्माओं को दर्शन हुआ है इस सृष्टि चक्र का, रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का। तुम ही इस ज्ञान से नर से नारायण बनते हो। देवताओं की राजधानी स्थापन हो गई फिर तुमको ज्ञान की दरकार नहीं रहेगी। भक्तों को भगवान ने फल दिया आधाकल्प सुख का, फिर रावण राज्य में दु:ख शुरू होता है। आहिस्ते-आहिस्ते सीढ़ी उतरते हैं। तुम सतयुग में हो तो भी एक दिन जो बीता, सीढ़ी उतरनी होती है। तुम 16 कला सम्पूर्ण बनते हो, फिर सीढ़ी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

उतरते ही रहते हो। सेकण्ड बाई सेकण्ड टिक-टिक होती है। उतरते ही जाते हैं। समय बीतते-बीतते इस जगह आकर पहुँचे हो। वहाँ भी तो ऐसे ही घड़ियाँ बीतती जायेंगी। हम सीढ़ी चढ़ते हैं एकदम फट से फिर सीढ़ी उतरनी है जूँ मिसल। c)

बाप कहते हैं मैं सर्व का सद्गति करने वाला हूँ। मनुष्य, मनुष्य की सद्गति कर न सकें क्योंकि वह विकार से पैदा होते हैं, पतित हैं। वास्तव में कृष्ण को ही सच्चा महात्मा कह सकते हैं। यह महात्मा लोग तो फिर भी विकार से जन्म ले फिर सन्यास करते हैं। वह तो हैं देवता। देवतायें तो सदैव पवित्र हैं। उनमें कोई विकार होता नहीं। उनको कहा ही जाता है निर्विकारी दुनिया। इनको कहा जाता है विकारी दुनिया। नो प्योरिटी। चलन कितनी खराब है। देवताओं की चलन तो बड़ी अच्छी होती है। सब उनको नमस्ते करते हैं। कैरेक्टर्स उन्हों के अच्छे हैं तब तो अपवित्र मनुष्य उन पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। अभी तो लड़ना-झगड़ना क्या-क्या लगा पड़ा है। बड़ा हंगामा है। अभी तो रहने की भी जगह नहीं। चाहते हैं मनुष्य कम हों। परन्तु यह तो बाप का ही काम है। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। इतने सब शरीरों की होलिका हो जाती है, बाकी सब आत्मायें चली जाती हैं अपने स्वीट होम। सजायें तो नम्बरवार भोगते हैं जरूर। जो पूरा पुरूषार्थ कर विजय माला का दाना बनते हैं, वह सजाओं से छूट जाते हैं। माला एक की तो नहीं होती। जिसने उन्हों को ऐसा बनाया, वह है फूल। फिर है मेरू, प्रवृत्ति मार्ग है ना। तो जोड़ी की माला है। सिंगल की माला नहीं होती। सन्यासियों की माला होती नहीं। वह हैं निवृति मार्ग वाले। वह प्रवृत्ति मार्ग वालों को ज्ञान दे न सकें। पवित्र बनने के लिए उनका है हद का सन्यास, वह हैं हठयोगी। यह है राजयोग, राजाई प्राप्त करने के लिए बाप तुमको यह राजयोग सिखलाते हैं। बाप हर 5 हजार वर्ष बाद आते हैं। आधाकल्प तुम राजाई करते हो सुख में, फिर रावण राज्य में आहिस्ते-आहिस्ते तुम दु:खी हो जाते हो। इसको कहा जाता है सुख-दु:ख का खेल। तुम पाण्डवों को जीत पहनाते हैं। अब तुम हो पण्डे। घर जाने की यात्रा कराते हो। वह यात्रायें तो मनुष्य जन्म-जन्मान्तर करते आये हैं। अब तुम्हारी यात्रा है घर जाने की। बाप आकर सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं। तुम जीवनमुक्ति में बाकी सब मुक्ति में चले जायेंगे। हाहाकार के बाद फिर जय-जयकार हो जाती है। अभी है कलियुग का अन्त। आफतें तो बहुत आने की हैं, फिर उस समय तुम याद की यात्रा में रह नहीं सकेंगे क्योंकि हंगामा बहुत हो जायेगा। इसलिए बाप कहते हैं अब याद की यात्रा को बढ़ाते जाओ तो पाप भस्म हो जायें और फिर जमा भी करो। सतोप्रधान तो बनो। बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरूषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ। यह तो बहुत छोटा सा ब्राह्मणों का युग है। ब्राह्मणों की निशानी चोटी होती है। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र--यह चक्र फिरता ही रहता है। ब्राह्मणों का बहुत छोटा कुल होता है इस छोटे से युग में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। तुम बच्चे भी हो तो स्टूडेन्ट भी हो, फालोअर्स भी हो। एक के ही हैं। ऐसा कोई मनुष्य होता नहीं जो बाप भी हो, शिक्षा देने वाला टीचर भी हो, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देता हो, फिर साथ में भी ले जाये। ऐसा कोई मनुष्य हो न सके। यह बातें अभी तुम समझते हो। सतयुग में भी पहले-पहले बहुत छोटा झाड़ होता है, बाकी सब शान्तिधाम में चले जायेंगे। बाप को कहा जाता है सर्व का सद्गति दाता। बाप को बुलाते हैं--हे पतित-पावन बाबा आओ। दूसरे तरफ फिर d)

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कहते हैं परमात्मा कुत्ते-बिल्ली, पत्थर-ठिक्कर सबमें है। बेहद के बाप का अपकार करते हैं। बाप जो विश्व का मालिक बनाते, उनको डिफेम करते हैं। इसे ही कहा जाता है रावण का संगदोष। सत का संग तारे, कुसंग डुबोये। रावण राज्य शुरू होता है तो तुम गिरने लग पड़ते हो। बाप आकरके तुम्हारी चढ़ती कला करते हैं। बाप आकर मनुष्य को देवता बनाते हैं तो सर्व का भला हो जाता है। अभी तो सब यहाँ हैं, बाकी जो भी रहे हुए है, वह आते रहते हैं। जब तक निराकारी दुनिया से सब आत्मायें आ जायेंगी तब तक तुम इम्तहान में भी नम्बरवार पास होते जायेंगे। इनको कहा जाता है रूहानी कॉलेज। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को पढ़ाने आते हैं, रावण राज्य आया तो फिर शरीर छोड़ अपवित्र राजा बनें और पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकने लगे। आत्मा ही पतित अथवा पावन बनती है। आत्मा पतित तो शरीर भी पतित मिलता है। सच्चे सोने में खाद पड़ती है तो खाद का जेवर हो जाता है। अब आत्मा से खाद निकले कैसे? योग अग्नि चाहिए, उनसे तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। आत्मा में चाँदी, तांबा, लोहा पड़ गया है। यह है खाद। आत्मा सच्चा सोना है। अब झूठी बन गई है। वह खाद निकले कैसे? यह है योग अग्नि, ज्ञान चिता पर बैठे हो। आगे थे काम चिता पर। बाप ज्ञान चिता पर बिठाते हैं। सिवाए ज्ञान सागर बाप के और कोई ज्ञान चिता पर बिठा न सके। मनुष्य भक्ति मार्ग में कितनी पूजा करते रहते हैं लेकिन किसको जानते नहीं। अभी तुम सबको जान गये हो। तुम सब देवता बनते हो तो फिर पूजा की बात ही खत्म हो जाती है। जब रावण राज्य शुरू होता है तब भक्ति शुरू होती है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. सजाओं से मुक्त होने के लिए विजय माला का दाना बनने का पुरूषार्थ करना है, रूहानी पण्डा बन सबको शान्तिधाम घर की यात्रा करानी है।

२. याद की यात्रा को बढ़ाते-बढ़ाते सब पापों से मुक्त हो जाना है। योग अग्नि से आत्मा को सच्चा सोना बनाना है, सतोप्रधान बनना है।

वरदान:- भगवान और भाग्य की स्मृति से औरों का भी भाग्य बनाने वाले खुशनुमः खुशनसीब भव

अमृतवेले से लेकर रात तक अपने भिन्न-भिन्न भाग्य को स्मृति में लाओ और यही गीत गाते रहो वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य। जो भगवान और भाग्य की स्मृति में रहते हैं वही औरों को भाग्यवान बना सकते हैं। ब्राह्मण माना ही सदा भाग्यवान, सदा खुशनसीब। किसी की हिम्मत नहीं जो ब्राह्मण आत्मा की खुशी कम कर सके। हर एक खुशनुमः, खुशनसीब हो। ब्राह्मण जीवन में खुशी का जाना असम्भव है, भल शरीर चला जाए लेकिन खुशी जा नहीं सकती।

स्लोगन:-

माया के झूले को छोड़ अतीन्द्रिय सुख के झूले में सदा झूलते रहो।

31·5·84 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद

"मीठे बच्चे- बाप जो सुनाते हैं वह तुम्हारे दिल पर छप जाना चाहिए, तुम यहाँ आये हो सूर्यवंशी घराने में ऊंच पद पाने तो [illegible] भी करनी है"

प्रश्न:-सदा रिफ्रेश रहने का सहज साधन क्या है? उत्तर:- जैसे [illegible] चलते हैं तो रिफ्रेश कर देते है। ऐसे सदा स्वदर्शन चक्र फिराते रहो तो रिफ्रेश रहेंगे। बच्चे पूछते है स्वदर्शन चक्रधारी बनने में कितना समय लगता है? बाबा कहते [illegible] एक सेकण्ड। तुम बच्चों को स्वदर्शन चक्रधारी जरूर बनना है क्योंकि इससे ही तुम [illegible] बनेंगे। स्वदर्शन चक्र फिराने वाले सूर्यवंशी विष्णुवंशी बनते हैं।

ओमशान्ति। पंखे भी फिरते हैं तो सबको रिफ्रेश करते हैं। तुम भी स्वदर्शन चक्रधारी बन बैठे हो तो बहुत रिफ्रेश करते हो। अगर स्वदर्शन चक्रधारी हो बैठते हो तो। स्वदर्शन चक्रधारी का अर्थ कोई भी नहीं समझते है। तो उनको समझाना चाहिए। न समझेंगे तो चक्रवर्ती राजा नहीं बनेंगे। स्वदर्शन चक्रधारी को निश्चय होगा कि हम चक्रवर्ती राजा बनने लिए स्वदर्शन चक्रधारी बने हैं। कृष्ण को भी चक्र दिखाते हैं फिराने लिए। ल०ना०कम्बाइन्ड को भी देते है। अकेले को भी देते है। स्वदर्शन चक्र को भी समझाना जरूरी है। तब ही चक्रवर्ती राजा बनेंगे। बात तो बहुत सहज है। बाबा- स्वदर्शन चक्रधारी बनने में कितना समय लगेगा? बच्चे एक सेकण्ड। फिर तुम बनते हो विष्णुवंशी। देवताओं को विष्णुवंशी कहेंगे। विष्णुवंशी के लिए पहले तो जरूर शिव वंशी बनना पड़े। फिर शिवबाबा बैठ सूर्यवंशी बनाते हैं। अक्षर बहुत सहज है। हम [illegible]-नये विश्व के सूर्यवंशी बनते हैं। सूर्यवंशी है ही नई दुनिया के। हम नई दुनिया के मालिक चक्रवर्ती बनते है। स्वदर्शन चक्रवर्ती विष्णु वंशी बनने में एक सेकण्ड लगता है। बनाने वाला है शिवबाबा। शिवबाबा ही विष्णुवंशी बनाते हैं। और कोई बना न सके। यह तो बच्चे जानते हैं विष्णुवंशी होते हैं सतयुग में। यहाँ नहीं। यह है विष्णु वंशी बनने का [illegible]। तुम यहाँ आते ही हो विष्णु वंशी में आने लिए। जिसको सूर्यवंशी कहते [illegible]। [illegible] अक्षर बहुत अच्छे है। विष्णु अथवा सतयुग का मालिक। उसमें ल०ना० दोनों हैं। यहाँ बच्चे आये हैं ल०ना० अथवा विष्णुवंशी बनने के लिए। इसमें खुशी भी बहुत होती है। नई दुनिया नये विश्व में गोल्डन एजड विश्व में विष्णुवंशी बनना है। इससे ऊंच पद और कोई है नहीं। इसमें तो बहुत खुशी होनी चाहिए। प्रदर्शनी में तुम समझाते [illegible] एमआबजेक्ट ही यह है। [illegible] यह बहुत बड़ी युनिवर्सिटी है। इसको कहा [illegible] युनिवर्सिटी। [illegible] आबजेक्ट इस चित्र में है। बच्चों को यह बुद्धि [illegible] लिखें जो बच्चों को समझाने में एक सेकण्ड लगे। तुम ही समझा सकते [illegible] है। हम विष्णुवंशी देवता थे जरूर अर्थात् देवी देवता कुल के थे [illegible] समझाते है मीठे2 बच्चे भारत में तुम आज से 5हजार वर्ष पहले सूर्य[illegible] को अब बुद्धि में आया है। शिवबाबा बच्चों को कहते है हे बच्चों [illegible] थे। शिवबाबा आया था। सूर्यवंशी घराना स्थापन करने। बरोबर भारत [illegible] पूज्य थे। पुजारी कोई भी नहीं थे। पूज्य सूर्यवंशी देवी देवतायें ही थे। पूजा [illegible] कोई सामग्री नहीं थी। इन शास्त्रों में ही पूजा की रसम रिवाज आदि लिखी हुई है। यह [illegible] सामग्री। तो बेहद का बाप शिवबाबा बैठ समझाते है। वही ज्ञान का सागर है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। उनको वृक्षपति कहते जिसको ब्रहस्पति भी कहते है। ब्रहस्पति की दशा ऊंच ते ऊंच होती है। वृक्ष पति तुमको समझा सिखा रहे हैं। तुम पूज्य देवी देवतायें थे फिर पुजारी बने हो। जो राज्य शुरू हुआ है देवतायें ही वाम मार्ग में गिरकर विकारी बने है। देवतायें निर्विकारी थे। फिर वह कहाँ जरूर पुनर्जन्म लेते2 विकारी बने हैं। एक2 अक्षर नोट करना चाहिए। दिल पर या कागज पर। यह कौन समझाते है? शिवबाबा। वही स्वर्ग रचते है। शिवबाबा ही बच्चों को स्वर्ग का वर्सा देते है। बाप बिगर और कोई दे न सके। लौकिक बाप तो है [illegible] देहधारी। तुम अभी अपने को आत्मा समझ पारलौकिक बाप को याद करते हो बाबा! तो बाबा रेसपान्ड करते हैं हे बच्चों। तो बेहद का बाप हो गया ना। बच्चों तुम सूर्यवंशी देवी देवता थे। फिर तुम पुजारी असुर बने हो। यह है ही रावण राज्य। हर वर्ष रावण को जलाते हैं फिर भी मरता ही नहीं

बाद फिर रावण को जलायेंगे।गोया सिद्ध कर दिखलाते हैं हम रावण सम्प्रदाय
अर्थात् 5विकारों का राज्य कायम है।हम रावण के दश हैं अर्थात् भ्रष्टाचारी
कहता है यह भ्रष्टाचारी राज्य है।सतयुग में श्रेष्ठाचारी राज्य।अब कलियुगी
दुनिया है।यह चक्र फिरता रहता है।अभी तुम प्रजापिता ब्रह्मा वंशी
तुम्हारी बुद्धि में है हम ब्राह्मण हैं। अभी शूद्र कुल के नहीं हैं। इस समय
राज्य।बाप को कहते हैं हे दुख हर्ता सुख कर्ता। अब सुख कहाँ है? सतयुग में
दुख तो कलियुग में है।बाप: दुख हर्ता सुख कर्ता कब आयेगा? जरूर कलियुग के
के संगम पर आयेगा।दुख हर्ता सुख कर्ता है ही शिवबाबा।वह वर्सा देते हो हैं
सतयुग को सुखधाम कहा जाता है।वहाँ दुख का नाम नहीं।तुम्हारी आयु भी
रोने की दरकार नहीं।समय पर एक पुरानी खाल छोड़ दूसरी ले लेते हैं।समझते
बूढ़ा हुआ है।पहले बच्चा सतोगुणी होता है इसलिए बच्चों को ब्रह्मज्ञानी ले
क्योंकि वह तो फिर भी विकारी गृहस्थी बैठ सन्यासी बनते हैं।तो उनको
तों का पता है। छोटे बच्चों को तो यह पता नहीं रहता है। इस समय सारी
रावण राज्य भ्रष्टाचारी राज्य है। श्रेष्ठाचारी देवी देवताओं का राज्य
था।अभी नहीं है फिर रिपीटहोगा। श्रेष्ठाचारी कौन बनाते? यहाँ
श्रेष्ठाचारी नहीं है।यह है ही भ्रष्टाचारी पतित दुनिया।इसमें बड़ी बुद्धि चाहिए
बुद्धि कुछ भी समझ नहीं सकते।जो समझते हैं वह समझकर पारसबुद्धि बनते हैं। अभी है
कलियों का अन्त।पारस बुद्धि का आदि।यह है ही पारसबुद्धि बनने का समय। बाप
a) 50 वर्ष में पत्थरबुद्धि से पारस बुद्धि बनाते हैं। कहा भी जाता है सग तारे कुसंग
बाप के सिवाए बाकी दुनिया में है ही कुसंग।बाप कहते हैं मैं सम्पूर्ण निर्विकारी
जाता हूँ।फिर सम्पूर्ण विकारी कौन बनाते है? कहते हैं हम क्या जानें? अरे
कौन बनाते है?जरूर बाप ही बतायेंगे। विकारी कौन बनाते है?याद
ता नहीं है।बाप बैठ समझाते हैं मनुष्य तो पत्थरबुद्धि इतने हैं जो कुछ भी नहीं
रावण राज्य है ना।कोई भी बाप मर जाता है -पूछो कहाँ गया?कहेंगे स्वर्गवासी
तो उसका मतलब नर्क में था ना। तो तुम भी नर्कवासी ठहरे ना।कितना गन्दा
ने की बात।अपने को कोई भी नर्कवासी समझते नहीं है।नर्क को वेश्यालय स्वर्ग को
लय कहा जाता है।तुम जानते हो सारी दुनिया के जो भी मनुष्य मात्र हैं इस
सब वेश्यालय में हैं। विकारी बच्चा होते हैं।सतयुग को शिवालय कहा जाता है।
लय को कितने से 5हजार वर्ष पहले इन देवी देवताओं का
विश्व के मालिक थे।फिर पुनर्जन्म लेना पड़े।पुनर्जन्म अलग
तुमने लिया है।आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल...
याद है तुम पहले2 आदि सनातन देवी देवता धर्म वाले ही आये फिर 84 पुनर्जन्म
पतित बने हो।अब फिर पावन बनना है।पुकारते भी हैं ना पतित पावन आओ। तो
डिक्रेट देते हैं।एक ही सतगुरू सुप्रीम आकर पावन बनाते हैं।बुद कहते हैं मैं इसमें बैठ
को पावन बनाता हूँ।बाकी 84लाख योनियाँ आदि हैं नहीं।यह सब ग्रामोफोन भारत
ही 84जन्म।सतयुग में इतने जन्म।इन ल0ना0की प्रजा भी है ना सतयुग में।अब नहीं
कहाँ गये? उनको भी 84 जन्म लेना पड़े। जो पहले नम्बर में आते हैं वही पूरे 84 जन्म
लेते हैं।तो फिर पहले वह जाने चाहिए। देवी देवताओं की हिस्ट्री रिपीट होती है।
हिस्ट्री रिपीट होती है।सूर्यवंशी चन्द्रवंशी राज्य मस्ट रिपीट।बाप तुमको लायक
बना रहे हैं।तुम कहते हो हम आये हैं इस पाठशाला वा युनिवर्सिटी में।जहाँ हम नर
नारायण बनते हैं।हमारा एम आबजेक्ट यह है।जो अच्छी रीति पुरूषार्थ करेंगे वही
होंगे।जो पुरूषार्थ नहीं करेंगे तो प्रजा में कोई बहुत साहूकार बनते हैं कोई कम।यह
बन रही है।तुम जानते हो हम श्रीमत पर श्रेष्ठ बन रहे हैं।श्री शिवबाबा की मत पर
ल0ना0 वा देवी देवता बनते हैं।श्री माना श्रेष्ठ। अभी किसको भी श्री नहीं कह सकते
यहाँ तो जो आयेगा सबको श्री कह देंगे।श्री फलाना।अब श्रेष्ठ तो सिवाए देवी देवताओं

PDF Compression, OCR, Web Optimization using CVISION PDFCompressor

कोई बन नहीं सकता। भारत श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ था। रावण राज्य में भारत की महिमा खलास कर दी है। भारत की महिमा भी बहुत है। तो निंदा भी बहुत है। भारत बिल्कुल उनवान था। अब बिल्कुल कंगाल बना है। देवताओं के आगे जाकर उन्हों की महि गाते हैं हम निर्गुण हारे में... देवताओं को कहते हैं परन्तु वह रहमदिल थोड़ेही है। रहमदिल तो एक को ही कहा जाता है जो मनुष्य से देवता बनाते हैं। जो वह तुम्हारा बाप भी है, टीचर भी है सतगुरू भी है। गैरन्टी करते हैं मेरे को याद करने से तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के पाप भस्म होंगे और साथ ले जायेंगे। फिर तुमको नई दुनिया में जाना है। यह 5हजार वर्ष का चक्र है। नई दुनिया थी सो फिर जरूर बनेगी। दुनिया पतित होगी तब बाप आकर पावन बनायेंगे। बाप कहते हैं पतित रावण बनाते हैं। पावन मैं बनाता हूं। बाकी यह तो जैसे गुड़ियों की पूजा करते रहते हैं। उनको यह भी पता नहीं कि रावण को 10 शीश क्यों देते हैं। विष्णु को भी 4 भुजा देते हैं। परन्तु कोई ऐसा मनुष्य थोड़ेही होता है। अगर 4 भुजा वाला मनुष्य होता तो उससे जो बच्चा पैदा होता वह भी वैसा होना चाहिए। यहां तो सबको दो भुजाएं हैं। कुछ भी जानते नहीं हैं। भक्ति मार्ग के शास्त्र कण्ठ कर लेते हैं। उन्हों के भी कितने फालोअर्स बन जाते हैं। कमाल है। यह तो बाप ज्ञान की अथार्टी है। कोई मनुष्य ज्ञान की अथार्टी हो न सके। जो ज्ञान का सागर तुम्हें कहते हो। आलमाइटी अथार्टी। यह बाप की महिमा है। तुम बाप को याद करते हो तो बाप से ताकत लेते हो। तो विश्व के मालिक बन जाते हो। तुम समझते हो हमारे में बहुत ताकत थी। हम निर्विकारी थे। सारे विश्व पर अकेले राज्य करते थे तो आलमाइटी कहेंगे ना। जो ना सारे विश्व के मालिक थे। यह माइट इन्हों को कहां से मिली? बाप से। बाप से ऊंचा भगवान है ना। कितना सहज समझाते हैं। यह 84 के चक्र को समझना तो सहज है ना। जिससे तुमको बादशाही मिलती है। पतित को विश्व की बादशाही मिल न सके। पतित तो उन्हों के आगे झुकते हैं। समझते हैं हम भक्त हैं। पावन के आगे माथा टेकते हैं। क्योंकि खुद पतित हैं तब तो गंगा पर पाप धोने जाते हैं। पतित को कब गुरू नहीं कहा जाता है। भक्ति मार्ग भी साधाकल्प चलता है। जिसको भगवान मिला है। भगवानुवाच है तुमको राजयोग सिखलाता हूं। भक्ति का फल देने वाला है। गाते भी हैं भगवान किस किस रूप में आ जायेंगे। बाप कहते हैं मैं ही आता हूं पतित दुनिया में। पतित होते हैं सतयुग में। कलियुग में हैं कनिष्ट। तमोप्रधान। अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुगी बनते हो। बाप आकर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। यह ज्ञान पक्का समझेंगे, नहीं तो स्वर्ग में कब आयेंगे नहीं। अच्छा-

b)

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

--- 256 ---

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"मीठे बच्चे – बाप जो सुनाते हैं, वह तुम्हारे दिल पर छप जाना चाहिए, तुम यहाँ आये हो सूर्यवंशी घराने में ऊंच पद पाने, तो धारणा भी करनी है"

प्रश्नः- सदा रिफ्रेश रहने का साधन क्या है?

उत्तरः- जैसे गर्मी में पंखे चलते है तो रिफ्रेश कर देते हैं, ऐसे सदा स्वदर्शन चक्र फिराते रहो तो रिफ्रेश रहेंगे। बच्चे पूछते हैं–स्वदर्शन चक्रधारी बनने में कितना समय लगता है? बाबा कहते–बच्चे, एक सेकण्ड। तुम बच्चों को स्वदर्शन चक्रधारी जरूर बनना है क्योंकि इससे ही तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। स्वदर्शन चक्र फिराने वाले सूर्यवंशी बनते हैं।

ओम् शान्ति पंखे भी फिरते हैं सबको रिफ्रेश करते हैं। तुम भी स्वदर्शन चक्रधारी बन बैठते हो तो बहुत रिफ्रेश होते हो। स्वदर्शन चक्रधारी का अर्थ भी कोई नहीं जानते हैं, तो उनको समझाना चाहिए। नहीं समझेंगे तो चक्रवर्ती राजा नहीं बनेंगे। स्वदर्शन चक्रधारी को निश्चय होगा कि हम चक्रवर्ती राजा बनने लिए स्वदर्शन चक्रधारी बने हैं। कृष्ण को भी चक्र दिखाते हैं। लक्ष्मी-नारायण कम्बाइन्ड को भी देते हैं, अकेले को भी देते हैं। स्वदर्शन चक्र को भी समझना है तब ही चक्रवर्ती राजा बनेंगे। बात तो बहुत सहज है। बच्चे पूछते हैं–बाबा, स्वदर्शन चक्रधारी बनने में कितना समय लगेगा? बच्चे, एक सेकण्ड। फिर तुम बनते हो विष्णुवंशी। देवताओं को विष्णुवंशी ही कहेंगे। विष्णुवंशी बनने के लिए पहले तो शिववंशी बनना पड़े फिर बाबा बैठ सूर्यवंशी बनाते हैं। अक्षर तो बहुत सहज हैं। हम नये विश्व में सूर्यवंशी बनते हैं। हम नई दुनिया के मालिक चक्रवर्ती बनते हैं। स्वदर्शन चक्रधारी से विष्णुवंशी बनने में एक सेकण्ड लगता है। बनाने वाला है शिवबाबा। शिवबाबा विष्णुवंशी बनाते हैं, और कोई बना न सके। यह तो बच्चे जानते हैं विष्णुवंशी होते हैं सतयुग में, यहाँ नहीं। यह है विष्णुवंशी बनने का युग। तुम यहाँ आते ही हो विष्णुवंशी में आने लिए, जिसको सूर्यवंशी कहते हो। ज्ञान सूर्यवंशी अक्षर बहुत अच्छा है। विष्णु था सतयुग का मालिक। उसमें लक्ष्मी-नारायण दोनों हैं। यहाँ बच्चे आये हैं, लक्ष्मी-नारायण अथवा विष्णुवंशी बनने के लिए। इसमें खुशी भी बहुत होती है। नई दुनिया, नई विश्व में, गोल्डन एज विश्व में विष्णुवंशी बनना है। इससे ऊंच पद और है नहीं, इसमें तो बहुत खुशी होनी चाहिए।

प्रदर्शनी में तुम समझाते हो। तुम्हारी एम ऑबजेक्ट ही यह है। बोलो, यह बहुत बड़ी युनिवर्सिटी है। इसको कहा जाता है रूहानी स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी। एम ऑबजेक्ट इस चित्र में है। बच्चों को यह बुद्धि में रखना चाहिए। कैसे लिखें जो बच्चों को समझाने में एक सेकण्ड लगे। तुम ही समझा सकते हो। उनमें भी लिखा हुआ है हम विष्णुवंशी देवी-देवता थे जरूर अर्थात् देवी-देवता कुल के थे। स्वर्ग के मालिक थे। बाप समझाते हैं–मीठे-मीठे बच्चे, भारत में तुम आज से 5 हज़ार वर्ष पहले सूर्यवंशी देवी-देवता

PDF Compression, OCR, Web Optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

थे। बच्चों को अब बुद्धि में आया है। शिवबाबा बच्चों को कहते हैं–हे बच्चों, तुम सतयुग में सूर्यवंशी थे। शिवबाबा आया था सूर्यवंशी घराना स्थापन करने। बरोबर भारत स्वर्ग था। यही पूज्य थे, पुजारी कोई भी नहीं थे। पूजा की कोई सामग्री नहीं थी। इन शास्त्रों में ही पूजा की रस्म-रिवाज आदि लिखी हुई है। यह है सामग्री। तो बेहद का बाप शिवबाबा बैठ समझाते हैं। वह है ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। उनको वृक्षपति अथवा ब्रहस्पति भी कहते हैं। ब्रहस्पति की दशा ऊंच ते ऊंच होती है। वृक्षपति तुमको समझा, लिखा रहे हैं। तुम पूज्य देवी-देवता थे फिर पुजारी बने हो। जो देवतायें निर्विकारी थे फिर वह कहाँ गये? जरूर पुनर्जन्म लेते-लेते नीचे उतरेंगे। तो एक-एक अक्षर नोट करना चाहिए। दिल पर या कागज पर? यह कौन समझाते हैं? शिवबाबा। वही स्वर्ग रचते हैं। शिवबाबा ही बच्चों को स्वर्ग का वर्सा देते हैं। बाप बिगर और कोई दे न सके। लौकिक बाप तो है देहधारी। तुम अपने को आत्मा समझ पारलौकिक बाप को याद करते हो–बाबा, तो बाबा रेसपॉन्स करते हैं–हे बच्चों। तो बेहद का बाप हो गया ना। बच्चों, तुम सूर्यवंशी देवी-देवता पूज्य थे फिर तुम पुजारी बने। यह है रावण का राज्य। हर वर्ष रावण को जलाते हैं, फिर भी मरता ही नहीं है। 12 मास के बाद फिर रावण को जलायेंगे। गोया सिद्ध कर दिखलाते हैं हम रावण सम्प्रदाय के हैं। रावण अर्थात् 5 विकारों का राज्य कायम है। सतयुग में सभी श्रेष्ठाचारी थे, अभी कलियुग पुरानी भ्रष्टाचारी दुनिया है, यह चक्र फिरता रहता है। अभी तुम प्रजापिता ब्रह्मावंशी संगमयुग पर बैठे हो। तुम्हारी बुद्धि में है कि हम ब्राह्मण हैं। अभी शूद्र कुल के नहीं हैं। इस समय है ही आसुरी राज्य। बाप को कहते हैं–हे दुःख हर्ता, सुख कर्ता। अब सुख कहाँ है? सतयुग में। दुःख कहाँ है? दुःख तो कलियुग में है। दुःख हर्ता, सुख कर्ता है ही शिवबाबा। वह वर्सा देते ही हैं सुख का। सतयुग को सुखधाम कहा जाता है, वहाँ दुःख का नाम नहीं। तुम्हारी आयु भी बड़ी होती है, रोने की दरकार नहीं। समय पर पुरानी खाल छोड़ दूसरी ले लेते हैं। समझते हैं अब शरीर बूढ़ा हुआ है। पहले बच्चा सतोगुणी होता है इसलिए बच्चों को ब्रह्मज्ञानी से ऊंच समझते हैं क्योंकि वह तो फिर भी विकारी गृहस्थी से सन्यासी बनते हैं, तो उनको सब विकारों का पता है। छोटे बच्चों को यह पता नहीं रहता है। इस समय सारी दुनिया में रावण राज्य, भ्रष्टाचारी राज्य है। श्रेष्ठाचारी देवी-देवताओं का राज्य सतयुग में था, अभी नहीं है। फिर हिस्ट्री रिपीट होगी। श्रेष्ठाचारी कौन बनावे? यहाँ तो एक भी श्रेष्ठाचारी नहीं। इसमें
a) बड़ी बुद्धि चाहिए। यह है ही पारस बुद्धि बनने का युग। बाप आकर पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनाते हैं।

कहा जाता है संग तारे कुसंग बोरे। सत बाप के सिवाए बाकी दुनिया में है ही कुसंग। बाप कहते हैं मैं सम्पूर्ण निर्विकारी बनाकर जाता हूँ। फिर सम्पूर्ण विकारी कौन बनाते हैं? कहते हैं हम क्या जानें! अरे, निर्विकारी कौन बनाते हैं? जरूर बाप ही बनायेंगे। विकारी कौन बनाते हैं? यह किसको पता नहीं है। बाप बैठ समझाते हैं, मनुष्य

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तो कुछ भी नहीं जानते हैं। रावण राज्य है ना। कोई का बाप मर जाता है, पूछो कहाँ गया? कहेंगे स्वर्गवासी हुआ। अच्छा, तो इसका मतलब नर्क में था ना। तो तुम भी नर्कवासी ठहरे ना। कितना सहज है समझाने की बात। अपने को कोई भी नर्कवासी समझते नहीं हैं। नर्क को वेश्यालय, स्वर्ग को शिवालय कहा जाता है। आज से 5 हज़ार वर्ष पहले इन देवी-देवताओं का राज्य था। तुम विश्व के मालिक महाराजा-महारानी थे फिर पुनर्जन्म लेना पड़े। पुनर्जन्म सबसे जास्ती तुमने लिया है। इनके लिए ही गायन है--आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल। तुमको याद है तुम पहले-पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले ही आये फिर 84 जन्म ले पतित बने हो, अब फिर पावन बनना है। पुकारते भी हैं ना--पतित-पावन आओ, तो सर्टीफिकेट देते हैं कि एक ही सतगुरू सुप्रीम आकर पावन बनाते हैं। खुद कहते हैं इसमें बैठकर मैं तुमको पावन बनाता हूँ। बाकी 84 लाख योनियां आदि हैं नहीं। 84 जन्म हैं। इन लक्ष्मी-नारायण की प्रजा सतयुग में थी, अब नहीं है, कहाँ गई? उनको भी 84 जन्म लेना पड़े। जो पहले नम्बर में आते हैं वही पूरे 84 जन्म लेते हैं। तो फिर पहले वह जाने चाहिए। देवी-देवताओं की वर्ल्ड की हिस्ट्री रिपीट होती है। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राज्य मस्ट रिपीट। बाप तुमको लायक बना रहे हैं। तुम कहते हो हम आये हैं इस पाठशाला वा युनिवर्सिटी में, जहाँ हम नर से नारायण बनते हैं। हमारी एम ऑबजेक्ट यह है। जो अच्छी रीति पुरुषार्थ करेंगे वही पास होंगे। जो पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो प्रजा में कोई बहुत साहूकार बनते हैं, कोई कम। यह राजधानी बन रही है। तुम जानते हो हम श्रीमत पर श्रेष्ठ बन रहे हैं। श्री श्री शिवबाबा की मत पर श्री लक्ष्मी-नारायण वा देवी-देवता बनते हैं। श्री माना श्रेष्ठ। अब किसको श्री नहीं कह सकते। परन्तु यहाँ तो जो आयेगा सबको श्री कह देंगे। श्री फलाना..... अब श्रेष्ठ तो सिवाए देवी-देवताओं के कोई बन नहीं सकता। भारत श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ था। रावण राज्य में भारत की महिमा ही खलास कर दी है। भारत की महिमा भी बहुत है तो निंदा भी बहुत हैं। भारत बिल्कुल धनवान था, अब बिल्कुल कंगाल बना है। देवताओं के आगे जाकर उन्हों की महिमा गाते हैं--हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। देवताओं को कहते हैं परन्तु वह रहमदिल थोड़ेही थे। रहमदिल तो एक को ही कहा जाता है जो मनुष्य से देवता बनाते हैं। अभी वह तुम्हारा बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। गैरन्टी करते हैं -- मेरे को याद करने से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होंगे और साथ ले जाऊंगा। फिर तुमको नई दुनिया में जाना है। यह 5 हज़ार वर्ष का चक्र है। नई दुनिया थी सो फिर जरूर बनेगी। दुनिया पतित होगी फिर बाप आकर पावन बनायेंगे। बाप कहते हैं पतित रावण बनाते हैं, पावन मैं बनाता हूँ। बाकी यह तो जैसे गुड़ियों की पूंजा करते रहते हैं। उनको यह पता नहीं रावण को 10 शीश क्यों देते हैं? विष्णु को भी 4 भुजा देते हैं। परन्तु कोई ऐसा मनुष्य थोड़ेही कभी होता है। अगर 4 भुजा वाला मनुष्य होता तो उससे जो बच्चा पैदा होता वह भी ऐसा होना चाहिए। यहाँ तो सबको 2 भुजा हैं। कुछ

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भी जानते नहीं। भक्ति मार्ग के शास्त्र कण्ठ कर लेते हैं, उन्हों के भी कितने फालोअर्स बन जाते हैं। कमाल है! यह तो बाप ज्ञान की अथॉरिटी है। कोई मनुष्य ज्ञान की अथॉरिटी हो न सके। ज्ञान का सागर तुम मुझे कहते हो—ऑलमाइटी अथॉरिटी... यह बाप की महिमा है। तुम बाप को याद करते हो तो बाप से ताकत लेते हो, जिससे विश्व के मालिक बन जाते हो। तुम समझते हो हमारे में बहुत ताकत थी, हम निर्विकारी थे। सारे विश्व पर अकेले राज्य करते थे तो ऑलमाइटी कहेंगे ना। यह लक्ष्मी-नारायण सारे विश्व के मालिक थे। यह माइट उन्हों को कहाँ से मिली? बाप से। ऊंच ते ऊंच भगवान् है ना। कितना सहज समझाते हैं। यह 84 के चक्र को समझना तो सहज है ना। जिससे ही तुमको बादशाही मिलती है। पतित को विश्व की बादशाही मिल न सके। पतित तो उन्हों के आगे झुकते हैं। समझते हैं हम भक्त हैं। पावन के आगे माथा टेकते हैं। भक्ति मार्ग भी आधाकल्प चलता है। अभी तुमको भगवान् मिला है। भगवानुवाच—मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ, भक्ति का फल देने आया हूँ। गाते भी हैं भगवान् किसी
b) न किसी रूप में आ जायेंगे। बाप कहते हैं मै कोई बैलगाड़ी आदि में थोड़ेही आऊंगा। जो ऊंच ते ऊंच था फिर 84 जन्म पूरे किये हैं, उनमें ही आता हूँ। उत्तम पुरुष होते हैं सतयुग में। कलियुग में हैं कनिष्ट, तमोप्रधान। अभी तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो। बाप आकर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। यह खेल है। इसको अगर समझेंगे नहीं तो स्वर्ग में कभी आयेंगे नहीं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. एक बाप के संग से स्वयं को पारसबुद्धि बनाना है। सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। कुसंग से दूर रहना है।
२. सदा इसी खुशी में रहना है कि हम स्वदर्शन चक्रधारी सो नई दुनिया के मालिक चक्रवर्ती बनते हैं। शिवबाबा आये हैं हमें ज्ञान सूर्यवंशी बनाने। हमारा लक्ष्य ही यह है।

वरदान:- वैराग्य वृत्ति द्वारा इस असार संसार से लगाव मुक्त रहने वाले सच्चे राजऋषि भव

राजऋषि अर्थात् राज्य होते हुए भी बेहद के वैरागी, देह और देह की पुरानी दुनिया में जरा भी लगाव नहीं क्योंकि जानते हैं यह पुरानी दुनिया है ही असार संसार, इसमें कोई सार नहीं है। असार संसार में ब्राह्मणों का श्रेष्ठ संसार मिल गया इसलिए उस संसार से बेहद का वैराग्य अर्थात् कोई भी लगाव नहीं। जब किसी में भी लगाव वा झुकाव न हो तब कहेंगे राजऋषि वा तपस्वी।

स्लोगन:-

युक्तियुक्त बोल वह हैं जो मधुर और शुभ भावना सम्पन्न हो।

अव्यक्त सन्देश

– नं. 40

कटिंग – कैसेट नं. 133

(अव्यक्त वतन से प्राप्त अव्यक्त संदेशों का संग्रह)

अव्यक्त शिवबाबा द्वारा ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी के माध्यम से अव्यक्त वतन से जो दिव्य संदेश प्राप्त हुए, यह पुस्तिका उनका संकलन है।

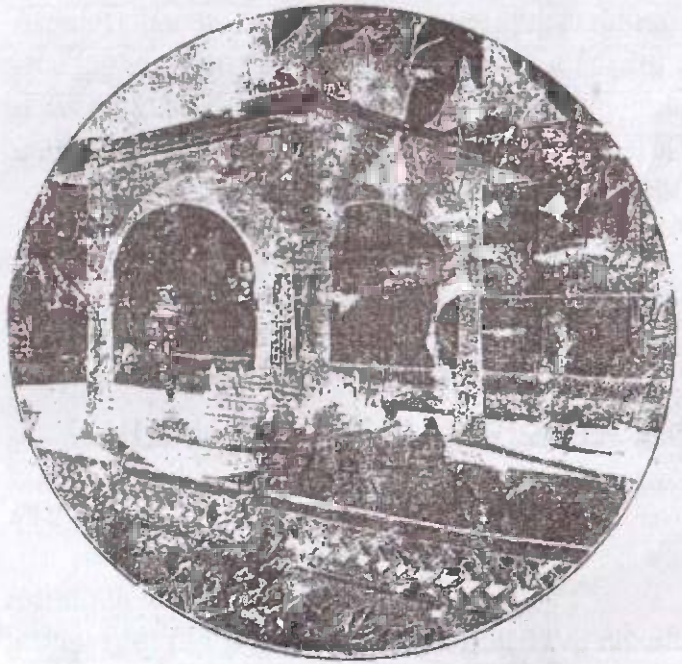

प्रकाशक :
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय
आबू पर्वत, (राजस्थान) भारत

प्रथम मुद्रण :
१५ सितम्बर, १९९३
प्रतियाँ : १०,०००

मुद्रक :
ओम् शान्ति प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)

है—उन चार बातों की शक्ति की चार भुजायें आपको दिखाई हैं। भुजा से बहुत कुछ कार्य हो सकता है, जो भी कार्य होगा भुजाओं से ही होगा ना। इन चार बातों की शक्ति द्वारा आप कोई भी कार्य करेंगे तो आपके उस कर्त्तव्य में, सेवा में यह पवित्रता की जो पर्सनैलिटी है वह सभी को दिखाई देगी।"

फिर बाबा ने कहा—"इस बारी यही लक्ष्य रखो कि हम सेवा करते साधारण नहीं लगें लेकिन हमारे से यह **पर्सनैलिटी** दिखाई दे। यह भाषण अच्छा करते हैं, प्वाइंट्स बहुत अच्छी देते हैं—वह साधारण बात है। लेकिन इन्हों में प्योरिटी की पर्सनैलिटी है, प्योरिटी की किरणें पड़ रही हैं—यह नवीनता देखें। तब तो जल्दी-जल्दी आपकी ओर आकर्षित हों और आपकी संख्या बढ़े। तो कुछ नवीनता दिखाओ। वाणी निमित्त हो लेकिन जो आकर्षण हो, जो टच करने वाली चीज हो वह आपके पवित्रता की पर्सनैलिटी हो। इस विधि से अगर आप सभी सेवा करेंगे तो जो लक्ष्य आपने रखा है वह पूरा होना कोई बड़ी बात नहीं है। बापदादा तो बच्चों के सदा ही सहयोगी हैं ही और वैसे भी अभी साधन और व्यक्ति अर्थात् अज्ञानी आत्मायें—यह दोनों ही आपके सहयोगी बनने के लिए समीप आ रहे हैं। सिर्फ उन्हों को कोई नवीनता की झलक दिखाओ तो जो समीप आ रहे हैं वे एकदम में आ जायेंगे। इसीलिए अभी आपको यह धरनी भी बहुत मदद देगी क्योंकि व्यक्ति और साधन—सभी आपके सहयोगी बनने में समीप होंगे।"

इसी रीति से बाबा ने यह दृश्य दिखाया और कहा कि जो भी मीटिंग में आये हुए हैं उन सभी बच्चों को याद-प्यार देना और यही कहना कि प्रत्यक्षता करने की भुजायें आप हो। तो प्रत्यक्ष करने वाली भुजायें जो हैं वह प्रतिज्ञा को साथ लेकर के अगर प्रत्यक्ष करने का काम करेंगी तो आपकी दो भुजायें नहीं, लेकिन जैसे हजार भुजाओं वाला बाबा है, वैसे आपकी दो भुजायें हजार भुजाओं जितना काम करेंगी, रिजल्ट निकालेंगी। ऐसे कहते बाबा ने सभी को याद-प्यार दिया। मधुबन निवासी बच्चों को भी विशेष बाबा ने याद-प्यार दिया और कहा कि मधुबन निवासियों ने जो सेवा की है उसकी बहुत-बहुत ऐसे ५ बारी बाबा ने बहुत-बहुत कहा और बोला कि इन्होंने सारी सीजन में

रात-दिन जो सेवा की है—तो सेवा का फल तो बाबा इन्हों को सूक्ष्म में देता ही है लेकिन दादी के लिए कहा कि मधुबन निवासियों को विशेष ५ फल खिलाना। इसी रीति से बाबा ने मधुबन निवासियों को भी याद-प्यार दी। सेवाधारी तो साथ में हैं ही। ओम् शान्ति।

२३.६.९२

लगाव से मुक्त होना ही अव्यक्त वर्ष मनाना है

(मातेश्वरी जी के स्मृति-दिवस पर अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का सन्देश)

आप सबकी याद और प्यार लेकर हम अमृतवेले बाबा के पास वतन में पहुंची। आज जाते ही बाबा और मम्मा—दोनों को देखा। दोनों ही आपस में कुछ बातचीत कर रहे थे। ऐसे लग रहा था जैसे साकार में 'बाबा' मम्मा को बुलाते थे और गद्दी पर बिठा कर बातचीत करते थे। तो इसी रीति से वही साकार दृश्य सामने आया। जैसे ही मैं सामने पहुँची तो मम्मा और बाबा, दोनों ने बहुत मीठी दृष्टि देते हुए कहा— शिव शक्ति सेना को मुबारक हो। मैंने ऐसे महसूस किया जैसे मैं अकेली नहीं हूँ लेकिन पूरी शक्ति सेना सामने है और शक्ति सेना से ही मम्मा-बाबा मुलाकात कर रहे हैं और यह 'बोल' बोल रहे हैं, उसके बाद फिर बाबा ने कहा—आओ बच्ची, आज विशेष मम्मा के लिये याद-प्यार लाई हो या बापदादा के लिए लाई हो? तो मैंने कहा—त्रिमूर्ति के लिए लाई हूँ। तो बाबा ने कहा—फिर भी आज तो विशेष मम्मा का दिन है, मम्मा के प्रति भोग लगा रही हो।

फिर बाबा ने मम्मा को कहा कि आप सुनाओ कि आपकी और हमारी क्या रूह-रिहान चल रही थी। तो मम्मा मुस्कराई और कहा कि—"आज बाबा हमसे पूछ रहे थे कि एडवांस पार्टी की तैयारी कहाँ तक हुई है और मैं बाबा

से पूछ रही थी कि साकारी वतन में शक्ति सेना की तैयारी कितनी हुई है ?
a) आपस में यह रूह-रिहान कर रहे थे फिर बाबा ने मेरे से पूछा—आप और क्या समाचार लाई हो ? मैंने कहा—बाबा, एक तो मीटिंग का है । दूसरा—सभी के मन में यही है कि अभी अव्यक्त वर्ष-९३ आ रहा है । तो विशेष फरिश्ता स्वरूप बनने के लक्ष्य से अव्यक्त वर्ष में सेवा का और स्वउन्नति का प्लैन बना रहे हैं । तो बाबा ने कहा—मम्मा, इनको एक सीन दिखाते हैं ।

इतने में मैंने देखा—कई ब्राह्मण आत्मायें बादल के एकदम ऊपर जैसे आकाश में फरिश्ते रूप में आधे सर्कल में, एक सर्कल फिर दूसरा सर्कल—इस डिजाइन में दिखाई दे रहे थे । यह सीन ऐसे लग रही थी जैसे बादल के ऊपर अव्यक्त ज्योतिस्वरूप में फरिश्ते जगमगा रहे हैं । फिर बाबा ने पूछा—ये फरिश्ते देखे ? मैंने कहा—हाँ बाबा, बहुत अच्छे लग रहे हैं । हमारी दृष्टि ऊपर फरिश्तों की तरफ थी । बाबा ने कहा—तुम चारों ओर देखो । तो मैंने देखा कि आधी छतरी के आकार में ऊपर फरिश्ते थे और वे सब एक गोल स्थान से महीन तारों से बंधे हुए थे । वे तारें इतनी महीन थीं जो बहुत ध्यान से देखने से पता चलता था । तो बाबा ने मम्मा से कहा कि—ताली बजाओ और देखें कि इन तारों से ये फरिश्ते कितना अलग होते हैं । मम्मा ने ताली बजाई । तो जो तारें बंधी हुई थीa वे कोई की थोड़ी छूटी और कोई की बंधी हुई से ऊपर हो ही नहीं सकी । कोई-कोई की बहुत तारें टूट गईं लेकिन कोई-कोई की तार (रस्सी) उनके साथ-साथ उठ रही थी । कोई जमीन से तो उड़ गये लेकिन तारों सहित ही उड़े ।

जब सीन पूरी हो गई तो बाबा ने कहा—मम्मा, इसका अर्थ तो बच्ची को सुनाओ । मम्मा ने कहा—"आप फरिश्ता वर्ष मनाने जा रह हो । फरिश्ता माना जिसका किसी भी लगाव से रिश्ता नहीं । उसको कहते हैं फरिश्ता । तो अभी बाबा दिखा रहे हैं कि लगाव बहुत सूक्ष्म है । एक हैं मोटे लगाव । मोटे लगाव को तो समझ गये हो । लेकिन जो सूक्ष्म लगाव 'बॉडी कान्सेस' है, वह ऊपर उड़ने नहीं देता, फरिश्ता बनने नहीं देता । अभी तक वे तारें नहीं टूटी हैं । भले उड़ रहे हैं लेकिन एक-दो तारें (रस्सियां) साथ में ही उड़ रही हैं । जब कोई भी

बात में झुकाव होता है तो ये सभी बाते होती हैं ।" तो बाबा ने यह दृश्य दिखाया कि पहले अपने सूक्ष्म लगाव को चेक करो—हमारा कोई भी सूक्ष्म लगाव जुटा हुआ तो नहीं है ? ऐसे तो नहीं—उड़ भी रहे हों लेकिन वे तारें भी साथ-साथ जा रही हों ।

बाबा ने कहा—"अव्यक्त वर्ष मना रहे हो । तो अव्यक्त वर्ष का अर्थ ही है कि सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप की अनुभूति में रहना और लगाव के कारण जो झुकाव होता है, जिसके कारण सारी बातें होती हैं, उस लगाव को कट करना । उससे मुक्त हो जाओ । तो इस वर्ष का यही एम आब्जेक्ट रखो । चाहे सेवा भी करो लेकिन यदि ब्रह्मा बाबा से प्यार है, चाहे व्यक्त पालना ली है या अव्यक्त पालना ली है—लेकिन बाबा प्यार का सबूत देखना चाहते हैं । जिससे प्यार होता है उसके प्रति त्याग भी होता है । बाबा से प्यार है । तो जैसे ब्रह्मा बाबा फरिश्ते रूप में हैं, तो बाबा के प्यार के पीछे क्या आप यह छोटे-छोटे महीन लगाव नहीं छोड़ सकते ? क्या आप यह त्याग नहीं कर सकते ? तो यही त्याग कर फरिश्ता रूप बनना है । प्यार के पीछे सबूत देने वाले सपूत बच्चे कितने हैं—बाबा भी यह रिजल्ट देखेंगे ।"

बाबा ने कहा—" इसीलिए कान्फ्रेन्स भी करो तो जैसे पहले कान्फ्रेन्स हुई, ऐसे मेले की रीति नहीं करो । मेले में झमेला होता है । इस अव्यक्त वर्ष में कान्फ्रेन्स करो तो पहले ब्राह्मण आत्माओं को यह अनुभव होना चाहिए कि जैसे पहले कान्फ्रेन्स करते थे ऐसे यह कान्फ्रेन्स नहीं लेकिन यह अव्यक्त कान्फ्रेन्स है । चाहे भाषण करो, चाहे कुछ भी करो लेकिन चलते-फिरते अव्यक्त रूप में सेवा करते कान्फ्रेन्स करो । कर्म और योग अर्थात् सेवा और तपस्या—दोनों का बैलेन्स हो । यही तो अव्यक्त रूप है, फरिश्ता रूप है । तो कान्फ्रेन्स इस बार ऐसे लगे जैसे अव्यक्त वतन में बच्चे इक्ट्ठे हुए हैं ।" इसके लिए एक सलोगन होक को याद रखना है । वह एक सलोगन बाबा ने सुनाया—'सी फादर, सी सेल्फ (See father, see self) ।' अपने को और बाबा को देखना । दूसरे को सहयोग देना और सहयोग लेना लेकिन और कोई बात दूसरे की नहीं देखना । यदि कोई कुछ करता भी है तो आप उसको

अपने वायब्रेशन्स से ठीक करो। ऐसे नहीं—यहाँ आवाज हो रहा था तो मैंने भी आवाज कर लिया, संग के रंग में आ गये, वायुमण्डल में आ गये। हरेक समझे—मुझे बाबा को सबूत देना है। अपनी जिम्मेवारी हरेक स्वयं ले। तो इस बारी अव्यक्त वर्ष में बाबा यह सबूत देखना चाहते हैं और सपूत बच्चों की लिस्ट बाबा चेक करेंगे। सपूत बच्चों का सर्टीफिकेट बाबा के पास रहेगा। इसीलिए यह सलोगन सदा याद रखना।"

फिर बाबा ने कहा—"तपस्या वर्ष में जिन चार बातों में निर्विघ्न बनने वा बैलेन्स रखने के लिए कहा था उसकी रिजल्ट ५०-५०% है। अभी तक १००% तक रिजल्ट नहीं है। इसीलिए अटेन्शन रखकर अब बचे हुए ६ मास में १००% लाओ। जो करेगा वो बाबा के दिलतख़्त-नशीन बनेगा।" फिर बाबा ने सबको याद-प्यार दिया और मधुबन निवासियों को संगठन रूप में इमर्ज करके उनके मस्तक के ऊपर मम्मा और बाबा ने हाथ रखा जो चारों ओर घूम रहा था। बाबा ने कहा—मधुबन निवासियों ने सेवा का सबूत बहुत-बहुत अच्छा दिया है। अब अव्यक्त वर्ष में अव्यक्त फरिश्ता बनने में वा सबूत देकर सपूत बनने में मधुबन निवासी नम्बरवन लेंगे। फिर मीटिंग वालों को बाबा ने कहा—विशेष आत्माओं को विशेषता सम्पन्न याद-प्यार। साथ-साथ सभी को विशेष याद दी। ओम् शान्ति।

६.७.९२

समर्पित जीवन का आधार-हिम्मत

(मलेशिया में चली एशिया के टीचर्स की रिट्रीट में अव्यक्त वतन से प्राप्त त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज अमृतवेले जब मैं बापदादा के पास गई तो बाबा ने मुझसे सेवा का समाचार पूछा। मैंने बाबा से कहा कि मैं मलेशिया में पहुंची हूँ जहाँ ब्राह्मणों के लिए एक रिट्रीट रखी है। इस समय यहाँ एशिया की सभी टीचर्स

की एक मीटिंग भी रखी गई है। बाबा ने कहा—"भारत अविनाशी खण्ड है और एशिया में होने के कारण एशिया निवासी भी बाबा के दिल के करीब हैं। बापदादा जब निमित्त टीचर्स को देखते हैं तो दिल में प्यार के साथ-साथ नाज भी आता है कि कितनी हिम्मत के साथ-साथ बाबा के यह बच्चे विश्व की सेवा में विश्व के कोने-कोने में गये हैं।" फिर बाबा ने पूछा—आपको मालूम है कि ये सब किस आधार पर बाबा के बच्चे बने? तो उत्तर मिला—हिम्मत के आधार पर। हिम्मत के आधार पर ही आप बाबा को समर्पित हुए, बाबा के बने। बाबा ने कहा है कि हिम्मत ही आपके जीवन का आधार है।

फिर बाबा ने मुझे कहा—"सभी बच्चों को कहना कि कभी भी हिम्मत नहीं हारें। तो बाबा आपको सदा बचाते रहेंगे। जैसे किसी डूबते हुए व्यक्ति को पानी से बचाया जाता है, वैसे बाबा आपको भी विघ्नों से ऐसे ही ऊपर उठा लेंगे लेकिन कभी भी हिम्मत नहीं हारना। यह हिम्मत एक अमूल्य हीरे की तरह है जिसे सदा सम्भाल कर रखना। इस रिट्रीट से यह हीरा सौगात के रूप में लेकर के जाना। अगर आप कभी हिम्मत नहीं हारेंगे तो बाबा भी बच्चों से वायदा करते हैं कि सदा आपको हर विघ्न से बचाते रहेंगे। बापदादा का वायदा सदा याद रखना और अपनी हिम्मत को बढ़ाते रहना।"

जब किसी कुमार वा कुमारी की सगाई होती है तो वह एक-दो के प्रति स्नेह व्यक्त करने के लिए स्नेह की निशानी एक-दो को अंगूठी पहनाते हैं। अंगूठी अंगुली में बंध जाती है। जैसे अंगूठी का वह बन्धन है वैसे ही बाबा के वायदे का बन्धन सदा बांधे रखना। अंगूठी सदा सोने की ही पहनाते हैं और कभी-कभी उस पर हीरा भी होता है। इसी प्रकार बाबा भी आपके वायदे के बन्धन में प्यार की निशानी हिम्मत का हीरा दे रहे हैं। फिर बाबा ने कहा कि—"सदा कमल-आसन पर विराजमान रहना। कमल आसन को कभी नहीं छोड़ना। जब आप लोग मधुबन जाते हो तो अपना आसन भी जरूर साथ लेकर जाते हो, इसी प्रकार जहाँ भी जाओ अपना कमल-आसन जरूर साथ में ले जाना।" तो आपको आसन भी मिला, स्थिति भी मिली और हीरा भी

ब्रह्मा द्वारा सा. से बनवाया गया त्रिमूर्ति का चित्र

(साइज- 30X40 इंच)

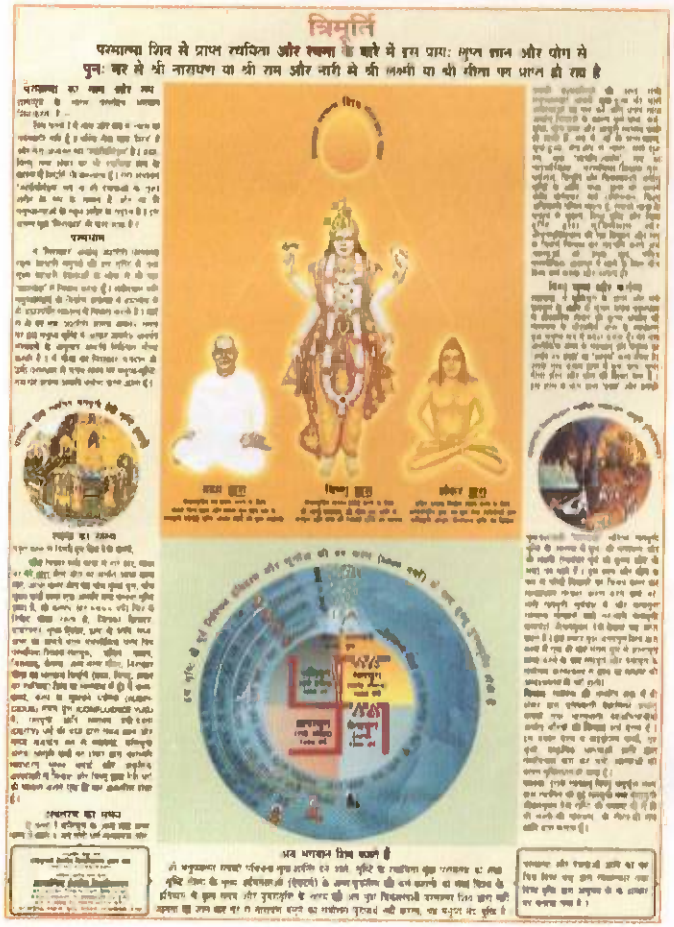

चित्र नं. 41

ब्र.कु. कुमारियों द्वारा मनमत के आधार पर परिवर्तित त्रिमूर्ति का चित्र

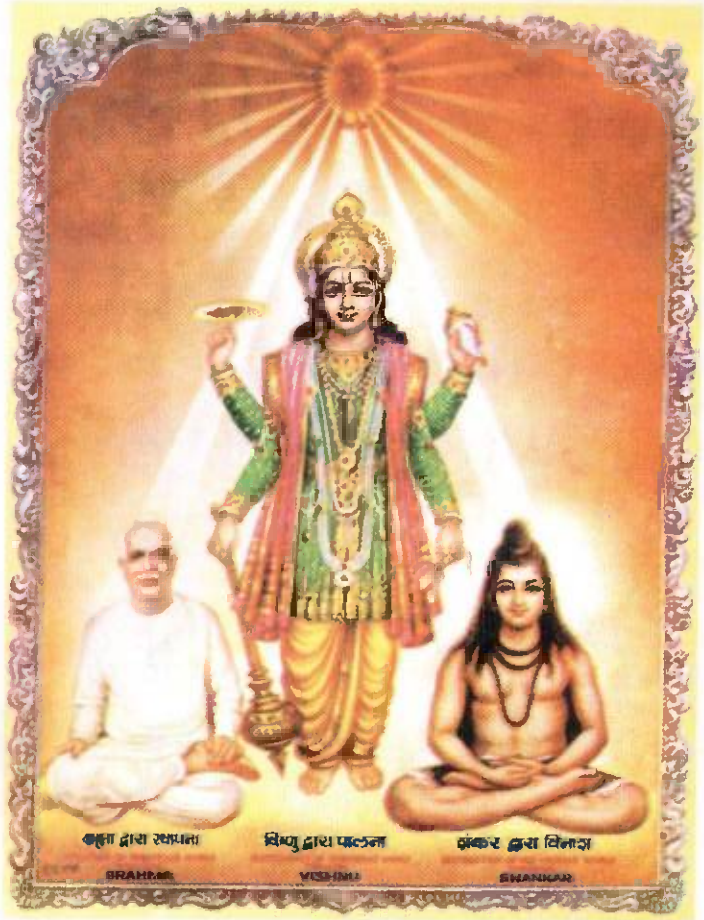

मुरली प्वाइंट्स :

i) बच्चों को समझाया है– यह चित्र सब दिव्य दृष्टि से बाप ने बनवाये हैं, करेक्ट भी कराये हैं। -मु. ता. 2.8.86, पृ.3 मध्य

ii) यह 30"x 40" का झाड़, त्रिमूर्ति भी सबको अपने–2 घर में रखना पड़े। -मु.ता. 15.10.98, पृ.3 आदि

iii) तो पहले–2 शिव का चित्र दिखाना चाहिए, फिर है लिखत। ...चित्र सहित सारी लिखते होनी चाहिए। -मु. ता. 12.10.02, पृ.1 मध्य

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompresso

ब्रह्मा द्वारा सा. से बनवाया गया ल.ना. का चित्र

(साइज- 30X40 इंच)

चित्र नं. 42

ब्र.कु. कुमारियों द्वारा मनगत के आधार पर परिवर्तित ल.ना. का चित्र

मुरली प्वाइंट्स :

i) ल.ना. का चित्र बहुत अच्छा है। इसमें सारा सेट हैं– त्रिमूर्ति, ल.ना., राधे–कृष्ण भी हैं। -मुरली ता. 24.8.02, पृ.3 मध्य

ii) यह त्रिमूर्ति सहित ल.ना. का चित्र बहुत अच्छा है। -मु. ता. 16.9.98, पृ.2 आदि

iii) ल.ना. के चित्र साथ राधे–कृष्ण भी हो तो समझाने में सहज होगा– यह है करेक्ट चित्र। लिखत भी उनकी अच्छी है। -मु. ता. 25.1.98, पृ.4 आदि

Compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ब्रह्मा द्वारा सा. से बनवाया गया कल्पवृक्ष का चित्र

(साइज- 30X40 इंच)

चित्र नं. 43

• ब्र.कु. कुमारियों द्वारा मनमत के आधार पर परिवर्तित कल्पवृक्ष का चित्र

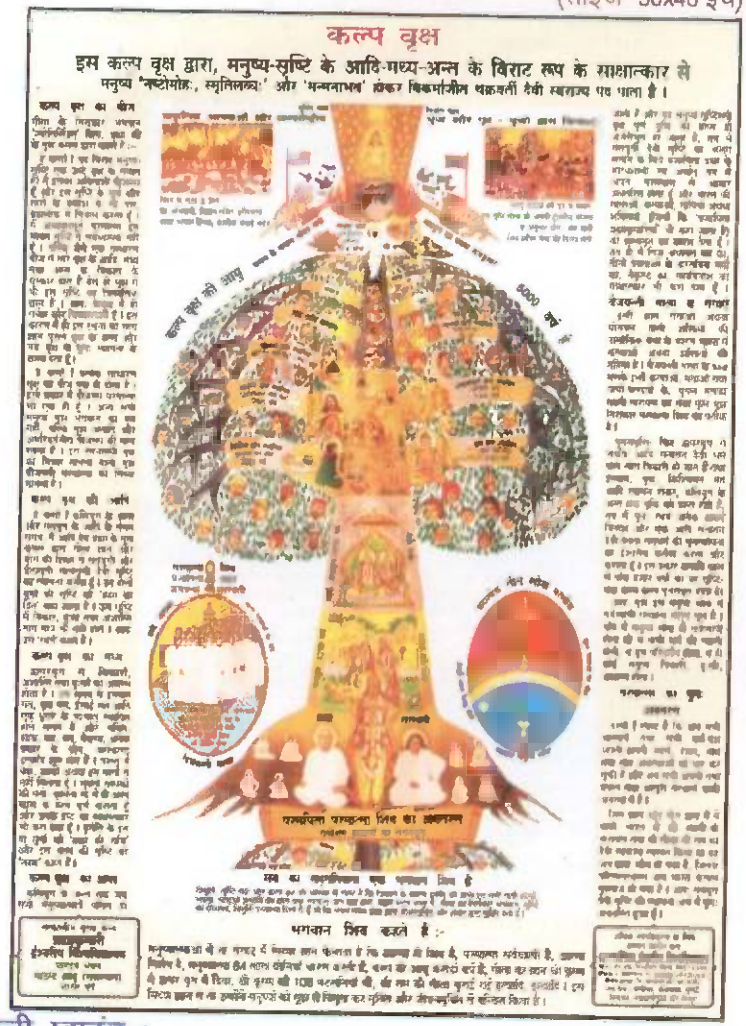

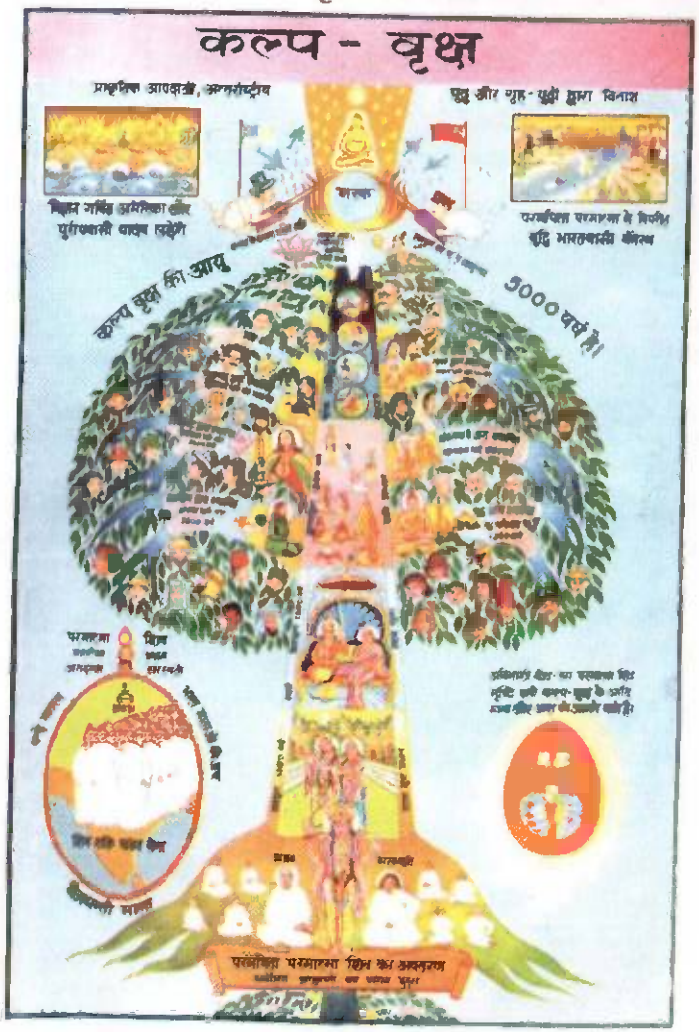

मुरली प्वाइंट :

★ ज्ञान में तो सिर्फ बीज को जानना होता है। बीज के ज्ञान से सारा झाड़ बुद्धि में आ जाता है -मु. ता. 5.9.02, पृ.3 आदि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ब्रह्मा की करेक्शन से रमेश द्वारा बनवाया गया
सीढ़ी का चित्र (साइज- 30X40 इंच)

चित्र नं. 44

ब्र.कु.कुमारियों द्वारा मनमत के आधार पर परिवर्तित
सीढ़ी का चित्र

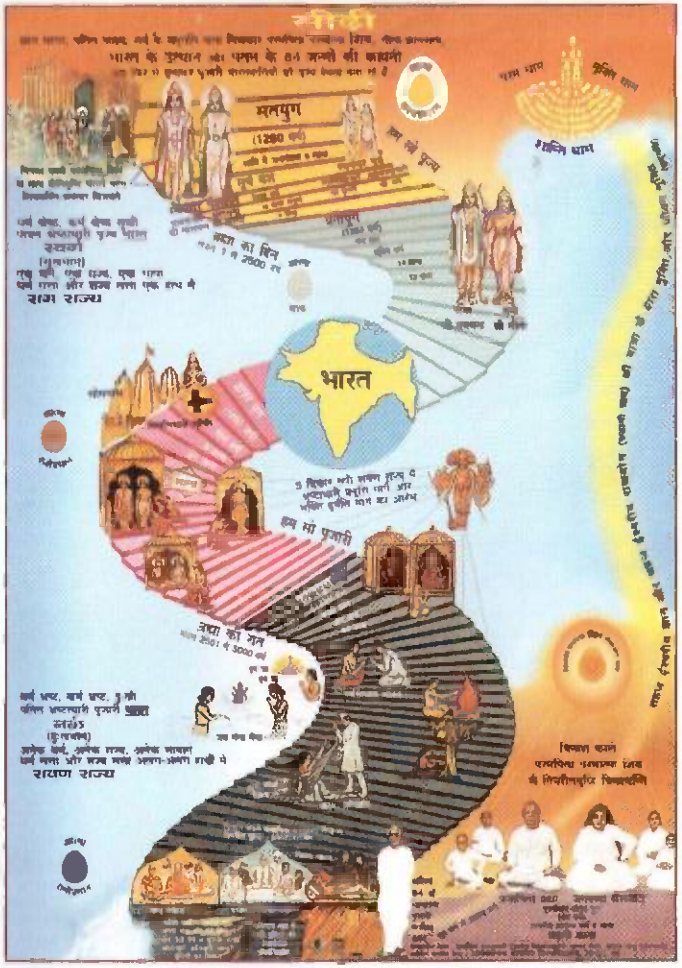

मुरली प्वाइंट :

★ बच्चे जो विचार सागर मंथन कर ऐसे–2 चित्र बनाते हैं तो बाबा भी उनकी शुकिया करते हैं या तो ऐसे कहेंगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है।

-मु. ता. 26.3.01, पृ.3 मध्य

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

चित्र नं. 45

पाण्डव भवन, माउंट आबू में ब्रह्मावत्सों को टोली (प्रसाद) बाटते हुए प्रजापिता ब्रह्मा

પાંડવભવન, માઉન્ટઆબુમાં બ્રહ્માવત્સોને ટોલી(પ્રસાદ) આપતા પિતાશ્રી પ્રજાપિતા બ્રહ્મા.

इस चित्र में ब्रह्मा बाबा के पीछे जुना ल.ना. का पुराना (ओरीजिनल) चित्र देखा जा सकता है।

(राजयोग भवन, अहमदाबाद से गुजराती भाषा में प्रकाशित किया गया ज्ञानामृत पुस्तिका [जनवरी/फिब्रवरी 94, अंदर कवरपेज] से प्राप्त हुआ फोटो)

Back Side

Front Side

बी.के. टीचर्स द्वारा पहना जानेवाला यह बैज भी जुने ल.ना. के पुराने चित्र के अनुसार बनाया गया है।

नोट 1:– 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' (प्र.ब्र.कु.ई.वि.वि.) का नाम बदलकर 'आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्व विद्यालय' (आ.ई.वि.वि.) नाम डालने के लिए माउन्ट आबू से चलाई गई शिवबाबा की मुरली तारीख 20.3.74, पृ.4 और 19.2.2000, पृ.1 में स्पष्ट आदेश इस प्रकार है,

"गॉड फादर को स्प्रीचुअल नालेजफुल कहा जाता है। तो तुम स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी नाम लिखेंगे। इसमें कोई एतराज नहीं उठावेंगे, फिर बोर्ड में वह अक्षर (प्र.ब्र.कु.वि.वि.) हटाकर यह स्प्रीचुल युनिवर्सिटी नाम लिख देंगे। ट्राई करके देखो, लिखो– 'गॉड फादरली युनिवर्सिटी'। इनकी यह एम आब्जेक्ट है। फिर दिन प्रतिदिन तुम्हारी म्युजियम चित्रों आदि में भी चेन्ज होती जावेगी। फिर सब सेन्टर्स पर लिखना पड़ेगा– 'स्प्रीचुअल गॉड फादरली युनिवर्सिटी'।"

नोट 2:– भारत और अन्य देशों में संस्था के सदस्यों द्वारा अनेक शहरों, गांव और कस्बों में गीतापाठशालायें चलाई जाती हैं जहाँ ईश्वरीय ज्ञान तथा राजयोग की शिक्षा दी जाती है। जिनके पते नीचे दी गई अन्तर्राज्यीय शाखाओं से प्राप्त किये जा सकते हैं।

त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाचः– "बेहद का बाप, ज्ञान का सागर, पतित पावन, सद्गति दाता, गीता का भगवान शिव कैसे प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियों द्वारा फिर से कलियुगी, सम्पूर्ण विकारी, भ्रष्टाचारी पतित दुनियाँ को सतयुगी, निर्विकारी, पावन, श्रेष्ठाचारी दुनियाँ बना रहे हैं, यह खुशखबरी आकर सुनो अथवा समझो।" –मुरली 17.03.86, पृ.1

आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्व विद्यालय

- फर्रूखाबादः 5/26 A, सिकत्तरबाग, जि. फर्रूखाबाद- 209 625 (उ.प्र.) 093356 83627
- कम्पिलाः ग्राम- कम्पिला, जि. फर्रूखाबाद- 207 505 (उ.प्र.) 098390 71989
- जम्मूः तहसील- हीरानगर, पो. चकदयाला, जि. कठुआ, जम्मू-कश्मीर- 184 144 (01922) 255 213
- चण्डीगढ़ः हाउस नं. 634, केशोराम काम्पलेक्स, सेक्टर 45 C, सुख गैस के बाजू में, पो. बुड़ैल, चण्डीगढ़- 160 106 (0172) 2622829
- लखनऊः S/99, चंद्रमा मार्केट, भूतनाथ मेन मार्केट, पो. इन्दिरा नगर, जि. लखनऊ (उ.प्र.)-226 016 (0522) 6521 307
- कोलकाताः C.L. 249, सेक्टर 2, पो. साल्ट लेक सिटि, कोलकाता- 700 091 (033) 2337 8007
- मुम्बईः पाटील हाउस, आज़ाद चौक, खारीगाँव, ता./पो. कलवा, जि. ठाणे, मुम्बई - 400 605 (022) 2539 6765
- निलंगाः लोन्डे नगर, पो. निलंगा, जि. लातूर (महाराष्ट्र)- 413 521 (02384) 240 410
- हैदराबादः 29/3 R.T., प्रकाश नगर, पो. बेगमपेट, हैदराबाद- 500 016 (040) 2776 5871
- ताडेपल्लीगुडमः साई दुर्गा लोरी वॉटर सर्विस, तानुकु रोड, पो. ताडेपल्लीगुडम, जि. वेस्ट गोदावरी- 534 102 (आन्ध्रा प्रदेश) (08818) 227 029
- बैंगलूरः शिवज्योति निलयम, 138 फर्स्ट मेन, उदय नगर, पो. दूरवाणी नगर, बैंगलूर- 560 016 93416 74550

DF compression, OCR, web optimization using a trial version of eVISION PDF Compressor